डूबते हैं। उनमेंसे वह मर्द चिल्ला रहाहै कि कोई उपकारी ऐसा भी हो कि हम डूबतोंको निकाले। हरकारा यह कहता ही था कि वह फिर पुकारा कि हम तीन जीव डूबते हैं कोई भगवान्का बंदा हमें पार लगावे। यह सुनतेही राजा वहां से दौड़ा और आकर उस नदी में कूदपड़ा तथा एक हाथ में रंडी और दूसरे हाथ में लड़के को पकड़ लिया तब वह मर्द भी राजा से लपटगया। अब सब भारी होने से डूबने लगे। राजा घबराया और ईश्वर को याद किया तथा कहा कि हे नाथ! मैं धर्म के हेतु आया था और इसमें मेराही जी जाताहै। धर्म करते अधर्म होता है, यह कहकर जोर करने लगा पर जोर कुछ काम न चला तब राजाने अपने आगिया और कोयला इन दोनों वीरों को यादकिया तो वे तुर्तही हाजिर हुये और चारों को उठा करके किनारे पर धरदिया। अब वह विदेशी राजा के चरणों पर गिरपड़ा और बोला महाराज! आपने तीनों को जीवदान दिया तुमहीं हमारे रक्षक और ईश्वर हो। राजा उन तीनों को हाथ पकड़कर रंगमहल में लेगया और बैठाकर कहा तुम्हें जो चाहिये सोही मांगो। तब वह बोला महाराज! हमको हुक्म हो हम अपने घर जावें और जबतक जीवें आपको आशीर्वाद देवें। आपने ऐसा कार्य किया है जिसकी तुलना नहीं। राजाने उनको लाख रुपये देकर विदा किये॥ इति दूसरा प्रदीप॥

अथ तृतीयप्रदीपः।

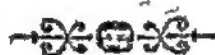
विक्रमी विक्रमार्कस्यैश्वर्य्यस्याथ प्रवर्णनम्॥
कः कुर्य्याद्यस्य राष्ट्रे हि लक्ष्मीर्द्रव्यमवर्षयत् २

अर्थ । कौन पराक्रमी विक्रमादित्य के ऐश्वर्य का वर्णन करसके जिसके पुर में लक्ष्मी ने द्रव्य की वर्षा की ३ ॥ दृष्टान्त ॥ एक ब्राह्मण आकर राजा विक्रमादित्य से बोला कि मेरे बताये मुहूर्त में मकान बनावो तो बड़ाही नाम और यश पावोगे । राजाने कहा अच्छा । फिर ब्राह्मण बोला कि तुला लग्न जब आवे उसमें मन्दिरकी नींव उठावे और जब तक वह काम करे तुला लग्नमें ही करे । इसीतरह तुला लग्न मेंही वह सारा मन्दिर तैयार करावे तो उसका भण्डार अटूट भरा रहे और लक्ष्मी उसके घर से कभी न जावे । यह सुन राजा मनमें प्रसन्न हुआ और दीवान को बुलाय कर बोला कि तुम अच्छी सी जगह ढूंढ़कर महल बनावो । यह सुन तैयारी की और तुला लग्नमें मन्दिरकी नींव दी । देश देश में यह अवाई हुई कि राजा तुला लग्न में महल बनावता है । जितने कारीगर थे वे सब तुला लग्न मेंही काम करते थे ॥ उसमें कहीं तो सोने का काम और कहीं रूपे का तथा कहीं लोहेका और काठका काम नई नई तरह से होताथा । इसतरह दरिया के किनारे हवेली बनाई गई जिसमें चार दरवाजे और सातखण्ड रक्खे, जगह जगह दरवाजे पर अमोल जवाहिर जड़े और दो नीलम के बड़े नगीने लगाये कि किसीकी नजर न लगे । ऐसे वह जड़ाऊ महल बहुत वर्षों में ऐसा उत्तम तैयार हुआ कि दुनियाके परदेपर किसीने ऐसा दूसरा न देखा और न सुना । दीवान ने जाकर राजाको खबर दी कि महाराज! वह मन्दिर अब तैयार हुआ अब आप चलकर उसे देखिये॥ और भी कोई जो उस मकान



दृष्टान्तप्रदीपिनी

तीसरा भाग ॥



नारनवलनिवासी पण्डित देवीसहाय शुक्ल
संगृहीत

संशोधित तृतीय संस्करण



लखनऊ

बाबू मनोहरलाल भार्गव, बी. ए., सुपरिंटेंडेंट के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी आई ई, के छापेखाने में, छपी

सन् १९१६ ई०

जुज १७ फर्मे२,

को देखता है वह मोहित होजाता है। राजा वहां से मकान देखनेको गया और मुलाहिज़ा किया उस समय वही ब्राह्मण हँसकर बोला कि अय राजा! जो ऐसा घर में पाऊं तो सुख से समय विताऊं। राजा ने सुन कुछ न सोचकर गंगाजल हाथ में लेकर तुलसीदल ले तुर्त संकल्पकरि ब्राह्मण को दान करदिया। वह उसे पाय ऐसा आनन्दित हुआ कि जैसे चन्द्रमा से रात को चकोर प्रसन्न होवे। फिर वह ब्राह्मण निज कुटुम्ब को ले आया और वहां आकर रहा। रात को सोता था कि पहरभर रात गये लक्ष्मी वहां आई और कहने लगी बेटा हुक्म दे तो मैं गिरूं और घर बाहर सम्पूर्ण भरूं। यह सुन डरकर उसने कुछ नहीं कहा तब दो पहर रातको फिर आई और बोली अरे अज्ञानी ब्राह्मण! मुझको आज्ञा दे। तब भी न बोला और चिन्ता में रात विताई। फिर सवेरा भये वह ब्राह्मण राजा के पास आया। राजाने रातके अहवाल से जर्द रङ्ग कुँभलाये हुये मनमलिन उसको देख हँसके कहा कि कल कीसी खुशी हमने आज तक न देखी, पर हे ब्राह्मण! अचम्भे की बात है जो तू खुश नहीं है। तब ब्राह्मण बोला, स्वामी! मेरा दुःख सुनो, तुम दाता हो और शाकेबंध राजा हो जैसे राजा कर्ण और इन्द्र थे वैसेही इस समयमें तुम हो। आपने जो मन्दिर मुझे दिया है उसका हाल मैं कहताहूं। मालूम नहीं कि उसमें भूतहै या पिशाच मुझे उसने रैन भर सोने नहीं दिया है। अब आपके प्रताप से या बच्चो के भाग से जीवता बन यहां आयाहूं। अब भीख मांगना तो उचित है पर उस मकान में रहना नहीं चाहता। यह बात उससे

सुन राजा ने निज प्रधान को बुलाया और कहा कि जो उस मकानकी लागत है वह हिसाव करके इस ब्राह्मण को देवो। राजा की आज्ञा पातेही दीवानने हिसाब से रुपयों के तोड़े लदवाकर ब्राह्मण के साथ करदिये और वह अपने घरको चला गया। राजा साइत देख उस महल में रहने लगा और वैठकर विचार करता था कि लक्ष्मी हाथ वांधकर आई और कहनेलगी राजा विक्रम! तेरे धर्म को धन्य है। इतना कह उस समय तो चलीगई पर फिर आकर कहनेलगी कि कहां गिरूं? राजा ने मनमें धीर धरकर कहा जो गिराही चाहे तो तू इस पलंगको छोड़ जीचाहे वहां गिर। उसी समय सोने का मेह सारे नगरभरमें वरसा। सवेरा होतेही राजा बोला हमारी रय्यत बड़ी तंग थी पर अब कई दिन निश्चिन्त हो आराम से रहेगी॥ इति तीसरा प्रदीप॥

अथ चतुर्थप्रदीपः।

शाकटीचक्रवद्देवौ भाग्योपायौ पृथग्ध्रुवम्॥
निर्णीतौ विक्रमार्केण याथातथ्यपरिश्रमात् ४

अर्थ। भाग्य और उपाय दोनों गाड़ीके पहियेके समान वरावरहैं वे विक्रमादित्य द्वारा परिश्रम से यथार्थ निर्णय किये गये ४॥ दृष्टान्त॥ एक दिन दो जन आपस में झगड़ा करने लगे। एक ने कहा कि कर्म बड़ाहै और दूसरेने कहा बल बड़ा है। फिर भाग्यपक्षवाला बोला कि कर्महीं बड़ा है जो अदना को आला करदेता है। वलपक्षवाला बोला जो वल हो तो संसारको वश करसक्ताहै। इसीतरह झगड़ते हुये दोनों राजा इन्द्र के पास गये और हाथ जोड़के कहने लगे कि

संशोधक का वक्तव्य।

यह पुस्तक अब से बहुत दिन पहिले प्रकाशित हुई थी। परन्तु इसकी भाषा कुछ सुधार मांगती थी। अतः उसका यह संशोधित संस्करण पाठकों की सेवा में भेंट किया जाता है।

इसमें ग्रन्थकारने पहिले विक्रमादित्य के पराक्रम, साहस आदि सद्गुणों के कुछ दृष्टान्त देकर स्त्रीचरित्र का वर्णन और अन्तमें उसका निषेध बड़ी सफलता के साथ किया है।

आशा की जाती है कि कथाप्रियलोग इसके हास्यपूर्ण दृष्टान्तों को पढ़कर उनसे भी यथेष्ट लाभ उठा सकेंगे।

हजरतगंज लखनऊ
५-१-२६ ई०

विनीत-
खूबचन्द शर्मा.

[illegible]
मुद्रक और [illegible]
[illegible]

हे महाराज! हमारा न्याय कीजिये जो इन दोनों में बड़ाहै सो कहिये। इन्द्र बोला यह हमसे न होगा। इस इन्साफ़को वह ही करेगा जिसने योगसाधन किया होगा इससे यही श्रेष्ठ है कि तुम मृत्युलोकमें जावो वहां राजाविक्रमादित्य इस न्याय को चुकावेगा। यह आज्ञा पाय वे राजाके पास आये और राजासे वह न्याय कहा। यह राजाने सुनकर उनसे कहा कि आज तो तुम अपने अपने घरको जावो फिर छह महीने वाद हमारे पास आना। यह सुन वे दोनों निज निज घर गये। राजा जीमें चिंता करनेलगा और विचार कर चरना पहन, कांछचढ़ाय, खांड़ा फरी लेकर विदेशको निकला और मन में यह नियम किया कि इसका भेद विना जाने वाहरही रहेंगे। वहां फिरते फिरते जव समुद्र के किनारे पर पहुँचा तो वहां उसने बड़ा सुहावना एक नगर जो जनो से भरा देखा। उसमें तरह तरह की हवेलियां जिनमें करोड़ों रुपये लगे थे और सिवाय जवाहिरात के और कुछ नजर नहीं आता था उसको देखकर राजा कहनेलगा कि जिसका यह नगर है वह राजा कैसा होगा। ऐसे ही विचारते शहर में फिरते हुये शाम होगई और उस शहर का अंत न आया। फिर क्या देखता है कि एक दूकानमें महाजन शिर निहुड़ाये बैठा है। राजा उसके सामने जा खड़ाहुआ। तव सेठने कहा कि तुम किस देशसे आये हो, तुम्हारा मन मलिन क्यों है और किसे ढूंढ़तेहो और क्या तुम्हारा काम है और क्या नाम है वह मुझसे कहो। वह वोला सेठजी! मेरा नाम विक्रम है। मैं आज आपके पास आयाहूं। मेरे मनमें या

आज राजा से भेंट करूं पर आज भेंट न हुई कल मिलूं और जो वे मुझे नौकर रक्खेंगे तो रहूंगा । बनियां बो तुम प्रतिदिन क्या लेवोगे ? राजा बोला लाख टके एकदि में लूंगा । तब तो सेठ बोला भाई तुम ऐसा क्या काम कर हो जो तुम्हें लाख टके रोज़में रक्खें । राजाने कहा कि जि के पास में रहताहूं उसके गाढ़ी भीड़ में काम आताहूं । त सेठ हँसकर बोला लाख टके हमसे लेवो और भीड़ में हम सहायक हो । ऐसे कहकर प्रातःकाल हुये नौकर रक्खा औ सांझ होतेही २५ लाख गिन दिये । उनमें से उसने आधे भगवान् के नाम संकल्पकर ब्राह्मणको दिये और आधे आधे कंगालोंको और जो बाक़ी रहे उनका भोजन बन के कंगालों को खवादिया । रातमें फिर एक फ़क़ीरने सवा किया उसे भी भोजन करवादिये । आप चने चबाकर रहगये बहुत दिन तक उस साहूकारके पास रहकर इसी तरह ख करतारहा । भाग्यवश एक दिन सेठके मन में कुछ उचा हुआ और एक जहाज़ तैयार कर किसी देश को जाने व उसने विचार किया । विक्रमने विचारा कि अब इसकी सह यता करनी चाहिये । यह विचारकर उसके साथ होके कहा कि मैंने नियम किया था कि किसी गाढ़ी भीड़ में आपका का करूंगा सो अब मुझे लेते चलिये । सेठने अपने जहाज़में उसेभी बैठालिया और कुछ दिनों में वह जहाज़ किसी तूफ़ानमें फँस गया और डूबनेकी तैयारी हुई त्योंही वहांपर लंगर डालदिया और कुछ दिन वहांहीपर ठहरा रहा । उससे आगे एक टापू था जिसमें विद्यावती नाम राजकन्या रहतीथी । उसके साथ हज़ार



श्रीगणेशाय नमः ॥

दृष्टान्तप्रदीपिनी

तीसरा भाग सटीक ॥

मिश्रनिबन्धात्मकः ॥

अथ प्रथमः प्रदीपः ॥

तत्र पूर्वभागे भोजराजवर्णनप्रसंगाद्विक्रमादित्यवर्णनं तत्र तावत्तदीयनामतः शाकप्रवृत्तिमाह अनुष्टुप्छन्दसा ॥

विक्रमी विक्रमार्को हि राजासीत्सार्वभौमपः॥
यस्य नाम्ना वरीवर्त्ति शाकोसौ जगतीतले १

अर्थ। विक्रम पराक्रमवाला, सर्वभूमिपति राजाओंकाभी रक्षक अर्थात् सब राजाओं में श्रेष्ठ विक्रमादित्य राजा हुआ जिसके नाम से जगत् में शाका (संवत्) चला वह आजतक वर्तमान है। इस राजा परही पुतलियों ने कथायें कही हैं कि वक्ष्यमाण (कहेजानेवाले) गुणयुक्त राजाको जनों ने निज निज उपकारकारक, शत्रुसंहारक समझ उनहीं के नाम से शुभ संवत्सर प्रवृत्त किया। उससमय बहुत से देश देश के

सहेलियां तैयार रहतीथीं। जब वह तूफ़ान थँभगया तब सेठने कहा लंगर उठावो और चलो। पर लंगर कहीं अलभ रहाथा वहांसे न हटा बिचारे ज़ोरकर हारे, लाचार हो रहे। निदान निराश होकर परमेश्वर को याद किया कि इस मझधार में तुम्हारे सिवाय और कोई पार उतारनेवाला नहीं है। जहां जहां जिसे जिसे पर जो जो भीड़ें पड़ीं वहां वहां तुमने उसीकी रक्षा की। तुम्हारा नाम दीनदयालुहै तो क्या इस समयमें मेरी सहायता न करोगे। फिर राजा विक्रमादित्य से कहने लगा कि अब अथाह मझधारमें पड़े हुयेहैं और किनारा नहीं दिखाई देता है इससे इससमय में तेरीही बात याद आई कि भीड़पड़े सहारा देऊँगा। अब वह काम करना चाहिये जिसमें मेरी और तेरी जान बचे। राजा इतनी सुनते ही उठा और फरी खांड़ा हाथमें लेकर रस्सा पकड़ जहाजके नीचे उतरगया और वहां जाकर बहुत यत्न किया पर कोई काम न आया। तब सेठ ने कहा कि पालें इसकी चढ़ादो। लोगोंने पालें ले चढ़ाईं। और उधर विक्रमने कूदकर लंगर काट डाला तब वह जहाज़ चल निकला पर उसके कोई रस्सा हाथ न लगा वह वहांही रहगया। विधाताने जो लिखाहै वहही होता है। अब विक्रम वहांसे बहताहुआ चला और जाते जाते उसे एकनगर दृष्टि आया और वहांही जालगा उस शहर का जो दरवाजा था उसपर यह लिखा देखा कि सिंहावतीका विवाह राजा विक्रमादित्यके साथ होगा। यह बांच राजाको अचरज हुआ कि यह किस पंडितने लिखा है। जब उस दरवाजाके भीतर गया तो वहां जाकर एक महल देखा कि जहां परियां थीं,

बड़े बड़े विद्वान् बुलाये गयेथे उन्होंनेही इनके नाम से संवत्
बांधा था ॥ इति प्रथम प्रदीप ॥

अथ द्वितीयप्रदीपः ।

विक्रमं विक्रमार्कस्य वर्णयेत्कः स वै यथा ॥
निमज्जन्तं जले स्त्र्यो ररक्ष मनुजात्रिकम् २

अर्थ । राजा विक्रमादित्य के विक्रम (पराक्रम) को कौ
जन वर्णन करसके कि जिसने जलमें डूबते हुये तीन जनों क
(आप जलमें कूदके) बचाया और निज जीवनकाभी लो
न किया २ ॥ दृष्टान्त ॥ एकदिन राजा विक्रमादित्य दरिया
किनारे एक महल में महफ़िल किये बैठे थे उससमय राग रं
हो रहा था और हरएक रंग रंग की चुहलें होरहीथीं कि चि
प्रसन्न होजावे । एक से एक उत्तम सहेलियां संगमें बैठी थ
राजाका जी अत्यन्त अडिग लग रहा था कि उस वक्त ए
पथिक स्त्रीको संगलिये जिसकी गोद में एक बालक भी
घर से रूसकर निकला था । वे नदी के किनारे महल के प
आकर गुस्से के मारे जल में कूदपड़े । मर्दके एक हाथ में रं
का हाथ और दूसरे में लड़के का हाथ था जब डूबने लगे । त
पुकारे कि ऐसा धर्मात्मा कौन है जो हम तीनों की ज
बचावे । उनमें से मर्द हाय हाय करके पुकारा कि कोई गुस
मार न सकेगा तो इसीतरह बेमौत मरजावेगा और गिर
फिर वह बहुतही पछतावेगा । ऐसी उसकी आवाज राज
सुनतेही लोगोंसे पूछा कि कौन दुःखी पुकाररहाहै ? हरक
ने ... कि महाराज ! एक मर्द और औरत लड़के स

मर्द कोई नहीं था और पलँगपर सिंहावती सोतीथी और चौकीपर सहेलियां बैठीथीं यहभी पलँगपर बैठगया और तुर्त उसको जगा दिया । जब वह उठबैठी तब राजा ने उसका हाथ पकड़लिया और दोनों सिंहासन पर जा बैठे । सब सखियां वहां आ उपस्थित हुईं क्योंकि वे जानती थीं कि राजा विक्रमादित्य यहां आवेगा और उससे इसका व्याह होगा । राजा को देखकर फूलों की माला लेआईं और उनका गन्धर्वव्याह कराया । वह राजा जैसा दुःख पाकर पहुँचा था वैसाही उसने सुख भी भोगा । फिर वे दोनों आपस में रहने लगे । सखियां सेवा में रहती थीं और चकोरी की तरह चांदसा राजा का मुख देखतीथीं, राजाके इसीतरहसे बहुत दिन बीतगये और अपने राजकाज की कुछ सुधि नहीं रही । जैसा राजाने बल किया वैसाही सुख भी भोगा । फिर भाग्य ने बल किया तो उनमें से जो राजाको बहुतही प्यारीथी वह बोली हे राजाजी ! आप कहां आय फँसे हो इनके पाससे जीते जी निकल जाना बड़ा कठिन है । मुझे तुम्हारा नाम और राजकाज का काम सुनकर दयाआई इससे कहाहै कि किसी बहाने सेही यहांसे सटकजाओ । तुम्हारे बिना वहां हजारों जन दुःख पारहे होंगे । यह सुनतेही राजाको अपना राजकाज याद आया और उससे पूछा कि कौन उपाय करें जो यहांसे जासकें । वह बोली कि राजकन्या के यहां घुड़साल में एक घोड़ी है वह उदय से अस्ततक जासक्ती है । यह सुन दूसरे दिन राजा रानी के साथ टहलता हुआ घुड़साल में गया और तारीफ़ करनेलगा तो रानी ने कहा जो तुझे शौक़ है तो किसी पर

डूबते हैं। उनमेंसे वह मर्द चिल्ला रहाहै कि कोई उपकारी ऐसा भी हो कि हम डूबतोंको निकाले। हरकारा यह कहता ही था कि वह फिर पुकारा कि हम तीन जीव डूबते हैं कोई भगवान्का बंदा हमें पार लगावे। यह सुनतेही राजा वहां से दौड़ा और आकर उस नदी में कूदपड़ा तथा एक हाथ में रंडी और दूसरे हाथ में लड़के को पकड़ लिया तब वह मर्द भी राजा से लपटगया। अब सब भारी होने से डूबने लगे। राजा घबराया और ईश्वर को याद किया तथा कहा कि हे नाथ! मैं धर्म के हेतु आया था और इसमें मेराही जी जाताहै। धर्म करते अधर्म होता है, यह कहकर जोर करने लगा पर जोर कुछ काम न चला तब राजाने अपने आगिया और कोयला इन दोनों वीरों को यादकिया तो वे तुर्तही हाज़िर हुये और चारो को उठा करके किनारे पर धरदिया। अब वह विदेशी राजा के चरणों पर गिरपड़ा और बोला महाराज! आपने तीनों को जीवदान दिया तुमहीं हमारे रक्षक और ईश्वर हो। राजा उन तीनों को हाथ पकड़कर रंगमहल में लेगया और बैठाकर कहा तुम्हें जो चाहिये सोही मांगो। तब वह बोला महाराज! हमको हुक्म हो हम अपने घर जावे और जबतक जीवें आपको आशीर्वाद देवें। आपने ऐसा कार्य किया है जिसकी तुलना नहीं। राजाने उनको लाख रुपये देकर बिदा किये॥ इति दूसरा प्रदीप॥

अथ तृतीयप्रदीपः।

विक्रमी विक्रमार्कस्यैश्वर्य्यस्याथ प्रवर्णनम्॥
कः कुर्य्याद्यस्य राष्ट्रे हि लक्ष्मीर्द्रव्यमवर्षयत ३

सवार हो फिर यह भेद तो उसे मालूमही था दूसरे दिन वहही घोड़ी वहां से मँगवाई और उसपर सवार हो वहां फेरनेलगा और शीघ्रही वहां से चल खड़ाहुआ और सांझ हुये राजा निज अम्बावती नगरी में जापहुँचा। वहां नदी के किनारेपर एक सिद्ध बैठाथा, राजाभी उसे देख पास जा बैठा। उस सिद्धका जब ध्यान खुला तो राजाको देख प्रसन्न होकर एक फूलमाला दी और कहा यह हमने तुमको दी। इसका यह गुण है कि जहां जहां जायगा वहां वहां ही जय पावेगा और तू सबको देखेगा और तुझको कोई न देखसकेगा फिर एक छड़ीभी राजाको देके कहा कि इसका स्वभाव यह है कि यह पहर रातको भी सुवर्ण का जड़ाऊ आभूषण जो मांगोगे सो ही देगी और दूसरे पहर एक सुन्दर नारी देगी जिसे देखते ही मोहित होजाय और तीसरे पहर जो इसको हाथमें लेवोगे तो तुमहीं सबको देखोगे और तुम्हें कोई भी नहीं देख सकेगा और चौथे पहर रातको यही काल के तुल्य होजावेगी तो इसके भयसे डरा हुआ शत्रु तुम्हारे पास नहीं आसकेगा। यह बात कह उस योगी ने राजाको विदा किया। राजा जब उज्जैन नगरी के पास पहुँचा तो उधरसे एक ब्राह्मण और भाटको आते देखा। वे जब राजा के समीप पहुँचे तो उन्होंने आशिष दी और बोले कि महाराज! आप के द्वारे पर हम अतिथि आये हुये हैं बहुत दिनों से सेवा की पर हमारा भाग्यही ऐसा था कि कुछ उसका फल न मिला। तब तो उसने सुनतेही छड़ी ब्राह्मण को और भाटको माला दी और उनको भेद सब कहदिया। वे दोनों राजा को

बड़े बड़े विद्वान् बुलाये गयेथे उन्होंनेही इनके नाम से संवत् बांधा था ॥ इति प्रथम प्रदीप ॥

अथ द्वितीयप्रदीपः ।

विक्रमं विक्रमार्कस्य वर्णयेत्कः स वै यथा ॥
निमज्जन्तं जले सद्यो ररक्ष मनुजात्रिकम् २

अर्थ । राजा विक्रमादित्य के विक्रम (पराक्रम) को कौन जन वर्णन करसके कि जिसने जलमें डूबते हुये तीन जनों को (आप जलमें कूदके) बचाया और निज जीवनकाभी लोभ न किया २ ॥ दृष्टान्त ॥ एकदिन राजा विक्रमादित्य दरियाके किनारे एक महल में महफ़िल किये बैठे थे उससमय राग रंग हो रहा था और हरएक रंग रंग की चुहलें होरहीथीं कि चित्त प्रसन्न होजावे । एक से एक उत्तम सहेलियां संगमें बैठी थीं । राजाका जी अत्यन्त आडिग लग रहा था कि उस वक्त एक पथिक स्त्रीको संगलिये जिसकी गोद में एक बालक भी था घर से रूसकर निकला था । वे नदी के किनारे महल के पास आकर गुस्से के मारे जल में कूदपड़े । मर्दके एक हाथ में रंडी का हाथ और दूसरे में लड़के का हाथ था जब डूबने लगे । तब पुकारे कि ऐसा धर्मात्मा कौन है जो हम तीनों की जान बचावे । उनमें से मर्द हाय हाय करके पुकारा कि कोई गुस्सा मार न सकेगा तो इसीतरह बेमौत मरजावेगा और गिरकर फिर वह बहुतही पछतावेगा । ऐसी उसकी आवाज राजा ने सुनतेही लोगोंसे पूछा कि कौन दुःखी पुकाररहाहै ? हरकारों ने खबरदी कि महाराज! एक मर्द और औरत लड़के समेत

मर्द कोई नहीं था और पलँगपर सिंहावती सोतीथी और चौकीपर सहेलियां बैठीथीं यहभी पलँगपर बैठगया और तुर्त उसको जगा दिया । जब वह उठबैठी तब राजाने उसका हाथ पकड़लिया और दोनों सिंहासन पर जा बैठे । सब सखियां वहां आ उपस्थित हुई क्योंकि वे जानती थीं कि राजा विक्रमादित्य यहां आवेगा और उससे इसका व्याह होगा । राजा को देखकर फूलों की माला लेआईं और उनका गन्धर्बव्याह कराया । वह राजा जैसा दुःख पाकर पहुँचा था वैसाही उसने सुख भी भोगा । फिर वे दोनों आपस में रहने लगे । सखियां सेवा में रहती थीं और चकोरी की तरह चांदसा राजा का मुख देखतीथीं, राजाके इसीतरहसे बहुत दिन बीतगये और अपने राजकाज की कुछ सुधि नहीं रही । जैसा राजाने बल किया वैसाही सुख भी भोगा । फिर भाग्य ने बल किया तो उनमें से जो राजाको बहुतही प्यारीथी वह बोली हे राजाजी ! आप कहां आय फँसे हो इनके पाससे जीते जी निकल जाना बड़ा कठिन है । मुझे तुम्हारा नाम और राजकाज का काम सुनकर दयाआई इससे कहाहै कि किसी बहाने सेही यहांसे सटकजाओ । तुम्हारे विना वहां हजारों जन दुःख पारहे होंगे । यह सुनतेही राजाको अपना राजकाज याद आया और उससे पूछा कि कौन उपाय करें जो यहांसे जासकें । वह बोली कि राजकन्या के यहां घुड़शाल में एक घोड़ी है वह उदय से अस्ततक जासक्री है । यह सुन दूसरे दिन राजा रानी के साथ टहलता हुआ घुड़शाल में गया और तारीफ़ करनेलगा तो रानी ने कहा जो तुम्हे शौक़ है तो किसी पर

सवार हो फिर यह भेद तो उसे मालूमही था दूसरे दिन वहही घोड़ी वहां से मँगवाई और उसपर सवार हो वहां फेरनेलगा और शीघ्रही वहां से चल खड़ाहुआ और सांझ हुये राजा निज अम्बावती नगरी में जापहुँचा। वहां नदी के किनारेपर एक सिद्ध बैठाथा, राजाभी उसे देख पास जा बैठा। उस सिद्धका जब ध्यान खुला तो राजाको देख प्रसन्न होकर एक फूलमाला दी और कहा यह हमने तुमको दी। इसका यह गुण है कि जहां जहां जायगा वहां वहां ही जय पावेगा और तू सबको देखेगा और तुझको कोई न देखसकेगा फिर एक छड़ीभी राजाको देके कहा कि इसका स्वभाव यह है कि यह पहर रातको भी सुवर्ण का जड़ाऊ आभूषण जो मांगोगे सो ही देगी और दूसरे पहर एक सुन्दर नारी देगी जिसे देखते ही मोहित होजाय और तीसरे पहर जो इसको हाथमें लेवोगे तो तुमहीं सबको देखोगे और तुम्हें कोई भी नहीं देख सकेगा और चौथे पहर रातको यही काल के तुल्य होजावेगी तो इसके भयसे डरा हुआ शत्रु तुम्हारे पास नहीं आसकेगा। यह बात कह उस योगी ने राजाको विदा किया। राजा जब उज्जैन नगरी के पास पहुँचा तो उधरसे एक ब्राह्मण और भाटको आते देखा। वे जब राजा के समीप पहुँचे तो उन्होंने आशिष दी और बोले कि महाराज! आप के द्वारे पर हम अतिथि आये हुये हैं बहुत दिनों से सेवा की पर हमारा भाग्यही ऐसा था कि कुछ उसका फल न मिला। तब तो उसने सुनतेही छड़ी ब्राह्मण को और भाटको माला दी और उनको भेद सब कहदिया। वे दोनों राजा को

हुआ तब वहां एक सिद्ध आया। बाईं तरफ़का जो कुआं था उसमें से उसने एक तूंबा जल निकाला। फिर वह बंदरिया भी उतर आई। सिद्ध ने एक चुल्लू पानी उसपर डाल दिया तो वह सुन्दर स्त्री होगई फिर उस रूपवती स्त्रीसे योगी ने भोग किया। जब तीसरा पहर हुआ तो योगी ने कुयें से पानी खैंच उसपर छींटा मारा कि वह फिर बंदरी बनगई और वृक्ष पर जा चढ़ी। योगी भी पहाड़ की गुफा में जा बैठा और अपना योग करनेलगा। राजाने प्रकट हो चतुराई कर बाईं तरफ़ के कुयें से जल निकाल उस बंदरियाके ऊपर छींटामारा। फिर वह ऐसी सुंदर नारी हुई कि उसे देख इन्द्रकी अप्सरा भी लजाती थी। उसने राजा को देख लाज से मुँह फेरलिया। राजा ने कामके वश होकर उसको अपने पास बिठालिया। जब उसने प्यारकी आंख देखी तो हँसकर बोली महाराज! हमारी ओर कुदृष्टि से मत देखो क्योंकि हम तपस्विनी हैं जो शाप देंगी तो तुम भस्म होजावोगे। राजा बोला कि शाप मुझे न लगेगा। मैं राजा वीर विक्रमाजीत हूं कोई मेरा क्या करसक्ता है। मेरे हुक्म में तालबेताल हैं। विक्रम का नाम सुनतेही वह बाला राजाके चरणों पर गिरपड़ी और कहा महाराज! तुमतो नरेश हो हमारा उपदेश सुन यहां से जल्दी जाओ। अभी यती आवेगा तो दोनों को शाप देकर जलावेगा। तब नरपति बोला कि हम यती के सामने न होंगे वह हमारा कुछ न कर सकेगा परन्तु स्त्रीहत्या हमें लेनी उचित नहीं है क्योंकि स्त्री-हत्या लेने से अन्त में नरक भोग करना पड़ता है पर यह बता कि उस सिद्धने तुझे कहां पाया। तब वह बोली कामदेव

आशीर्वाद देकर कहनेलगे कि हे महाराज ! इस समय आ
राजा कर्ण हो तुम्हारे बराबर आज दिन कोई नहीं है।
कहा और विदा होकर गये । फिर वे दोनों भगड़ालू
उसीसमय राजा के पास आकर बोले कि आपने छह मही
की कहीथी अब हम हाजिर हैं । राजा बोला कि
विना कुछ नहीं होता है। यह सुन वे प्रसन्न हो बोले
न्याय करदीजिये । राजा बोला कि कर्म के विना कुछ
होसके और बल विना कर्म भी कुछ अकेला काम
आता । इससे इन दोनों को गाड़ी के पहियों के
जानो ॥ इति चौथा प्रदीप ॥

मेरा बाप है और पुष्पावती मेरी मा है । मैंने उनके कुल में अवतार लिया था जब मैं बारह वर्षकी हुई तब उन्होंने एक आज्ञा दी पर मैंने वह भंगकी तब माता, पिताने क्रोध कर मुझे यती को दे डाली । यह मुझे अपने वश करके इस वनमें लेआया और वन्दरी करके वृक्ष पर चढ़ादी । इसी रूप से एक वर्ष हुआ कि मैं इस वनमें हूं । सत्य है कि भाग्यको कोई नहीं मिटा सक्ताहै यही सोचकर मैं चुपकीहूं । तब राजा बोला मेरा जी चाहता है कि तुझे अपने घर ले जाऊं । वह बोली महाराज ! मेरे मनमें भी यही है पर कैसे चलूं तुम्हारा नगर तो समुद्रपार है । तब राजाने वचन दिया कि मैं तुझे ले चलूंगा तुम समुद्र नांघनेकी फ़िक्र मत करो इस तरह ले जाऊंगा कि तुझे मालूम भी न होगा । इस प्रकार दोनों ने आपस में बातें कर आनन्दसे रात्रि विताई और सवेरा होते ही दूसरे कुयें से पानी निकाल उसपर छिड़का और वह बन्दरिया हो वृक्षपर जा चढ़ी । राजा वहीं छिपा रहा । फिर उस समय योगी आ पहुँचा और वही यत्नकर थोड़ी देर विश्राम कर जब चलने लगा तब वह सुन्दरी बोली महाराज ! मेरी एक विनय सुनिये मैं कुछ प्रसाद आपसे मांगतीहूं कृपा कर दीजिये । योगीने हँसकर एक कमलका फूल उसे दिया और कहा कि यह एक लाल प्रतिदिन देगा और कभी न कुँभलायेगा इसको अच्छी तरह रखना । उस सुन्दरी ने वह कमल अपनी चोली में रखलिया और बहुत प्रसन्न हुई । फिर योगी उसे बन्दरी बनाके चलागया । राजाने फिर कुयेंसे पानी निकालकर उसको नारी बनाई और उसने वह कमलका फूल

चता है उसी जगह रथ खड़ा रहता है। जब सूर्य कुछ भोजन करलेता है तब रथ चल निकलता है और खम्भ भी घटता जाताहै और सायंकाल के समय पानी में लोप हो जाता है। इसको देवता या राक्षस कोई नहीं जानता। यह बात ब्राह्मण से सुनकर राजाने अपने मन में रक्खी और प्रकट न की। उस ब्राह्मणको कुछ रुपये दे विदा किया और ताल वेतालको याद किया। वे दोनों वीर आकर उपस्थित हुये। और कहा हमें जो इस वक्त आपने याद कियाहै सो आज्ञा कीजिये। कहिये स्वर्ग को, कहिये पाताल को, कहिये समुद्रपार लेजावें इन तीनों लोकों में आपकी इच्छा हो वहां लेचलें। तब राजाने हँसकर कहा हम एक कौतुक देखने जाया चाहते हैं वह उत्तराखंड में है वहां तुम लेचलो। यह बात सुन कर वे वीर राजा को कांधे चढ़ा लेउड़े और तुर्त उस जगह जा पहुँचाया। राजाने वह तालाव देखा कि चारों घाट उस के सुस्ता हैं, हंस, बगुले उसमें फिरते हैं और मुर्गावियां, चकोर और पनडुब्बियां कल्लोलें करती हैं। कमल के फूलों की सुगन्धिके साथ पवन चली आती है और मेवेदार वृक्षों की डालियां लचके खाती हैं, उनपर भौंरे गूंजरहे हैं, मोर बोलरहे हैं, कोयल कूक रही है और तरह तरह के पक्षी हुलास में हैं। राजा यह सामां देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। रातभर वहीं रहा। जब सवेरा हुआ सूर्य्य निकला तो जो कुछ ब्राह्मणने कहाथा वह सब वहां देखकर वीरों से कहा कि एक बात मेरे जीमें आती है कि तुम मुझे ले जाकर इस खम्भ पर [illegible] दो और भगवान् का ध्यान कर अपने स्थानको

राजाको दिखाया और कहा महाराज! यह एक अद्भुत वस्तुहै इसमें से एक लाल प्रतिदिन निकलेगा। राजाने यह बात सुन कहा यह कुछ विचित्र बात नही भगवान् की माया सर्वोपरि है वह क्या क्या नहीं करसकती है ऐसी २ बातें कर रात्रि सुखसे काटी। प्रभात हुआ तब उस कमलमें से एक लाल गिरा दोनों ने यह आश्चर्य देखा। तब राजाने कहा कि चल अब यहां ठहरना उचित नहीं है हमारे देशको चलो। राजाकी यह बात सुनकर वह बोली महाराज! मेरी एक विनय सुनिये मैं पांव पड़, करजोड़ कहतीहूं कि आप बड़े दानी हो ऐसा दानी मैंने कहीं नही सुना। ऐसा न हो कि किसी को मुझे दान कर दो मैं दासी हो हरवक्त तुम्हारी सेवा करूंगी। राजा बोला यह नहीं होसक्ता कि कोई अपनी नारी को परपुरुष को दे यह धर्मविरुद्ध और लोकविरुद्ध है। इस प्रकार उसको विश्वास देकर दोनों वीरों को बुलाया। वे उपस्थित हुये फिर उनसे कहा हमारे देशको लेचलो फिर वे वीर उनको तख्तपर बैठा कर हवाकी तरह लेउड़े। वे तो अपने नगरकी ओर गये और वह योगी वहां आया और उस सुन्दरी को न देखकर पछ-ताता हुआ मनमार, मुरझाकर रह गया। राजा अपने नगर के पास आया और सिंहासन से उतर उस राजकन्याका हाथ थॉभ नगरको चला। मार्ग में किसी का एक सुन्दर लडका दरवाजेपर खेल रहाहै। राजकन्या के हाथ में कमलका फूल देखकर वह लड़का रोने लगा और बिलक बिलक बोला कि मैं यह फूल लूंगा। राजाने कमल उसके हाथसे लें लड़के को दिया। लड़का फूल ले हँसताहुआ अपने घरमे गया। राजा

चले जावो। तब वीरों ने राजाको खम्भपर ले जाकर बिठला दिया और वे अपने मकानको गये। ज्यों ज्यों वह खम्भ बढ़ने लगा त्यों त्यों राजा अपने मनमें भय करने लगा। जितना ही सूर्य्य के समीप पहुँचताथा उतनाही गर्मी से जलाजाता था निदान सूर्य्य के निकट पहुँचा तो जलकर अङ्गार होगया। जब खम्भ रथके बराबर पहुँचा तो रथवान् ने उस पर एक जलाहुआ मुर्दा देखकर अपने रथके घोड़ों की बाग खैंचली। सूर्य्य ने भी झुककर देखा और कहा कि यह साहस आदमी का नहीं। यह कोई योगी है या कोई देवता अथवा गन्धर्व है। इसके होते हुये मैं इस जगह किस तरह भोजन करूंगा। फिर सूर्य्य ने अमृत ले इसपर छिड़क दिया। तब राजा "राम-राम" कह उठा और सूर्य्यको देखकर दण्ड-वत् की और हाथ जोड़ कहनेलगा कि मेरे और मेरे कुल के धन्य भाग्य हैं जो आपके दर्शन पाये। मैंने इस जन्म में जो यज्ञदान किये थे उसी के कारण तुम्हारे चरण देखे। ज़िन्दगी का जो फलथा वह मुझे मिला। संसारमें इच्छा सबकोहै किन्तु जिसपर तुम्हारी कृपा होती है उसीको दर्शन मिलते हैं। यह सुनकर सूर्य्य बोले कि तू कौन है और तेरा क्या नामहै तुझे देखकर मेरे जीमें तरस आता है। अपना वृत्तान्त जल्दी कहो। राजा बोला, हे स्वामी! मैं अम्बावती पुरी के राजा गन्धर्वसेन का बेटा विक्रमहूं। आपकी कथा मैंने एक ब्राह्मणसे सुनी थी जिससे मुझे आपके दर्शनकी इच्छा हुई और आप की टोह में आ आपके चरण देखे। अब मेरे लिये आज्ञा हो मैं जाना चाहताहूं। सूर्य्यने हँसकर अपना कुण्डल उतार

भी अपने मंदिरमें जा विराजा। जब सवेरा हुआ तो उस कमलके फूल मेंसे एक लाल गिरा। लड़के के बापने उसे उठा लिया और कमलको छिपारक्खा। इसीप्रकार प्रतिदिन लाल निकलता रहा। एक दिन वह बहुतसे लाल लेकर बाजार में बेचने गया यह खबर कोतवाल को हुई। कोतवालने उसे पकड़मँगवाया और कहा कि तू तो बनियां है ये लाल कहांसे लाया तू चोर है इत्यादि कह उसको बहुत दुःख दिया और लाल लेकर राजाके पास आया और सब वृत्तान्त कह सुनाया। तब राजाने कहा उसको बुलाओ और उससे पूछो कि तुमने ये लाल कहां पाये। बनिये को बुलाकर पूछा कि ये लाल तू कहां से लाया। राजाने भी उससे कहा कि जो तू सत्य सत्य मुझसे कहेगा तोमे तुझे और भी धनदूंगा और झूंठ बोलेगा तो देशसे निकाल दूंगा। उसने विनय की कि सुनो हे भूपाल! मेरा बालक द्वारे खेलताथा उसके हाथ में कोई कमल का फूल देगया और उसने आकर मुझे दिया। मैंने रातभर उसको अपने पास रक्खा सवेरा होतेही उसमें से एक लाल निकला फिर तब से प्रतिदिन एक एक लाल योंही निकलता है। वह फूल अब भी मेरे घरमें है। राजाने कहा ये बातें तो तुमने सब सच्ची कहीं अब तू ये लाल अपने घर लेजा। कोतवालने बहुत बुरा काम किया कि विना अपराध तुमको पकड़ लाया। इसका न्याय अब यह है कि लाख रुपये कोतवाल तुमको दण्ड दे फिर कोतवाल से उसको लाख रुपये दिलवाकर घर को भेज दिया॥ इति सातवां प्रदीप॥

राजा को दिया और कहा अब तू निडर हो राज कर। तद-न्तर सूर्य्यका रथ आगे चला और स्तंभभी घटने लगा उस समय राजा ने अपने वीरों को बुलाया। वीर आ उपस्थित हुये राजा उनके कांधों पर सवार होकर अपने नगर को ... शहर में प्रवेश करने लगा उस समय सामने से ...या। उसने राजा से कहा कि महाराज! जो ...ये हो वे मुझे दान कीजिये और यश, धर्म ...लीजिये। राजा बोला हे मतिहीन योगी! ऐसा ...कब पाया जो कुण्डल मांगता है। वह योगी क-...महाराज! मैंने योग तो कुछ नहीं साधा पर सुनाथा कि राजा बड़ा दानी है इससे मैंने आपसे याचना की है। राजा ने हँसकर कुण्डल उतार उसको दिये और आप प्रसन्न होता हुआ अपने घरमें आया॥ इति पांचवां प्रदीप॥

अथ षष्ठप्रदीपः।

किमदेयं ज्ञानिनो हि दुस्त्यजं किं धृतात्मनः॥
सद्यो लब्धान्नपूर्णापि विक्रमेणार्पिता द्विजे ६

अर्थ। ज्ञानीजन को क्या अदेय है और धृतआत्मा (संतोषवाले) को क्या दुस्त्यज है अर्थात् ज्ञानवान् संतोषी जन चाहे सो देते तथा त्याग करते हैं। जैसी सद्यः (तत्काल) प्राप्त हुई अन्नपूर्णा की प्रतिमा भी विक्रमादित्य ने ब्राह्मण को दान करदी ६॥ दृष्टान्त॥ एक दिन राजा विक्रमादित्य अर्द्ध-रात्रि के समय सोताथा और नागर भी निद्रादेवी के अधीन थे किसी आदमी की आवाज भी न आती थी कि उत्तरदिशा

अथ अष्टमः प्रदीपः।

तथा वृद्धद्विजायासौ बहुद्रव्यं समर्पयत्॥ किमदेयं हि साधूनां दुस्त्यजं किं धृतात्मनाम्॥८

अर्थ। तैसे किसी वृद्ध ब्राह्मण को राजाने बहुतसा द्रव्य दिया सो ठीकही है साधुजनों को क्या अदेय है और पूरेजन किसको नहीं त्याग सकते हैं ८॥ दृष्टान्त॥ एक दिन राजा विक्रमादित्य ने होमका आरंभ किया। वहां अनेक देश के ब्राह्मणलोग न्योता देकर बुलवायेथे तथा उसके देश के जितने राजा और साहूकारथे वेभी आयेथे। भाट, भिखारी, भिक्षुक भी यज्ञका वृत्तान्त सुनकर आये। देश देशके राजालोग अपने सब लोगोंको लेले आये और जितने देवताथे वेभी सबके सब आये। राजा अपने सिंहासनपर बैठाहुआ यज्ञ करनेलगा उस समय एक बूढ़ा ब्राह्मण आया। राजा यज्ञका मन्त्र पढ़ रहाथा उस ब्राह्मणको दूरसे देख कर मन मेही दण्डवत् की। उस पण्डितने योगविद्यासे जानकर हाथ बढ़ा राजाको आशीर्वाद दी कि चिरंजीवी हो फिर राजा ने उस ब्राह्मण से कहा कि महाराज! आपने बहुत मन्द काम किया कि विना प्रणाम आशीर्वाद दी॥ चौ०॥ जबतक पॉव न लागे कोई। वह आशीष शाप सम होई॥ ब्राह्मण ने कहा महाराज! जब तुमने मनही मनमें दण्डवतकी है तब मैंने आशीष दी है यह बात सुन राजाने उस ब्राह्मणको लाख रुपये दिये। वह ब्राह्मण कहने लगा महाराज! इतने रुपयों में मेरा निर्वाह न होगा। ऐसा कुछ विचार कर दीजिये कि जिसमें मेरा काम

में नदी के पास एक स्त्री पुकार पुकार के रोने लगी उसका शब्द राजा को सुन पड़ा। राजा मनमें चिंता करनेलगा हमारे नगरमें क्या कोई दुःखी आया है या वह अपने दुःख से रो-रहा है फिर मन में विचार कर ढाल तलवार ले उस ओर को चला और नदी किनारे पहुँचकर वसन छोड़, लँगोटा मार, पैरकर पार हुआ तो क्या देखता है कि एक अति सुन्दरी जवान नारी खड़ी हुई कूक रही है। उसके पास जाकर राजाने पूछा क्या तुझे पुरुषका वियोग है या पुत्र का शोक है अथवा सौतका दुःखहै? बता किस दुःख से रोती है। वह स्त्री कहनेलगी कि राजा! हमारा पति चोरी करताथा उसको शहरके कोतवाल ने पकड़कर शूलीपर चढ़ा दिया है। मैं उसके स्नेह से कुछ भोजन करवाने को लाई हूं। चाहतीहूं उसे भोजन करवाऊं किन्तु शूली ऊंची है और मेरा हाथ उस के मुँहतक पहुँचता नहीं है इस दुःख से मैं रोती हूं। नरपति ने कहा यह तो थोड़ी सी बात है इसके वास्ते तू क्यों रोती है। उसने जवाब दिया कि मुझे यह थोड़ी बातही बड़ी है। तब राजा बोला कि मेरे कांधेपर चढ़कर उसे खिलादे। वह कंकालिन राजा के कांधेपर चढ़ी और उस शूलीपर टँगे हुये चोरको खानेलगी उसके मुँहसे राजा के शरीर पर रक्त गिरने लगा। राजाने मनमें सोचा यह पिशाचिनी है और इसने मुझे धोखा दियाहै। फिर राजाने उससे पूछा कि सुन्दरी! कह तेरा पिया भोजन करताहै कि नहीं। वह कंकालिन बोली रुचिसे खाचुका और इसका पेट भर गया। मुझे कांधेसे नीचे उतार देवो। राजा ने उसे उतार कर फिर कहा क्या उसने चाहसे

होजावे फिर राजाने पांचलाख रुपये उसको दिये । वह लेकर अपने घरको गया और जो जो ब्राह्मण उस यज्ञमें थे उनको भी बहुत कुछ दिया । इसलिये हे राजा भोज ! मैंने तुम्हारे आगे यह वृत्तान्त कहा तुम इस सिंहासनपर बैठने योग्य नहीं हो। सिंह की बराबरी सियार नहीं करसकता और हंसकी बराबरी कौवे से नहीं होसकती तथा बन्दर के गले में मोती की माला नहीं सोहती और गधेपर पाखरि नहीं फबती । मेरा कहा मान और इस विचार को दूरकर नहीं तो किसी दिन तेरी प्राणहानि होगी ॥ इति आठवां प्रदीप ॥

अथ नवमः प्रदीपः ।

तथा स्वजीवबलितो लब्धाप्यतिमनोरमा ॥
कन्याऽर्पितावियोगार्तेदुस्त्यजंकिंधृतात्मनाम् ९

अर्थ । जैसेही निज जीवको बलिदान देनेसे प्राप्तहुई सुन्दरी कन्याको राजाने उसके विरहसे व्याकुल जनको देदी सो पूरे जन क्या नहीं त्याग देते हैं ९ ॥ दृष्टान्त ॥ एक दिन वसन्तऋतुमें टेसू फूला हुआ था, आम मौराया हुआ था, कोयल कूकरही थी, ठण्ढी हवा चल रही थी उससमय राजा विक्रमादित्य अपने बाग में बैठाहुआ हिंडोला सुनताथा । इतने में किसी देशसे भूला भटका एक वियोगी आनिकला और राजा के पांवोंपर गिरपड़ा और कहनेलगा स्वामी ! मैंने बहुत दुःख पाये हैं अब मैं आपकी शरण आयाहूं । उस वियोगी का यह रूप बनगया कि सब शरीर का रक्त सूखगया था और आंखसे कम सूझताथा अन्न पानी सब छोड़दिया था, किसी

खाया ? तब कंकालिन हँसकर बोली जो तुझे चाहिये सो तू मांग में तुझ से बहुत प्रसन्न हुई। मैं कंकालिनहूं मुझ से मत डर। राजा बोला मैं तुझसे क्या डरूंगा और क्या मांगूंगा तैंने तो मेरे कांधे पर चढ़ मुर्दे को खाया है मुझे क्या देगी। वह फिर बोली कि राजा! तू इसके विचार में मत पड़ कि मैंने क्या किया और क्या न किया जो तुझे इच्छा है वह मुझसे मांगले। राजाने हँसकर कहा अच्छा मुझे अन्नपूर्णा दे और जगत्में यश ले। कंकालिन बोली कि अन्नपूर्णा मेरी छोटी बहिन है तू मेरे साथ चल में तुझे दूंगी। इसतरह आपस में दोनों वहां से वचनकर आगे आगे कंकालिन और पीछे पीछे राजा चले और नदी किनारे जापहुँचे। वहां एक मंदिरथा उसके द्वार में कंकालिनने ताली मारी और अन्नपूर्णा प्रकट हुई। उससे कहा कि यह राजा विक्रम है इसने मेरी सेवा की है और मैंने इससे वचन हारा है यदि मेरा स्नेह तेरे मन में है तो इसको अन्नपूर्णा दे फिर उसने हँसकर राजा को एक थैली दी और कहा इससे जो जो खानेकी वस्तु मांगो वे सब पावोगे। राजा उस थैली को ले प्रसन्न होता हुआ नदी के किनारे आ स्नान, ध्यानकर निश्चिन्त हुआ फिर वहां एक ब्राह्मण आपहुँचा उसको राजा ने बुलाया और कहा कुछ भोजन करोगे? उसने कहा हां भूंख लगी है आप देवो तो मैं भोजन करूं। राजा बोला क्या भोजन करोगे? किस वस्तु पर मनहै? ब्राह्मण बोला इस समय पक्वान्न खाऊंगा। राजा अपने जी में सोचने लगा कि अब पक्वान्न न पहुँचेगा तो मैं ब्राह्मण से झूठा हूंगा पर थैली में हाथ डालकर देखा तो

प्रकार धीरज नहीं धरताथा। राजा ज्यों ज्यों समझाताथा त्यों त्यों वह विरह से व्याकुल हो हो रोताथा। तब राजाने कहा तुम अपने मन को सँभालो इतने दुःखी क्यों होतेहो धैर्य धारण करो। किस कारणसे तुम्हारा यह रूप होगयाहै। किस देशसे आयेहो और क्या तुम्हारा नामहै बताइये। वह दुःखित वियोगी बोला कि मेरा नगर कलंजर देशमें है। मैं मतिहीन हूं। एक यतीने मेरे आगे यह बात कहीथी कि एक रूपवती स्त्री एक जगहहै वैसी सुन्दरी कहीं भी नहीं है। मानो वह कामदेव से पैदाहुई है। लाखों राजा लोग चाहना कर उसके यहां आते हैं और जल जल जाते हैं। उसका वृत्तान्त यह है कि उसके बापने वहां आग जलाकर एक कराही भर घी चढ़ा रक्खा है वह घी खौलता रहताहै और उसने यह प्रतिज्ञा की है कि जो उस कराह में स्नानकर जीता निकल आवेगा उससे कन्या का ब्याह करूंगा। यह बात उस योगी से सुनकर मैं भी वहां गयाथा। मैंने अपनी आंखों से यह देख आश्चर्य किया। वहां हजारों राजा लोग देश देश से लाखों नौकर चाकर साथमें लेकर आते हैं। उनमें से जो इच्छा करता है वह कराह में गिरकर जलभुन जाताहै। जबहीं से उस राजकन्याकी सुधि करकर मैंने अपना यह रूप बनाया है। यह बात सुनकर राजा ने कहा आज तुम यहां रहो। कल हम तुम मिलकर वहां चलेंगे और उसे तुम्हें दिखादेंगे विश्वास रक्खो। फिर उसको स्नान करवाया और भोजन करवा अपनी सभामें बैठाया और आज्ञादी कि जितने सांगीत विद्यावालेहैं वे सब तैयार हो हो यहां आकर उपस्थित होवें और अपना अपना

पकान्नही निकला । फिर ब्राह्मणने पेटभरकर खाया और बोला महाराज ! भोजन तो मैंने किया अब इसकी दक्षिणा भी दीजिये । राजाने कहा जो दक्षिणा मांगोगे सो मैं दूंगा । ब्राह्मण बोला कि यह थैली मैं दक्षिणा पाऊं तो आनन्दसे अपने घर जाऊं फिर वह थैली ब्राह्मण को देकर राजा अपने घर को चला ॥ इति छठा प्रदीप ॥

अथ सप्तमप्रदीपः ।

तथा परिश्रमाल्लब्धं मणिं बाले निवेदितम् ॥
श्रुत्वापि खेदं न प्राप दुस्त्यजं किं धृतात्मनाम् ७

अर्थ । जैसे अत्यन्त परिश्रम से प्राप्त हुई मणिको बालक के लिये दी हुई सुनकर भी विक्रमादित्य खेदको न प्राप्तहुये । यह ठीकही है सन्तोषी जनों को क्या दुस्त्यज है ७॥ दृष्टान्त ॥ एक दिन वीर विक्रमादित्य अपने दरबारमें बैठाथा और अन्य सब राजा लोग भी उपस्थित थे उससमय एक बढ़ई ने आकर प्रणाम किया और कहा महाराज ! मैं आपके दर्शनको आयाहूं और आपके लिये भेंट लायाहूं । राजाने आज्ञाकी कि लेआ । बढ़ई ने जो यन्त्रका घोड़ा बनाया था वह भेंट किया राजाने घोड़ेको देखा और उससे पूछा कि इसमें क्या २ गुण हैं ? बढ़ई ने कहा महाराज ! इसमें ये गुणहैं कि यह न कुछ खाताहै और न कुछ पीता है और जहां चाहो तहां लेजाता है । दरियाई घोड़े के बराबर है । घोड़ा उससमय चलता था किसी जगह ठहरता न था और कूद फांद रहाथा । ज्यों ज्यों राजा देखता था प्रसन्न होता था । फिर राजा ने पसन्द करके कहा कि इस

गाना सुनावें। राजाकी आज्ञा पा सब आये और अपने अपने गुण प्रकट करनेलगे। राजा ने उससे कहा कि इनमें से जिस वेश्याको तुम चाहो वह तुम्हें देदें तुम यहां बैठकर सुखभोग किया करो और उसका विचार मनसे भुलादो। वह वियोगी बोला महाराज! यदि सिंह सात दिन भी उपासकरै तो घास नहीं चरताहै। मैं उसकी ही चाहना रखताहूं अन्य की नहीं। फिर किसी प्रकार रात्रि बीती और तड़का हुआ तो राजाने स्नान, पूजाकर उन वीरोंको याद किया। वे तुर्त आखड़े हुये और विनयकी कि महाराज! क्या आज्ञाहै तुम्हें किस देशको लेचलें। राजा बोला जहां यह प्रेमी कहै। उसने कहा राजकन्या के नगरमें ले चलो। राजाने उसको तख्तपर बैठा और आप भी बैठकर अगिया, कोयला दोनों वीरोंको आज्ञादी कि उसी देश में लेचलो। वीर सुनतेही ले उड़े और एक क्षण में उसी शहरमें जाकर सिंहासन रखदिया। राजाने वहां जाकर देखा कि बाजे बजरहेहैं और मंगलाचरण होरहाहै और वह राजकन्या हाथ में फूलों की माला लिये फिरती है। जो राजपुत्र उसके लिये वहां गये हैं वे सब खड़े हैं परन्तु किसी का हियाव नहीं पड़ता कि उस कराह में कूदे। और जो कोई प्राण झोंकता है वह जलभुन जाता है। जब राजा विक्रम भी उस कन्या के पास गया तो उसके रूपको देख मोहितहोरहा और कहा कि जिससे यह कन्या पैदाहुई है उसकी कोखको धन्यहै। आदमी तो क्या देवता भी इसे देखें तो वे बेसुधि होजावें इतनी बात कहकर राजा दोनों वीरों से बोले कि इस कराह में हम कूदते हैं तुम सचेत रहना। वीर बोले महाराज! निश्चिंताईसे

को मैदानमें फेरकर दिखा दे ज्योंही उसने कड़ा किया फिर तो धूलिही दृष्टि आती थी और घोड़ा मालूम न होता था। जब राजाने घोड़े में ऐसे गुण देखे तो दीवान को बुलाकर कहा कि लाख रुपये दो। दीवानने कहा महाराज! यह काठका घोड़ा है लाख रुपये के योग्य नहीं है फिर राजाने दो लाख रुपये कहे। दीवान ने अपने मनमें सोचा कि कुछ और तकरार करूंगा तो और बढ़ेंगे इससे रुपये दियेगये। वह बढ़ई रुपये ले अपने घरको गया और चलते हुये यह कहगया कि इसपर सवारहोते न कड़ा कीजो न एँड़ मारियो पर भाग्यका लिखा कोई मिटा नहीं सक्ता जो बात हुआ चाहती है वह होतीही है। कई दिन बाद राजा ने घोड़ा मँगवाया और अपने सभासदों से कहा कि कोई तुममें से सवार होकर इस घोड़े को फेरे तो हम देखें। यह बात राजा से सुनकर एक एक का मुँह देखने लगा पर घोड़ेकी चालाकीसे कोई न चढ़ा। तब राजा झुंझलाकर बोला घोड़े को साज लगाकर तैयार करलाओ। यह बात सुनतेही एककी जगह हजारों आदमी दौड़े और जल्दी तैयार करलाये। राजा सवार होकर वहां फेरने लगा और चाहता था कि आसन जमाकर घोड़े को अपने वशमें लावे पर वह रानों से निकला जाता था। और पारे की तरह एक जगह नहीं ठहरता था छलावे की तरह छल कररहा था। राजा बढ़ई की बात भूलगया और घोड़े के एक चाबुक लगादी फिर तो वह आग बबूला होकर ऐसा उड़ा कि समुद्र पार लेगया और एक जंगल में वृक्ष के ऊपरसे गिरा और आप रानों से निकल गया। राजाभी वृक्ष पर से लड़खड़ाता

कूदिये और किसी बात का डर न कीजिये। तब राजा कराह के पास गया और उसमें कूदपड़ा। कूदतेही जल भुन राखहो गया। वेताल लोग यह देखकर शीघ्रतासे अमृत लेआये और राजाके ऊपर छिड़का। राजा भी उससे राम राम कहता खड़ा हुआ और जितने ब्राह्मण वहां थे वे जय जय करने लगे। उस राजकन्या ने राजाके गले में फूलों का हार डालदिया। जब वह जयमाल उसने राजा को पहनादी तब सब लोग अचम्भेमे रहगये कि यह राजा कोई अद्भुत शक्तिवाला आया जो जलकर भी फिर जी उठा। यह काम मनुष्यका नहीं है यह कोई देवता है। वहांके राजाकी इच्छा पूरीहुई उसने उस कन्याके व्याहकी तैयारीकी। राजाके देश के जितने लोगथे सब प्रसन्नहुये और मन्दिर में भी रानियां मंगलाचार करने लगी। इसप्रकार राजा से उसका व्याह कर दिया। बहुत से जवाहिरात, घोड़े, जोड़े, हाथी, पालकियां और कई करोड़ का माल असबाब दिया तथा आधा राज्य संकल्प कर दिया एवं दासी दास भी बहुतसे दिये। तब यह विरही जो उसके साथ था देख देख बहुत प्रसन्न हुआ। जब सबदे ले चुके तो राजा ने वहां से विदा हो उस सब असबाब और माल समेत उस व्याही हुई दुलहिन को उस विरही के साथ कर कहा अब तुम अपने घर जाओ। हमपर दया राखियो। वह बोला हमारा मुँह इस योग्य नहीं है कि तुम्हारी कुछ प्रशंसा करें। जैसा उपकार आपने कियाहै ऐसा न हमने आंखों देखा और न कानों सुनाहै। इस कलियुग में आप कोई अवतार हो। मैं एक जिह्वासे आपकी कहां तक बड़ाई करूं। मैंने जो इच्छाकी

हुआ नीचे गिरपड़ा। वहां से मार्ग समीपही था। जब राजा को होश आया तब अपने मन में कहने लगा कि देखो देश, नगर, राजपाट और अपने, पराये सबको छुड़ाकर भाग्य मुझे यहां ले आया अब देखिये आगे क्या होगा। यह मनमें विचार कर धीरज बांध, उठकर वहां से आगे चला और ऐसे महावन में जापड़ा कि फिर निकलना मुश्किल होगया पर जैसे तैसे उस जंगल से भूला भटका दश दिनमें सात कोस राह चलकर फिर एक ऐसे वन में जा पहुँचा कि जहां ऐसा अँधियाराथा कि हाथको हाथ न दीखता था और चारों ओर शेर, गैंड़े, चीते आदि भयानक जीव बोल रहे थे जिनके डरावने शब्द सुनकर राजा कभी पूर्व, कभी पश्चिम, कभी उत्तर और कभी दक्षिण की ओर भटका भटका फिरता था पर कहीं राह न मिलती थी। इस तरह दुःख भोगता हुआ पन्द्रह दिनके बाद एक ओर जा निकला। वहां एक दृश्य दिखाई दिया कि एक मकान है और उसके बाहर एक बड़ा दरख्त और दो बड़े कुयें हैं। उस दरख्त पर एक बँदरिया बैठी है वह कभी नीचे उतरती है और कभी ऊपर चढ़ती है। राजा यह कौतुक छिपा हुआ देखता रहा फिर ऊपर को निगाह गई तो क्या देखता है कि उस हवेली पर एक बालाखाना है। फिर राजा ने जब वृक्ष पर चढ़कर देखा तो वहां एक पलँग बिछा है और सब असबाब इकट्ठा धरा है। तब राजाने मन में विचारा कि अभी प्रकट होना अच्छा नहीं है पहले मालूम करूं कि यहां कौन आता है और कौन जाता है। जब ठीक दो पहर दिन

थी सो आपने पूरीकी । इसका भरोसा हमें न था कि हमारी चाहना पूरी होगी। राजकन्या भी हाथ जोड़कर राजासे कहने लगी कि महाराज! मेरा यह महादुःख तुमने छुड़ाया नहीं तो मेरा बाप ऐसा पापी था कि आपतो नरक भोग करता और मैं उमर भर अनब्याही रहती ॥ इति नवां प्रदीप ॥

अथ दशमःप्रदीपः ।

तथास्वपौरुषाल्लब्धां कन्यां चातिमनोरमाम् ॥
विप्रायादात्सुविधिना दुस्त्यजं किं धृतात्मनाम् १०

अर्थ। जैसे निज पुरुपार्थ सेही प्राप्त हुई भी अत्यन्त सुन्दरी कन्या को विधि से ब्राह्मण के लियेही दानदी सो पूरे जन क्या नहीं त्यागदेते हैं १० ॥ दृष्टान्त ॥ एक दिन राजा विक्रमादित्य उज्जयिनी नगरीको गया और अपने सब आदमियोंको विदाकर रातको आप वहांही रहा और आराम किया। अर्द्धरात्रि के समय में उत्तर दिशाकी ओर से एक स्त्री पुकारी कि कोई ऐसा प्राणी है कि आकर मेरी सुधिले और इस पापी से मुझे बचाय जीवदानदे इस प्रकार कभी मरी मरी पुकारतीथी और कभी चुप होजातीथी। उसका शब्द सुनकर राजा चौंक पड़ा और ढाल तलवार ले अँधेरी रात में उस ओर अकेला उठचला किसी को खबर भी न हुई । जब राजा वन में पैठा तो सुन्दरी फिर रो रो पुकार उठी । तब शीघ्रता से राजा भी वहीं जापहुँचा और देखा कि एक देव उस स्त्रीसे रति मांगताहै और वह मानती नहीं है तब शिरके बाल पकड़ पकड़ ज़मीन पर देदे पटकता है। तब राजा ने कहा अरे पापी! तू

स्त्रीको क्यों मारताहै क्या नरक से भी नहीं डरता है ? राजा की बात सुनकर फिर वह उसे मारनेलगा। राजा ने कहा तू इसे छोड़दे नहीं तो मैं तुझे मारताहूं। यह सुनकर वह राजा के सम्मुख होगया और क्रोधसे चिल्लाकर बोला यातो तू यहां से भागजा नहीं तो मैं तुझे खाजाऊंगा। तू कौनहै ? यहां क्यों आया है ? तब राजाने क्रोध में आकर एक तलवार ऐसी मारी कि उसका शिर धड़से अलग होगया और रुंडमुंड से दो वीर निकलकर राजाके दोनो हाथोंसे लिपट गये। राजा ने छलबलकर उनमें से एक को तो मारा पर दूसरा रातभर लड़तारहा और भोर होतेही भाग गया। तब उस स्त्री से राजा ने कहा कि अब तू जल्दी मेरे साथ चल और कुछ जी में अंदेशा मत कर वह राक्षस मेरे डरसे भाग गया है फिर नहीं आवेगा। वह सुन्दरी बोली कि हे भूपाल ! चाहे मैं सात द्वीप, नवखण्ड पृथ्वी मे कहीं भागकर जा छिपूं पर उससे न बचने पाऊंगी। वह आकर ले जायगा उसके बिना मारे मेरा जीवन न होगा क्योंकि उसके पास एक मोहनी पुतली है वह उसके पेट में रहती है जहां मैं जा छिपूंगी वहां से ही उसके बल से मुझे ढूंढ निकालेगा और उस पुतली में यह बल है कि एक देव के मरने से चार देव बनासक्ती है। उसकी यह बात सुनकर राजा विक्रम उसी बनमें छिपरहा। सवेरा होतेही वह देव आया और उस स्त्री से फिर अभिलाषा करनेलगा। जब उसने न माना तो उसके शिरके बाल पकड़ जमीन पर पटकने लगा तब वह चिल्लाने लगी। उसका शब्द सुनतेही राजा निकलआया और लड़ने

से कहदिया कि तुम भी शिकार करो इसी प्रकार सब शिकार करतेथे और राजा खड़ा तमाशा देखताथा। फिर राजाने भी एक बाज उड़ाया और आप उसके पीछे लगा जिस ओर वह बाज जाताथा राजाभी पीछा किये जाताथा। इस प्रकार कई कोसो निकल गया और सन्ध्या होगई। तब सुधि आई और पीछे फिरकर देखा तो वहां कोई आदमी दृष्टि न आया और यहां सब फ़ौज शाम होनेपर शिकार लेलेकर आई और राजा को ढूंढ़ने लगी पर पता न मिला तो नगर मे आ प्राप्त हुई। वहां शून्य वनमें राजा भटकता फिरताथा पर कहीं मार्ग नहीं पाताथा। जब अँधेरा होगया और रात बहुत बीत गई तब एक नदी के किनारे पर पहुँचा और अपने हाथ से जीन-पोस बिछा, घोड़े को एक वृक्ष में बांध, बैठरहा। फिर क्या देखता है कि वह नदी बहती आती है और उसमे तो एक मुर्दा बहा चला आता है और उसके साथ साथ एक बेताल और योगी आपस में ऐंच खैंच करते हुये आते हैं। वे इस लिये झगड़ते हैं कि, योगी कहता है तैने बहुत मुर्दे खाये हैं और यह मुर्दा मैने अपने अवसर पर पाया है तू इसे छोड़दे मैं लेजाकर इससे अपना योग साधूंगा। बेताल बोला भाई मैं अजान नहीं हूं जो तू मुझे फुसलावे। मैं अपना आहार कैसे छोड़ दूं। इसी तरह आपसमे दोनों झगड़ते थे और कहते थे कि कोई तीसरा प्राणी इस समय नहीं कि हमारा न्याय करे। फिर योगी कहनेलगा कि बेताल! तू मेरी बात सुन। कल प्र-भात को हम और तुम सभा करें जो सभा में न्याय चुके वही तुम भी मानलेना और मैं भी। इतनेमें बेताल की एकदृष्टि राजा

को तैयार हुआ। देव भी रंडीको छोड़ राजा के सामने हुआ और चाहता था कि राजा को मारूं पर इतनेमें राजाने ऐसा खड्ग मारा कि धड़ से शिर अलग होगया और उस धड़ से वही मोहनी निकल आई फिर वह अमृतलेने चली। राजाने उन्हीं वीरों को आज्ञा दी कि यह जाने न पावे। वीर दौड़कर उसकी चोटी पकड़ खैंच लाये और राजा के सामने उपस्थित की। राजा ने उससे पूछा कि तू चंपावरणी, मृगनयनी, गजगामिनी, कटिकेहरी, चन्द्रमुखी नख शिख से शोभित है और तेरी सुगन्धिसे भौंरा मॅडलाते हैं। बतावो कि तुम देवके पेटमें क्यों रहतीहो? तब वह बोली महाराज! पहिले मैं शिवगणा थी। मैं शिव की एक आज्ञा चूकगई जिससे उन्होंने शाप दिया और मैं मोहनी रूप होगई। इस दैत्यने भी महादेव की बहुत तपस्या की थी उसी कारण सदाशिवने प्रसन्न हो उस को दी। फिर इस पापी ने मुझको लेकर अपने पेटमें डालली तब से मैं इसी तरह रहती हूं। मुझे शिव की यह आज्ञा थी कि इसकी सेवा कीजियो और जो यह कहे सो मानियो इससे मैं इसके वशमें होकर रहतीथी। मेरा यही वृत्तान्तथा। अब यह वेताल मुझे वश में कर तुम्हारे पास लाया है। और आदमी की तो सामर्थ्य ही क्या है यदि तुमभी उपाय करते तो आपके हाथ न आती। अब राजा मैं तुम्हारे वशमें हूं। राजा बोला अब तू क्या करेगी? वह बोली तू राजा है और मैं मोहनी हूं तेरे पास रहूंगी जैसे महादेवके साथ पार्वती रहती है यह कहकर वचन दिया। एक तो मोहनी और दूसरी वह रंडी जिसको देवसे छुड़ाया था राजाके साथ हुई। ये बातें कर

की ओर जापड़ी तो उसे देखकर दोनों हँसे और कहनेलगे नदी किनारे में यह कोई मनुष्य दीखता है वहीं चलो । वह न्याय चुकावेगा। यह कहकर मुर्दाले दोनों किनारे पर आये और राजा को सब वृत्तान्त सुनाकर कहा कि स्वामी! तुम धर्म्मात्माहो धर्मके विचारसे हमारा न्याय करो। योगी बोला महाराज! मैं कहता हूं सो आप ध्यान देकर सुनो, इस वेतालने बहुत मुर्दे खायेहैं और यह मुर्दा मैंने अपने समय पर पायाहै। यह बेकाम मुझसे झगड़ा करताहै और कहताहै कि मैं तुझे न दूंगा। मैं इससे बिनती करके मांगता हूं और कहताहूं कि यह मुझे दीजिये पर यह नहीं मानता है। राजाने वेताल से कहा कि तू भी अपने जीकी बात मुझसे कह। वेताल बोला महाराज! यह योगी बड़ा मूर्ख है। इसने मुझसे राहमें झगड़ा लगायाहै। मैं हजार कोससे इस मुर्दे को ले आया हूं और यह मुझ से मांग रहाहै मैं इसे कैसे दूं। मैंने इस मुर्दे के लिये बहुत कष्ट उठाया है। यह बे मतलब मन चलाता है। मैं क्या कहूं कि जो जो दुःख मैंने इसके वास्ते उठाये हैं। अब आहार के समय इस दुष्टने आसताया। इसका न्याय तुम्हारे हाथ है क्योंकि तुम धर्मात्मा राजाहो जो कहोगे सोही मुझे प्रमाणहै। राजा कहने लगा कि तुम दोनों बड़ेहो प्रसाद में हमें कुछ दो हम तुमसे मांगते हैं तब तुम्हारा न्याय चुका देंगे। यह सुन योगीने हँसकर झोली में से एक बटुआ निकाल राजा के हाथ में देकर कहा राजन्! तुम जितना द्रव्य चाहो उतना यह बटुआ देगा। इसमें से कभी कम न होगा। फिर वेताल बोला राजन्! मैं तुम्हें एक मोहिनी तिलक देता हूं। जब तुम इसको

परमावती पुतली बोली कि राजा भोज! उस मोहनीसे राजा विक्रमादित्य ने व्याह किया और जो कुछ आगे राजा के पराक्रम हैं सो मैं कहती हूं तू कान देकर सुन। दैत्य से जो स्त्री लीथी उससे राजाने कहा सुन्दरी! में तुझसे पूछता हूं कि दैवने तुझे कहां से पाया वह कौन द्वीप है और कौन नगर है, तेरा कौन बाप है और तेरा क्या नाम है उसका और अपना सब ब्योरा मुझसे कहो देर मत करो। जैसी व्यवस्था तू कहेगी वैसाही मैं विचार करूंगा। वह स्त्री बोली महाराज! मेरी कथा सुनो, जो भाग्य में होता है वह मिटता नहीं है क्योंकि जो कुछ विधाता ने कपाल में लिखदिया है वह अमिट है वह अवश्य भुगतना होता है। समुद्र के पास एक ब्रह्मपुरी है जिसको सिंहलद्वीप भी कहते हैं। मे वहां की रहनेवाली ब्राह्मण की बेटी हूं। एक दिन सखियों के साथ तालाब पर स्नान करने गई थी वह तालाब ऐसा था कि जहां घने घने वृक्षों से सूर्य दृष्टि नहीं आता था वहां सखियों के साथ स्नान पूजा करके घर को आतीथी कि सामने से यह राक्षस आया और रति मांगने लगा। ज्यों ज्यों मै न मानती थी त्यो त्यों वह मुझे दुःख देता था। मैं अनव्याही थी अपना धर्म रखना चाहती थी पर बहुत दिनसे यह मुझे सताता था और नरक से नहीं डरता था। राजा तुमने मेरा धर्म रक्खा। तुम्हारा संसार में यश होगा। जैसा तुमने उपकार किया है वैसाही आशीर्वाद लो। हजार वर्ष तक जीते रहो और किसी के वश न रहो; तुम्हारा नित्यप्रति सत और तेज बढ़े, साहस तुम्हारा ऐसा हो कि कोई न जीत सके। जब वह इतना अशीर्वाद

घिसकर तिलक लगाओगे तो सब लोग तुमसे दबेंगे और तुम्हारे बराबर कोई न होगा। दोनों ने यह प्रसाद राजा को दिया और राजाने हाथ बढ़ाकर लिया और बोला कि हे वेताल! तू इस मुर्दे को छोड़दे और इस मेरे घोड़े को खा यह मुर्दा योगी को दे क्योंकि तू भूखा है। इससे क्षुधा निवृत्त होगी और योगी का काम भी बन्द न होगा। यह सुनतेही वेताल घोड़े को खा गया और योगी मुर्दा ले अपना मन्त्र सिद्ध करने को गया। राजा वीरो को बुलाकर अपने देश को चला। उस समय मार्ग में एक भिक्षुक चला आरहा था उसने राजा को पहचानकर डरते डरते कहा कि महाराज! मैं आप के नगर में बहुत दिन रहा परन्तु मेरा कार्य सिद्ध न हुआ। अब मैं तुमसे कुछ मांगताहूं और आशा करता हूं कि उसे आप देंगे। यह सुनतेही राजा ने वह बटुआ निकाल उसके हाथ में दिया और उसका भेद बताया। वह आशीर्वाद देता हुआ अपने घरको गया और राजा अपने महलों को गया॥ इति बारहवां प्रदीप॥

अथ त्रयोदशः प्रदीप।

समुद्रतस्तथा लब्धान्मण्यश्वान्प्रददौ द्विजे॥
स्वयशोहाऽतुलं भूमौ ख्यापयामास सर्वतः १३

अर्थ। जैसेही समुद्र से प्राप्त हुये मणि और अश्वों को राजा ने ब्राह्मण के लिये दान किये और अपने विपुल यश को सब ठौर विख्यात किया १३॥ दृष्टान्त॥ एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य ने अपने प्रधानको बुलाकर कहा कि मैं वह काम

देखुकी तब राजाने उसको बेटी कहकर पास बैठालई औ
मोहनीको भी उठाकर तख्तपर बैठाय बेतालोंको आज्ञा दी
हमारे नगर को लेचलो। बेताल उसी समय ले उड़े और
क्षण में महल में ला उतारे। राजा ने आतेही मंत्री को य
किया और वह मंत्री आकर उपस्थित हुआ। राजाने क
कोई सज्ञानी पण्डित ढूंढ़कर जल्दी ले आओ। प्रधानने आ
पाय नगरमें से एक ब्राह्मण को भेजा। वह ब्राह्मण एक सु
विद्वान् ब्राह्मण को बुलालाया जिसका नाम मार्कण्डेय थ
उसको प्रधान राजा के पास लेगया। राजाने हाथ जोड़
कहा कि एक ब्राह्मणकी लड़की हमारे पास है वह हम तुम
दिया चाहते हैं यदि अङ्गीकार करो तो। ब्राह्मणबोला राज
वह कन्या हमको दो और जगमें यश, बड़ाई और धर्म लो
राजाने यह बात सुनतेही ब्राह्मणको तिलकदिया और व्या
का सामानकर दानदहेज तैयार किया। फिर ब्राह्मणको बुल
संकल्पकर, कन्यादान दे विदा किया॥ इति दशवां प्रदीप

अथ एकादशः प्रदीपः॥

द्रष्टुं तु दानिनं यातो ज्ञात्वा तत्कारणं तु सः॥
लक्षदं मणिमासाद्य देव्या राज्ञे न्यवेदयत् ११

अर्थ। राजा विक्रमादित्य एक दानी राजाको देखनेकेलि
गया उसके दान कारण को जानकर लक्ष रुपये प्रतिदिन दे
वाली मणि देवीजी से लाय राजाको दी॥११॥ दृष्टान्त॥ एक
दिन राजा विक्रमादित्य अपनी सभामें बैठकर कहने लग
कि कलियुग में और भी कहीं कोई दानी है। यह सुनतेह

करूंगा जिससे पुण्य होवे और आगेको विस्तार होवे। प्रधान ने यह सुनतेही देश देशको न्योता भेजा और जहांतक राजा की प्रजाथी उनको बुलाया तथा कर्णाटक, गुजरात, काश्मीर, कन्नौज और तिलंगान इन नगरों में भी न्योता भेजा। जितने ब्राह्मण थे वे भी बुलाये गये इसी प्रकार सातों द्वीप में न्योता भेजा और वहांके राजाओं को बुलाया। फिर एक वीर द्वारा पाताल के राजा के पास न्योता भेजकर उसको बुलाया और दूसरे वीरको भेजकर स्वर्गके देवताओं को निमंत्रित कर बुलाया। फिर एक ब्राह्मण को बुलाकर कहा कि तुम जाकर समुद्र को हमारी दण्डवत् कहो और निवेदन करो कि राजा ने यज्ञारम्भ किया है और आपको बुलाया है। वह ब्राह्मण भी वहां से चला और कुछ दिनों में सागर के तीर पर जा पहुँचा। वह वहां क्या देखताहै कि न कोई मनुष्य है और न पशु पक्षीही हैं केवल जलही जलहै। फिर ब्राह्मण ने विचारकर पुकारा कि राजाविक्रमादित्य के यज्ञ का न्योता मैं दियेजाता हूं तुम जल्दी पहुँचना। जब इतना कहकर वह ब्राह्मण वहां से चला तब एक शहरमें वृद्ध ब्राह्मण के स्वरूप से समुद्र उसके पास आया और बोला कि राजा ने हमको किस लिये बुलाया है। तब ब्राह्मण बोला कि यज्ञ में सब आये हैं। आप भी अवश्य पधारिये। तब समुद्र ने कहा कि मैं चलता तो अवश्य पर मेरे जानेपर जल मर्यादा भंग करदेगा जिससे हानि होगी इसलिये मेरी ओर से विनती कर राजासे कहना कि मेरे आनेका कुछ भी पछितावा न करे। यह कहकर समुद्र ने उस ब्राह्मण को पांच लाल और एक सजा हुआ घोड़ा

एक ब्राह्मण बोला महाराज ! प्रेम का हितकारी तेरे बराबर साहसी और दानी कोई नहीं है पर एक वार्ता में कहा चाहता हूं किन्तु शर्म से कह नहीं सक्ता। राजा ने कहा सत्य बात में काहेकी लाज है। तुम हमारे आगे स्पष्ट कहो हम अप्रसन्न न होंगे वह ब्राह्मण बोला कि एक राजा समुद्र के किनारे रहता है और सदा धर्मकाज करता है। जब वह सबेरे स्नान करता है तब लाख रुपये ब्राह्मणों को दान देता है फिर जल-पान करता है। यह तो मैंने एक उसके दान की रीति कही और भी बहुत कुछ दान देताहै। ऐसा धर्मात्मा राजा हमने न देखा और न सुनाहै। यह बात सुन फिर राजाके जी में इच्छा हुई कि उस राजाको चलकर देखूं। विचारकर बेताल़ोको याद किया। बेताल आये और तख्तपर बैठाय समुद्रके किनारे लेचले। जब राजा उस नगर के पास पहुँचा तब सिंहासन से उतर बेतालों को कहा अब तुम देश को जाओ और हम इस राजाकी सेवा करेंगे। तुम वहांसे हमारी सुधि लेते रहियो। तब बेताल बोले इसका क्या विचार है? राजाने कहा तुम्हें इसबातसे क्या मतलबहै। जाओ हम तुमसे जो कहें सो करो। यह बात सुनकर बेताल तो अपने नगर को आये और राजा नगर में जा प्राप्त हुआ जब नगरमें फिरता हुआ राजाके द्वारे पहुंचा और द्वारपालोंसे कहा कि अपने स्वामी को समाचार दो कि कोई विदेशी तुम्हारे द्वारे सेवा करनेके लिये खड़ाहै। ड्योढीदारों ने इसकी बात राजासे जा सुनाई। राजा सुनते ही हँसता हुआ बाहर निकल आया। विक्रम ने जुहार की। राजा ने जुहार लेकर पूछा तुम क्षेमकुशल से हो? हां आपकी

राजाकी भेंट के लिये दिये फिर वह ब्राह्मण वहां से बिदाहो राजा के पास गया और वे पांचों रत्न और घोड़ा ला राजा को दिये फिर वहां का सब वृत्तान्त कहा। तब तो राजाने प्रसन्न हो कहा कि ये लाल और घोड़ा तुम्हीं लेजावो यह हमने तुमको दिये। यह कह राजाने उस ब्राह्मण को बिदा किया॥ इति तेरहवां प्रदीप॥

अथ चतुर्दशः प्रदीपः।

तथा पातालखोकात्तु लब्धं मणिचतुष्टयम्॥
अदायि विक्रमेणाशु विप्राय परिसीदते १४

अर्थ। जैसे पाताललोक से मिलीहुई चार मणियोंको विक्रमादित्यने दुःखी ब्राह्मण के लिये दीं १४॥ दृष्टान्त॥ एक दिन राजा विक्रमादित्य की सभामें गन्धर्व मधुर मधुर स्वरसे गारहेथे, वेश्याएं नृत्य कर निज निज हाव भाव दिखारही थीं, कहीं भाट खड़ेहुये यश वर्णन कररहे थे और किसी ओर हरि, चीता, बाघ और मेढ़े शिकार के लिये तैयार होरहे थे। और जितनी तैयारियां राजाओं की चाहियें वे सब थीं तथा उस सभामें एक से एक बढ़कर पण्डित, चतुर और शूरवीर बैठे थे उनमें राजा भी निज राज्यासन पर इन्द्र के समान बैठाथा और सब सामान भी इन्द्रलोक के तुल्य थे। उस समय राजाने अपने जी में विचारकर पण्डितों से कहा कि मेरी एक बात अधूरी है वह पूरी करो। तब पण्डितो ने पूछा कि महाराज! वह क्या बात है? राजाने कहा कि स्वर्गलोकका राज्य तो राजा इन्द्र करताहै और मृत्युलोकका पालन मैं कररहाहूं

दयासे। फिर राजाने कहा किस देशसे आयेहो, तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारा अर्थ क्या है? राजा विक्रमादित्य बोला कि महाराज! मेरा नाम विक्रम है। राजा विक्रम के देशका रहनेवालाहूं। मेरे जी में कुछ वैराग्य हुआ है इससे आप के दर्शनको आयाहूं। आपका दर्शन मैंने किया अब मेरा शोक दूर होगया। राजा बोला हम तुम्हें क्या दिया करें कितने में तुम्हारा निर्वाह होगा? राजा विक्रमादित्य बोला कि चार हज़ार रुपयों में मेरा निर्वाह होजायगा। राजा कहनेलगा कि तुम ऐसा क्या काम करते हो जो चार हज़ार रुपये प्रतिदिन मांगतेहो। वह काम भी हम से कहो कि हम यह करेंगे। फिर विक्रमने कहा कि जिस राजाके पास में रहताहूं उसकी गाढ़ी भीड़ में काम आताहूं। राजाने कहा अच्छा रहो। जब नव दश दिन बीत गये तब राजा विक्रमादित्य ने अपने मन में विचारा कि जो लाख रुपये दिनदिनप्रति दान करता है उस का नित्य नेम क्या है इसको मालूम करना चाहिये कि किस देवता का इसको बल है। इस चिन्ता में रहनेलगा। एकदिन क्या देखता है कि अर्द्धरात्रि के समय राजा अकेला वनको जाता है यह देखतेही उसके पीछे पीछे विक्रम भी चलदिया। जब नगर से बाहर हुये तो एक वन में पहुँचे। वहां जाकर देखा तो एक देवी का मन्दिर है। उस मन्दिर के बाहर कराह चढ़ा है और उसके नीचे आग जलरही है और घी औटता है। वह राजा तालाव में स्नान करके देवी का दर्शनकर उस कराह में कूदपड़ा और पड़तेही भुनगया। उसी समय चौंसठ योगिनियां आईं और राजाका तलाहुआ शरीर प्रसन्न होकर

परन्तु पातालका राज्य कौन राजा करताहै यही संदेह मेरे जी में होरहा है। तब पण्डित लोग बोले कि महाराज! पातालका राजा शेषनाग है। उसके हज़ार फण हैं और उसके पास पद्मिनी नागिन है। वहां रोग, मृत्यु, शोक आदिक कुछ नहीं होता है वहां वह अपना राजकाज करताहै। उसके बराबर संसार में कोई भी सुखी नहीं है। यह वृत्तान्त सुन राजाको उस शेषनाग से मिलनेकी अभिलाषा हुई और उसने अपने वेतालको बुलाया वह हाथ जोड़ आ खड़ा हुआ और आज्ञा मांगने लगा। तब राजा ने कहा हमको पातालमें शेषनाग के पास लेचल। वेताल आज्ञा पाते ही राजाको ले चला और शीघ्रही पाताल में शेषनाग के निकट स्थानमें पहुँचा दिया। राजाने वहां सुवर्ण का मंदिर देखा जो रत्नोंसे ऐसा जगमगा रहा था कि जिसकी चमक के आगे दिन और रात जानना कठिनथा। द्वार द्वार पर फूलोंकी वन्दनवार शोभा देरही थीं। राजा अपने मनमें कुछ डरता हुआ सा राजद्वारपर जा पहुँचा और द्वारपालों से दण्डवत् प्रणामकर उनसे बोला कि आप अपने राजा से निवेदन करो कि मृत्युलोकका राजा विक्रम आप से मिलने आयाहै। द्वारपाल व्यौरा करने गया और राजा अपने जी में प्रसन्न होता था कि मैं यहां आ पहुँचा। वहां चारो ओर से राम-राम, कृष्ण-कृष्ण कीही ध्वनि आती थी और राजमन्दिर से वेदध्वनि सुनाई पड़ती थी उसको सुन राजा परम आनन्दित हुआ। वह द्वारपाल राजा के पास जाय बोला कि महाराज! एक राजा द्वार पर खड़ा है और आप के द्वार को हजारहों दण्ड-

खाने लगीं इतने में कंकालिन अमृत ले आई और उसके हाड़ोंपर छिड़का। वह राजा राम राम करता उठ खड़ा हुआ। तब देवी ने प्रसन्न हो मंदिर में से लाख रुपये दिये और वह लेकर अपने घरको आया तथा योगिनियां अपने धाम को गई। यह आश्चर्य देखकर राजा विक्रमादित्य भी कूदपड़ा और उसीतरह जलगया फिर भी योगिनियां दौड़ीं और उस को भी खागईं। उसीतरह कंकालिन अमृत ला इसपर भी छिड़का और राजा जी उठा देवीने मंदिरसे लाख रुपये उसे भी दिये। रुपये ले फिर वह कराहमें गिरा। योगिनियां फिर जला हुआ शरीरका मांस खागई और कंकालिन अमृत लेआई और छिड़क कर जिला दिया। फिर देवी ने दो लाख रुपये दिये इसी प्रकार राजा सात बेर गिरा और उसीप्रकार रुपये पाये। जब अठवीं बार गिरनेको मन किया तो देवीने आकर उसके शिरपर हाथ धरा और कहा कि जो तुझे चाहिये सो मांग। राजा हाथ जोड़कर बोला कि मैं मांगूं वह देवो तो मागूं। देवी ने कहा जो तेरी इच्छामें आवे सो मांग वही तुझे दूंगी। राजा ने कहा देवी! जिस थैली में से तुमने रुपये दिये हैं कृपा कर वह थैली मुझे दीजिये। देवीने वह थैली देदी। विक्रम भी प्रसन्न हो उसी राजाके स्थानपर गया फिर दूसरे दिन वह राजा वनमें गया और वहां उसने देखा कि न देवीका मंदिर है न कराह है स्थान भंग पड़ाहै। यह दशा वहांकी देख शोक में डूबगया और रोने लगा अन्तमें लाचार हो उलटा फिर आया और उदासहो महलों में सोरहा। भोर होतेही सभाके लोग आये और राजा को देखा कि बेहाल पड़ा है, न हँसता

त् कर अपने को धन्यवाद देरहाहै यहांतक कि जिसको देखता है उसके भी पैरो पड़ता है और आपके दर्शन की अभिलाषा से बेचैन होरहाहै। यह सुन शेषनागजी द्वारपर आये। उनको देखतेही राजा ने चरणों में गिरकर साष्टांग प्रणाम किया और चरणों परपड़ा रहा। तब शेषजी ने उसे उठा कंठसे लगाया और पूछाकि तुम्हारा क्या नाम है और किस देश से आये हो। राजाने कहा हे स्वामिन्! विक्रम मेरा नाम है, मैं मृत्युलोकका रखवालाहूं; आपके दर्शनकी बड़ी अभिलाषा कर आया था सो इच्छा पूरीहुई। आज मुझे करोड़यज्ञ और चौसठ तीर्थस्नानका फल मिला। राजा विक्रमका नाम सुनतेही शेषजी, प्रसन्नहो मिला और उसका हाथ पकड़कर निज राजमहल में लेगया और श्रेष्ठ स्थानमें आसन पर बैठाय क्षेम कुशल पूछी राजाने कहा कि आपके दर्शन से सब आनन्द मंगल है। फिर शेषजीने कहा कि तुम किसलिये आयेहो। तुमने मार्ग मे महाही कष्ट पाया होगा। राजा बोला कि महाराज! जो कष्ट मुझको मिला वह सब आपके दर्शन करतेही दूर होगया। फिर शेषजीने राजाको रहने के लिये एक अति सुन्दर स्थान बताया और बहुतसे लोग टहल करने के लिये लगाये और कहा कि मुझसे भी अधिक सेवा इनकी करना। इस प्रकार पांच सात दिन राजा वहां रहा और एक दिन हाथ जोड़के कहनेलगा कि महाराज! अब मुझे आज्ञा हो तो निज नगरको सँभालूं और घर जाऊं वहां आपके गुण गाता रहूंगा। यह सुन शेषनाग ने हँसकर कहा कि क्या अभी घरजाने की इच्छा होगई? भला कुछ प्रसाद आपको

है, न किसीसे बोलता है। जो कोई राजकाज की बातें करता है तो सुनकर मुँह फेरलेता है। राजा की यह अवस्था देख मंत्री ने विनती कर कहा महाराज! आपके मन मलिन होने से सारी सभा उदास होरही है। राजाने उत्तर दिया कि तुम बैठकर दरबार करो, मेरा शरीर मांदा है। तब मंत्री बैठ राजकाज की बातें करनेलगा और जो कोई आता था वह अपने मनमे जो चाहता था वही विचारता था। कोई कहता था कि राजाको कोई मोह गया और कोई कहताथा कि राजा दुःखीहैपर राजा की व्यवस्था किसी को मालूम नथी। इतने में अपने समयपर राजा विक्रम भी आगया और पूछा कि तुम्हारे मनमें क्या दुःख है वह कहो क्योंकि मैंने तुमसे प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारे कठिन समय में काम आऊंगा। मेरा वचन क्या आप भूलगये? मेरे आगे सब व्यवस्था ब्योरेवार कहिये। तब राजा बोला कि मैं तेरे आगे क्या कहूँ। मेरे जीमें है कि प्राणघात मैं करूं। विक्रमादित्य ने कहा पृथ्वीनाथ! एक बेर तो मेरे आगे अपनी बात कहो फिर पीछे और यत्न कीजियेगा। राजाने कहा एक देवी मेरे पासथी मैं नहीं जानता कि वह कहांगई। उसकी कृपासे मैं लाख रुपये नित्य दान किया करता था अब मुझे बड़ा कष्ट पड़ा है मेरी नित्यक्रिया कैसे निभेगी? इससे मैं प्राण त्यागूंगा क्योंकि अब मैं ऐसा किसी को नहीं देखता कि जिससे मेरा निर्वाह हो। जो धर्म, पुण्य न होगा तो मेरा जीना संसारमें वृथाहै। उसकी यह बात सुनकर राजा विक्रमादित्य ने वह थैली दी और कहा महाराज! अब स्नान, ध्यान कीजिये और इस

देते हैं वह तो लेतेजाइये। फिर चार लाल निकाल राजा के अर्पण किये और उनका अलग अलग गुण कहा कि एक में तो यह गुण है कि जितना गहना चाहोगे उतनाही पावोगे और दूसरे से हाथी, घोड़े, पालकी आदि जो जो सवारियां चाहोगे वे वे तैयार पावोगे तथा तीसरे से यथेच्छ लक्ष्मी मिलेगी और चौथे से जो जो भजन, हरिभक्ति आदि करना हो वहही तुम्हारी परिपूर्ण करेगा ये इन चारों लालों के अलग अलग गुण हैं। फिर राजाको विदा किया। राजा हाथ जोड़ खड़ा हो कहने लगा कि मैं आपके गुणोंका वर्णन कहां तक करूं अपार हैं। आप मुझे दास समझकर कृपा रखियेगा यह कह वहां से निवृत्त हो और वीर वेतालों को बुलाय उनपर सवार हो अपने नगरको आया। जब नगर कोसभर रहा तो वेतालो को छोड़ पैदल चलने लगा। आगे से एक दुर्बल, भूखा, भिखारी ब्राह्मण उसके पास आकर बोला कि महाराज! मैं भूखा मरताहूं जो कुछ भीख मुझ को देवो तो जाय निज कुटुम्बका पालन करूं। राजा जी में चिन्ता करनेलगा कि कौनसा लाल इस ब्राह्मण को देऊं। यह विचार कर ब्राह्मण से बोला कि देवता! मेरे पास चार लाल हैं और चारों के ये ये गुण हैं इनमें से जौनसा चाहै वहही मैं देऊं। तब ब्राह्मण ने कहा कि महाराज! मैं पहिले अपने घर हो आऊं फिर तुमसे कहूंगा। फिर ब्राह्मण निज घरको आया और राजा वहांही खड़ारहा जब वह घर जाकर अपनी स्त्री, पुत्र, बहू इनसे कहनेलगा कि उन चारों लालो में से कौनसा लाल लेना चाहतीहो सो कहो। वह ब्राह्मणी बोली कि

थैली से जितने रुपये चाहिये खर्च करो कभी कम न होंगे। यह सुनतेही राजा बहुत प्रसन्न हुआ और बैठकर वही थैली हाथ से ले अपने मंत्री को बुलाय उसमें से रुपये निकाल खर्च को दिये और कहा जितने ब्राह्मण सदा दान पाते हैं उनको उसी प्रकार से दो। मंत्री आज्ञा के अनुसार अपने काम मे लगा। राजा विक्रमादित्य ने कहा महाराज! मुझे आज्ञा दीजिये मैं अपने देशको जाऊंगा बहुत दिन बीतगये हैं। तब वह राजा बोला हम आपका गुण कहां तक मानेंगे आपने तो हमको जीवदान दिया है। फिर कहा जब आप अपने देश पहुँचो तब संदेशा भेजदेना कि हम क्षेमकुशल से पहुँचे। और अपना ठिकाना बताजावो कि जिसमें हमारा पत्र तुम्हारे पास पहुँचे। उसने कहा महाराज! मैं विक्रमादित्यहूं। अम्बावतीनगरी का राज्य करता हूं। तुम्हारा नाम सुनकर दर्शन के लिये आयाथा सो तुम्हें देखा और चित्त प्रसन्न हुआ। तुम अच्छीतरह राज्य करो और हमको आज्ञा दो। तुम्हारा साहस, बल और धर्म्म हमने देखा। यह सुनतेही वह राजा उसके चरणोंपर गिरपड़ा और हाथ जोड़कर कहने लगा कि महाराज! मुझसे बड़ा अपराध हुआ। मैंने आपका मर्म नहीं जाना। आपने मेरी सेवा की यह अपने जीमें कुछ न लाना और जैसा मैंने आपका धर्म्म सुनाथा वैसाही देखा। धन्य है तुम्हारे धर्म्म, साहस और पराक्रम को। यह कह राजा को तिलक दे विदा किया। राजा ने वीरों को याद किया वे प्राप्त हुये और राजा विक्रमादित्य अपने नगर में आया॥ इति ग्यारहवां प्रदीप॥

वह लाल लेवो कि जो लक्ष्मी देवे क्योंकि लक्ष्मीही से सब सिद्ध होते हैं। उसका पुत्र बोला कि पिताजी ! अपने पास सामान नहीं हो तो वह लक्ष्मी भी कौन काम की है जो सामान सहित लक्ष्मी हो तो राजा कहावे और सब संसार उसको शिर नवावे। सामान ही से शत्रु भयभीत होवै और संसार में शोभा पावै। जो लक्ष्मी मिली और इस संसार में शोभा न पाई तो वह लक्ष्मी किस कामकी है इससे तुम वह ही लाल लेवो जिससे सब सामान आभूषणादि मिलें। उसके बेटेकी बहू ने कहा कि तुम वह लाल लेना जिसे रॉड़ भी पहिरे तो वह अतिसुन्दरी दिखाई दे और विपत्ति पड़ेपर बेच बेच कर बहुतसा धन ले और जितना मांगे उतनाही उससे पावे। बस और किसी की न मानो मेराही कहना करो। ब्राह्मण ने अपने मनमें विचार किया कि ये तीनों अज्ञानी हैं मेरी तो इच्छा केवल भजन और धर्म पर है और पर नहीं क्योंकि धर्म से संसार में सब फल मिलते हैं। धर्म करने से ही राजा बलिको पाताललोक मिला और धर्मसेही इन्द्र ने स्वर्गका राज्य पाया और धर्मही से यह काया अजर, अमर होजाती है और गर्भवास से छूटजाताहै। इससे तुम सब मेरा धर्म न डुलाओ मैं अपना सत्य नहीं छोड़ूंगा। इसमें जो हो सो होवे। इसी तरह चारों ने चार प्रकार की बातें कहीं। एककी एकने न मानी। तब वह ब्राह्मण फिरकर राजा के पास आया और सब वृत्तान्त कहसुनाया कि महाराज ! मैं तो घर भी गया पर बात कुछ भी न बनआई। अपनी अपनी सब कहते हैं। हम चारों की चारही माते हैं आपने खड़े होकर हमारे

अथ द्वादशः प्रदीपः ।

तथा परिश्रमसलब्धां भिक्षवे द्रव्यपेटिकाम् ॥
स्वीयाश्वं तु क्षुधार्ताय दत्त्वा राजा यशो दधौ १२

अर्थ । जैसेही अत्यन्त परिश्रमसे प्राप्तहुई धनकी थैली राजा ने भिक्षुकको दी और अपना घोड़ा भूखे वेतालको देकर यश को धारण किया १२ ॥ दृष्टान्त ॥ एकदिन राजा विक्रमादित्य शिकार खेलने को चला और साथमें जितने मंत्री आदि सब राजपुत्र बली थे वे भी सजकर तैयार हो आये और अपनी अपनी मृगया (शिकार) के पीछे घोड़े दौड़ाये । एक एककी सवारीमें हजार हजार कोसके धावेका तुरंग था । राजा अपने घोड़ेपर सवारथा और वह घोड़ा छलावा के बराबरथा । राजकुमार लोग अपने अपने शिकारी जीव बाज, बहरी, जुर्रा, शाहीन, कुहीलगड आदि मँगवा मँगवा कर अपने अपने हाथोंपर लेले साथ हुये तथा राजाने भी एक वाज अपने हाथ पर बैठालिया । और आज्ञा दी कि जो जो शिकारीपक्षी जिस जिसके पास है वह लेकर आवे । इसतरह बन ठनके एक वन की राह ली और वहां जाकर किसी ने बहरी, किसी ने बाज, किसी ने कुहीं, किसीने शाहीन आदि उड़ाये और उधर राजा ने भी जितने प्रधान शिकारी थे उन्हें आज्ञा दी कि इस जंगल में सब शिकार करो मैं तमाशा देखूंगा । जो शिकार कर लावेगा वह इनाम पावेगा और जो शिकार न कर लावेगा वह नौकरी से अलग होवेगा । यह बात सुनतेही जितने प्रधान शिकारी थे उन्होंने उस वनमें चारों ओर शिकारीपक्षी छोड़े और बहेलियों

लिये यह महाही दुःख उठाया तो भी हमारा मता न बन आया। यह सुन राजा ने कहा कि महाराज ! तुम मन में उदास होकर निराश मत हो । ये चारों लाल अपने घरले जाओ मैं प्रसन्नता से देताहूं क्योंकि जिसमें तुम्हारे कुटुम्बभर का काम चले वहही काम करो। तुम्हारा भी इसीसे कल्याण है । निदान राजाने चारों लाल निकाल ब्राह्मणकी भेट किये और ब्राह्मण ले आशीर्वाद देकर निज घरको पधारा ॥ इति चौदहवां प्रदीप ॥

अथ पञ्चदशः प्रदीपः ।

तथैवोड्डीनयानं स्वं राजा वैश्याय चार्पयत् ॥
पुनर्दत्तं न जग्राह दुस्त्यजं किं धृतात्मनाम् १५

अर्थ। जैसे राजाने निज उड़नखटोला बनिये को देदिया और फिर लौटा देने पर भी उसे नहीं लिया सो सज्जनों को क्या अदेय है वे सब देदेते हैं १५ ॥ दृष्टान्त ॥ राजा विक्रमादित्यजी की उज्जयिनीनगरी में सब वर्ण सदा सुखी रहते थे। वहां का एक नगर सेठ जिसके पास बहुत धन था और बड़ा प्रतापी था। नगर के लोगों को व्यवहार करने के लिये बहुत द्रव्य दिया करता था। जो जन उसके पास जाता वह निज मनोरथ से शून्य न आता था। उसके एक रत्नसेन नाम पुत्र था जो बहुत सुन्दर और अतिविद्यावान् था। माता पिता की टहल करने में निशिदिन लगा रहता था । उस सेठ के मनमें आई कि कहीं अच्छी कन्या देख इसका व्याह करदे । फिर ब्राह्मणों को बुला बुलाकर देश देश को भेजे

और कहा कि कहीं अच्छी कन्या हो वहांही का टीका लेके आवो। तुमको बहुतसा माल मिलेगा। तदनन्तर कुछ द्रव्य दे ब्राह्मणों को विदा किया। वे ब्राह्मण देश देश में ढूंढने गये। निदान उनमें से एक ब्राह्मण ने समाचार पाया कि समुद्र पार एक सेठ है उसकी बेटी बहुत सुन्दर है और उसेभी वर की चाहना है। यह सुनकर एक जहाजपर सवारहो समुद्र पार जाय, वहां उस सेठका ठिकाना पूछकर उसके द्वारपर जा ठहरा और खबर की कि उज्जयिनीनगरी से वहां के सेठ का भेजा हुआ एक ब्राह्मण आया है। यह वृत्तान्त सुन उस सेठने उसको बुलाया और दण्डवत्कर आसन दे बैठाया ब्राह्मण आशीर्वाद देकर बैठा। सेठने पूछा कि किस कारण से आना हुआहै ? तब ब्राह्मणने कहा कि हमारे सेठके एक लड़का है उसके ब्याह के लिये हम आगे हैं। जहां कुलीन कन्या होगी वहांही का टीका लेके जानाहै। यह बात सुनकर सेठ बोला कि मेरी भी यही इच्छाथी कि कन्या का कहीं अच्छे घर ब्याह करूं परन्तु मेरी कन्या के भाग्यसे घर बैठेही अच्छी विधि मिलगई। फिर कहा कि आप कुछ दिन हमारे घर आराम करें मैं अपना पुरोहित आपके साथ करदूंगा वह जाकर लड़के को देख टीका करदेगा और तुमभी लड़कीको देख लो और उस सेठ से कहो कि हम आंखों से देखआये हैं। वह वहां कुछ दिन रहकर और उस कन्याको देखकर उस सेठ के ब्राह्मण को साथ ले उज्जयिनीनगरी को चला। उस सेठ ने अपने ब्राह्मण से यह कहदिया था कि टीका दे ब्याह की जल्दी भी करते आना। ये दोनो द्विज वहां से चले और

अथ अष्टादशः प्रदीपः।

वियोगिनोऽपि संयोगे विक्रमी विक्रमो ह्यभूत्॥
वियोगिनं द्विजं कामकन्दलाढ्यं यथाऽकरोत् १८

अर्थ। वियोगवाले विरही के संयोग करने में भी विक्रमादित्य विक्रमी (पराक्रमी) हुआ जैसे वियोगी ब्राह्मणको कामकन्दलासे मिलाकर प्रसन्न किया १८॥ दृष्टान्त॥ एक बड़ा गुणी माधवनाम ब्राह्मण था वह योगी होकर सब पृथ्वी पर फिर आया पर कहीं ठहर कर रहने न पाया। वह रूप में मानो कामदेवका अवतार था उसको देखतेही स्त्रियां मोहित होजाती थीं। वह सब विद्या पढ़ाथा और अत्यन्त चतुर था। वह जिस राजाकी सेवा करने जाता था वहां एक दिन तो उसका आदर होता परन्तु जब वह अपना गुण प्रकाश करता तो उसको राजा अपने देशसे निकाल देताथा इसी प्रकार वह देश देश भटकता और दुःख पाता कामा नगरी में आ पहुँचा वहां का राजा कामसेन था। उसके यहां कामकन्दला नाम एक वेश्या थी। वह मानो उर्वशीका अवतारथी। गंधर्व विद्यामें अतिही चतुरथी। एक दिन वह राजाकी सभामे नृत्य कररही थी उस समय माधव भी उस राजद्वार पर पहुँचा और द्वारपालों से कहा कि राजासे जाय हमारा समाचार कहो कि आपके दर्शनको एक ब्राह्मण आया है ड्योढ़ीवान् उसकी बात सुनी अनसुनीकर रहगया और वह ब्राह्मण वहां ही बैठगया पर ज्यों ज्यो मृदंगकी ध्वनि और गानेका शब्द आता था त्यों त्यों ही वह शिर धुन धुन कर कहता था कि

जहाज़ पर चढ़ कुछ दिनों में उज्जयिनीनगरी में आपहुँचे। ब्राह्मण ने सेठ से कहा कि मैं कन्या देख आया हूं और उस सेठ के पुरोहित को भी साथ लायाहूं। उस सेठने उस दूसरे ब्राह्मणको बुलाय लड़केको पास बैठाय दिखाया। उसने देखते ही तिलक करदिया और अपने सेठकी ओर से हाथ जोड़ विनती करके कहा कि अब बरात लेकर आप शीघ्र आइये अमुक लग्नपर विवाह होगा। यह कहकर वह ब्राह्मण उस सेठसे विदा होकर गया और वहां जा उस सेठसे सब वृत्तान्त कहा। सेठ भी सुनतेही व्याहका सामान तैयार करनेलगा और इस ओर वह भी बरातकी तैयारी करने में लगा। नौबत बजनेलगी और घर घर में मंगलाचार होनेलगे। अनेक प्रकार की तैयारियां कीं। जितने कुटुम्बके लोगथे उन सबों को नये नये जोड़े पहिनाय बरातके लिये तैयार किये। रागरङ्ग और नृत्य गान होने लगा। इसतरह सब नगर और बिरादरीकी जेमनवार करते और बरातकी तैयारी करते करते वह विवाहका दिनभी निकटही आपहुंचा और उन्हें जाना दूरथा तो चिन्ता करनेलगे कि कैसे वहां पहुंचना होगा इसकी चिन्ता उसके सब भाईबन्धु करनेलगे और व्याह की प्रसन्नता को भूलगये। एक मनुष्यने सेठ से आकर कहा कि वर कन्याकी प्रारब्धहै तो इसी लग्न पर विवाह होगा और मैं एक यत्न भी बताताहूं कि जिससे काम होगा भगवान् चाहै तो वह तुम्हें मिल जायगा। राजाके पास एक उड़नखटोला है उससे जहां चाहो वहीं जासक्ते हो। राजाने उसे बढ़ई को दो लाख रुपये देकर लिया है। वह अब राजाके घरही है।

राजा मूर्ख और उसकी सभा भी मूर्खही हैं जो विचार नहीं करते । जब पांच चार वेर यहही बात कही तो उस द्वारपाल ने क्रोध कर ब्राह्मण को तो कुछ नहीं कहा पर राजा के सम्मुख जाय, हाथ जोड़कर कहा कि एक विदेशी दुर्बल ब्राह्मण द्वारपर आकर बैठा है और शिर हिलाकर कहता है कि राजाकी सभा के लोग अतिमूर्ख हैं जो गुणका विचार नहीं करते हैं । राजाने द्वारपाल से कहा कि जाकर उससे पूछो कि तू ऐसा क्यों कहता है । उसने अपने स्वामी की आज्ञा पाय उस ब्राह्मण से आय पूछा कि महाराजने आज्ञा दी है कि उन के गुण में क्या दोष है वह बतावो तो तुम्हारा कहना सब मानें । उसने कहा कि जो चार चार तीनों ओर खड़े होकर बारह आदमी मृदंग बजाते हैं उनमें से पूर्व मुख वाले एक मृदंगी के अँगूठा नहीं है इससे सम पर थाप हलकी पड़ती है इस कारण से मैंने सबको मूर्ख कहाहै न मानो तो तुम जाकर देखलेवो । वह दौड़ाहुआ राजाके पास आया और सब बातें सुनाईं । राजाने पूर्व मुख के चारों मृदंगियों को बुलाय एक एक का हाथ देखा तो एक का अँगूठा मोम का बनाहुआ था यह तमाशा देख प्रसन्न हुआ और उस ब्राह्मणको बुलालिया । वह ब्राह्मण राजाके सम्मुख आ प्राप्त हुआ । राजाने दण्डवत् की और उसने आशीश दी फिर शिष्टाचार कर गद्दी पर बैठाया और जैसे वस्त्र आभूषण आप पहिने था वैसे ही मँगाकर ब्राह्मण को पहिनाये और कामकंदला को बुलाय आज्ञा की कि यह महागुणी है इसके आगे तुम अपना गुण प्रकाश करो जिससे यह प्रसन्न होवे । कामकुंदला राजाकी आज्ञा पाय

तुम जावो। यदि राजा से यह मिलजावेगा तो सब काम सिद्ध होजायँगे। यह सुनतेही वह सेठ प्रसन्न हो राजद्वारपर पहुँचा और द्वारपालसे बोला कि राजासे विनती कर कहो कि नगर-सेठ द्वारेपर खड़ा है जो आज्ञाहो तो दर्शन करे। आज्ञा हुई कि बुलालो। मन्त्री ने आकर कहा चलिये। तब उसने मन्त्रीको दण्डवत् प्रणाम कर कहा कि मैं महाराज के दर्शन के लिये आवश्यकीय कामसे आयाहूं। मन्त्री ने कहा कि राजा निज महल में पधारे हैं। वह सेठ यह सुनतेही अतिउदास हो बोला कि मेरा आवश्यकीय काम था। लड़के का ब्याह है और समुद्रपार बड़ी दूर जाना है और चारही दिन बाक़ी रहे हैं जो बरात नहीं पहुँची तो मेरे कुल में कलंक लगेगा। सेठ की यह बात सुन मन्त्री ने राजा के समीप जाय विनय की कि नगरसेठ खटोला मांगने आया है। आज्ञा हुई कि शीघ्र देदेवो और भी जो कुछ उसके साथ में मांगे वह भी देदेना। यह आज्ञा पाय मन्त्री ने उसे खटोला निकाल कर देदिया तथा और वस्तुओं के लिये भी कहा। वह बोला कि सब आनन्द है। फिर वह खटोला लिये घर आया और निज पुरोहित को बुला लड़का, नाई और आप उसपर बैठ वहां से चला और कुछ काल में वहां जाय पहुँचा। वहां देखा कि सारे नगरभर मे द्वार द्वार पर बन्दनवार बँधे हैं नित्य नये मंगलाचार होरहे हैं और बरातकी राह देखरहे हैं। जब लोगोंने उनको देखा तो देखतेही हाथोंहाथ उतारे और एक सुन्दर मकान में इनका डेरा लगाया और अपने सेठको खबर दी कि आपका समधी बरात ले आपहुंचा है तब

अपना गुण प्रकट करनेलगी। सांगीत नृत्यका आरम्भहुआ। शीशे रंग के भरे शिरपर धर मुँह से मोती पिरोती हुई हाथों से बट उछालती हुई नाचनेलगी और सब साज मिलाये हुये गारहीथी उस समय फूलोंकी और इत्रकी सुगन्ध पाकर एक भौंरा उड़ताहुआ उसकी कुचो पर आबैठा और डंक मारा तो उसके शरीर में पीड़ा हुई परन्तु उसने विचारा कि जो कुछ भी हाथ पैर हिलाऊंगी तो ताल भंग होजावेगी और मेरे गुणकी हँसी होगी। यह सोच भंडारविद्याकर श्वास को रोक कर कुच की राहसे निकाला। पवन लगतेही वह भौंरा उड़गया। माधवने इस गुण को देखतेही कहा कि धन्यहै तुझे और तेरे गुण को फिर प्रसन्न होकर जो वस्त्र और आभूषण राजा ने दिये थे सब उतार कर देदिये। यह देख राजा और मन्त्री आपस में कहने लगे कि देखो इसने कैसी मूर्खता की है कि इस वेश्याको ये वस्त्र आभूषण एकबेरही देदिये। यह जाति का भिखारी है और हमारे आगे उदारता दिखाता है। राजा ने अप्रसन्न होकर ब्राह्मण से पूछा कि तू इसके किस गुण पर रीझा है वह हमसे कह। तब वह ब्राह्मण बोला कि राजा! तू मूर्ख है और तेरी सभा भी मूर्ख है जो तेरी सभामें ऐसे गुण प्रकट करे और कोई गुण का विचार न करे। इसकी कुचोंपर भौंरा आबैठा था, इसने अपना श्वास रोककर कुचकी राह से निकाला और भौंरा उड़ायदिया। यह काम देखकर सब कुछ मैंने इसको देदिया माधव ने जब यह बात कही तब राजा लज्जित होरहा और बोला कि इसीसमय मेरे देशसे निकलजा जो सुनूंगा कि इस नगर में है तो तुझे बँधवा कर नदी में

वह सेठभी उसकी अगवानी करने आया और इन तीन आदमियों को देख अपने जी में बहुत पछिताया और पूछा कि क्या कारण है जो तीनही जन जनेत में आये हो। उस सेठने अपनी सब व्यवस्था कही। सुनतेही उस सेठ ने अपने गुमास्ते से कहा कि कल व्याह है आजही बरातकी तैयारी करो कि जिसमें नगर के लोग न हँसें। गुमास्ता ने वैसेही सब सामान तैयार करदिये। वह सेठ दूसरे दिन निज बरात सजाकर धूमधाम से व्याहने चला और शुभलग्न में विवाह हुआ। उस सेठने हाथी, घोड़े, जोड़े, पालकी, मियाने, जड़ाऊ गहने और बहुतसा दान जहेज दिया। वह सेठ वहां से ले सब सामान जहाज में रखवा सवार होकर चला और अपने नगर में आया। फिर बहुतसे ब्राह्मण बुलाये और उनको जिमाय बहुतसा धन दिया और वह खटोला राजा के यहां फेरने को गया। जब राजद्वारपर पहुँचा तो द्वारपाल से कहा कि राजा से कहो कि सेठ आया है। उसने जाय कहा। सुनतेही राजा ने उसको बुलालिया। वह जो कुछ लेगया था वह राजाकी भेट किया और वह खटोला लौटाकर बोला महाराज! आपके प्रतापसेही यह मेरा काम सिद्ध हुआ है। राजा ने कहा कि खटोला तूही लेजा। हम दीहुई वस्तु उलटी नहीं लेते हैं। निदान वह फिर लौटा लेगया। दानी ऐसे होते हैं॥ इति पंद्रहवां प्रदीप॥

अथ षोडशः प्रदीपः।

तथा हि यतितो लब्धं चित्रकोशमनुत्तमम्॥
सकृद्दत्तन्तु राज्ञीभ्योहुस्त्यजंकिन्तु दानिनाम् १६

डुबवा देऊंगा। माधवने कहा महाराज! मुझसे ऐसा क्या अपराध होगया जो अपने देशसे निकालतेहो। राजा बोला कि जो कुछ मैंने तुझको दिया वह सब तैंने इस वेश्या को देदिया। क्या मेरे पास देने को कुछ न था? जो तैंने दिया। यह सुन मन मलिन हो माधव वहां से बाहर जाय एक वृक्ष के नीचे व्याकुल खड़ा हो कहनेलगा कि जो अपने बेटे को माता ही विष ददेवे और पिता पुत्र को बेच देवे और राजा जो सर्वस्व छीनलेवे तो फिर किसकी शरण लेवें। राजा ने अपने नगरसे निकाल दिया अब मैं कहां रहूं। योंही अनेक प्रकार की चिन्ता कर कामकंदला का नाम लेलेकर रोताथा और उधर कामकंदला भी राजासे बहाना कर विदा हुई और एक आदमी दौड़ाया कि वह ब्राह्मण जाने न पावे उसको ले जाकर मेरे मकान में बैठा दो। वह आदमी गया और ब्राह्मण को ले जाकर उसके मन्दिर में बैठादिया। फिर वह भी शीघ्र जा पहुँची और दोनों आपस में प्रेमकी बातें करने लगे। ब्राह्मणने कहा कि मुझको राजाने देशनिकाला दिया है और तैंने अपने घर बुलालिया है यदि यह बात राजा जानेगा तो मेरे प्राण जायँगे परन्तु मैं तो दुःख से छूटूंगा किन्तु तुझको भी कष्ट देगा इससे ऐसा उचित नहीं है कि जान जातीरहे और जगत् में हँसी होवे। प्रेम तो महादुःखकी खानि है जिसने प्रेम के फंदे में पांव दिया उसने कभी भी सुख नहीं पाया। ये बातें माधव की सुनकर कामकंदलाने कहा कि अब तो मैं इस पथ में आगई हूं होगा सो देखा जायगा। इतना कह सब साजबाज मँगवाकर अपनी विद्या दिखानेलगी। जितनी विद्याएं उसको याद थीं

अर्थ। जैसे संन्यासी से प्राप्त हुये उत्तम चित्रलेखनकोश को एक बेर मांगतेही रानियों को देदिया। दानीजनों से क्या नहीं दियाजाता है-वे सब कुछ देदेते हैं १६॥ दृष्टान्त॥ एक दिन दो संन्यासी आपस में झगड़ते थे कोई कहता था कि कर्म वा मन बड़ा है और एक कहता था कि ज्ञान बड़ा है। वे दोनों झगड़ते झगड़ते राजाके पास आये और अपना अपना झगड़ा छेड़ा। राजा ने कहा कि अलग अलग समझा कर कहो कि किस बातपर मुख्य विवाद होरहाहै। उन दोनों में से एक संन्यासी बोला कि महाराज! मैं यह कहता हूं कि मन के वश में ज्ञान है और मनही के वश मे आत्मा है तथा शरीर भी मनही के वश में है। और भी माया, मोह, पाप और पुण्य ये सब मनसेही होते हैं तथाच और भी जितनी बातें हैं वे सब मनही से होती हैं। यह मन शरीर का राजा है और जितने अंग हैं वे सब मनकेही अधीन हैं। मन जो जो काम जिनसे कराता है वे वही वही करते रहते हैं। तब दूसरा संन्यासी कहनेलगा कि महाराज! ज्ञान राजा है और मन उसका सेवक है जो मन अपना अमल कियाचाहे तो ज्ञानसे उसका कुछ भी वश नहीं चलसकता। मन उसही के वश में है और इन्द्रियां चाहे भी कि कुछ कर्म करवावें पर ज्ञान नहीं करने देताहै जब मनमें दैववशसे अकर्म उत्पन्न होताहै तो वह ज्ञान मनको मारकर बाहर निकालदेता है और पांचों इन्द्रियां भी ज्ञानरूप खड्गसे काटी हुईही हैं। जब मनुष्य से मन और इन्द्रिय का विकार छूटजाता है तब वह निर्भय हुआ इस संसारसमुद्रसे पार होजाता है। उन दोनों की ये बातें सुनकर

अपना मार्ग लिया। वे पुतलियांही रहीं फिर राजाने दूसरी भीत में हाथी, घोड़े, रथ, पालकी लिखे फिर जब रात हुई तो उसने सब सामां तैयार देखा और देख देख राजा अपने जी में अतिही प्रसन्न होता और उस संन्यासीको याद किया करता था कि वह कैसा पदार्थ मुझको देगया है। जब भोर हुआ तो फिर वह चित्रका चित्रही रहगया। तीसरे दिन राजा ने पहिले एक मृदंग लिखा फिर गन्धर्व और अप्सरायें भी लिखीं फिर तालबीन, रबाब, तंबूरा, मुरचंग, सितार, पिनाक, बांसुरी, करताल, अलगोजा आदि बाजे एक एक साज एक एक मूर्ति के हाथ में देकर लिखे। जब सन्ध्या का समय आया तो प्रथम एक शब्द हुआ फिर गन्धर्व, अप्सरा आदि प्रकटहो सांगीतरीतिसे गाने, बजाने और नाचने लगे तथा सब साज बाज सातों स्वरोंके साथ होता जाताथा। इसी तरहसे राजा नित्य नित्य नये नये आनन्दों से रात बिताता था और दिनभर नये नये चित्र लिख लिख कर रातको निरंतर देखता रहता था यहां तक कि रनिवास में जाना छोड़ दिया। रानियों के मनमें चिंता हुई कि किस कारणसे महाराज महलों में नहीं पधारते हैं और अलग क्यों रहते हैं यह मालूम करना चाहिये। रानियां यह विचार आपस मे कर राजा के वृत्तान्त जानने मे तैयार हुईं और कहने लगीं कि हमारा जीना धिक्कार है और धर्म कर्म भी सब वृथा ही है कि राजा हमको छोड़ अलग होरहा है। हम यहां बिरहकी मारी भारी दुःख भोग रही हैं। एक दिन वे सब रात के समय सवारही उस मन्दिरमे गईं जहां कि राजा नित्य नित्य नये नये

राजा हँसा और बोला कि तुमने कहा सो मैं सब समझा। इसका उत्तर विचारकर देऊंगा। फिर कुछएक देर बाद विचारकर राजा ने कहा कि सुनो हे योगेश्वर! चार वस्तु एकसी ही हैं। अग्नि, जल, वायु और आकाश इन चारों से शरीर है और मन इनका स्वामी है परन्तु मन के वशही में ये चलें तो शीघ्रही शरीर नाश करदें परन्तु उनपर ज्ञानही बली है वह मनके विचारको पूरा नहीं होनें देता है और जो जन ज्ञानी होता है उसकी काया नष्ट नहीं होसकती वह इस संसारमें अजर अमर रहता है। और योगी जबतक मनको ज्ञानसे न जीतैगा तबतक उसका योग सिद्ध नहीं होता है। ये बातें योगियोंने राजाकी सुनीं तो अपने मनका हठ छोड़ा और एक योगीने प्रसन्नतासे राजाको एक खड़िया देकर कहा कि इसमें यह गुण है कि दिनमें जो जो इससे तुम लिखोगे वही रात को प्रत्यक्ष अपनी आंखों से देखोगे यह कहकर वे दोनों योगी चलगये। राजा ने अपने मन में आश्चर्य माना कि कहीं यह सत्य होसकता है? फिर राजाने एक मन्दिर खाली करवा, बुहराय, धुवाके, लिपवाकरके उसमें अकेला जाय, बिछौना बिछाय भीत में मूर्तियां लिखने लगा। प्रथम श्रीकृष्णजी की मूर्ति लिखी फिर सरस्वतीकी पीछे सब देवताओं की। इतने में सांझ हुई कि एकवारगी जय जय का शब्द होनेलगा। जो जो देवता लिखे थे वे वे सब प्रत्यक्षही देखे तो राजा मोहित हुआ और जो जो बातें वे आपसमें करते उन सबको राजा सुनता रहता परन्तु भयसे किसीको कुछ कह नहीं सकता था इतनेमें प्रभात हुआ और देवताओंने उठ

होता। तुमको मेरा दर्शनहुआ तुम्हारा काम सफल होगा। अब अपने नगरमें जावो। जो कार्य आरम्भ किया है उसको सम्पूर्ण करो। इसतरह राजाको समझाय और अमृतदे विदा किया। राजा चन्द्रमा को दण्डवत्कर अपने नगर को पधारे। राजाने राह में देखा कि किसी ब्राह्मण को दो यमके दूत लिये जाते हैं। राजा ने उसको जानलिया और ब्राह्मण ने भी राजा को दूरही से देख जानलिया कि इस राजा से भेंट है। राजा ने उस ब्राह्मणका शब्द सुनकर कहा कि भाई तुम कौनहो। तब उन दोनों ने कहा कि हम यमराज के भेजे हुये उज्जयिनी नगरी को गये थे और अब इस ब्राह्मणको ले अपने स्वामी के पास जाते हैं। राजाने कहा कि पाहिले इसे हमको दिखादेवो फिर जाना। तब दूत राजा को साथ लेकर नगर में आये और जहां उस ब्राह्मणकी देह पड़ी थी वह दिखाई। राजा ने उसे देखतेही विचारा कि यह तो हमारा पुरोहितही है इसको बचाना चाहिये। फिर राजा ने उन दूतों को बातों में लगा वह अमृत उसके मुखमें डालदिया। वह ब्राह्मण रामराम कह उठ बैठा। तदनन्तर राजाने प्रणाम किया और ब्राह्मणने आशीर्वाद दी और कहा कि मैंने आपसे जीवदान पाया। दूतोंने मन में अचरज कर विचारा कि राजा ने यह क्या किया हम यमराजसे जाकर क्या कहेंगे। निदान उन्होंने सब वृत्तान्त जाय कहा। यमराज सुन चुप होरहा और राजा ब्राह्मणका हाथ पकड़ अपने घरको ले गया और बहुतसा दान दे उसे विदा किया। राजा का यह यश संसार में फैला॥ इति सत्रहवां प्रदीप॥

अपना मार्ग लिया। वे पुतलियांही रहीं फिर राजाने दूसरी भीत मे हाथी, घोड़े, रथ, पालकी लिखे फिर जब रात हुई तो उसने सब सामां तैयार देखा और देख देख राजा अपने जी में अतिही प्रसन्न होता और उस संन्यासीको याद किया करता था कि वह कैसा पदार्थ मुझको देगया है। जब भोर हुआ तो फिर वह चित्रका चित्रही रहगया। तीसरे दिन राजा ने पहिले एक मृदंग लिखा फिर गन्धर्व और अप्सरायें भी लिखीं फिर तालबीन, रबाब, तंबूरा, मुरचंग, सितार, पिनाक, बांसुरी, करताल, अलगोजा आदि बाजे एक एक साज एक एक मूर्ति के हाथ में देकर लिखे। जब सन्ध्या का समय आया तो प्रथम एक शब्द हुआ फिर गन्धर्व, अप्सरा आदि प्रकटहो सांगीतरीतिसे गाने, बजाने और नाचने लगे तथा सब साज बाज सातों स्वरों के साथ होता जाताथा। इसी तरहसे राजा नित्य नित्य नये नये आनन्दों से रात बिताता था और दिनभर नये नये चित्र लिख लिख कर रातको निरंतर देखता रहता था यहां तक कि रनिवास में जाना छोड़ दिया। रानियों के मनमे चिंता हुई कि किस कारणसे महाराज महलों में नहीं पधारते हैं और अलग क्यों रहते हैं यह मालूम करना चाहिये। रानियां यह विचार आपस में कर राजा के वृत्तान्त जानने में तैयार हुईं और कहने लगीं कि हमारा जीना धिक्कार है और धर्म कर्म भी सब वृथा ही है कि राजा हमको छोड़ अलग होरहा है। हम यहां विरहकी मारी भारी दुःख भोग रही हैं। एक दिन वे सब रात के समय सवारहो उस मन्दिरमे गईं जहां कि राजा नित्य नित्य नये नये

अथ अष्टादशः प्रदीपः।

वियोगिनोऽपि संयोगे विक्रमी विक्रमो ह्यभूत्॥
वियोगिनं द्विजं कामकन्दलाढ्यं यथाऽकरोत् १८

अर्थ। वियोगवाले विरही के संयोग करने में भी विक्रमादित्य विक्रमी (पराक्रमी) हुआ जैसे वियोगी ब्राह्मणको कामकन्दलासे मिलाकर प्रसन्न किया १८॥ दृष्टान्त॥ एक बड़ा गुणी माधवनाम ब्राह्मण था वह योगी होकर सब पृथ्वी पर फिर आया पर कहीं ठहर कर रहने न पाया। वह रूप में मानो कामदेवका अवतार था उसको देखतेही स्त्रियां मोहित होजाती थीं। वह सब विद्या पढ़ाथा और अत्यन्त चतुर था। वह जिस राजाकी सेवा करने जाता था वहां एक दिन तो उसको आदर होता परन्तु जब वह अपना गुण प्रकाश करता तो उसको राजा अपने देशसे निकाल देताथा इसी प्रकार वह देश देश भटकता और दुःख पाता कामा नगरी में आ पहुँचा वहां का राजा कामसेन था। उसके यहां कामकन्दला नाम एक वेश्या थी। वह मानो उर्वशीका अवतारथी। गंधर्व विद्यामें अतिही चतुरथी। एक दिन वह राजाकी सभामें नृत्य कररही थी उस समय माधव भी उस राजद्वार पर पहुँचा और द्वारपालों से कहा कि राजासे जाय हमारा समाचार कहो कि आपके दर्शनको एक ब्राह्मण आया है ड्योढ़ीवान उसकी बात सुनी अनसुनीकर रहगया और वह ब्राह्मण वहां ही बैठगया पर ज्यों ज्यों मृदंगकी ध्वनि और गानेका शब्द आता था त्यों त्यों ही वह शिर धुन धुन कर कहता था कि

कौतुक देखरहा था। फिर हाथ जोड़ शिर नवाय विनती कर कर कहने लगीं कि महाराज ! हमसे ऐसा क्या अपराध हुआ है कि जो आपने हम सवोंको त्यागाहै यह सुनकर राजा हँसा और कहने लगा कि सुन्दरियो ! तुम्हें किसने सिखाया है कि जिससे तुम यहां आई। क्या तुमको किसीने कुछ कहा है जो तुम्हारा मुख मलिन दीखता है। राजाकी यह बात सुन कर उन्होंने शिरझुकाय कहा कि हे स्वामिन् ! हम अबलाओं ने कभी दुःख नहीं देखा है सुख मेंही सब आयु बिताई है अब एकबारही हम सब दुःसहविरह से व्याकुल होरही हैं यह हमारा दुःख आपके विना कौन दूर करे और किससे कहैं। आपने हमें वचन भी दियाथा कि हम तुमको कभी भी पीठ न देंगे। अब एकबारही निश्चिंत होरहे हो। हे स्वामिन् ! यह विरह हटावो। राजा को उनकी ऐसी ऐसी बातें सुनते सुनतेही सवेरा होगया। फिर रानियो ने कहा कि महाराज ! जबसे आपने मंदिरका वास लिया है तभी से रनिवास सूना है। यह सबका पाप आपहीको लगताहै। क्योंकि आप स्वामी हैं। राजा हँसकर बोला कि अब जिससे तुम सब प्रसन्न हो सोही हम करें और जो मांगो सोही देवें तब तो रानियां प्रसन्नहो बोलीं कि स्वामिन् ! यदि आप वर देते हैं तो यह ढेला हमें देदीजिये। तब सुनतेही राजा ने वह ढेला देदिया। रानियां वह ढेला ले, सवारहो निज निज महलों में आईं और राजाजी को भी लाचारहो लौट आनाही पड़ा ॥ इति सोलहवांप्रदीप ॥

अथ सप्तदशः प्रदीपः ।

विक्रमी विक्रमार्कोऽभून्मृतसञ्जीवनप्रभुः ॥

डुबवा देऊंगा। माधवने कहा महाराज! मुझसे ऐसा क्या अपराध होगया जो अपने देशसे निकालतेहो। राजा बोला कि जो कुछ मैंने तुझको दिया वह सब तैंने इस वेश्या को देदिया। क्या मेरे पास देने को कुछ न था? जो तैंने दिया। यह सुन मन मलिन हो माधव वहां से बाहर जाय एक वृक्ष के नीचे व्याकुल खड़ा हो कहनेलगा कि जो अपने बेटे को माता ही विष देदेवे और पिता पुत्र को बेच देवे और राजा जो सर्वस्व छीनलेवे तो फिर किसकी शरण लेवें। राजा ने अपने नगरसे निकाल दिया अब मैं कहां रहूं। योंही अनेक प्रकार की चिन्ता कर कामकंदला का नाम लेलेकर रोताथा और उधर कामकंदला भी राजासे बहाना कर विदा हुई और एक आदमी दौड़ाया कि वह ब्राह्मण जाने न पावे उसको ले जाकर मेरे मकान में बैठा दो। वह आदमी गया और ब्राह्मण को ले जाकर उसके मन्दिर में बैठादिया। फिर वह भी शीघ्र जा पहुंची और दोनों आपस में प्रेमकी बातें करने लगे। ब्राह्मणने कहा कि मुझको राजाने देशनिकाला दिया है और तैंने अपने घर बुलालिया है यदि यह बात राजा जानेगा तो मेरे प्राण जायँगे परन्तु मैं तो दुःख ने छूटूंगा किन्तु तुझको भी कष्ट देगा इससे ऐसा उचित नहीं है कि जान जातीरहे और जगत् में हँसी होवे। प्रेम तो महादुःखकी खानि है जिसने प्रेम के फंदे में पांव दिया उसने कभी भी सुख नहीं पाया। ये बातें माधव की सुनकर कामकंदलाने कहा कि अब तो मैं इस पथ में आगई हूं होगा सो देखा जायगा। इतना कह सब साजबाज मँगवाकर अपनी विद्या दिखानेलगी। जितनी विद्याएं उसको याद थीं

यथा मृतन्द्विजं राजा मृतसेकादजीवयत् १७

अर्थ। पराक्रमवाला विक्रमादित्य मरेके जिवाने में भी प्रभु (समर्थ) हुआ जैसे राजा ने मरेहुये ब्राह्मण को अमृत के सिंचनसे जिवाया १७॥ दृष्टान्त ॥ एक दिन विक्रमादित्य ने प्रसन्न होकर रासमण्डली के प्रधान को आज्ञादी कि यह कार्तिक का महीना परम पवित्र है इसमें मन लगाकर हरि-भजन करना चाहिये इसलिये शरदपूनों को रासलीला करो। प्रधान ने राजाकी आज्ञा पाय देश देश के राजाओं और पंडितों को न्योता देकर बुलवाये और जितने नगर के योगी थे वे भी बुलवाये तथा जितने देवता थे वे भी मंत्रों से आवाहन कर बुलाये। अब रास होनेलगा तथा चारोंओर से जय जय शब्द होनेलगा और राजा एक एककी शिष्टाचार से मनुहार करनेलगा और ठाकुर का प्रसाद फूलमाला आदि सबको देतारहा। जब राजा ने जो देखा कि सब देवता आये और चन्द्रमा नहीं आया तो अपने मनमें विचारकर वेताल पर सवार होकर चन्द्रलोक को गया। वहां जाय चन्द्रमाके सम्मुख हो दंडवत् की और हाथ जोड़ बोला स्वामिन्! मेरा क्या अपराध है जो आपने कृपा न की। केवल तुम्हारे विना मेरा काम अधूराहै। अब विजय कीजिये और मेरा काम सुधारिये। आपको धर्म होगा और मुझे इस संसार में यश मिलेगा। कदाचित् इस काम में आप विलंब करेंगे तो मैं हत्या देऊंगा। चन्द्रमा ने हँसकर कोमल और मधुर वचन से कहा कि राजा! मैं सत्य कहताहूं तुम मनमें उदास न हो। मेरे जानेसे संसारमें अन्धकार होजावेगा इससे मेरा जाना नहीं

सब दिखाचुकी तब माधवने उन यंत्रों के साथ अपना भी गुण दिखाया। जब थोड़ीसी रात रहगई तब कामकन्दला ने कहा कि तुमने बहुत श्रम किया अब चलकर आराम कीजिये यह कह माधवको रंगमहलमें लेगई। जब राजाकी बात याद आई तो जितनी प्रसन्नता थी वह जातीरही और घबराकर माधवने कहा कि सुन्दरी! रात तो आनन्द में बीती पर अब जो मैं यहां रहूंगा तो दोनों के प्राण जायँगे इसलिये कुछ यत्न करना चाहिये जिससे निर्वाह होवे मैंने एक बात विचारी है कि अब मैं यहां से जाऊं और कुछ उपाय कर फिर आकर [illegible] भी लेजाऊंगा। तू मन में ढाढ़सबांध घबरा मत। मैं [illegible] देकर जाताहूं। इतनी बात सुनतेही वह तो मूर्च्छा खाय गिरी और माधव ने उठ अपनी राहली। वहां से निकल वन वन फिरने लगा और हाय कामकन्दला! हाय कामकन्दला!! कह कह कर पुकारने लगा। यहां सखियोंने गुलाबका जल छिड़ककर उसे उठाई तो कुछ होश आया। फिर वह भी माधव माधव कह पुकारने लगी। खाना, पीना, सोना और सब आराम त्यागदिये। सखियां बहुत समझाती थीं पर उसके जीमें एकभी नहीं आतीथी। ज्यों ज्यों गुलाब, चन्दन, चोवा, इत्र लगाती थीं त्यों त्यों उसके चौगुनी दाह होतीथी। किसीप्रकार भी शीतलता नहीं होतीथी। जब कोई माधवका नाम और गुण सुनाता तब उसे चैनपड़ता था। इस ओर माधव भी भटक कर विचारनेलगा कि अब इस संसारमें ऐसा कौन है जिसके पास जावें और वह हमारा दुःख दूर करे। फिर विचार किया कि राजा वीर विक्रमादित्य

होता। तुमको मेरा दर्शनहुआ तुम्हारा काम सफल होगा। अब अपने नगरमें जावो। जो कार्य आरम्भ किया है उसको सम्पूर्ण करो। इसतरह राजाको समझाय और अमृतदे विदा किया। राजा चन्द्रमा को दण्डवत्कर अपने नगर को पधारे। राजाने राह में देखा कि किसी ब्राह्मण को दो यमके दूत लिये जाते हैं। राजा ने उसको जानलिया और ब्राह्मण ने भी राजा को दूरही से देख जानलिया कि इस राजा से भेंट है। राजा ने उस ब्राह्मणका शब्द सुनकर कहा कि भाई तुम कौनहो। तब उन दोनों ने कहा कि हम यमराज के भेजे हुये उज्जयिनी नगरी को गये थे और अब इस ब्राह्मणको ले अपने स्वामी के पास जाते हैं। राजाने कहा कि पाहिले इसे हमको दिखादेवो फिर जाना। तब दूत राजा को साथ लेकर नगर में आये और जहां उस ब्राह्मणकी देह पड़ी थी वह दिखाई। राजा ने उसे देखतेही विचारा कि यह तो हमारा पुरोहितही है इसको बचाना चाहिये। फिर राजा ने उन दूतोंको बातों में लगा वह अमृत उसके मुखमें डालदिया। वह ब्राह्मण रामराम कह उठ बैठा। तदनन्तर राजाने प्रणाम किया और ब्राह्मणने आशीर्वाद दी और कहा कि मैंने आपसे जीवदान पाया। दूतोंने मन में अचरज कर विचारा कि राजा ने यह क्या किया हम यमराजसे जाकर क्या कहेंगे। निदान उन्होंने सब वृत्तान्त जाय कहा। यमराज सुन चुप होरहा और राजा ब्राह्मणका हाथ पकड़ अपने घरको ले गया और बहुतसा दान दे उसे विदा किया। राजा का यह यश संसार में फैला॥ इति सत्रहवां प्रदीप॥

परदुःखहारी कहेजाते हैं भला उनके पास जावें और देखें कि लोग सत्य कहते हैं या झूठ। यह विचारकर उज्जयिनी नगरी को चला गया। वहां लोगों से पूछा कि यहां के राजा से भेंट कैसे होसकेगी? तब एक नगरनिवासी बोला कि गोदावरी के किनारेपर एक शिवजी का मठहै राजा वहां नित्य दर्शन करनेआता है। वहांही तू जा जो तेरा मनोरथ है वह पूरा होगा। यह सुन वह वहांही गया और उस मठके द्वारकी चौखटपर लिखा कि मैं विदेशी, दीनदुःखी ब्राह्मण विरहसे अति व्याकुल हो तुम्हारे देशमें आयाहूं। सुनाहै कि राजा परदुःखहारी हैं। जो राजा यह मेरा दुःख मिटावे तो जी रहसक्ता है नहीं तो तीसरे दिन गोदावरी में डूबकर मर जाऊंगा मैंने अपने मनमें यही ठानी है। तुम राजा महाराजा हो और सदाही गो-ब्राह्मणकी रक्षा करते रहेहो और अब भी करोगे। मैंने यह मनकी कामना प्रकट करदी है। उस राजाका यह नियमथा कि जबतक किसी दुःखीका दुःख दूर नहीं करदेता तबतक अन्न जल तो क्या दातून तक नहीं करताथा। उस दिन राजा भोरही दर्शनको गया और दर्शन कर परिक्रमा करने लगा। ज्योंही राजा ने दृष्टि ऊंची करके देखा तो वह लेख दिखाई दिया। राजा ने उसको बांचा और महादेव को दण्डवत् कर राजमन्दिर में आय आज्ञा दी कि माधव नाम ब्राह्मण हमारे नगर में आयाहै जो कोई उसे ढूंढ़ लावेगा वह मुंहमांगा द्रव्य पावेगा। यह आज्ञा सुनतेही नगर के लोग उसको ढूंढने निकले। घाटबाट, टोला, मुहल्ला, गली, बाग, बगीचा और सब नगर ढूंढ देखा पर पता न पाया फिर

राजा ने अपनी दूतीको बुलाकर कहा कि तू उस ब्राह्मण का पता लगा। वह यह सुन बोली महाराज! यह कौन कठिन बात है मैं अभी जाकर पता लगाती हूं। वह दूती शिवमंदिर में जहां उसने लिखाथा उसके पास जाय बैठी। सांझ के समय वह भी भटकताहुआ आपहुंचा। उस दूती ने इसको देखतेही जानलिया कि वह यहही है क्योंकि मुंह पीला और आंसू वह रहे हैं। फिर वह भी वहां आकर बैठगया और एक दम हाय कामकन्दला! कहके पुकारा। उसने उसकाहाथ जा पकड़ा और कहा कि मैं राजाकी आज्ञापाकर तुमको ढूंढने के लिये आई हूं तुम मेरे साथ चलो तुम्हारा मनोरथ पूरा होगा। तुम्हारे दुःखसे राजा भी दुःखी है। यह सुनतेही वह उसके साथ हो लिया फिर वह भी राजा के समीप पहुंचके कहने लगी कि यह वही वियोगी है जिसके लिये आपने ऐसा दुःख उठाया है! राजाने ब्राह्मण से पूछा तुम किसके वियोग से ऐसे व्याकुल होरहे हो मेरे आगे कहो। तब उसने कहा महाराज! कामकन्दलाके वियोगसे मेरी यह दुर्गति होरही है। वह राजा कामसेन के पासहै। तुम धर्मात्मा हो मैं तुम्हारे पास इसीलिये आयाहूं तुम उसको दिलादेवो तो जीव वचजायगा। यह सुनतेही राजा बोला कि हे विप्र! वह वेश्याहै तुमने उसके प्रेम में अपना धर्म-कर्म छोड़ा यह उचित नहीं है। माधव ने कहा महाराज! प्रेमका पंथ निराला है जो जन प्रेम करते हैं वे अपना धर्म, कर्म, तप और तेज उसी के अर्पण कर देते हैं। प्रेमकी अकथ कहानी है वह मुझसे कही नहीं जातीहै। राजा ने जो ये बातें सुनीं तो उसको अपने मकानमें लेगया और सब

रहाहै। उसके हाड़, मांस और चाम सूख गये हैं और उसमें से रक्तकी एक बूंद उस नदी में गिरती है और वही फूल होकर वहांसे बहता चलाजाताहै। इस अचरजको देख मनमें कहने लगा कि भगवान् की लीला कुछ बुद्धि में नहीं आती। फिर नीचे निगाह करके देखा तो ऐसेही बीस योगी जटाधारी बैठे हैं और सूख कर वे भी काष्ठवत् होगये हैं और उनके चारों ओर दंड कमंडलु पड़े हैं और जिस ज्ञान ध्यान में जैसे बैठेथे वैसेही बैठे हैं। यह दशा वहां की देख प्रधान उलटा लौटा और अपनी नावपर सवार हो कुछ दिनोंमें अपने नगर में आपहुंचा। लोगों ने उसके आने के समाचार पा अगवानी लेनेको गये और लेआये। जो कोई आता था मिलकर और क्षेमकुशल पूछकर बधाई देताथा। उसके घरमें भी नौबत बजने लगी और मंगलाचार होनेलगा। यह समाचार राजाने सुना और एक प्रधानको भेज कर मंत्री को बुलाया। वह आकर बुला लेगया। मंत्री वहां गया और राजाके पांवोंपर गिरपड़ा। राजाने उठकर उसको छाती से लगा क्षेम-कुशल पूछी और कहा कि तू कहांतक गया था और उसका कहां ठिकाना करआया। यह सुनतेही मंत्री ने वे फूल भेंट किये और हाथ जोड़कर कहनेलगा कि महाराज! एक अचम्भे की बातहै, जो मैं कहूंगा तो आपको विश्वास नहीं आवेगा। राजानेकहा कि जो तुमने अचंभा देखाहै वह वर्णन करो। वह बोला कि महाराज! मैं यहां से चला हुआ एक वनमे पहुंचा और वहां जाकर एक पहाड़ देखा। उस पहाड़ पर जब मैं चढा तो एक पहाड़ और दृष्टि मे आया फिर उस पहाड़ को लांघ जब मैं

रानियोंको आज्ञादी कि तुम अपना अपना शृंगार कर आवो। सब रानियां शृंगार कर आईं तब राजाने उस विप्रसे कहा कि इन रानियों में से जिसे चाहो उसे ले लेवो और अपने मन का दुःख बिसारो और सुख से रहो। उसने उत्तर दिया कि महाराज ! मैं आपके आगे सत्य कहताहूं कि मेरी आंखों में वही बसरही है इससे मेरी दृष्टि में कुछ नहीं आता। चातककी तृषा स्वाती की बूंदसे ही बुझती है और जलपर उसकी रुचि नहीं होती है। उस विप्र की ऐसी प्रेमकी दृढ़ता देख राजाने अपने मनमें विचारा और फिर उस ब्राह्मण से कहा कि हे देवता ! तुम स्नान पूजनकर कुछ खालेवो तबतक मैं भी अपने लोगोंको बुलाकर तुम्हें साथ लेचलूं और कामकन्दलासे मिला दूं। तुम अपने जी में किसी बात की चिन्ता मत करो मैंने तुमसे यह वचन हारा है। विप्र तो अपने भोजन करनेमें लगा और राजाने प्रधान को बुलाकर आज्ञा की कि मेरे डेरे नगर से बाहर करदे। चार घड़ी बाद मैं कामानगरी को जाऊंगा सबको खबर करो। फिर कुछ समय में राजा तैयारहो विप्रको साथ ले डेरों मे जा प्राप्त हुआ और जितने राजाके नौकरथे वे भी सब तैयार हुये। फिर वहां से चलकर कुछ दिनों में कामानगरी से दश कोश के अन्तरपर जा डेरा किया और उस राजाको पत्र लिखा कि हम कामकन्दला वेश्या के लिये तुम्हारे यहां आये हैं उसे भिजवा दीजिये। जो नहीं भेजो तो युद्धकी तैयारी करो। यह पत्र में लिख एक दूतके हाथ भेजदिया। राजाको खबर हुई कि राजा विक्रमादित्य का एक दूत पत्र लेकर आया है। यह सुनतेही राजाने उसको

आगे गया तो पहाड़ के नीचे एक सुन्दर मन्दिर देखा। मैं उस के पास गया तो एक वृक्ष पर पांवों में जंजीर बांधे हुये उलटा लटकता हुआ एक तपस्वी दृष्टि पड़ा। मांस चाम उसका सब हाड़ों में सटरहाहै और उस देहसे जो रक्त टपकता है वह फूल बनकर वहताहै और उसके समीपमें बीस तपस्वी आसन लगाये जिस ध्यानमें बैठेथे वे ज्योंके त्योंही रहगये हैं प्राण एकमें भी नहीं है। यह सुनकर राजा हँसे और मंत्रीसे कहने लगे कि सुन, मैं उसका विचार तुझसे कहताहूं कि वह जो तपस्वी जंजीर में लटकता देखाथा वह तो मेरा देह है। मैंने उस जन्म ऐसी कठिन तपस्या की थी जिसका फल यह हुआ कि मुझे राज्य मिला और वे जो बीस सिद्ध तैंने देखे थे वे बीसों ये दास हैं जो तैंने लादिये और उस तपस्या के तेज से मेरे आगे कोई नहीं ठहरसक्ता है उसी के बल से मैंने शंख को मारा है। यह पूर्वजन्म का लिखा था इसमें मेरा कुछ दोष नहीं है। जब तक मैं इस पृथ्वी में अखण्ड राज्य करूंगा तबतक तू मंत्री रहेगा। तू अपने जी में चिन्ता मत कर इसमें तेरा भी कुछ दोष नहीं है जैसा पूर्वजन्मका लिखाथा वह हुआ। जैसी उन्होंने मेरी सेवा की थी वैसाही अब उसका फल भोग करेंगे। तब उन्होंने मेरे साथ जी दियाथा इसलिये मैंने उन बीसों को अपने निकट रक्खा है। अपना परिचय देने के लिये तुझसे यह निठुराईकी थी। अब तू विश्वास रख। तैंनें मेरा वृत्तान्त जाना है। सब लोग कहते हैं कि विक्रमने अपने बड़े भाईको मारा परन्तु इसमें मेरा दोष कुछ नहीं है जो कर्मका लिखाहै वही होता है। तुझको आजसे मैंने अपना प्रधान किया।

सामने बुलवाया। उसने प्रणाम कर राजा के हाथ में पत्र देदिया। राजाने उस पत्रको बांचकर कहा कि अच्छा अपने राजासे कहो चले आवें। हम युद्ध करने को तैयार हैं। दूत ने आकर राजासे कहा कि महाराज! वह लड़ने को तैयार है। तब तो राजाने अपनी सेनाको भी लड़नेकी आज्ञा दी। फिर राजाके मनमें आया कि जिसके लिये हम आये हैं उसकी प्रीतिकी भी तो परीक्षा लेनी चाहिये। यह विचारकर राजा वैद्य का स्वांग बनाय कामा नगरी में गया और लोगों से कामकन्दला का मकान पूछ द्वार पर जा "वैद्य हकीम कर" पुकारा। यह शब्द सुन एक दासी बाहर आई और पूछने लगी कि यदि तुम वैद्यहो तो हमारी नायिका के रोगका यत्न करो जो वह अच्छी होगई तो तुमको बहुतसे रुपये मिलेंगे। यह कह उसको साथले कामकन्दला के पास लेगई। राजा ने देखी कि वह निर्जीव सी पड़ी है फिर राजाने उसकी नाड़ी देखके कहा कि इसके कोई ऐसा रोग नहीं है जो औषध से मिटे। केवल इसको किसी के वियोग की बीमारी है। उसी से इसकी दुर्गति होरही है। यह कहतेही कामकन्दला ने आंख खोलकर देखा और बोली कि इसका कुछ यत्न तुम्हारे पास हो तो करो। राजा बोला कि इसका यत्न तो था पर अब कुछ कहनेकी बात नहींहै। वह बोली अवश्य कहो। राजाने कहा कि माधवनाम एक ब्राह्मण था उसको हमने उज्जयिनी नगरीमें वियोग से दुःखी देखाथा। वह अब दुःख पाकर मरगया। यह सुनतेही उसने भी हायकर अपना देह छोड़ा। यह दशा देख घर बाहरके सब रोनेलगे तब इसने कहा कि कुछभी चिंता न

अब जिसमें राजकाज अच्छा होवे वह करना और यह बात किसीके आगे मत कहना इसलिये कि जो सुनेगा वह राज्य के लोभसे योग कमावेगा ॥ इति बीसवां प्रदीप ॥

अथैकविंशः प्रदीपः।

दत्ते वित्तेऽप्यसौ पश्चाद्दद्यादन्यदपि प्रभुः ॥
प्रसन्नस्तेन दानेन यथाऽदाद्विक्रमो धनम् २१

अर्थ। समर्थ मनुष्य दान दिये पीछे उस दान से प्रसन्न होकर और भी दान देता है जैसे विक्रमादित्य ने दान देकर भी और दान दिया २१ ॥ दृष्टान्त ॥ एक दरिद्री भाट खराब हाल था वह सब पृथ्वी के राजाओं के पास फिर आया परन्तु एक कौड़ी भी किसीसे न मिली। जब लौटकर अपने घरमें आया तो देखा कि बेटी ब्याहने के योग्य होगई है। यह अपने जीमें चिंताही करताथा कि उसकी भाटिनी बोल उठी कि तुम सब देशों में फिर आयेहो जो कमाकर लायेहो वह कहो। उसने उत्तरदिया कि मेरी प्रारब्धमें धन नहीं है। इसलिये कि मैं सब राजाओं के पास गया और उन्होंने शिष्टाचार भी किया पर एक पैसा भी हाथ न आया। अब मेरे जीमें एक बात आती है। राजा वीरविक्रमादित्य बाकी रहगया है उसके पास भी जाकर मागूं जिससे मेरे जीका संदेह मिटे। फिर वह भाटिनी बोली कि अब तुम कहीं मत जाओ और संतोषकर रहो। कर्म का लिखा फल यहीं बैठे पावोगे। भाटने कहा कि राजा वीरविक्रमादित्य बड़ा दानी है। उसके पास जो जो कामना कर गये वे खाली नहीं फिरे और अपने मनोरथ को

यह क्या कहा ? यह तो सर्वत्रही प्रसिद्ध है कि जन्म लेतेही लड़का माता पिता के जो जो आचरण देखता है उसी व्यवहार से चलता है । इसमें कर्म का लिखा क्या है। बालक सिखाये से सिखता है और जैसी संगति में बैठता है वैसी उसकी बुद्धि होती है। फिर मंत्री बोला कि धर्मावतार ! आप की बराबरी हम नहीं करसक्ते यह अपने मन में विचार करके देखिये कि कर्म का लिखाही फल मिलता है। तब राजा ने कहा कि अच्छा इस बात की परीक्षा लेनी चाहिये । फिर राजाने महावन में एक मंदिर बनवाया जहां कि मनुष्यका शब्द भी न जाय वहां अपने एक बेटे को पैदा होतेही उसे मन्दिरमें भिजवादिया और उसके साथ एक ऐसी दाई करदी कि जो आंखो से अंधी, कानों से बहरी और मुँह से गूंगी थी। वही उसको दूध पिलाती थी और पालन करती थी। फिर इसी प्रकार से एक मंत्रिपुत्र को और एक ब्राह्मण के सुत को तथा एक कोतवाल के पुत्रको जन्मतेही गूंगी और बहरी दाई दे उसी मंदिर में भिजवा दिया। वे दिन प्रतिदिन बढ़नेलगे। और उस मन्दिर के दो दो कोस चारों ओर ऐसी गाढ़ी चौकी बैठा दी कि जहां मनुष्य के जाने की तो क्या सामर्थ्य थी ढोल नगारा आदि की भी ध्वनि न जाती थी। इस तरह से जब बारह बरस बीतगये तब एक दिन ब्राह्मणीने अपने स्वामी से कहा कि स्वामिन् ! एक युग पूरा हो चुका परन्तु मैंने अपने पुत्र का मुँह नहीं देखा। कदाचित् मेरा प्राण निकल जाय तो मनमें देखने की अभिलाषा रहजायगी इससे अब आप राजा के निकट जाकर कहो कि महाराज ! बारह बरस

पहुँचे। ये बातें कर वह राजा के पास चला और गणेशजी को मनाय राजा के सम्मुख जा खड़ाहुआ। राजा ने दण्डवत की और वह आशीर्वाद देकर बोला कि महाराज! बहुत भूमि फिर आयाहूं अब आपका यश मुझे यहां लेआया है आप इसलोक में इन्द्रके अवतार हैं और गुणके निधानहैं आपके बराबर दानी संसार में कोई नहीं है। इससमय में आप दान देनेको राजा हरिश्चन्द्र हैं। सब पृथ्वीमें आपका यश छारहाहै। स्वामिन्! मैं कालका सुत हूं।मैंने भाट वंशमें आकर अवतार लियाहै अब तुम्हें यांचने आयाहूं। मेरा मनोरथ पूरा करदो। मैंने संसारमें फिरकर सबको देखा पर सिवाय आपके मेरी आशा का पूरनेवाला और कोई नहीं है। तब राजाने हँसकर कहा कि तुम अपना सब मतलब मेरे आगे ठीक ठीक कहो कि मैं तुम्हारी कामना पूरीकरूं। भाटने कहा कि मुझे अपने कर्म का भरोसा नहीं है आप वचन दीजिये तो मैं कहूं तब राजा वचन देनेलगा तब भाट बोला कि महाराज! जो कुछ आपको देना है वह अपने सामने मँगाकर देदीजिये। मुझे अपने कर्म का भरोसा नहीं है और न इस संसार में मुझे किसीका भरोसा है। मेरा काम यह है कि आप मुझे मुँह मांगा द्रव्य दीजिये जिससे मैं कन्याका विवाह करूं। बीस वर्षकी कन्या मेरे है इसलिये आपको यांचने आयाहूं। यह सुनकर राजाने अपने मंत्री से हँसकर कहा कि यह जो जो मांगे वह वह ही इसको देवो। उसने दश लाख रुपये रोकड़ी और हीरे, लाल, मोती, सोने, रूपे के गहने थाल भर भरकर दिये और वह ले आशीर्वाद देताहुआ

अपने घर में आया। वह जो कुछ लाया था वह सब व्याहमें लगादिया। राजाने उसके पीछे दो जासूस करादिये थे कि तुम जाकर देखना कि यह धनको ले जाकर क्या करताहै और उसका समाचार ठीक ठीक मुझे लाकर देना। जब वह व्याह करचुका और उसके पास एक दिनके भोजन को भी न रह गया तब उन जासूसों ने आकर राजाको समाचार दिया कि महाराज! उस भाटने बेटी का विवाह ऐसा किया कि इस कलियुग में कोई और ऐसा नहीं करसक्ता। जो कुछ आपके यहांसे धन लेगया था वह छिनभर में बेटीके व्याहमें देदिया। यह सुनकर राजाने और कई लाख रुपये उसके घर भेज दिये और अपने चित्तमें बहुत प्रसन्न हुआ कि धन्य भाग्य मेरे हैं कि जो मेरे राज्यमें ऐसे मनुष्य हैं॥ इति इकीसवां प्रदीप॥

अथ द्वाविंशः प्रदीपः।

विक्रमी विक्रमार्केण समोऽन्यो न महीपतिः॥
आसीद्य शंकरात्सद्य स्वमृत्योर्ज्ञानमाप्तवान् २२

अर्थ। विक्रमादित्य ऐसा पराक्रमी राजा और नहीं हुआ जिसने शिवजी के सकाश से निज मृत्यु को भी जाना २२॥

दृष्टान्त॥ एकदिन राजा विक्रमादित्य सभा में बैठाथा उस समय एक दासी ने आकर विनती की कि महाराज! उठिये पूजा का समय जाता है। यह सुनकर राजा ने विचारा कि इसने सत्य कहा मेरी उमर चली जाती है और मुझसे ज्ञान, धर्म, पूजा आदि नहीं बन आये इससे उत्तम यहहै कि इस राजकाजकी माया भुलाय अब योग करना चाहिये जोकि अन्य

कि तुम अपनी कुशल कहो कहां थे और किस ओर से आये हो ? वह बोला कि महाराज ! कुशल क्षेम कहाँ है ? इस ओर संसार में उपजते हैं और उस ओर विनशते जाते हैं जैसे घड़ी भरती और डूबजाती है । प्राणी जानता है कि दिन जाता है और दिन जानता है कि प्राणी जाताहै। यही सबका व्यवहार है इसमें कुशलक्षेम काहेकी कहूं । उसकी ये बातें सुन राजाने दीवान से कहा कि इसको यह किसने सिखायाहै जो कुछ तैंने कहाथा वह सब सत्यहै यह फल इसने कर्महीसे पाया है । फिर राजाने कोतवाल के बेटे को बुलवाया उसने भी आतेही राजा को प्रणाम किया और हाथ जोड़ खड़ा हुआ । राजाने कुशल पूछी तब उसने कहा कि पृथ्वीनाथ ! दिन रात हम नगरका पहरादेते हैं इसमें भी चोर आकर चोरी करताहै और बदनाम हम होतेहैं।जब विना अपराध कलंक लगताहै तो फिर कुशल काहेकी है। राजा ने फिर ब्राह्मण के पुत्रको बुलाया। जब वह सम्मुख आया राजाने दण्डवत् की। उसने भी मन्त्र पढ़कर आशीर्वाद दी । राजाने उसकी कुशल पूछी तब उसने कहा कि महाराज ! आप मुझसे कुशल पूछते हैं सो कुशल कहां है । जब मेरी आयु दिन दिन घटती जाती है तो कुशल कहां से होसक्ती है ? मनुष्य चिरंजीवी होवे तो कुशल हैं जब जीवन मरण साथ हैं तो उसकी क्या कुशल कहूं । राजाने चारों की चार बातें सुनकर मंत्री से कहा कि सत्य है पढ़ाने से पण्डित नहीं होता । पण्डिताई कर्म में लिखीहो तो मिलती है । यह कह मंत्री को सब प्रधानों का प्रधान किया और अपने राजकाजका भारदिया और उन चारों लड़कोंके व्याह

जन्म में काम आवे। राजाने अपने मन में यह विचारा। फिर धन, जन और राज्य इन सब को मिथ्या समझकर तपस्या करनेको एक वन में चला और यह विचार करता जाता था कि इस संसार में जीना ओस की बूंद के समान है और मैंने जीने के भरोसे पर अपना काम अकारथ गँवाया यह विचार करता हुआ एक महावनमें जा पहुँचा। वहां जाकर देखे तो एक मण्डली तपस्वियों की बैठीहुई है। एक एक के आगे धूनी जल रही है और आसन लगाये अपने अपने ध्यान में लीन होरहे हैं। कोई ऊर्द्धबाहु, कोई कपाली आसन, कोई पंचाग्नि है इसी रीति से अनेक प्रकारकी साधनाएं कर रहे हैं। कोई कोई तो शरीर से मांस काट काट कर होम कररहाहै। इस प्रकारसे उनकी तपस्या देख, राजा तप करने लगा। आप तपस्या करताथा और उनकी तपस्या देखता था। कुछ दिनोंमें तपस्वियों ने अपना सब शरीर होम दिया। उनकी देखादेखी राजा भी अपना शरीर होमनेलगा। कई महीनेमें राजाने एकदिन अपना शिर भी काटकर होम दिया। वहां एक शिवका मंदिर था उसमें से एक शिवगण निकला और निकलकर सब तपस्वियों की धूनी में से राख समेटकर अलग अलग ढेरी की और फिर जा शिवजीको खबरदी कि महाराज! जो आपने कहा था सो मैं कर आया। शिवने आज्ञा की कि यह अमृत ले जा और उनके ऊपर छिड़क आ। वह आज्ञा पाय अमृत ला ज्यों ज्यों छिड़कताथा त्यों त्यों उनमें से एक एक राम राम, शिव शिव, कह कह कर उठ खड़ा होता था। सबपर तो उसने छिड़कदिया परन्तु राजाकी धूनी

कर दिये तथा उनको बहुतसा धन दौलत दिया ॥ इति उ-
न्नीसवां प्रदीप ॥

अथ विंशः प्रदीपः।

पुराचीनो यथा मन्त्री कार्य्यं कुर्य्यात्प्रभोःश्रमात्॥
न तथा मन्त्रिणौ नव्यावनुभूतं तु विक्रमे २०

अर्थ। जैसे पुराना मन्त्री परिश्रम से स्वामी का काम करे तैसे नवीन मन्त्री नहीं करे। यह विक्रमादित्यमें अनुभव किया गया २०॥ दृष्टान्त॥ जिस समय में राजा विक्रमादित्य शंख को मारकर राज आसन पर बैठा तब शंख के मंत्री को बुला कर कहा कि तुमसे मेरा काम नही चलेगा। तू बीस दास मुझे बुला दे जो राजकाज के योग्यहों। तुमसे इस कामका बन्दोबस्त न होगा। मैं उनसे सब काम लेऊंगा। राजा की आज्ञा पाय बीस आदमी उसी नगर से ढूंढ़कर ले आया जो कि कुल में, वयस में और सुन्दरता में सबके सब अच्छे थे राजाके सामने खड़े करदिये। राजा उनको देखतेही बहुत प्रसन्न हुआ और उसी समय वस्त्र पहना के कहा कि तुम हमारी सेवा में सदा उपस्थित रहा करो। फिर कुछ दिन बाद उनमें से किसी को मंत्री, किसी को कोतवाल और किसी को सेनापति किया। इसी प्रकार से एक एक को काम दे पुराने लोगों को छुड़ा दिया और सब नया बन्दोबस्त किया परन्तु एक उस पुराने मत्री को नहीं छुड़ाया। पुराना मंत्री जब अपने घर में बैठा करता तो वे सब पुराने लोग आते और आपसमें चर्चा करते कि यह राजा बुद्धिमान् है जो राज्य का ऐसा प्रबन्ध

भूलगया। वे सब तपस्वी मिलकर शिवकी स्तुति करनेलगे कि महाराज! आप भक्तराजहैं और अनाथके नाथ हैं जिसने आपकी शरण ली है उसका मनोरथ आपने पूरा किया है और जहां जहां सेवकों को संकट हुआ है वहां वहांही उनके सहायक हुये हो। यह स्तुति करके फिर उन सेवकों ने कहा कि महाराज! एक नृपति भी हमारे साथ तपस्या करताथा परन्तु मालूम नहीं कि उसको आपकी आज्ञा हुई कि नहीं। यह सुन महादेवने उस गणकी ओर देखा। उस गण ने देखते ही अमृतला जो धूनी बाक़ी रहीथी उसपर जा छिड़का तो राजा भी राम राम कहकर उठबैठा और हाथ जोड़ स्तुति करनेलगा कि महाराज! संसारके सब जीवोंकी आपही सहायता और पालना करते हैं आप विना इस संसारसागर से पार कौन उतार सक्ताहै। जिसने जगत्मे जन्मले आपको नहीं पहिचाना उसने अपना जन्म निष्फल खोदिया। फिर वहां जितने तपस्वी थे उनको शिवजीने मुँहमांगा वर दिया और सबको विदा किया जब राजा सबके पीछे अकेला रह गया तब उससे भी कहा कि जो तेरी इच्छामें आवे वह वर मांग मैं तुझे दूंगा। यह सुन राजाने कहा महाराज! आपकी दयासे सब कुछ है परन्तु यह मांगता हूं कि संसार के जन्म मरणसे मुझे छुड़ा दीजिये। जैसे और भक्तोंका छुड़ाया है वैसेही मुझसे परमपापी दीनजन को तारो। राजाकी यह बिनती सुनकर दयालु शंकरजी ने हँसकर कहा कि तेरे समान कोई कलिकाल में नहीं है और तू ज्ञानी, योगी, दाता, साहसी और तपस्वी है तथा राजाओं का उद्धार करनेवाला है। मैं

किया । एक दिन मंत्री ने उन लोगों से कहा कि तुम मेरे पास न आया करो क्योंकि मेरे हाथ से तुम्हारा काम तो निकलता नहीं है और राजा सुनेगा तो अप्रसन्न होगा और कहेगा कि यह अपने घर में कुछ मता किया करता है । मैं अपनी बदनामी से डरता हूं । तुम मेरे कहने का कुछ बुरा न मानना । यह सुनकर उनमें से फिर कोई उसके पास न आया । मन्त्री अपने मनमें विचार करने लगा कि ऐसा कुछ यत्न करना चाहिये कि जिससे राजा संतुष्ट हो । रात दिन यही विचार करता था । एक दिन वह प्रधान नदी के किनारे स्नान करने गया । वहां स्नानकर कमरभर पानीमें खड़ा हुआ जप करता था उससमयमें एक फूल अति विचित्र और सुन्दर नदीमें बहता हुआ देखा । मन्त्री ने अपना जप छोड़, आगे बढ, फूल लेकर मनमें विचारा कि यह राजाकी भेंट करूंगा तो वे इसको देख कर बहुत प्रसन्न होवेंगे । फिर वह फूल हाथमें ले प्रसन्न होता हुआ अपने घरमें आ, कपड़े पहनकर राजा के पास गया और फूल भेंट किया । राजा फूल ले बहुत हर्षित होकर बोला कि मैंने तुमको अपने राज्यका प्रधान किया । वह राजा को प्रणाम कर बैठगया । फिर राजाने कहा कि इस फूलका वृक्ष मुझे लादे । यदि वह वृक्ष लाओगे तो मैं तुमसे बहुत प्रसन्न होऊंगा और जो न लासकोगे तो अपने नगरसे निकालदूंगा । राजाकी यह आज्ञाले अपने मन्दिरमें आया और विचार करने लगा कि मैंने पूर्व जन्म में ऐसा क्या पाप किया है जो ऐसी सुन्दर वस्तु राजा को दी और राजा ने प्रसन्न होकर ली प- रन्तु फिर भी यह क्रोध किया । कर्मकी गति जानी नहीं

तुझसे कहताहूं कि अब जाकर अपना राजकाज कर। जब तेरा काल निकट आवेगा तब तू मेरे पास कैलास में विराजमान होगा यह मैंने तुझको वचन दिया है इससे अब तू जाकर मृत्युलोक में राज्यकर। फिर राजा करुणा करके बोला कि महाराज! संसार में तुम्हारे प्रपंच कुछ जाने नहीं जाते हैं यातो अब आप मुझे उबारिये नहीं तो मैं अपना जीव खोता हूं। तब शंकरजीने हँसकर कहा कि जो तू जी खोवेगा तो यम तुझे मृत्यु विना हाथसेभी न छुवेगा और फिर आयुर्बल के दिन भोगने पड़ेंगे। इससे तू जा, उठ, मेरा वचन मनमें रख। इतना कह शिव तो कैलासको गये और राजा के हाथ में कमलका फूल दे यह कहगये कि जब यह कमल मुझाय जाय तब तू जानियो कि मैं छः महीने में मरूंगा। उस फूलको ले राजा अपने नगर को आया और मन का विचार किसी से न कहा। बहुत बरसों के पीछे वह कमलका फूल मुझागया तब राजाने जाना कि छः महीने में मरूंगा। फिर जितना कुछ धन और सामान था सो ब्राह्मणों को संकल्प करदिया। स्त्री और पुत्रके लिये राज्य देदिया। इस प्रकार दान पुण्यकर राजा सदेह कैलासको चलागया॥ इति बाईसवां प्रदीप॥

अथ त्रयोविंशः प्रदीपः।

विक्रमी विक्रमार्केण समोऽन्यो न महीपतिः॥
येनेन्द्रमुकुटं चापि तत्प्रसादात्समाप्तवान् २३

विक्रमादित्यके समान पराक्रमी पृथ्वीपर कोई नहीं है जिसने इन्द्रका मुकुट भी इन्द्रके प्रसन्न होने से पाया २३॥

जाती है कि क्या होगा। इस प्रकार अकेला बैठे बैठे बहुत चिन्ता करनेलगा कि यदि राजा की आज्ञा न मानूं तो देशनिकाला मिलेगा और ढूंढ़ने जाऊं तो कहां से मिलेगा जो दुःख पाकर कहीं जाऊं और ढूंढ़े न पाऊं तो और भी दूना दुःख होगा। मैं यह जानताहूं कि मेरे निकट काल आ पहुंचा है इसलिये अपयश से मरना भला नहीं है। यदि योंहीं मरना है तो वनमें जाऊं और वह ढूंढ़ने से मिलजाय तो अच्छा है नहीं तो वहीं मरजाऊं। ऐसी बातें अपने मनमें विचार और धीरजधर बैठा और अपने दीवान को बुलाकर कहा कि किसी चतुर बढ़ई को बुलादो कि वह एक नाव ऐसी तैयार करदे जिसको बिना मल्लाह के जिस ओर चाहें उस ओर लेजावें। उसने वैसाही बढ़ई बुलवाय ला खड़ा किया। बढ़ई ने कहा कि महाराज! मुझे कुछ धन मिले तो मैं शीघ्रतासे बना लाऊं। मन्त्री ने दीवानसे कहा यह जितने रुपये मांगे उतने इसको दो। रुपये उसको दिये गये। वह रुपये ले घर को गया और कुछ दिनों के बाद तैयार करके खबर दी कि नाव तैयार होचुकी। दीवान ने अपने स्वामी से जाकर कहा कि महाराज! आपने जो नाव बनाने की आज्ञा दी थी वह तैयार है। मंत्री यह सुनतेही नदी के किनारे आया और नाव को देख प्रसन्न हो उस बढ़ई को घोड़ा जोड़ा और पांच गांव करदिये। मंत्री अपनी सामान नावपर रखवाकर कुटुम्ब से विदा हो हाथ जोड़कर सबसे कहनेलगा कि जो हम जीते लौटेंगे तो फिर मिलेंगे और जो मरगये तो यही हमारी बिदा है। यह कहकर जब वहां से बिदा हुआ तो

दृष्टान्त ॥ एक समय राजा विक्रमादित्य ने वेतालों को बुलाकर कहा कि मुझे पाताल में राजा बलिके पास लेचलो। यह सुनते ही वेताल उसको ले उड़े और शीघ्रही पहुँचा दिया। राजा उस नगरको देख अचंभे में हो मन में कहने लगा कि ऐसा नगर आजतक कहीं नहीं देखा जो कैलास समान भासमान है। धन्य है राजा बलि को जो इस नगर का राज्य करताहै। इसप्रकार राजा नगर देखता हुआ बलिराजा की सिंहपौर पर जा खड़ाहुआ और हाथजोड़ विनती कर कर द्वारपालों से कहने लगा कि अपने राजा से मेरे आने का समाचार कहो कि महाराज! मृत्युलोक से राजा विक्रम आपके दर्शनको आयाहै। यह सुन द्वारपालने अपने राजा के पास जा समाचार कहे। उनको सुनतेही राजा बलि कहनेलगा कि मैं मनुष्यका मुख न देखूंगा तब द्वारपालने आकर राजा विक्रम से कहा कि तुमको दर्शन न होगा। राजा विक्रम बोला कि जो राजा अपने दर्शन न देंगे तो मैं यहांहीं रहूंगा तब वह द्वारपाल बोला कि तुम तो क्या हो यदि राजा इन्द्रभी आवें तो भी दर्शन न पावेंगे। फिर कई दिन के पीछे राजा ने अपने शिरको काटडाला। यह देख कर द्वारपाल ने राजा से सब समाचार जा कहा। इस दुःखद वृत्तान्त को सुन राजा बलि नंगे पैरों उठधाया और राजा के पास आया और उसकी ऐसी दशा देख बोला कि मुझसे क्या अपराध बन आया जो इसने ऐसा किया। यह हत्या अब कैसे छूटेगी यह विचार कर राजा बलि अपने मनमें अनेक प्रकारसे पश्चात्ताप करनेलगा कि अब यह कैसे जीवेगा। ऐसा

घर के लोग कूक मारकर रोने लगे फिर यह भी जी भारी कियेहुये उस नावपर बैठा और पाल चढ़ा कर नाव खोलदी। जिस ओर से वह फूल बहता हुआ आया था उसी ओर को वह चलाजाताथा और दोनों किनारों के वृक्षों को देखता जाताथा। कुछ दिनों में चला चला एक महावन में जा पहुँचा परन्तु भोजन का सब सामान चुकगया तब उसने अपने मनमें विचारा कि अब नावपर बैठे रहना उचित नहीं। जिस कामके लिये आयेहैं उस कामकी चिन्ता करनी चाहिये। यह अपने मनमें कहता था और नाव चलाये जाताथा कि उसी नदी में एक पहाड़ दृष्टि आया। वह नदी उसी पहाड़ से निकलीथी। वहीं नाव लगाई और आप उतरकर उस पहाड़ पर गया। वहां क्या देखताहै कि जहां तहां हाथी, गैंड़े, शेर, हिरन आदि दहाड़ रहेहैं और किसी का शब्द सुनाई नहीं पड़ता था। उन शब्दोंसे अपने जी में डरा जाताथा पर पांव आगेही धरताथा। जब उस पहाड़को लांघगया तो एक वैसाही फूल बहा आता देखा। उसफूलको देख कहनेलगा कि यह फूल वैसाही है भगवान् चाहेंगे तो वृक्षभी दृष्टि आवेगा। वह ज्यों ज्यों आगे बढ़ा त्यों त्यों फूल और भी देखे तो वह अंदेशा कुछ कम हुआ और मनमें कुछ दृढ़ता आई। आगे उसने देखा कि एक बड़ा पहाड़है और उसके नीचे एक मंदिरहै उसमन्दिरको देखकर अपने मनमें विचारा कि ऐसा सुन्दर मन्दिर यहां बना है तो कोई मनुष्य भी अवश्य होगा। यह विचारता हुआ उस मंदिर के पास जापहुँचा और वहां जाकर देखा तो एक तरुवर में एक तपस्वी पांवोंमें जंजीरें बांधे हुये उलटा लटक

सोच करही रहे थे कि उसका अनुचर वेताल अमृत ले पहुँचा और राजापर छिड़क दिया। वह राजा राम राम कह कर उठ बैठा और बलिने जाना कि इसको मूर्च्छाथी फिर विक्रम को उठा कण्ठ से लगा हिलमिल बहुतसी सामग्री, मणि, रत्न, माला आदि दे विदा किया और अपनेको धन्यवाद दे अपना राजकाज करनेलगा॥ इति॥

एक दिन राजा विक्रम राज्यासन पै बैठा सभासदों से वार्त्तालाप करता था कि किसी पण्डित ने आकर कहा कि महाराज! यदि इन्द्रसे भी आपका परिचय होजावे तो अति उत्तम है। यह सुन राजा चुप होरहा और भोर होतेही वेतालों को बुलाकर कहा कि हमको इन्द्रपुरी को लेचलो। वे सुनते ही ले उड़े और शीघ्रही वहां जा उतारा। राजा ने इन्द्र को दण्डवँत् प्रणाम किया और हाथ जोड़े खड़ारहा। जब इन्द्र ने देखा तो अपने समीप बैठने की आज्ञादी और पूछा कि कौन हो, किस देशसे, किस कार्य के लिये आये हो। तब राजा बोला कि स्वामिन्! विक्रम मेरा नाम है मैं मृत्युलोक का रक्षकहूं यह सुनतेही प्रसन्नहो इन्द्रने उसको अपने कण्ठसे लगालिया और बोला कि धन्य है तैंने अपने धर्मराज्य से उस मृत्युलोक कोभी स्वर्गके समान बनारक्खाहै। हे विक्रम! हम तुझपर प्रसन्न हैं, अब तेरा जीचाहे सो हमसे मांग ले। तब राजाने कहा कि स्वामिन्! आपका दिया सभी कुछ मेरे पासहै, मैं किसी वस्तु की आशा से आपके पास नहीं आया हूं केवल पण्डितों से आपका नाम सुन दर्शन की अभिलाषा करके आयाथा सो आपका प्रिय दर्शन पाया और सब दुःख

गॅवाया। राजाकी ऐसी बातें सुन इन्द्र बहुतही प्रसन्न हुआ और अपना मुकुट शिरसे उतारकर विक्रम के शिरपर धर करके कहा कि तू मृत्युलोक का इन्द्रहै॥ इति तेईसवां प्रदीप॥

अथ चतुर्विंशः प्रदीपः।

स्त्रीचरित्रवर्णनम्॥

स्त्रियाश्चरित्रं नहि केऽपि जानते पतिं तु हत्वापि भवन्ति सत्यः॥ विज्ञातमेतत्त्वपि विक्रमेण वृत्तं यथावत्तु परिश्रमाद्धै २४॥

अर्थ। स्त्री चरित्रको ऐसे कौन हैं जो जानसकें क्योंकि वे पति कोभी मारकर उसके साथ सती होजाती है। यह वृत्तान्त यथावत् परिश्रम से विक्रमादित्य करकेही जानागया २४॥ दृष्टान्त॥ एक दिन राजा विक्रमादित्य नदी के किनारे दशहरे के नहाने से गया तो वहां क्या देखता है कि एक अति सुन्दरी बनिये की स्त्री नदी के तीर खड़ी हुई बाल सुखाती है और उसके सामने एक साहूकार का लड़का बैठा तिलक दे रहाहै और आपस मे दोनों की सैन चलरही हैं। वह कभी तो हँसती, हाथ नचाती, भौं मटकाय बाल सुखाती है और कभी शिरका अंचल छातीसे सरकाकर बदन दिखातीहै और फिर छिपालेती है। कभी आरसी दिखाय चूमकर छाती से लगाती है इस प्रकार की अनेक चेष्टाएं करती है तथा वह भी इसी तरह इशारे कररहाथा। उन दोनों की ऐसी हालतें देख राजा ने अपने मनमे विचारा कि इनका चरित्र देखना

काम है यह कह मंत्र पढ़, तोते के शरीर में धसा। रानी ने शीघ्रता से राजा को निकाल कर नाई का देह बताया और राजा अपने देहमें प्रवेशकर उठ बैठा। नाई ने अपने देहकी और जीवन की आशा त्याग, अवकाश पाय, उड़कर वनकी राहली। मनुष्यको चाहिये कि इस प्रकार बातेंकरे कि तीसरा न जान सके॥ इति पहिला प्रदीप॥

स्त्रीचरित्रवर्णनम्।

स्त्रियाश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं
देवो न जानाति कुतो मनुष्यः॥ १ ॥

अर्थ। स्त्रीके चरित्र और पुरुषके भाग्य को देवताभी नहीं जान सक्ताहै फिर मनुष्य कैसे जाने १॥ इसपर अनेक दृष्टान्त हैं उनमें से व्यभिचारिणी स्त्री के प्रसंग में घृतान्ध ब्राह्मणका दृष्टान्त कहते हैं॥

अथ द्वितीयः प्रदीपः।

किं त्वं हससि रे काक! न सर्पो भेकवाहनः॥
कालं नीत्वा ग्रसिष्यामि घृतान्धो ब्राह्मणो यथा॥२॥

प्रातःकाल श्रीगंगाजी के तटपर शीत से एक सर्प जड़वत् होगया और उसके फणपर एक मेंढक उछलकर चढगया तो एक कौआ यह आश्चर्य देख हँसा तब सर्प ने कहा कि "अरे काक! तू क्या हँसरहाहै? सर्प मेंढककी सवारी नही है किन्तु समय पाकर मैं इसको भक्षण करूंगा जैसे घृतान्ध ब्राह्मणने कामकियाथा"२॥ दृष्टान्त॥ एकब्राह्मणका पुत्रथा उसका व्याह

चाहिये कि ये क्या करतेहैं । फिर राजा स्नानकर ध्यान करता और उसकी ओर भी देखतारहा इतने में वह स्त्री स्नानकर चादर ओढ़ घूंघटकर अपने धामको चली और साहूकार का लड़का भी उसके पीछे पीछे चला । राजा ने एक हरकारे को कहदिया कि इन दोनों का मकान देखकर सबसे परिचित होकर आ और हमें शीघ्र समाचार दे । जब वह स्त्री अपने घर में गई तो उसने लौटकर देखा और शिर खोलकर दिखाया फिर छातीपर हाथ धर अपने मंदिर में गई और सेठ के बेटेने भी अपनी छातीपर हाथ रक्खा । हरकारे ने यह समाचार राजा को आकर बताये । राजा भी अपनी सभा में आकर बैठा और एक पण्डित से पूछा कि कोई त्रियाचरित्र हमको सुनाओ क्योंकि हमारा जी सुनने को चाहता है । तब पण्डित ने उत्तर दिया कि महाराज ! मेरी तो क्या सामर्थ्य है कि मैं त्रियाचरित्र आपके आगे कहूं । त्रियाका चरित्र और पुरुप का भाग्य ब्रह्मा भी नहीं जानता है फिर मनुष्य कैसे जान सक्ताहै । यह देखेही बन आताहै मुँह से कहा नहीं जाता है । यह बात पण्डित से सुन राजा चुप होरहा और अपने मनमें कहनेलगा यह चरित्र देखना चाहिये । सन्ध्या होनेपर राजा उस महलमें गया और कुछ खा पीकर जल्दीही बाहर निकल आया और उस हरकारे को बुलाकर कहा कि तू इस बातका कुछ ब्यौरा समझा है ? उसने कहा कि महाराज ! मेरे जी में कुछ आयाहै परन्तु आपके आगे कहते शंका होती है । राजाने कहा कि जो तू समझाहै वह निडर होकर बखानकर । वह बोला कि महाराज ! उसने जो शिर खोलकर छातीपै हाथ

हुआ और स्त्री आई तो वह व्यभिचारिणी थी उसने अपने बापके घरपरही कुसंगति सीखलीथी। जब वह ससुरालमें आई तो पतिके वशमें रहना उसको बुरा जानपड़ा। उसने पहिले दिनही यह चरित्र किया कि जब उसके पतिने स्पर्श करना चाहा तो वह बोली कि काशीमें पढ़ना ब्राह्मणका धर्म है इससे यज्ञोपवीत में भी भेजते हैं सो तुम काशीजी जाय पढ़ आवो तब मेरे हाथ लगाने योग्य होगे। ब्राह्मण के मन में यह बात समागई और शीघ्रही लुटिया ले काशीको गया। वहां बारहवर्ष रहके चार,वेद, षट्शास्त्र और चौदह विद्या पढ़कर बड़ेहर्षसे घर आया तो उसकी स्त्रीको फिर शोकहुआ। उसने फिर यहचरित्र किया कि जब ब्राह्मणने इच्छाकर स्पर्श करना चाहा तो बोली कि आप क्या क्या पढ़े ? बताओ। उसने प्रसन्नहो अपना अहो भाग्य समझ सब विद्याएं संक्षेप से सुनाईं। उसने सुन कर कहा कि यह क्या बकवाद कर चले कहो स्त्रीचरित्र भी पढ़े कि नहीं पढ़े ? वह ब्राह्मण चकितहो सूखे से मुखसे बोला कि भाग्यवति ! स्त्रीचरित्र मैंने न पढ़ा और न कहीं सुना है फिर वह बोली कि छीः २ निगोड़े ! स्त्रीचरित्र ही नहीं पढ़े तो क्या पढ़े जाओ स्त्रीचरित्र पढ़आओ तब मुझसे स्पर्श करना ऐसा कह पीठदे सोरही। वह रात्रि उस ब्राह्मणको कोटि कल्प समान काटनी पड़ी और सवेरा होतेही दण्ड, कमण्डलु, पोथी बांध काशीजीकी राहली जब ठिकाने पहुँचा तो एक गांव के बाहर कुआंपर बहुतसी पनिहारिन पानी भरती थीं वहां जाय स्नानकर बैठ गया। उन्हों ने कुछ पहिचानकर आपसमें चर्चाकी कि हेसखियो ! यह ब्राह्मण तो कल्ह इसओर

रक्खा तो उसने यह कहा कि जिस समय अँधेरी रात होगी तब मैं तुझसे मिलूंगी और उसने भी छातीपर हाथरख उत्तर दिया कि अच्छा। दासकी समझमें तो यह आया है। राजाने कहा तू ठीक समझाहै यही उनका मतलब है। मैंने भी बड़ी देरतक घाटपर बैठ उन दोनों का अभिप्राय जाना है परन्तु अब तू मुझे वहांही लेचल। हरकारे ने कहा कि बहुत अच्छा चलिये। राजा हरकारेको लिये उसके मकानपर पहुँचा फिर उसको तो लौटा दिया और आप कहीं छिपकर बैठगया। वहां चौबारे के पीछे एक खिड़की थी उसमें से दीपककी ज्योति देखने में आतीथी और कभी कभी जो वह जागतीथी तो उसकी झलक भी मालूम होतीथी। जब दो पहर रात बीती और रात बहुत अँधेरी होगई तब यह जानी कि वही मनुष्य आपहुँचा है फिर उसने अपना गहना निकालकर एक डिब्बे में लगाया और उसे ले वहां से निकलकर राजा के पास आई और बोली कि प्यारे यार! मुझे कहीं लेचल। राजा ने कहा कि इस तरह से मैं नहीं ले चलूंगा क्योंकि तेरा पति जीता है यदि वह वृत्तान्त पावेगा तो राजा के दरबार में पुकारेगा और राजा मुझे मारडालेगा। इससे पहिले उसे मारआओ फिर मेरे साथ निश्चिन्त हो चलना। हम तुम निर्भय हो भोग करेंगे। यह सुनतेही उसने कुछभी विलम्ब न किया और घरमें जाकर पति के कलेजे में कटारी मारी तो उसके प्राण निकल गये। फिर वहां से लौट आई और रत्नों का डिब्बा राजाको दे दिया इसतरह से दोनो नगर से बाहर गये। आगे आगे राजा और पीछे पीछे वह स्त्री थी जब नदी के

से गयाथा वही जान पड़ताहै इसलिये इससे करण पूछो। एक सखी बोली कि हे ब्राह्मण! तू कल्ह इस ओरसे गयाथा फिर काहे लौट आया क्या तेरी कुछ प्रिय वस्तु रहगई है या घरमें किसीसे लड़कर उलटआया अथवा तेरी स्त्री ने तुझे अमाय भेजा है? इतनी बात सुनतेही ब्राह्मण ने उन स्त्रियोंको परिक्रमाकर साष्टांग दण्डवत् प्रणामकर बोला कि धन्यहो, आप सर्वज्ञहो घट घटकी ज्ञाताहो मैं बारह वर्ष तक काशीजीमें रहा पर यह परचित्तज्ञानविद्या न पाई अब मुझे पूर्ण आशाहै कि मेरा मनोरथ पूर्ण होगा यह कह फिर कहनेलगा कि जिस दिन से मैं ब्याहकर लायाहूं उस दिनसे मेरी स्त्री मुझसे बेमन रहती है। उसने पहिले तो मुझे विद्या पढ़नेकेलिये काशीभेजा जब मैं बारह वर्ष मे विद्या पढ़ आया तो अब स्त्री चरित्र का मिपले भेजाहै। अब मैं जहां कहीं स्त्रीचरित्र मिलेगा वही से पढ़कर आऊंगा। यह बात सुनतेही स्त्री बोली कि हे ब्राह्मण! तू घबरामत तेरी स्त्री व्यभिचारिणी है उसने अवकाश के लिये तुझे भेजा है तू कहीं भी जाने का परिश्रम न कर यह विद्या तो हमहीं सिखादेवेंगी। तू यहांही रह ऐसे कह उनमें से पहिली ब्राह्मण की स्त्री उससे बोली कि मेरे पीछे पीछे चलाआ यह कह उसे लेगई और घड़ा रख फिर आय उसके गलेलग पुकार पुकार रोनेलगी तब पड़ोसिनें सुन सुन आ पूछने लगीं तो उसने कहा कि यह मेरा मामाका बेटा भाई है बारहवर्ष पीछे काशी से पढ़कर आयाहै यह सुन सब चुप हो रहीं। उसने उसके लिये रसोई बनाय जिमाय कोठेपर पलँग बिछाय सुवाया और रातको आपभी उसकी सेवामें पहुँच पैर

किनारे पर पहुँचे तो राजा वहां खड़ा हुआ और अपने मन मे विचारने लगा कि जिसने अपने स्वामीही के मारने में विलम्ब न किया तो वह दूसरे के मारने में क्या शङ्का करेगी अब किसी प्रकार इससे अलगही होना ठीकहै और इसका चरित्र भी देखलेना चाहिये कि यह प्रबला अब क्या क्या करती है यह विचार राजाने कहा कि हे सुन्दरी ! पहिले मैं देखूं कि इस नदी में कितना जल है जो जल की थाह पाऊंगा तो तुझे भी लेजाऊंगा। यह कहकर राजा नदीमें घुस जब उस पार जाय पहुँचा तब पुकारकर कहा कि मैं तो जैसे तैसे पार उतर आया परन्तु तुझे नहीं लेजासक्ता क्योंकि पानी अथाह बहता है-यह कह राजा तो आगेको बढ़े और उस स्त्री ने विचारा कि द्रव्य तो उसके हाथ लगी और मेरा स्वामी मरा खैर अब कुछ रात बाकी है फिर घर चलें और अपने स्वामी के साथ सती होवैं यह विचारकर घर आई और उसके पास जाय, हाय हाय कर कूक मार मार रोने लगी और पुकारी दौड़ो दौड़ो चलो चलो चोर मेरे स्वामी को मारकर और सब माललेकर जाता है। फिर बहुत लोग दौड़े आये और पूछा कि चोर किसओर गया तो उसने बाहरकी सीधी राह बतादी। वे ढूंढ़ते ढूंढते लाचार हारकरके उलटे लौटआये। इधर वह शिर पीट पीट रो रो कर पुकार रही थी कि मेरा स्वामी मरगया और सुहाग लुटगया। तब सब लोग उसको समझाने लगे कि यह भगवान्की मायाहै इसमें किसीका वश नहीं है। इसके दिन पूरे होचुके थे इससे यह चलदिया। बिना मृत्यु के कोई किसीको नहीं मार सक्ताहै अब तू ढाढ़स

दबाये और कामोद्दीपन चेष्टाकी तब उसने उसकी कुमनसा जान उत्तर दिया कि तुमको ऐसी कुमति मनसे कभी न विचारनी चाहिये क्योंकि तूतो मुझे भाई कहचुकी है वह बोली कि हे ब्राह्मण ! हमारे शास्त्रमें मा, बहिन, भाई भेददृष्टि से भिन्न कोई नहीं है यहां तो "स्वदार परदारेषु यथेच्छं विहरेत् सदा=अपनी पराई स्त्रियों में सदा रमण करता रहै" यह मुख्य मतहै जो तुमको यह शास्त्र सीखना है तो ऐसाही कर नहीं तो मैं तुझको बँधादेऊंगी । उस ब्राह्मणने लाचार हो हरे हरे राम राम कह उसका कहा किया । सवेरा हुआ तो फिर उस कुएं पर गया तब दूसरी बनैनी ने कहा तू आधीरातको बाबाजी बनकर मेरे घर चला आना फिर उसे साथ लेजाय घर बताया और आप शिर से घड़ा पटक आह मार कर दर्द दर्द पुकारने लगी घरवालों ने औषधकी पर आराम न हुआ । फिर आधीरातको वही बाबाजी भी आ पहुँचे और हाथ देखकर बोले कि यह तो चौराहे की फेर में आगई आराम होना कठिन है सब बोले बाबाजी ! कोई यत्न बताओ । बाबाजी बोले कि जो इसकी खाट घर के लोग शिरपर धरकर चलें और मैं झाड़ा देताचलूं तो आराम होवे। वे बोले कि यह तो सहज बात है इसमें क्या लगता है यह कह खाट उठा लेचले। बाबाजी ने यथेच्छ झाड़ा लगाया तो आराम होगया फिर तीसरी गूजर की स्त्री बोली आज सांझ समय मेरे उस घरमें आजाना। जब वह गया तो उसने अपने पति से कहा कि आज आंखें बांधकर या तो तुम दूध निकालो नहीं मैं निकालती हूं। वह बुड्ढा बोला हमहीं

बांध और अपना गुज़ाराकर। तब वह बोली कि अब गुजारा कैसा मैं तो इसके साथ सती होऊंगी। लोगों ने बहुतही समझाई पर उसने किसीकी भी न मानी और मरे पतिको लेकर नदीके किनारे चली और चिता चिनकर उसको अपनी गोदी में बैठाय सती होने लगी। वहां के सब लोग उसके देखने को आये और राजा भी उस ओर आपहुंचा था। जब आग लगाई गई और उसके कपड़े जलकर बाल जलनेलगे तब घबराकर उस पतिको छोड़ निकलनेलगी। लोग उसको देख देख हँसने लगे और वह चितासे कूद नदी में जाय घुसी। तब तो उस राजा से चुप नहीं रहागया और बोला कि हे सुन्दरी! यह क्या है? वह बोली कि महाराज! इसका मर्म मुझसे क्या पूछते हैं आप भी अपना घर सँभालें कि क्या क्या होरहा है। मैं अपने कर्म मे जो लिखालाई थी उसका फल भोगा परन्तु तुमने अपने घरका तो भेद न पाया और औरोंकी तलाशी लेने चले हो। हम सात सखियां इस नगरकी हैं उनमे से एक मैं हूं और छह तुम्हारे महलही में है। यह कह वह तो पानी में तिरगई और राजा अपने महल में आया और किसी स्थान पर छिपके किसीको दिखाई न दिया और एक दिन और रात तक वहांही रहा। जब दूसरी रात हुई तो आधीरातके समय उसकी छहों रानियां हाथों में मिठाई के भरे कंचनके थाल लिये महलकी खिड़की से [illegible] की फुलवाडी में आईं। वहां से आगे एक वन था [illegible] एक म[illegible] जिसमे एक योगी ध्यान लगाये उन [illegible] हों रानियां उसको साष्टांग दण्डवत्

निकालेंगे। जब वह दूध निकालने लगा तो उसने उससे कामकी चेष्टा की उसने कहा तेरा पति पास है वह बोली कुछ चिन्ता नहीं। तब लाचार हो वह करने लगा तो उस स्त्री की पीठ उसके पतिकी पीठ से लगी हुई थी उसके धक्के उसकी पीठ में लगे तो वह बोला "यह कहा होयहै" वह बोली "वछरो थोवा मारेहै और कहा होयहै" जब वह कामकर बाहर गया तब पतिने आंख खोली। चौथे दिन कुएं पर जाय सखियोंसे सब वृत्तान्त भिन्न भिन्नकहा तो मालीकी स्त्री बोली कि "आंखों के पड़देसे वा अंधेरेमें किया तो क्याकिया" कल्ह तू मेरे बाग़ में मध्याह्नके समय खजूर लेने के लिये आइयो। वह गया तो उसने माली से कहा कि इसको खजूर तोड़लादे वह चढ़कर तोड़ने लगा तो उसने उससे कामकी चेष्टा की। वह बोला तेरा पति ऊपरसे देखता है वह बोली इसीका नाम तो स्त्री-चरित्र है तू निस्संदेह कर तब उसने किया। ऊपर से वह देखहीरहाथा तो बोला कि रांड यह क्या करती है? वह बोली कुछ नहीं तुझे क्या सूझता है? वह बोला यह पुरुष तुझसे कुकर्म कररहाहै। वह बोली निगोड़े मुँह सँभालकर बोल क्या बकताहै। यह कह काम करवाय उससे अलगहो बोली कि उतरआ मैं तोड़लाऊं। फिर आप चढी और वह उतर आया तो झूठेही बोली कि यह मर्द तेरी गुदाभंजन क्यों करता है वह बाग़वान् बोला बस उतरआ यह तो आज इस वृक्षका स्वभावही होगयाहै यह कह चुप होरहा इत्यादि बातें बताय सखियोंने उससे कहा कि यही स्त्रीचरित्रहै। अब तू अपने घरको जा। वह घर आया तो उसकी स्त्री ने फिर पूछा कि स्त्रीचरित्र

प्रणाम करके चरणों के समीप जाय बैठीं और राजा भी उन के पीछे पीछे जाय उनके कृत्य देखने लगा। वह सिद्ध चेतन होकर उनसे हँस हँस कर बातें करनेलगा और जो ये मिठाई पक्वान्न आदि सामान लेगईथीं वह सब उसने भोग लगाया और पान खाकर फिर योगयुक्ति से अपनी एक देहकी छह देह बनाईं और अलग अलग उन छहों रानियों से संग किया फिर वे छहों रानियां कुकर्म कराय विदा हो अपने अपने महलमें आ प्राप्त हुईं। राजा यह चरित्र देख मनमें विचारने लगा कि इस सिद्धने क्या किया जो अपने योग, जप, तप आदिको कुसंग से गवाँदिया और उनका भी कर्म धर्म खोया। फिर राजा उस सिद्धके पास जाकर बोले कि आप बड़ेही सिद्ध महात्मा हैं। तब सिद्धजी बोले कि तू भी अपना भाव कह किसलिये आयाहै। राजाने कहा कि मुझे आपके दर्शन की तथा एककी छहदेह बनानेकी विद्या सीखनी है। राजाके वचन सुन कुछ शङ्कितहो वह बोला कि इन बातों से आपको कौन काम है। तब राजाने डराकर कहा कि शीघ्र बताइये नहीं अभी एककी दो देह तो मैंही करदेता हूं। तब उसने डरकर राजा को अपनी योगयुक्ति सिखाई। फिर राजाने उसको अजमाय भी ली और तलवारसे उसकी कई देह करदीं और आप अपने महलों में जा पधारा और जहां वे छहों रानियां बैठीथीं वहांहीं आकर बैठा। राजाको देखतेही वे सब उसकी सेवा मे लगीं। दासी ने पंखा हिलाया, किसीने हाथ मुँह धुलाया और किसीने निर्मल जल पिलाया इस प्रकार सब अपनी अपनी प्रीति राजा से प्रकाश क०

भी पढ़िआये ? वह बोला कि भलीभांति सीख, पढ़, अजमाय आयाहूं । अब वह अच्छे आचरण से रहनेलगी और नित्य प्रातःकाल स्नानकर शिवालयमेंजाय सब उपचारोंसे शिवपूजा कर प्रार्थना करतीथी कि हे शिवजी ! यातो आप मेरे पतिको मार दीजिये अथवा इसकी आयु शेषहो तो अन्धा करदीजिये इत्यादि। ब्राह्मणने विचारा कि "व्यभिचारे कुतो भक्तिर्मांसाहारे कुतोदया " अर्थात् व्यभिचार में भक्ति कहां और मांसाहार में दया कहां। एकदिन बड़े आश्चर्यसे इसके पीछे पीछेगया और सब वृत्तान्त प्रत्यक्ष देखा । फिर दूसरे दिन उससे पहिलेही आय उस शिवालय में जा छिपा । उस स्त्रीने जब पूजनकर प्रार्थनाकी तो वह बोला " घृतं देहि " घी देवो तो वह अन्धा होजावेगा। वह प्रसन्नहो घरआई और पतिसे आतेही यह पूछा कि कहो तो आज चूरमा बनालूं । वह बोला बहुत अच्छी बातहै तब तो उसने घी मिलाकर अति उत्तम चूरमा बनाया और ब्राह्मण ने खाया । फिर कुछ देर बाद बोला कि मुझे कुछ धुंधलासा देखपड़ता है न जानें यह क्या हुआ । वह बोली स्वामिन् ! गर्मीसे आंखें चौंधा उठी होंगी । मन में कहा " शंकर ! धन्यहो" अब ब्राह्मण तो घृतान्धहोकर लाठी लिये ढिंढोले मारने लगा और उसने भी अन्धा जान अपनी पौली मे एकओर टूटी खाटियापर पटक दिया और कहा कि निपूतेकुत्ते हांका कर। ब्राह्मणनेकहा कि जो आज्ञा। जबसंध्या होतेही एक जार आया तो उसने कुत्ते के मिष से उसके शिर में ऐसी लाठी मारी कि खोपड़ी फटकर गिरगया । ब्राह्मणी शब्द सुन पौली में आई और देखा कि यार मरा पड़ाहै तब

लगीं। ज्यों ज्यों वे प्यार करती थीं त्यों त्योंही राजा क्रोधित होताथा। फिर राजा बोला सुन्दरियो! मैं तुमसे अत्यन्त हित करता था परन्तु तुम किसी दूसरे का ध्यान करतीहो यह तुमलोगों को उचित नहीं है। यह सुनतेही रानियां बोलीं कि महाराज! हमारे रक्षक तो आपहीं हैं। हम अबला और किसका ध्यान करसक्ती हैं हमें तो तुम्हाराही ध्यान रहताहै। आपके मुख देखनेको तरसा करती हैं जैसे जल विना मछली तड़फती है वैसे आपविना हम तड़फती हैं और क्षण भर के वियोग से कमलदल के समान कुम्हलाय जाती हैं। राजा ने क्रोधको रोक कुछ मुसकुराकर कहा कि सत्य है सुन्दरियो! यथार्थही मेरे विना चैन नहीं है जैसे एक सिद्ध के छह सिद्धों विना नहीं रहा जाता। रानियां बोलीं कि कहीं ऐसा होसक्ता है? महाराज! आज क्या ऐसा नशाहै जो अनहोनी कहानी कहनेलगे? एक की छह देह कैसे होसक्ती हैं भला आप सोचिये तो सही इस बातको कौन मानेगा। तब राजाने कहा कि नहीं तो चलो देखलेओ यह कह छहों को साथले उसी राह से उस फुलवाड़ी मे जाय उसी गुफा का मुख खोल कर कहा कि अब तो जाना कि नहीं? यह सुनतेही रानियोंने नीची गरदनें करलीं और जान गईं कि राजाने हमारा सब कर्तब देखलिया तब सब चुप होरहीं। राजा उनको बधके योग्य समझ, उनका शिर काट काट उसी गुफामें फेंक, मुँह बंदकर चलाआया और आतेही नगर में ढँढोरा फिरवादिया कि जितने ब्राह्मण और उनकी कन्याहैं वे सब यहां आवें यह सुन सबके सब आप्राप्तहुये। राजाने जितने

बोली कि यह क्या किया। वह बोला कि कुत्ता को मारा है और क्या किया। उसने यार को गठरी में बांध एक मजदूर को बुलाय उसके शिर पर धरवाय चली जबतक गंगाजी में छोड़के आई तबतक उसने एक और यार मारा फिर उसने नौकरसे कहा कि अरे यह बोझा तो फिर चला आया इसे फिर ले चल तब मजदूरी मिलेगी। यह कहले चली और पतिसे बोली कि सो रहो वह बोला सो कैसे रहूं यह कुत्ते नहीं सोने देते। इन्हें मार लेऊंगा तब सुखसे सोऊंगा। वह लाचार होगई और आकर देखे तो एक यार और धराहै तो उसे भी वैसेही लेगई इसी प्रकार उसने रात भरमें कई यार मारे। जब भोर भये पिछले यार को लेचली तो उसके पीछे पीछे आप भी लट्ठी लिये चला। जब वह पहुंची और गठरी डाल के चली तो ब्राह्मणने क्रोधसे उसके भी शिरमें ऐसी लट्ठीमारी कि वह भी मरगई फिर वह ब्राह्मण स्नान कर उसे तिलाञ्जलि दे उस ओर से निकला तो सर्पने इसको देख कौवे से "किं त्वं हससि रे काक।" यह पूर्वोक्त श्लोक पढ़ा॥ इति दूसरा प्रदीप॥

अथ तृतीयः प्रदीपः।

स्त्रियो हि व्यभिचारार्ता वञ्चयन्ति स्वकंपतिम्॥
लक्ष्मीः प्रवञ्चयांचक्रे स्वपतिं जारशंकया ३॥

अर्थ। व्यभिचार से लाचार हुई स्त्रियां अपने पतिको भी ठग लेती हैं जैसे लक्ष्मीने अपने पतिको भी जार पुरुष की आशंका से वंचित किया ३॥ दृष्टान्त॥ चन्द्रावती नाम नगरी में भीमसेन राजा राज्य करता था। उसमें मोहननाम सेठ का

भर रानियों के गहने और वस्त्र थे उन सबोंको पहिराये औ
जितनी कन्याथीं उनको दान दहेजदे व्याहकर विदाकीं औ
आप अपना राजकाज करनेलगा ॥ इति चौबीसवां प्रदीप

अथ मित्रनिबन्धात्मकः प्रथमः प्रदीपः ।

षट्कर्णेषु न कर्तव्यं न कर्तव्यं कदापि च ॥
षट्कर्णस्य प्रसंगेन राजाभूद्दुःखितो महान् १

अर्थ। किसी भी गुप्त वृत्तान्तको छह कानोमें न करना अर्थ
(दूसरे से तीसरे को न मालूमहो नहीं तो वह वार्ता "षट्कर्ण
गतागता" छह कानों में गई हुई सर्वत्र फैलजाती है इ
से षट्कर्णों में अपना वृत्तान्त कभी न प्रकाशित कर
चाहिये) जैसे षट्कर्णोंके प्रसंग से राजा महादुःखी हुआ १
दृष्टान्त ॥ राजा भोजको समस्त विद्याओं से बड़ा प्रेमथ
वह मृतसंजीविनी विद्याकी खोजमें रहताथा। एकदिन किस
से सुना कि वनमें एक महात्मा हैं उनको मंत्र यादहै। राजे
घोड़ेपर चढ़कर नाईको साथले उनके पास गया। नाईक
घोड़ा सौंप बाहर ठहराय आप मढ़ीमें जाय महात्माके चर
छूकर बोला कि आप अनुग्रहकरके मुझे मंत्र बताइये। उन्हों
अपना मंत्र बताया और वहीं एकसौ आठवार याद करवाय
तो नाई भी उसको जानगया और मंत्रको सुन सुन यादक
लिया। फिर वहां से चले तो मार्ग में राजाने उस विद्याकी
परीक्षाके लिये एक दरिद्री ब्राह्मण का शून्य देह देख उस
प्रवेश किया। नाई तो ताकमें थाही उसने वह अवसर देख
राजाके शरीर में प्रवेश किया और राजा बन घोड़ेपर सवार हो

बेटा सुधन्वा बहुत प्रवीण गुणवान् है और उस देशमें हरदत्त नाम कायस्थकी लक्ष्मीनाम स्त्री है वह जैसा नाम है वैसेही रूप और गुणवाली है। एक दिन सुधन्वाने लक्ष्मी को देखा और मनमें विचारा कि इससे रति करना चाहिये ऐसा विचार सोमपास नाम दूतीके घरगया और उससे बोला कि हे सोमपास! मेरा मन लक्ष्मीमें लगाहै सो किसी प्रकार उससे मिला दो। दूती ने कहा कि मैं उसको संकेत स्थान में तुझसे मिला दूंगी तू चिन्ता मतकर तेरा काम पूरा होजायगा। वह दूती लक्ष्मीके घर गई तो उससमय हरदत्त न था वहां जाकर बैठी और उससे उपदेश किया कि हे लक्ष्मी! संसार में परोपकार के बराबर कोई धर्म नहीं है ऐसी ऐसी अनेक बातें कहकर कुछ लालच दिया तो लक्ष्मी भी मनमें चलायमान हुई कि परपुरुष से रति करूं। फिर वह दूती संध्या समय उसको संकेत में लेगई पर सुधन्वा नहीं मिला। सुधन्वा राजाके बुलानेसे दरबार में गया था इससे समय पर वहां नहीं पहुँचा। लक्ष्मी बोली कि सुधन्वा क्यो नहीं आया तब दूती बोली कि राजा की आज्ञा से काममें लगगया इससे नहीं आया। फिर लक्ष्मी बोली कि एक काम और कर जो कोई अच्छासा पुरुष हो उसे लेआ मेरा मन चाहता है। वह दूती सब गांव में फिरी पर कोई पसन्द नहीं आया। केवल लक्ष्मीका पति हरदत्त मिला। उसेले आई क्योंकि जानती न थी। जब लक्ष्मी ने देखा कि यह तो मेराही पतिहै फिर कुछ विचार कर छाती माथा पीटने लगी। पतिने देखा कि यह तो मेरीही स्त्री है और अपघात करती है तब बोला कि अरी यह क्या करती है? वह बोली कि तू मेरे

चला। नगरमें पहुँचतेही इसकी अगवानी हुई और हाथोंहाथ इसको राजभवन में लेगये। यह उनके साथ राजा भोजके समान बातें करतारहा पर नक़ल असल में न मिली। केवल शरीरही राजाथा अंतर्यामी पुरुष तो नाईहीथा लोग बनावट देख सुरसराहट भी करते रहे पर जान न सके। यह समाचार रनिवासमें भी पहुँच गया। जब महलमें पधारे तो नयेपनसे सादीतरह भीतर गये। रानी ने इसका वेष देख जी में शंका की और इनको आइये महाराज ऐसाही कहके आदर किया अर्थात् प्रथम श्री न लगाई पर इसको कुछ अभिमान न हुआ और शीघ्रही रानीके पास जायबैठा और मीठी मीठी बातें बनानेलगा तब रानी ने जानलिया कि कुछ औरही बनावट है निदान जब इस कुजाति ने उससे स्पर्श-व्यवहार करना चाहा तो रानी ने हाथजोड़ विनयकी कि महाराज! आजसे मैंने नियम लियाहै कि "एक नवीन धर्मशाला बने, उसमें महात्मा, पण्डित आदि सब आते रहें और उनके अन्न वस्त्र आदिका यथावत् निबन्ध भी किया जावे" यह काम पूर्ण हो तभी मैं आपके दर्श-स्पर्श करसकूं। उसने आज्ञा दी और उस कामका आरम्भ करवाया। रानी राजा की खोज में लगी हुई उदासीन, तनक्षीण और मनमलिन रही। कुछ दिनों में धर्मशाला तैयार हुई और उसमें वैसाही सबका सम्मान होतारहा रानीने राजाकी खोजके लिये धर्मशाला के द्वारपर "षट्कर्णेषु न कर्त्तव्यम्" यह समस्या लिखदी। जो जो वहां आतेथे वे सब उस समस्याको देखतेरहे पर यथार्थ उत्तर किसी ने भी न लिखा। एक दिन राजा भी दरिद्री ब्राह्मण के शरीर

आगे झूठ बोली कि मैं पर स्त्री के बुलाने पर बुरा काम नहीं करता? तेरी परीक्षा के वास्ते ही दूती पठाई और तू परस्त्री जानकर आया है। मैंने जाना कि तू मुख देखने योग्य नहीं है यह सुन वह लक्ष्मी के पांवों पड़ा और अपने घर ले आया॥ इति तीसरा प्रदीप॥

अथ चतुर्थः प्रदीपः।

रोगादिच्छलतश्चापि वञ्चयेद् व्यभिचारिणी॥
शशिप्रभा स्वपितरं वञ्चयामास मायया ४॥

अर्थ। व्यभिचारिणी स्त्रियां रोगादिके मिससे भी छललेती हैं जैसे शशिप्रभाने मायाकर अपने पिता को छललिया ४॥ दृष्टान्त॥ एक नंदन नाम नगर है वहां चन्द्रवान् राजा था, उसका बेटा राजा शेषथा, उसकी बहू शशिप्रभा थी। उस नगर में एक वीरसेन नाम सेठथा उसने एकदिन शशिप्रभाको देखा और देखतेही आसक्त होगया। वीरसेन शशिप्रभाकी दाई से मिला और कहा कि राजकुमारकी बहूसे मेरा मनलगाहे उससे मिलादो। वह दाई शशिप्रभा के महल में गई और शशिप्रभा को शृंगार किये बैठी देख जाकर प्रणाम की और बोली कि हे शशिप्रभा! तेरी सुन्दरता देखकर मेरे मनमें बहुत दुःख होता है इससे एक बात मैं तुमसे कहती हूं यदि बुरा न मानो तो। शशिप्रभा बोली कि जो तू कहेगी वही करूंगी। दाई बोली कि तेरा जीना धिकारहै जो अबतक पराये पुरुषका सुख नहीं देखा। जब इस सुखको जानोगी तो बहुत प्रसन्न होगी। राजवधू बोली कि तू कहे सो करूं। दाई बोली कि जो मेरा

में प्रविष्ट हुआ, नाई के कृत्य से और रानी के पातिव्रत धर्म भंगहोने के भय से डरा हुआ स्थान में आपहुँचा और द्वार पर उस समस्या को लिखी देख पूर्ण करने लगा "न कर्तव्यं कदापि च। षट्कर्णस्य प्रसङ्गेन राजाभूद्दुःखितो महान्" रानी ने इस उत्तरको यथार्थ जान राजाको बुलवाया और श्रीमहाराज कह आदर से बैठाया और दुःखी, दरिद्री ब्राह्मण के शरीर में प्रवेशहुआ देख करुणा कर रोनेलगी। राजा भी उस दशा में मोहवश हुआ रोने लगा। फिर रानी ने धीरजधर उनको समझाया फिर हँसकर बोली कि राजन्! कैसी विद्या सीखे? राजाबोला कि ऐसी सीखे "षट्कर्णे गतागता" अर्थात् छः कानों में होनेसे सीखी विद्या भी दुःखदायी होगई। रानी बोली कि आप धैर्य धरिये, कुछ चिन्ता नहीं विद्या सीखना चाहिये। कुछ काल में वैसेही हो जावोगे। अब आपको यहां गुप्त रहना चाहिये क्योंकि उस शरीर में वह राजाहै जो चाहे सो करसक्ता है और मैं भी आपसे, इस शरीर में स्पर्श नहीं करसक्तीहूं "ईश्वर जब दुःख से छुड़ाय आपको उस देह में प्रवेश करावेंगे तभी मेरा आपसे संयोग होगा" यह कह राजा को गुप्त करदिया। एक दिन रानी ने एक तोते को दबाकर मारदिया और आप रोने लगी। जब नाई राजा आया तो उसे रोती देख बोला कि रानीजी! आज क्योंरोती हो? वेग बताओ। रानी ने रो रो कर कहा कि मेरा तोता अचानकही मरगया यह मुझे बड़ा प्रिय था मरते समय दो दो बातें भी नहीं करसका। नाई राजा यह सुनतेही झट बाँह चढ़ाकर बोलउठा कि रानी जी! यह तो मेरे वश काही

कहा मानोगी तो बहुत अच्छा होगा। शशिप्रभा बोली कहो। तब वह दाई शशिप्रभा से त्रियाचाले प्रसन्नहो बोली कि वीरसन नाम एक सेठ तेरी इच्छा करताहै तू उसका मनोरथ पूरा कर। वह बोली अच्छा। दाई ने कहा कि मेरे जाने के पीछे तू मूर्च्छा खा गिरजाना और किसीकी ओषधि से अच्छी न होना पाछे मैं आकर तुझे अपने घर ले जाऊंगी और मनोरथ सिद्ध कराऊंगी यह कह दाई विदा हुई और आकर वीरसेन को खबर सुनाई कि तेरा मनोरथ सिद्ध हुआ समझ और चिन्ता को त्यागदे प्रातःकालही तेरा काम होगा। इस और शशिप्रभा मूर्च्छा खा ऐसी गिरी मानो दण्ड गिराहै। सब को बड़ा शोक हुआ कि अचानक यह क्या हुआ फिर सब ने झाड़ फूंक कराया औषध दी परन्तु चेत नहीं हुआ तब नगरमें ढिंढोरा फिरवाया कि जो कोई शशिप्रभा को अच्छा करदे उसको सब कुछ मिलेगा। यह समाचार शशिप्रभाकी दाई तक पहुंचा तो उसने कहा कि मैं अच्छी कर दूंगी पर मैं कहूं सो करना होगा। राजा ने इसे बुलाया और कहा कि जो तू कहेगी सोही करूंगा परन्तु मेरी प्राणप्यारीको अच्छा करदे। दाई बोली कि आपकी वधूको आठदिन मेरे घर पर रहना होगा। राजा ने कहा कि अच्छा शीघ्र ले जाओ। वह दाई अपने मकान पर लेगई और वीरसेन को बुलाकर आठ दिन तक इच्छा पूर्ण कराई। आठ दिनके पीछे शशिप्रभाको महलमें भेजदी। राजा यह देख बहुत प्रसन्न हुआ और दूती को बहुतसा धन दिया॥ इति चौथा प्रदीप॥

अथ पञ्चमः प्रदीपः।

समलो विमलो जातो धूर्तो वै मायया सकृत्॥
परीक्षायां पुनस्त्वासीद्विमलो विमलस्तु हि ५॥

अर्थ। एक धूर्त मायाकर समल (मल सहित) भी विमल नाम वनियें के समान एक वेर होभी गया परन्तु फिर परीक्षा होने में तो विमल जो था वहही विमल रहा ५॥ दृष्टान्त॥ एक विलासवती नाम नगरीथी उसका सुदर्शन नाम राजा था वहां एक विमल नाम वनियां वसताथा। जिसकी एक स्त्री तो सुरसुन्दरी नाम और दूसरी रुक्मिणी थी। सुरसुन्दरी का रूप देख एक कुटिल, महाधूर्त मनुष्य उसमें आसक्त हुआ। वह सुरसुन्दरी की प्राप्ति के लिये विचार कर अम्बिकादेवी के मन्दिर में गया और देवी की वड़ी सेवा की तव देवीने कहा कि वर मांग मैं तुझपर प्रसन्न हुई। धूर्त वोला कि विमल वनियेंकासा रूप दीजिये देवी ने कहा "तथास्तु" ऐसाही होगा। फिर वह कुटिल विमलकासा रूप वनगया और अपने घर आया। एक दिन विमल अपने घर न था उस समय उसके घर में, वैठ दास दासियों को प्रसन्न किया और कहनेलगा कि मेरासा रूप वनाये कोई आवे उसको वैठने न देना ऐसा कह घरमें रहनेलगा और उसकी स्त्रीके साथ अपना मनोरथ सिद्ध किया। जव विमल भी आया तो उस धूर्तने विमलको घुसने न दिया और गारी देनेलगा कि मेरे घर क्यों आया है। फिर तो दोनों में वड़ी लड़ाई हुई और हरएक अपना अपना घर वताने लगा। नगर के लोग इकट्ठे हुये और दोनों

होगी तो ठहरजावेगी नहीं तो वह जावेगी। जब पानी में छोड़ी तो वह ठहरगई। राजाने प्रसन्न हो वहुत धन दिया॥ इति उन्तीसवां प्रदीप॥

अथ त्रिंशः प्रदीपः।

वञ्चको वञ्चयेन्नारीं छलादिसहितस्तु यः॥
यथा शम्भुर्द्विजो नारीं वञ्चयामास मायया ३०॥

अर्थ। छलबलवाला धूर्त मनुष्य स्त्रीको भी ठगलेता है जैसे शंभु ब्राह्मण ने माया करके स्त्री को वंचित किया ३०॥ दृष्टान्त॥ सिद्धपुर नगर में शंभु ब्राह्मण वहुत चतुर था। वह एक समय तीर्थयात्रा को चला। राह में एक सुन्दर स्त्री मिली परन्तु वह लोभिन थी। दोनों का सामना हुआ तो ब्राह्मण ने काम के वश हो कहा कि आ रमण करें। स्त्री बोली बिना कुछ लिये न करने दूंगी। उस समय ब्राह्मण ने अपनी कण्ठी निकालकर दी। दोनोंने रमण किया। जब उसने कण्ठी मांगी तो वह बोली कि मैंने अपनी देह वेचकर ली है। तब वह कुछ विचार उसके खेतमें से बाली तोड़कर भगा। वह पीछे पीछे भगी जब गांवमें आये तो लोगों ने पूछा तब शंभु बोला कि मैं ग़रीब ब्राह्मण तीन दिनसे भूखा हूं। इसकी दो बाली तोड़ली तो इसने मेरी कण्ठी छीनली। सबने उस स्त्री को लज्जित कर उसकी कण्ठी दिला दी॥ इति तीसवां प्रदीप॥

अथैकत्रिंशः प्रदीपः।

स्त्रियं स्नेहवतीं दृष्ट्वा देवोपि स्निह्यते स्वयम्॥
आलिङ्गिता यथा शीला देवदष्टाधराभवत् ३१॥

का एकसा रूप देख आपसमें विचार करनेलगे और कुछ सोच कर उन दोनोंको राजा के सामने लेगये। राजाने विचार कर इस प्रकार न्याय की कि विमल की दोनों स्त्रियां बुलाईं और अलग-अलगकर उनसे पूछा कि कहो तुम्हारे बाप और तुम्हारी माताका क्या नाम है, जब विवाह हुआ और घर आई तब ऋतु समय विमलने तुमदोनों को क्या दिया। फिर उन दोनों का वृत्तांत सुन राजाने पत्रपर लिखलिया और विमलसे पूछा तो उसने भी वही सब बातें कहीं परन्तु जब विमलरूप धूर्तसे पूछा तो उसकी बात एकभी न मिली। राजाने उस धूर्तको गांवसे निकलवादिया और विमलको उसकी दोनों स्त्रियों समेत उसके घर बिदा किया॥ इति पांचवां प्रदीप॥

अथ षष्ठः प्रदीपः।

महतां वचनोल्लंघे महद्दुःखं प्रजायते॥
यथा गोविन्दशर्मासीद् दुःखी दुश्शीलिकास्त्रियः ६

अर्थ। महज्जनोंके वचन उल्लंघन करनेमें महान्‌ही दुःख होता है जैसे गोविन्दशर्मा ब्राह्मण दुश्शीला विषकन्या को ब्याहकर दुःखको प्राप्त होता हुआ ६॥ दृष्टान्त॥ एक भद्रावती नाम नगरी थी। वहां का प्रतापसेन राजाथा। उसमें सोमप्रभु नाम विद्वान्‌ ब्राह्मण वसता था। उसकी स्त्री का नाम शोभा और बेटी का मोहनी नाम था। वह विषकन्याथी इससे उसको कोई नहीं ब्याहता था। उसके पिता को भी बहुत शोक था। वह एक नगर में गया और गोविन्दशर्मासे भेटकी तथा उससे कहा कि मेरे एक मोहनी नाम विषस्वरूप कन्या है यदि तुमे

ब्राह्मण राजा के पास गया और वह फल देकर उसका वृत्तांत बताया। उसे सुन राजा हँसे और लाख रुपये तथा गांव व वृत्ति देकर उसे विदा किया। फिर राजाने यह सोचकर कि मैं तो पुरुष हूं, कमज़ोर नहीं हूंगा इससे यह फल प्राणप्रियाको दूं जिससे मुझे सभी सुख मिलेंगे वह फल रानीको दिया। रानी ने 'अच्छा' कहकर वह फल लेतो लिया पर स्वयं न खाकर उसे अपने मित्र कोतवाल की भेंट किया। कोतवालने उसे अपनी आशना वेश्याको दिया और उसका गुण बताया। वेश्याने सोचा कि मुझ पाप करनेवाली को उसके खाने से कोई लाभ नहीं, केवल पाप की ही वृद्धि होगी, इससे इसे राजा को देना चाहिये कि वह दीर्घायु होकर धर्म से प्रजापालन करे। निदान वह राजा के पास गई और वह फल राजा की भेंट किया। राजाने फलको पहिचानकर अपने मन में जान लिया कि रानी दुश्चरित्रा है। पर ऊपर से हँसकर पूछा कि यह फल तुझे किसने दिया? वेश्या ने कहा कोतवाल ने दिया है। राजाने वेश्याको कुछ धन देकर विदा किया और कोतवाल को बुलाकर पूछा। उसने भी उसे रानी से पाया बताया। राजाको इससे बहुत क्रोध आया पर साथही उन्हें संसार से वैराग्य उत्पन्न होगया। उन्हों ने महल में जाकर रानी से पूछा वह फल क्या किया? रानी ने कहा खा लिया। राजा ने फल निकाल कर रानी को दिखाया [illegible] स [illegible] उसका मुख मारे घबड़ाहट के सूखगया। [illegible]

देखते वह फल

ग्रहण करो तो मैं तुमको बहुत धन दूंगा। गोविन्दशर्मा ने अङ्गीकार किया। यद्यपि उसके भाई ब्रन्धु मनाकरते थे पर उसने किसीका भी कहना नहीं माना। एक तो स्त्रीका और दूसरे धनका लालच हुआ इससे व्याह करलिया और बहुतसा द्रव्य ले अपने घर आया। वह कन्या मूर्खा थी अपने पतिको देख जलाकरतीथी। एक दिन उसनें कहा कि मुझको मेरे पिता के घर पहुँचादो। गोविन्दशर्मा उसे ले चला और जब राहमें आया तो स्त्रीसे कहा कि "तू यहां बैठ मैं आता हूं" यह कहकर एक गांव में गया। वहां पीछे से एक विष्णु-शर्मा नाम ब्राह्मण आया और उसने उस सुन्दरी को देखा। फिर इन दोनों की आपस में दृष्टि मिली और दोनों काम के वशीभूत हुये। फिर विष्णुशर्मा ने मनमें विचार किया और मोहनी को पान इलायची आदि दी और बहकाकर उसको लेकर भगा कि इतने में गोविन्द भी आ पहुँचा और बोला कि अरे दुष्ट! इसको कहां लिये जाता है? उसने उत्तर न दिया तो इन दोनों की लड़ाई हुई और लड़ते लड़ते राजाके पास गये और गोविन्द पुकारा कि विष्णुशर्मा मेरी स्त्री को लिये जाताहै और उसने अपनी स्त्री बताई। अब राजा के प्रधानने उस विषकन्याको बुलाकर पूछा कि जिस दिन तेरे पति गोविन्द से संगम भया तब क्या क्या बात हुई थी। उसने सब बातें कहीं वे पत्रपर लिखलीं और गोविन्दसे पूछा तो उसने भी वेही बातें बताईं परन्तु उससे पूछा तो वह चुप होरहा। प्रधान ने उसको धक्के देकर निकाला और गो-विन्द को उसकी स्त्री देकर कहा कि ऐसी इस स्त्री को न

अथ त्रयस्त्रिंशः प्रदीपः।

यां चिन्तयामि सततं मयि सानुरक्ता सा चान्यमिच्छति जनं स जनस्तथैवम् ॥ शेते तया सह विचिन्त्य चरित्रमेतद्धातुर्दुरत्ययगतिस्त्वति तर्कयामि ३४ विशङ्कितो भ्रातृपुरं प्रतस्थे तत्रापि चाश्चर्यतरं ह्यपश्यम् ॥ तेनाथ धैर्यं तु कथञ्चिदाप्तवान्नारी सती क्वापि न लभ्यते हि ता ३५ ॥

अर्थ। शाहजमां कहताहै कि जिस प्यारी स्त्रीका मैं निरन्तर चिन्तन करता हूं कि वह मुझमें अनुरक्तहै और वह अन्य पुरुषको चाहती है वह पुरुष उस मेरी स्त्री के साथ सोताहै इस प्रकार इस विचित्र चरित्रका चिन्तन कर ऐसी तर्कणा करता हूं कि विधाता की गति बड़ी दुरत्यय है अर्थात् जानी नहीं जातीहै ३४ फिर इस सन्देहसे शंकित हुआ मैं अपने भाई के नगरमें गया तो वहां भी महाआश्चर्य देखा तो उससे मैं कुछेक धैर्य्य को प्राप्तहुआ और निश्चय जानलिया कि हितकारक पतिव्रता स्त्री कहीं नहीं मिलती है ३५ ॥ दृष्टान्त ॥ पारस देश के बड़े राजकुमार का नाम शहरयार और छोटेका शाहजमां था। राजाके मरने पर शहरयार गद्दी पर बैठा और कुछ दिन पीछे छोटे भाई शाहजमां को तातारदेश का राजा बनाया। वह समरक़न्दको राजधानी बना अतिआनन्द से रहनेलगा। एकबार शहरयार ने मिलनेकी इच्छासे मन्त्री के द्वारा अपने भाई शाहजमां को बुला भेजा। मन्त्री के समरकन्द पहुँचने पर शाहजमां ने उसे बड़े आदर के साथ ठहराया। दश दिन

रखना चाहिये क्योंकि शास्त्र में लिखा है कि "श्लोकः" (वैद्यं पानरतं नटं कुपठितं मूर्खं परिव्राजकं ऋद्धं कापुरुषं तुरङ्गमजवं स्वाध्यायहीनं द्विजम् ॥ राज्यं बालनरेन्द्रमंत्रिरहितं मन्त्रं छलान्वेषणं भार्य्यां यौवनगर्विंतां पररतां मुञ्चन्ति शीघ्रं बुधाः १) मद्य पीनेवाला वैद्य, कला आदि विद्या से रहित नट, मूर्ख संन्यासी, समृद्धिमान् तुच्छ मनुष्य, गतिहीन घोड़ा वेद पाठ आदि से रहित ब्राह्मण; मन्त्रियों से हीन बालक राजा का राज्य, छलसूचक मंत्र तथा यौवन से गर्वित और परपुरुषमें रत स्त्री इन सबको ज्ञानीजन शीघ्रही छोड़ देते हैं। इसप्रकार समझाने पर भी गोविन्द ब्राह्मण ने विषकन्या का त्याग नहीं किया और वहां से उठ आगे को चला तो एक मनुष्य दिखाई दिया। विषकन्याने पति से कहा कि इसे मारो तो आगेको चलूं। जब ऐसा हठ किया तो उसको वह भी मारना पड़ा इत्यादि। मनुष्य को चाहिये बड़ोंकी आज्ञामें रहे जिससे इसकी तरह दुःख न उठावे ॥ इति छठवां प्रदीप ॥

अथ सप्तमः प्रदीपः ।

द्विजोपि विकलो भूत्वावञ्चयत्सर्वतो जनान् ॥
राज्ञा प्रमोचितः सोहि सद्यो वैकल्यशंकया ७ ॥

अर्थ। एक द्विजने भी विकल (बावला) बनकर सबजनों को ठगा और पकड़े जानेपर राजा से भी विकल (पागल) समझ छोड़ागया ७ ॥ दृष्टान्त ॥ एक विद्यावंत नाम राजा था उसके नगर में एक राव ब्राह्मण बहुत कामी था। एकदिन राव ब्राह्मण तालाबको गया। वहां एक रूपवती स्त्री देखी

बीतने पर शाहज़मां ने अपने मन्त्री को राजकाज समझा कर भाई के निकट प्रस्थान किया। कुछ दूर चलकर उसे अपनी प्रिया को देखने की बड़ी इच्छा हुई इससे वह वहीं से लौट पड़ा और आधीरात को महल में प्रवेश किया। वेगम साहबा को पति के लौटने का कुछ विश्वास तो थाही नहीं वे एक कृपापात्र अनुचर की सुभग शय्या पर लेटी हुई उसे कृतार्थ करती थीं। यह देख शाहज़मां को बहुत आश्चर्य हुआ। पर क्षणमात्र में ही यह आश्चर्य क्रोध में बदल गया और शाहज़मांने खड्ग निकालकर उन दोनों की गर्दनें काटदीं मानो उन्हें इसलोक में ही नहीं किन्तु परलोक में भी संग करने का निदेश किया। फिर उन दोनों की लोथों को पिछवाड़े एक गढ़े में फेंककर अपने डेरेको लौट आया पर किसी को यह समाचार विदित न हुआ। यद्यपि साथ के लोगों को यात्राका यथेष्ट सुख मिला परन्तु शाहज़मां के चित्त को किञ्चिन्मात्र भी शांति न मिली। शहरयार ने भाईका स्वागत बड़ी धूम धाम से किया पर उससे शाहज़मां के दुःख की वृद्धिही हुई। फिर भाई का हाथ पकड़े हुए शहरयार ने नगर में प्रवेश किया। शहर भी खूब साजा गया था पर शाहज़मां ने एक दृष्टि भी न उठाई किन्तु अपने परिताप में ही मस्त रहा। फिर एक बहुतही रमणीय स्थान में शाहज़मां ठहराये गये। उचित समय पर दोनों भाइयों ने स्नान, भोजनादि किये, पर शाहज़मां को वह जल गर्म तेल तथा वह सुस्वादु भोजन पत्थर या कंकड़ सा दुःखद हुआ। पुष्पों के समान कोमल भी शय्या शाहज़मां के लिये कांटों के समान दुःख देनेवालीथी।

और उससे कहा कि मुझसे रतिकर। उसनें इन्कार किया पर तो भी ब्राह्मण ने माना और घड़ा उठाने के बहाने से उसके पास गया। घड़ा उठाते समय उस स्त्री के कुच पकड़ मर्दन किये। उस समय उसका पति आगया और कहा कि तैंने मेरी स्त्री को छेड़ा है इसलिये तुझे राजा के पास पहुँचाऊंगा। वह ब्राह्मण डरकर वितर्कनाम मित्र के पास गया और कहा कि भाई में एक स्त्री के कुचमर्दन कररहाथा कि इतनें में उस का पति आगया और मुझसे कहा कि तुझे राज्य में पकड़ाऊंगा। बताइये भाई अब में क्या करूं। वितर्क ने कहा कि हां हां और वच वच ये दो शब्द जो कोई पूछे उससे कहना। इसके पश्चात् महाजननें अर्जी दी और ब्राह्मण देवता को बुलाया। ब्राह्मण ने येही दो शब्द (हां हां वच वच) राजा से कहे। राजा ने उसको पागल समझकर छोड़दिया॥ इति सातवां प्रदीप॥

अथाष्टमः प्रदीपः।

वल्लभा जलमानेतुं गता रेमेऽथ तत्र हि॥
पश्चाद्विलम्बभयतो मग्ना सरसि सा छलात्८॥

अर्थ। वल्लभा (स्त्री) जल लेनेको गई और वहांहीं यार से रमण करनेलगी फिर विलम्ब होने के कारण छल से सरोवर में डूबगई ८॥ दृष्टान्त॥ प्रतिष्ठानपुर में शुभकरण नाम एक बनियां रहता था उसकी स्त्री का वल्लभा नाम था। एक दिन शुभकरण स्नान के लिये बैठे और उसी समय का संकेत वल्लभा ने यार से किया था। समय पाकर बोली कि

उसका यह हाल देख शहरयार ने सोचा कि मैं तो शाहज़मां से बड़ी प्रीति रखता और उसका भलीभांति सन्मान करता हूं परन्तु यह सदा शोक में ही मग्न रहता है। न जानें वह किस चिन्ता में रहता है। मैंने इसको बुलाकर अच्छा नहीं किया। अब यही उचितहै कि इसे अच्छी अच्छी सौगातें देकर और समझा बुझाकर लौटादें जिससे इसका दुःख मिटे। कदाचित् इसे अपनी रानी अथवा अपने देशका स्मरण आगया हो कि जिससे इसे यह दुःखहोरहाहै। फिर शहरयारने दरबारियों से कहा मैंने सुना है कि असुक वन में मृगआदि पशु बहुत हैं इससे मैं वहां शिकारको जाऊंगा; तुम लोग भी शीघ्रही तैयार हो और मेरे भाई से कहो कि वह भी मेरे साथ चलें। उन लोगों ने वैसाही किया पर शाहज़मां वहां भी जानेको राज़ी न हुआ किन्तु उन सबको विदाकरके वहीं रहा। सायंकाल को घर के किवाड़ बन्द करलिये और एक खिड़की में कि जहां से राजाकी फुलवाड़ी देख पड़ती थी बैठकर बागकी शोभा देखनेलगा। कुछ कालमें उसने देखा कि राजमन्दिर का चोरदरवाज़ा खुलगया और उसमें से इक्कीस स्त्रियां दिव्य वस्त्र और आभूषण पहिने निकलकर बाग में आईं। कुछ काल में जब उन्होंने अपने बड़े और लम्बे कपड़े जिन्हें पहिनकर वे महल से निकली थीं उतार डाले तो उनकी सूरतें स्पष्ट दीखने लगीं। उन इक्कीसों मे दश हब्शी थे जिन्हों ने साथ आई हुई दश स्त्रियों के हाथ एक एक करके पकड़ लिये। इक्कीसवीं रानी थी। उसने भी 'मसऊद' 'मसऊद' कह कर पुकारा तो एक अति हृष्टपुष्ट महातरुण सीदी एक पेड़

स्वामिन् ! जल नहीं है कहो तो तालावसे भरलाऊं प
बोला अच्छी बात है। वह वहां गई और अपना मनोरथ पू
करवाने लगी। इतने में देर हुई तो विचारा कि पूछेंगे त
क्या कहूंगी यह विचार जहां बहुतसे मनुष्य पानी भरते
वहां गई और जल के बहाने से तालाब में गिरपड़ी। लोगों
उसको निकाल शुभकरण से कहा कि तेरी स्त्री तालाब
गिरपड़ी थी। यह सुन उसकी रिस मिटगई और उससे कु
नहीं कहा ॥ इति आठवां प्रदीप ॥

अथ नवमः प्रदीपः ।

भोगाख्या कुम्भकारी तु जारं राज्ञा धृतं तथा ॥
स्वामिने ज्ञापयामास भुक्ता तेनास सा पुरा ९ ॥

अर्थ। भोगा कुम्हारी ने राजा से दण्डित यार को अप
स्वामी से बताया जिससे कि पहिले भोगीगई थी ९ ॥ दृष्टान्त
नरपति नाम राजाके नवलनाम नगर में महाधन नाम कु
म्हार वसता था उसकी स्त्री का नाम भोगा था। वह व्यभि
चारिणी थी। वह एक दिन पतिके न होनेपर यारको बुला
रति कराने लगी, उसी समय पति भी आगया तो यारक
दिवालपर चढ़ादिया परन्तु वह डरका मारा उस पर से खि
सल पड़ा और भागा। उसके पति ने कहा यह कौन है ? त
वह हँसी और बोली कि आज बड़ाही अचरज हुआ कि इ
मनुष्य को राजाके दूत पकड़ने आये तो यह भागा और कुछ
न बनपड़ी तो हमारे घरमें आछिपा परन्तु इतने में आप ज
आये तो इसने जाना कि कहीं वेही आगये इससे हड़बड़ा के

से उतर कर उसकी ओर दौड़ा और रानी का हाथ पकड़ लिया। फिर दशो स्त्रियों के साथ दशों हब्शी और रानी के साथ मसऊद सीदी आधीरात तक सुखपूर्वक विहार करते रहे। अन्त में सबने वहां एक सरोवर में स्नान किया और अपने अपने कपड़े पहिन उसी चोरदरवाज़े से राजप्रासाद में चले और चलीगयीं। मसऊद भी बाग़की दीवार फांद कर चलागया। शाहज़मांको यह घटना देखकर आश्चर्य तो हुआ पर साथही उसके दुःख की मात्रा बहुत कुछ घटगयी क्योंकि अब उसे यह जानने में देर न लगी कि जो मेरे दुःख का कारण होरहा है वह मेरे ही यहां नहीं किन्तु संसार भर में वायु के समान व्याप्त है। भाईके लौटने पर जब शाहज़मां उससे मिला तो शहरयार को उसकी दशापर आश्चर्य हुआ और उसने शाहजमां से इस आश्चर्यकारी परिवर्तन का कारण पूछा। शाहज़मांने पहिले तो कुछ न बतलाना चाहा पर जब शहरयार ने उसे अपनी सौगन्द दिलाकर हठपूर्वक पूछा तो शाहज़मां ने अपनी रानी का सब वृत्तान्त कह सुनाया। तब आश्चर्यपूर्वक शहरयार ने भाई की बड़ाई करते हुए कहा कि ऐसी कुकर्मिणी को उसके जार समेत मारडालने में तुम्हें कोई अन्यायी नहीं कह सकता। किन्तु मेरा क्रोध तो हज़ार स्त्रियों को मारडालने पर शान्त होता। अच्छा, कहो यह शोक दूर कैसे

कपड़े भी न पहिनसका है और भागपड़ा है इससे मुझको हँसी आई। कुम्हार सुन चुप होरहा ॥ इति नवां प्रदीप ॥

अथ दशमः प्रदीपः।

शृङ्गारी घृतमानेतुं गता रेमेऽथ तत्र हि ॥
पृष्टा च वञ्चयाञ्चक्रे घृतपातभयात्पतिम् १० ॥

अर्थ। शृंगारी घृत लाने को गई और वहांहीं जार से रमण करनेलगी और पूछने पर घृत गिरपड़ने के भयसे पति को वञ्चित किया १० ॥ दृष्टान्त ॥ एक नागपुर नाम नगर है जिसका राजा नृसिंह नाम था। वहां के धनपाल बनियां की स्त्री का नाम शृंगारी था। वह बड़ी चतुर थी परन्तु उसका पति मूर्ख था इससे परपुरुषों को बुलाकर रति किया करती परन्तु पति नहीं जानपाताथा। एक दिन अपने पति को भोजन करवाती थी कि वह समय आगया तो उसने झरोखे से झांका और यारसे समस्या की कि मैं आती हूं तू चल। फिर पांव से घी गिरादिया तब पति बोला कि जल्दी और घी ले आ तब घी के मिपसे चली गई और उससे सम्यक् प्रकार रति की जब एक पहर व्यतीत होगया तब विचार किया कि पति क्रोध करेगा इसका विचार कर रोती हुई चौहट्टे में जाय बैठी और कपड़े में धूलिभर अपने घर आई। पतिने शान्तहो पूछा तू रोती क्यों है उसने कहा जल्दी में पैसे गिरगये इससे धूलि भर ले आई हूं ॥ इति दशवां प्रदीप ॥

अथैकादशः प्रदीपः।

सुप्तापि भर्त्रा सार्कं तु परपुंसा यथेच्छया ॥

किया कि इसी प्रकार संसार की सभी स्त्रियां व्यभिचार की प्रत्यक्ष मूर्ति हैं इससे इनपर विश्वास करना कभी न कभी हानि काही मार्ग होता है। इस पर शहरयार को विश्वास न हुआ तब शाहज़मां ने शहरयार को विश्वास दिलाने के लिये यह प्रकट करवादिया कि बादशाह आज फिर शिकार खेलने जायँगे और सेना आदि ने वन को प्रस्थान भी कर दिया पर शहरयार वहां न जाकर भाई के घर में छिपरहा। शाहज़मां ने रात्रिको उसे उसी खिड़की पर बिठाकर सब घटना जैसी कही थी प्रत्यक्ष दिखादी। उससे शहरयार को दुःख तो बहुत हुआ पर कुछ न करके लज्जा के कारण विरक्त होकर भाई सहित वहां से चलागया ॥इति तेंतीसवां प्रदीप॥

अथ चतुस्त्रिंशः प्रदीपः।

अहं हि दुःखीति नरो न चिन्तयेत्ततोपि दुःखप्रचुरोथ लभ्यते ॥ यथा पिशाचो युवतिं स्वगोपितां शतोपभुक्तां नहि सस्मरे यतः ३६ ॥

अर्थ। मनुष्य यह न जानलेवे कि मैंही दुखियाहूं किन्तु उससे भी भारी दुःखवाला कोई मिलजाता है। जैसे पिशाच स्त्री की आपही बड़े यत्न से रक्षा करता था इससे उसको सैकड़ों मनुष्यों से भोगीहुई नहीं जानता था ३६ ॥ दृष्टान्त ॥ शहरयार ने अपने भाई से कहा कि कोई भी मनुष्य हमारासा दुखिया नहीं होगा। शाहज़मां बोला कि यह तो आगे चल कर मालूम होजावेगा। निदान वे दोनों छिपकर अप्रसिद्ध

हुये सकडाल याद आगया तो उसेबुलाया और आदर सत्का
कर बैठाया फिर उससे कहा कि इस घोड़ी की परीक्षा करो कि
इनमें माता और बेटी कौनसी हैं। वह बोला बहुत अच्छा
फिर उसने दोनों को बहुत दौड़ाया जब वे दोनों ठहराई त
माता अपनी बेटी का माथा थकी जान सूंघने लगी। उस
पहिचान कर राजाको बताई कि यह माता है। फिर राजा
उसको बहुतसा द्रव्य दिया॥ इति छव्वीसवां प्रदीप॥

अथ सप्तविंशः प्रदीपः।

परस्त्री वञ्चयेत्सद्यो मायया स्वामिनं यथा॥
आयातमपि तं सद्यो व्रीडयत्कुसुमावती २७

अर्थ। परस्त्री शीघ्रही अपनी मायासे स्वामी को छ
लेती है जैसे आये हुये भी पति को कुसुमावती ने वञ्चि
किया २७॥ दृष्टान्त॥ चक्रवती नगरी में विरम नाम ए
बनियां रहताथा। उसकी बेटी का कुसुमावती नाम था। व
पुरुषोत्तम को व्याही थी। एक समय पुरुषोत्तमदास सेठ पर
देश को गया और वहां जाकर द्रव्य कमाने लगा। पीछे
कुसुमावती दश दिन तो शीलतासे रही परन्तु फिर निश्शंक
हो उसने दासी से कहा कि किसी युवा पुरुष को बुलाओ

से उतर कर उसकी ओर दौड़ा और रानी का हाथ पकड़ लिया। फिर दशों स्त्रियों के साथ दशों हब्शी और रानी के साथ मसऊद सीदी आधीरात तक सुखपूर्वक विहार करते रहे। अन्त में सबने वहां एक सरोवर में स्नान किया और अपने अपने कपड़े पहिन उसी चोरदरवाज़े से राजप्रासाद में चले और चलीगयीं। मसऊद भी बाग़की दीवार फांद कर चलागया। शाहज़मांको यह घटना देखकर आश्चर्य तो हुआ पर साथही उसके दुःख की मात्रा बहुत कुछ घटगयी क्योंकि अब उसे यह जानने में देर न लगी कि जो मेरे दुःख का कारण होरहा है वह मेरे ही यहां नहीं किन्तु संसार भर में वायु के समान व्याप्त है। भाईके लौटने पर जब शाहज़मा उससे मिला तो शहरयार को उसकी दशापर आश्चर्य हुआ और उसने शाहज़मां से इस आश्चर्यकारी परिवर्तन का कारण पूछा। शाहज़मांने पहिले तो कुछ न बतलाना चाहा पर जब शहरयार ने उसे अपनी सौगन्द दिलाकर हठपूर्वक पूछा तो शाहज़मां ने अपनी रानी का सब वृत्तान्त कह सुनाया। तब आश्चर्यपूर्वक शहरयार ने भाई की बड़ाई करते हुए कहा कि ऐसी कुकर्मिणी को उसके जार समेत मारडालने में तुम्हें कोई अन्यायी नहीं कह सकता। किन्तु मेरा क्रोध तो हज़ार स्त्रियों को मारडालने पर शान्त होता। अच्छा, कहो यह शोक दूर कैसे हुआ? इसे भी पहिले शाहज़मांने बतलाना न चाहा पर शहरयार के विशेष अनुरोध से उन्हें कहनाही पड़ा। शाहज़मां ने सारी घटना जैसी देखी थी कह सुनाई और यह कहकर अपना वक्तव्य समाप्त

तब कुसुमावती बोली कि यदि पीछे से सेठजी आजायँगे तो मेरी क्या गति होगी ? लौंड़ी ने वेश्या से यह जाय कहा। फिर कामावती बोली कि तू फिर जाकर कह कि यदि तेरी इच्छा है तो यहीं आजा और कुछ चिन्ता मत कर। वह गई। वेश्याने विना जाने उसी सेठके पास भेजदी जब वह सामने गई तो पतिको पहिचान लिया और उसने भी अपनी स्त्रीको पहिचान लिया। तब कुसुमावती बोली कि क्या तुम ऐसा काम करते हो ? मैंने पति के सिवाय किसी का मुख नहीं देखा और तुम परस्त्री से आसक्तहो ? मैंने आज तक तो कानों ही से सुना था पर अब अपनी आंखों से देखलिया कि तुम कामावती के पास आते हो। यह सुन सेठजी लज्जित होगये॥ इति सत्ताईसवां प्रदीप॥

अथाष्टाविंशः प्रदीपः।

व्यभिचारैकदोषोपि गुणसिंधौ निमज्जति॥
आसक्तोपि यथा राज्ञां राज्ञा विद्वान् क्षमीकृतः२८॥

अर्थ। व्यभिचाररूप एक दोष भी गुणरूप समुद्र में डूब जाता है जैसे राजाकी स्त्री में आसक्त हुआ भी गुणवान् द्विज राजा से क्षमा किया गया २८॥ दृष्टान्त॥ जैसे एक धाराधिपति राजा भोज की चन्द्ररेखा नाम एक रानी बहुत चंचल थी उसका मन शुभकर्ण पण्डित से लग गया था। वह रानी एकबेर रात्रि के समय पण्डित के पास गई तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उससे भोग किया। ऐसेही बहुत दिन होता रहा। एक दिन राजा भी उस रानी के पीछे पीछे हो लिया और उस व्यवस्था को देख घर आ पलँगपर सोरहा। फिर

किया कि इसी प्रकार संसार की सभी स्त्रियां व्यभिचार की प्रत्यक्ष मूर्ति हैं इससे इनपर विश्वास करना कभी न कभी हानि काही मार्ग होता है। इस पर शहरयार को विश्वास न हुआ तब शाहज़मां ने शहरयार को विश्वास दिलाने के लिये यह प्रकट करवादिया कि बादशाह आज फिर शिकार खेलने जायँगे और सेना आदि ने वन को प्रस्थान भी कर दिया पर शहरयार वहां न जाकर भाई के घर में छिपरहा। शाहज़मां ने रात्रिको उसे उसी खिड़की पर बिठाकर सब घटना जैसी कही थी प्रत्यक्ष दिखादी। उससे शहरयार को दुःख तो बहुत हुआ पर कुछ न करके लज्जा के कारण विरक्त होकर भाई सहित वहां से चलागया ॥ इति तेंतीसवां प्रदीप ॥

अथ चतुस्त्रिंशः प्रदीपः।

अहं हि दुःखीति नरो न चिन्तयेत्ततोपि दुःखप्रचुरोथ लभ्यते ॥ यथा पिशाचो युवतिं स्वगोपितां शतोपभुक्तां नहि सस्मरे यतः ३६ ॥

अर्थ। मनुष्य यह न जानलेवे कि मैंही दुखियाहूं किन्तु उससे भी भारी दुःखवाला कोई मिलजाता है। जैसे पिशाच स्त्री की आपही बड़े यत्न से रक्षा करता था इससे उसको सैकड़ों मनुष्यो से भोगीहुई नहीं जानता था ३६ ॥ दृष्टान्त ॥ शहरयार ने अपने भाई से कहा कि कोई भी मनुष्य हमारासा दुखिया नहीं होगा। शाहज़मां बोला कि यह तो आगे चल कर मालूम होजावेगा। निदान वे दोनों छिपकर अप्रसिद्ध

रानी भी आई और सो रही । प्रभात होतेही राजाने सभा की और पण्डितों से ऐसे प्रश्न किये कि किसी से भी उत्तर न दिया गया तब शुभकर्ण ने राजा के प्रश्नों का उत्तर दिया तो राजा बहुत प्रसन्न हुआ फिर राजा ने सब को विदाकर शुभकर्णको बैठा रक्खा और रानीको बुलाकर पण्डित से कहा कि महाराज ! रातको क्या बात थी सत्य सत्य कहो। पण्डितजी चकित हुये और रानी भी जानगई । तब पण्डित ने विचार कर कहा कि अपराध क्षमा करो । राजा प्रसन्न हुआ और यह विचारा कि ऐसा पण्डित मिलना दुर्लभ है स्त्री तो बहुत मिलसक्ती हैं । फिर पण्डितको बहुतसा धन दे विदाकिया ॥ इति अट्ठाईसवां प्रदीप ॥

अथैकोनत्रिंशः प्रदीपः ।

तथा यष्टिपरीक्षातो लब्धवान् मानमुत्तमम् ॥
अतो वै विदुषां ज्ञेयं चातुर्यम्भूषणम्परम् २९ ॥

अर्थ । जैसे किसी ने लाठीकी परीक्षा से उत्तम मानपाया इस लिये चातुर्य 'चतुराई' विद्वानों का श्रेष्ठ आभूषण है २९ ॥ दृष्टान्त ॥ एकदिन अम्बधर राजा सभामें बैठाथा उस समय वीरपुरसे वीरसिंह राजा ने परीक्षाके लिये एक बड़ी सुन्दर लकड़ी भिजवाई । राजाने वह लकड़ी सबको दिखाई पर यथार्थ परीक्षा किसीसे न होसकी । इतनेमें सकडाल मंत्री भी आगया । राजा ने उससे कहा कि यह लकड़ी राजा वीरसेन के यहांसे आईहै इसको बतावो कि यह अच्छी है या खराब । तब मंत्री ने कहा कि इसे बहते पानीमें डालदेवो यदि अच्छी

मार्ग से चले और दिनभर चलकर रातको किसी एक वृक्ष के नीचे सो रहे। फिर दूसरे दिन प्रभात भये वहां से भी आगे गये और चलते चलते एक शोभायमान उत्तम फुलवाड़ी में जा पहुँचे। वह नदी के तीर पर थी। वहां दूर दूर तक बड़े बड़े वहुत सघन वृक्ष लगे थे वहां ये दोनों एक वृक्ष के नीचे विश्राम के लिये बैठगये और आपस में वातचीत करनेलगे थे कि इतनेमें एक भयानक शब्द हुआ जिसको सुन वे दोनों भयभीत और कम्पायमान होगये। फिर नदी का जल फटा और उसमें से एक काला खम्भा निकलनेलगा। वह इतना ऊंचा हुआ कि वादलमें पहुँचकर गुप्त होगया। उसको देखकर वे दोनों डरे और वहां से भागकर एक ऊंचे वृक्षकी डालियोंमें जाय छिपे। फिर वही खम्भा आकाश से नदीके तटपर आया और एक महापिशाच वनगया। तदनन्तर वह पिशाच उस नदी में से एक सन्दूक ले उस वृक्षके नीचे आया और उसको खोलकर उसमें से भूषण और वस्त्रोंसे सजीहुई सुन्दर स्त्री निकाली फिर उसको अपने पास वैठाकर प्रीतिकी दृष्टिसे देखा और कहा कि हे प्यारी! तू अपनी सुन्दरतामें एकही है वहुत दिनहुए कि मैं तेरी अनूपछविपर मोहितहो तुझको विवाहकी राति ही में ले आयाथा उसी दिनसे तुझे निष्पाप पाताहूं। इस समय मुझको निद्रा आतीहै इसलिये तेरे पास सोताहूं। यह कह उसकी जांघपर शिररखकर वह सोरहा। उसके पांव इतने वड़ेथे कि नदीतक पहुँचे और उसके श्वास का शब्द वादल के शब्द समान गूंजनेलगा। दैवयोग से उस स्त्री ने ऊपर की ओर देखा तो जिसकी दृष्टि उन दोनों पर पड़ी। उसने सैनसे

उनको बुलाया कि चुपकेसे नीचे उतर आवो। वे उसके अभिप्रायको समझकर भयभीत हुए और सैनसे कहा कि कृपाकर हमें यहांही बैठे रहने दो। फिर उसने धीरेसे उस पिशाच का शिर अपनी गोदसे उतारकर पृथ्वीपर रखदिया और आप उठ उनको धीरज देके कहनेलगी कि तुम दोनों वृक्ष से उतर कर मेरे समीप आओ यदि नही आओगे तो मैं इस पिशाच को जगादूंगी। यह इसी समय तुमको मारडालेगा इस वात को सुन वे डरे और चुपके से उस वृक्ष से नीचे उतर आये वह सुन्दरी मुसकुराती हुई उन दोनों का हाथ पकड़कर थोड़ी दूर वृक्षके नीचे लेगई और अपने साथ भोगकरने की इच्छा प्रकट की। प्रथम तो उन्होंने अस्वीकार किया परन्तु पीछे उसका कहा करनापड़ा। उस स्त्री ने दो अँगूठी उनसे मांगलीं और एक छोटा संदूक निकाला जिसमें बहुतसी अँगूठियां थीं उन दोनों को भी उनमें ही रखलीं। फिर कहा कि तुमने जाना यह क्या वात है? वे बोले कि हम नहीं जानते। फिर उस मृगनयनी ने कहा कि यह उन लोगों के चिह्न हैं कि जिनको मैंने तुम्हारे समान इस कार्य में उद्यत किया था। ये ६८ अँगूठियां हैं और अब तुम्हारी दो मिलने से सौ होगईं। पिशाच की इतनी रक्षा और प्रवन्ध से भी मैंने सौ वेर अपना मन प्रसन्न किया है। यह दुराचारी मुझपर मोहित है इससे क्षणमात्र भी अलग नहीं करता है और अति प्रवन्ध से इस संदूक में वन्दकर समुद्र में छिपाकर रखता है परन्तु इतने पर भी मेरा जो मन चाहता है मैं करतीहूं। मेरे कार्य से तुम समझजो कि जव स्त्री पुंश्चली होती

दिन बहुतही आनन्द से रहा और जो कुछ उसकी नांद में था उसको आनन्द से खाया और गधेको आशीर्वाद दिया। जब गधा थका हुआ खेत से आया तो बैलने कहा कि भाई तेरे उपदेश से मैं आज बहुतही आनन्द में रहाहूं। गधा दुःख के कारण उसका कुछ उत्तर न देसका और आतेही अपने थान पर गिरपड़ा और अपने को बुरा भला कहनेलगा कि हे भाग्यहीन! तैंने इसको ऐसी शिक्षा देकर अपने को वृथा कष्ट में डाला। मन्त्रीने यह कह अपनी पुत्री को समझाया कि क्यों तू उस गधेके समान अपनी जानको फँसाती है और जो तू हठ करके इस बातका पीछा न छोड़ेगी तो तुझे वही दण्ड होगा जो उसी व्यापारी ने अपनी स्त्री को दिया था और उस गधे बैलकी भी जो अवस्था हुई वह भी सुन॥ इति पैंतीसवां प्रदीप॥

अथ षट्त्रिंशः प्रदीपः।

हठेऽतिक्रियमाणे हि दण्डयोगम्प्रसाधयेत्॥
दण्डे व्यापारिणा मुक्ते हठःशान्तःस्त्रियो यथा ३८

अर्थ। जब कोई बहुतही हठ करे तो वहांपर दण्डयोग का साधन करे जैसे व्यापारी के छोड़े हुये दंडे उसकी स्त्री का हठ शान्त हुआ ३८॥ दृष्टान्त॥ मन्त्री ने कहा कि दूसरे दिन वह व्यापारी रात्रिको भोजन से निश्चिन्त हो अपनी स्त्री समेत उन दोनों पशुओं के पास जा बैठा और सुना कि गधा उस बैलसे पूछताहै कि कहो भाई कल भोरको जब हरवाहा तुम्हारे वास्ते दाना घास लावेगा तब तुम क्या

है तो उसको दुष्टकर्म से कोई भी नहीं बचा सक्ता। बहुधा मनुष्य स्त्रियों के निष्पाप होनेपर विश्वास रखते हैं परन्तु उनके विचार के विपरीत वे कुकर्मिणी होती हैं। निदान वह उनकी अँगूठी ले वहीं जावैठी और पिशाच के शिर को उठा अपने घुटनेपर रख सैन से कहा कि तुम यहां से चलेजावो। वह दोनों वहां से चले और जब बहुत दूर निकलगये तो शाहजमां ने शहरयार से कहा कि देखो इतनी रक्षा और प्रबन्ध करनेपर भी वह स्त्री मनमाना काम करती है पर पिशाच को उसपर कितना विश्वास है जो इसके निष्पाप होने की इतनी प्रशंसा करताथा। अब आप न्याय से कहिये कि इस पर हमसे अधिक कष्ट है या नहीं ? हम जिस बातकी खोज में थे उसको पागये। अब हमें उचित है कि अपने देश को चलें और कभी किसी स्त्री से विवाह न करें। क्योंकि इस समय में निष्पाप स्त्री का मिलना कठिनहै। निदान शहरयार ने अपने भ्राता के कथनानुसार किया और वहां से अपने नगरकी ओर चलकर तीन दिन के पीछे वे दोनों अपनी सेना में पहुँचे। शहरयार ने फिर आगे जाने की इच्छा न की और अपनी राजधानी को लौटआया। महलमें जाकर मंत्री को आज्ञा दी कि इसी समय रानी को मारनेके वास्ते लेजा। मंत्री ने आज्ञानुसार उसको मारडाला। फिर राजा ने रानी की दासियों को अपने हाथ से मारकर विचार किया कि ऐसा उपाय कियाजाय कि विवाह करनेके पीछे स्त्री बुरे कर्म करने का समय न पासके इसलिये उसने यह ठहराया कि रातको विवाह किया करूं और भोर होतेही उसे मरवा डालूं। इसके

करोगे? बैलने कहा जैसा तुमने मुझे उपदेश किया है वैसाही करूंगा। गधे ने कहा कहीं ऐसा काम न करना नहीं तो मारा जायगा। कल संध्या को फिरते समय मैंने सुना कि हमारा स्वामी अपने रसोई बनानेवाले से कहता था कि भोर होतेही कसाई और चर्मकार को बुला लाना और बैल जो कल से बीमार है उसे मारकर उसका चर्म और मांस उनके हाथ बेच डालना। मैंने जो सुना था मित्रता की राह से तुझसे कहदिया अब मेरे विचार में तेरे लिये यही उत्तम होगा कि सबेरे जब चारा तेरे आगे डालजाय तो शीघ्र उठकर चरना और नीरोग बनजाना फिर स्वामी तुझे नीरोग जान कर तेरे मारने का उपाय न करेगा। यह बात सुन बैल भय-भीत हो बोला कि भाई! परमेश्वर तुझे आनन्द से रक्खे। तैंने मेरे प्राण बचाये। अब मैं वही करूंगा जो तैंने शिक्षा की है। व्यापारी गधे और बैलकी वार्त्ता सुन ठट्ठामार के हँसा तो उसकी स्त्री उसके एकाएकी हँसनेपर आश्चर्ययुक्त हुई और पूछने लगी कि विना प्रयोजन तुम क्यों हँसे? उसने कहा वह बात बताने की नहीं है पर इतना कह सक्ताहूं कि मैं गधा और बैलकी बात सुनकर हँसाहूं। स्त्रीने कहा कि यह विद्या मुझे भी बताओ तो मैं भी पशुओं की वार्त्ता समझ सकूं। परन्तु जब व्यापारीने न बताई तो स्त्रीने कहा कि तुझे इस विद्याके बताने में क्या शोचहै। व्यापारीने कहा कि इस विद्याके बतानेसे मैं न जीसकूंगा। वह बोली कि तू मुझे धोखा देता है क्या जिसने तुझे सिखाया था वह मरगया था? यह तेरा कहना असत्य है। अब यह विद्या मुझे सिखानी पड़ेगी

उपरान्त उसने अपने भाई शाहजमां को विदा किया। वह उत्तम उत्तम वस्तु सेना आदि साथ लेकर अपनी राजधानी समरक़न्द को चलागया। फिर शहरयार ने अपने बड़े मन्त्री को आज्ञा दी कि किसी बड़े सरदार की बेटी को मेरे विवाह के वास्ते ला। मन्त्री ने बादशाह की आज्ञानुसार एक बड़े अमीरकी पुत्री लादी। बादशाह उसके साथ विवाह कर रातभर उसके साथ रहा और भोर होतेही मन्त्री को आज्ञादी कि इसी समय इसे मार डालियो और रातको दूसरी नवीन सुन्दर कन्या लाइयो। मन्त्री ने उसको मारडाला और रात के वास्ते और किसी अमीर की लड़की लाया और बादशाह ने भोर होतेही उसे भी मरवा डाला। इसीतरह उसने बहुत दिनों तक सैकड़ों अमीरों और बादशाहों की लड़कियां विवाहीं और मरवा डालीं। जब नगर की लड़कियों की पारी आई और इस अन्याय का समाचार सारे संसार में फैलगया तो नगरभर में अत्यन्त भयकारी कोलाहल और रोना पीटना पड़गया। जब शहरयार के अन्यायसे सबलोग दुःखित होगये तो उस देशको छोड़ अन्य देश में जा बसे। निदान वहां के मन्त्री की दो पुत्रियां बिन ब्याही थीं। उनमें से बड़ी का नाम शहरज़ाद और छोटीका नाम दुनियाज़ाद था। शहरज़ाद अपनी छोटी बहिन और बराबरवालियों से समझ और बुद्धि में अधिक थी। जिस बातको वह श्रवण करती वा पुस्तक में देखती फिर कभी विस्मरण न करती और वाचा-लता में भी अति प्रवीण थी। उसे बहुतसे प्राचीन महात्माओं के काव्य और अपूर्व दृष्टान्त यादथे और आप भी रचने

यदि ऐसा न होगा तो मैं प्राण त्याग दूंगी। यह कह कोठे के किवाड़ बन्दकर रोने चिल्लाने लगी। यद्यपि उसने बहुत समझाई परन्तु वह न मानी। तब उस व्यापारीने कहा कि यदि मैं तुम्हारी बात पर चलूंगा तो अपने प्राणसे हाथ धो बैठूंगा। वह बोली कि चाहे तू मर चाहे जी पर मुझे यह विद्या पढ़ानी होगी। व्यापारी ने उस महामूर्खा स्त्री को उसी हठमें देखकर अपने और उसके नातेदारों को बुलाया और कहा कि तुम इस मूर्खाको समझाओ जिससे इस विचारमें न पड़े। निदान उन सबों ने उसको बहुत समझाया परन्तु वह अपनी हठ से न हटी और अपने पति के मरने पर प्रसन्न हुई। छोटे लड़के उसकी विह्वलता और व्याकुलता देख रोने और हाहाकार करनेलगे। व्यापारीसे कोई उपाय न बन पड़ताथा कि अपनी स्त्री को समझाये और उसको इस विद्या के पूछने से हटा रक्खे। निदान वह इसी शोच विचार मे अपने घरके बाहर जाबैठा। वहां क्या देखताहै कि उसका कुत्ता मुर्गको मुर्गियों से भोग करते देख भूंका और क्रोधित होकर कहनेलगा कि तुझे धिक्कार है जो आज ऐसे दुःखके समय में भी तू इस कामसे अलग नहीं रहताहै। मुर्गने पूछा कि ऐसा क्या कारण है जो मैं अपनी प्रसन्नता से हटूं। कुत्ते ने कहा कि आज हमारा स्वामी बहुत व्याकुल है। उसकी महामूर्खा स्त्री ऐसे भेद को पूछती है कि जिसके बताने से वह तुरन्तही मरजावेगा और यदि न बतावेगा तो स्त्री मरजावेगी। इसलिये उसके घरमें सब स्त्री और पुरुष रुदन करते हैं और तेरे सिवाय हम भी शोकवान् हैं। मुर्ग ने उत्तर दिया कि हमारा

है तो उसको दुष्टकर्म से कोई भी नहीं बचा सक्ता। बहुधा मनुष्य स्त्रियों के निष्पाप होनेपर विश्वास रखते हैं परन्तु उनके विचार के विपरीत वे कुकर्मिणी होती हैं। निदान वह उनकी अँगूठी ले वहीं जावैठी और पिशाच के शिर को उठा अपने घुटनेपर रख सैन से कहा कि तुम यहां से चलेजावो। वह दोनों वहां से चले और जब बहुत दूर निकलगये तो शाहजमां ने शहरयार से कहा कि देखो इतनी रक्षा और प्रबन्ध करनेपर भी वह स्त्री मनमाना काम करती है पर पिशाच को उसपर कितना विश्वास है जो इसके निष्पाप होने की इतनी प्रशंसा करताथा। अब आप न्याय से कहिये कि इस पर हमसे अधिक कष्ट है या नहीं? हम जिस बातकी खोज में थे उसको पागये। अब हमें उचित है कि अपने देश को चलें और कभी किसी स्त्री से विवाह न करें। क्योंकि इस समय में निष्पाप स्त्री का मिलना कठिनहै। निदान शहरयार ने अपने भ्राता के कथनानुसार किया और वहां से अपने नगरकी ओर चलकर तीन दिन के पीछे वे दोनों अपनी सेना में पहुँचे। शहरयार ने फिर आगे जाने की इच्छा न की और अपनी राजधानी को लौटआया। महलमें जाकर मंत्री को आज्ञा दी कि इसी समय रानी को मारनेके वास्ते लेजा। मंत्री ने आज्ञानुसार उसको मारडाला। फिर राजा ने रानी की दासियों को अपने हाथ से मारकर विचार किया कि ऐसा उपाय कियाजाय कि विवाह करनेके पीछे स्त्री बुरे कर्म करने का समय न पासके इसलिये उसने यह ठहराया कि रातको विवाह किया करूं और भोर होतेही उसे मरवा डालूं। इसके

करोगे ? बैलने कहा जैसा तुमने मुझे उपदेश किया है वैसाही करूंगा। गधे ने कहा कहीं ऐसा काम न करना नहीं तो मारा जायगा। कल संध्या को फिरते समय मैंने सुना कि हमारा स्वामी अपने रसोई बनानेवाले से कहता था कि भोर होतेही कसाई और चर्मकार को बुला लाना और बैल जो कल से बीमार है उसे मारकर उसका चर्म और मांस उनके हाथ बेच डालना। मैंने जो सुना था मित्रता की राह से तुझसे कहदिया अब मेरे विचार में तेरे लिये यही उत्तम होगा कि सबेरे जब चारा तेरे आगे डालजाय तो शीघ्र उठकर चरना और नीरोग बनजाना फिर स्वामी तुझे नीरोग जान कर तेरे मारने का उपाय न करेगा। यह बात सुन बैल भय-भीत हो बोला कि भाई ! परमेश्वर तुझे आनन्द से रक्खे। तैंने मेरे प्राण बचाये। अब मैं वही करूंगा जो तैंने शिक्षा की है। व्यापारी गधे और बैलकी वार्त्ता सुन ठट्ठामार के हँसा तो उसकी स्त्री उसके एकाएकी हँसनेपर आश्चर्ययुक्त हुई और पूछने लगी कि बिना प्रयोजन तुम क्यों हँसे ? उसने कहा वह बात बताने की नहीं है पर इतना कह सक्ताहूं कि मैं गधा और बैलकी बात सुनकर हँसाहूं। स्त्रीने कहा कि यह विद्या मुझे भी बताओ तो मैं भी पशुओं की वार्त्ता समझ सकूं। परन्तु जब व्यापारीने न बताई तो स्त्रीने कहा कि तुझे इस विद्याके बताने में क्या शोचहै। व्यापारीने कहा कि इस विद्याके बतानेसे मैं न जीसकूंगा। वह बोली कि तू मुझे धोखा देता है क्या जिसने तुझे सिखाया था वह मरगया था ? यह तेरा कहना असत्य है। अब यह विद्या मुझे सिखानी पड़ेगी

उपरान्त उसने अपने भाई शाहजमां को बिदा किया। वह उत्तम उत्तम वस्तु सेना आदि साथ लेकर अपनी राजधानी समरक़न्द को चलागया। फिर शहरयार ने अपने बड़े मन्त्री को आज्ञा दी कि किसी बड़े सरदार की बेटी को मेरे विवाह के वास्ते ला। मन्त्री ने बादशाह की आज्ञानुसार एक बड़े अमीरकी पुत्री लादी। बादशाह उसके साथ विवाह कर रातभर उसके साथ रहा और भोर होतेही मन्त्री को आज्ञादी कि इसी समय इसे मार डालियो और रातको दूसरी नवीन सुन्दर कन्या लाइयो। मन्त्री ने उसको मारडाला और रात के वास्ते और किसी अमीर की लड़की लाया और बादशाह ने भोर होतेही उसे भी मरवा डाला। इसीतरह उसने बहुत दिनों तक सैकड़ों अमीरों और बादशाहों की लड़कियां विवाहीं और मरवा डालीं। जब नगर की लड़कियों की पारी आई और इस अन्याय का समाचार सारे संसार में फैलगया तो नगरभर में अत्यन्त भयकारी कोलाहल और रोना पीटना पड़गया। जब शहरयार के अन्यायसे सबलोग दुःखित होगये तो उस देशको छोड़ अन्य देश में जा बसे। निदान वहां के मन्त्री की दो पुत्रियां बिन व्याही थीं। उनमें से बड़ी का नाम शहरज़ाद और छोटीका नाम दुनियाज़ाद था। शहरज़ाद अपनी छोटी बहिन और बराबरवालियों से समझ और बुद्धि में अधिक थी। जिस बातको वह श्रवण करती वा पुस्तक में देखती फिर कभी विस्मरण न करती और वाचालता में भी अति प्रवीण थी। उसे बहुतसे प्राचीन महात्माओं के काव्य और अपूर्व दृष्टान्त यादथे और आप भी रचने

यदि ऐसा न होगा तो मैं प्राण त्याग दूंगी। यह कह कोठे के किवाड़ बन्दकर रोने चिल्लाने लगी। यद्यपि उसने बहुत समझाई परन्तु वह न मानी। तब उस व्यापारीने कहा कि यदि मैं तुम्हारी बात पर चलूंगा तो अपने प्राणसे हाथ धो बैठूंगा। वह बोली कि चाहे तू मर चाहे जी पर मुझे यह विद्या पढ़ानी होगी। व्यापारी ने उस महामूर्खा स्त्री को उसी हठमें देखकर अपने और उसके नातेदारों को बुलाया और कहा कि तुम इस मूर्खाको समझाओ जिससे इस विचारमें न पड़े। निदान उन सबों ने उसको बहुत समझाया परन्तु वह अपनी हठ से न हटी और अपने पति के मरने पर प्रसन्न हुई। छोटे लड़के उसकी विह्वलता और व्याकुलता देख रोने और हाहाकार करनेलगे। व्यापारीसे कोई उपाय न बन पड़ताथा कि अपनी स्त्री को समझाये और उसको इस विद्या के पूछने से हटा रक्खे। निदान वह इसी शोच विचार में अपने घरके बाहर जाबैठा। वहां क्या देखताहै कि उसका कुत्ता मुर्गको मुर्गियों से भोग करते देख भूंका और क्रोधित होकर कहनेलगा कि तुझे धिक्कार है जो आज ऐसे दुःखके समय में भी तू इस कामसे अलग नहीं रहताहै। मुर्गने पूछा कि ऐसा क्या कारण है जो मैं अपनी प्रसन्नता से हटूं। कुत्ते ने कहा कि आज हमारा स्वामी बहुत व्याकुल है। उसकी महामूर्खा स्त्री ऐसे भेद को पूछती है कि जिसके बताने से वह तुरन्तही मरजावेगा और यदि न बतावेगा तो स्त्री मरजावेगी। इसलिये उसके घरमें सब स्त्री और पुरुष रुदन करते हैं और तेरे सिवाय हम भी शोकवान् हैं। मुर्ग ने उत्तर दिया कि हमारा

की शक्ति में अत्यन्त निपुण थी तथा सुन्दरतामें भी अद्वितीय थी । एक दिन उसने अपने पिता से कहा कि मैं आपसे कुछ कहना चाहतीहूं उसको अंगीकार कीजिये । मन्त्रीने कहा कि यदि तेरी बात मानने योग्य होगी तो मैं अवश्य मानूंगा। शहरजाद ने कहा कि मेरा विचार है कि मैं बादशाह को इस अन्याय से हटाऊं और जो लड़कियां उसके मारने से बचरही हैं उनके माता पिता को निश्चिन्त करूं। मन्त्री ने कहा कि हे पुत्रि ! तुम इस विषयको किस तरह रोक सक्ती हो और उसके बन्द करने के लिये कौनसा उपाय सोचा है। शहरजाद ने कहा कि इसका उपाय तुम्हारे हाथ है। तुम मेरा विवाह बादशाह के साथ करदो। मन्त्री यह बात सुन कम्पायमान हो बोला कि हे बेटी ! तेरी बुद्धि भ्रष्ट होगई है कि मुझ से ऐसी अनुचित इच्छा करती है क्या तुझे बादशाह का प्रण विदित नहीं है ? लड़की ने कहा कि मैं बादशाह का वृत्तान्त भली भांति जानतीहूं पर इस इच्छाको न छोडूंगी। यदि और लड़कियों के सदृश मैं भी मारीगई तो इस असार संसार से छूटूंगी और जो मैंने बादशाहको इस अन्यायसे हटादिया तो अपने नगरवालों का बड़ा उपकार करूंगी। मन्त्री ने कहा कि मैं किसी तरह तेरी इच्छा को अंगीकार नहीं करसक्ता। जान बूझकर तुझको ऐसी आपत्ति में न डालूंगा। आजतक किसी पिता ने अपने प्रिय सन्तान के निमित्त ऐसा कर्म नहीं किया होगा। चाहे तू अपने प्राणको प्यारा न समझ परन्तु मुझसे यह न होगा कि अपने हाथों को तेरे रुधिरसे भरूं। शहरजाद ने कहा कि हे पिता ! किसी तरह तो मेरी प्रार्थना को अंगी-

स्वामी मूर्ख है जो एक स्त्री को भी अपने अधीन नहीं कर सक्ता है। मैं पचास मुर्गियां रखता हूं और वे सब मेरे अधीन हैं। यदि वह एक उपाय करे तो अभी उसका शोक दूर हो जावे। कुत्तेने पूछा कि वह कौनसा यत्न करे कि जिससे उसकी स्त्री हठ छोड़े। मुर्गने कहा कि तुम्हारा स्वामी एक लकड़ीसे अपनी स्त्री को अच्छी तरह मारे तो वह उसी समय हठ छोड़ देगी और फिर कभी उसका नाम भी न लेगी। व्यापारी यह बात सुनकर उठा और एक लकड़ी लेकर जिस स्थानपर उसकी स्त्री रुदन करती थी गया और उसे मारने लगा। यहां तक मारी कि उस स्त्री को अपना हठ छोड़ने के सिवाय कुछ न बन आया और घबराकर अपने पति के चरणों पर पड़ी और कहनेलगी कि बस अब न मारो मैंने अपना हठ छोड़दिया और फिर कभी ऐसा हठ न करूंगी ॥ इति छत्तीसवां प्रदीप ॥

अथ सप्तत्रिंशः प्रदीपः ।

व्यापारी और पिशाचकी कथा ॥

सत्यप्रयुक्तं सुजनं मृत्यो रक्षति हीश्वरः ॥
व्यापारिणो यथा मृत्युः पिशाचाद्धिनिवारितः ३९॥

अर्थ। सत्यवान् श्रेष्ठजन की ईश्वरही रक्षा करता है। जैसे मारते हुये पिशाच से व्यापारी की रक्षा की ३९ ॥ दृष्टान्त ॥ एक अत्यन्त धनवान् व्यापारी था वह प्रायः व्यापार के लिये विदेश को जाया करता था। एक समय किसी कार्यके लिये किसी दूर देशको उसे जाना पड़ा तो वह अकेला

कार करो। मन्त्री बोला कि इस विषय में तेरा विशेष कथन मेरे क्रोध को अधिक करता है इससे तेरा हाल उस गर्दभके समान होगा॥ इति चौतीसवां प्रदीप॥

अथ पञ्चत्रिंशः प्रदीपः।

गर्दभ और उसके पालक की कथा॥

अविचार्य्योपदेशं यः कुरुते मन्दधीः पुनः॥
दुःखी स्याद्गर्दभो दत्त्वोपदेशं वृषभे यथा ३७॥

अर्थ। जो मन्दबुद्धि विना विचारे उपदेश करता है वह अंत में दुःखही पाता है जैसे बैल विषे उपदेश देकर गधा दुःखित हुआ ३७॥ दृष्टान्त॥ एक व्यापारी के गांव में अनेक घर और कारखाने थे जिनमें नानाप्रकार के पशु रहते थे। दैवयोग से वह एक दिन पशुशाला में गया और वहां जाकर देखा कि बैल और गधा आपस में दोनों वार्तालाप कर रहेहैं। वह व्यापारी हर एक पशु पक्षी की बोली को समझ लेता था इससे ध्यान दे उनकी वार्ता सुनने लगा। बैल ने गधे से कहा कि तू बड़ाही भाग्यवान् है जो सदा सुखसे रहताहै। मालिक तेरी सदा सम्हाल करता, मलमलके तुझे नहलाता और दोनों समय में दाना देता तथा शीतल जल पिलाता है परन्तु काम इतनाही लेताहै कि कभी तुझपर सवार होकर थोड़ी दूर चला जाता है। जितना तू भाग्यवान् है उतनाही मैं भाग्यहीन हूं क्योंकि भोर होतेही मेरी पीठपर हल धरकर हरवाहा चाबुक मार मार मुझे हांकता है और हलके भार तथा रगड़ से मेरा कंधा छिल रहाहै। प्रभातसे राततक ऐसा

ही घोड़ेपर सवार होकर चला। जहां उसे जाना था वहां किसी प्रकारकी भोजनकी वस्तु नहीं मिलती थी इसलिये उस ने अपनी खुरजी में मेवा और छुहारे भर लिये और वहां पहुँचा फिर काम कर चुकने पर लौटा और चौथे दिन वह मार्ग छोड़ किसी पेड़की छायामें गया और वहां एक सुन्दर निर्मल जलवाला कुण्ड देख विश्राम करने की इच्छा से घोड़े से उतरा और घोड़े को एक वृक्षमें बांध उसी कुण्ड के कूलपर जा बैठा और मेवा, छुहारे थैली से निकाल कर खाने लगा। जब पेट भरगया तो छुहारों की गुठलियां इकट्ठी कर एक ओर फेंकदीं और परमेश्वर की वन्दना करने लगा था कि इतने में उसने एक महाविकट पिशाच देखा। वह हाथ में खड्ग लिये उसकी ओर झपटकर आया और अत्यन्त क्रोध से ललकार कर बोला कि इधर आ मैं तुझे मारूंगा। व्यापारी उसका विकराल रूप और भयंकर बातें सुनकर भयभीत हुआ और कंपायमान हो कहनेलगा कि स्वामिन्! मुझसे ऐसा कौन अपराध हुआ है जो आप मुझे मारते हो। पिशाच ने कहा कि तैंने मेरे पुत्र को मारा है इससे मैं भी तुझे मारूंगा। व्यापारी बोला कि मैंने आपके पुत्र को कैसे मारा, मैंने तो उसे देखा भी नहीं है। पिशाच ने कहा कि क्या तैंने छुहारों की गुठलियां निकाल निकाल कर इस ओर नहीं फेंकी हैं? व्यापारी ने कहा छुहारों की गुठलियां तो मैंने अवश्य फेंकी हैं पर आपके पुत्र को मैंने नहीं मारा है। तब पिशाच ने कहा कि जब तू छुहारे की गुठलियां इस ओर फेंकता था तो एक गुठली उछलकर मेरे पुत्र के शिरमें

कठिन काम लेकर भी सांझ को सूखा, सड़ा भूसा मेरे आगे डालता है जिसे मैं नहीं खा सक्ता और रातभर भूखा, प्यासा अपने मूत्र और गोबर से सना पड़ा रहता हूं। इसीसे तेरे इस चैनपर सदा ईर्षा करताहूं। गधेने कहा कि भाई यह सत्य है और यथार्थही तुझपर ऐसा कष्ट है परन्तु तू तो इसीसे प्रसन्न है और आपेही नहीं चाहता है कि अपने को इस आपत्ति से बचाऊं। यदि तू ऐसा श्रम करता करता मरजाय तो भी तुझपर ये लोग दया न करेंगे। हां एक उपाय इससे छूटने की अवश्य है जो तू करा चाहे तो। बैल बोला वह कौनसा उपाय है। गधेने कहा कि कल तू अपने को रोगी बनाकर रातको दाना, भूसा न चरना और चुपचाप पड़ा रहना। बैल बोला अच्छा ऐसाही करूंगा। तैंने यह अच्छा उपाय बताया है। सवेरा होतेही हरवाहे ने चाहा कि बैल खोल हलमें लगावें पर क्या देखा कि रातकी सनीसनाई सानी नांदमें ज्योंकी त्यों भरी धरी है, और बैल पृथ्वी पर पड़ा हांफ रहाहै और नेत्र उसके बन्द हैं तथा पेट फूल रहा है। तब हरवाहे ने उसे रोगी जान हल में न लगाया और व्यापारी से जाय कहा कि आज बैल रोगी होगया है। व्यापारी सुनतेही समझ गया कि बैलने अपने को रोगी बनाया है इसलिये हरवाहे से कहा कि आज बैल का काम इस गधे से लेलिया जावे। निदान हरवाहे ने उस गधे को हलमें लगा दिनभर काम लिया जिससे वह थकगया और उसके पांव ठण्ढे होगये। सिवाय श्रम करने के उसने इतनी मारखाई कि संध्याको लौटती समय चल नहीं सक्ता था परन्तु बैल उस

लगी जिससे वह मरगया है इसलिये उसके बदले में मैं तुझे मारूंगा । फिर व्यापारी लाचार होकर बोला कि स्वामीजी ! प्रथम तो मैंने आपके पुत्र को जान बूझकर नहीं मारा है और जो मुझसे अज्ञानता में यह अपराध होगया तो मैं आपसे प्रार्थना करके उसकी क्षमा मांगताहूं । पिशाच ने कहा कि न तो मैं क्षमा करना और न तरसही करना चाहता हूं क्या तुम्हारे धर्मशास्त्र में वधके बदले वधकरना नहीं लिखा है ? मैं तुझे अवश्य मारूंगा । यह कह उस व्यापारी की बांह पकड़ उसको पृथ्वी पर गिरादिया और मारनेको उद्यतहुआ तो व्यापारी अपने स्त्री पुत्रों को याद कर कर रोनेलगा और परमेश्वर की सौगन्द दिलाने लगा कि मुझे छोड़ दे। उस पिशाच ने उसका रोना पीटना सुनकर उसको छोड़दिया और चाहा कि यह रोनेसे रहे तो इसे मारूं पर व्यापारी ने रोना पीटना न छोड़ा । पिशाचने कहा कि यदि तू आंसूके बदले रुधिर भी बहावे तो भी मैं तुझे नहीं छोडूंगा । व्यापारी ने बहुत प्रार्थना की पर उसने एकभी न मानी तब वह जब व्यापारी ने देखा कि यह पिशाच मुझे अवश्यही मारेगा तो दुःखित होकर बोला कि हे दयालु ! यदि मैं तुम्हारे हाथ से मारने के योग्य ही हूं तो मुझे इतना अवसर और दीजिये कि मैं अपने स्त्री पुत्रोसे मिल आऊं और अपना धन परिवारके नाम लिख आऊं जिससे मेरे मरनेपर परस्पर विरोध नहीं होसके । मैं सत्य प्रण करताहूं कि इन सबकामों के करचुकनेके पीछे इसी स्थान पर आ मिलूंगा। उस समय जो जीमें आवे वही आप कीजियेगा । पिशाच ने कहा कि जो मैं तुझको इतना अवकाश दे

दिन बहुतही आनन्द से रहा और जो कुछ उसकी नांद में था उसको आनन्द से खाया और गधेको आशीर्वाद दिया। जब गधा थका हुआ खेत से आया तो बैलने कहा कि भाई तेरे उपदेश से मैं आज बहुतही आनन्द में रहाहूं। गधा दुःख के कारण उसका कुछ उत्तर न देसका और आतेही अपने थान पर गिरपड़ा और अपने को बुरा भला कहनेलगा कि हे भाग्यहीन! तैंने इसको ऐसी शिक्षा देकर अपने को वृथा कष्ट में डाला। मन्त्रीने यह कह अपनी पुत्री को समझाया कि क्यों तू उस गधेके समान अपनी जानको फँसाती है और जो तू हठ करके इस बातका पीछा न छोड़गी तो तुझे वही दण्ड होगा जो उसी व्यापारी ने अपनी स्त्री को दिया था और उस गधे बैलकी भी जो अवस्था हुई वह भी सुन॥ इति पैंतीसवां प्रदीप॥

अथ षट्त्रिंशः प्रदीपः।

हठेऽतिक्रियमाणे हि दण्डयोगम्प्रसाधयेत्॥
दण्डे व्यापारिणा मुक्ते हठःशान्तःस्त्रियो यथा ३८

अर्थ। जब कोई बहुतही हठ करे तो वहांपर दण्डयोग का साधन करे जैसे व्यापारी के छोड़े हुये दंडे उसकी स्त्री का हठ शान्त हुआ ३८॥ दृष्टान्त॥ मन्त्री ने कहा कि दूसरे दिन वह व्यापारी रात्रिको भोजन से निश्चिन्त हो अपनी स्त्री समेत उन दोनों पशुओं के पास जा बैठा और सुना कि गधा उस बैलसे पूछताहै कि-कहो भाई कल भोरको जब हरवाहा तुम्हारे वास्ते दाना घास लावेगा तब तुम क्या

दूं और फिर तू न आवे तो क्या हो? व्यापारी बोला कि मेरी इस सत्य पर आपको विश्वास नहीं है। तो मैं उस परमेश्वर की कि जिसने अपनी इच्छा से इस आकाश और भूमिमण्डल को रचा है। उसकी शपथ करता हूं कि अपने सम्पूर्ण काम होनेपर मैं शीघ्रही तेरे पास आजाऊंगा। तब पिशाच ने कहा कि कहो तुझे कितना समय चाहिये। व्यापारी बोला कि केवल एक वर्षमात्र के लिये आपसे प्रार्थना है। एक वर्ष के उपरान्त इसी दिन मैं तुम्हारे पास आय अपने प्राण को तुम्हारी शरण में अर्पण करूंगा। पिशाच ने फिर उसको शपथ दिलाई और उसको उसी कुण्ड के तटपर छोड़कर आप वहीं अन्तर्धान होगया। व्यापारी उस अकस्मात् दुःख से छूट घोड़े पर सवार होकर अपने घर की ओर चला और कुछ दिन में अपने घर जापहुंचा। उसकी स्त्री और नातेदार उसे देख अति प्रसन्न हुये और उसकी भेंट को दौड़े पर व्यापारी किसीसे न मिला और रुदन करनेलगा। उसकी यह दशा देख वे समझे कि व्यापार में कुछ टोटा हुआ अथवा किसी और प्रकार की हानि हुई है कि जिसके कारण यह इतना रुदन करता है। जब उसका रोना बन्द हुआ तो उसकी स्त्रीने पूछा कि हम सब तो तुम्हारे आने से प्रसन्न हुये परन्तु तुम क्यों रोते हो। व्यापारी ने अपना और पिशाच का संपूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया। वे इसको सुनकर बहुत रोये विशेषकर उसकी स्त्री शिर पीटने और बाल खसोटने लगी। निदान वह दिन तो उसको रोने पीटने में कटा और दूसरे दिन अपने संसारी कार्य में लगा। उसने सब कामों से प्रथम अपना सब ऋण चुकाया फिर

कठिन काम लेकर भी सांझ को सूखा, सड़ा भूसा मेरे आगे डालता है जिसे मैं नहीं खा सक्ता और रातभर भूखा, प्यासा अपने मूत्र और गोबर से सना पड़ा रहता हूं। इसीसे तेरे इस चैनपर सदा ईर्षा करताहूं। गधेने कहा कि भाई यह सत्य है और यथार्थही तुझपर ऐसा कष्ट है परन्तु तू तो इसीसे प्रसन्न है और आपही नहीं चाहता है कि अपने को इस आपत्ति से बचाऊं। यदि तू ऐसा श्रम करता करता मरजाय तो भी तुझपर ये लोग दया न करेंगे। हां एक उपाय इससे छूटने की अवश्य है जो तू करा चाहे तो। बैल बोला वह कौनसा उपाय है। गधेने कहा कि कल तू अपने को रोगी बनाकर रातको दाना, भूसा न चरना और चुपचाप पड़ा रहना। बैल बोला अच्छा ऐसाही करूंगा। तेंने यह अच्छा उपाय बताया है। सवेरा होतेही हरवाहे ने चाहा कि बैल खोल हलमें लगावें पर क्या देखा कि रातकी सनीसनाई सानी नांदमें ज्योंकी त्यो भरी धरी है और बैल पृथ्वी पर पड़ा हांफ रहाहै और नेत्र उसके बन्द हैं तथा पेट फूल रहा है। तब हरवाहे ने उसे रोगी जान हल में न लगाया और व्यापारी से जाय कहा कि आज बैल रोगी होगया है। व्यापारी सुनतेही समझ गया कि बैलने अपने को रोगी बनाया है इसलिये हरवाहे से कहा कि आज बैल का काम इस गधे से लेलिया जावे। निदान हरवाहे ने उस गधे को हलमें लगा दिनभर काम लिया जिससे वह थकगया और उसके पांव ठण्ढे होगये। सिवाय श्रम करने के उसने इतनी मारखाई कि संध्याको लौटती समय चल नहीं सक्ता था परन्तु बैल उस

अपने मित्रों को अच्छी अच्छी वस्तुयें दीं, याचकों को बहुत सा धन दिया, दासी दासों को बन्धन से छुटाया और समस्त धन का विभागकर अपने पुत्रों को बांट दिया और असमर्थ सन्तानों के लिये रक्षक नियत किये तथा अपनी स्त्रीको भी बहुतसा धन दिया। इस समयान्तर में वह वर्ष भी पूरा होगया तो वह लाचार होकर चलने को उद्यत हुआ। बिदा होने के समय उसने अपने कफ़न के लिये भी कुछ द्रव्य खुरजी में रखलिया। उससमय सब परिवार में महाहाहाकार होरहा था और सबके सब उससे लपट लपट कर रोरहे थे और यह भी चाहते थे कि उसके साथ में अपने प्राणों को भी खोदेवें। परन्तु उसने अपने मनको स्थिर करके कहा कि तुम जाओ, मैं परमेश्वर की इच्छा पर जाता हूं। तुम सब धैर्य धरो। एक दिन मरना तो अवश्य ही है। इसप्रकार सबको समझाकर चला और उसी स्थानपर जा पहुँचा जहां पिशाच से भेंट हुई थी। वहां घोड़े से उतरा और उसी कुण्ड के निकट जाय अत्यन्त शोकयुत हो पिशाच की राह देखने लगा। इतने में एक हरिणी साथ में लिये कोई वृद्धपुरुष उसके पास आया और कहने लगा कि ऐसे निर्जन वनमें जहां कि विकट पिशाच रहते हैं तुम्हारा कैसे आना हुआ? बहुधा मनुष्य इस वृक्ष के नीचे आ विश्राम के लिये इस छाया में आ बैठते हैं और फिर पिशाचों के हाथ से दुःख पाते हैं। व्यापारी ने उस वृद्ध मनुष्य को उत्तर दिया कि तुम सत्यही कहते हो मैं इसी धोखे मे पड़कर पिशाच के हाथ से दुःखित हुआ हूं। फिर उसने उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया जिसको सुन वृद्धने

बड़ा आश्चर्य किया। वृद्ध ने कहा कि संसार में इससे विचित्र कोई वृत्तान्त न होगा कि तैंने जो परमेश्वर की शपथ खाई थी उसे पूरी की। तू बड़ा सत्यवान् है और तेरी इस सत्यता पर धन्यवाद है। अब मैं विना यह देखे कि वह पिशाच तेरे साथ क्या करता है यहां से नहीं जाऊंगा। यह कह वह वृद्ध उस व्यापारी के निकट बैठ गया। वे दोनों परस्पर वार्त्तालाप करते थे कि इतने में दूसरा वृद्ध भी दो काले कुत्ते लिये हुये वहां आया और उनसे समाचार पूछने लगा। पहिले वृद्ध ने उस व्यापारी का सब वृत्तान्त कहा और बोला कि यही आश्चर्य देखने को मैं यहां ठहर रहाहूं। वह दूसरा वृद्ध भी आश्चर्यित हो उन दोनों के पास यह अघटित घटना देखने को ठहरगया। उसे थोड़ीही देर हुई थी कि एक तीसरा वृद्ध भी खच्चर साथ में लिये आ पहुँचा और उन दोनों वृद्धों से पूछने लगा कि यह व्यापारी इतना शोक क्यों करता है? उन दोनों ने इस व्यापारी का सब वृत्तान्त कहा तब उस वृद्ध ने भी इच्छा की कि देखें उस पिशाच और व्यापारी मे क्या होता है। निदान वह भी वहां ठहर गया। अभी उसने दम भी नहीं लिया था कि उन सबों ने वन में अपने सम्मुख बड़ा धुवां उठता देखा जो उनके निकट पहुँचकर एकबारही दृष्टि से छिपगया। फिर उन्होंने देखा कि एक अति उग्र पिशाच हाथ में खड्ग लिये व्यापारी के निकट आया और उससे बोला उठ मैं तुझे मारूंगा तैंने मेरे पुत्र को मारा है। पिशाच की यह बात सुनकर व्यापारी और वे तीनों वृद्ध कम्पायमान हुये और रुदन करनेलगे। यहांतक कि उनके रोने से वह वन

थी इससे उसको किसी प्रकार का दुःख नहीं पहुँचा और उसने मुझे भी इस प्रकार डूबने से बचालिया कि गिरते ही वह मुझे एक द्वीप में उड़ा ले गई। जब सवेरा हुआ तो उसने मुझ से कहा कि मैंने तुम्हारे प्राण बचाये हैं। मैं अप्सरा हूं। उस दिन जब तुम जहाज़ में चढने लगे तो तुम्हारी तरुणाई और सुन्दरता देखकर मैं मोहित होगई और तुम्हारे साथ विवाह करने की इच्छा की पर मैंने विचारा कि पहले तुम्हारी परीक्षा लेऊं इसलिये मैले वस्त्र पहिन कर तुम्हारे सम्मुख आई और तुमने मेरी इच्छा पूर्ण की इससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं। अब मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हारे ऋणसे निवृत्त होजाऊं। परन्तु तुम्हारे भाइयों से अप्रसन्न हूं कहो तो उन्हें मारडालूं। मैं उसकी ये बातें सुनकर आश्चर्य में हुआ और उसका अतिउपकृत हो दीनता से बोला कि मेरे भाइयों को जान से न मारो यद्यपि उनके हाथों से मुझ को कष्ट पहुँचा है पर तो भी मैं उनको इतना दण्ड देना नहीं चाहता हूं। फिर उसने क्रोधित होकर कहा कि मैं यहां से उड़कर उन दोनो को अवश्य जहाज समेत डुबोऊंगी। तब मैंने उसे परमेश्वर की शपथ दी और कहा कि ऐसा न करना। बुराई के भी बदले भलाई ही करना अच्छा है, अपने क्रोध को ठंढा करो और कोई दूसरा दण्ड उन्हें दो। निदान मैंने इसप्रकार की बातें कहकर उसे शांत की पर मैं यह बातें कर ही रहाथा कि उसने मुझे वहां से लेजाकर मेरे घरकी छतपर बैठादिया और कहा कि यहां रहो और आप गुप्त होगई। मैं कोठे से उतरकर घर मे आया और कोठरी का दरवाज़ा

शब्दायमान होगया । फिर उस वृद्धने जिसके पास कि हरिणी थी क्या देखा कि वह पिशाच व्यापारी का हाथ पकड़ एक ओर को लेगया और उसको निर्दयता से मारे डालता है तब वह उठा और पिशाच के चरणों में गिरकर अति आधीनता से बोला कि हे पिशाचाधिपतिजी ! मैं तुमसे एक प्रार्थना करता हूं आप क्रोध को थांभकर उसे सुनिये । मैं चाहता हूं कि अपना और इस हरिणी का समाचार सुनाऊं और जो वह वृत्तान्त व्यापारी की इस दशा से अद्भुत हो तो आशा रखता हूं कि इसके तिहाई अपराध का क्षमालाभ हो । यह सुन उस पिशाच ने कहा कि कहो मैंने यह नियम से अंगीकार किया । तब वह वृद्ध अपनी कहानी कहनेलगा ॥ इति सैंतीसवां प्रदीप ॥

अथाष्टत्रिंशः प्रदीपः ।

वृद्ध मनुष्य और उसकी हरिणी की कथा ॥

वृद्ध ने कहा हे पिशाच ! तुम ध्यान देकर मेरा वृत्तान्त सुनो कि यह हरिणी मेरे चचाकी लड़की तथा मेरी स्त्री है । जब इसके साथ मेरा विवाह हुआ तब यह बारह वर्ष की थी । यह मेरी आज्ञापालनेवाली और पतिव्रताथी । जब विवाहहुये तीस वर्षव्यतीतहुये और इसके सन्तान न हुई तो मैंने सन्तान की कामनासे एक बांदी मोललली । बहुत दिनों के पश्चात् उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ । मेरी वह स्त्री उस लड़के और उसकी माता से गुप्त डाह रखनेलगी । परन्तु पश्चात्ताप है कि उस की डाह का वृत्तान्त मुझे बहुत दिनों बाद मालूम हुआ । संयोगवश मुझे किसी देशको जाना पड़ा तो मैंने उस दासी

सकती हूं। उस कसाई ने कहा कि परमेश्वर के लिये तू इसे शीघ्रही मनुष्य बना और कष्ट से इसे छुटा कि जिसमें इसके लोक और परलोकका धर्म रहे। यहसुनतेही उसने थोड़ासा जल मंत्रित करके मुझपर छिड़का और कहा कि यह चोला छोड़ और अपनी योनिको प्राप्त हो। यह कहतेही मैं मनुष्य बनगया और वह स्त्री फिर पड़दे में चलीगई मैंने उसकी कृतज्ञताकर यह आशीर्वाद दिया कि हे भाग्यवती ! तुझको दोनों लोकों की प्रसन्नता प्राप्त होवे। अब मैं इच्छा करताहूं कि मेरी स्त्री को कुछ दण्ड दिया जावे। यह सुन उसने थोड़ासा जल और मंत्रितकर अपने पिता के हाथ बाहर भिजवाया और कहाया कि इसको उस स्त्री पर छिड़ककर जिस रूपमें उसे रखना चाहे उसीका उच्चारण करदेना कि तू अपना स्वरूप छोड़ अमुक रूप में होजा। परमेश्वर चाहेगा तो उसका वैसाही स्वरूप होजावेगा। मैं उस जल को ले अपने घर आया और अपनी स्त्री को सोतीहुई पाकर उस जल के कई छींटे उसपर मारे और उसे खच्चर के रूप में लेआया। हे राजन् ! जब तीसरा वृद्ध भी अपना वृत्तान्त कहचुका तो उस पिशाच ने आश्चर्यित हो उस खच्चरसे पूछा कि क्या यह यथार्थ है ? उसने शिर हिलाकर कहा कि हां यथार्थही है। तब पिशाच ने उस व्यापारीका और भी तृतीयांश अपराध क्षमा किया और छोड़ने के पीछे व्यापारी से कहा कि तुझे उचित है कि इन तीनों वृद्धोंका कि जिनके कारण तेरे प्राण बचे हैं कृतज्ञ हो। जो ये तेरी सहायता न करते तो तेरे प्राण कदाचित् भी नहीं बचते। यह कह वह पिशाच तो गुप्त होगया और वह व्यापारी उन

और पुत्र के लिये अपनी स्त्री से कहा कि जबतक मैं लौट न आऊं तब तक तू इनकी रक्षा करना, परमेश्वर चाहा तो मैं एक वर्ष में लौट आऊंगा। निदान उसने फिर उससे भी अधिक वैर करना आरम्भ किया। वह जादू भी जानती इससे मेरे प्रियपुत्र को जादू का बछड़ा और बांदी को जादू की गौ बनालिया और अहीर को बुलाकर कहा कि इस गौ और बछड़े को मैंने मोल लिया है अपने घर लेजाकर पाल ले और इनको खिला पिलाकर पुष्ट बनाले। जब मैंने आकर अपनी स्त्री से बांदी और पुत्र का समाचार पूछा कि दोनों कहां हैं तो उसने कहा कि बांदी तो तुम्हारी मरगई और तुम्हारे पुत्रको मैं दो मास से नहीं देखती हूं कि न मालूम कहां चलागया है। मैं यह सुनकर बांदी से तो निराश हुआ और पुत्र के खोजानेपर आशाकी कि कभी न कभी वह मेरे हाथ लगेगा। फिर आठमहीने बीत गये पर मैंने पुत्रको न पाया। यहां तक कि ईदका दिन आगया। मैंने इच्छाकी कि किसी पशु का बलिदान करूं फिर उस अहीर को बुलाकर कहा कि एक गौ मुझे लादे। संयोगवश वह मेरीही बांदी को लेआया। मैंने जब बलिदान देने के लिये उसके पांव बांधे तो वह अत्यन्त दीनता से रोरोकर पुकारती और अश्रुधारा नेत्रों से बहाती थी। उसका यह हाल देखकर मुझे दया आगई और उसके गले में छुरी न चलसकी। तब मैंने उसे छोड़ दूसरी गौ लानेके लिये कहा तो मेरी स्त्री अत्यन्त क्रुद्ध हुई और बोली कि तू इसीका बलिदान दे। उसके कहने से मैं फिर छुरी लेकर मारने को तैयार हुआ तब वह गाय और भी

तीनों का अत्यन्तही कृतज्ञ हुआ। वे तीनों वृद्ध उस व्यापारी के प्राण बचने से प्रसन्न होकर अपने अपने स्थान को सिधारे और वह व्यापारी भी वहांसे अपने घर में आया और अपनी शेष अवस्था को स्त्री पुत्रों के साथ प्रसन्नता से व्यतीत की॥ इति चालीसवां प्रदीप ॥

अथैकचत्वारिंशः प्रदीपः।

धीवर का इतिहास ॥

कृतेपि कार्ये व्यसने प्राप्ते यत्नं विना मृतिः ॥
निष्कासितः पिशाचोपि धीवरं हन्तुमुद्यतः ४० ॥

अर्थ। कार्य्य करनेपर भी किसी प्रकार का दुःख या विघ्न आपड़े और यत्न न कियाजावे तो मृत्यु का भय होता है। जैसे निकाला हुआ भी पिशाच धीवरको मारने के लियेही तैयार हुआ ४०॥ दृष्टान्त॥ एक अति धर्मनिष्ठ धीवर बड़े श्रम से अपने स्त्री पुत्रों का पालन करता था। वह प्रतिदिन नियम से सवेरे नदीपर जाता और चार बेर नदी में जाल डालकर फिर घरको लौट आताथा। एकदिन उसने सवेरे ही नदी के तटपर जाय जाल डाला तो उसमें एक मृतक गधा फँसा देखा फिर जाल को निकाल कर दूसरी बार फेंका तो भी उसमें कीचड़ और मिट्टीही फँसी आई। उसे देख वह बहुत दुःखित हुआ और तीसरी बार फिर नदी में अपना जाल सँभाल के डाला तो भी उसमें कंकर और कीचड़ही निकला। इतने में सवेरा होगया तब धीवर ने परमेश्वर की आराधन कर इस प्रकार प्रार्थना की कि हे सर्वज्ञ, दीनदयालु! तुम्हें विदित है

चिल्लाने लगी । उस समय मैंने निरुपाय हो अहीर के हाथ में छुरी देकर कहा कि तू इसे मारदे । वह अहीर निर्दयी था। उसने उसको मारही डाला । जब उसकी खाल उधेड़ी गई तो उसके शरीर से सिवाय हड्डी और चर्म के कुछ और न निकला । क्योंकि वह माया के कारण देखने में तो अत्यन्त ही रुष्ट पुष्ट मालूम होती थी । तब मैं उस सेवक पर क्रुद्ध हुआ और मरी हुई गो उसे देकर कहा कि इसको तूही लेजा और मेरे लिये और ला । तब तो वह शीघ्रही एक बहुत मोटा बछड़ा जो देखने में अत्यन्तही सुन्दर था लेआया । मुझको उसका कुछ वृत्तान्त मालूम न था कि वास्तव में यह मेरा पुत्र ही है तो भी मेरे मन में उसके देखने से प्रीति उत्पन्न हुई और वहभी मुझे देखतेही रस्सी तोड़ मेरे पैरोंपर आकर गिरपड़ा। इस दुर्घट घटना से मेरे हृदय में और भी अधिक प्रीति हुई और प्रेम के कारण मैंने विचारा कि क्या इसे मारूं ? मैं इस प्रीति से अत्यन्त शोकवान् हुआ और उस बछड़े के नेत्रोंसे आंसू बहनेलगे इससे और भी अधिक प्रीति उमँगी । फिर मैंने उस अहीर से कहा कि इस बछड़े को लेजाकर रक्षा से रख और इसके बदले कोई दूसरा पशु ले आ । इस बातको सुनकर फिर भी मेरी स्त्री ने कहा कि अय अभागे ! तू इस ऐसे मोटे बछड़े को भी भेंट क्यों नहीं देता है ? मैंने कहा कि यह बछड़ा मुझे अच्छा मालूम होता है और मेरा मन नहीं चाहता है कि मैं इसे मारूं तू इस बातमें कुछ न कह । उस कर्कशा स्त्री ने इस विषय में बहुतही तकरार की और डाह से वारवार उसके मारने कोही कहती रही । फिर मैं निरुपाय हो पैनी

कि मैं चारही बेर नदी में जाल डालता हूं और आज तीन वार फेंक चुकाहूं पर अबतक उसमें कुछ नहीं आया है मेरा सब श्रम वृथा हुआ है। अब एकही बार फेंकना शेष रहगया है इसलिये मुझपर ऐसी कृपा करो जैसे पहिले समय में मूसा पर की थी। यह कह उसने फिर चौथीबार जाल पसारा तो उसे बहुत भारी समझ जाना कि अबकी वार तो इसमें अवश्यही मछलियां हैं निदान अतिकष्ट से उसे खैंचा तो पीतल के लोटे के सिवाय और कुछ न देखपड़ा। उसे वह भारी देख समझा कि इसमें कोई वस्तु भरी हुई है। उसका मुख शीशे से बहुत दृढ़ बंद था और उसपर मोहर थी। फिर धीवर ने विचारा कि यदि इसमें से कुछ भी न निकला तो इस लोटे को बेचकर कुछ अन्न ले आजका काम चलाऊंगा। तदनन्तर उसने लोटे को चारों ओर से उलट पुलटकर अच्छे प्रकार से देखा कि इसमें कौनसी वस्तु है परन्तु उसमें तनक भी शब्द न हुआ। धीवर ने छुरीसे उसका मुख खोलकर देखा तो उसमें कुछ भी न दिखाई दिया तब आश्चर्य कर लोटे को हाथ मेंसे फेंकदिया। फेंकतेही उसमें से धुआं निकलने लगा। वह यह देख भयभीत हो कुछ पीछे हटकर खड़ा होगया और वह धुआं नदीपर पहुँचकर आकाशतक फैलगया। फिर थोड़ीदेर बाद एक जगह सिमट गया और अतिविकट पिशाच बन गया। धीवर ने उसे देख भागने की इच्छा की परन्तु वह भय से भाग भी न सका। इतने में उसने सुना कि वह पिशाच कहताहै कि हे सुलेमान! मेरा अपराध क्षमाकर फिर मैं कभी तेरी आज्ञा भंग न करूंगा और तुम्हारा सदैवही आज्ञा

छुरी ले अपने पुत्रका गला काटने चला तो फिर उसने मेरी ओर देखा और मैं भी उसके नेत्रों से आंसू बहते देखकर व्याकुल होगया और छुरी मेरे हाथ से गिर पड़ी तब मैंने अपनी स्त्री से कहा कि दूसरा बछड़ा मेरे पास है मैं उसे भेंट कर देताहूं। फिर वह अभागिनी डाह से उसी के मारने के लिये हठ किये गई पर मैंने उसके बकने पर विचार न किया और उसके धैर्य के लिये कह दिया कि मैं इसे ईदुज्जुहा के रोज़ अवश्य भेंट करूंगा। अहीर फिर उसे अपने घर लेगया। दूसरे दिन वह अहीर एकान्त में आय मुझसे कहने लगा कि मैं कुछ कहूंगा जिससे तुम मुझपर प्रसन्न होगे। मेरी पुत्री जादूविद्या बहुत अच्छी जानती है। कल जब मैं उस बछड़े को लौटाकर लेगया तो वह उसे देखकर हँसी और रोई। मैंने उससे उन दोनों विपरीत बातों का कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि हे पिता! यह बछड़ा हमारे स्वामी का प्रिय पुत्र है इसलिये इसे जीता देखकर तो मैं हँसी और इसकी माता के मारेजाने से मैं रोईहूं। इन दोनों मा बेटों को हमारे स्वामी की स्त्री ने सवतियाडाह के कारण जादू से गौ और बच्छा बनालिया है। मैंने अपनी पुत्री से यह बात सुनी थी सो तुम से यथार्थ कहदी। हे पिशाचपति! तुम मेरी उस समय की दशाको समझो कि मुझे कितना शोक इन बातों को सुनकरके हुआ होगा। इतनी कहानी कह वृद्धने पिशाच से कहा कि फिर मैं उसी अहीर के साथ हुआ और उसकी लड़की के निकट गया कि इस बातको मैं भी उसके मुख से सुनूं। पहिले मैं उसके घरमें पहुँचकर पशुशाला में जहां मेरा

मालिक और भक्त रहूंगा। धीवरने उस पिशाच से यह बात मन मन को दृढ़कर उससे कहा कि हे पिशाच! तू यह क्या बक रहाहै? सुलेमान को तो मरे १८०० वर्षसे भी अधिक समय होगया। तू अपना वृत्तान्त कह कि कौन है और किसकारण इस पीतल के लोटे मे वंद है। उस पिशाच ने धीवरकी ओर घृणाकी दृष्टि से देखकर, कहा कि तू ढिठाई से बात करता और मुझे भूत पिशाच कह पुकारताहै। धीवर ने कहा तो क्या मैं तुझे गधा कहके पुकारता तो ठीक था। तब उस पिशाच ने कहा कि जब तक मैं तुझे मार न लेऊं तबतक मुँह सँभाल बातचीत कर। धीवर ने कहा कि मुझे तू क्यों मारेगा? क्या तू इस बातको भूलगया कि अभी मैंने इस वन्धन से तुझे छुटायाहै? पिशाच ने कहा कि मुझे अच्छेप्रकारसे स्मरण है परन्तु तू वच नहीं सक्ता है। हां एक उपकार तेरे साथ करताहूं कि जिस प्रकार तू मरना चाहे उसीप्रकार तुझे मारू। धीवर बोला कि हे अन्यायी! मैंने ऐसा कौन अपराध किया है कि जिससे तू मुझे मारना चाहताहै। क्या वंधन छुटानेका यही बदला है? पिशाच ने कहा कि तेरे मारनेका कारण दूसरा औरभी है उसे सुन। मैं उन पिशाचों में सेहूं जोकि नास्तिक थे। पहले पिशाच समझते थे कि सुलेमान परमेश्वर का पैग़म्बर है इससे सव उसीकी आज्ञा में रहते थे परन्तु मैंने और शाक़र नामक पिशाच ने उसकी आज्ञा न मानी तो उस वादशाहने क्रुद्ध होकर अपने वड़े मंत्री आसफवनवरहया को यह आज्ञादी कि इसे पकड़कर मेरे पास लाओ। मंत्री यह आज्ञापाय मुझे उसके सम्मुख पकड़ लेगया तब सुलेमान ने चाहा

पुत्र था गया। अभी मैंने उसके पास जाकर प्यार नहीं किया कि उसने मुझे देखतेही इतनी प्रीति जनाई कि मैंने जान लिया यह यथार्थही मेरा पुत्र है। फिर मैंने उससे प्यारकर वह समाचार उस लड़कीसे पूछा और कहा कि किसी प्रकार तू इस बछड़े को मनुष्य के शरीर में भी लासक्ती है? उसने कहा कि निःसंदेह लासक्तीहूं। मैंने कहा कि यदि तुम यह उपकार करोगी तो इसके लिये मैं अपना सर्वस्व भी देने को तत्पर हूं। उस लड़की ने कहा कि तुम हमारे स्वामी हो और हम तुम्हारे सेवक हैं इसलिये दो शर्तों पर मैं तुम्हारे पुत्र को फिर इस शरीर में ला सक्ती हूं। एक तो यह कि तुम उसका विवाह मेरे साथ करो, दूसरे जिसने इसका ऐसा स्वरूप बनाया है उसको कुछ दण्ड दो। मैंने अंगीकार किया कि तेरा विवाह उसके साथही करूंगा और तुम दोनों को इतना द्रव्य दूंगा कि फिर कभी तुमको कुछ इच्छा नहीं होगी। तथा दूसरी शर्तमें उसे तूही इच्छाके अनुसार दण्ड देना परन्तु उसे मार न डालना। उस लड़कीने उत्तर दिया कि जैसा उसने तुम्हारे पुत्र के साथ किया है वैसाही मैं भी उसके साथ करूंगी। यह प्रतिज्ञा कर उसने एक प्याला जल से भरा और कुछ पढ़कर उस बछड़े के सम्मुख हो कहा कि हे परमेश्वर! यह जीव वास्तवमें मनुष्य है पर जादू के कारण से बछड़ा बना है तो आप के अनुग्रह से फिर भी यह मनुष्य ही होजावे। यह कहकर जैसे जल मंत्रित करके उसपर छिड़का वैसेही वह मनुष्य बनगया। मैंने उसको प्रीतिपूर्वक हृदय से लगाया और अत्यन्त प्रसन्न हो उससे यह कहा कि परमेश्वर ने इस

कि यह मुसल्मान होकर मुझे पैगम्बर कहे और मेरी पर चले परन्तु मैंने अहंकार से उस बातको अंगीकार न की तब उसने मुझे दण्ड देने के लिये इस पीतलके लोटे में बन्द करके उसके मुख को शीशेसे वन्द करदिया और मोहर लगा दी और एक पिशाचको आज्ञा की कि इसे नदी में डाल दो। जब वह मुझे नदी में डालगया तब मैंने नियम किया कि कोई मुझे पहिली सौ वर्षकी अवधि में इस नदी से निकालेगा तो उसे मैं इतना धन देऊंगा कि वह जन्मभर आनन्द में रहेगा। परन्तु हे मनुष्य ! किसीने मुझे इस अवधि मे नदी से न निकाला तब मैंने यह प्रतिज्ञा की कि जो दूसरे सौ वर्षकी अवधि में मुझे नदी से निकालेगा उसे मैं सम्पूर्ण पृथ्वी के कोश दिखादूंगा परन्तु फिर भी मुझको किसीने न निकाला। फिर मैंने नियम किया कि जो मुझे तीसरे सौ वर्ष में निकालेगा तो उसे मैं बहुत बड़ा बादशाह बनाऊंगा और प्रतिदिन उस के पास जाकर उसकी तीन इच्छाएं पूर्ण किया करूंगा। इस अवधि में भी जब मुझे किसीने न निकाला तो मैंने झुंझला कर यह प्रण किया कि जो मुझे इस चौथी सौ वर्षकी अवधि में निकालेगा तो उसे मैं बड़ी निर्दयता से मारूंगा परन्तु उस से सलूक इतना करूंगा कि जिस प्रकार वह अपनी इच्छा से मरना चाहेगा वैसेही मारूंगा। निदान इतनी अवधि के पीछे आज तैंने मुझे निकाला है अब तू बता कि किस प्रकार से तुझे मारूं ? तब धीवर यह बात सुन और भी भयभीत हो सोचने लगा कि मै कैसा अभागाहूं कि ऐसे उपकारके बदले में भी मरण योग्य दण्डनीय हुआ फिर पिशाच से विनयपूर्वक

लड़कीके द्वारा तुझे मनुष्य बनायाहै इसलिये तू इसका कृतज्ञहो और इसके साथ अपना विवाहकर। क्योंकि मैंने यह प्रण किया है। मेरे प्रिय पुत्रने यह बात हर्षसे स्वीकारकी। फिर उस लड़की ने मेरी स्त्रीको जादू से हरिणी बनादी। निदान मेरे पुत्र ने उस लड़की के साथ विवाह तो किया परन्तु थोड़ेही दिन पीछे वह कालवश होगई इसलिये मेरा पुत्र किसी देशान्तर को चला गया और बहुत दिन हुये मुझे उसका समाचार नहीं मिला है इसलिये मैं उसे ढूंढ़ता फिरता हूं। मुझे किसीपर भी भरोसा न था कि हरिणीरूपी अपनी स्त्री को उसके पास छोड़ अपने पुत्रको ढूंढ़ने जाता इसलिये मैं इसको साथलिये फिरता हूं। यही मेरी और इस हरिणी की कहानी है। इसका विचार कीजिये कि यह अद्भुत है या नहीं। पिशाच ने कहा कि यह कहानी निस्सन्देह ही अतिअद्भुत है इससे मैंने इस व्यापारी का तिहाई अपराध क्षमा किया॥ इति अड़तीसवां प्रदीप॥

अथैकोनचत्वारिंशः प्रदीपः।

दूसरे काले कुत्तोंवाले वृद्ध की कथा॥

जब वृद्ध ने अपनी कहानी को समाप्त की तो दूसरा वृद्ध जिसके साथ में दो काले कुत्ते थे वह उस पिशाच से कहने लगा कि मैं भी अपना और इन दोनों श्वानों का वृत्तान्त आप से कहता हूं। यदि वह पहले से उत्तम हो तो आशा करताहूं कि उसे श्रवणकर व्यापारी के अपराध का तृतीयभाग और भी क्षमा कीजियेगा। पिशाच ने कहा ठीक है जो हरिणी की कहानी से तेरी कहानी उत्तम होगी तो तीसरा भाग अवश्यही क्षमा करूंगा। वृद्ध ने कहा कि हे पिशाचा-

ार्थना करके कहा कि हे पिशाचोंके बादशाह ! तू अपनी इस तिज्ञा को छोड़ और मेरे प्रिय परिवार पर दया करके मेरे अपराध को क्षमाकर । परमेश्वर तेरा भी अपराध क्षमा करेगा । तब उस पिशाच ने कहा कि मैं तुझे किसी प्रकार भी जीता नहीं छोडूंगा अब तू यह बता कि किस प्रकार से मारूं ? तब वह धीवर पिशाच को अपने मारने में उद्यत हुआ देखकर बहुत ही डरा और स्त्री पुत्रों की दुर्गति का स्मरण कर बहुतही घबराया। फिर उसने कहा कि हे पिशाचराज ! क्या संसार में उपकार का यही बदला है ? मैं ने तो तुझे जीवनदान दिया है और तू मुझे मारने पर उद्यत होगया ? ईश्वर के सामने क्या उत्तर देगा । पिशाच ने कहा कि तू चाहे जितनी बकवाद कर पर मैं तुझे नहीं छोडूंगा । तब धीवर ने कहा कि यदि परमेश्वर की यही इच्छा है तो मैं प्रसन्न हूं परन्तु मैं मरने का विचार जबतक न सोच लेऊं तबतक तुझे उस पवित्र नामकी शपथ है कि जिसको सुलेमान ने मोहर में खोदाथा तू मेरे इस प्रश्नका उत्तर दे। वह पिशाच ऐसी शपथ से कंपायमान होकर कहने लगा कि तू प्रश्न कर मैं उत्तर देऊंगा। धीवर ने कहा कि तू ऐसा लंबा चौड़ा होकर इस लोटे में कैसे समागया ? पिशाचने उत्तर दिया कि मैं सत्य कहता हूं कि मैं इसी लोटे में था। धीवर ने कहा मुझे तेरी बातका विश्वास नहीं होता है जबतक कि मैं तुझको उसी लोटे में समाया न देख लेऊं । इतना सुन वह पिशाच धुआं होगया और सम्पूर्ण नदीपर फैलगया। फिर एक स्थानपर इकट्ठा हो उसी लोटे में धीरे धीरे भरगया। जब

धीश ! ये दोनों काले कुत्ते मेरे सहोदर भाई हैं। हमारे पिताने मरने के समय में तीन हज़ार रुपये छोड़े थे। हम तीनों उन्हीं से अपना निर्वाह करते थे। फिर हम तीनों उन रुपयों से व्यापार करने लगे। मेरे बड़े भाई को देशान्तरों से व्यापार करने की इच्छा हुई। इस हेतु उसने अपनी सब वस्तुएं बेचडालीं और जो वस्तुएं अन्य देश में महँगी विकती थीं उन्हें मोल ले चला। उसको गये जब अनुमान एक वर्ष के बीता तो एक भिक्षुक मेरी दूकान पर आकर बोला, परमेश्वर तेरा भला करे। मैं बोला तेरा भी भला करे। वह बोला कि क्या तुम मुझे नहीं जानते ? तब मैंने उस ओर ध्यान कर उस को पहिचाना और गले लगाकर अपने पास बैठा लिया और अत्यन्त पश्चात्ताप करके कहा कि भाई ! मैं तुम्हें इस हाल में भला कैसे पहिचानता ? फिर मैंने परदेश का हाल पूछा तो उसने उत्तर दिया कि तुम मुझे ऐसे हाल में देखकर भी क्या पूछते हो। निदान मेरे बार बार विनय करने पर उस ने अपने सम्पूर्ण दुःख वर्णन किये और बोला कि इससे अधिक कहना दोनो के दुःख का कारण है। उसके समाचार सुनकर मुझे सब कामों का विस्मरण होगया और उसे शीघ्र ही स्नान कराय उत्तम उत्तम वस्त्र मँगाकर दिये। फिर मैंने अपना हिसाब देखकर मालूम किया कि मेरे पास इस समय छह हज़ार रुपये हैं इसलिये उनमें से तीन हजार रुपये भाई को दे दिये और कहा कि हे भाई ! अपनी पहिले की हानि को भुला दो और अब इन तीन हजार रुपयों से अपना व्यापार आदि करो। उसने अत्यन्त प्रसन्न हो वे रुपये

कुछ भी उसमें से शेष नहीं रहा तो उससे शब्द हुआ कि हे धीवर! अब तो तुझको विदित हुआ कि मैं सम्पूर्ण इस लोटे के भीतर हूं। धीवर ने उसके उत्तर देने के बदले उसका ढकना उठाकर मुंह बन्द करदिया और कहा कि हे पिशाच! अब तेरी पारी है कि तूही अपना अपराध क्षमा करा और अपनी मृत्यु का उपाय विचार कि मैं तुझे किस प्रकार से मारूं? अब मैं भी यही उचित समझताहूं कि तुझको इसी नदी में डालदेऊं और सब धीवरोंसे तुम्हारी प्रतिज्ञा और वृत्तान्त सब कहदेऊं जिससे तुमको कोईभी न निकाल सके। पिशाच इस बातको सुन अतिव्याकुल हुआ और उस लोटे में से निकलना चाहा परन्तु सुलेमान की मोहर के कारण निकलने नहीं पाया। फिर वह अपने क्रोध को त्यागकर बहुत नम्र हो धीवर से कहने लगा कि हे धीवर! चैतन्य रह, कहीं ऐसा काम नहीं करना कि मुझे फिर नदीही में डालदे। मैं तो तुझसे हँसी करताथा और ये बातें केवल तुझसे छेड़ने और हास्यके लिये करताथा पर पश्चात्तापहै कि तूने ये बातें सब सत्यही समझ लीं। धीवरने कहा कि हे पिशाच! तू इस लोटेके बाहर तो पिशाचों का सरदार मालूम होताथा और अब अपनेको अत्यन्त तुच्छ बनाताहै? अब तू इस नदी में अवश्यही फेंका जावेगा और प्रलयपर्यन्त तेरा इस बन्धनसे छुटकारा नहीं होवेगा। पिशाच ने कहा कि परमेश्वर के लिये तू मुझपर दयाकर और इस नदी में फेंकने का विचार न कर इसी प्रकार उस पिशाचने अत्यन्त दीन हो बहुत विनय करके चाहा कि उस धीवर को प्रसन्न करे परन्तु धीवर प्रसन्न नहीं हुआ। फिर उस पिशाचने

लेलिये और फिर नये सिरे से व्यापार करनेलगा। निदान हम दोनों आगेकी तरह रहने लगे। इसके बाद मेरे छोटे भाई की भी इच्छा हुई कि अपने बड़े भाई के समान अन्य देशों में जा जाकर व्यापार करें। मैंने उसको बहुतही समझाया पर उसने न माना और सब वस्तुएं बेचकर जो जो वस्तुएं वहां के लेने योग्य थीं लेलीं। फिर मुझसे विदा होकर विदेश को चलागया और एक वर्ष के उपरान्त वह भी बड़े भाई के समान अपना सर्वस्व खोकर योगीरूप से मेरे पास आया। मैंने उसी प्रकार से उसका भी हाथ पकड़ा और फिर तीन हज़ार रुपये जो मुझे किसी व्यापार के माल से मिले थे दिये। वह उनसे एक दूकान मोल ले उसी नगर में व्यापार करनेलगा। थोड़े दिनो के पीछे मेरे उन दोनों भाइयों ने अपने अपने जी में विचारकर यह सम्मत किया कि बड़े भाई को साथ ले किसी अन्य देशको जावें। पहिले मैंने न माना और कहा कि तुम्हें विदेश जाने से क्या प्राप्त हुआ जो अब मुझे भी चलने को कहते हो? तब तो उन दोनों ने मुझको ऐसे उपदेश देना आरंभ किया कि क्या जाने तुम्हारे ही प्रताप से हमारा वाञ्छित कार्य सिद्ध होवे। निदान उन को कहते कहते इसी अभिलाषा में पांच वर्ष व्यतीत होगये। उन्होंने इस समयान्तर में बहुत बार कहा तब लाचार होकर मैं भी गमन करने को उद्यत हुआ और व्यापारकी सब वस्तुएं मोल लेलीं। उस समय मुझको विदित हुआ कि वह सम्पूर्ण धन जो मैंने उनको दिया था उन्होंने खर्च करडाला। किन्तु तो भी मैंने उस विषय में उनसे कुछ भी नहीं कहा। उस

कहा कि यदि तू मुझे इस वन्धनसे छुटावेगा तो उसके वदले में मैं तुझसे वड़ाही सलूक करूंगा। धीवर ने उत्तर दिया कि तू महाधूर्त है क्योंकर तेरी वातपर कैसे विश्वास हो। यदि मैं तुझे अवभी छोड़दूं तो तू मेरे साथ वही अपकार करेगा जैसा कि ग्रीक वादशाहने दुवां वैद्यके साथमें किया था॥ इति इकतालीसवां प्रदीप॥

अथ द्विचत्वारिंशः प्रदीपः।

ग्रीकवादशाह और दुवां वैद्यका दृष्टान्त॥

कृतोपकारो ह्युपकारिणन्तु यो हन्ति स्वयं चापि तथा स हन्यते॥ ग्रीको यथा वैद्यवरं विघातयन् स्वयं तु तत्पत्रनिदेशतो मृतः ४१॥

अर्थ। जिस जनने जिसके साथ में उपकार कियाहो और वह कदाचित् उलटा उस उपकार करनेवालेही को मारे तो वह आप भी माराजाता है जैसे ग्रीक वादशाह ने दुवां वैद्यको मारा तो आप भी उसके वताये पत्रों को उलटते उलटते जहर चढ़कर मरगया ४१॥ दृष्टान्त॥ पारसदेश में एक रूमा नगर था। वहां का वादशाह शरीर में कुष्ठ होजाने के कारण रात्रि दिन व्याकुल रहाकरता था। यद्यपि वहां के वैद्योंने सवप्रकारकी औषधें और वहुतसे उपाय किये तथापि वह अच्छा न हुआ। संयोगवश एक दिन वैद्यविद्या मे अद्वितीय और ग्रीक, फारसी, अरवी आदि भाषाओं में निपुण एक दुवां नामी वैद्य उस नगर में आकर उतरा। वहां उसे यह विदित हुआ कि वहां के वादशाहके कुष्ठका रोग है जिसकी

समय मेरे पास जो १२००० रुपये थे उनमें से आधे उनको देकर कहा कि भाइयो ! अग्रशोची और बुद्धिमानी यही है कि हम अपने आधे धनको व्यापार में लगावें और आधा घरमें रक्खें । क्योंकि परमेश्वर न करे कि जो तुम्हारे समान मुझे भी किसी प्रकारकी हानि हो तो वह आधा उस समय में काम आवे और उसीसे हम फिर व्यापार करके अपना काम चलावें । निदान मैंने उनको तीन तीन हज़ार रुपये देकर उतनेही आप भी लिये और तीन हज़ार अपने कुएं में डाल दिये । तदनन्तर हमने व्यापारकी सब वस्तुएं ले और जहाज़ पर सवार हो किसी देशको सिधारे । एक महीने में हम कुशल क्षेम से एक नगर में पहुँचे कि जहां हमारे व्यापार में अत्यन्त लाभ हुआ । हमने भी उस देशकी बहुतसी वस्तुएं अपने शहर के लिये मोल लीं । जब हम उस स्थान पर लेन देन करचुके और जहाज़पर सवार होने की तैयारी की तो एक अतिरूपवती स्त्री मैले वस्त्र पहिने मेरे पास आई और दंडवत कर मेरे हाथ को चूम करके मुझसे विवाह करने की इच्छा प्रकट करने लगी । इस बातको मैं अनुचित समझ उसके सम्मुख नहीं हुआ पर जब उसने बहुत दीनता से मेरी बिनती की तो मुझको भी दया उत्पन्नहोआई और उसकी अभिलाषा को स्वीकार कर मैंने उसके साथ विवाहकिया और उसे जहाज़ पर चढ़ाली । वह स्त्री बुद्धिमती थी इसलिये मैंने उससे अधिक प्रीति की पर मेरे दोनों भाई मुझ से गुप्त वैर करने लग गये यहां तक कि उन दोनों ने [illegible] दोनोंको निद्रा-वश देख समुद्र में ढकेल [illegible] में अप्सरा

औषध यहांके सब वैद्य करचुके परन्तु वह किसीसे भी अच्छा नहीं होताहै । तब तो उसने अपने आगमनकी सूचना बादशाहको दी और आज्ञा होनेपर उसके पास जाय, शिर नवाय, विनय की कि हे बादशाह ! मैंने सुना है कि सब नगर के वैद्य लोग आपका इलाज करचुके पर आपअच्छे न हुये । मैं चाहता हूं कि यदि आपकी इच्छा हो तो खाने, पीने और मर्दनकरने की औषध के विना ही परमेश्वरकी कृपासे मैं आपको अच्छा करदूं । बादशाहने वैद्यसे कहा कि यदि आप मुझे इसी तरह से अच्छा करदोगे तो मैं भी तुम्हारा उपकार करूंगा । दुबां वैद्य ने विनयकी कि ईश्वर की कृपा से मैं आपको इसीप्रकार से नीरोग करूंगा । कल से अवश्य आप मेरी औषध कीजियेगा । यह कह वह वैद्य बादशाह से विदा होकर अपने स्थान पर आया और उसी समय कुष्ठनाशक ओषधियों का एक गेंद और लकड़ी की एक थपकी बनवाई और दूसरे दिन उन्हें लेकर बादशाह के पास गया और रीति के अनुसार दण्डवत् कर विनय की कि आप अपने घोड़ेपर सवार होइये और गेंद खेलने के लिये गेंदघर चलिये । बादशाह उस वैद्यके कथनानुसार सवार हो गेंदघर गया तो वैद्यने वही गेंद और थपकी हाथ में दी और कहा कि आप इस गेंद और थपकी से खेलिये । जब खेलते खेलते आपका शरीर गरम होजावेगा तो सब औषधें जो इन दोनों में भरी हैं वे आपके सब शरीर में भरजावेंगी । जब सब शरीर में अच्छेप्रकार से पसीना आजावे तब आप गरम जल से स्नान करना पश्चात् आपके शरीर में अच्छे प्रकार से नाना भांति के औषधमयी तेल मर्दन किये

जावेंगे। फिर उसके पीछे आप सोरहें तो आशा है कि दूसरे दिन अवश्यही आप नीरोग होंगे। यह बात सुन बादशाह उस गेंद को हाथ में ले घोड़ेपर चढ़ा और हृदय मे उत्साह बढ़ाकर सेवकों के साथ गेंद खेलने लगा इस ओर से बादशाह गेंद को थपकी से मारताथा और उस ओर से वे सेव गेंद को बादशाह की ओर फेंकते थे इसीप्रकार बड़ी देरतक गेंद का खेल होतारहा जब गरमी के कारण बादशाह के शरीर से पसीना टपकने लगा और ओषधियों का सम्पूर्ण गुण उसके शरीर में प्रवेश करगया तो उसके बाद बादशाह ने गरम जल करवाकर स्नान किया। फिर जो विधान उस वैद्य ने बताये वे सब किये गये। दूसरे दिन बादशाह ने अपने शरीर को नीरोग और ऐसा उज्ज्वल देखा कि मानो कभी भी रोग न हुआ हो। बादशाह इस उपाय और ओषधि से अति आश्चर्यित हो हर्ष से उत्तम उत्तम वस्त्र पहिनकर सज धज के साथ सभा में आया और अपने राज्यासन पर बैठगया। इतने में सब सभासद लोग भी आ उपस्थित हुये और उसी समय दुबां वैद्य भी आपहुँचा और बादशाह को सब अङ्ग प्रत्यङ्ग से अनङ्ग के समान सावधान चमचमाता देख उमङ्ग में आकर राज्यासन को चूमने लगा। बादशाह ने उसको अपने पास बैठा लिया और सब सभासद लोगों के समक्ष उसकी बहुतही प्रशंसा की। बादशाह उसके स्नेहरूपी मेह से ऐसा भीजा कि भोजन के समय भी दुबां वैद्य को अपने साथही लेके बैठा। संध्या समय जब सब सभासद लोग विदा हुये तो बादशाह ने उसको उत्तम जड़ाऊ वस्त्र पहिराये और ६०००० हज़ार रुपये

की इच्छा से यह आज्ञा की कि आज इसे रक्षापूर्वक पहरे में करके घर लेजावो। जब वैद्यको उसके घर लेगये तो उसने एकही दिन में सब कार्यकर एक बड़ी पुस्तक वस्त्र में बँधी हुई बादशाह को दे विनय की कि जब मेरा शिर काटा जावे तब वह तस्तरी में इस पुस्तक के बँधने पर रखना, रखतेही रुधिर बन्द होजायगा। इसके उपरान्त जो तुम उस शीश से पूछोगे उसका ठीक उत्तर पावोगे। फिर उस समय भी बादशाह से कहा कि हे स्वामिन्! मैं निर्दोषही माराजाताहूं क्षमा कीजिये। बादशाह ने कहा अब मैं तेरी बात नहीं सुनता। यह कह बादशाह ने उसके हाथसे वह पोथी लेली और वधिकको उसके मारने की आज्ञा दी। हिंसक ने दुवां वैद्य का शिर काट उसी तस्तरी में रक्खा तो उसीसमय शिरसे रुधिर का निकलना बन्द होगया। बादशाह और सभासदों ने यह देख बड़ा आश्चर्य किया। फिर उस शिरने नेत्र खोल बादशाह से कहा कि अब इस पुस्तक को खोलिये। बादशाह ने उसके छठे पृष्ठको गिनकर उलटना चाहा कि दूसरे सफ़ेकी तीसरी पंक्तिको बांचें परन्तु वे पत्रे दूसरे से ऐसे चिपके थे कि बादशाह उनको सुगमता से उलट न सका तो वह थूक लगाकर पत्रे उलटने लगा। जब छठे पृष्ठपर पहुँचा तब बादशाह ने उस स्थानपर कि जहां वैद्य ने कहा था कुछ न पाया। बादशाहने वैद्यके शिरसे कहा कि वहां तो कुछ भी नहीं लिखाहै। शिरने उत्तर दिया कि और पत्रों को उलटो तब तो बादशाह बार बार अंगुली में मुँह से थूक ले उलटने लगा तो जो विष उस पुस्तक के प्रतिपृष्ठ पर लगा था वह मुख में प्रवेश करगया

पारितोषिक दिये । इसके अनन्तर प्रतिदिन उसकी और भी अधिक प्रतिष्ठा करनेलगा और यही विचार करता रहा कि ऐसे कामकी अपेक्षा मैंने वैद्यको कुछ भी नहीं दिया और न उसके गुण के तुल्य उसका आदर बनपड़ा । कुछ दिन तक तो इसी प्रकार बादशाह शोच शोच कर पारितोषिक आदि से उसका सन्मान करतारहा परन्तु उस बादशाह का मन्त्री इस आदर सत्कार से अपने मनमें उससे डाह और वैर रखने लगा और यही इच्छा की कि किसी प्रकार से इस वैद्य को बादशाह की दृष्टिसे गिरा देऊं और बादशाह का चित्त उससे अप्रसन्न करदूं । एक दिन उस मन्त्री ने बादशाह से एकांत में विनय की कि मुझे कुछ आपसे कहना है । बादशाह ने कहा कहो । मन्त्री ने कहा कि आपको यह योग्य नहीं है कि आप दूसरे शहर के ऐसे मनुष्य पर जिसका कुछ भी वृत्तान्त विदित नहीं है ऐसा विश्वास करें जैसे कि दुबां वैद्यपर किया है । यह सभासदों का सम्मत नहीं है । क्योंकि वह वैद्य महाधूर्त है और अपने वैरियों को मारडालना चाहता है इसी वास्ते उसने आपके मनमें जगह की है । बादशाह ने उत्तर दिया कि हे मन्त्री ! तुझे क्या हुआहै जो तू उसके वास्ते ऐसी बातें कहता है और उसको अपराधी बनाता है । मन्त्री ने विनय की कि हे स्वामिन् ! मैंने इस बात को अच्छे प्रकार से निश्चय कर लिया है तब आपसे विनय की है । अवश्य वह मनुष्य विश्वास योग्य नहीं है । यदि आप सोते हों तो चैतन्य होजायें क्योंकि मैं फिर कुछ विनय करता हूं कि यह दुबां वैद्य अपने ग्रीक देशसे यहां यही इच्छा करके आया है जोकि मैंने आप

और इसी कारण क्षण क्षण में उसका हाल बदलता गया और दृष्टि भी उसकी जाती रही। निदान व्याकुल हो वह निज सिंहासन से नीचे गिरा। जब वैद्य के शिरने देखा कि बादशाह को विषकी ज्वाला अच्छे प्रकार व्यापगई और पलमात्रही जीतारहेगा तब बड़े शब्द से कहा कि हे अन्यायी, निर्दयी! निर्दोष के मारने का यह फल तैंने देखा? इतना सुनतेही बादशाह मरगया और अपने किये के दण्ड को पहुँचा॥ इति चवालीसवां प्रदीप॥

अथ पञ्चचत्वारिंशः प्रदीपः।

धीवर और पिशाच का वर्णन॥

इतनी कहानी कहके शहरजाद ने शहरयार से विनयकी कि यह कहानी मैंने बादशाह ग्रीक और दुवां वैद्यकी थी सो सुनाई अब मैं फिर धीवर और उस पिशाच का वर्णन करती हूं कि जब वह धीवर यह कहानी कहचुका तो उस पिशाच से कहने लगा कि हे पिशाच! यदि वह ग्रीक बादशाह दुवां वैद्य को न मारता तो उसका परमेश्वर भला करता परन्तु जब उसके रोने पीटने पर भी दृष्टि न की तो उसे परमेश्वर ने वैसाही दण्ड दिया। हे पिशाच! तेरा भी यही हाल है यदि तू भी मेरे मारने की इच्छा न करता तो इस बन्धन में न पड़ता। तैंने तो बन्धन से छूटते ही मेरे मारने की इच्छा की अब मैं तुझे कैसे इस बन्धन से छुटाऊं और तुझपर दया करूं। अब यही योग्य है कि तुझको इस लोटे समेत नदी में डाल देऊं कि तू प्रलय पर्यंत इस बन्धन में पड़ारहे। पिशाचने कहा हे मेरे मित्र! फिर मुझसे ऐसा अप-

से वर्णन किया। वादशाह ने कहा वह कदापि ऐसा मनुष्य नहीं है जैसा कि तू वताता है। मैंने तो उसको बुद्धिमान् और गुणवान् समझा है। उसके समान दूसरा मनुष्य नहीं है। क्या तूने नहीं देखा कि मेरे रोग को उसने किस उपाय से नाश किया? यदि इस ओपधि और उपाय को आश्चर्य कर्म कहें तो उचितहै। कदाचित् उसकी इच्छा मेरे मारने की होती तो ऐसे कठिन रोग को क्यो विनाश करता? उसके वास्ते तुझे ऐसा विचार न करना चाहिये। अब मैं तीन हजार रुपये उसका मासिक नियत करता हूं क्योंकि सज्जन मनुष्यों का यही धर्म है कि जो कोई किंचिन्मात्र भी अपने साथ उपकार करे उसको जन्मभर न भूले जैसे कि केवल जानकीजी का संदेश ही लाने से श्रीरामचन्द्रजी ने हनुमान्जी को अयोध्या का राज्य भी देना तुच्छ समझा और नम्रीभूत होकर यही कहा कि इस तुम्हारे ऋण से हम कदापि अऋण न होंगे। ऐसे ही मैंभी अपना सम्पूर्ण धन उसे देडालूं तो वह भी थोड़ा है। उसके केवल इतनेही सत्कार और पारितोपिक पर तू क्यों डाह करता है? तेरे इस निंदा करने से मैं उसके साथ अपकार नहीं करूंगा। मुझको वह कहानी स्मरण है कि वादशाह सिन्दबादको उसके मन्त्री ने बेटेके मारने से मना किया था। मन्त्री ने पूछा कि वह कहानी कैसे है। वादशाह ग्रीक ने कहा कि वादशाह सिन्दबाद की सासु ने इस इच्छासे उसके पुत्र को किसी प्रकारका अपराध लगाया कि जिससे वादशाह अपने पुत्रको मारडाले और उसीप्रकार वादशाह ने बेसमझे बूझे उसके छल में पड़कर अपने पुत्र के वध करने की आज्ञा देदी

राध न होगा। यह समझो कि बुराई के बदले भी भलाई करना उचितहै सो तू मेरे साथ ऐसीही भलाई कर कि जैसी इम्माने अतीका के साथ की थी। धीवरने पूछा उसकी कहानी किसप्रकार है। पिशाचने कहा जो तुम इस कहानी को सुना चाहते हो तो मुझे छोड़ दो मैं सुगमतासे इस लोटे मेंसे वार्ता नहीं करसकता और यह कहानी क्या वस्तु है मैं बहुतही उत्तम वृत्तान्त और कई कहानियां तुमको सुनाऊंगा जिससे तुम प्रसन्न होगे। धीवर ने कहा कि मैं तेरी कहानी नहीं सुना चाहता तेरा मुझे विश्वास नहीं। यही उत्तम है कि तुझे इस नदी में डालदूं। पिशाचने कहा कि हे धीवर ! तू मुझे छोड़ दे तो तुझे एक ऐसी बात बताऊं कि जिससे तू अति धनी होगा। धीवरने कहा कि मुझको तेरे कहने का कुछ भी विश्वास नहीं है यदि तू इसमआज़म की सौगन्द खाये कि मैं तेरे साथ छूटनेपर पीछे धोखा न करूंगा तो तुझे छोड़दूं तू सत्यप्रतिज्ञा कर। तब पिशाचने वही सौगन्द खाई तो धीवर ने लोटेके मुखका ढकना उठालिया। उस लोटे में से धुआं निकला फिर फैलकर पिशाचका स्वरूप होगया और उसने लोटे को ठोकरमार नदी में गिरा दिया। धीवर इस बात को देख अत्यन्त भयभीत हुआ और बोला कि हे पिशाच ! तूने यह क्या किया। तू अपनी प्रतिज्ञापर स्थिर नहीं है और वह प्रतिज्ञा जो मेरे साथ कीथी पूरी नहीं करता है ? मैंने तो तेरे साथ वही भलाई की है कि जो दुबां वैद्यने बादशाह के साथ की थी। तब धीवर के डरने से पिशाच हँसा और बोला कि धैर्य रख मैं अपनी उसी प्रतिज्ञापर हूं अब तू अपना जाल लिये

तब उसके मन्त्री ने विनय की कि हे बादशाह ! इस आज्ञा के देने में शीघ्रता न कीजिये और यह शोच लीजिये कि किसी काम में शीघ्रता करना अच्छा नहीं है। इसके विषय में शास्त्रों ने भी प्रमाण दियाहै। कहीं ऐसा न हो कि शीघ्रताके कारण फिर आपको पश्चात्ताप हो जैसा कि एक सत्पुरुष को शीघ्रता के करने में दुःख हुआथा। बादशाह सिन्दबाद ने पूछा कि किसतरह दुःख हुआ था। तब मन्त्री इसप्रकार वर्णन करने लगा॥ इति बयालीसवां प्रदीप॥

अथ त्रिचत्वारिंशः प्रदीपः।

एक पुरुष और तोते का दृष्टान्त॥

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकात्परमाप्यते विपत्॥ सहसैव विनाशितः शुकस्तद्दुःखाय यथाऽभवद्भृशम् ४२॥

अर्थ। किसी कामको शीघ्रता से बिना विचारे न करना बिना विचारकर करने से महाविपत्ति प्राप्त होतीहै। जैसे किसी पुरुष ने शीघ्रता से बिना विचारे ही तोते को मारा, तो वह उसके दुःखका कारणही हुआ ४२॥ दृष्टान्त॥ पूर्वसमय में एक श्रेष्ठ पुरुष किसी ग्राम में रहता था। उसकी स्त्री भी परम सुन्दरी थी। उससे वह बहुत ही प्रीति रखता था। यदि एक घड़ी भी वह स्त्री अलग होती तो उसके वियोग से वह व्याकुल होजाता था। दैवयोग से एक दिन वह किसी आवश्यक कार्य के निमित्त एक नगर को गया। वहां एक जगह पर नानाप्रकार के चित्र विचित्र पक्षी बिकरहे थे। उनमें

मेरे पीछे चला आ। फिर वे दोनों नगर के अन्दरसे होकर एक पहाड़ की चोटी पर चढ़गये और वहां से उतरकर एक लम्बे चौड़े मकान में गये जिसमें उनको एक तालाव जिसके चारों ओर चार टीले थे, देखपड़ा। जब उस तालाबके तटपर पहुंचे तब पिशाचने धीवरसे कहा कि इस तालाबमें जाल डालकर मछलियां पकड़ ले। वह धीवर बहुतसे मच्छ उसमें देख प्रसन्न हुआ कि बहुतसी मछलियां पकडूंगा। फिर उन मछलियोंको रंग बरंगी देख आश्चर्यित हुआ और उसमें जाल डालकर खींचा तो उसमें केवल चार मछलियां चार रंगकी श्वेत, लाल, पीली और काली आईं। पिशाचने कहा कि इनको तू बादशाह के पास लेजा वह तुझे इतना द्रव्य देवेगा कि जैसा जन्मभर में कभी न पाया होगा। इस तालाव में केवल एक बेर जाल डालना, इसके विपरीत न करना, नहीं तो दण्ड पावेगा। इतनी बात उस पिशाचने उसे समझा पृथ्वी में ठोकर मारी जिससे धरती फटगई और आप उसमें समागया। फिर वह पृथ्वी बराबर होगई। धीवर मछलियां बादशाह के निकट लेगया। इतना कह शहरज़ादने शहरयारसे कहा कि मैं कुछ वर्णन नहीं करसक्ती कि वह बादशाह कितना उन मछलियों को देखके प्रसन्न हुआ फिर मन्त्री से कहा कि इन मछलियोंको लेजाकर उस रसोईदारिन को दो जिसे ग्रीक बादशाहने मेरे लिये सौगात समझकर भेजा था। मैं जानताहूं कि वह इनको अच्छे प्रकारसे बनावेगी। मन्त्री ने चारों मछलियां लेजाकर उस चेरी को दी और कहा कि इनको अच्छे प्रकारसे तैयार करना बादशाह ने तुमको आज्ञा दी है। जब मन्त्री उन मछलियोंको देकर

से उसने भी एक बोलता हुआ तोता मोल लेलिया जोकि बातचीत कर लेताथा। उसमे एक और भी विशेष गुण यह था कि जहां वह रहता था वहां कोई बात होती तो अपने स्वामी से निवेदन कर देता था। एक समय वह मनुष्य परदेश जाने लगा तो शुकका पिंजरा अपनी स्त्री को सौंपकर कहा कि जबतक कि मैं परदेश से लौट न आऊं तबतक तू इसकी रक्षा करना यह कह वह परदेशको गया और कुछ दिन बीते जब वह आया तो अपने घरका हाल उस तोते से एकान्तमें बैठकर पूछा कि कहो पीछे से मेरे घर में क्या क्या हाल हुआ है? उस तोते ने सब वृत्तान्त जो उसके पीछे से हुआ था वह वर्णन किया तो उसने अपनी स्त्री को किसी किसी बातमे ताड़ना दी। स्त्रीने शोचा कि मेरे इस भेदको इससे किसी बांदी ने कहा होगा यह शोच उनको ताड़ना देनेलगी तो उन्होंने शपथ खाखाकर कहा कि यह भेद हमने कुछ भी नहीं कहा है। फिर वह स्त्री जान गई कि इस तोते ने ही मेरी चुगली की है। इसको किसी प्रकार झूठा ठहरादेना चाहिये जिससे मेरा पति आगेको उसपर विश्वास नहीं करे और मेरी ओर से उसके मन मे जो दोष है वह दूर होजावे। यह विचारकर उसने एक दिन पति के कहीं चले जानेपर दासियों से कहा कि तुममें से एक तो तोतेपर रात भर जल छिड़कती रहे और एक उसके ऊपर चक्की पीसे और एक उसे शीशा दिखाती रहे। स्त्री की यह आज्ञा सुन उन्होंने वैसाही किया और प्रातःकाल होतेही वह काम बंद करादिया। दूसरे दिन घर का स्वामी आया तो उसने तोते से कहा कि कहो शुक!

बादशाह के निकट गया तो बादशाहने उससे चार सौ ४०० मोहरें उस धीवर को पारितोषिक दिलवाईं। धीवर उन मोहरों को पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। फिर शहरजाद ने शहरयार से कहा कि जब रसोईदारिन उन मछलियों को काट और साफ़ करके गर्म तेलमें भूनने के लिये छोड़ीं और एक ओर से पकके लाल होगईं तो जैसे दूसरी ओर उलटीं कि वैसेही एक अद्भुत बात देखपड़ी। तत्काल पाकागारकी दीवार फट गई और उसमें से एक अति रूपवती स्त्री निकलआई। वह स्त्री वस्त्र आभूषणादिक से अच्छीतरह सजी हुई थी मानों मिश्रदेशहीसे आई हो। फिर वह स्त्री उत्तम छड़ी हाथमें लेकर जिसमें मछलियां तली जाती थीं उस पात्रके समीप आय खड़ी हुई और एक मछली को छड़ी से मारकर बोली कि हे मछली! हे मछली! तू अपने प्राणपर स्थिर है? वे कुछ न बोलीं। उस स्त्री ने फिर उस बात को दुहराके कहा। तब वे चारों मछलियां उठकर एकही बार बोलीं कि सत्य है जो तुम हमें मानोगी तो हम तुम्हें मानेगी जो तुम अपना ऋण दो तो हम अपना ऋण देंगी। यह कहतेही उस स्त्री ने उस पात्रको कि जिसमें मछलियां तली जाती थीं उलट दिया और आप उस फटीहुई दीवार में चली गई और वह दीवार वैसी की वैसी ही होगई। रसोईदारिन इस अद्भुत दशाको देख मूर्च्छित होगई। जब सुधि हुई तो अत्यन्त आश्चर्यित हुई और उन मछलियों के उठाने को गई तो उन्हें जलेहुये कोयले के समान काला पाया। व्याकुल होकर रुदन करनेलगी और शोचने लगी कि यदि यह बात बादशाह से कहूंगी तो उसे विश्वास

आजकी रातको क्या क्या हाल वीता ? उस तोते ने कहा कि हे स्वामिन् ! आज रात्रिभर जल वर्षता और गर्जता भी रहा तथा विजली भी चमक रही थी । यह सुन उसने जान लिया कि आज रातको मेह आदि कुछ भी न था यह झूठा है और सदाभी झूठही हाल कहता रहाहै । मेरी स्त्रीका जो हाल कहा वह भी सब झूठही है । यह विचार उस तोते से अप्रसन्न होकर उसके पिंजरे को धरती पर पटकदिया तो उस तोते के प्राण निकलगये । कुछदिन पीछे उसने अपनी स्त्री की बुराई परोसियों से भी उसी तरह सुनी तो अतिलज्जित होरहा । इतना कह धीवर ने उस पिशाचसे कहा कि बादशाहने यह कहानी अपने मन्त्री से वर्णनकर कहा कि तू डाह से चाहता है कि दुवां वैद्य को जिसने तेरे साथ किसी प्रकार की बुराई न की मेरे हाथ से निरपराध मरवाडाले सो मैं उस मनुष्य के समान नहींहूं जिसने तोतेको विना अपराध मार डाला । मन्त्री ने बादशाह से कहा कि स्वामिन् ! उस तोतेका निर्दोष मारा जाना तो कुछ वड़ी वात न थी और यह जो मैंने आपसे विनय की है वह वहुतही वड़ी वात है । इसका शोच, विचार और यत्न अवश्य करना चाहिये । यदि आपके लिये किसी एक सादे आदमी का मरण होजावे तो कुछ पछतावे की वात नहीं है पर आपको किसी प्रकारका संकट हो जावेगा तो महाहानिका स्थान होगा । क्या उसका यह कुछ थोड़ासा अपराध है ? जो सब कहते हैं कि यह भेदिया आप के मारने को आया है । मुझे कुछ उससे डाह और वैर नहीं है जैसा आप कहते हैं । मैंने तो केवल आपके हित की वात

न आवेगा। इसी चिन्ता में थी कि मन्त्री ने आकर उससे पूछा कि वह मछलियां पकचुकीं ? रसोईदारिन ने उस वृत्तान्त को मन्त्री से वर्णन किया। मन्त्री सुनकर अचम्भित हुआ और उस समाचार को बादशाह से न कहकर, कोई दूसरी बात बनाकर उससे कही और शीघ्रही उस धीवर को बुलवाया। जब वह आया तो उससे कहा कि तू शीघ्रही उसी भांतिकी चार मछलियां लेआ। धीवर ने कहा कि किसी कारण से आज वैसी मछलियां नहीं लासक्ता हूं परन्तु कल अवश्य लाऊंगा। दूसरे दिन धीवर उसी तालाब पर गया और जाल डालकर वैही चार रंगकी मछलियां कि जैसी पहिले दिन जाल में आईथीं पकड़ीं और शीघ्रही मन्त्री के सम्मुख ले आया। मन्त्री उनको पाकागारमें लेगया और आपभी वहीं बैठकर उनको बनवाने लगा। जब वे एक तरफ़ से सिक गईं तब दूसरी तरफ उलटतेही दीवार फटी और वही सुन्दरी प्रकट हो मछलियों से वार्तालापकर उस पात्र को उलटकर फिर अन्तर्धान होगई। मन्त्री ने इस वृत्तान्त को अपने नेत्रों से देख बहुत आश्चर्य किया और बादशाह के निकट जाय ज्योंका त्योंही कह सुनाया। बादशाह भी सुनकर आश्चर्यित हुआ और इस विचित्र चरित्र को अपने नयनों से देखने की इच्छा से धीवर को बुलवाकर कहा कि हे मित्र! वैसीही चाररंग की मछलियां फिर भी लाइये। धीवर ने विनय की कि मैं तीन दिन के पश्चात् लासक्ता हूं। फिर तीन दिनके पीछे वह धीवर मछलियां पकड़ बादशाह के सम्मुख लेगया। बादशाह उन को देख अति आनन्दित हुआ और चारसौ अशरफ़ियां उस

रही है। मुझको कुछ उसके भले बुरे से काम नहीं है। मैं तो आपकी आयु चाहता हूं। यदि यह बात असत्य हो तो मैं वही दंड पाऊं जैसे उस मन्त्रीने दंड पाया था और मारा गया था। बादशाह ग्रीक ने पूछा कि उस मन्त्री ने कौनसा कर्म किया था जिस कारण वह मारा गया था। मन्त्री ने विनय की कि जो आप ध्यान धरकर सुनें तो इस कहानी को मैं वर्णन करूं॥ इति तेंतालीसवां प्रदीप॥

अथ चतुश्चत्वारिंशः प्रदीपः।

कुकर्मी मन्त्री का दृष्टान्त॥

किसी राजकुमार को आखेट का बड़ा प्रेम था और उस का पिता उससे बड़ी प्रीति करता और जिस बात में उसकी प्रसन्नता होती उसे कभी टुलखता न था। इसी हेतु से मन्त्री से कहा कि कभी आखेट में इससे अलग न होना। एक दिन वह राजकुमार शिकार को गया। शिकार खेलनेवाले जो उसके साथ थे उन्होंने एक बारहसिंगा उस वनसे निकाला तब राजकुमार ने उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया और कई कोस तक उसका पीछा किया फिर थकित होकर ठहरगया और इच्छा की कि यहां से लौट उसी स्थानपर जावे जहां से घोड़ा दौड़ाया था और अपने मन्त्री से जाकर मिलें परन्तु राह भूलने से न पहुंच सका। उसने घोड़े को ठहराकर बहुत देखा पर मार्ग नहीं पाया। तदनन्तर उसने क्या देखा कि एक स्त्री अति सुन्दरी रुदन कर रही है। उसने स्त्रीसे पूछा कि तू कौन है और क्यों रोरही है? स्त्री ने कहा कि मैं हिन्दुस्तान के राजा की पुत्री हूं, मैं घोड़ेपर सवार होकर जाती थी पर अक-

वर को दिलवादीं। फिर एकान्त स्थानमें जाय, सब सा-
ग्री पकने की मँगवाय, मन्त्री को आज्ञादी कि मेरे सम्मुख
न मछलियों को बनाओ। मन्त्री ने उस मकान के किवाड़
न्दकर और उन मछलियो को बनाने लगा। जब वे मछ-
लियां एक ओर से भुनकर लाल होगईं तब उनको दूसरी
ओर पलटा तो पलटतेही उस एकान्त स्थलकी दीवार फट
ई और उसमें से उस सुन्दरी की जगह एक हब्शी सेवकों
के समान हरी भरी छड़ी लेकर निकला और उस मछलियों
के पात्र को छड़ी से छूकर बड़े भयङ्कर शब्द से बोला कि
हे मछलियो! तुम अपने वचनपर स्थिरहो? उन मछलियो ने
अपने शिरों को उठाकर कहा कि हम तो उसी बातपर हैं।
इतनी बात कहतेही हब्शी ने उस पात्रको उलट कर मछलियां
फेंकदीं और आप उसी फटी दीवार में घुस होगया। बादशाह
ने यह चरित्र देखकर मन्त्री से कहा कि यह आश्चर्यजनक
घटना बिना भेद के नहीं है और मछलियां भी कुछ चिह्न
जानपड़ती हैं। मै चाहता हूं कि इस भेदको विदित करूं।
फिर उस धीवर को बुलवाकर पूछा कि तुम वे रंगीन मछ-
लियां कहांसे लाये थे? उसने उत्तर दिया कि मैं उनको उस
तालाब से पकड़ कर लाया था जो चारों ओर टीलों से घिरा
है। बादशाह ने मन्त्री से पूछा कि तैंने वह तालाब देखा है?
मन्त्री ने कहा कि यद्यपि मैं उस पहाड़ के चारोंओर साठवर्ष
से शिकार खेलने को जाया करता हूं परन्तु मैंने वहां कोई
तालाब नहीं देखा है। फिर बादशाह ने धीवरसे पूछा कि वह
तालाब यहां से कितनी दूर पर है? उसने उत्तरदिया कि यहां

स्मात् नींद के वश हो गिरपड़ी और घोड़ा वन में किसी ओर भागगया न-मालूम वह कहां है। राजकुमार को उसका वृत्तान्त सुन दया आगई। उसने उसको अपने घोड़े पर आगे बैठाली और वहां से चला। जब एक वनके निकट पहुँचा तो उस स्त्रीने किसी बहाने से उतरने की इच्छा की तब राजकुमार ने उसको उतार दी और आप भी उसके साथ वन को चला परन्तु थोड़ीही दूर गया था कि उस स्त्री ने एक मकान के पास जाकर पुकारा कि हे बच्चा! प्रसन्न हो मैं तुम्हारे लिये एक तरुण हृष्टपुष्ट मनुष्य का शिकार करके लाई हूं और उस के प्रत्युत्तर में यह भी सुनाई दिया कि हे माता! वह कहां है उसे शीघ्रही हमें खाने को देवो हम भी भूखे मररहे हैं। राजकुमार यह शब्द सुन अतिभयभीत हुआ और कंपायमान हो, शीघ्रही अश्वपर सवार होकर चल दिया। उस स्त्री ने लौट कर देखा कि वह शिकारही हाथसे जाता रहा तो फिर भाग कर उस राजकुमार से कहा कि तू भयभीत हुआ कौनहै और किसे ढूंढ़ता है बता? राजकुमार ने कहा कि मैं अपना मार्ग ढूंढ़ता हूं। वह बोली तू परमेश्वर पर भरोसा रख कि वह तेरी कठिनता को दूर करेगा। राजकुमार को विश्वास न हुआ कि कदाचित् इस स्त्रीने मुझे धोखाही दिया हो फिर उसने दोनों हाथ उठाकर परमेश्वरसे प्रार्थना की कि हे परमेश्वर! जो आप सबपर बलवान्हैं तो मुझे बचाओ और कठिन वैरीसे छुटाओ। इस प्रार्थना के करतेही वह मनुष्यभक्षिणी उद्यानवन की ओर चली गई और उस राजकुमार को कुछ मार्ग देखपड़ा जिस से शीघ्रही वह अपने स्थान को पहुँचगया और अपने पिता

से तीनघड़ी के रास्तेपर है । बादशाह ने यह बात सुन ...
समय जब कि थोड़ासा दिन शेष रहगया था अपने सभासद
को साथ ले उस धीवर के पीछे होलिया और उन्हीं पहाड़
पर चढ़गया । जब उस पहाड़ के दूसरी ओर उतरा तो वह
एक बहुत बड़ा वन दृष्टि में पड़ा कि कभी उसको किसीने भ
नहीं देखा था । फिर बादशाह ने कुछ दूर आगे जाकर चारों
ओर टीलों से घिरा वही तालाब देखा । उसका जल
था और उसमें उसी प्रकार की चाररंग की बहुतसी मछलिय
भी थीं । बादशाह उसी तालाब के तटपर उतरा और उ
मछलियों को देख अति विस्मित हुआ । फिर अपने सभासद
और सरदारों से पूछा कि तुमने फिर भी कभी यह तालाब
देखा था ? उन सबों ने विनय की कि हमने तो कभी भी इस
तालाब को नहीं देखा और न सुना । बादशाह ने कहा कि
जबतक मैं इस तालाब और चाररंगकी मछलियोंका वृत्तान्त
अच्छे प्रकार से न जानूंगा तबतक यहां से न जाऊंगा । यह कह
आज्ञादी कि सब मनुष्य इस तालाब के चारों ओर उतरें ।
फिर उस तालाब के चारोंओर डेरा खड़ा किया और जब
सायंकाल हुआ तब बादशाह अपने डेरे में आया और मन्त्री
से कहने लगा कि मैं इस विषय में आश्चर्यित हूं कि एकहीबेर
यह तालाब कैसे देखपड़ा और उस हब्शी का मेरे एकान्त
स्थलमें आना और मछलियों का बोलना किस कारण हुआ ?
इस बातमे मेरा चित्त व्याकुलहै इसलिये मैंने यह शोचाहै कि
मैं अपनी सेना को छोड़ अकेला होजाऊं और इस घटना का
पता लगाऊं । इसलिये तुम यहां रहना और इस भेद को किसी

से मार्ग का समस्त समाचार कह सुनाया। बादशाह यह सुन मन्त्री से बहुत अप्रसन्न हुआ और उसे प्राण से मरवा डाला। इसप्रकार वह मन्त्री इस मन्त्रीकी कहानी कहके फिर दुबां वैद्यकी बातें बादशाह से कहनेलगा कि मैंने यह अच्छे प्रकार से सुना है कि वह भेदिया है, आपके किसी वैरीने इसे भेजा है। यद्यपि आपको इसने किसी उपाय से नीरोग किया है परन्तु उस औषध के गुणसे आपको ऐसा कोई दुःख पहुँचेगा कि आपके प्राणों पर आबनेगी। बादशाह निर्बुद्धि था वह मन्त्री के डाह और वैर को यथार्थ प्रतीत न करसका और मन्त्री के बहकाने से उसका चित्त दुबां वैद्यसे फिरगया और कहनेलगा कि हे मन्त्री! तू सत्य कहता है वह वैद्य मेरे मारनेकोही आया है। किसी समय मुझको कोई ऐसी औषध सुँघावेगा कि जिससे मेरे प्राण अन्तको प्राप्त होंगे। मेरे चित्त में भी अब यह बात दृढ़ होगई। जब मन्त्री ने देखा कि मेरा मन्त्र चलगया तो बादशाह से उस वैद्य के मारने की आज्ञा लेली। फिर उस वैद्य को बुलाकर बादशाह के साम्हने कर दिया। वह दुबां वैद्य बोला कि आपने मुझे किसलिये बुलवायाहै? बादशाहने कहा कि तू सब जानताहै जिसलिये बुलवाया है। वह बोला मुझे मालूम नहीं आप मुझे बताइये। तब बादशाहने कहा कि मुझे तेरे छल का अच्छी प्रकार पता मिल गया है कि तू किसीका भेदिया (जासूस) बनकर मुझे मारने आया है इसलिये मैं तुझे मरवाकर विपत्ति से छूटूंगा। यद्यपि वैद्यने अपनी निर्दोषता प्रकट की पर कुछ मतलब न निकला। तब दुबां सोचने लगा कि इस बादशाह को लोगों ने

से प्रकट न करना। मन्त्री ने बादशाह को बहुत समझाया कि इस विषय में अत्यन्त भय है क्या आश्चर्य है कि श्रम के पश्चात् भी यह भेद आपको न मालूम हो। आप क्यों इस श्रम और भय में पड़ते हैं। बादशाह ने उसका कहा न माना और राजसी वस्त्र उतार कर शिकार के वसन पहन, खड्ग हाथ में ले रात के समय में जबकि सब सेना के मनुष्य बेसुध सो रहे थे तब डेरे से निकल कर पहाड़की ओर चला और अत्यन्त सुगमता से उस पर चढ़ दूसरी ओर उतरगया और एक बड़े वन की ओर चला। इतने में सबेरा हुआ तो उसने सूर्य के प्रकाश मे एक अति उत्तम बहुत बड़ा मकान देखा तो अतिप्रसन्न हुआ और विचारा कि वहां के जाने से इसका भेद भी अवश्य मिलेगा। इसके पीछे बादशाह उस मकान के पास गया। वह राजमंदिर के समान अति विशाल काले पत्थर से बना हुआ था और नीचे ऊपर तक उसके लोहे आदि के अति उत्तम और साफ़ चमकीले पत्र जड़े थे कि दर्पण के समान चमकते थे। उसे देख बादशाह को कुछ धैर्य हुआ कि यहां से मेरी अभिलाषा अवश्य सिद्ध होगी। यद्यपि उसे विदित था कि उस गृहका दरवाजा भीतर से खुला हुआ है परन्तु फिर भी उसने ताली बजाई और बहुत बार तक राह देखता रहा कि कोई ताली सुन कर आवेगा। जब कोई भी बाहर न आया तो उसने फिर किवाड़ को खुड़काया तो भी किसीने उत्तर न दिया। तब अति आश्चर्यित हो चित्त में विचारा कि बड़ा पश्चात्ताप है कि ऐसा उत्तम भवन निर्जन वन मे बनाहुआ है और ऐसा

डाहसे सिखाकर मेरा वैरी बनादिया है, बड़ा पश्चात्तापहै कि क्यों मैंने चिकित्साकर इसे आरोग्य किया । यह कह फिर विनयकी पर उसने कुछ न सुनी और दूसरी वार उसे मारने की आज्ञा दी । फिर उस वैद्यने बादशाहसे कहा कि हे स्वामिन् ! यदि निर्दोष मुझे मारोगे तो परमेश्वर से बदला पावोगे । इतना कह धीवरने उस पिशाचसे कहा कि जो शोक और उस दुवां वैद्य में हुई वही मेरे और तेरे में है । जिस समय वधिक अपने स्वामीकी आज्ञानुसार उस वैद्यको मारने लगा तब सब सभासदों ने उसको निरपराध मरता समझ बादशाह से बहुतसी प्रार्थना की परन्तु बादशाह ने उन सब को झिड़कके ऐसा उत्तर दिया कि फिर उनको इस विषय में कहने की आवश्यकता न रही । जब दुवां वैद्यने देखा कि मैं विन अपराधही माराजाताहूं तो बादशाह से विनय की कि हे स्वामिन् ! मुझे इतना तो अवकाश दीजिये कि अपने घर पर जाकर अन्तिम शिक्षा देआऊं और अपनी पुस्तकें किसी अधिकारी मनुष्य को देआऊं और उन पुस्तकों में से एक पुस्तक जो अपूर्व है वह आपके पुस्तकालय के लिये ले आऊं । बादशाह ने कहा वह कौनसी ऐसी पुस्तक है कि जिसकी तू ऐसी बड़ाई करता है । वैद्यने कहा कि उसमें बहुत भेदकी बाते हैं । उसमे से एक यह भी बात है कि जब मेरा शिर काटा जावे तब उस पुस्तक को खोल उसके छठे पत्र के बायें सफे की तीसरी पंक्ति को पढ़कर जो जो प्रश्न आप करेंगे उन सब का उत्तर मेरा शिरही देगा । बादशाह यह बात सुन अति आश्चर्य में हुआ और ऐसी अपूर्व वस्तु के देखने

एक भी जीव नहीं है जो बाहर आ मुझे उत्तर देवे जिससे इस स्थान का भेद मिले। फिर कुछ देर विचार कर उस मंदिर के भीतर चलागया और ड्योढ़ी में पहुँच बड़े शब्द से कहा कि इसके भीतर कोई मनुष्य है जो अतिथि के रहने के लिये कोई स्थान दे ? उसके भी उत्तर में कोई शब्द न सुन पड़ा तो अधिक आश्चर्यित हुआ और ड्योढ़ी के भीतर जाय देखा कि वह बड़ाभारी घर है परन्तु उजाड़ और निर्जन है। फिर वह बड़े चौगान को लांघकर दालान में गया जिसमें रेशमी कालीन बिछा हुआ था और चारों ओर से वह मकान काले वस्त्र से मढ़ाहुआ था। उसके दरवाजों के पड़दे जड़ाऊ मखमल के थे जिनमें सुनहरी और रुपहरी बूटे कढ़ेहुये लटकरहे थे। वहां बारहदरी में एक कुंड था जिसके चारों कोनो में सुनहले चार शेर बने हुये थे और उनके मुखसे फुहारे छूटते थे। जब उनका जल संगमरमर के फ़र्श पर गिरता था तो सहस्रों टुकड़े हीरे के और असंख्य मणि माणिक्य दृष्टिपड़ते थे तथा उस कुण्ड के बीच में एक फ़व्वारह इतना ऊंचा उठता था कि बारहदरी की छततक पहुँचता था। उस फ़व्वारह में कुछ अरबी अक्षरोंमें खुदा हुआथा। उस स्वच्छ भवनमें उत्तम उत्तम तीन बागभी अत्यन्त शोभायमान थे। जिनमें नानाप्रकार के उत्तम फल, सुगंधित पुष्प और अनेक प्रकार के उत्तम उत्तम सामान उचित स्थानोंपर रक्खे हुये थे जिससे वह बाग चित्तको अत्यन्तही आनन्ददायक लगता था। वहां नाना प्रकार के पक्षी वृक्षोंपर प्रियवाणी बोल रहेथे और उन्हींमें रात्रि दिन रहते थे क्योंकि उन वृक्षों पर चारों

ओर जाल पड़ेहुये थे कि जिससे कोई भी पक्षी बाहर नहीं जासक्ताथा। बादशाह एक मकान से दूसरे मकान में जाता और सैर करता तथा हरेक उत्तम वस्तुको देखकर प्रसन्न होता इतना फिरा कि थकित होगया। तदनन्तर एक मकानमें बैठ बागका तमाशा देखनेलगा कि दैवयोग से एक दुःखित शब्द सुनपड़ा। कई बार उसने ध्यानकर सुना कि कोई मनुष्य अति दुःखित हुआ अपनी व्यथा कहरहा और अपने खोटे भाग्यको धिक्कार देरहाहै। बादशाहने उसके क्लेशका वृत्तान्त सुन उस मकानका पड़दा उठाया और देखा कि एक रूपवान् युवा पुरुष बादशाही वस्त्र पहने हुये एक ऊंचे स्थानपर जो सिंहासनकेसमान विदित होताहै बैठाहुआ अतिविलाप करता है। बादशाहने उसके निकट जाकर प्रणाम किया। उसने कहा मुझे क्षमा कीजिये कि मैंने उठके तुम्हारा आगत स्वागत न किया, मैं लाचार हूं, तुम कुछ बुरा न मानना। बादशाहने कहा कि मैं तुम्हारे इस शील से अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूं, कोई ऐसा कारण होगा कि आप नहीं उठसके परन्तु तुम्हारे क्लेशका हाल सुन मुझे अतिदुःख हुआ है। मैं केवल तुम्हारी सहायता के वास्ते यहां आया हूं अपने दुःख से मुझे शीघ्रही विदित कीजिये कि मैं उसका उपाय करूं। मुझे विश्वास है कि तुम अपना वृत्तान्त अवश्य कहोगे। पहिले तुम उस तालाब का वृत्तान्त वर्णन करो जो यहां से समीपहै और उसमें चार रंगकी मछलियां हैं फिर इस मन्दिर का वृत्तान्त कहो कि यह किस ने बनाया है और तुम इस हाल से अकेले इस स्थान पर क्यों हो। वह यह बात सुन रोया और कहने लगा कि मैं

सजाहुआ देखकर अतिआश्चर्यित हुआ। फिर जहां वह हब्शी पड़ाहुआ था वहां गया और एक हाथ खांड़े का ऐसा मारा कि वह हब्शी मरगया। फिर उसकी लोथ खैंचकर कुएं में डाल दी और आप उसी जगह जहां वह हब्शी पड़ा था खड्ग लेकर इस विचारसे लेटरहा कि समय पाय उस जादूगरनी को भी मारूंगा। जब वह जादूगरनी मकान में आई तो पहिले वहांही गई जहां कि कालेद्वीपों का बादशाह था। फिर उस बेचारे को मारना आरम्भ किया यहांतक कि उसके रुदन करने से सारा मकान कँपने लगा। वह बेचारा कितनी ही उसे शपथें देदे कहता था कि मुझपर दयाकर, परन्तु वह दुष्ट अभागिनी स्त्री सौ चाबुक मारे विना न रही। फिर उस पर कम्मल डाल, सुनहरा वस्त्र पहिराकर फिर शोकागार में गई और अपने प्यारे को सुनाने के लिये अपनी प्रीति और विरहका हाल वर्णन करनेलगी कि क्या अनर्थ है कि तैंने अपनी अप्रीति से मेरा चैन खोदिया? हे मेरे प्यारे। इतने अन्याय होने पर भी मुझे बुरा भला कहनेसे नहीं रहता है कि मैं अत्यन्त निर्दयीहूं। जब मैं तुझे ऐसी दशा में देखतीहूं तो मुझको बहुत क्रोध होता है और चाहतीहूं कि उसको इससे अधिक मारा करूं और उससे तेरा बदला लूं। फिर कहनेलगी कि हे प्रिय! अब तू चुप और न बोलने से चाहता है कि मैं मरजाऊं पर परमेश्वरके वास्ते एक बात तो मुझसे कह कि मुझे धैर्य हो। उस बादशाहने जो उसके प्यारे के स्थान पर था अपने को ऐसा बनाया कि जैसे कोई निद्रासे जगे। फिर हब्शियों के शब्द के समानही उस रानी को उत्तर दिया कि

एक भी जीव नहीं है जो बाहर आ मुझे उत्तर देवे जिससे इस स्थान का भेद मिले । फिर कुछ देर विचार कर उस मंदिर के भीतर चलागया और ड्योढ़ी में पहुँच बड़े शब्द से कहा कि इसके भीतर कोई मनुष्य है जो अतिथि के रहने के लिये कोई स्थान दे ? उसके भी उत्तर में कोई शब्द न सुन पड़ा तो अधिक आश्चर्यित हुआ और ड्योढ़ी के भीतर जाय देखा कि वह बड़ाभारी घर है परन्तु उजाड़ और निर्जन है। फिर वह बड़े चौगान को लांघकर दालान में गया जिसमें रेशमी क़ालीन बिछा हुआ था और चारों ओर से वह मकान काले वस्त्र से मढ़ाहुआ था। उसके दरवाज़ों के पड़दे जड़ाऊ मख़मल के थे जिनमें सुनहरी और रुपहरी बूटे कढ़ेहुये लटकरहे थे। वहां बारहदरी में एक कुंड था जिसके चारों कोनों में सुनहले चार शेर बने हुये थे और उनके मुखसे फुहारे छूटते थे। जब उनका जल संगमरमर के फ़र्श पर गिरता था तो सहस्रों टुकड़े हीरे के और असंख्य मणि-माणिक्य दृष्टिपड़ते थे तथा उस कुण्ड के बीच में एक फ़व्वारह इतना ऊंचा उठता था कि बारहदरी की छततक पहुँचता था। उस फ़व्वारह में कुछ अरबी अक्षरोंमें खुदा हुआथा। उस स्वच्छ भवनमें उत्तम उत्तम तीन बाग़भी अत्यन्त शोभायमान थे। जिनमें नानाप्रकार के उत्तम फल, सुगंधित पुष्प और अनेक प्रकार के उत्तम उत्तम सामान उचित स्थानोंपर रक्खे हुये थे जिससे वह बाग़ चित्तको अत्यन्तही आनन्ददायक लगता था। वहां नाना प्रकार के पक्षी वृक्षोंपर प्रियवाणी बोल रहेथे और उन्हींमें रात्रि दिन रहते थे क्योंकि उन वृक्षों पर चारों

सिवाय परमेश्वरके कि जो सर्वोपरिहै किसीको सामर्थ्य और बल नहीं कि मुझे धैर्य दे । जादूगरनी इस बात को कि जिस की उसे आशा न थी सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुई और बोली कि हे स्वामी ! यह तुमनेही उत्तर दिया कि कुछ मुझे धोखाही पड़ा । बादशाहने कहा कि हे दुष्ट स्त्री ! क्या तू इस योग्य है कि तेरे प्रश्नका कोई उत्तरदे ? रानी ने कहा कि हे मेरे प्रियतम ! मुझसे ऐसा कौन अपराध हुआ हैं जो तुम ऐसा कहते हो । उसने कहा कि तेरे भर्ता के चिल्लाने से जिसको कि तू प्रतिदिन मारा करती है मेरा सोना और आराम करना बन्द होगया है, मैं तो अबतक अच्छा और नीरोग होगया होता और वार्ता करनेकी भी सामर्थ्य अच्छेप्रकार आजाती परन्तु तैंने उसपर जादू कररक्खा है और उसे प्रतिदिन मारा करती है इस तेरे अन्यायसे मेरा जी नहीं चाहता कि मैं तुझसे बोलूं और तेरी बातका उत्तर देऊं । जादूगरनी ने कहा कि जो तुम्हारी प्रसन्नता इसी में है कि मैं उसे दण्ड देना छोड़दूं और उसे पहले स्वरूप में लाऊं तो मैं अभी ऐसा करसक्ती हूं । बादशाह ने कहा हां हां मैं यही चाहताहूं कि तू अभी जाकर उसे उसी रूपमें करदे जिससे उसके रोने से मेरा जी न बिगड़े । रानी तुरंतही उस शोकागार में गई और एक प्याले मे जल भर करके कुछ पढ़ा जिससे वह पानी उबलने लगा फिर जहां उसका पति था वहां गई और उस पर वही जल छिड़का और कहा कि यदि परमेश्वर ने तेरा स्वरूप ऐसाही बनाया है और वह तुझ से प्रसन्न है तो तू इसी दशा में रह और जो तेरा यह स्वरूप नहीं है तो तू मेरे इस

ओर जाल पड़ेहुये थे कि जिससे कोई भी पक्षी बाहर नहीं जासक्ताथा। बादशाह एक मकान से दूसरे मकान में जाता और सैर करता तथा हरेक उत्तम वस्तुको देखकर प्रसन्न होता इतना फिरा कि थकित होगया। तदनन्तर एक मकानमें बैठ बागका तमाशा देखनेलगा कि दैवयोग से एक दुःखित शब्द सुनपड़ा। कई बार उसने ध्यानकर सुना कि कोई मनुष्य अति दुःखित हुआ अपनी व्यथा कहरहा और अपने खोटे भाग्यको धिक्कार देरहाहै। बादशाहने उसके क्लेशका वृत्तान्त सुन उस मकानका पड़दा उठाया और देखा कि एक रूपवान् युवा पुरुष बादशाही वस्त्र पहने हुये एक ऊंचे स्थानपर जो सिंहासनकेसमान विदित होताहै बैठाहुआ अतिविलाप करता है। बादशाहने उसके निकट जाकर प्रणाम किया। उसने कहा मुझे क्षमा कीजिये कि मैंने उठके तुम्हारा आगत स्वागत न किया, मैं लाचार हूं, तुम कुछ बुरा न मानना। बादशाहने कहा कि मैं तुम्हारे इस शील से अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूं, कोई ऐसा कारण होगा कि आप नहीं उठसके परन्तु तुम्हारे क्लेशका हाल सुन मुझे अतिदुःख हुआ है। मैं केवल तुम्हारी सहायता के वास्ते यहां आया हूं अपने दुःख से मुझे शीघ्रही विदित कीजिये कि मैं उसका उपाय करूं। मुझे विश्वास है कि तुम अपना वृत्तान्त अवश्य कहोगे। पहिले तुम उस तालाव का वृत्तान्त वर्णन करो जो यहां से समीपहै और उसमें चार रंगकी मछलियां हैं फिर इस मन्दिर का वृत्तान्त कहो कि यह किस ने बनाया है और तुम इस हाल से अकेले इस स्थान पर क्यों हो। वह यह बात सुन रोया और कहने लगा कि मैं

जादू से जैसा कि पहिले था वैसाही होजा। इतना कहते ही वह बादशाह अपने पहिले स्वरूप में आगया और अति प्रसन्नता से उठ खड़ा हुआ और परमेश्वर का धन्यवाद देने लगा। जादूगरनी ने उससे कहा कि इस भवन से शीघ्रही निकलजा फिर यहां कभी न आना नहीं तो माराजायगा। वह इसका उत्तर दिये विना शीघ्रही वहां से चलदिया और किसी मकान में जाय छिपके बैठरहा और इस अद्भुत चरित्र के देखने की लालसा रख परमेश्वर का स्मरण करने लगा। उसे विश्वास था कि वह बादशाह सब कार्य कर मेरे ढूंढ़ने को अवश्य आवेगा। फिर वह जादूगरनी वहां से उस शोकागार में आई और बादशाह से कि जिसको हब्शी जानतीथी कहा कि मैंने आपकी आज्ञानुसार उसको अच्छा करदिया अब तुम उठो जिससे मुझको धैर्य होवे। उस बादशाह ने फिर हब्शी के समान ऊंचे स्वर से कहा कि यह जो तैंने किया वह मेरे नीरोग होने के लिये पर्याप्त नहीं है अभीतक तेरा अन्याय दूर नहीं हुआ है। उसने कहा हे मेरे हब्शी प्यारे! आपका क्या प्रयोजन है? बादशाह ने कहा कि तू सम्पूर्ण नगर को रहनेवालों समेत जिसको तैंने जादू से उजाड़ कररक्खा है अपनी अपनी योनि में ला। प्रतिदिन अर्धरात्र के समय सब मछलियां शिर निकाल निकाल कर शाप देती हैं जिससे मैं नीरोग नहीं होताहूं। तू शीघ्र जा और उन सबों को पूर्वरूप में ला। जब यह काम कर आवेगी तो तुझे मैं अपना हाथ दूंगा। उस समय तू मुझे सहारा देना और उठाना। रानी ने अपने प्यारेसे ऐसी बातें सुन, अत्यन्त

अपने वृत्तान्त को क्या वर्णन करूं। फिर उसने अपना वस्त्र ऊपर उठाया तो बादशाहने देखा कि वह शिरसे नाभितक आदमी है और कमर से चरणतक काले पत्थर का बनाहुआ है। यह देख बादशाह अति विस्मित हुआ और उस मनुष्य से कहा कि मैं तो यहांकी बहुतसी वस्तु देख चिन्ता करता था परन्तु तुमने मुझे यह हाल दिखाकर अति विस्मित और विह्वल किया। परमेश्वर के लिये अपना वृत्तान्त शीघ्र ही कहो। मालूम होता है कि वह रंग विरंगी मछलियां इसी वृत्तान्त से सम्बन्धित हैं। आप मुझसे अवश्य कहिये क्योंकि जब कोई दुःखित मनुष्य अपने क्लेशको वर्णन करता है उस समय उसे धैर्य प्राप्त होता है। उसने कहा यद्यपि मुझे अपने वृत्तान्त कहने की सामर्थ्य नहींहै परन्तु आपकी आज्ञानुसार कहता हूं॥ इति पैंतालीसवां प्रदीप॥

अथ षट्चत्वारिंशः प्रदीपः।

काले द्वीपों के बादशाह का दृष्टान्त॥

अलौकिकैव घटना स्त्रीणां वै दृश्यते यथा॥
प्रसुप्तं स्वपतिं हित्वा रेमे या पाकशासिना ४३॥

अर्थ। स्त्रियों की बड़ीही अलौकिक दुर्घट घटना (चेष्टा) दिखाई देती है जैसे काले द्वीपों के बादशाह की स्त्री उसे सोता छोड़ रसोइये से रमण करतीथी ४३॥ दृष्टान्त॥ शहरज़ादने शहरयार से कहा कि उस पुरुषने अपना वृत्तान्त इस प्रकार कहना आरम्भ किया कि मेरा पिता महमूदशाह काले द्वीपोंका बादशाह था। उसकी ५ ९५।

प्रसन्न होकर कहा बहुत अच्छा ऐसाही करूंगी । फिर उसने शीघ्रही उस तालावके तटपर जाय थोड़ा जल ले मंत्र पढ़ उस तालाव पर छिड़का, जल छिड़कतेही वे सम्पूर्ण मछलियां अपने अपने स्वरूप में आगईं और सब उसके जादू से छूटे। घर, दूकानें, मनुष्य सहित पूर्ववत् वसगये । उन्होंने अपनी अपनी वस्तु जहां छोड़ी थीं वे ज्यों की त्यों पाईं। बादशाह की सभा और सरदार कि जो नगर के निकट उतरे थे वे वहुत दूर होगये और अपने को बस्ती के बीच देखके अत्यन्त प्रसन्न हुये । वह जादूगरनी सबको पूर्वस्वरूप में लाकर उस शोकागार में गई और वड़े शब्द से बोली कि हे प्राणनाथ! मैंने आपकी आरोग्यता और जीवन के निमित्त सबको पूर्व-रूप में करदिया है अब आप उठिये और अपना हाथ मुझे दीजिये तब बादशाह ने उसे हब्शियों की वाणी से कहा कि आगे आ। जब वह समीप आई तो उसने शीघ्रता से उसके एकही हाथ ऐसा फटकारा कि वह प्राणरहित होगई। फिर उसकी भी लोथ उसी कुएं में डाली और आप उस बादशाह को ढूंढ़ने लगा और धैर्य दे बोला कि अब तू निर्भय हो और उससे न डर । तब तो उसने इनको धन्यवाद दिया और सहस्रों आशीर्वाद दे कहा कि आपने मुझको पुनर्जन्म दान दिया है। अब मुझे आज्ञा हो और आप भी मेरे स्थान पर पधारें और कुछ भोजन करें । बादशाह बोला कि क्या तुम मेरे नगर को निकट नहीं जानते हो? वह बोला हां तुम्हेंही निकट मालूम देता है । बादशाह ने कहा कि मैं दो चार घड़ी में ही तो यहां आया था। वह बोला अब आपका देश

क बीच थी जहां कि अब वह तालाबहै। अब मेरे इस वृत्तान्त से तुमको इन सबका हाल व्योरेवार विदित होजावेगा। हे बादशाह! जब मेरा पिता ७० वर्षका होकर मरगया तो उसकी जगह मैं सिंहासन पर बैठा। मैंने अपने चचा की पुत्री के साथ विवाह किया। वह स्त्री मुझसे बहुत प्रीति करती थी उसीप्रकार मैं भी उसे चाहताथा। पांच वर्ष तक हम प्रीतिपूर्वक रहे। इसके पश्चात् मैंने उसकी प्रीति में कुछ अन्तर पाया। एकदिन सवेरे के भोजनके पश्चात् वह स्नान करने गई और मैं जाकर एक कमरे में लेट रहा। फिर दो बांदियां जो उस रानी के पंखा हिलाने के वास्ते नियतथीं मेरे पासआकर एक शिरके और एक पांवके निकट बैठगई और मेरे आनन्द के हेतु पंखा करने लगीं। इसके पीछे वे मुझे सोता जान परस्पर वार्त्ता करने लगीं। मैं भी जागताही था परन्तु अपने को सोया हुआ बनाकर उनकी बातें सुनने लगा। एकने दूसरी से कहा कि हमारी रानी अतिनिर्दयी है कि ऐसे रूपवान् और कोमल बादशाह को प्यार नहीं करती है। दूसरी ने यह सुनकर उत्तर दिया कि तू सत्य कहती है, नहीं जान पड़ता कि रानी इसे अकेला छोड़ रात्रि को कहां जाती है और इसको यह बात मालूम भी नहीं है। पहिली चेरी ने कहा कि इस ग़रीब को उसके जाने का हाल किसप्रकार विदित हो? रानी तो प्रतिरात्रि इन्हें शर्बत में नशा मिलाकर पिलाती है उसके नशे में ये ऐसे बेसुध होजाते हैं कि कुछ खबर नहीं रहती और वह यह अवकाश पाकर जहां चाहती है तहांही चलीजाती है और फिर प्रातःकालही आकर बादशाह को कुछ सुगंधित वस्तु

एक वर्षभर की राहपर है। उसने अपने जादू से उसे पास ला रक्खाथा। अब आप खेद न कीजिये मैं आपका सर्वथा सहायक हूं। आपने मेरा ऐसा भारी उपकार किया है कि जन्मभर न भूलूंगा। फिर उस बादशाह ने कहा कि मेरे पुत्र नहीं है इससे मेरे मरनेपर मेरे राज्यासन पर तुमहीं बैठोगे यह कहकर यात्राकी सामग्री साथले वहां से चले। जो जो वस्तुएं कालेद्वीपों के बादशाह के यहां उत्तम थीं साथ लीं और पचास सवार तथा अन्य भी सामान ले यात्रा की। फिर तीन सप्ताह वहां रहकर अपने नगर को चले और कुछ दिन में अपनी राजधानी के निकट पहुँचे। बादशाह के सब सरदार समाचार पा सेना तैयारकर उनकी अगवानी लेने को आये और राजकाज तथा प्रजा की कुशल सुना बड़ी धूमधाम के साथ नगरमें आये तदनन्तर बादशाह महलों में पधारे। फिर दूसरे दिन सवेरेही सब सरदारों को इकट्ठे कर कालेद्वीपों के बादशाह का अद्भुत वृत्तान्त सुनाकर कहा कि इसीलिये मुझे देरहुई है। मैं इसको अपना राज्य देऊंगा- यह भी सबको सुनादिया॥ इति छियालीसवां प्रदीप॥

अथ सप्तचत्वारिंशः प्रदीपः।

दासो दासी चाप्यमीना जुबैदा एकत्रासन् योगिनश्च त्रिकाणाः॥ राजा मन्त्री जाफरश्चेति सर्वे गाथास्स्वीया वर्णयामासुरेवम् ४४॥

अर्थ। दास (मजदूर), दासी (साकी) और अमीना, जुबैदा ये दोनों बहिन और [illegible] ने योगी तथा राजा और

सुँघाकर फिर चैतन्य कर लेती है। हे प्रियमित्र ! मुझे यह बा
सुन इतना खेद हुआ कि कुछ कहा नहीं जाता है। उस सम
में मैंने क्रोध को थांभा और इस उपाय से उठा कि मानों सच
मुचही सोता हुआ उठा हो। फिर वह रानी स्नान करके आ
और रात्रि को भोजन कर मैंने शयन करने की इच्छा की
तो वह वहही प्याला कि जिसे सदैव पिलाती थी मेरे पिलाने
को लाई। मैंने उसके हाथ से ले लिया और उसकी दृष्टि
बचाय खिड़की से पृथ्वी पर फेंक दिया और खाली प्याला
उसके हाथ में दिया कि वह यह जानले कि मैंने पीलिया
तदनन्तर हम दोनों शय्यापर सोरहे। रानी मुझे सोता जान
शय्या परसे उठी और उसने एक मंत्र पढ़ा और मेरी ओर
मुख करके कहा कि ऐसा बेसुध सोरह कि कभी न जागे
फिर शीघ्रही वस्त्र पहिन उस कमरे के बाहर आई। मैं भी
उसके बाहर निकलते ही उठा और वस्त्र पहिन, खड्ग हाथ में
ले उसके पीछे पीछे चला। इतना पास और मिलाहुआ उसके
साथ जाताथा कि उसके पैरोंका शब्द मुझे सुन पड़ता था
और मैं उसके पैरों के चिह्न के चिह्न पर पैर रखता हुआ बड़े
विचार से उसके पीछे चला था कि उसे मेरे चलने का शब्द
न सुनपड़े। वह कई द्वारो से होती हुई निकली। जिस द्वार
पर वह जाती थी वह उसके मंत्र बल से आपही खुल जाता
था। फिर वह एक द्वार से निकल कर एक पुष्पवाटिका में
गई और वहां से एक छोटे वन में, कि जिसका मार्ग चारों-
ओर सघन वृक्षों से घिराहुआ भी था पहुँची। मैं भी अन्य

जाफर मंत्री ये सब दैववश एकत्र होकर अपनी अपनी कथा इस प्रकार से कही ४४ ॥ दृष्टान्त ॥ बादशाह हारूंरसीद का यह स्वभाव था कि वह अपना वेप बदल कर नगरकी रक्षा के लिये निकलता था । इस बादशाहके नगरमे बुगदाद नगरका एक दास रहता था । वह बड़ा ही ठठोल और वाचाल था । एक दिन वह मजदूरी करनेको चला और बाजार में टोकरा शिर परसे उतार रखकर बैठगया कि कोई उसे भार उठाने के लिये बुलावे । संयोगवश एक परमसुन्दरी स्त्री जाली का वस्त्र अपने मुखपर डालेहुये आई । उसने उससे मुसकराय कहा कि अपना टोकरा उठाकर मेरे साथ चल । वह मजदूर उस स्त्री की मीठी मीठी बातें सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और टोकरा अपने शिरपर रख उसके पीछे होलिया । वह चित्तमें यह कहता हुआ चला कि आजका दिन बहुत उत्तम है कि ऐसी अच्छी स्त्री से काम पड़ा । उस स्त्रीने आगे बढ़ एक बन्द दरवाज़ेपर जाकर ताली बजाई । थोड़ीदेर पश्चात् लम्बी और श्वेत दाढ़ीवाले एक वृद्ध नसरानी ने आकर दरवाजा खोला । उस स्त्रीने कुछ रुपये उसके हाथ में रखदिये । नसरानीने उसका अभिप्राय समझ भीतरसे उत्तम मदिराकी एक बड़ी ठिलिया ला दी । स्त्रीने वह टोकरे में रखवा ली । फिर वहांसे मजदूर के साथ बाजारमें आई और उत्तम उत्तम फल, सेव, नाशपाती आदि और अनेक रङ्गके अतिसुगंधित पुष्प, इत्र तथा स्वादिष्ठ अचार, मुरब्बा, मांस और सूखा हुआ मसाला आदि सामान हर एक दूकान्दार से इतना मोल लिया कि मजदूर के टोकरे में जगह न रही । तब

होगया और वहां से उसे देखने लगा। वह एक पुरुष के साथ टहलतीहुई वार्तालाप करने लगी। मैंने ध्यान धर सुना कि वह यह कहरही है कि मैं तुमको प्राणों से प्रिय समझती हूं और रात दिन तुम्हीं पर मोहित रहती हूं परन्तु इसपर भी तुम मुझे भला बुरा कहते और धिकार ही दिया करते हो इसका कारण मुझे मालूम नहीं होता है। यदि तुम मेरी परीक्षाही लिया चाहते हो तो मैं तुम से इतनी प्रीति रखती हूं कि कहो सो करूं। तुमको मेरी सामर्थ्य भी विदित है कि मैं क्या क्या काम नहीं करसक्तीहूं? यदि आप चाहते हो तो मैं सूर्योदय के पहिलेही इस नगर और उत्तम उत्तम घरों को मैदान करदेऊं कि जिसमें भेड़िये और उल्लू रहनेलगें और पत्थरों को कि जिनकी दृढ़ भीतें बनीहुई हैं कोहकाफ पहाड़ की ओर फेंकदूं। केवल तुम्हारी आज्ञाही चाहतीहूं। वह रानी यह कहती हुई अपने प्रियके कर में कर दिये टहलती हुई उस झाड़ी के निकट जहां मैं छिपरहा था आई। फिर जब उसका प्यारा मेरी ओर से होकर निकला तो उसी समय मैंने म्यान से तलवार निकालकर एक हाथ ऐसा मारा कि उसका शिर कुछ कटगया और वह लड़खड़ाय के गिर पड़ा तब मुझे मालूम हुआ कि वह मरगया। रानी जो मेरे चचाकी पुत्रीथी इसलिये मैंने उसे छोड़दिया और तत्कालही वहां से दबेपैरों लौट आया। रानी को यह बात न मालूम हुई। यद्यपि उसके प्यारे के बहुत भारी घाव लगा था तथापि वह मरा नहीं वह ऐसा होगया था कि न तो जीतों में गिना जाता और न मरों में था। मैंने लौटतीसमय रानी को देखा

मजदूर ने कहा कि यदि मुझे मालूम होता कि आप इतनी वस्तु लेंगी तो मैं एक घोड़ा या ऊंट अपने साथ लेते आता। निदान वह मजदूर टोकरा उठाकर उसके साथ हुआ और एक बड़े मन्दिर के दरवाज़े पर कि जिसके किवाड़ हाथीदांत से जटित थे वे दोनों पहुंचे। स्त्री ने ताली बजाई, जबतक कि दरवाज़ा खुला तबतक मजदूर विचारता रहा कि यह स्त्री सौदा-सुलफ लेनेवाली बांदी है या घरकी मालकिन है। क्योंकि वह सजधज से बांदी नहीं विदित होती थी। इतने में एक स्त्री ने आकर दरवाज़ा खोला। मजदूर उसके अनूप रूप और हावभाव को देख विह्वल होगया और उसके शिरपर से भार गिरने लगा। जो स्त्री उसको अपने साथ लाई थी वह उसकी बेसुधि का तमाशा देखने लगी। दूसरी स्त्री ने कहा कि यह बेचारा मजदूर भार से दबा जाता है घर में शीघ्र लेजा और टोकरा उतरवा ले। तदनन्तर मजदूर के घुसने के पीछे पहली स्त्री ने अन्दर से किवाड़ बन्द करलिये। फिर वे दोनों स्त्रियां मज़दूर सहित एक बडे मकानमे गईं जिसके चारों ओर सुन्दर खंभों के बरामदे बनेहुये थे और उसके बीच में बड़ाभारी दालान था। इसके विशेष एक ओर बैठने का स्थान उत्तम उत्तम वस्तु और बर्तनो से सजा हुआ था। उसमें सन्दल व ऊद की लकड़ी का एक सुन्दर सिंहासन रक्खा था जिसके चारोंओर बहुमूल्य मणिमाणिक जटित बिछौना बिछा था। वहां संगमरमर के कुण्ड से फव्वारे छुटरहे थे। यद्यपि वह मजदूर भार उठाने के कारण थकित होगया था तथापि उत्तम मकान की सजावट देख बहुत प्रसन्न हुआ। और तीसरी

कि वह रोती और पीटती है। मैंने उसके रुदन पर कुछ विचार न कर उसे अकेली वहांही छोड़ अपने गृह में आया और कमरे में शय्यापर जा लेटा उसके मारने से मुझे कुछ धैर्य हुआ और मैं सोरहा। फिर सवेरा हुये रानी को अपने पासही सोती देखी पर अच्छेप्रकार जान पड़ा कि वह सोती न थी वहाना किये थी। मैं उसे इसी दशा में छोड़करके उठ खड़ा हुआ और राजसी वस्त्र पहिन लिये फिर राजसभा में गया। जब दरबार से मंदिर में आया तो उस रानी को शोक के काले वस्त्र पहिने देखी। उसने शिर के बाल खोल लिये और मुझ से बोली कि स्वामी! मुझे शोक की दशा में देख अप्रसन्न न होना। मैंने तीन बुरे समाचार पाये हैं इसीसे मेरी यह दशा है। मैंने पूछा कि प्रिये! वे कौन से समाचार हैं। वह बोली एक तो यह कि मेरी माता मरगई, दूसरा यह है कि मेरा पिता युद्ध में मारागया और तीसरा यह है कि मेरा भाई ऊंचे से गिरकर मरगया। मैंने यह सुनके कुछ शोक न किया क्योंकि मैं सब भेद जानताही था। उसके वर्णन से मुझे सूचित हुआ कि उसको मेरे हाथ से अपने यार के मारे जाने का वृत्तान्त मालूम न था। इसलिये उससे कहा कि यह बात कुछ अप्रसन्नता की नहीं है किन्तु जो तुम ऐसे अशुभ समाचार को सुनकर कुछ शोक न करती तो निस्संदेहही मैं झूठ मानता। तदनन्तर वह एकवर्ष तक इसीप्रकार से कमरे में जाकर रोती पीटती रही। इसके पश्चात् उसने मुझसे कहा कि मैं एक मंदिर अलग बनवाकर उसमें रहा करूंगी। मैंने उसको इस विषय में भी न रोका। फिर उसने एक बड़ाभारी

स्त्री को उस सिंहासन पर बड़ी सजधज से बैठी हुई देखकर तो अपना श्रम भी भूलगया। वहां उसको विदित हुआ कि इस तीसरी स्त्री का नाम जुबैदा है और यही इस घरकी स्वामिनी है और दूसरी स्त्री का नाम साक़ी है तथा वह स्त्री जो सामग्री लाई थी उसका नाम अमीना है। जुबैदा ने कहा कि हे बीबियो! इस बेचारे मज़दूर के शिर से शीघ्रही भार उतारो। तब उसके कहने से साक़ी और अमीना ने टोकरे को उतारा और उसको खाली करने लगीं। जुबैदा ने उस की मज़दूरी से भी अधिक द्रव्य उस मज़दूर को दिया। उस ने वह द्रव्य पाय, अत्यन्त प्रसन्न हो, जाने की इच्छा की परन्तु उन सुंदर स्त्रियों के देखने से उसका चित्त न अघाता था। अबतक वह वहां से चला न था कि अमीना ने भी अपने मुख से वस्त्र उतारा। मज़दूर तो केवल उसकी छबीली चाल और कोमल वाणी परही मोहित था परन्तु अब उसके अनूप रूप और छवि को देखकर और भी खड़ा रहगया। आश्चर्य यह था कि इस गृह में तीन स्त्रियों के सिवाय चौथा कोई न था परन्तु खाने पीने की सामग्री इतनी लाई थी कि ३० मनुष्यों को पर्याप्त थी। जुबैदा उसके खड़े रहने से समझी कि थकगया होगा सुस्ताने के वास्ते ठहरगया है। जब वह चिरकालतक ठहरारहा तो उसकी ओर देखकर कहा क्या तू कुछ और चाहता है? क्या तैंने अपनी इच्छानुसार मज़दूरी नहीं पाई? फिर उसने अमीना से कहा कि इसको कुछ और दे बिदा करो। मज़दूर ने कहा हे स्वामिनी! मैंने मज़दूरी तो बहुत अधिक पाई है परन्तु कुछ विनय किया

मन्दिर गुम्मज़दार वनवाया जो यहां से दिखाई दे रहा है और उसका शोकागार नाम धरा। जव वह गृह वनचुका तो वह अपने प्यारे सहित उस शोकागार में गई और कोई ऐसी औषध अपने विचार से उसे खिलाती रही कि इतना घायल होनेपर भी वह न मरा। वह स्त्री प्रतिदिन उस शोकागार में औषध खिलाने जाती थी परन्तु वह इतने मंत्र और उपाय करने पर भी न तो खड़ा होसका और न उसमें चलने की सामर्थ्य आई और न वातेंही करसका। केवल देखाही करता था। रानी को उसके देखने से धैर्य होता था और उससे प्यार और प्रीति की वातें करकेही अपने मनको धैर्य दिया करती थी। वह दिनमें दो वार उसके समीप जाती और वहुत देरतक वहां रहती थी। यद्यपि रानी का वह वृत्तान्त मुझे विदित भी था तथापि मैं अनजानही वनारहा। एक दिन मैं उस शोकागार में जाय ऐसे स्थान में छिपकर वैठा कि जहां से सव कुछ मैंने सुना और रानी ने मुझे न देखा। वह अपने प्यारे से कहती थी कि मैं अपनी आंखों से तुम्हें ऐसी विपत्ति मे देखकर वहुत दुःखित होती हूं। हे मेरे प्राणप्यारे! मैं नित्य तुम्हारे पास आकर वार्त्ता करतीहूं पर तुम मेरी एक वात का भी उत्तर नहीं देते हो। मैं इसी चिन्ता में मरतीहूं कि तुम कवतक चुपरहोगे। यदि मुझ से एक भी वात करो तो मुझे अत्यन्त धैर्य होवे। जवतक मैं तुम्हारे निकट वैठी रहती हूं तवतक मेरे चित्त में धैर्य रहता है और केवल तुम्हारे देखनेसे ही मै प्रसन्न रहती हूं इसी प्रकार अपने प्यारे से कहती और रुदन करती थी। मैं इतनी विह्वलता

चाहताहूं यदि आप मेरी ढिठाई और अपराध को क्षमाकरें तो। जुबैदा ने कहा—कहो क्या कहते हो। उसने कहा कि मैं तुम्हारे समान रूपवती और सुन्दर स्त्री नहीं पाताहूं इससे में अत्यन्त आश्चर्यितहूं और स्त्रियों के बीच में पुरुषका न होना यह भी आश्चर्य है। जैसा मर्दों में स्त्री का न होना। इस विषय में मजदूर ने उत्तम उत्तम दृष्टान्त कहे अर्थात् जबतक चार मनुष्य इकट्ठे होकर भोजन न करें यह भोजन बेस्वाद है और तबतक खानेवाले अघाते भी नहीं हैं। उसका अभिप्राय यह था कि उन तीनों स्त्रियों मे भोजन के समय चौथे पुरुष का होना आवश्यकीय है। जुबैदा मजदूर की यह बातें सुन बहुत हँसी और कहा कि तू अपनी निर्बुद्धिता की बातें अपने पास रख। केवल हम तीन बहिनें हैं। हम तीनों अपने कार्य को अच्छेप्रकार सिद्ध कर लेती हैं कि कोई दूसरा मनुष्य उसे न जाने और विचार रखती हैं कि कोई हमारा भेद न जाने। मजदूर ने कहा कि हे स्वामिनी! तुम बड़ी बुद्धिमती हो। मुझे बहुत कुछ स्मरण और मालूम है परन्तु अपने दुर्भाग्य से मजदूरी करताहूं। यद्यपि मेरा कार्य अति तुच्छ है तथापि मैं चैतन्य हूं और मैंने बहुतसी इतिहास आदिकी पुस्तकें देखी हैं यदि आज्ञा हो तो कोई इतिहास सुनाऊं? बुद्धिमान् को चाहिये कि वह अपने भेदको चतुर से गुप्त न रक्खे क्योंकि वह भेद गुप्त रखना भलीभांति जानता है। मुझसे भेद कहना इसप्रकार है कि जैसे किसी वस्तुको कोठे में बन्द करादिया हो और उसकी कुञ्जी खोगई हो। जुबैदाको मालूमहुआ कियह मजदूर बड़ा योग्य और समझ-

होकर भी अपने को इस मारपीट से नहीं बचा सक्ता है ! इतना कह शहरयारने कहा कि फिर वह नेत्रों को ऊपर की ओर कर परमेश्वरसे प्रार्थना करनेलगा कि हे सामर्थ्यवान् ! हे सर्वोत्पादक ! यदि तुम्हारी इच्छा और अप्रसन्नता इसी में है कि मुझपर इसीप्रकार अनर्थ हुआ करे तो मैं इसीमें प्रसन्न हूं और धन्यवाद देताहूं । मुझे तुम्हारी ही पूर्ण कृपापर विश्वासहै कि एकदिन अवश्यही मुझे इस दुःखसे छुटावोगे ।जब उस बादशाह ने यह अद्भुत वृत्तान्त सुना तो बहुत चिन्ता करनेलगा और चाहा कि इस बादशाहको इस दुःखसे छुटावें और उस रानी से बदला लें । फिर पूछा कि वह निर्लज्ज जादूगरनी अब कहां है और वह दुष्ट कहां रहता है कि जिसके पास वह प्रतिदिन जाया करती है । बादशाहने कहा कि मैंने पहिले आपसे नहीं कहा कि वह शोकागारमें है । वह शोकागार इसीसे मिलाहुआ है और उसकी राह भी इसी मकानमें आगई है । उस जादूगरनी के रहने का स्थान मुझे मालूम नहीं है परन्तु वह प्रतिदिन मुझे दण्ड देने के लिये प्रातःकाल आती है तदुपरान्त अपने प्यारे के पास जाय उसे किसी प्रकारका अर्क पिलाती है जिससे वह अबतक जीता रहा है । बादशाहने यह सुनके कहा कि कोई भी मनुष्य तुम्हारा सा दुःखी नहीं होगा । यह तुम्हारा अद्भुत वृत्तान्त इतिहास की तरह लिखरक्खा जावेगा । फिर वह बादशाह उस दुःखितबादशाहको आशा भरोसा दे रात्रिहोने पर वहांही सोरहा । फिर दूसरे दिन वह बादशाह छिपकर उस शोकागारमें गया जहां

दार तथा सत्संग करने के योग्य है इसको अपने साथ भोजन कराना चाहिये। फिर हास्य से कहा कि तू जानता है कि हमने अपने हाथों इस भोजन को अत्यन्त श्रम और द्रव्य खर्चकर बनाया है और तैंने कुछ खर्च नहीं किया है इसलिये हम तुझे अपने साथ भोजन नहीं करासक्तीं। साक्री ने भी मजदूर से कहा कि यह दृष्टान्त नहीं सुना (छूछा किन पूछा मजदूर)। वह बिचारा उसका उत्तर न देसका और वहां से चलेजाने की इच्छा की। अमीनाने उसकी ओर से जुबैदा और साक़ी से कहा कि इसको यहां रहने दो। यह हमको अपनी वाचालता से बहुत प्रसन्न करेगा और हँसायेगा। तुम नहीं जानती हो कि यह बड़ा हँसोड़ और प्रसन्नचित्तहै। राहभर अपनी हँसी और मसखरापन से मुझे हँसाता, खिलाता आया है। मजदूर अमीना के पक्षसे बहुत प्रसन्न हुआ और नम्र होकर उन तीनों स्त्रियों से विनय की कि मैं ऐसा मनुष्य नहीं हूं कि तुम सबके उपकार को भूल तुम्हारी इच्छाके विपरीत करूं। यह कहकर उसने वही द्रव्य फेरदिया। उन्होंने कहा कि तू हमारे साथ जब रहसक्ता है कि जो बात हम तेरे सम्मुख करें उसको न पूछे। इसके पीछे अमीना ने चलने फिरने के वस्त्र उतार अपने वस्त्रका दामन बांधलिया और अनेक प्रकारके भोजन और मदिरा के पात्र लाय उचित स्थान पर रखदिये तब वे स्त्रियां उस भोजनके चारोंओर आ बैठीं और मजदूर को भी एक ओर बैठने की आज्ञा दी। मजदूर इस आज्ञासे बहुत प्रसन्न हुआ। फिर अमीना ने मदिरा का एक गिलास भरा और अपने देशकी रीत्य-

नुसार सबके पहिले आप पिया फिर अपनी बहिनों को दिया फिर चौथा गिलास मज़दूर को दिया। उसने उसके हाथ चूंब पीने से पहिले इस विषय का एक गीत गाया जिसके सुनने से वे स्त्रियां अत्यन्त प्रसन्न हुईं। उन्होंने शराब के नशे में पारी पारीसे गीत और राग गाये इससे बहुत समय व्यतीत होगया और रात्रि होगई। साक़ीने अपनी बहिनोंसे कहा कि अब इस मज़दूर का कुछ काम नहीं है इससे कहो कि अपने घर जावे। मज़दूरको ऐसा संग छोड़ने से अप्रसन्नता हुई इस लिये सबसे विनय की कि बड़ा पश्चात्ताप है जो ऐसे समय में मुझको निकालती हो इस शराब के नशे में अपने घरतक किसप्रकार पहुँचूंगा। यदि आज्ञा हो तो यहींपर किसी कोने में पड़ारहूं। अमीनाने फिर उसका पक्ष लेकर कहा और उस को वहां रहने की आज्ञा दिलादी। और उसको समझादिया कि हमारे चरित्र देखकर किसी विषय में पूछताछ न करना। यह हमारे यहां का नियम है। देखो क्या लिखा है। मज़दूरने दरवाजे के भीतर जाकर देखा कि उसमें सुनहली मोटी क़लम से ऐसा लिखाथा "जो मनुष्य भीतर जायगा और उस विषयमें जिसमें उसको सम्बन्ध नहीं है पूछेगा तो वह अनुचितशब्द सुनेगा और अत्यन्त व्यथाको प्राप्त होगा कि जिससे वह पछतावेगा" मज़दूरने उसको पढकर कहा कि मैं तुम्हारी किसी बात में न बोलूगा, तुम धैर्यरक्खो। फिर अमीना रात्रिको भोजन लाई और उस जगह सुगन्ध और दीप जलाये कि जिससे सम्पूर्ण गृह सुगन्धित और प्रकाशित होगया। फिर वे तीनों मज़दूर सहित भोजनपर बैठीं और कुछ

धरतीपर मारे और तीनवेर तालीवजाकर कहा तुरन्तआवो। इतना कहतेही एक किवाड़ खुलगया और उसमें से सात हव्शी अति वलवान् और हष्टपुष्ट नंगी तलवारें लियेहुये निकल आये और हरएक ने एक एक को पृथ्वीपर पछाड़ा और मारडालना चाहा। परन्तु कुछ विचार कर एक हव्शी ने जुवैदा आदिक से पूंछा कि हे सुंदरियो! क्या तुम्हारी आज्ञा है कि हम इनको मारडालें? जुवैदा ने उत्तर दिया कि अभी ठहरजाओ। पहिले इनसे कुछ पूंछलें। फिर हरएक से उनका वृत्तान्त पूंछनेलगी। सबके पहिले मजदूर ने कहा कि ईश्वर के लिये मुझ निर्दोष को न मारो, मैं निपट निर्दोष हूं और ये सब अपराधी है। फिर रोकर कहने लगा कि बड़ा पछतावा है कि मैं इन योगियों के कारण इस दुःख में पड़ा। इनके कुरूप और कुशकुन चरणों से बहुत से नगर निर्जन होगये होंगे। मुझपर दयाकीजिये। जुवैदा उसका रोना पीटना सुन हँसपड़ी और कहनेलगी कि हरएक मनुष्य अपना ठीक ठीक वृत्तान्त कहे कि कौन है और कहां से आयाहै और क्या क्या गुण रखता है और यहां आने का क्या कारण है। यदि कुछ भी झूठ बोलेगा तो निस्संदेह मारा जावेगा। वादशाह औरों से भी अधिक व्याकुल हुआ कि उस कुपित स्त्री से वचना कठिन है। इसी व्याकुलता में सोचा कि यदि यह मेरी पदवी मालूम करेगी तो निश्चय मुझको छोड़ देवेगी। तदनन्तर उसने मंत्री से भी पूंछा, परन्तु उस बुद्धिमान् मंत्री ने न चाहा कि अपने स्वामी की प्रतिष्ठा खोऊं इससे मौनही रहा। इतने में जुवैदा ने उन तीनो योगियों से पूंछा कि क्या तुम तीनों

खा पीकर अपनी भाषा के काव्य और विचित्र राग गाये। इतने में किसी मनुष्यने दरवाज़ा खड़खड़ाया जिसको सुन वे खड़ी होगई। साक़ी दौड़के सबके आगे बढ़गई और किवाड़ खोलके ज़ुबैदासे आकर कहनेलगी कि तीन योगी एक ही स्वरूप के दरवाजे पर खड़े हैं। वे तीनों दाहिनी आंखों से काने हैं। तुम उनको देख बहुत हँसोगी। उनके शिर, दाढ़ी, मूछें और भवें सब मुड़ी हैं। वे इस नगर में उतरा चाहते हैं और कहते हैं कि एक रात्रि के निमित्त हमको स्थान दो कि जहां पड़कर सोरहें सबेरेही चले जावेंगे। हे बहिन! उनको आने दो वे हम सबको रातभर प्रसन्न करेंगे और हमको किसीप्रकार का कष्ट न देंगे। ज़ुबैदाने साक़ीसे कहा कि यदि तेरी इच्छा यही है तो उनको ले आ परन्तु सब बातें उनको समझा दीजियो कि हमारे कार्य में न बोलें और जो किवाड़ के पाटपर लिखा है पढ़लें। साक़ी इस बात को सुन किवाड़ खोलनेगई और शीघ्रही उन तीनो योगियों को अपने साथ लिवालाई। योगियों ने ज़ुबैदा और अमीना को झुककर प्रणाम किया। उन्होंने प्रणामका उत्तर दे कुशल क्षेम पूछी और भोजन करने में अपने साथ बैठालिये। योगियों ने मजदूर को देख पूछा कि यह अरब का रहनेवाला मनुष्य धर्म के विपरीत कैसे मदिरापान करता है? मजदूर ने इस बात से अत्यन्त अप्रसन्न हो उत्तरदिया कि तुम आपही अधर्मी हो कि दाढ़ी और मूछ मुड़वाकर अन्योंको उपदेश करतेहो। इसीप्रकार जब मजदूर और योगियोंका झगड़ाबढ़ा तो उन स्त्रियोंने शान्तिके लिये योगियों को मदिरा पिलाई। जब वे मदिरा

भाई हो ? उनमें से एकने कहा नहीं, एकवेष अवश्य हैं। और इसी प्रकार अपना जन्म काटतेहैं। फिर उसने योगियों से पूंछा कि क्या अपनी माता के उदरसे काणे उत्पन्न हुये थे ? एक ने कहा नहीं, किसी दुःख के कारण हमारे नेत्र जाते रहे हैं वह लिखने के योग्य है। उससे हर मनुष्यको उपदेश होगा। उस आपत्ति के कारणही हमने डाढ़ी, मूछें और भवें मुड़वा डालीं और योगी बनगये हैं। ज़ुबैदा ने दूसरे योगीसे भी पूंछा परन्तु उसने भी वही उत्तर दिया और तीसरे ने भी यही कारण बताया और कहा कि यदि आप हम पर दया करें तो हम अपने २ वृत्तान्तको वर्णनकरें। हम तीनों शाहज़ादे हैं। आज सन्ध्याकोही हम परस्पर मिले हैं। हम परदेशी हैं। विश्वासकर जानिये कि जिनके हम तीनों पुत्र हैं वे बड़े नामवर बादशाह हैं। हम अपने॰अपने दुःख का वृत्तान्त वर्णन करेंगे। ज़ुबैदा का क्रोध इन बातों को सुन कुछ शान्त हुआ और उन हब्शी गुलामों को आज्ञा दी कि इनके हाथ पैर छोड़ दो कि जिससे अपने अपने स्थान पर बैठकर अपना अपना वृत्तान्त और इस घर में आने का कारण वर्णनकरें। जब वृत्तान्त कहचुकें तब उनको छोड़देना और जो अपना वृत्तान्त न कहे उसको वध करडालना। तदनन्तर सब अपने अपने स्थान पर बैठगये और वे हब्शी सबके शिर पर नंगी तलवार लिये खड़े होगये कि ज़ुबैदा का हुक्म पाय उनको वधकरें। सबके पहिले मज़दूरने अपना इस प्रकारसे वृत्तान्त कहना आरम्भकिया॥

मज़दूर की कहानी॥

मज़दूर ने कहा कि हे सुंदरी! तुम्हारे घर में आने का

में उन्मत्त हुये तो उन्हों ने कहा कि यदि कोई बाजा होता तो हम बजाते। साकीने बाजा और बांसुरीआदि ला दिये। योगी लोग उन बाजोंको प्रसन्न होकर बजाने लगे और उन तीनों स्त्रियोंने बाजोंसे अपना स्वर मिलाकर मीठे स्वरोंसे गाना आरम्भ किया। वे कभी तो परस्पर हँसते और कभी वाह वाह करते थे। उस बाजे के बजने और गाने और हँसी ठट्ठेका बड़ा शब्द हुआ जिससे सम्पूर्ण भवन गूंजउठा। इसी समयान्तर में उन्होंने सुना कि कोई मनुष्य दरवाजेपर ताली बजाताहै। साक़ी गाना छोड़ दौड़ीगई कि मालूमकरें दरवाजे पर कौनहै। रानी शहरज़ादने शहरयारसेकहा कि इसस्थान पर यह बतादेना उचित समझती हूं कि किस मनुष्य ने दरवाजे पर आकर ताली बजाई थी। खलीफ़ा हारूंरशीद का सदैव यह नियमथा कि रात्रि के समय वह अपना वेष बदल कर सम्पूर्ण नगर में अपनी प्रजाका हाल मालूम करने के हेतु फिरा करताथा सो वह अपने बड़े मंत्री जाफर और सरदार मसरूर सहित व्यापारियों का वेष बनाय नगर में निकला था। दैवयोग से जिस स्थानपर वे तीनों स्त्रियां रहती थीं वहां होकर निकले। खलीफ़ा ने रागोंका शब्द सुन जाफरसे कहा कि इस गृहका किवाड़ खुलवा में इसके अन्दर जाकर इस शब्दका वृत्तान्त मालूम करूं। मंत्री ने खलीफा से कहा कि यहां तो स्त्रियोंका गाना सुनाई पड़ताहै। उन्होंने भोजनकर मदिरा पीहै उसके नशे में गाय बजा रही हैं आपको उचित नहीं कि उनके हास्य में कुछ विघ्न करो। खलीफ़ाने मत्री की यह बात स्वीकार न की और आज्ञा दी

कारण यह हुआ है कि आज सवेरे मैं बाजार में अपना टोकरा लिये हुये मजदूरी के लिये खड़ा था इतने में तुम्हारी बहिन ने मुझे बुलाया और बहुत से सामान मोल लेकर मेरे शिर पर रखवा इस घरमें लेआई और तुमने कृपाकर मुझ को अबतक यहां रहने दिया। मेरा यही वृत्तान्त है। तब जुबैदा ने उससे कहा कि अपने घर चलेजाओ, फिर मेरे सम्मुख कभी मत आइयो। मजदूरने विनय की कि यदि मुझे आज्ञा हो तो मैं ठहरके इन लोगों की भी कहानी सुनूं, जैसे कि उन्होंने मेरा वृत्तान्त सुना है। फिर वह जुबैदा की आज्ञानुसार दालानके एक कोने मे जा खडा होगया। फिर जुबैदा ने उन तीनों योगियों से कहा कि अब तुम भी अपना अपना वृत्तान्त वर्णन करो। उनमें से एकने अपनी कहानी को इसप्रकार कहना आरंभ किया॥ इतिसैंतालीसवां प्रदीप॥

अथाष्टचत्वारिंशः प्रदीपः।

पहिले योगीकी कहानी॥

स्त्रीणां दुर्घटघटनाकथने ग्लानिरद्भुता॥
या भ्रात्रापि सुहूरेमे पित्रा संरक्षिता यथा ४५॥

अर्थ। स्त्रियों की दुर्घट घटना के कहने में भी बहुत ग्लानि होतीहै जैसे पिता से रक्षित होकर भी जो भाईके साथ निरन्तर रमण करती भई ४५॥ दृष्टान्त॥ पहिले योगी ने घुटने के बल खड़े होकर जुबैदासे कहा कि हे सुन्दरी! मैं एक बड़े बादशाह का पुत्र हूं। मेरा एक चचा जो मेरे पिताके तुल्य ऐश्वर्यवान् था और नगरके समीपही रहताथा उसके दो सन्तानथे एक पुत्र

कि तू शीघ्र जाकर उनके किवाड़ खुलवा । यह आज्ञापाय जाफ़र ने उस दरवाज़े पर ताली बजाई थी । फिर साक़ी ने किवाड़ खोला । मंत्री उसके रूपको दीपकके प्रकाश में देख आश्चर्यित हुआ और कुछ विचार कर कहने लगा कि हे मृगनयनी ! हम मवस्सल नगर के वासी तीन व्यापारी हैं तीन दिन व्यतीत हुये कि बहुमूल्य वस्तु व्यापारकी ले इस नगरमें आये हैं और एक सराय में उतरे हैं । आजकी रात इस नगर के एक व्यापारी ने हमको न्योता दियाथा । हम उसके गृह गये तो उसने उत्तम व्यञ्जन खिलाये और मदिरा पिलाई जब हम मतवाले हुये तो उसने नृत्यके वास्ते आज्ञादी इसमें बहुत रात्रि व्यतीत होगई और सभामें बाजे और नृत्य आदिसे बड़ा शब्द होने लगा संयोगवश कोतवाल वहां आ-गया और दरवाज़ा खुलवाया उसने उस सभाके बहुत से मनुष्यों को क़ैद करलिया । हम भाग्यवश बचगये और वहां निकल आये । हम अजानकार और भयभीत हैं ऐसा न हो कि हम फिर कहीं राहमें कोतवालके हाथसे पकड़े जावें और उस सरायतक कि जिसमें हम उतरे थे पहुँचने न पावें । यदि वहां पहुँचे भी तो सराय के किवाड़ बन्द पावेंगे । जिससे प्रातःकाल तक हम इधर उधर फिरतेरहेंगे । हे सुन्दरी ! यहां हमने गाने बजाने का शब्द सुन जाना कि इस गृहके मनुष्य अभी नहीं सोये हैं इससे यहां आये हैं अब हम आशा रखते हैं कि कोई मकान हमको बतादो कि हम उसमें पड़रहें । यदि हमको योग्य समझो तो इस गीत नृत्य में भी मिलालेना । क्योंकि तुम सब अच्छेप्रकार गाते बजाते हो

मेरे बराबरका था और दूसरी पुत्री थी। मैं प्रतिवर्ष एक वार अपने पिताकी आज्ञानुसार अपने चचाकी भेंटको जाता और वहां एक दो मास रह फिर अपने देशमें लौट आताथा। इस आने जानेसे मुझमें और चचाके लड़केमें अत्यन्त प्रीति होगई। एक दिनकी भेंटमें मैंने उसे अधिक प्रसन्न पाया और उसने पहिलेसे अधिक मुझसे प्रीति की तथा अत्यन्त प्रतिष्ठा-कर मुझे भोजन कराया और अद्भुत तमाशे दिखलाये उसके पश्चात् उसने मुझसे कहा कि मैंने कितना अच्छा और कितनी जल्दी तुम्हारे जाने के पीछे बहुत से कारीगर लगाकर एक मकान बनवाया है। वह अब बनचुका है। मेरी इच्छा रात्रि के समय उसमें शयन करनेकी है। जो उस घरको देखोगे तो बहुत प्रसन्न होगे परन्तु पहिले आप शपथ कीजिये कि इस भेदको किसीसे न कहूंगा। मैंने पुरातन प्रीति के कारणही तुमसे यह कहा है आप स्वीकार कीजिये। मैंने उससे शपथ की। इसके पीछे वह उठा और कुछ काल पीछे एक परम सु-न्दरी स्त्री को अपने साथ लेकर आया। न तो उसने मुझसे बताया कि वह स्त्री कौन है और न मैंने उस स्त्री का वृत्तान्त पूंछना उचित समझा। तदनन्तर हम दोनों भाई और वह स्त्री बैठकर इधर उधरकी वार्ता करनेलगे और गिलास भर भर मदिरा पीतेरहे। फिर वह शाहज़ादा वहां अधिक देर ठहरना उचित न समझ उठा और मुझसे कहनेलगा कि तुम इस सुंदरी को अपने साथले इस मार्गसे उस श्मशानमें जाओ और जहां कहीं नवीन कबर गुम्बद के समान देखना तो जानना कि यही दरवाजा उस घर का है जिसको कि मैंने अभी तुम से

और हम भी तुम्हारी इस विषय में सहायता करसक्ते हैं। उसने उत्तर दिया कि मैं इस गृहकी स्वामिनी नहीं हूं यदि थोड़ीदेर ठहरो तो मैं तुम्हारी बात का उत्तर लादूं। साक़ीने यह सम्पूर्ण घृत्तान्त अपनी वहिनों के सम्मुख जाय वर्णन किया। उन्होंने कुछ सोच विचार साक़ी को आज्ञा दी कि जा उन तीनों व्यापारियों को भी अन्दर लेआ। फिर वे तीनों भीतर आये और बड़ी अधीनता से उन स्त्रियों और योगियों को प्रणाम किया। उन्होंने उनको व्यापारी समझ उसीप्रकार से उनके प्रणामका उत्तर दिया। जुबैदाने उनसे कुशलक्षेम पूछी और कहा कि हम तुमसे जो प्रश्नकरें उसका बुरा न मानना। मंत्री ने कहा कि वह कौनसी वातहै कि तुम ऐसी सुन्दरियों के कहने से बुरी जानपड़े। जुबैदाने कहा कि जो कुछ तुम देखो उस बातमें प्रश्न न करना और जो जो विषय तुम से सम्बन्धित नहीं हैं उसका वृत्तान्त न पूछना नहीं तो तुम्हारी अप्रसन्नता का कारण होगा। मन्त्री ने कहा हे सुन्दरी! हम तुम्हारी आज्ञानुसार करेंगे। हमें किसी व्यर्थ विषयको पूछना आवश्यकीय नहीं है। यह परस्पर प्रतिज्ञाकर सब को भोजन कराये और मदिरा पिलाई। जबतक मंत्री जुबैदा से वार्ता करता रहा खलीफा उन स्त्रियों के अनूप रूप, छवि और बुद्धिमानी को देख अति आश्चर्यित हुआ। विशेष कर उन तीन योगियों को देखकर कि जो तीनों दाहिनी आंख से काने थे। बहुत चाहता था कि इस अद्भुत चरित्र को उनसे पूछें परन्तु उसके साथियों ने पूछने न दिया। खलीफ़ा उन विचित्र सामानों को देख चित्त में

वर्णन कियाथा। तुम दोनों उस घर के भीतर जाना। मैं भी पीछे से आताहूं। फिर मैं उस स्त्री को साथ ले चन्द्रमाकी चांदनी में बहुत आनन्दसे वहां पहुँचा। वह शाहज़ादा हम से पहले ही पानी का लोटा और चनेकी टोकरी लिये वहां पहुँच चुका था। उसने फडुहे से मिट्टी निकाली और पत्थरोको वहांसे उठाय एक ओर लगाया। फिर पृथ्वीमें एक छिद्र किया। वहां हमें एक दरवाज़ा देखपड़ा। उसने उसे खोला और उस सुन्दरी से कहा कि यही मार्ग उस द्वार का है जिसका कि मैंने तुमसे वर्णन कियाथा। वह सुन्दरी इस बातके सुनते ही वहां आई और सीढ़ी के मार्गसे नीचे उतरगई और शाहज़ादा भी उसी के पीछे चला गया। उस मकानमें उतरने के पहिले उसने मुझसे कहा कि मैं इस बड़े श्रम से जोकि तुमने मेरे कारण उठाया है तुम्हारा धन्यवाद करताहूं और तुमसे बिदा होताहूं। मैंने उससे बहुत पूछा कि तुम कहां जाते हो परन्तु उसने कुछ न बताया परन्तु इतना कहा कि दरवाजे पर मिट्टी डाल बराबर करदेना और जिस मार्ग से आये हो उसी मार्ग से चले जाओ। मैं लाचार होकर उस दरवाज़े पर मिट्टी डाल वहां से अपने चचा के मन्दिर पर आया और शिरकी पीड़ा के कारण अपने मकान पर जाय सोया। जब प्रभात को उठा तो रात्रि की बातको स्मरणकर चिन्तायुक्त हुआ। फिर मैंने अपने सेवक से कहा कि तू मेरे भाई शाहज़ादे का समाचार ला कि उसने जगकर वस्त्र बदले हैं या शयन करते हैं। उसने वहांसे लौटकर कहा कि रात्रि मे वह अपने स्थान पर न थे और यह भी कोई नहीं जानता कि वह कहां हैं और किधर

कहता था कि ये सब वस्तुएं जादू और मंत्रविद्या से अवश्य सम्बन्ध रखती हैं । इतने में एक योगी ने अपने देशकी रीति पर नृत्यकरना आरम्भ किया । वे स्त्रियां उसका नाच देख कर बहुत प्रसन्न हुईं । खलीफ़ा और उसके साथियों ने भी अत्यन्त प्रशंसा कर धन्यवाद दिया । जब योगियों का नृत्य होचुका तब जुबैदा अपने स्थान से उठी और अमीना से कहनेलगी कि हे बहिन ! तुम जानती हो कि ये सम्पूर्ण सभासद् हमारे अधीन हैं इनका होना हमारे कार्य में विघ्न नहीं करसक्ता है । आवो अपना कार्य करें । अमीना अभिप्रायको समझ गई और सब सामान उठाकर रखदिये । साक़ी ने भी अपनी बहिन के साथ हो उस कमरे को साफ़ किया और प्रतिवस्तुको सँवारके रक्खा । फिर वहां रोशनी आदि कर उन तीनों योगियों और खलीफा आदिको एक और दालान में बैठा दिया और मज़दूर से काम कराने के लिये कहा । वह उठ खड़ा हुआ और वस्त्र कमर मे लपेट कार्य में तत्पर होगया । फिर थोड़ीदेर के पश्चात् अमीना ने दालान में एक चौकी बिछाई और मजदूरको अपने साथलेजाकर एककोठरी से दो काली कुत्तियां निकलवाईं । प्रत्येक कुत्तियों के गले में पट्टे बँधे हुये थे । फिर मज़दूर उन दोनोंको खींचकर दालान में लेगया । जुबैदा उन्हेंदेख बड़ी तमकसे उठी और ठंढी सांसें भर आस्तीन ऊपर को चढ़ाई और चाबुक ले मज़दूरसे कहा कि एक कुतिया मेरी बहिन अमीना को दे और दूसरी मेरे पास ला । मज़दूरने उसकी आज्ञानुसार किया । कुतिया चिल्लाने और मुँहफेरके जुबैदाकी ओर देखने और उसके चरणों

गये इस कारण उनके सब सेवक और घर के मनुष्य अति विस्मित और चिन्ता में हैं। मैंने विचार किया कि अवश्य उसी घर में होगा। मुझको उसके न होने और न देखने से अति चिन्ता हुई। फिर छिपकर उसी श्मशान में गया और संपूर्ण दिवस उस गृह के ढूंढ़ने में व्यतीत किया परन्तु उस घर का कुछ भी चिह्न न पाया। इसी प्रकार चार दिनतक उसकी ढूंढ़ में भटकता रहा परन्तु कहीं उसका पता न लगा। हे सुन्दरियो! उन दिनों में मेरा चचा आखेट के लिये बाहर गया हुआ था। मैं उसके आगमन की आशा से कुछ दिन तो ठहरा फिर अपने पिता के पास जाने की इच्छा की और मन्त्री से कहा कि मैं अबकी बार पहले से अधिक ठहरा हूं अब मेरा पिता मेरी ओर से चिन्तायुक्त होगा। जब चचा जी आखेट से लौट आवें तब मेरी ओर से प्रणाम कहनेके पश्चात् यही बात कह देना। मंत्री उस समय शाहजादे के खोजाने से अत्यन्त व्याकुल और चिन्तायुक्त था। फिर मैं वहां से अपने पिता की राजधानी में लौट आया। वहां मैंने घरके दरवाजे पर बहुत सी सेना का पहरा देखा। उन्होंने मुझे देखतेही क़ैद कर लिया। मैंने कारण पूंछा तो एक सेनापति ने उत्तर दिया कि हे शाहजादे! यह सेना बड़े मन्त्री की है। तुम्हारे पिता मरते समय इस मन्त्री को अपनी गद्दी दे गये हैं इसलिये इस नवीन बादशाह ने तुम्हारे पकड़ने के निमित्त हमें आज्ञा दी थी कि जहां कहीं पावो शाहजादे को पकड़ लावो सो आज तुम हमारे भाग्य से आपही यहां आगये हो इसलिये तुमको पकड़ लिया। यह कहतेही एक सेनापति मुझे

पर शिर रखके मलनेलगी। जुबैदा उसके रुदन करने और चिल्लाने पर विचार न कर चाबुक मारनेलगी यहांतक कि मारते मारते उसका श्वास चढ़गया। जब थकगई तो मारना छोड़दिया और जंजीर मजदूरके हाथसे ले उसके अगले पञ्जे पकड़ खड़ी की, और अति पश्चात्ताप कर रोई। फिर रूमालसे उस कुतिया के आंसू पोंछ, प्यार किया और मुख चूमा और मजदूर को देकर कहा कि इसको लेजा और दूसरी को ला। मजदूरने उस कुतिया को मकान में लेजाकर बांधदी और दूसरी अमीना के हाथसे ले जुबैदा को देदी। जुबैदाने उसको भी उसीप्रकार मारा। फिर उसके आंसू पोंछ, मुख चूम, मजदूर को दिया। मजदूर उसको भी मकानमें बांध आया। वे तीनों योगी और खलीफ़ा तथा उसके साथी इस वृत्तान्त को देख अति विस्मित हुये और अपने अपने चित्त में कहनेलगे कि जुबैदा क्यों इतने कठोरपन से उन कुतियों को मार उनके साथ रोई? ये पशु मुसल्मानो के विचार में अपवित्र हैं; उनके आंसू पोंछे और मुंह चूमा? इसीप्रकार वे सब परस्पर हौले हौले वार्ता करते थे। विशेषकर खलीफ़ा इस अद्भुत चरित्र के मालूम करने की अति लालसा करता था। मन्त्रीसे सैनकी पर मन्त्री सुनी अनसुनी कर दूसरी ओर देखनेलगा। फिर बादशाहने सैन से पूछा। उसने सैनसे विनय की कि यह समय पूछने का नहीं है। फिर जब जुबैदा थोड़ीदेर सुस्ताचुकी तो साफी ने उससे कहा, हे मेरी प्यारी बहिन! तुम अपने स्थान पर आ बैठो तो हम अपना कार्य करें। जुबैदा ने कहा अच्छा। फिर वह सभामें इसप्रकारसे आ

उस अन्यायी के निकट लेगया । हे सुन्दरी ! वह दुष्ट मन्त्री पहिले से अपने चित्त में मुझसे वैर रखता था । उसके वैर का कारण यह था कि एक दिन मैंने एक चिड़िया पर गुलेल चलाई संयोग वश वह मन्त्री की आंख में लगगई जिससे वह काना होगया। यद्यपि मैंने अपराध क्षमा करालिया था तथापि वह अब अवसर पाय मुझे देखते ही दौड़ा और अत्यन्त क्रोध से अपनी अँगुली डाल मेरी दाहिनी आंख निकाल डाली । यही मेरी दाहिनी आंख फूटने का कारण हुआ । फिर उस अन्यायी ने एक पिंजड़े में मुझे कैद किया और वधिकों को आज्ञा दी कि इसको नगर के बाहर ले जाकर वध करो और इसका मांस काट पशु पक्षियों को लुटा दो । वे वधिक मुझे अपने साथ ले नगर के बाहर गये जब मेरे वध करने की इच्छा की तो मैंने बहुत रोदन कर वधिकों से विनती की तब उनको मुझपर दया आई और मुझको छोड़ दिया और कहा कि इसदेश से निकलजा फिर कभी इधर मुख न करना । यह सुन मैंने अत्यन्त धन्यवाद किया और प्राण के बचने से आंख का दुःख भूलगया । फिर वहां से छिपकर चला और चचा के नगर मे पहुँचा । मैंने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त चचा से वर्णन किया । चचा ने कहा कि पश्चात्ताप है कि बुरे समय ने मेरे पुत्र के खोजाने पर भी मुझे अपने भाई के मरने का समाचार सुनाया । मैं उनको अपने प्राणसे भी अधिक रखता था फिर वह पुत्र को याद कर रोने लगा । मैं अपने चचा को ऐसी बुरी दशा में न देख सका और अधीर हो वह सम्पूर्ण वृत्तान्त जो मेरे नेत्रों

वैठी कि खलीफ़ा और उसके साथी दाहिनी ओर तथा ती
योगी और मजदूर बाईं ओर बैठे । एक घड़ी तक वह चुप
रही । फिर साफ़ी उस चौकी पर जो दालान में बिछीहुई
आकर बैठगई और अमीनासे कहा कि बहिन ! उठो ।
हमारे अभिप्राय को जानती हो । इस बातको सुन अमी
उठी और दूसरी कोठरी में गई । वहांसे एक सन्दूक उठाल
जो पीली साठिन से मढ़ाहुआ था और गिलाफ़ उसका ह
कारचोबी का था । उसने उसे खोल उसमेंसे एक नली निका
अपनी बहिन को दी । साफ़ी ने उसको ले वियोग और
रहमयी राग गाना आरम्भ किया जिसको खलीफ़ा आ
सभासद् सुन अतिहर्षयुक्त हुये । जब उसने देरतक गाय
जाय, सबको प्रसन्न किया तब बांसुरी अमीनाको देकर क
हे बहिन ! मैं थकगई अब तुम इसे बजावो और सभाको अ
पने गानेसे प्रसन्न करो । अमीनाने उस नली को लेकर थोड़
देर तक उसका स्वर मिलाया फिर एक उत्तम राग बजाय
फिर उस अपूर्व रागमें मूर्च्छित होगई । जुबैदाने उसके गा
बजानेकी अत्यन्त प्रशंसा की और कहा, अब तुम्हारी दश
चिन्तासे बदली हुई मालूम होती है । अमीना विह्वलता
उसके प्रश्नका उत्तर न देसकी और बेसुध होकर गिरपड़ी
फिर उसने उसी दशा में अपने पहिरनेके वस्त्र उतारकर फें
दिये । उसके कन्धे दाग़ों से कालेहुये सबलोगों को दिखा
पड़े जैसे किसीने उसे मारा है और दाग़ पड़गये हैं । सब देख
कर अति आश्चर्यित हुये कि ऐसी सुन्दरी कोमलाङ्गी को

के सम्मुख हुआ था अपने चचा से कहा। इस हालको सुन उनको धैर्य हुआ। चचा ने मुझसे कहा कि भतीजे! तैंने सत्य कहा, तेरे कहने से मुझे उसके मिलने की आशा है। मुझे आगे से विदित है कि उसने एक क़बर बनवाई है अवश्य उसी में होगा। फिर मैं और चचा दोनों वेष बदल बाग़के दरवाजे से निकल कर चले। थोड़ी दूरगये थे कि वह क़बर मिलगई और मैंने उसे पहिचान लिया। जब हम उस गुम्मज़ के भीतर गये तो उस लोहे के किवाड़ को जिसके साथ सीढ़ी लगी हुई थी बड़ी कठिनता से खोला। क्योंकि शाहजादे ने उसको भीतर की ओर से चूना लगाकर बन्द करलिया था। जब हमने उस किवाड़ को खोला तो पहले चचा उस घर में उतरे। उनके पीछे मैंने जाकर देखा कि उस घर की ड्योढ़ी धुएं की दुर्गन्ध से भरी है। फिर वहां से बैठने की जगह में गये जहां अतिस्वच्छ दीपक जलते थे। वहां एक छोटा सा तालाव दृष्टि पड़ा कि जिसके चारों ओर खाने पीने की बहुत सामग्री रक्खी थी। हम वहां किसी मनुष्य को न देख अत्यन्त विस्मित हुये। फिर कुछ ऊंचे पर बैठने का स्थान और देखा कि जिसके किवाड़ों में पड़दे पड़ेहुये थे। चचा सीढ़ी के द्वारा उस बैठने की जगह पर चढ़गये और पड़दा उठा अपने पुत्र और एक स्त्री को एक शय्यापर इकट्ठे देखा। परन्तु वे दोनों परमेश्वर की क्रोधरूपी अग्नि से दग्ध हो कोयले के समान काले होगये थे। इस रहस्य को देख मैं अत्यन्त भयभीत हुआ और पश्चात्ताप किया परन्तु मेरा चचा कुछ भी विस्मित न हुआ और न इस दुर्घटना को देख

उसको थामलिया। तब एक योगी ने कहा कि यदि हम वनमें पड़ेरहते और रात्रि वृक्षके नीचे व्यतीत करते तो इससे बहुत उत्तम था क्योंकि हम इस वृत्तान्त को देखते हैं और कारण पूंछ नहीं सक्के हैं। खलीफ़ा ने इस बातको सुन उन योगियों के समीप आके पूछा कि तुमको इसका वृत्तान्त मालूम है? उन्होंने उत्तर दिया कि हम इस वृत्तान्त को नहीं जानते हैं केवल आजही तुम्हारे आनेके दो चार घड़ी पहिले आये हैं। फिर खलीफ़ा ने योगियों से कहा कि जो मनुष्य तुम्हारे साथ है यह कुछ जानता है कि यह क्या षड्यन्त्र है। मज़दूर ने शपथ खाकर कहा कि मैं इस वृत्तान्त को नहीं जानताहूं आजके सिवाय कभी इस घरमें नहीं आयाहूं। तब खलीफ़ा ने कहा हम सात पुरुष हैं और वे केवल तीन स्त्रियां हैं सब मिलके उनसे इसभेदको पूंछें यदि उन्होंने प्रसन्न होकर बताया तो उत्तम है नहीं तो जोरसे पूंछेगे। जाफ़र मंत्रीने इस विचारको सुन खलीफ़ाके कानमें कहा कि हम सबको इस सभासे अति प्रसन्नता हुई है और अबतक बड़े आनन्द में हैं। आपको अच्छीतरह मालूमहै कि इन स्त्रियों ने किस प्रतिज्ञासे हमको अपना अतिथि बनाया है और हमने उस प्रतिज्ञा को स्वीकार भी किया है। इस पूंछने से वे क्या कहेंगी। परमेश्वर करे कि इस प्रणके तोड़ने से किसी प्रकार का दुःख पहुँचे और अत्यन्त लज्जा प्राप्त होवे। आप इसको भी विचारिये कि उन्होंने हम सब से जो ऐसा दृढ़ प्रण किया है तो हम सब मनुष्यों को अच्छीतरह दंड न दे सकेंगी? उन्होंने भी तो कुछ समझा होगा कि जो हमसे ऐसा प्रण किया है। फिर जाफर मन्त्री

उन्होंने पश्चात्ताप किया। उन्होंने उस जलेहुये शाहज़ादे के मुख पर थूक दिया और क्रोधित हो कहा कि देख, इस लोक में तैंने कितना दुःख पाया और परलोक में इससे भी अधिक पावेगा। इस थूकने और कहने से भी उसका बोध न हुआ। फिर उसने पांव से जूती उतार उसके मुख पर कई बार मारीं। इस बात से मैं अत्यन्त शोकवान् और विस्मित हुआ कि उसने क्यों अपने मृतक पुत्र से ऐसा अनुचित व्यवहार किया। मैंने क्रोधकर कहा कि एक तो मुझे शाहज़ादे की यह दशा देखनेसे ही शोकहुआ था उससे अधिक आपके इस कर्म पर पश्चात्ताप है। आप मुझसे यह कहिये कि इस मृतक शाहज़ादेसे ऐसा कौनसा अपराध हुआथा कि जो आपके ऐसे क्रोधका कारण हुआ। चचाने उत्तर दिया कि हे भतीजे! तू इस वृत्तान्त को नहीं जानता है। यह इससे अधिक धिक्कार और दण्ड के योग्य है। क्योंकि यह शाहज़ादा बाल्यावस्था से अपनी बहिन को प्यार किया करता था। मैंने बाल्यावस्था के कारण कुछ अनुचित कर्म का विचार न किया। जब ये दोनों बड़े हुये और बुरा भला समझने लगे तथा दोनों में प्रीति भी अधिक बढ़ी तो मैंने इनकी बहुत रक्षा की और घर में आज्ञा दे दी कि ये दोनों बहिन भाई सम्मुख न होवें। परन्तु यह अभागी लड़की भी उससे बड़ी प्रीति रखती थी। यद्यपि मेरे मना करने से परस्पर भेंट न कर सक्ते और न सम्मुख होते थे परन्तु हृदय में एक दूसरे पर मोहित रहते थे। यहांतक कि मेरे पुत्र ने यह घर मुझसे छिपा कर इस आशा से बनवाया कि समय पाय उसको लेकर

ने यहांतक खलीफ़ा से कहा कि रात बहुत थोड़ी है जो आप इस समय चुपरहें तो सबेरेही मैं इन तीनों स्त्रियों को आपके सम्मुख ले आऊंगा उस समय जो आपको पूंछना है उनसे पूंछ लीजियेगा । यद्यपि यह बात बहुत अच्छी थी परन्तु बादशाह ने उसे न माना और मन्त्री से कहा कि चुप रह, मैं प्रभातपर्यंत नहीं ठहर सक्ता, इसी समय इस बातको जानना चाहता हूं । पहिले उसने योगियों से कहा कि तुम जाकर उनसे पूंछो, पर उन्हों ने न माना। फिर सबने मजदूरको पूंछने के लिये तैयार किया । जुबैदा ने उन सम्पूर्ण मनुष्यों को बात चीत करते सुन पूंछा कि तुम परस्पर क्या वार्ता कररहे हो ? मजदूरने कहा कि हे सुन्दरी ! सब यही चाहते हैं कि आप कृपाकर के इस बातको बतलाइये कि तुम कुतियों को निर्दयता से मारकर क्यों रोईं और जिस स्त्री ने मूर्च्छाखाई उसके कंधों पर काले दाग़ कैसे हैं? तबतो जुबैदा अत्यन्त क्रोधित होकर खलीफ़ा आदिक से कहनेलगी कि क्या यह बात सत्य है कि तुमने इस बातके पूंछनेको इस मनुष्य से कहाथा? सबने एक मत होकर कहा कि सत्य है केवल ज़ाफ़र मन्त्री नहीं पूंछना चाहताहै। जुबैदा ने अत्यन्त कोपित होकर कहा कि तुमने अपनी प्रतिज्ञा अच्छी निबाही। हमने दयासे तुमको अपने घरमें रहने को जगह दी और तुम्हारा यथाविधि सम्मान किया और पहिले प्रतिज्ञा करली कि तुम हमारी किसी बातको न पूंछना परन्तु तुमने अपना प्रण भंग कर दिया और इसमें कुछ भी भय न किया । अब तुम्हारी प्रतिष्ठा हमारी दृष्टि में नहीं रही। इतना कह जुबैदा ने पांव

इस घरमें रहेंगे। निदान जब मैं आखेट को गया तब शाहज़ादा उसको किसी प्रकार राजभवन से निकाल इस घर में ले आया और आप भी उसके साथ इसको बन्दकर रहने लगा। उसने पहिले से नानाप्रकार की खाने पीने आदि की वस्तुएं यहां ला रक्खी थीं। कुछ दिनतक तो यह उसके साथ आनन्दपूर्वक यहां रहा परन्तु परमेश्वर ने शीघ्रही इन दोनों को ऐसे बड़े पाप का दण्ड दिया। बादशाह इस वृत्तान्त को कहकर हाहाकर बहुत रोया और मैं भी उसके साथ रोया। फिर उसने रो धो कर मेरी ओर देखा और मुझे हृदय से लगाय कहा कि परमेश्वर की इच्छा योंहीं थी; जो दुष्ट मर गया तो कुछ परवाह नहीं, परमेश्वर तुझे जीता रक्खे। अब तू ही उसके बदले मेरा पुत्र और युवराज है। उसके पश्चात् मैं और चाचा उसी सीढ़ी से ऊपर को चढ़ आये और किवाड़ बंदकर उसके ऊपर मिट्टी आदि डाल छिपा दिया। फिर हम दोनों वहां से राजमहल की ओर चले। वहां के पहुँचने के पहिले युद्ध के ढोल आदि सुनाई दिये और आकाश की ओर धूर चढ़ी हुई देखी। वहां आकर देखा तो मालूम हुआ कि वही मंत्री जो मेरे पिताका राज्य छीन सिंहासन पर बैठा था मेरे चचा के राज्य लेने के लिये बड़ी सेना साथ ले आया है। मेरा चचा थोड़ी सी सेना रखता था इससे उसका सामना न करसका और कुछ देरतक युद्धकर वैरी के हाथ से मारागया। उसके पश्चात् एक दो घड़ी मैंने भी उनका सामना किया और वैरी से लड़ता रहा परन्तु जब चारों ओर से घिरगया और बदला लेनेकी सामर्थ्य न रही तो वहां से भागा फिर उस

मंत्री के एक सरदार ने मुझपर दयाकर उस नगर से जीता जागता निकाल दिया। मैं अपने प्राण की रक्षा के लिये कि मुझे कोई न पहिचान सके; भौंह, दाढ़ी और मूछ मुड़वा योगी बनगया और बड़ी कठिनता से गुप्त मार्गों से होकर अपने चचा के देश से निकल आया। अब अति प्रतापवान्, धीमान्, अति-दयालु, कृपालु और दीनपोषक खलीफा हारूं-रशीद के राज्य में आ बुग़दाद में पहुंचा और इच्छा की कि उसी उदार बादशाह की चरणशरण मे पड़ूं, वह मेरी आपत्ति को सुन अवश्य कृपा करेगा। मैं कई मास के पश्चात् इस नगर के दरवाज़े पर पहुँचा था कि सूर्य अस्त होगये। मैंने चाहा कि किसी स्थान पर जाय रात्रि व्यतीत करूं कि जिस से कुछ सावधानता प्राप्त हो। यह इच्छाकर थोड़ी दूर चला था कि इतने मे दूसरा योगी जो मेरे निकट बैठा है आया और मुझे प्रणाम किया। मैंने उसे प्रणाम का उत्तर दे कहा, तुम भी मेरे समान अन्य देश के वासी जान पड़ते हो। उसने उत्तर दिया कि तुम सत्य कहते हो मै इस नगर में अभी पहुँचा हूं। यह वार्ता पूरी न होचुकी थी कि इतने में तीसरा योगी आ पहुँचा और उसने प्रणाम कर कहा कि मैं भी अन्य देश का वासीहूं। फिर हम तीनों ने एकही रूप होने के कारण भाइयों के समान परस्पर मिले और अलग होने की इच्छा न की। हम सब रात्रि व्यतीत करनेके लिये स्थान ढूंढते ढूंढ़ते अपने अच्छे भाग्य से तुम्हारे दरवाज़े पर आये। तुमने अतिथि की भांति पालनकर हमको अपने स्थान पर रख अति आनन्द दिया कि हम उसका धन्यवाद नहीं करसक्के। हे सुन्दरी! यही

इस बातके सुनतेही मेरा मुख सूख गया और शिरसे पैरतक में कांपनेलगा। सूचीकार मुझसे भयका कारण पूंछनेलगा। अभी मैंने उसे उत्तर न दिया था कि एकही बेर मेरे कोठे की धरती फटगई और वह पिशाच मेरे आने तक की राह न देखकर कुल्हाड़ी और रस्सी लिये प्रकट हुआ। वह सचमुच वृद्ध पिशाच था। फिर उसने कहा मै नवासा इबलीस जो पिशाचों का बादशाह है वहां का पिशाचहूं। फिर उसने उस कुल्हाड़ी और रस्सी को दिखलाकर कहा कि यह तेरी है या नहीं? उसने मुझे उत्तर देने का अवकाश न दिया क्योंकि मुझ में उस विकराल स्वरूप के देखने से उत्तर देने की सामर्थ्य नहीं थी इससे बेसुध होगया था। इससे वह मुझे पकड़ बाहर खींच लाया और एकही बेर आकाश की ओर इतने ऊंचे ले उड़ा कि जिसके चढ़नेमें कई मास व्यतीत होते। फिर उसने धरती पर उतर एक ठोकर मारी जिससे धरती फटगई और वह मुझको लियेहुये समागया। एक घड़ी के पीछे मैंने अपने को उस जादू के घरमें उसी राजपुत्री के सम्मुख पाया परन्तु बड़ा पश्चात्ताप है कि उसको नग्न और रक्तसे भरी, अधमरी, तड़फती हुई, पृथ्वी पर लोटती देखा। फिर उस पिशाच ने मुझ को उस राजपुत्री का हाल दिखलाकर कहा कि हे निर्लज्ज! यही तुझपर मोहित है। उसने ढीली दृष्टि से देखकर कहा मैं इसको नहीं जानती, इस समय के सिवाय और कभी मैंने इसको नहीं देखा। पिशाच ने कहा क्या तू सत्य कहती है कि इसको कभी नही देखा जो तेरे वध करने का कारण है। राजपुत्री ने कहा तू चाहताहै कि मैं असत्य कहूं और तू उसे

मेरा वृत्तान्त है । ज़ुबैदा ने कहा कि तेरा अपराध क्षमा किया। फिर उस योगी ने बिनती की कि यदि मुझे भी आज्ञा हो तो यहां ठहर दोनों अपने साथियों और इन तीन मनुष्यों का वृत्तान्त सुनूं । ज़ुबैदा ने उसको आज्ञा दी । वह एक ओर जा बैठा । यह पहिले योगीकी कथा सबको अद्भुत और अपूर्व जान पड़ी । फिर दूसरे योगी ने ज़ुबैदा से अपने वृत्तान्त को इस प्रकार कहना आरम्भ किया ॥ इति अड़तालीसवां प्रदीप ॥

अथैकोनपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ।

दूसरे योगी की कहानी ॥

भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या नच पौरुषम् ॥
शाहज़ादोऽपि शास्त्रज्ञः काष्ठभारं बभारह ४६ ॥

अर्थ । सब ठौर भाग्यही फलता है विद्या और पुरुषार्थ से कुछ काम नहीं होताहै जैसे सर्वशास्त्रादि का ज्ञाता शाहज़ादा भी भाग्यवश लकड़ियों का भारही ढोनेवाला हुआ ४६ ॥

दृष्टान्त ॥ दूसरे योगी ने कहा कि हे सुन्दरी ! अब मेरा वृत्तान्त सुनिये । बाल्यावस्थासे मेरे पिताने मुझको शिक्षित बनाने के लिये दूर दूर के देशो से विद्यावान् और शिल्पकर्म के जाननेवाले मेरे पढ़ाने के लिये बुलाये । कुछ समय में मैंने उन विद्वानोंसे न्याय, शिल्प, इतिहास, काव्य, गणितविद्या और युद्धविद्या आदि पढ़े और उनमें अद्वितीय होगया और सात प्रकारका लिखना भी सीखलिया । इस विद्या और गुण के होने पर भी ईश्वर ने मेरे प्रारब्ध में दुःख ही लिखा था जिससे एक भी विद्या काम न आई और इस दशा को

मारडाले। फिर पिशाच ने राजपुत्री को खड्ग देकर कहा कि जो तैंने इस को आगे नहीं देखा है तो इस खड्ग से इसका शिर काट। राजपुत्री ने कहा, मुझ में इतनी सामर्थ्य कहां है कि खड्ग को उठासकूं और इस निर्दोष मनुष्य को मारूं? पिशाच ने कहा तेरे इस वचन से पाप स्पष्ट जान पड़ता है। फिर पिशाच ने मुझसे कहा क्या तू इसको जानता है और इसको आगे देखाहै? मैंने विचारा कि जब इस राजपुत्री ने स्त्री होकर भी मेरा इतना पक्षपात किया है तो मुझे इसका प्रकट करना उचित न होगा। फिर मैंने भी इन्कार किया कि केवल मैंने इसी समय देखा है। उसने कहा जो तू सत्य कहता है तो खड्ग से उसका शिर काटडाल। मैं तुझ को छोड़दूंगा और जानूंगा कि तू सच्चाहै। मैंने खड्ग को पिशाच के हाथ से लेकर अपने मन में विचारा कि बड़े शोककी बात है कि इस निर्दोष सुन्दरी को जो मेरेही अपराध से अपराधी हुई और इस दुःख में पड़ी है मारूं और अपने प्राण बचाऊं। यह मुझ से कभी न होगा। फिर उस स्त्री ने मेरी ओर देखा और मेरी चेष्टा से मेरे मनकी बात मालूम कर सैन से कहा कि मैं तो मरने के निकट हूं अपने प्राण बचाने के लिये मुझको मारडाल मैं इसमें प्रसन्नहूं। तदनन्तर मैंने पीछेको हट और खड्ग को हाथसे फेंक पिशाचसे कहा कि मैं नपुंसक नहींहूं कि स्त्री को मारूं। अब जो तेरा मन चाहे वह कर मैं तेरे अधीन हूं परन्तु यह काम मुझसे कदापि न होगा। पिशाचने कहा कि तुम दोनों ने मेरे क्रोधको बढ़ाया है क्या तू नहीं जानताहै कि मुझ में कितनी सामर्थ्य है? इतना कह उस दुष्टने दोनों

पहुँचा कि जो वर्तमान है। हे सुन्दरी! मैं अपने पिता के सम्पूर्ण राज्य में विद्वान् होने के कारण विख्यात था। इससे हिंदुस्तान के बादशाह ने मेरे देखने की इच्छा से एक दूत को बहुमूल्य उत्तम उत्तम वस्तुएं भेंट के लिये दे मुझे बुलाया। मेरे पिता इस बात से अत्यन्त प्रसन्न हुये और मुझे वहां जाने की आज्ञा देदी। मैं अपने पिता की आज्ञानुसार कुछ सेवक और वस्तु साथ ले दूत के साथ चला। कुछ दूर गये होंगे कि ५० सवार शस्त्रसहित राह लूटनेवाले दिखलाई दिये और उन्होंने हम सब को घेर लिया। मेरे साथ दश घोड़े थे जिनपर बादशाह की भेंट के लिये सामग्री लदी थी पर दूर का गमन होने से सेना साथमें नहीं लई थी। उन लुटेरों ने हमसे युद्ध करना आरंभ कर दिया यद्यपि मैंने अपनी सामर्थ्य भर अपनी रक्षा की तथापि मैं घायल होगया। मैंने देखा कि वह दूत और मेरे सब संगी मारेगये तब मैं अपने प्राण की रक्षा के हेतु भागा और लुटेरों से बहुत दूर निकल गया। मेरा घोड़ा घायल होगया था इससे वह थक गया और गिरकर मरगया। उस समय मैंने पैदलही चल देना योग्य समझा। हे सुन्दरी! मेरे अकेलेपन और दीनता पर ध्यान कीजिये कि मेरी क्या अवस्था हुई होगी। मैंने कभी दुःख का नाम भी नहीं सुना था पर एक बारही मैं इस विपत्ति मे पड़गया। फिर मैंने अपने घावों पर पट्टी बांधी और वहां से चला और एक मासके पश्चात् एक बहुत बड़े नगर में पहुँचा। वह बहुत गहरा बसाहुआ था। उसका जल और वायु अति उत्तम था। उसके चारों ओर बहुतसी नदियांथीं।

हाथ उस स्त्री के काट डाले। उसने उसीसमय अपनी देह त्यागदी। इस दशाको देख मुझे मूर्च्छा आगई। जब मैं चैतन्य हुआ तो महाव्याकुल हुआ और पिशाच से कहा कि अब तुरन्त मुझे भी वध कर। यह सुन उसने कहा हमारी यह रीति है कि जब किसी स्त्री पर व्यभिचार का सन्देह होता है तो हम उसे प्राण से मारडालते हैं। तुझ पर केवल सन्देह है और तू परदेशी है इसलिये मार नहीं सक्ता। तुझे यही दण्ड है कि कुत्ता, गधा, सुअर अथवा कोई पशु पक्षी बनाकर छोड़ दूं। अब जिसकी योनि चाहे उसी शरीर में तुझे बनादूं। मैंने इन बातों से उसको कुछ ठण्ढा पाकर कहा कि हे बलवान् पिशाच! जैसे तूने मुझे प्राणदान दिये हैं वैसेही मैं आशावान् हूं कि मुझको इसी योनि में रहने दे। यदि तू मेरा अपराध क्षमा करेगा तो मैं तेरा कृतज्ञ हूंगा जैसे कि एक सत्पुरुषने अपने वैरी पड़ोसी का अपराध क्षमा करके उसके साथ बड़ा उपकार किया था। फिर पिशाच ने पूछा उन दोनों पड़ोसियों में क्या हुआ था? मैंने उससे कहा कि ध्यान धरके सुनिये॥ इति उञ्चासवां प्रदीप॥

अथ पञ्चाशत्तमः प्रदीपः।

ईर्षी और सत्पुरुष की कहानी॥

महान्महत्त्वं जह्यान्न न नीचश्चैव नीचताम्॥
यथा हीर्षी द्रुहन्सन्तं मिषात्कूपेऽप्यपातयत्॥४७॥

अर्थ। बड़े आदमी अपनी बड़ाई को नहीं छोड़ते हैं वैसेही नीचजन अपनी नीचता को भी नहीं त्यागताहै। जैसे ईर्षी-

इस कारण वह सदैव हरा भरा रहता था । उसकी उत्तम वायु से मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अपना सम्पूर्ण दुःख भूलगया । हे सुन्दरी ! उस समय मेरी यह दशा थी कि वस्त्र फटे, नंगे पांव और धूपसे जलकर काला होगयाथा । इसी दशा में मैं उस नगर में गया और इस नगर मे कौनसी भाषा है और मेरा देश इस स्थान से कितनी दूर है यह जानने के लिये एक सूचीकार के निकट गया । उसने मुझे देख अपने समीप बैठालिया और पूछा कि तुम कौनहो और कहांसे आयेहो ? मैंने उससे अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया । सूचीकार ने मेरे वृत्तान्तको चित्त दे सुना और जब मैं सब अपना वृत्तान्त कहचुका तब उसने धीरज देने के विपरीत मुझे अधिक डरा कर कहा कि यह अपनी कहानी यहां के किसी रहनेवाले से न कहना और उससे भलाई का विश्वास न रखना । क्योंकि यहां का बादशाह तेरे पिता का बैरी है । जो वह तेरे आनेका वृत्तान्त सुनेगा तो तेरे साथ अवश्य अनुचित करेगा । सूचीकार से यह वृत्तान्त सुन मैंने जाना कि इसने मेरे साथ बड़ा उपकार किया है इसलिये उसको धन्यवाद दिया और कहा कि तुमने मुझको इस बातसे चैतन्य किया है मैं किसीसे अपना वृत्तान्त वर्णन न करूंगा । हे सुन्दरी ! फिर मैंने वहां के वासियों से अपना वृत्तान्त और अपना और अपने पिताका नाम न कहा । फिर वह सूचीकार मेरेलिये भोजन लाया और अपने घर में रहने के लिये स्थान दिया । मैं उसमें रहनेलगा । जब सूचीकार ने देखा कि अब इसकी थकावट दूर होगई होगी तब पूछा कि तुम्हें कोई ऐसी विद्या आती है कि जिससे

वाले ने सज्जन से द्रोह कर किसी मिष से उसे कूप में भी गिरादिया ४७ ॥ दृष्टान्त ॥ एक नगर में दो मनुष्य पास पास रहते थे । उनमें से एक मनुष्य अपने पड़ोसी से ईर्षा रखता था । दूसरे सत्पुरुष को उसके वैर करने से इच्छा हुई कि इस घर को छोड़ अलग जाय रहें जिससे यह द्वेष न करे । यद्यपि वह उस ईर्षी के साथ सदैव उपकार करताथा तथापि वह अपने वैरको न छोड़ता था यहांतक कि उस सत्पुरुष ने संपूर्ण वस्तुएं और घर वेंच दूसरे नगरमें जाय वास किया । जिस घरमें वह बसा उसमें एक उत्तम बाग़ और एक अन्धा कुवां था । वह योगियों के वस्त्र पहिन साधु बनगया । और साधुओं के ठहरने के लिये बहुत से मकान अपने घरमें बनवाये । उनमें सन्तों का भण्डारा करने लगा । यह समाचार नगरों में विख्यात हो गया । उसकी प्रशंसा सुन बहुत से मनुष्य उसकी भेंटको आनेलगे । समय पाकर वह समाचार उस विद्वेषी के पास पहुंचगया । वह ईर्षी सुनकर बहुत दुःखी हुआ और उसके वध करने को अपना काम छोड़ वहां गया और मन्दिरमें जाय उससे मिला । वह सत्पुरुष अपने पड़ोसी को पहिंचान प्रतिष्ठापूर्वक मिला । ईर्षी ने कपटकर उससे कहा कि मुझे एक कठिन कार्य आय पहुँचा है इसलिये आप के पास आया हूं यदि तुम कहो तो उसको एकान्तस्थल में प्रकट करूं । इसको कोई दूसरा न सुने । उस सिद्धने वैसाही किया । जब उस ईर्षी ने उस मनुष्य को एकांत मे पाया तो अपने आनेका कारण बनाकर कहना आरम्भ किया और बातों में लगाय टहलता हुआ उस अन्धे कुएं के समीप ले

तुम अपनी जीविका प्राप्त करसको? मैंने कहा कि व्याकरण, लेख और काव्यआदि में अद्वितीय हूं। सूचीकार ने कहा कि इन सब विद्याओं की इस नगर में कुछ भी पूछ नहीं है। मेरा कहना मानो तो तुम एक जांघिया बनवाकर पहिन लो और बनसे जलाने के लिये काष्ठ लाकर बाजार में बेंचा करो। तुम्हें इस कार्यसे दूसरे मनुष्य की सहायता बिना अपनी जीविका प्राप्त होगी। थोड़े दिन इसी श्रमसे अपना कालक्षेप करो-परमेश्वर तुम पर दया करेंगे और यह दुःख जो तुम पर छायरहा है निवृत्त होगा। तुमको मैं एक कुल्हाड़ी और एक रस्सी मँगवादूंगा। हे सुन्दरी! मैंने जीविका के हेतुइस नीच कर्म को अंगीकार किया। सूचीकार ने दूसरे दिन मेरे लिये कुल्हाड़ी, रस्सी और घुटन्ना मोल ला दिये और मुझे लकड़ी बेंचनेवालों को सौंपकर उनसे कहदिया कि इस मनुष्य को अपने साथ लकड़ी काटने को बनमें लेजाया करो। मैं उन लकड़िहारों के साथ बनमें जाता और बड़ा गट्ठा काष्ठका काट लाता तथा उसे बाजार में ले जाकर एक सोने के टुकड़े में बेंचदेता था। यद्यपि उस नगर से बन बहुत दूर न था तथापि वहां लकड़ी बहुत महँगी बिकतीथी। क्योंकि वहां के वासी आलस्य से इस कार्य को नहीं करतेथे कि जंगल में जावें और लकड़ियों को काटें और अपने शिर पर लावें। थोड़े दिनों में मैंने बहुत सा सुवर्ण इकट्ठा किया और उसमें से थोड़ा सा उस सूचीकार को उपकार के बदले में दे दिया। इसीप्रकार मुझे एक वर्ष व्यतीत होगया। एक दिन मैं उस बनसे और आगे बढ़ गया और उसे बहुत अच्छा देख

गया। वहां पहुँचतेही सिद्ध को कुएं में ढकेल दिया। उस समय वहां कोई भी न था कि इस समाचार को देखता। निदान ईर्षी अपना कार्य कर और मन्दिर का दरवाजा बन्द कर चुपके से भाग गया और इस कार्य के पूर्ण होने से अत्यन्त प्रसन्न हुआ। वह सिद्ध भाग्यवान् था। इससे उस कुएं में परियां रहती थी उन्होंने हाथों हाथ उसको लेलिया जिससे उसको किसी प्रकार का दुःख न पहुँचा और कुएं के अन्दर बैठादिया। उस सिद्ध ने ईश्वर का धन्यवाद कर सोचा कि इस कुएं के गिरने में भी मेरे लिये कुछ भलाई होगी। फिर उसने चारों ओर दृष्टि की तो कोई वहां दिखाई न दिया। थोड़ी देरके पश्चात् उसने एक शब्द सुना, कोई मनुष्य कहता है कि तुम इसको जानते हो कि यह कौन है? दूसरा शब्द सुनाई दिया कि हम इसको नहीं जानते। फिर पहिले ने कहा कि मैं तुझको इसका वृत्तान्त सुनाता हूं, यह मनुष्य अतिशीलवान् और सिद्धहै इसने अपना नगर छोड़कर यहां रहना इसलिये अंगीकार किया है कि अपने पड़ोसी के वैर से अलग हो। इस नगर में ईश्वर ने इसकी सिद्धता बढ़ा दी है इसकारण ईर्षी ने यह समाचार सुन, इसके मारडालनेका विचार कर इसको इस कुएं में डालदिया है यदि हम इसकी सहायता न करते तो यह मरजाता। कल इस नगर का राजा इसके निकट आय अपनी पुत्री के अच्छे होने के लिये आशीर्वाद की चाहना करेगा। दूसरे ने पूछा कि उस राजकुमारी को कौनसा रोग है? पहिले ने उत्तर दिया कि राजकुमारी पर मैमूं पिशाचका पुत्र डिमडिम मोहित हुआ है

वहां काष्ठ काटने में लगा। जब एक वृक्ष ऊपर से काटचुका और उसकी जड़ काटनेलगा तो दैवयोग से उस जड़के नीचे मुझे एक लोहे के दरवाजे में लगाहुआ कड़ा देख पड़ा। मैं तुरन्त वहां की मिट्टी हटा कुल्हाड़ी और रस्सी सहित नीचे उतर गया तो अपने को एक बड़े भारी घर में पाया। उसमें पृथ्वीके सदृश प्रकाश था। मैंने वहां एक बड़ा लम्बा दालान देखा जिसके पाये मूसा पत्थर के और खम्भे ऊपर से नीचे तक सुवर्ण के बने हुयेथे। उसमें एक परम रूपवती सुन्दरी मेरी दृष्टि पड़ी, जिसके देखते ही मैंने दूसरी ओर नहीं देखा और उसके सम्मुख जाय प्रणाम किया। उस सुन्दरीने मुझसे पूछा कि तू कौन है मनुष्य है या पिशाच है ? मैंने अपना शिर उठाके कहा हे सुन्दरी ! मैं मनुष्य हूं, पिशाच नहीं। उस स्त्रीने ठंढी श्वास लेकर कहा कि तू यहां कैसे आया, मुझे पचीस वर्ष से अधिक व्यतीत होगये परन्तु सिवाय तेरे अन्य मनुष्य को नहीं देखा। उस स्त्री के अनूप रूप, नम्रता, उसकी छवि और कोमल वचन पर मैं ऐसा मोहित हुआ कि मुझे बोलने की सामर्थ्य भी न रही। निदान उसकी प्रिय वाणी से थोड़ी देरके पश्चात् मुझे बात कहने की सामर्थ्य हुई। मैंने विनय के साथ उससे कहा कि मैं केवल तुम्हारे देखनेही से प्रसन्न और हर्षयुक्त हुआहूं और अपने सब दुःख और क्लेश को भूलगया हूं। मैं चाहताहूं कि तुम्हें इस बुरी दशासे छुड़ादूं। फिर मैंने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया। उस स्त्रीने श्वास भर कहा कि हे शाहजादे ! तू सत्य कहता है इस धन और वस्तुके होनेपर भी मुझे इस जादूके स्थान

वाले ने सज्जन से द्रोह कर किसी मिष से उसे कूप में भी गिरादिया ४७ ॥ दृष्टान्त ॥ एक नगर में दो मनुष्य पास पास रहते थे । उनमें से एक मनुष्य अपने पड़ोसी से ईर्षा रखता था । दूसरे सत्पुरुष को उसके वैर करने से इच्छा हुई कि इस घर को छोड़ अलग जाय रहें जिससे यह द्वेष न करे । यद्यपि वह उस ईर्षी के साथ सदैव उपकार करताथा तथापि वह अपने वैरको न छोड़ता था यहांतक कि उस सत्पुरुष संपूर्ण वस्तुएं और घर वेंच दूसरे नगरमें जाय वसा जिस घरमें वह बसा उसमें एक उत्तम बाग और एक कुवां था । वह योगि
साधुओं के ठहरने
वाये । उनमें सन्तों का भ
नगरों में विख्यात हो गया । उसकी प्रश
नुष्य उसकी भेंटको आनेलगे । समय पाकर वह सम
उस विद्वेषी के पास पहुँचगया । वह ईर्षी सुनकर बहुत दुःखी हुआ और उसके वध करने को अपना काम छोड़ वहां गया और मन्दिरमें जाय उससे मिला । वह सत्पुरुष अपने पड़ोसी को पहिचान प्रतिष्ठापूर्वक मिला । ईर्षी ने कपटकर उससे कहा कि मुझे एक कठिन कार्य आय पहुँचा है इसलिये आप के पास आया हूं यदि तुम कहो तो उसको एकान्तस्थल में प्रकट करूं । इसको कोई दूसरा न सुने । उस सिद्धने वैसाही किया । जब उस ईर्षी ने उस मनुष्य को एकांत में पाया तो अपने आनेका कारण बनाकर कहना आरम्भ किया और वार्तों में लगाय टहलता हुआ उस अन्धे कुएं के समीप ले

में रहना अच्छा नहीं लगता है। तुमने सुना होगा कि आ-बोनी द्वीपोंका अबूतेसरस नाम बड़ा बादशाह है जहां आब-नूसकी लकड़ी पैदा होती है मैं उसी बादशाह की पुत्री हूं। मेरे पिताने मुझको अपने भतीजे शाहजादे के साथ विवाह दिया। जब मैं अपने पतिके घर जाने लगी तब एक दुष्ट पि-शाच मुझको लेकर वहां से उड़ा तो मैं उसी समय में बेसुध होगई। तीन पहर के पश्चात् जब मैंने सुधि सँभाली तो अ-पने को इस घरमें पाया। तभी से मैं इस घर में रहतीहूं। मेरा उठना बैठना उसी पिशाचके निकट है। इस धन और वस्तुओं से मुझे कुछ हर्ष नहीं है क्योंकि केवल सामग्री और सजधजसे धैर्य नहीं होता है। दशवें दिन वह पिशाच यहां आता और केवल एक रात मेरे पास रहताहै। उसका विवाह किसी और स्त्री के साथ हुआहै इसलिये अपनी स्त्रीके भयसे सदैव नहीं रह सक्ता है। यदि दशदिन के मध्य में कभी मुझे उस पिशाच का बुलाना स्वीकार हो तो केवल जादू की वस्तुके छूनेसे जो कि मेरे शयनस्थान के समीप बनी हुई है वह आजाता है। उसको यहांसे गये चारदिन व्यतीत हुये हैं। छःदिनके पश्चात् वह फ़िर यहां आवेगा जो तुम्हें मेरा सङ्ग और यहांका रहना अंगीकार हो तो पांच दिवस तक यहां रहो, मैं तुम्हारी भली भांति प्रतिष्ठा करूंगी। यह वचन सुन मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ और वहां का रहना अंगीकार किया। फिर वह मुझे एक सुन्दर स्नानागार में लेगई, जब मैं स्नान कर बाहर आया तो उत्तम उत्तम सुनहरी पहिरने के वस्त्र दिये जिनके पहिरने से मैं और भी उसकी दृष्टि में अच्छा विदित होनेलगा। तदनन्तर हम

गया। वहां पहुँचतेही सिद्ध को कुएं में ढकेल दिया। उस समय वहां कोई भी न था कि इस समाचार को देखता। निदान ईर्षी अपना कार्य कर और मन्दिर का दरवाजा बन्द कर चुपके से भाग गया और इस कार्य के पूर्ण होने से अत्यन्त प्रसन्न हुआ। वह सिद्ध भाग्यवान् था। इससे उस कुएं में परियां रहती थीं उन्होंने हाथों हाथ उसको लेलिया जिससे उसको किसी प्रकार का दुःख न पहुँचा और कुएं के अन्दर बैठादिया। उस सिद्ध ने ईश्वर का धन्यवाद कर सोचा कि इस कुएं के गिरने में भी मेरे लिये कुछ भलाई होगी। फिर उसने चारों ओर दृष्टि की तो कोई वहां दिखाई न दिया। थोड़ी देरके पश्चात उसने एक शब्द सुना, कोई मनुष्य कहता है कि तुम इसको जानते हो कि यह कौन है? दूसरा शब्द सुनाई दिया कि हम इसको नहीं जानते। फिर पहिले ने कहा कि मैं तुमको इसका वृत्तान्त सुनाता हूं, यह मनुष्य अतिशीलवान् और सिद्धहै इसने अपना नगर छोड़कर यहां रहना इसलिये अंगीकार किया है कि अपने पड़ोसी के वैर से अलग हो। इस नगर में ईश्वर ने इसकी सिद्धता है इसकारण ईर्षी ने यह समाचार सुन, इसके विचार कर इसको इस कुएं में डालदिया है यदि सहायता न करते तो यह मरजाता। कल इस राजा इसके निकट आय अपनी पुत्री के अच्छे आशीर्वाद की चाहना करेगा। दूसरे ने पूछा कुमारी को कौनसा रोग है? पहिले ने उत्तर कुमारी पर मैमूं पिशाचका पुत्र डिमडिम

दोनों एक बड़े सुन्दर दालान में सुनहली कीमखाब से सजे हुये मसनद पर बैठे । उसने मेरे आगे नाना प्रकार के स्वादिष्ठ व्यंजन लायधरे और मेरे साथ बैठ भोजन किया। जब रात्रि हुई तो मुझे अपने शयन स्थान पर लेजाये सुलाया । दूसरे दिन फिर उत्तम उत्तम पाक बनाये और मेरी प्रसन्नता के लिये पुरानी मदिरा की बोतल लाकर कई गिलास भर भर मुझको पिलाये । मैं उसके पीने से मस्त हो गया और उसी दशा में मैंने उससे कहा हे प्यारी ! तुम बहुत वर्षों से इस पृथ्वी में बन्द हो, मानो जीतेही कब्र में हो । अब तुम मेरे साथ चलो और संसारकी हवा खावो कि जिस से तुमको प्रसन्नता हो और जादू के इस थोड़े उजियाले को परित्याग करो । यह सुन उस सुन्दरीने कहा कि ऐसी अनुचित बात मत करो मुझे सूर्य का उजियाला नहीं चाहिये मुझको यहीं रहने दो । नवदिन तुम यहीं रहा करो और दशवां दिन उस पिशाच को छोड़ दो । मैंने कहा तुम पिशाच से बहुत डरती हो, मैं अपने प्राण के वास्ते कुछ भी नहीं डरता हूं । मैं उसकी जादू की वस्तुको तोड़कर जो उसपर कुछ लिखा है उसे विनाश करदूंगा । उसको आने दो देखूं वह कैसा बलवान् और विकराल स्वरूप है । उसके लिये मेरा एक हाथ बहुत है । मैंने प्रण किया है कि सब पिशाचोंको संसार से नष्ट करदूं और सबके पहले इस पिशाचको मारूं । वह स्त्री इस अनुचित कर्म के फल को अच्छीतरह जानती थी इससे मुझको शपथ देकर कहने लगी कि चैतन्य रहो, इसमें हाथ न लगाना नहीं तो हम तुम दोनों मारे जायँगे ।

जिससे वह सदैव रोगी और वेसुध रहा करती है। मुझे उस पिशाच के हटाने का उपाय विदित है वह तुमसे वताता हूं। इस योगी के घरमें एक काली विल्ली है, जिसकी पूंछके शिरपर श्वेत चिह्नहैं, उसी श्वेत चिह्नके स्थान से यह सिद्ध सात बाल उखाड़ अपने पास रक्खे और समय पर उन वालों को अग्निमे जला उसकी धूनी राजकुमारी की नाक में दे तो वह नासिका में धुआं पहुँचतेही नीरोग होजायगी और वह पिशाच उसके निकट कभी न आवेगा। सत्पुरुष ने यह वार्ता जो परियों और जिन्दों में हुई थी अच्छे प्रकार स्मरण रक्खी। जब सवेरा हुआ और उस कुएं में सूर्य के प्रकाश से देखा तो उस कुएं में से निकलने का मार्ग दिखाई पड़ा। वह सुगमता से ऊपर आगया। सम्पूर्ण सन्त जोकि ढूंढ़ते फिरते थे सिद्ध को देख अत्यन्त [illegible] । वह सत्पुरुष सब वृत्तान्त अपने [illegible] ने कह अप [illegible]
न हुई थी कि क [illegible] जिस [illegible] ने
वर्णन किया था [illegible] । उस [illegible]
उसके सात श्वेत [illegible] अ [illegible]
सूर्य उदय न हुये [illegible]
पर आगया । [illegible]
भवन में ल [illegible]
को मेरे आगमन [illegible]
कि तुम [illegible]
राजा ने [illegible]
आशीर्व [illegible]

मैं पिशाचों की सामर्थ्य को अच्छीतरह जानती हूं। मैंने मदिरा के नशे में उसका उपदेश कुछ न सुना और वह जादू की वस्तु तोड़डाली। इतने में बड़े जोर से वह महल हिलने लगा और उसके साथ एक भयानक शब्द बादल के गर्जने के समान हुआ और चारों ओर अँधेरा होगया, विजली के समान प्रकाश होने लगा। इस अद्भुत और भयानक दशाको देख मेरा नशा जातारहा। मैंने सुधि सँभाल सोचा कि तैंने बड़ा अनर्थ किया। फिर मैंने उस स्त्री से पूछा कि अब क्या करना चाहिये? उसने अपने प्राणका डर न कर मेरे लिये बहुत पश्चात्ताप कर उत्तरदिया कि तुम इस विपत्ति को आपही अपने शिर पर लायेहो अब यहां से भागो और अपने को बचावो। यह सुन मैं वहां से ऐसा घवड़ाकर भागा कि अपनी कुल्हाड़ी और रस्सी वहीं छोड़दी और शीघ्रही उठते बैठते उसी सीढ़ीतक जा पहुँचा। इतने में वह भी क्रोधित हो वहां आपहुँचा और उस सुन्दरी से कहनेलगा कि तैंने मुझको क्यों बुलाया है? उसने भययुक्त और कम्पायमान होकर कहा कि मैंने इस बोतल से थोड़ीसी मदिरा पी थी उसके नशे में मेरा पांव अनजाने से इसपर लगगया जिससे यह टूट गया इससे तुझको खबर हुई है मैंने तुमको नहीं बुलाया। यह सुनतेही पिशाच ने आग बबूला हो उस सुन्दरी से कहा तू कुकर्मिणी और दुष्ट है बता इस कुल्हाड़ी और रस्सी को यहां कौन लाया? स्त्री ने कहा मैंने अबतक इसे नहीं देखा शायद यह शीघ्रता से तुम्हारे साथही चली आई होगी और तुमने मार्ग में इसे न देखा होगा। पिशाच ने उस स्त्री को बुरा भला

सफल होगा। उस सिद्धने उत्तर दिया,जो आप राजकुमारी को यहां पर बुलवा लें तो मैं परमेश्वरकी अनुकम्पासे अच्छा करदूं। बादशाह यह सुन अतिप्रसन्न हुआ और अपनी बेटी को तुरन्त बांदियों सहित बुलवाया। बांदियों ने उसका मुख इस तरह छिपाया था कि किसी की भी दृष्टि उसपर न पड़े। योगी ने एक चादरसे राजकुमारी का शिर इसतरह से घेरा कि जिससे धुआं बाहर न निकलसके। फिर वे बाल तुरन्त अग्निपर रख उसकी धूनी राजकुमारीको दी। इतना करतेही मैंमूं पिशाच का पुत्र डिमडिम चिल्लाया और बड़ा शब्दकर राजकुमारी को छोड़कर चलागया। राजकुमारी अच्छी हुई और सुधि सँभाली और शीघ्रही अपने हाथ से वस्त्र डाल अपना मुख छिपालिया। फिर पूछने लगी कि मैं कहांहूं और मुझे इस स्थानपर कौन लाया है? राजा ने अत्यन्त हर्ष-युक्त हो पुत्री को अपने कण्ठसे लगालिया और सब वृत्तान्त कह सुनाया। फिर राजाने अपने सरदारों से पूछा कि इस योगी के साथ क्या उपकार करूं? सरदारों ने एक मत हो कहा कि हमारे विचार से यह उचित है कि इस राजकुमारी का विवाह इस योगी के साथ करदो। राजाने कहा कि मेरा भी यही विचार था। फिर उसने शाहजादी का विवाह उस योगी के साथ करदिया। थोड़े दिनों के पश्चात् वहां का बड़ा मंत्री मरगया। राजाने उस योगी को बड़ा मंत्री नियत किया। फिर वह राजा भी मरगया। उसके कोई पुत्र नहीं था इससे वह योगी सेना और सरदारों के सम्मतसे अपने श्वशुर के स्थान पर राजा होगया। एक दिन वह अपने सरदारों

कह बहुत मारा जिससे वह तड़पने और रोने लगी। उसके रोने के शब्द सुनकर मेरी वह दशा हुई कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता। मैं अपने पुराने वस्त्र पहनकर उस सीढ़ी से ऊपर चढ़आया और अपने को बुरा भला कहने लगा। मैंने बड़ा पश्चात्ताप किया कि मेरे अज्ञान और निर्बुद्धि से यह दुःख उस स्त्री पर हुआ। यद्यपि वह २५ वर्ष से उस घर में बन्द है तथापि उसे कभी ऐसा दुःख इस पिशाच के हाथ से न हुआ। फिर मैंने उस लोहे के किवाड़ को मिट्टी से बन्दकर छिपा दिया और बोझा लकड़ियों का शिरपर रखकर पश्चात्ताप करताहुआ उस नगर में आया। जब मैं अपने स्थान पर आया तो वह सूचीकार मुझे देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि तुम्हारे कलके न आनेसे मुझे अत्यन्त चिन्ता थी कि ऐसा न हो तुम्हारा पुराना वृत्तान्त सुन यहांके अधिपतिने कैद किया हो। परमेश्वरका धन्यवाद है कि तुम जीते जागते फिर आये। मैंने उसकी प्रीति पर धन्यवाद किया। परन्तु वह घटना उससे न कही और अपने मकानमें जाकर अपनी अज्ञानता पर धिक्कार देतारहा। मैंने विचारा कि यदि मैं उस जादूकी वस्तु को न तोड़ता तो वह राजपुत्री इस दुःख में न पड़ती और मैं नव दिनतक अच्छे प्रकार रहता। मैं इसी चिंता में था कि उस सूचीकारने मेरे निकट आकर कहा कि एक वृद्ध तुम्हारी कुल्हाड़ी और रस्सी हाथ में लेकर आया है और कहता है कि मैंने इन दोनों वस्तुओं को मार्ग में पाया है। ये तुम्हारे साथियों में से किसीकी जानपड़ती हैं चलके अपनी पहिंचान कर लेआवो। वह विना तुम्हारे न देगा।

सहित सवार होकर जारहाथा कि संयोगवश उसने अपने वैरीको बहुत से मनुष्यों के यूथमें देखा । उस योगी (राजा) ने अपने मंत्री के कानमें कहा कि उस मनुष्य को प्रतिष्ठापूर्वक लेआओ जिससे वह किसी प्रकारका भय न करे । मंत्री तत्काल उस मनुष्य को राजाके सम्मुख ले आया । राजा ने उस अपने ईर्षी से कहा कि हे मित्र ! मैं तुझको देख अति प्रसन्न हुआ हूं । फिर राजाने एक हज़ार अशर्फ़ी और बीस गठरी वस्त्र मँगा के उस ईर्षी को दिये और एक पहरा सिपाहियों का उसके साथ किया कि वह उसको रक्षापूर्वक उसके घर पहुँचादे ॥ इति पचासवां प्रदीप ॥

अथैकपञ्चाशत्तमः प्रदीपः ।

हे सुन्दरी ! जब मैं इस कहानीको पूरा करचुका तो अपने छूटने के वास्ते पिशाच से कहने लगा कि हे पिशाच ! देखो, उस शीलवान् राजाने अपने वैरी के साथ कैसी भलाई की थी । अब मैं विनयकर आशा करता हूं कि आप भी मेरे पर कृपा करेंगे । किन्तु उस विकरालरूप पिशाचने मुझपर दया न कर कहा कि तुझे प्राणसे तो न मारूंगा परन्तु दण्ड दिये विना न छोडूंगा, यह कहकर उसने मुझे पकड़ा और इतने ऊंचे उड़ा कि जहां से धरती बादल के टुकड़े के समान दीखती थी, फिर उस ऊंचे से शीघ्रही विजली के समान एक पहाड़की चोटीपर ले गया और वहांसे एक मुट्ठी मिट्टीकी ले कुछ मंत्र पढ़ उसको मेरे ऊपर डालकर कहा कि मनुष्यका चोला छोड़ बन्दर का स्वरूप बनजा । मुझपर यह जादू कर वह पिशाच गुप्त होगया और मैं अपने को बन्दरके रूप में देख अत्यन्त दुःखित और

चैतायुक्त हुआ। फिर उस पहाडसे उतर एक देशमें गया और वहां से चलता चलता एक समुद्रके तटपर जा पहुँचा और उस समुद्रके कूलपर एक जहाज देखकर चाहा कि किसी प्रकार वहां तक पहुँचूं इसलिये एक वृक्ष से टहनियां तोड़, घसीटता हुआ समुद्र के तटपर लेगया और उसको समुद्र में डाल उस पर चढ़ बैठा फिर दोनों हाथों से दो टहनियां पकड़ तैरने लगा और इसी प्रकार जहाज की ओर चला। जब उसके समीप पहुँचा तो जहाज के मनुष्य मुझको देख अतिविस्मित हुये। मैं जहाज की रस्सी पकड़ उस पर चढ़गया। तो जहाजी मुझे बन्दर के रूप में देख अत्यन्त आश्चर्य में हुये। मुझ मे वाचाशक्ति न थी इस कारण मैं अपना वृत्तान्त किसी से न कह सका और आश्चर्य से सब की ओर देखता रहा। उस जहाज के सम्पूर्ण व्यापारी नाना प्रकार के विचार करते और मेरा जहाजपर रहना कुलक्षण समझते इसहेतु मेरे निकाल देनेका विचार करने लगे। एकने कहा अभी एक लट्ठ मार मारडालता हूं। दूसरेने कहा रहजा, इसे मैं तीर से मारडालताहूं। तीसरा बोलामैं इसे समुद्र में डाले देताहूं इसी प्रकार वे सब मेरे मारने को उद्यत थे। इतने में मैंने दौड़कर जहाज के कप्तान के निकट जाय और उसके चरणों पर गिर उसका वस्त्र पकड़लिया और उसे सैन से कहा कि मैं तुम्हारी शरणहूं मुझे बचाओ। उस समय मेरे नेत्रोंसे आंसू बहने लगगये। कप्तान ने मुझ पर दयाकर मेरी ओर हो सब को मेरे दुःख देने से हटा दिया और कहा इस वानर से कोई न बोले और इसे कुछ दुःख न पहुँचावे। फिर उसने मेरी ऐसी

योनि को प्राप्तकर और मनुष्य के स्वरूप में जैसा पहिले था वैसा बनजा। इतना कहतेही मैं मनुष्य बन गया। दाहिने नेत्र के सिवाय और किसी जोड़ में हानि न पहुँची थी। मैंने चाहा कि उस शाहज़ादी का धन्यवाद करूं परन्तु उसने मुझको सावकाश न दिया और बादशाह से कहा कि यद्यपि मैंने पिशाच को पराजित करदिया तथापि उसके साथ मेरा भी काम तमाम होगया अर्थात् इस पावकयुद्धने मेरे शरीर को भी जलादिया कोई क्षणमें मुझे भी भस्म करडालेगा। यदि एक दाना दाड़िम का भी जिस समय कि मैं पक्षी बनी थी न छूटता और उसको भी खाजाती तो फिर मुझको कुछ भी दुःख न पहुँचता और वह पिशाच उसी समय मारा जाता परंतु उस दानेके बचने से फिर उसे मेरे साथ युद्ध करने की सामर्थ्य होगई तब मैं लाचार होकर अग्निसंग्राम करने लगी। उस समय धरती से आकाश पर्यन्त अग्नि होगई तब उस पिशाच को मालूम हुआ कि मैं जादूकी विद्यामे अति निपुण हूं और मेरी विद्या कहीं उससे अधिक है। निदान मैंने उसको जलाकर भस्म करडाला परन्तु मैं भी उस आग से बच न सकी। बादशाह ने शोकयुक्त हो उत्तर दिया कि तुम अपने पिताका भी हाल देखती हो कि मेरा मुख झुलस गया है और तुम्हारा ख्वाजेसराय जलकर भस्म होगया और यह शाहज़ादा जिसका तुमने जादू दूर कियाहै दाहिने नेत्र से काना होगया है। यह कह कर बादशाह और मैं इस हाल में रोते पीटते और हाहा करते थे कि इतने में शाह-ज़ादी जली जली पुकारने लगी फिर वह तत्कालही

रक्षा की कि मुझ को कुछ भी दुःख न पहुँचा। यद्यपि मैं बात न कर सक्ता था तथापि सैन से उससे बात करलेता था। वह मेरी सैन समझ अत्यन्त प्रसन्न और हर्षयुक्त हुआ। उस समय से अन्य मनुष्य भी मुझपर प्रसन्न होगये। इसी प्रकार चलते चलते एक व्यापारस्थान में पहुँचे उस स्थान में बहुतसी बस्तियां थीं और वहां घर भी उत्तम उत्तम थे। जहाज़ी लोगोंने जहाज़ को एक नगर के निकट ठहराया क्योंकि वह नगर बादशाह की राजधानी थी। जहाज़ में लङ्गर करतेही बहुत से मनुष्य जो उन व्यापारियों के मित्र थे नावों पर सवारहो धन्यवाद देनेको आये और जहाज़ को चारों दिशा से घेर-लिया। प्रत्येक मनुष्य अपने अपने मित्र से मिल यात्रा और समुद्रका वृत्तान्त पूंछनेलगा क्योंकि वह जहाज़ दूर दूर के देशों और नगरों में गया था। उन नगरवासियों में कुछ बाद-शाह के सरदार भी थे वे उन व्यापारियों को बादशाह की ओर से कहते थे कि हमारा बादशाह तुम्हारे आने से अत्यन्त प्रसन्न हुआ है और कहा है कि जो तुम में से कोई मनुष्य लिखने पढ़ने मे ऐसा योग्य हो कि इस काग़ज़पर बहुत सुन्दर लेख लिखे जिस से मैं उसकी लेखशैली और सुन्दरता की परीक्षा करूं। इसका कारण यह है कि यहां का मंत्री मरगया है। वह मंत्री अन्य गुणों के विशेष लिखने में अद्वितीय था और यहां का बादशाह गुणग्राहक है उसके मरजाने से अत्यन्त शोकयुक्त रहता है। बादशाह ने शपथ की है कि जो मनुष्य पहिले मंत्री के समान अच्छा लिखनेवाला मिलेगा उसी को मन्त्री बनाऊंगा। बहुत ढूंढने

अग्नि में जलकर उस पिशाच के समान भस्मका ढेर होगई। हे शहरयार ! उस स्थान में उस दूसरे योगी ने हा हा खाय जुबैदासे कहा कि उस समयका दुःख जो मुझपर हुआ कुछ वर्णन नहीं करसक्ता। मैंने उस मल्काहसन को इस दशा में देख अपने चित्तमें कहा कि यदि मैं बन्दर किंतु श्वान आयु भर बना रहता तो उत्तम था परन्तु ऐसी बुद्धिमती का मरना उत्तम नहीं था। इधर बादशाह अपनी शाहज़ादी के मरजाने से शोकवान् हो मूर्च्छित होगया। मुझे बादशाह की ओर से अत्यन्त भय और डर हुआ कि ऐसा न हो वह अपनी शाहजादी के दुःख से कहीं मर जाय। उस समय रोने पीटने से प्रलय होगया। बादशाही मकान में बादशाह की यह दशा सुन सम्पूर्ण सरदार और नौकर दौड़े आये और बहुत उपाय से उसे फिर सुधि में लाये। मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे वर्णन किया। फिर वे लोग बादशाह को उठाय उसके कोठे में लेगये। यह वृत्तान्त सम्पूर्ण नगर में ख्यात होगया और चारों ओर से शाहज़ादी के नामपर रोने पीटने का शब्द सुनाई देने लगा। सात दिनतक उन्होंने शाहज़ादी का शोक और रोना पीटना किया और अपनी रीत्यनुसार सम्पूर्ण शोककी रीतें भी कीं। फिर पिशाच की भस्मका ढेर उन्होंने वायुपर उड़ादिया और शाहज़ादी की भस्मको एक बहुमूल्य वस्त्रकी थैली में भर वहीं गाड़दी और उसपर एक बड़ाभारी मकबरा बनवा दिया। बादशाह अपनी शाहज़ादी के शोक में एक मासतक तो रोगयुक्त रहा और अभी वह अच्छाहुआ था कि उसने मुझे बुलाकर कहा हे शाहज़ादे! तेरे

पर भी अवतक सम्पूर्ण देश में ऐसा कोई मनुष्य न पाया कि जिसे वह अपना मंत्री वनावे। सो इस काग़ज़ को तुम्हारे निकट भेजाहै कि जो कोई तुम में से इसके योग्य हो और उसे मन्त्रीका स्थान लेनेकी इच्छा हो तो इस काग़ज़पर पंक्ति लिखे। जव सरदार इतना कहचुका तो मैंने आगे वढ़कर उस काग़ज़ को उसके हाथ से लेलिया। इससे जहाज़ के सब मनुष्य और वे व्यापारी जो लिखे पढे थे चिल्लाने और बड़ा शब्द करनेलगे कि अभी यह वंदर इस काग़ज़को चीरफाड़ डालेगा वा समुद्र में फेंकदेगा। परंतु जव उन्होंने देखा कि मैंने काग़ज़ को अच्छे प्रकार पकड़ा और सैनसे पूछा कि मैं इसपर लिखूं? सव ने चिल्लाना वंद किया। क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण आयुमें कभी किसी बन्दरको लिखते नहीं देखाथा इससे वे मेरी योग्यता को नहीं जानते थे। उन्होने चाहा कि इस काग़ज़को मेरे हाथसे छीनलें परंतु कप्तानने मेरी ओरहो कहा कि ठहरो, इसकी परीक्षा लेने दो। यदि इसने काग़ज़ को खराव किया तो मैं तुमसे प्रण करताहूं कि इसको उचित दण्ड दूंगा और जो इसने मेरे विचार के अनुसार अच्छा लिखा तो मैं इसका अपने पुत्र के समान पालन करूंगा। मुझको विदित है कि वह काग़ज़को खराव न करेगा। मैं और वन्दरोंकी अपेक्षा इसे अत्यन्त समझदार और वुद्धिमान् पाताहूं। जव मैंने देखा कि मुझको अव कोई मना नहीं करता तो लेखनी ले चार प्रकार के चार काव्य ऐसे लिखे कि न कोई व्यापारी और न कोई उस नगर का वासी वैसे लिखसक्ता था। जव मैं लिखचुका तो सरदार उस काग़ज़

आगमन से नानाप्रकार के दुःख और शोक मुझपर पड़े और मेरी शाहज़ादी तेरेही कारण भस्म हुई और दारोग़ा भी जलकर मरगया और मैं मरते मरते बचा यह सब तेरी अभाग्यता है, तू अशकुन है, अब मैं तुझे देख नहीं सक्ता इससे तू यहां न रह, तुरन्त यहां से चला जा। यदि तू यहां रहेगा तो तेरे वास्ते अच्छा न होगा और मैं तुझे दण्ड दूंगा इसीप्रकार बादशाह ने क्रोध में यह सब बातें कहीं कि जिन का मैं उत्तर न दे सका और तत्काल बादशाह के सम्मुखसे चलागया। मैं जिस ओर को जाताथा उस ओर को सब मनुष्य मेरे मारने का इरादा करते थे निदान मैं निरुपाय हो उस नगर से निकलने के पहिले भौंहें और मूछें और डाढ़ी मुड़वाय और योगियों के वस्त्र पहिन वहां से चला और पश्चात्ताप किया कि तेरे कारण से ऐसी स्वरूपवती दो शाहज़ादियां मारीगईं। फिर बहुत दिनोंतक नगर नगर और देश देश फिरा किया। निदान सोचा कि बग़दाद नगर में जाय अपने दुःख और शोकको खलीफ़ा हारूंरशीद से विनय करूं उक्त महाशय मेरे वृत्तान्तको सुन मुझपर अवश्य दया करेंगे और इस दुःखसे छुड़ादेंगे। आज सायंकाल के समय मे वहां पहुंचा और पहिले पहिल योगी से कि जिसने अभी अपना वृत्तान्त वर्णन कियाहै भेंटहुई। मेरे यहां आने का कारण आपके सम्मुख पहिला योगी तो कहचुका है उस का प्रकट करना आवश्यक नहीं। इस प्रकार जब दूसरा योगी भी अपना वृत्तान्त कहचुका तो ज़ुबैदाने उससे कहा कि तेरा अपराध क्षमा किया जिस ओर को तेरा जी चाहे चलाजा।

को बादशाह के सम्मुख लेगया। बादशाह ने मेरे लिखे और काव्य को प्रसन्न किया और अपने सरदारों को आज्ञा दी कि बहुतसा सामान पारितोषिक का ले उस मनुष्य को दो जिसने इस कागज़ को लिखा है। फिर उसको सवार कराय लेआवो। यह आज्ञा पातेही वह सरदार मुसुकराये जिससे कि बादशाह अत्यन्त क्रोधित हुआ और दण्ड देने की आज्ञा की। उसने बिनती की कि हे स्वामी! हमारा अपराध क्षमा करो लिखनेवाला इसका मनुष्य नहीं किन्तु वानर है। बादशाह ने कहा क्या ये पंक्ति मनुष्यकी लिखी नहीं हैं एक सरदारने विनय की कि हे स्वामी! हमने अपनी आंखों से देखा कि इसको वन्दर ने लिखाहै। बादशाह इस बातसे आश्चर्यित और विस्मित हो मेरे देखने के लिये अत्यन्त लालायित हुये और उन सरदारो को आज्ञा दी कि शीघ्रही ऐसे अपूर्व वन्दर को सवार कर मेरे सम्मुख ले आवो। सरदार जहाज़ पर फिर गये और बादशाह की आज्ञा कप्तान से कही। उसने कहा बहुत अच्छा मैं इसे भेजता हूं। फिर मुझे कारचोबी के वस्त्र पहिना समुद्रके तटपर ले आये और घोड़े पर सवार कर ले चले। इधर बादशाह अपने सभासदों सहित मेरे आगमन की राह देखनेलगे और मेरी अगवानी को सब प्रकार के मनुष्य इकट्ठा किये। तब नगर के छोटे बड़े मनुष्य और स्त्रियां मेरे देखने को कोठे और मार्ग में इकट्ठे होगये क्योंकि यह वृत्तान्त सम्पूर्ण नगर में ख्यात होगयाथा। जब मैं बादशाही मकान में पहुंचा तो बादशाह

तब वह भी ज़ुबैदासे आज्ञाले पहिले योगी के निकट बैठगया। फिर तीसरा योगी अपना वृत्तान्त कहने पर उद्यत हुआ और ज़ुबैदा के सम्मुखजाय इस प्रकार अपना वृत्तान्त कहना आरम्भ किया ॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिन्यां शुक्लदेवीसहाय संगृहीतायां तृतीयभागे मिश्रनिबन्धे भाग्यफलवर्णनं नामैकपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५१ ॥

इति शुभम्भूयात् ॥

और मंत्री और संपूर्ण भृत्य इकट्ठे थे। मैं वहां जाय तीन वार प्रणामकर हाथ जोड़ खड़ा होगया। वहां जितने मनुष्य थे इस अपूर्व वृत्तान्त को देख आश्चर्यित हुये कि हमने आजतक ऐसा बन्दर नहीं देखा था इसी प्रकार बादशाह भी इस बात से अत्यन्त विस्मित हुआ। फिर बादशाह ने सम्पूर्ण सभासदों को विदा किया। केवल मैं और वृद्ध दारोगा बादशाह के पास रहगये। फिर बादशाह ने सभासे घरमें जाय नाना प्रकार के व्यंजन मँगाये और मुझे सैनसे खानेको बुलाया। मैं प्रणामकर बैठगया और बड़ी सावधानी से भोजन करना आरम्भ किया। जब भोजन करचुके और बर्तन वहां से उठगये तो मैंने सैन से एक क़लमदान मँगाया जब वह क़लमदान मेरे सम्मुख आया तब मैंने उस में से एक बड़ा काग़ज़ ले बादशाह के धन्यवाद का काव्य बनाय बादशाह के सम्मुख किया। बादशाह उसे पढ़ अत्यन्त आश्चर्यित और पहिले से भी अत्यन्त प्रसन्न हुआ। इसके पश्चात् बादशाह ने सेवकों को सैन की कि इसे भी मदिरा पिलाओ। सो उन्होंने एक गिलास मुझे भी दिया। मैंने उसे पी एक नये प्रकार का काव्य अपनी आपत्ति और उस बादशाह की गुणग्राहकता के विषय में लिखा। बादशाह ने उसे पढ चित्त में कहा कि इस बन्दर के समान कोई भी संसार में नहीं है फिर उसने सतरंज मँगाई और मुझे सैन से पूछा कि यह खेल जानते हो? उसके उत्तर में मैंने धरती को चूम अपना हाथ शिरपर रक्खा तो बादशाहने अभिप्राय जान खेलना आरंभ किया। पहिली बाज़ी तो बादशाह जीता और दूसरी, तीसरी में जीता।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

दृष्टान्तप्रदीपिनी

चतुर्थभाग पूर्वार्द्ध

जिसमें

सार्वविषयिक निबन्ध सम्बन्धी अत्यन्त रोचक
चमत्कृत अपूर्व अद्भुत वृहत् विस्तृत
दृष्टान्त वर्णित है ॥

जिसको

श्रीयुत सद्गुणग्राहक आर्य्यहितैषी [illegible]
श्रीचिरायुष्मान् प्रयागनारायणजी के [illegible] से
श्रीमच्छुक्लोपाध्याय (देवीसहाय) [illegible]
निर्मित कर निज भाषा विभूषित करके [illegible]
के उपकारार्थ प्रकाशित [illegible]

[illegible]

लखनऊ [illegible]

[illegible]

मुन्शी [illegible]

[illegible]

बादशाह को दो बाजीके हारने से कुछ ग्लानि हुई इससे उस
धैर्य के वास्ते मैंने काव्य इस विषय का लिखकर दिया कि द
योद्धाओं ने परस्पर दिन भर युद्धकर सायङ्कालको मेलकिय
और रात्रिको उसी युद्धस्थान में आनन्दसे सोरहे। बादशा
मेरी बुद्धिमानी को देख अतिआश्चर्यित हुआ और सभ
सदों से कहा कि मैंने किसी बन्दरको भी ऐसा योग्य
देखा और न सुना। फिर बादशाहने अपनी पुत्री मल्कैहस
को मेरे चरित्र दिखाने के लिये बुलाया। वह शाहजादी व
से बादशाह के सम्मुख मुख खोले हुये गई परन्तु वहां मु
देखते ही उसने तुरन्त अपने मुखको ढांप लिया और बाद
शाहसे विनय की कि आपको क्या होगया कि आप मुझक
परपुरुषके सम्मुख बुलाते हैं। बादशाहने उत्तर दिया कि मु
को जान पड़ताहै कि तुम बेहोशी से बातें करती हो इ
स्थानपर मेरे और तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं है तु
सदैव मुख खोले मेरे सम्मुख आया करती हो इस समय
क्यों अपने मुंहपर वस्त्र डाले आई हो? शाहजादीने बाद
शाहसे विनय की कि आप अच्छे प्रकार जानलें कि मेरी
कुछ भी भूल नहीं है मैं सच कहती हूं कि यह बन्दर सचमुच
मनुष्य और बड़े बादशाह का पुत्र है परन्तु जादूके कारण
बन्दर होगया है। इबलीसके पुत्र ने बादशाह अबूतैमुरस
आबोनी द्वीपकी शाहजादी के मारने के पश्चात् इस शाहजादे
को जादू से बन्दर बनाडाला है। बादशाह यह बात सुन
अत्यन्त विस्मित हुआ और मुझ से पूछा कि क्या यह बात
सच है? मैंने आना नाश [illegible] कहा कि जो

इस शाहजादीने कहा है वह ठीक है। फिर बादशाहने अपनी शाहजादीसे पूछा कि तुझे कैसे विदित हुआ कि यह शाहजादा बन्दर होगया है? शाहजादी ने उत्तर दिया आपको स्मरण होगा कि जब दूध मेरा छुड़ायागया था तब मेरे पालन और उपदेश के लिये जो वृद्धा थी वह जादूकी विद्या में अतिनिपुण थी, उसने मुझको सत्तर पर्व मन्त्रविद्या के सिखलाये हैं जिससे मुझमें इतनी शक्ति है कि तुम्हारे सम्पूर्ण देशको यहांसे उठा समुद्रमें डालदूं। मैं जादू के बल से यह जानलेती हूं कि इसपर अमुक मनुष्यने जादूकर इस योनि में बना दिया है। इसीसे इसको मैंने एकही बेरके देखने में पहिंचानलिया है जिसको आप बन्दर जानते हैं। बादशाहने कहा कि हे शाहजादी! मैं तुझे ऐसी गुणवती न जानताथा। शाहजादीने कहा हे पिता! यह भेद है, हरएक मनुष्य को सीखना उचित नहीं है मैं कुछ इसमें झूठ नहीं कहती। बादशाह ने अपनी शाहजादी से कहा कि तुम्हे इतनी सामर्थ्य है कि इस शाहजादे का जादू दूर करदो और फिर उसी स्वरूप में बनादो। शाहजादी ने कहा निस्सन्देह मैं करसक्ती हूं। बादशाहने कहा कि यदि तुम इसको पहिली सूरत में लाओगी तो मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूंगा और इसको अपना मंत्री कर तेरे साथ इसका विवाह करदूगा। शाहजादी ने कहा बहुत अच्छा। इतना कह मल्काहसन अपने भवन से एक छड़ी लाई जिसमे इबरानी अक्षर लिखे थे और कहा कि आप ख्वाजेसराय और बन्दर सहित एक भवन में रक्षापूर्वक छिपकर बैठें। फिर हम तीनों बरामदे में छिपकर बैठगये।



दृष्टान्तप्रदीपिनी सटीक



चतुर्थभाग ॥

पूर्वार्द्ध ॥

तावत्तदीयम्मङ्गलाचरणमिदमार्य्ययाह द्विरदाननसुषमालय प्रत्यूहौघापहार विश्वेश । गौरीसुत मोदकभुङ्मङ्गलकर्तृगणाधीशम् ॥ १ ॥ ध्यात्वातव पदपद्मौ शुक्लोदेवीसहायशर्म्माज्ञः ॥ कुरुतेचतुर्थभागं सद्दृष्टान्तप्रदीपिन्याः ॥ २ ॥

अथ प्रथमः प्रदीपः ॥ १ ॥

निष्कग्राही यश्चपेटेन साकंवृद्धश्चाथोमुञ्जकर्त्ताद्वितीयः ॥ अश्वारूढश्चापिहारूरसीदस्याग्रेगाथावर्णयांचक्रुरेवम् ॥ १ ॥

अर्थ-एक वृद्ध जो थाप खाकर भीख लेताथा और मूंज बांटने वाला जो अकस्मात् ही महाधनी होगयाथा। और तीसरा घोड़ीपर सवार जो उसे वारवार मारता था इत्यादिकों ने निज निज कहा-

उसने उस बरामदे में, एक बड़ा घेरा पृथ्वी में खैंचा और कुः
इबरी और कलपतरी शब्द पढ़नेका आरम्भ किया । जंः
पढ़चुकी और विचारानुसार घेरा भी बनालिया तब उस घेः
के अन्दर जाय कुरान का पढ़ना आरम्भ किया । इतने मेः
चारोंओर रात्रि के समान अँधेरा छागया और प्रलय के चिहः
दिखाई देनेलगे । यह दशा देख हम सब भयभीत हुये किः
क्या होगा । फिर इबलीसका पुत्र बड़े उग्र और भयंकर शेरकेः
स्वरूप में प्रकट हुआ । शाहज़ादी उससे कहने लगी किः
अय कूकर ! तुझे चाहिये था कि तू मेरी विनती करता परन्तुः
इसके विपरीत तू मेरे डराने को ऐसा भयानकरूप धर आया ।
तैंने बड़ी ढिठाई की है शेर ने उत्तर दिया, तैंने उस प्रण को
जो पिशाचों और मनुष्यों में हुआथा तोड़दिया है जिसपर
कठिन कठिन शपथें की गई थीं कि कोई एक दूसरे को दुःख
न दे । शाहज़ादी ने कहा, अय मलिनरूप ! तू प्रणभंगी है,
मुझे चाहिये, कि इस विषय में तुझे बुरा भला कहूं । शेरने
कहा तैंने बड़ी ढिठाई की जो मुझे यहांतक आने का श्रम
दिया, यह कह उसने अपने मुख को फैलाया और इच्छा की
कि शाहज़ादी को निगल जायँ परन्तु वह अत्यन्त बुद्धिमती
और चैतन्य थी पीछे की ओर कूद कर हटगई और अपने
शिरका एक बाल उखाड़ कर उसपर दो चार अक्षर पढ़े तो
वह बाल खड्ग के समान बनगये । शाहज़ादी ने उस खड्ग
से उस सिंह के दो टुकड़े कर उस दालान में डालदिये । फिर
वह शेर के टुकड़े गुम होगये परन्तु शिर उसका रहगया था

युद्ध करनेलगी। वह बिच्छू सामना करने की सामर्थ्य न रख कर पक्षी बनके उड़गया फिर वह सर्प भी काला पक्षी बनकर उसके पीछे होलिया यहां तक कि वे दोनों हमारी दृष्टि से छिपगये। थोड़ी देर के पश्चात् हमारे सामनेकी पृथ्वी फट-गई और उसमें से दो बिल्लियां श्वेत और काली निकलीं और दुमके बाल खड़ेकर परस्पर चिल्लाने लगीं। फिर वह काली बिल्ली काला भेड़िया बनकर दूसरी बिल्ली की ओर दौड़ी तब वह बिल्ली अवकाश न पाय, निरुपाय हो कीड़ा बनगई। उस कीड़े ने एक अनार के बीच में जो उसी समय वृक्षसे नहर के किनारे गिरपड़ा था अपनेको छिपाया फिर वह अनार बढ़ने लगा, यहां तक कि बढ़ते बढ़ते बड़े मटके के समान होगया और वायुपर उड़ा तदनन्तर बरामदे की ऊँचाई तक जाय कभी आगे की ओर कभी पीछे को हिलताथा इसी प्र-कार इधर उधर जाय पृथ्वी पर गिरकर फटगया और उसके बहुत से टुकड़े होगये। वह भेड़िया तत्काल मुर्गा बन अनार के दाने चुगने लगा और शीघ्रही एक एक दाना निगलना आरम्भ किया। जब सब दाने अनारके खाचुका तब वह पंख फैला हमारे निकट आया और बड़ा शब्द किया अर्थात् वह पूछता है कि कोई दाना शेष तो नहीं रहाहै फिर और चारों ओर ढूंढ़ने लगा कि संयोगवश उसने एक दाना नहर के तटपर पड़ाहुआ देखा तो दौड़कर चाहा कि उसको भी खालें इतने में वह दाना लुढ़कता हुआ नहर में चला गया और छोटी मछली बनगया। वह मुर्गा भी मछली के खाने को नहर में गया। वह मछली और वह मुर्गा दो घड़ी

ने एक अशरफी जेब से निकाल उसके हाथ मे रखदी उस अन्धे ने खलीफ़ा का हाथ पकड़ ठहराया और आशीर्वाद देकर कहने लगा हे सत्पुरुष! उदार तूने मुझे अशरफी दानदी तू मुझे एक धौल भी मार क्योंकि मैं इसी दण्डके योग्यहूं किन्तु इससे अधिक क्या यह कहके उसने खलीफ़ा का हाथ छोड़दिया और फिर कपड़ा खलीफ़ा का पकड़ा कि ऐसा न हो कि विना मारे धौलके चलाजावे खलीफा उसकी इस इच्छा से आश्चर्य में हुआ और कहा हेभले मानस! मुझसे इस बातकी आशा मतरख मैं क्योंकर अपने पुण्य का फल नष्ट करूं यह कहके खलीफ़ा ने चाहा कि वस्त्र अन्धे से छुड़ाकर चलाजावे उसने इस बात को मालूमकर दामन को जोर से पकड़ा और कहने लगा कि मेरी इस ढिठाई को क्षमाकर और जो मैं कहताहूं सो कर अर्थात् एक धौल मेरे शिरपर मार नहीं तो अपनी अशरफी फेरले कि मुझे धौल मारे विना तेरी अशरफी लेना स्वीकार नहीं क्योंकि जो मैंने ईश्वर से प्रतिज्ञाकी है उसे उल्लङ्घन नहीं कर सक्ता जो तू इसका कारण सुने तो जाने कि मेरा बहुत बड़ा अपराध है खलीफ़ा ने लाचारहो धीरेसे एकधौल उसके शीश पर मारी वह भिक्षुक वस्त्र छोड़ कर शुभ आशीर्वाद देनेलगा निदान खलीफ़ा और वजीर दोनों आगेबढ़े और थोड़ी दूर जाय खलीफा ने वजीर से कहा मैं चाहताहूं कि इस भिक्षुक से इसकी प्रतिज्ञा का कारण पूछूं तू जा और उस से कह वह मनुष्य जिसने तुझे अशरफी दी थी खलीफा है कल भोरको खलीफा की सभामें जाना वह तुझसे कुछ पूंछेगा सो मन्त्री ने अन्धे भिक्षुक के पास जाकर पहिले एक अशरफी उसेदी उसने उस से भी धौल मारनेको कहा वजीरने भी ऐसे उसे धौल लगा खली-

तक उस नहर के भीतर रहे। हमें उनका वृत्तान्त कुछ भी विदित न हुआ कि वह दोनों कहां गये। फिर थोड़ी देर के पश्चात् हमने एक भयानक शब्द चिल्लाने का सुना कि जिसके सुनने से हम बहुत डरे फिर उस पिशाच और शाहज़ादी को देखा कि वे दोनों अग्नि होगये और प्रत्येक अपने मुखसे लाटें निकाल दूसरे की ओर फेंकता और निकट हो हो एक दूसरे पर चढ़ाई करता है। यहांतक कि अग्निने सबको घेर लिया तो यह आश्चर्य देख हम कम्पित हुये कि इस अग्निसे सम्पूर्ण राज्य अभी जलजायगा। इस समयान्तर में हमारे भयका एक और भी कारण हुआ कि वह पिशाच शाहज़ादी के सम्मुख से हट हमारी ओर आया जहां हम सब बैठे थे और अपने मुख से लाटे निकाल हमारी ओर फेंकने लगा। वह चाहता था कि ये जल कर भस्म होजावें इतने में शाहज़ादी दौड़कर आई और हमें उसके हाथ से बचाकर उसको वहांसे दूर भगाया। शाहज़ादी के रक्षा करने पर भी बादशाह का मुख झुलस गया और ख्वाजेसराय का दारोगा जल भुनकर भस्म का ढेर होगया और एक चिनगारी उड़कर मेरे दाहिने नेत्र में लगी कि जिससे मैं काना होगया। हम दोनों इससे अतिदुःखित थे कि इतने में जय का शब्द हमने सुना और वह मल्काहसन निज योनि में बन हमारे निकट आई और वह पिशाच जल के भस्म का ढेर होगया। फिर शाहज़ादी ने एक नौकर से जल मँगवाया और उसपर कुछ मन्त्र पढ़ मुझपर छिड़का और कहा कि जो तू जादू से बन्दर बन गया है सो अपनी

नी बादशाह हारूंरसीद के आगे इस प्रकारसे वर्णन करी सो इतिहास ऐसे कि एक दिन खलीफा हारूंरसीद आपही कुछ चिन्तित होकर अपने महल में बैठाथा कि बादशाह का भेदिया वज़ीर जाफ़र आया और खलीफा को चिन्तित पाकर चुपका हाथ बांधे खड़ा होरहा थोड़ी देर पीछे खलीफ़ा ने आंखें खोल उसकी ओर देखा और कुछ वार्ता न की फिर उसी विधि चिन्ता में चुपका बैठ रहा मन्त्री ने अपने स्वामी को इस दशा में देख विनय की हे बादशाह! आशा रखता हूं कि यह दासानुदास आपकी इस चिन्ताका हाल मालूम करे खलीफ़ा हारूंरसीद ने उत्तर दिया तूने सत्य कहा मुझे कभी कभी चिन्ता आजाती है परन्तु मैं चाहता हूं कि तू कोई ऐसी बात विचार जिससे यह चिन्ता मेरी निवृत्त हो मन्त्री ने विनय की मुझे मालूम है कि आपका सदासे यह नियम है कि बहुधा आप वेष बदल अन्यायियों और दुष्टों के हाल मालूम करनेको नगरकी सीमाओं और गलियोंमें घूमा करते थे और आजके दिनको आपने इसी कार्य्य के लिये नियत किया है उत्तम है कि अपने नियमानुसार वही कार्य्य कीजिये जिस से यह आपके मनका सम्पूर्ण शोच जातारहे और प्रजा के हाल मालूम करनेसे निश्चयहै कि चित्त आपका सन्तुष्ट हो जावेगा खलीफ़ा ने कहा सत्य है मैं इस बात को भूलगयाथा इस समय तूने स्मरण कराया तूभी शीघ्रही अपना वेष बदलकर आ मैं भी वेष बदलताहूं फिर वे दोनों वेष बदलकर बाग के चोरदरवाजे से निकल कर प्रथम नगरके चहुंओर घूमे तदनन्तर नावपर सवारहो नदीके पार जाकर वहां की बस्ती देखने लगे उसपारसे किसी समय पुलकी ओरआये वहां एक अन्धे भिक्षुकने खलीफासे भिक्षामांगी खलीफ़ा

ने एक अशरफी जेब से निकाल उसके हाथ मे रखदी उस अन्धे ने खलीफ़ा का हाथ पकड़ ठहराया और आशीर्व्वाद देकर कहने लगा हे सत्पुरुष! उदार तूने मुझे अशरफ़ी दानदी तू मुझे एक धौल भी मार क्योंकि मै इसी दण्डके योग्यहूं किन्तु इससे अधिक क्या यह कहके उसने खलीफा का हाथ छोड़दिया और फिर कपड़ा खलीफ़ा का पकड़ा कि ऐसा न हो कि विना मारे धौलके चलाजावे खलीफ़ा उसकी इस इच्छा से आश्चर्य्य में हुआ और कहा हेभले मानस! मुझसे इस बातकी आशा मतरख मै क्योंकर अपने पुण्य का फल नष्ट करूं यह कहके खलीफ़ा ने चाहा कि वस्त्र अन्धे से छुड़ाकर चलाजावे उसने इस बात को मालूमकर दामन को जोर से पकड़ा और कहने लगा कि मेरी इस ढिठाई को क्षमाकर और जो मैं कहताहूं सो कर अर्थात् एक धौल मेरे शिरपर मार नही तो अपनी अशरफ़ी फेरले कि मुझे धौल मारे विना तेरी अशरफी लेना स्वीकार नहीं क्योंकि जो मैंने ईश्वर से प्रतिज्ञाकी है उसे उल्लङ्घन नहीं कर सक्ता जो तू इसका कारण सुने तो जाने कि मेरा वहुत बड़ा अपराध है खलीफ़ा ने लाचारहो धीरेसे एकधौल उसके शीश पर मारी वह भिक्षुक वस्त्र छोड़ कर शुभ आशीर्वाद देनेलगा निदान खलीफा और वजीर दोनों आगेबढे और थोड़ी दूर जाय खलीफा ने वजीर से कहा मैं चाहताहूं कि इस भिक्षुक से इसकी प्रतिज्ञा का कारण पूछूं तू जा और उस से कह वह मनुष्य जिसने तुझे अशरफी दी थी खलीफा है कल भोरको खलीफा की सभामे जाना वह तुझसे कुछ पूछेगा सो मन्त्री ने अन्धे भिक्षुक के पास जाकर पहिले एक अशरफी उसेदी उसने उस से भी धौल मारनेको कहा वजीरने भी ऐसे उसे धौल लगा खली-

यथा उपायहै अब तू सुजाखा नहीं होसक्ता फिर मैंने अत्यन्त विनय करके कहा हे योगी! इन अस्सी ऊँटोंको जो अशरफ़ी और रत्नों से लदे हैं लेजा मैंने प्रसन्नता से तुझे दिये जो तुझसे होसके तो ईश्वरके वास्ते मेरे नेत्रोंमें ज्योति दे उस योगी ने फिर मेरी बात का उत्तर न दिया और मुझे उसी दुर्दशा और कष्टमें छोड़कर और वह अस्सी ऊँट लेकर बांसरा देशकी ओर चल दिया मैं कितनाही चिल्लाया किया कि मुझे भी इस वनसे अपने साथ लेचल मार्ग में किसी दूसरे व्यापारी के साथ होलूंगा परन्तु उसने कुछ भी मेरी बात न सुनी निदान में उस योगी के चलेजाने के पीछे अपने नेत्रोंकी ज्योति और धन खोकर क्षुधा और तृषा से मरने लगा संयोगवश दूसरे दिन बांसरा देशके व्यापारियों का समूह जो बुगदाद को जाता था उधर निकला मुझको आपत्तिमें देख दया से बुगदाद में लेआये मुझे इस नगर में सिवाय इसके भीख मांगकर अपना कालक्षेप करूं और कुछ न वनपड़ा निदानभीख मांगनी आरम्भ करके यह प्रतिज्ञाकी कि इस तृष्णा का यह दंड है कि जो कोई मुझपर दयाकर कुछ दे तो उचितहै कि एक धौल भी मेरे शिरपर मारे यही कारण था कि मैंने आपसे कल इसवात में तकरारकी थी जब उस वृद्ध अबदुल्लाने अपना वृत्तान्त समाप्त किया तो खलीफ़ाने उससे कहा हे भिक्षुक! तेरा अपराध बड़ाहै ईश्वर उसको क्षमा करे अब तुमको उचितहै कि अपनी जाति के फकीरों से अपने अपराधको कहो कि तुमको आशीर्वाद दें अब तुम अपने निर्वाहकी कुछ चिन्ता मत करो तुम्हारे वास्ते मैं पांचरुपये रोज अपने कोपसे नियत किये देताहूं वह जन्मभर तुमको पहुंचे जावेंगे अब तुम नगरमें भिक्षाके लिये मत जायाकरो यह

फ़ाकी आज्ञाको सुनाया और खलीफ़ा को जा मिला फिर व
दोनो नगर में गये तो क्या देखा कि मैदान में एक तरुण मनुष्य
दिव्यवस्त्र पहिने घोड़ीपर सवार है और अत्यन्त निर्दयता से
घोड़ीको चाबुक और एंड़ें मार दुःख देता है उस घोड़ी के दौड़
दौड़ते मुखमें रुधिर और भाग भरगया है खलीफ़ा उसके कठो
चित्त और निर्दयता को देख आश्चर्य्य मे हुआ और इसके मा
लूम करने को वहां खड़ा होगया और तमाशाई जो वहां प्रथम
खड़ेहोके देख रहेथे उनसे घोड़ी के इतना मारने और दौड़ाने का
कारण पूंछा उन्हों ने कहा हम हरदिन इसको इसी मैदान में इसी
समय देखते हैं कि अपनी घोड़ीको इसीविधि मार २ कर सैकड़ों च
कर देताहै परन्तु हमे इसका हेतु कुछ मालूम नही कि यह मनुष्य
कौन है और इस घोड़ी के मारने और दौड़ाने से उसे क्या प्रयो
जन है खलीफ़ा ने यह सुन जाफर से कहा मैं आगे जाताहूं तू
इस सवार को जाके आज्ञा दे कि कल उसी समय जो भिक्षुक के
लिये नियत किया है मेरी सभामें आवे उसने वही किया फिर व-
जीर और खलीफ़ा एकगली में गये जिसमें कईबेर पहिलेभी गये
थे वहां बड़ाभारी अतिस्वच्छ महल बनाहुआ देख खलीफ़ा ने
उसे शोचा कि यह महल किसी मेरे सेवक का बनायाहुआ होगा
तो वजीरसे पूंछा यह घर किसका है उसने विनयकी मुझे कुछ
इसका वृत्तान्त मालूम नहीं जो आज्ञाहो तो मैं यहां के वासियों
से पूछूं निदान वजीरने वहां के रहनेवालों से पूंछा कि यह नवीन
और सुन्दर महल किसकाहै उन्होंने कहा यह महल ख्वाजहहस-
नहब्बालका है हब्बाल रस्सी बटनेवाले को कहते हैं यह मनुष्य

सुन उसने खलीफ़ा को प्रणाम किया और कहने लगा जो कुछ आपने आज्ञा की मुझे स्वीकारहै तब खलीफ़ाने भिक्षुककी कहानी सुनचुका उस मनुष्य से जो हरदिन अपनी घोड़ीपर सवारहो के उसे दौड़ाता और मारता था उससे उसका नाम पूंछा उस ने विनय की मेरा नाम सीदीनैमान है खलीफ़ाने कहा हमने बहुत से सवारोंको देखा कि वह घोड़ोंकी सवारी सीखने के लिये बहुत श्रम करते हैं बहुधा हमने भी घोड़ोंपर सवारहो घोड़ों को फेरा है परन्तु मैंने किसी को नहीं देखा कि जैसे तुम अपनी घोड़ी को दौड़ाया करतेहो कल मैंने तुमको देखा कि तुम अपनी घोड़ीको चाबुक से और एड़ें अत्यन्त निर्दयता से मारतेथे सब मनुष्योंको यह दशा देख अत्यन्त आश्चर्य था और उन सबसे अधिक मैं आश्चर्यितथा यहांतक कि मैंने उस समूह से खड़े होकर इसका कारण वहांके मनुष्यों से पूंछा पर कोई न बतासका इतनाही मालूम हुआ कि प्रतिदिन इसी भांति तुम अपनी घोड़ी को कष्ट देतेहो अब मैं तुमसे इसका कारण पूंछताहूं उचितहै कि तुम सत्य सत्य कहो सीदीनैमानने जाना कि खलीफ़ा इस हालके सुनने के लिये बहुत हठ करताहै और कहे बिना किसी भांति मेरा छुटकारा नहीं होसक्ता पहिले इस प्रश्नके सुनतेही उसके मुखका वर्ण बदलगया और खलीफ़ाके भयसे चुपचाप चित्रवत् खड़ा रहगया खलीफ़ाने कहा सीदीनैमान डर मत मुझसे कारण उसका वर्णन कर और इस समय मुझे अपने मित्रोंके समान समझ और जिसतरह उन से बातचीत और अपना हाल कहता है मुझसे भी कह दे उस के भेदके वर्णनमें किसी बातका भय तुझकोहो तो मैंने उसे क्षमा किया सीदीनैमानको खलीफाके धीर्य देने मे कुछ बोलनेका सा-

निर्वाह करताथा परन्तु यह नहीं जानते कि क्योंकर उसे बहुतसा द्रव्य प्राप्त हुआ जिससे उसने इतना विशाल महल बनवायाहै अब वह बड़े आनन्द से अपने कालक्षेप करता है खलीफ़ाने यह बात सुन वजीर से कहा मैं चाहताहूं कि ख्वाजहहसनहब्बाल को देखूं और यह समाचार पूछूं तू जाके उससे कह कि कलके दिन उसकाल में जो उन दोनों के लिये नियत कियाहै मेरी सभामें आवे उसने तुरन्त अपने स्वामी की आज्ञा प्रतिपालन की दूसरे दिन प्रभात को जब खलीफा निमाज भोरकी पढ़ तख़्तपर सुशोभित हुआ वजीर तीनों मनुष्यों को उसके सन्मुख लेगया उन्होंने पहिले तख़्त के पायेको चूमा खलीफ़ा ने पहिले उस अन्धे भिक्षुकसे पूंछा तेरा क्या नामहै उसने उत्तर दिया मेरा नाम बाबा अब्दुल्ला है खलीफ़ा ने कहा मैंने कल तुझे एक अशरफी दी तूंने उसे लेकर क्यों कहा कि मुझे एक धौल मारो या अपनी अशरफ़ी लौटालो और तूने यह क्यों प्रतिज्ञाकी अब मैं चाहताहूं कि इस प्रतिज्ञाका कारण मालूम करूं अब्दुल्ला ने अपना शिर खलीफा के तख़्तके सामने पृथ्वी से लगाया और उठकर कहनेलगा अय शाहनशाह प्रथम मेरी यह विनयहै कि वह ढिठाई जो कल मैंने आपसे की थी क्षमाहो क्योंकि मैंने आपको न पहिचाना अब मैं विस्तारपूर्वक इस प्रतिज्ञा का वृत्तान्त आपके सन्मुख वर्णन करताहूं उससे आप को अवश्य विदित होगा कि मैं निस्सन्देह ऐसे दण्डकेयोग्यहूं ॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिन्याचतुर्थभागे प्रथम प्रदीपः ॥ १ ॥

अथ द्वितीय प्रदीपः ॥ २ ॥

दत्तेसमस्तद्रव्येपि योगिनातिदयालुना ॥ अन्धीभूत पुनर्लोभाच्चपेटग्राहहंयतः ॥ १ ॥

हस हुआ तो हाथ बांध विनय किया मैंने इस विषय में अपनी जाति धर्मके विपरीत कोई कार्य नहीं किया इसलिये मैं आपकी आज्ञानुसार इस वृत्तान्तको वर्णन करताहूं जो कोई अपराध मुझ से हुआ हो निःसन्देह दण्डके योग्यहूं यहतो निःसंदेह है कि मैं अपनी घोड़ीको जैसा कि आपने देखा हरदिन घुमाया करताहूं सो आपको इस घोड़ीपर बड़ी दया हुई और मेरा इस भांति से चक्कर देना आपको बुरा मालूम हुआ यदि आप इसका कारण सुनेंगे तो यह दंड इसके लिये आप थोड़ा समझेंगे॥

इति० प्रथमपक्षीविभागे द्वितीय प्रदीपः॥ २॥

अथ तृतीय प्रदीपः॥ ३॥

प्रत्यक्षमोदनं नाति परोक्षेप्रेतभक्षिणी॥
पतिश्चक्रेश्वकंत्वाणंडाकिनीवडवाद्यभूत् ३

अर्थ–जो स्त्री प्रत्यक्ष निज पतिके साथमें तो चावल भी गिन २ के खाती और एकांत से जाय मुर्दे खाती थी और निजपति को जिसने श्वान बनाया इससे वह घोड़ीहो ताड़ना दीगई ३।६

सीदीनेमान और उनकी घोड़ी की कहानी॥

हे बादशाह! मेरे माता पिता अपने मरने के पीछे इतना धन छोड़गये थे कियदि मैं एक संभरको कुछ कम न था और आनंदपूर्वक अपना निर्वाह करता किसी भांतिकी चिन्ता न रखता एक दिन तरुणावस्थाके वेगसे यह विचार उपजा कि एक सुन्दरस्त्रीसे विवाह करूं परन्तु ईश्वरने न चाहा कि कोई अच्छी स्त्री मुझको मिले जो दुःख सुखकी साथीहो संयोगवश मैंने एक स्त्रीके साथ जो अतिरूपवान् व अमीना नाम थी विवाह किया और दूसरे ही दिन से उस की दुष्टताका हाल मुझपर खुलने लगा हे स्वामी! आप को

अत्यन्त दयालु योगी करके सब द्रव्य देनेपर भी मैंने निज-लोभसे फिर उससे मलहमकी पुड़िया मांगके अपनी दोनो आंखे खोई इससे मैं चपेटग्राही अर्थात् थापखाकर भीख लेताहूं २ इसपर अन्धे बाबा अब्दुल्ला का वृत्तान्त। बाबा अब्दुल्ला ने खलीफ़ा के सन्मुख अपना वृत्तान्त इस विधि वर्णन किया कि मेरा उत्पत्ति-स्थल बुगदादनगर है जब मेरे मातापिता मरगये तो उनका द्रव्य मेरे हाथ लगा यद्यपि उतना द्रव्य मेरे जन्मभरको बहुत था परन्तु मैंने उसकी कुछ भी कदर न की थोड़ेही काल मे उसे लम्पटता में खर्च कर डाला जब थोड़ा सा बचा तो उस धन के बढ़ने के लिये रात दिन परिश्रम करता रहा यहां तक कि धीरे धीरे मैंने अस्सी ऊँट इकट्ठे किये और उन्हें सौदागरों को दिया करता हर बेर मैं उन ऊँटों के किराये से जो मुझे लाभ होता तो और ऊँटो को लेकर राज्य में मैं लिये फ़िरता और आप उन ऊँटों के साथ रहता थोड़े दिनों के लाभ से मैं समझा कि थोड़े ही काल में मैं महाधनवान् होजाऊँगा सो मै एक बेर बांसरा नगरसे जहां व्यापारियों ने अपनी वस्तु को हिन्दुस्तान के लेजाने के इरादे से लादाथा असबाब को पहुँचा के खाली ऊँट लिये हुये बुगदादको लौट आताथा कि मार्गान्तर में मैंने अपने ऊँटों को एक वन में जो बस्ती से दूर था चरने के लिये छोड़ दिया और सुन्दर हरियाली घास देख उनके पांव रस्सी से बांधदिये इतने मे एक योगी जो पैदल बांसरानगर को जाताथा वहां आया और मेरे पास बैठा मैंने उससे पूंछा तुम किधर से आते हो और कहां जाओगे उस योगीने भी मुझसे यही प्रश्न किया निदान हमने परस्पर

भली भांति मालूमहै कि हमारी जाति में विवाह के पहिले स्त्री के देखने की रीति नहीं है और विवाह पहिले पति स्त्री के रूप और अंतःकरणकी अशुद्धता को किसी तरह नहीं कह सक्ता हरतरह उसी स्त्री के साथ प्रसन्नतापूर्वक रहना चाहिये चाहै वह सुशील हो व असील निदान पहिले उसके रूप छवि अनूप को देख अत्यन्त प्रसन्न हुवा और ईश्वर का धन्यबाद किया और प्रसन्नता से रात्रिभर उसके साथ सोया विवाह के दूसरेदिन जब उसके और मेरे लिये भोजन लाया गया मैंने अपनी स्त्री कोभी बुलवा भेजा बहुतकाल में वह भोजन के पास आबैठी संयोग से उस समय हम पुलाव भोजन करने लगे और मैं अपने देशकी रीति के अनुसार चमचे से खाने लगा और वह अपने जेबसे कानकुरेदनी निकाल उससे चावल का एक एक दाना उठा २ कर खाने लगी यह देख मैं आश्चर्य में हुवा और उसका नाम लेकर कहा हे सुन्दरी।क्या तुम भोजनकी यही रीति अपने सम्बन्धियोंसे सीखी है या तुम अन्नके दाने गिनती दूसरे समय भोजन करोगी

खाने लगे भोजनान्तर में उससे मेरी बहुत वार्ता हुई सो योगी ने मुझसे कहा एक स्थान पर जो यहां से बहुत दूर नहीं असंख्य द्रव्य का कोष है जो तुम अपने अस्सी ऊँटको केवल अशरफ़ी और रत्नो से ही भरलोगे तथापि उसमेंसे कुछ कम न होगा और वह बेप्रमाण कोष वैसाही भराहुआ दीखेगा इस के सुनते ही मैं अतिप्रसन्न हुआ और उस योगी का वेष देखकर यह विचार में न आया कि वह छल से कहताहै इस से उठके उसके गले मिला और कहा हे महात्मा तुम को संसारी धनकी कुछ परवाह नहीं और जगत् के सब कार्य्य से तुम कुछ काम नहीं रखते आश्चर्य्य नहीं कि आपको उस द्रव्य का हाल मालूम हो मुझे वह स्थान बताओ तो मैं अस्सी ऊँटों को वहां से भरकर आपको श्रम फल में एक ऊँट दूं और मैं जानता हूं कि आपको उसकी कुछ इच्छा नहीं कहने को यह बात कही परन्तु मनमें इस बात का बड़ा खेद हुआ कि अशरफ़ी और रत्न का भराहुआ एकऊँट देना उचित नहीं फिर सोचा कि उन्नासी ऊँट मेरे वास्ते बहुत हैं निदान कभी मैं पश्चात्ताप करता और कदापि अपने मनको समझाता सो उसयोगीने मुझे कमहिम्मत और लोभी विचारके कहा मैं एकऊँटके वास्ते द्रव्य नहीं बताता परन्तु एकबात से कि तुम सब ऊँटों को लेचलो और हम तुम उसद्रव्य को उनपर लादें उसके आधे मुझको दो और आधे तुम लो चालीस ऊँटो से तुम हज़ारों ऊँट पैदाकर सक्ते हो मैंने कहा बहुत अच्छा मैं आपकी प्रसन्नता से बाहर नहीं जो आप आज्ञा दें मुझे स्वीकार है और मैं यह सोचा यदि चालीस ऊँट द्रव्यके मुझे मिलें तो वह कई पीढियों को काफ़ी होंगे जो अङ्गीकार नहीं करता तो जन्मभर पछताता रहूंगा निदान उस

कि उतने भोजन से चिड़ियाभी तृप्त न हो मैं उसकी हठसे अति आश्चर्य में हुआ और बिचारा कि शायद इसे पुरुष के साथ भोजन करते लज्जा आती हो आगे मेरे साथ खायाकरेगी और यहभी शोचा कि कदाचित् वह भोजन करचुकी हो इस लिये इस समय उसे रुचि नहींहै अथवा यह समझा कि उसको अकेले खाने का अभ्यास है निदान इन सब बातों को विचार मैंने उससे कुछ न कहा और भोजन करके मैदान में घूमने को गया उस के न खाने का शोच कुछ मेरे मनमें न रहा दूसरे समय जब भोजन करने का समय आयातो उसने उसी तरह खाया कि जैसा पहिले भोजन कियाथा किन्तु हर दिन उसी भांति भोजन करती मुझे उसकी यह दशा देख अधिक अचम्भा हुआ कि यह स्त्री विना भोजन क्योंकर जीती है यहां तक एक रात्रि को वह मुझे अपने विचार में सोया हुआ जान मेरे पास से चुपके उठी पर उस समय में जागताथा क्या देखा कि वह बड़ी सावधानी से उठतीहै कि मुझे उसका उठना जान न पड़े मैं आश्चर्य में हुआ कि यह इस समय क्यों अपना आराम छोड़ मेरे पास से उठी मैंने चाहा कि इसके हालको मालूम करूं फिर बाहर चली मैं भी शीघ्र अपनी शय्यापर से उठ वस्त्रों को कांधे पर डाल उसके पीछे चला और घरकी खिड़की से देखने लगा कि वह किधर को जाती है वह आगे बढ़के दरवाज़े को जो गली के ओरथा खोलकर बाहर गई मैं भी उसी द्वारे से जो उसने बन्द न कियाथा बाहर निकला और भलीभांति चन्द्रमा की चांदनी में देखता हुआ उसके पीछे होलिया चलती २ वह श्मशान में पहुंची जो हमारे घरसे निकट था मैं भी वहां दीवार से लगे इसी भांति खड़ा होगया कि उसे भले

योगी की बात मान उसके साथ हुआ और थोड़ी दूर जाकर दो
पहाड़ के दरे में पहुंचे जिसका मार्ग अति सूक्ष्मथा ऊँटो को
पंक्ति बांध वहांसे लेगये थोड़ी देर के पीछे मार्ग कुछ चौ
मिला वहां से सब आनन्दपूर्व्वक निकलगये इसके अनन्तर दो
पहाड़ दृष्टि पड़े जिनका वह दरहथा उस मार्ग में ऊंचान निचा
बहुत था कोई मनुष्य वहां न था जो हमको देखता इसलिये नि
शंक होकर वहां पहुंचे योगी ने कहा अब यहांपर ऊंटोंको बैठाक
मेरे साथ आवो मैं ऊंटों को बैठाकर वहां गया थोड़ी दूरपर जा
योगी ने पथरी और लोहा अपने पास से निकाल आग झाड़
और कुछ थोड़ासा काष्ठ एकत्र कर उसको जलाया और अग्नि
प्रवल कर उसपर कोई सुगन्धित वस्तुडाली और कोई मंत्र पढ़
जिसको मैं न समझता था उसके पढ़तेही एक बड़ा धुन्धाकार धुवां
उठा और ऊपर जाके फटगया और उस धुवे में जो दोनो पहाड़
के मध्यमे था एक टीला दृष्टि पड़ा और हमारी जगह से वहांतक
एक रस्ता बनगया और द्वार खुला हुआ दृष्टि पड़ा उसके भीतर
एक बड़ी कन्दरा दिखाईदी जिसमें एक विशाल महल जिन्नोंका
बनाया हुआ दिखाईदिया मनुष्य ऐसा भवन नही बनासक्के जब
उस महलमें जाकर देखा तो उसमे असंख्य द्रव्य भराहुआ था मैं
अशरफियों के ढेरको देख ऐसा झपटा जैसे गृध्र अपने शिकारपर
झपटता है और जितना चाहा मैंने ऊंटों की खुरजियोमे भरलिया
वह योगी भी इसी काममें लगा परन्तु वह केवल रत्नोंको उठाकर
भरता और मुझसे भी रत्न भरने को कहता सो मैं भी अशरफियों
को छोड़ बहुमौल्य रत्न भरने लगा निदान जब हम बहुतसा धन

प्रकार देखूं और वह मुझे न देख सके निदान क्या देखताहूंकिवह एक प्रेतके साथ जावैहै हे प्रजापालक ! आप जानते हैं कि प्रेत यातो शैतान की सृष्टि है वा भूतके प्रकारों में से हैं जो अके दुक्के यात्री पातेहैं तो उनको डसकर मार खाते हैं और जो वह किसी दिन विदेशी नहीं पाते तो रात्रि को कवरों में से मुर्दे निकालकर भक्षण करतेहैं मैं अपनी स्त्रीको प्रेतके साथ वैठे देख भयभीत हुआ और आश्चर्यमें हुआ फिर उन्होंने मिलकर एक लोथजो उसी दिन गाड़ीगई थी कवरसे खोदकर निकाली और वह दोनों अर्थात् मेरी स्त्री और प्रेत उस मृतकका मांस काट काट कर खाते और अतिप्रसन्नता से परस्पर वार्त्ता करते परन्तु मैं दूर खड़ाथा इस निमित्त उनकी बातें भलीभांति न सुनपड़तीथीं और उनकी दशा देख कांपनेलगा जब वह सब मांस भक्षण करचुके उस मृतककी हड्डियां फिर उसी कवरमें डाल फिर उसे मट्टीसेतोपदिया मैं उन दोनोंको वहीं छोड़कर तुरन्त अपनेघर चला आया और उस द्वारको उसी प्रकार खुला छोड़ अपनी शय्यापर आकर बहानेसे सोरहा थोड़ीदेरके पीछे उस स्त्रीने भी आकर अपने वस्त्र उतारे और मेरे साथ सोरही उसका हाल मुझे मालूम नहीं हुआ परऐसी मुर्दोके खानेवाली स्त्रीकेसाथ सोना बहुत बुरा मालूमहुआ निदान उस समय तो मैं ग्लानि पूर्व्वक उस दुष्टाके साथ सोरहा इतनेमें भोरकी बांगसुन मैं जागपड़ा और दिशा और स्नानादिसे निश्चिन्तहो निमाजपढ़ और नियमित कृत्यकर बागोंमें गया और टहलती समय यह विचार आया कि किसी भांति अपनी स्त्रीको इस असंगति से हटाऊं और मुर्दोंके खानेकी प्रकृति उससे छुड़ाऊं सोई विचार में अपने घरमें भोजनके समय पहुंचा मेरी स्त्रीने मुझे

की तो वह योगी फिर द्वार खोलकर उसी कोष से भीतर जहां हजारों वस्तु अतिसुन्दर सुवर्ण की नवीन प्रकारकी रक्खीहुई थी गया और वहांसे एक लकड़ी की डिबिया जिसमे मल्हम था एक संदूकचे मे से निकाल कर लेली और मुझको दिखाकर उसने अपनी जेबमें रखली फिर वह अग्निमे सुगन्धित वस्तु डालकर मंत्र पढ़ने लगा जिस से वह द्वार मूंदगया और वह टीला जैसा कि पहिले दीखता था वैसाही दिखलाई देनेलगा फिर हमने परस्पर उन ऊंटोंको आधे २ बांट लिये और उसी सूक्ष्ममार्ग में से एक एक ऊंट करके निकाले जब उस पहाड़के दरेसे बाहर निकले और खुला वन पाके बिदाहुये तब वह योगी बांसरा को सिधारा और मैं बुगदाद को चला और बिदाहोती समय मैंने उस योगी का बहुतसा गुणानुवाद किया क्योकि उसने करोड़ों का द्रव्य दिलाया निदान जब बिदाभये तो मैं ऊंट लेकर कई पैग आगे गया था कि शैतान ने मेरे मन मे यह बात डाली और लोभसे यह विचार किया कि यह योगी अकेला है अर्थात् इसके कुटुम्बआदि नहीं और संसार के कामोंसे भी कुछ प्रयोजन नही रखताहै इतने धन के भरेहुये ऊंट क्या करेगा किन्तु रखवारी करने से उसको ईश्वर की बन्दना में विघ्न पड़ेगा उत्तमहै कि कुछ ऊंट इससे और लिया चाहिये इस बात को मनमें ठान अपने ऊंटों को बैठाया और उन के पांव बांध वहांसे उसी योगी को पुकारता हुआ चला वह मेरा शब्द सुन ठहरगया जब मैं निकट पहुंचा तो उससे कहा कि मैंने आपको बिदाकरके शोचा कि तुम योगी हो जगत् से विरक्त और ईश्वरकी बन्दना में अहर्निश तुम्हारे इस द्रव्यके लेजानेसे भजन स्मरण मे विघ्न पड़ेगा इसकी रक्षा करनी पड़ेगी इससे उत्तम है

देखतेही मेरे सेवकोंसे भोजन मँगा रक्खा फिरजब हम खानेलगे तो वह उसी भांति एक २ दाना उठाकर खानेलगी। मैंने उससे कहा हे सुन्दरी! जो तुम्हें किसी भोजनकी रुचि न हो तो देखोई-श्वरकी कृपा से नाना भांतिके भोजन उपस्थित हैं औरइसकेवि-शेष प्रतिदिन भोजन बदलाये जाते हैं जिसकी तुम्हें रुचि होसके उसको खावो और जो तुमको यह खाने पसन्द न हों तो अपनी इच्छाके अनुसार भोजन पकवालिया करो इन बातोंके सिवाय मैं तुमसे पूंछताहूं क्या संसारमें कोई भोजन मुर्दों के मांससे उत्तम नहीं जिसे तुम रुचिपूर्व्वक भक्षण करती हो अभी मैंने यह सा-रीबात पूर्ण न की थी कि वह समझगई कि रात्रि को मैंने उसका हाल देखा है इससे मारे कोपके उसका मुख लाल होगया और आंखें उसकी उपर आई और मुखसे झाग झालाई उसकी यहद-शादेख मैं भयभीत हुआ और मेरी सुधि बुधि विसरगई उसने उस क्रोधमें एक जल भर गिलास जो उसके पास रक्खा हुआथा उठा लिया और उंगलियां जलमें डुबो कुछ शब्द जिनको मैं नहीं जानताथा पढने लगी फिर उन उंगलियों सेजलमुझपर छिड़का और कहा हे दुष्ट! तूने मेरा भेदखोला इस अपराधकादण्ड तू भुगत और कुत्ताबनजा उसके इतना कहतेही मैं कुत्ताबनगया वह लकड़ी उठामुझे मारनेलगी इतना मारा कि मैं मरजाता परन्तु मैं अपने ब-चावके लिये घरमें भी फिरा किया और वह लकड़ी लियेहुये मुझे खदेड़ती और मारती जाती थी जब वहमुझे मारते २ थकगईतो उसने दरवाजा खोलदिया मैं पीड़ाके मारे चिल्लाताहुआ बाहर को भागा यद्यपि बाहर निकल करके मार खाने से बचा परन्तु उस टोलेके कुत्ते मुझे दुःख देने लगे भूकने और काटने लगे वहांसे

कि यह ऊंट मुझको देडालो उसने कहा तू सत्य कहता है इतने ऊंटों के रखने से अवश्य विघ्नहोगा जितने तू चाहे इनमें से लेले मैंने प्रथमसे यह बात न विचारी थी वह ईश्वर परमात्मा तुझे आनन्द रक्खे तूने मुझे बहुत अच्छी बात बताई सो मैं दशऊंट उस योगी के भागमें से चाहताथा कि लेकर आगेको चलूं अकस्मात् फिर मेरे मन में यह आई कि योगी को दशऊंट के देने से कुछ खेद न हुआ दशऊंट और इस से लेने चाहिये फिर उस योगी के समीप जाय मैंने कहा तीस ऊंटकी रखवारी और सेवा तुम से बन न पड़ेगी उसमेंहै कि दश ऊंट मुझे और दो योगीने कहा अच्छा बाबा जो तेरी यही इच्छाहै तो दश इनमें से और ले बीसऊंट मेरे वास्ते बहुत हैं सो मैं दश ऊंट और योगी के भाग में से लेगया जब उन बीसों को मैंने अपनी पंक्ति में मिलाया तो मुझे लोभ अधिक हुआ और चाहा कि दश ऊंट और उससे लूं निदान फिर उसके पास गया और कहसुनके दश ऊंट और किन्तु शेष दशऊंट भी उससे ले दमदिलासा देकेचला आया योगी ने सबके सबऊंट बड़ी खुशी से मुझको दे दिये और वस्त्र झाड़कर उठ खड़ा हुआ और चलनेकी इच्छाकी परन्तु तृष्णाने मुझे न छोड़ाकी मैं उन ऊंटों को जो सबके सब अशरफी और रत्नों से भरेहुये थे सन्तोष करके अपने महलमें आता सो यह शोच पैदाहुआ कि वह मल्हमकी डिबियाभी योगीसे लेनी चाहिये निदान फिर मैंने ठहरकर उस योगी से कहा तुम इस डिबिया को जिसमें मल्हम है अपने पास रखकर क्या करोगे उसेभी मुझे कृपाकरो उसने उसके देनेका इन्कार किया इससे मुझे अधिक अभिलाषाहुई और मैने अपने मनमें ठाना कि यदि वह योगी प्रसन्नता से डिबिया देदे तो भला

मैं पूंछ दबाके बाज़ार की ओर भागा और एक दूकानदार की दूकानमें जो बकरीके शिरपाये और जीभ बेंचताथा घुसगया और एक कोने में छिपके बैठ रहा उस दूकानदार को मुझपर दया उ- पजी और उन कुत्तोंसे मुझे बचाया और उनको अपनी दूकान के आगे से मारकर दूर भगा दिया मैं उन आपदाओं से छूटकर रात्रिभर उसकी दूकानमें बैठारहा जब प्रभात हुआ तोवह दूकान- दार बहुत सबेरे शिर पाँव लेने गया और बहुत सौदा इस प्रकार का मोल लेकर आया अपनी दूकान पर उसे क्रम से रक्खा मैंने दूर देखा कि बहुत से कुत्ते मांसकी गन्धपाके उसकी दूकान के चहुं ओर हैं सो मैं भी उसके आगे जाके खड़ा होगया वह मुझे देख समझा कि इसने कलसे कुछ भी नहीं खाया केवल मेरी दूकान में भूखा छिपारहा फिर उसने बड़ा लोथड़ा मांसका मेरे स- म्मुख डालदिया मैं उस मांसकी ओर न देखकर उसके निकटजा- कर अपनी पूंछ हिलाने लगा कि वह यह जाने कि मेरी इच्छा इसी दूकान पर पड़े रहने की है उसने मुझे तृप्त जान लकड़ी से डराया और अपनी दूकान से निकाल दिया मैंने भी उसकी दू- कान छोड़ दी और फिरते २ एक नानबाई की दूकान पर जा खड़ा हुआ संयोग वश वह उस समय भोजन करता था यद्यपि मैंने कुछ उससे मांगनेकी सैन न की थी परन्तु उसने एकटुकड़ा रोटीका मेरे आगे फेंकदिया मैं उसे कुत्तों की भांति झपटा और पूंछ हिलाई वह मेरे स्वरूप को देख प्रसन्न हुआ और मुस्क- राया यद्यपि मुझे क्षुधा न थी परन्तु थोड़ासा टुकड़ा तोड़कर भो- जन किया उसको मेरा स्वरूप पसन्द हुआ और चाहा कि मैं उ- सकी दूकान पर रहाकरूं उसकी यह इच्छा पाके मैं उसकीदूकान

नहीं तो जोरसे उससे लेलूंगा इस योगीने यह बात समझकर डिबिया को अपनी जेबसे निकाला और कहने लगा भाई जो तुम्हारी प्रसन्नता इसीके लेनेमे है तो लेलो परन्तु तुझे उचित है कि इस मरहमका गुण मुझसे पूंछलो मैने उस डिबियामे मरहम भरा देख उस योगीसे कहा जहां तुमने इतनी कृपा और उपकार मुझसे कियाहै तो इसका गुणभी मुझे बताय दीजिये उसने कहा इसके गुण अद्भुत विचित्र है जो तुम इस मरहममें से थोड़ासा अपने बाये नेत्रमे लगाओ तो तुम्हे संसारभर के कोष दिखाई देवे और जो इसी मरहम को अपनी दाहिनी आंखमे लगाओ तो तुम दोनो आंखोंसे अन्धे होजाओ मैंने परीक्षाके लिये उस डिबिया को योगीके हाथमें देकर कहा तुम इसके गुण को भलीभांति जानतेहो अपने हाथसे मल्हम मेरे बांये नेत्रमे लगादो उस योगीने मेरी आंख बन्द करके थोड़ासा मल्हम उस डिबियासेले मेरे पलकपर लगादिया मल्हमके लगातेही मैंने नेत्र खोल चहूंओर देखा कि हजारों गड़ेहुये कोष जैसा कि उस योगी ने कहा था दृष्टि पड़ने लगे तब मैंने दाहिनी आंख को मूंदकर कहा कि अब तुम मेरे इस नेत्रमभी मरहम लगादो उसने कहा मैंने तुझे पहिलेही बतादिया कि इस नेत्रमे लगानेसे तुम अन्धे होजाओगे यद्यपि वह योगी सत्य कहताथा परन्तु तृष्णासे मैंने उसके वाक्य को झूठ समझा और विचार किया कि दाहिने नेत्रके लगाने से कुछ अधिक लाभ होगा यह योगी मुझे बहँकाकर चाहता है कि मुझे यह लाभ उठाने न दे मैंने मुस्कराके उससे कहा तुम मुझे धोखा देतेहो उसने कहा मुझे ईश्वरकी सौगन्दहै कि इस मल्हम में यही गुण है हे प्यारे भाई ! मेरे वचन को सच जान मैंने

की ओर मुख करके बैठगया और सन्ध्या को वह मुझे अपने घर में लेगया किन्तु सदा मुझको लेजाता परन्तु मैं उसकी आज्ञाबिना अपना पांव उसके घरमें न रखताथा निदान अन्त को उसने मेरी एक जगह नियतकी जिसमें रात्रिको रहता और भोजन करती समय मुझे भलीभांति खिलाता इसके विशेष वह मुझपर अत्यंत कृपा रखता और मैंभी हर समय उसकी ओर देखा करता और उसके सैन करतेही उठता बैठता जब वह नानवाई अपने घरसे दूकान को अथवा और किसी जगह को जाता तो पीछे उसके हो लेता जब वह मेरे सोनेके समय बाहर निकलता और मुझे अपने साथ न देखता तो मुझे गलीमें खड़े होके उस नामसे जो मेरा उसने रक्खा था पुकार बहुतकाल पर्य्यन्त मैं उसके घरमें अतिआनन्दसे रहा एकदिन कोई स्त्री रोटियां मोललेनेको उसकी दूकान पर आई और मोल लेकर उसने एक खोटी मुद्रा अपनी मुद्राओं में मिलाकर उस नानवाई को दी नानवाई ने उनको परख खोटी मुद्रा उसे लौटादी कि इसके बदले अच्छी मुद्रा मुझे दे उस स्त्रीने उस खोटी मुद्रा के फेरलेने में तकरारकी और कहने लगी कि यह मुद्रा नवीन व प्रचलित है नानवाईने कहा कि यह खोटी है अभी इसका हाल तुझे मालूम होजावेगा यद्यपि मेरा कुत्ता पशु है परंतु वह इस मुद्राको परखलेवेगा यह कह उसने मेरा नाम लेके पुकारा कि यहां आ मैं उसका शब्द सुनतेही कूदकर उसके सम्मुखगया नानवाई ने उन सब मुद्राओंको मेरे आगे फेकदीं और कहनेलगा इसमें जो खोटीहो तू देखकर अलग करदे मैंने उन सबको एक २ करके देखा और जो खोटीथीं उनपर मैंने अपना चरण रखदिया और अच्छों को एकओर धर उस नानवाई के मुखको देखनेलगा

तुझ से झूंठ नहीं कहा मैंने उस की बात को न माना और यही जाना कि छल से मुझ को उसके अपूर्व्वगुण से निराश रखता है यह विचार मैंने फिर उस से मल्हम लगाने को कहा उसने न माना और कहने लगा कि मैंने तेरे साथ भलाई की है अब बुराई क्यों करूं निश्चय जान कि इस बात से जन्मभर तू दुःख और कष्ट भोग करेगा इसवास्ते इस विचार को छोड़दे और मेरे कहने को मान जितना जितना वह योगी यह बातें कहताथा उतनाही मेरी लालसा अधिक होती थी निदान मैंने उसे परमेश्वर की सौगंद दिलाकर कहा हे प्यारे योगी! जिस बस्तु को मैंने तुझसे मांगा वह सब पाया यह मेरी अन्तकी प्रार्थना है दयाकर इस इच्छाको भी पूर्णकर और जो कुछ मुझपर दुःख होगा उससे तुम अलगरहो तुम्हें दोष न लगाऊंगा उसने कुछ न माना परन्तु मेरे पीछे पड़ने से लाचार होकर थोड़ासा वह मल्हम मेरी दाहिनी आंख की पलकपर लगादिया जब मैंने आंख खोली तो दोनों आंखो से अपने को अंधा पाया अँधियारे के सिवाय कुछ भी प्रतीत न हुआ तब से अबतक मैं अंधाहूं फिर उस योगी से मैं बोला हे योगी ! जो तू कहता था सोई हुआ और उसे बहुतसी गालियां देकर कहा कि जो तू मुझे यह द्रव्य न दिलाता तो उत्तम था अब यह सब द्रव्य और रत्नादिक मेरे किस कामके हैं तू चालिस ऊंट अपने भागके लेजा और मुझे अच्छाकर योगीने उत्तर दिया कि मेरा इसमें क्या अपराधहै मैंने तेरे साथ ऐसी भलाई की थी कि कभी किसी ने किसी के साथ न की हो परन्तु तूने मेरा उपदेश न माना तेरा मलिन मन इतने द्रव्य के पानेसे भी न भरा और तेरी इच्छा न गई और मेरे बचन न माना छल समझा अब इसका

वह नानवाई मेरी बुद्धिपर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और वह स्त्री यह दशा देख आश्चर्य्य में हुई और खोटे मुद्राको बदल दिया जबवह स्त्री अपने घर चलीगई तो मेरे स्वामी ने अपने पड़ोसियों को बुलायकर यह सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया उन्हों ने मेरी परीक्षा के लिये अच्छे रुपयों में खोटे रुपये मिलाकर मेरे आगे डालदिये कि वहभी अपने नेत्रों से मेरी बुद्धि को देखें मैं शीघ्र अच्छों में से खोटों को अलग करके उनपर चरण रखतागया उन्हों ने यह दशा देख अचम्भा मानकर बहुत मनुष्यों से जो मार्गमें चलते थे यह हाल कहा थोड़ेही काल में यह समाचार नगर भरमें प्रसिद्ध हुआ और मैं उस दिन सन्ध्यापर्य्यन्त मुद्राओंको परखतारहा उस दिनसे वह नानवाई मुझपर दया अधिक करनेलगा और सब उस के पड़ोसी और इष्टमित्र यही उसे कहते थे कि तूने यह कुत्ता एक सर्राफ़ रक्खा है वह सब मेरे नानवाई के पास रहने से ईर्षा करने लगे और चाहते थे कि मुझे वहांसे निकाल दें इसलिये नानवाई क्षणभर भी मुझे अपने से अलग न करता कई दिनके पीछे एक स्त्री उस दूकान पर रोटी मोललेने आई और छःमुद्रा जिसमें एक खोटाथा नानवाई को दिया उसने परखनेको मुझे दिखाया मैंने तुरन्त उनमें से खोटा मुद्रा न्यारा करके चरण के नीचे दबालिया और उसकी ओर देखनेलगा वह मानगई कि तू सच कहता है यही खोटा मुद्राथा जो तूने परखा और नानवाई से छुपा के मुझे सैन करके बुलाया और अपने घरमें लेजाने की इच्छाकी मैं ईश्वर से सदैव यह प्रार्थना करताथा कि किसी भांति फिर अपनी योनिको प्राप्त होऊं और फिर मनुष्य बनूं निदान उस स्त्री के बेर २ देखने से मुझे निश्चय हुआ कि शायद कुछ मेरे हालकोजानगई

हो मैं उसीके ओर देखा किया यहांतक कि वह कई पग जाके फिर लौट आई और मुझे सैनकी मैं उसके अभिप्राय को समझ गया और अपने स्वामी की दृष्टि बचाकर उस स्त्री के साथ हो-लिया वह मुझे अपने साथ देख अत्यन्त प्रसन्न हुई और अपने घरमें लेगई निदान जब मैं घरके भीतर गया तो उस स्त्रीने द्वारको मूंद लिया और मुझको एक मकान में लेगई जिसमें एक सुन्दरी कारचोबी वस्त्र पहिने बैठीहुईथी मैंने बुद्धिसे विचारा कि वह इसस्त्री की पुत्री है और वह स्त्री जादूकी विद्यामें अतिप्रवीण थी फिरउस स्त्रीने जो मुझे बाज़ारसे लाईथी उस सुन्दरीसे कहा यही कुत्ताखोटे मुद्राओं को अच्छों में से परखता है मैं यह खबर पहिले सुनकर समझती थी कि यह कुत्ता मनुष्य है किसी अभागे निर्दयी ने इस जादू से कुत्ता बनायाहै आज मेरे मन में आया कि मैं जाकर उस नानबाई की दूकान से रोटी मोललूं और इस बातकी परीक्षा लूं सो मैंने इसे परीक्षामें परिपूर्ण पाया हे पुत्री ! तुम इसे भलीभांति देखो कि कौनहै वास्तव में पशु है वा जादू से पशु बनगया वह सुन्दरी मेरी ओर भलीभांति देख बोली हे माता ! तुम सत्य कहती हो मैं इसका वृत्तान्त अभी तुमसे कहूंगी यह कहके वह सुन्दरी अपने स्थानसे उठी और एक जलका पात्र लेकर उसमें अपना हाथ डुबोया और मेरे ऊपर उस जलको छिड़क के कहा जो वा-स्तव में कुत्ता है तो तू कुत्ताही बनारहे यदि तू मनुष्य है तो इस जल के प्रभाव से अभी पुरुषतनु को प्राप्त होजा उसके कहतेही मैं तुरन्त पशुका शरीर छोड़ निजयोनि में आया और उस सुन्दरीच-न्द्रमुखी के चरणोंपर गिरपड़ा और उसके वस्त्रोंको चूमा और कहने लगा कि तुमने मुझपर इतनी कृपाकी जिसका गुणानुवाद मैंनहीं

कहानी को जो मैंने तुमसे वर्णनकी क्या कोई मनुष्य यहाँ नहीं था जो न जानताहो मैं तुमसे झूंठ नहीं कहता और मुझे भी आश्चर्यहै कि चील्ह पगड़ी नहीं लेती परन्तु यह बात जो मुझपरबीती अपूर्व है सादने मेरा पक्ष करके सादी से कहा कि बहुधा देखा सुना है कि चील्ह बहुतसी वस्तु अपने भक्ष्यके विशेष भी लेजाती हैं इसमें कुछ आश्चर्य नहीं सादने यह सुन अपनी जेबसे एक थैली अशरफ़ियों की निकाली और उसमें से दोसौ अशरफ़ियां मुझे दीं और कहनेलगा हे हसन! अबकी बेर दो सौ अशरफ़ियां फिर तुमको देताहूं इन्हें बड़ी सावधानी से रखना और पहिले की भांति मतखोना तुम इस का अच्छा व्यापार करो जिससे तुम्हें बहुतलाभ होवे और व्यापार को बढ़ाओ जैसा कि सब लोग करते हैं मैंने सादीका अधिक गुणानुवाद किया और आशीर्वाद दिया फिर जब वह दोनों मित्रचले गये मैं अपने कारखानेमें आया और वहां से घरगया संयोग वश उस समय मेरी स्त्री और पुत्र घर में न थे मैंने एक ओरहोके दश अशरफियां निकालीं बाकी एक सौ नब्बे अशरफ़ियां एक वस्त्र में बांधलीं और चाहा कि इनको ऐसे स्थान पर रक्खूं जहां मेरी स्त्री और पुत्रों की पहुँच न हो इतने में एक कोने में मिट्टी की मठोर खड़ी हुई देखी जिसमें गेहूंकी भूसी भरी हुईथी मैंने उन अशरफ़ियों को गेहूं की भूसी में रखदिया और समझा कि यहां किसी का हाथ न पहुँचेगा इतने में मेरी स्त्री घर में आई मैंने कुछ उस से न कहा और रस्सी मोललेने को बाजार में गया मेरेजाने के उपरान्त एक मनुष्य शिर धोने की मिट्टी बेंचता हुआ वहां आया मेरी स्त्रीने मिट्टी मोल लेनी चाही परन्तु घरमें कौड़ीभी न थी तो उसने विचारा कि मठोर

कहसका सो उत्तमहै कि आजसे मैं तुम्हारी सेवकाई किया करूंगा फिर मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त अपनी स्त्रीका कहकर उसस्त्रीका जो मुझे अपने घर लाईथी गुणानुवाद किया उस सुन्दरीने कहा हे सीदी नैमान! इससे अधिक हमारा गुण वर्णन मतकर किन्तु हम आपही तुम ऐसे अच्छे मनुष्य के साथ उपकार करके प्रसन्नहुई मैं तेरी स्त्री का हाल विवाह होनेके पहिलेही से जानतीथी मुझे उसके जादूके सीखने और इस विद्याके ज्ञानका हाल मालूमहै किंतु हम दोनों एकही गुरुआइनिकी चेली हैं आगे बहुधा हम्माममें उससे भेंटहुआ करती थी परन्तु उसकी दुष्टप्रकृति और दुस्स्वभावसे मैंने उससेमिलना छोड़दिया और केवल तुम इतनाही न जानो मैंने तुम्हारारूप बदलादिया किन्तु मैं उसे तुम्हारे अपकारके बदले कोई दण्ड तुमसे दिलाऊंगी तुम भी घरमेंजाकर उसका शरीरबदलदो अब तुमयहां ठहरो मैं अभी आतीहूं यह कह वह सुन्दरी कोठरी में गई और मैं उस की माताके निकट बैठकर उसी सुन्दरी का यश वर्णन करने लगा उसकी माता भी मुझसे विचित्र जादू की बातें कहने लगी इतनेमें उसकी पुत्री भीतरसे एक बोतल लियेहुये आई और कहने लगी हे सीदी नैमान! मैंने अपनी पुस्तक में देखा कि इस समय तेरी स्त्री घरमें नहीं है परन्तु एक क्षणमें आवेगी उसने तुम्हारे सेवकों से कि वह तुम्हारे न होने के कारण अत्यन्त विकल थे कहा कि मेरा पति भोजन करते २ उठकर किसी अवश्य कार्य्यके लिये गया और एक कुत्ता दरवाजा खुला पाके दालानके भीतर चला आया मैंने उसे मारकर निकाल दिया फिर उस सुन्दरी ने एक जल का पात्र उसे देके कहा हे सीदी नैमान! अब तुम अपने घर जाओ और यह बोतल अपने से अलग न करना और उसके

रक्खी है उसको देके मिट्टी मोल लेनी चाहिये सो मिट्टीवाला भी इस बातपर राजी हुआ और मिट्टी उस भूसीसे बदलदी और मठोर समेत भूसी उठा लेगया इतने में मैं भी सन मोललिये हुये और एक बोझ अपने शिरपर रक्खे आया और पांचभार सनके मज़दूरोंसे उठवालाया वह बोझ उठवाके एक ओर रखदिये और मज़दूरोंको मजदूरी देकर विदाकर दिया मैं विश्राम करनेके लिये एक जगह जाकर लेटरहा और जहां वह मठोर भूसी की रक्खी दृष्टिकी तो वहां न पाया इससे अत्यन्त व्याकुल हुआ कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता और उठकर अपनी स्त्रीसे पूंछा कि वह मठोर यहां से क्याहुई उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त मिट्टी से बदलने का कहसुनाया यहसुन मैं चिल्लाकर बोला हे दुष्टा, अभागी! यह तूने क्या किया कि तूने मुझे और मेरे बच्चोंको मारडाला और मिट्टी बेचनेवाले को धनवान् कर दिया फिर मैंने सम्पूर्ण बृत्तान्त मठोर में एकसौ नव्वे अशरफ़ी रखने का उससे कहसुनाया मेरी स्त्री यह बात सुनतेही शिर और छाती पीटकर रुदन करने लगी और कहने लगी कि उस मिट्टीके बेंचनेवाले को कहांपाऊंगी वह अभागा आजही इस टोले में आयाथा सिवाय आजके मैंने उसे कभी नहीं देखा फिर मुझसे कहने लगी तूने बड़ा अनर्थ किया कि इस बातको मुझसे न कहा जो मेरा विश्वास मान मुझसे कहता तो कदाचित् ऐसा न होता निदान उसने बहुत रोया पीटा मैंने उसकी यह दशा देख उससे कहा कि इतनामत चिल्ला कि पड़ोसी हमारी इस दुर्दशा को सुन मेरी तेरी निर्बुद्धितापर हँसें अब उचितहै कि ईश्वरकी इच्छापर अपनेको छोड़ और उन दश अशरफ़ियोंसे जो मैंने निकाली थीं थोड़े दिन अपने बिताये और अ-

आगमनकी बाट देखना वह दुष्टा शीघ्रहीबाहरसे आवेगी और तुम्हें देख अत्यन्त व्याकुल होगी और चाहेगी कि तुम्हारे आगे से भागकर चलीजावें तुम थोड़ासा जल इस पात्रमें से लेकर उसपर छिड़कदेना और यह शब्द पढ़ना इससे अधिक पढ़ने की कुछ आवश्यकता नहीं क्योंकि तुम इस मन्त्रका प्रभाव अपनी आंखों से देखलोगे मैं उस चन्द्रवदनीके सिखाये हुये शब्द यादकर उस से विदा हुआ और अपने घरमें आया और जो बातें उस सुन्दरी ने मुझसे कहीं सब देखने में आईं अर्थात् क्षणमात्र भी न बीता था कि मेरी स्त्री वहां आई और चाहती थी कि मेरे आगे से भाग जावे मैंने शीघ्रही उसपर वह अभिमन्त्रित जल छिड़कदिया और वही शब्द पढ़े जिसके प्रतापसे वह घोड़ी बनगई यह वही घोड़ी है जिसको आपने कल देखा था फिर जब मैंने उसको उस योनि में देखा तो आश्चर्य में हुआ और उसके अयाल पकड़ अश्वशाला में लेगया और बागडोर से उसको बांधा और चाबुकसे इतना मारा कि थकगया सीदीनैमानने यहांतक अपने वृत्तान्तको खलीफ़ासे विनयकिया कि हे बादशाह! मुझे विश्वासहै कि आप मुझसे प्रसन्न न होंगे किन्तु आप ऐसी कर्कसा स्त्री के लिये अधिक दण्ड विचारेंगे इतना कह चुपहोरहा खलीफ़ाने जब देखा कि सीदीनैमाने अपना वृत्तान्त पूर्ण करचुका तो उससे कहा कि वास्तव में तुम्हारा वृत्तान्त अत्यन्त अद्भुत है और तुम्हारी स्त्री का बड़ा अपराध है और तुम्हारा दण्ड देना मेरे विचार में बहुत ठीक है परन्तु तुमसे पूंछताहूं कि कबतक उसको तुम यह दण्ड दिया करोगे और पशुबनाकेरक्खोगे मेरे विचारमें यह उत्तम है कि अबतुम जाके उसी सुन्दरी से जिसके मन्त्र के प्रभावसे तुम

पनी चिन्ताको जो मुझे दूसरी वेरकी हानि से हुईथी आपके सम्मुख उसका कहांतक वर्णन करूं फिर शोच उठा कि सादीसे भेंट होती समय क्या कहूंगा वह तो पहिलेही हालका निश्चय नहीं करता था अबकी वेर उसे निश्चय करके मेरे छल और लम्पटता का निश्चय होगा निदान एक दिन साद और सादी कुछ मेरेही विषय में तकरार करते हुये मेरे घरकी तरफ़ आये मैंने उनको दूर से देखकर अपना काम छोड़ दिया और चाहाकि कहीं जाकर छिपरहूं और उनके सम्मुख न हूंगा क्योंकि मेरी आंखें लज्जा से उनके सम्मुख न होंगी अभी मैं बाहर नही निकलाथाकि उनदोनों ने पहुंच प्रणामकर मेरी कुशल पूंछी मैंने अत्यन्त लज्जा से आंखें अपनी नीचे कर प्रणाम का उत्तर दिया मुझको वैसाही टूटे हालोंमे और दरिद्रतामे पाकर उन्होंने कहाकि दुर्दशामेहो उन अशरफ़ियोंका तुमने अपना व्यापार नहीं बढ़ाया मैंने उनसे कहा अशरफ़ियों का यह हाल हुआ कि तुम्हारे जाने के उपरान्त मैं अपने घरमें गया और मैंने एक मठोर में कि बहुत बड़ी थी और बहुत काल एक गेहूं की भूसी भरीहुई एक ओर रक्खी थी दश अशरफ़ियां उस थैली में से निकाल बाकी एकसौ नव्वे अशरफ़ी थैली समेत अपनी स्त्री पुत्रोंसे छुपाकर रखदी संयोग वश उससमय कोई घरमें नथा सब लोग कहीं बाहर गये थे फिर मैं उन दश अशरफ़ियोंको लेकर सन मोल लेने बाज़ार में गया मेरेपीछे जब मेरी स्त्री घरमें आई तो एक मनुष्य मिट्टी शिर धोनेकी बेंचता हुआ आया मेरी स्त्रीके पास उस समय कौड़ी न थी न पैसा था और मिट्टीकी आवश्यकता थी बाहर निकल उससे कहा जो तू भूसीसे मिट्टी बदल देतो मैं लूं वह इस बातपर राजी हुआ और मेरी स्त्री को बहुतसी

ने उसे घोड़ी बनादिया कहो कि उसको फिर पूर्ववत् स्त्री बनावे परन्तु मुझे यह भय है और शोचहै कि यह दुष्टा अपनी योनिको प्राप्त होकर ईश्वर जाने क्या अपकार तुमसे करे जिसका कोई उपाय न हो इसलिये खलीफ़ाने फिर कुछ इसबात में तकरार नकी और तीसरे मनुष्यसे जिसे वजीरने बुलवायाथा कहनेलगा कल मैं अमुक गलीमें गयातो तुम्हारा विशाल और विचित्र महल देख मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ जो उसगली के मनुष्योंसे पूंछा कि यह बड़ा महल किसका है तो उन्हों ने तुम्हारा नाम लिया और कहा यद्यपि ख्वाजे हसन जो पहिले बड़ी कठिनतासे अपना निर्वाह करताथा अब परमेश्वरने उसे इतनी सामर्थ्यदी है कि उसने ऐसा विशाल और सुन्दर महल बनवायाहै परन्तु वह अपनी उस दशाको नही भूला और द्रव्यको व्यर्थ खर्च नहीं करता सो पड़ोसी तुम्हारे तुमको सबअच्छा और भला कहते हैं कोई तुमसे अप्रसन्न नहीं अब मैं चाहताहूं कि तुम मुझसे वर्णन करो कि क्योंकर तुम को इतना धन प्राप्तहुआ इसीलिये तुमको मैंने बुलाया है मेराकुछ भयमतकरो मुझे केवल तुम्हारे वृत्तान्त सुनने के सिवाय और कुछ प्रयोजन नहीं है तुम अपने ईश्वर के दिये हुये धनको भोगो और ईश्वर तुम्हारे ऊपर सदैव कृपाकरे खलीफ़ाने इसभांतिके वचन कह उसे धैर्य दिया ख्वाजे हसनने तख्त के पायेको चूमा और कालीन जो तख्तके नीचे बिछाथा चूमकर बिनतीकी कि हे बाद-शाह ! मैं सत्य सत्य अपना वृत्तान्त आपके सम्मुख विदित करताहूं ईश्वर साक्षी है कि मैंने कोई बात अपनी जाति धर्मकी प्रति-पाल नहीं की केवल ईश्वरके अनुग्रहसे इस पदवीको पहुंचा फिर वह इसभांति अपना वृत्तान्त कहने लगा ॥

इति तृतीय प्रदीपः ॥ ३ ॥

मिट्टी देकर मठोर को भूसी सहित उठाये हुये लेगया यदि तुम कहो कि तुमने अपनी स्त्री से अशरफ़ियों के मठोर में रखने का हाल क्यों नहीं कहा तो उसका उत्तर यहहै कि तुमने मुझसे कहा था कि अबकी बेर उनको सावधानी से रखना मैंने अपने विचारसे वह अच्छी जगह जानी थी और रक्षाकेलिये अपनी स्त्रीसे न कहा कि ऐसा न हो कि बिना पूछे उनमेंसे खर्च कर डाले तुम्हारी दीनपालकता और उपकार में सन्देह नहीं परन्तु मेरेअभाग्यमें दरिद्रता लिखीहै क्योंकर मुझे धन प्राप्त हो अबमैं तुम्हारे उपकार का जन्म भर गुण मानता रहूंगा और तुम्हारा यश गाऊंगा सादी ने इस वृत्तान्त को सुनकर कहा मुझे तुम्हारी इस बात का परिपूर्ण निश्चय हुआ मैंने मित्रवत् चारसौ अशरफ़ियां तुमको दी थीं प्रयोजन यह था कि तुम भी धनवान् बन जाओ न यह कि तुम उसका उपकारमान मेरा गुण वर्णन करो निदान वह दोनों परम स्नेही मेरेदुर्भाग्य पर अत्यन्त खेद करने लगे निदान सादसत्पुरुषथा और मुझ से उसकी पुरानी जान पहिचानथी सो उसने पैसा सीसेका जेब से निकाल सादी को दिखाया और मुझसे कहाकि इस सीसे के टुकड़े से देखतो ईश्वर तुझको कैसी बरकतें देता है सादी उसे देखकर हँसा और ठट्ठा मारनेलगा और हास्य से कहा कि यह सीसेका टुकड़ा हसनको बड़ा लाभ देसक्ताहै और उसका कौन काम निकलेगा सादने उस पैसेको देके मुझ से कहाकि तुम सादीकीबातोंका कुछविचार मतकरो और इसको अपने पासरक्खो और सादी को हँसने दो एकही दिनमें तुमको इसका हाल मालूम होजावेगा औरईश्वरचाहेगा तो इसके कारण तुमधनवान् होजावोगे मैंने वह पैसा लेकर अपनी जेबमें रखलिया वह दोनो सखा मुझ

अथ चतुर्थप्रदीपः

धनाद्धनंनवर्द्धतहीश्वरानुग्रहंविना। आनु ग्रहेतुस्यादेवयथाख्वाजेहसन्नभूत् ॥ ४ ॥

अर्थ–धनसेती धन ईश्वर के अनुग्रह विन बढ़ता नही है और उसकी इच्छाहो जवहीं बढ जाताहै जैसे ख्वाजेहसन रस्सी वेंचने वाला अचानक धनवान् होगया इसपर दृष्टान्त ॥

ख्वाजे हसन रस्सीवेंचने वालेकी कहानी।

हे वादशाह! आपकी आज्ञानुसार विनय करताहूं कि क्योंकर मुझे इतना द्रव्य मिला परन्तु प्रथम आप मेरे मित्रोंका हाल जो बुगदाद के निवासी हैं सुनिये अवतक जीते हैं और मेरे वृत्तान्त के जो मैं कहताहूं साक्षी हैं एकका नाम शाद और दूसरेका नाम शादी है शादी को यह निश्चयथा कि संसार में कोई मनुष्य विना द्रव्य के आनन्द नही उठाता और वहधन उद्योग किये विना प्राप्तनहीं होता और शादका मत इस के विरुद्धथा सो वह यह कहता था कि जवतक भाग्य उदय नही होता तबतक धन नही मिलता, शाद शादी से ग़रीब था और उन दोनों में अत्यन्त स्नेह था और कदापि परस्पर किसी वात में तकरार न होती सिवाय इस विवाद के कि शादी उद्यम को श्रेष्ठ मानता और शाद भाग्यको एक दिन उन दोनों में इसी वात के लिये वहुत वार्ता हुई शादी ने कहा यातो मनुष्य दरिद्रता में उत्पन्न होके सदैव दरिद्री रहता है वा धन होने की अवस्था मे जन्म लेकर तरुणावधि मे अपने द्रव्य को व्यर्थ व्ययकर आपत्ति उठाताहै फिर उसको इतनी सामर्थ्य नही होती कि आनन्दमे रहाकरे अथ-

से विदाहुये और मैं रस्सी बटनेलगा रात्रि को जब मैंने सोने के लिये अपने वस्त्र उतारे तो वह पैसा जो सादने दिया था जेबसे गिरपड़ा मैंने उसको उठाके किसी ताखपर रखदिया अकस्मात् उसीरात्रिको एक धीमर आया जो मेरे पड़ोस में था अपने जाल के बनाने के लिये उसे एक पैसेकी आवश्यकता हुई कि सूतला-कर जालको बनाकर प्रभातको मछलियां पकड़े और उन्हें बेचकर अपने कुटुम्बके लिये जीविका प्राप्त करे उसका यह नियम था कि सूर्य्योदयके पहिले एक मुहूर्त नदीपर मछलियां पकड़ने को जाता उसने अपनी स्त्री से कहा कि तू जाकर अपने पड़ोसी से एक पैसा मुझे लादे वह स्त्री सबके घरगई परन्तु उसको कहींसे पैसा न मिला निरास होकर अपने घर आई धीमरने अपनी स्त्री से कहा जानपड़ताहै तू हसन रस्सी बटने वाले के घरगई नहीं उसनेकहा सत्यहै मैं उसके घरनहींगई क्योंकि उसका घर और लोगों से दूर है यदिमैं वहां जाती तो कुछ न कुछ वहांसे लेकर आती उसधीमरने कहा तू अत्यन्त आलसी है शीघ्र उसके घरजा वहां से अवश्य कुछ मिलेगा उसकी स्त्री बरबराती मेरे घर आई और द्वार खुलवा-कर कहा हे हसन! मेरेपतिको इससमय एक पैसेकी आवश्यकता है कि अपने जाल को बनावे मुझे स्मरणथा एक पैसा जो सादने मुझे दियाथा असुकस्थानपर रक्खा है मैंने उसको पुकारके कहाकि ज़रा तू ठहरजा मेरी स्त्री पैसा लियेआतीहै मेरी स्त्री उसके शब्द से जागउठी मेरे बताने से उसने पैसा लेजाकर अपनी पड़ोसिन को दिया वह स्त्री पैसा पाने से अत्यन्त प्रसन्नहुई और मेरीस्त्री से कहा तूने और तेरेपति ने मेरे पति पर बड़ा उपकारकिया मैं प्रतिज्ञा करतीहूं कि जो पहिली बेर जालडाल के मछलियां पकड़ेगा

वा किसी गुण वा उद्यम से दव्य कमावे शाद कहताहै कि उद्यम और पुरुषार्थ और गुण कुछ काम नही आता सिवाय अपनेही भाग्य से धनवान् होता है धनवानता और दरिद्रता संयोगिक हैं मनुष्य का उद्यम और उपाय कुछ काम नही आता सिवाय माल और उपायके अमीरी के असबाब बहुत हैं जो भाग्यसे संबन्ध रखते हैं शादीने कहा तुम झूंठ कहतेहो आवो हम तुम दोनों इस बातकी परीक्षा लें किसी पेशेवाले को जो श्रमसे कालक्षेप करता हो कुछ धन देवें वह निःसन्देह अपनी वस्तुको बढ़ावेगा तो वह अवश्यही द्रव्यवान् होगा आनन्द उठावेगा उस समय तुम्हें मेरे वाक्य का विश्वास होगा सो वे दोनों मित्र सैर करते २ मेरे घर पर आये जहां मैं रस्सी बटताथा पहुंचे और यह काम अर्थात् रस्सी बटने का मेरी कई पीढ़ियोसे था मेरे पिता और दादा यही काम करतेथे मेरे घर और वस्त्रो को देख उन्हे मेरी ग़रीबीका हाल मालूमहुआ शाद ने शादीसे मेरी ओर सैनकर कहा जो तुम्हें परीक्षा की इच्छाहो तो कुछ अशरफ़ियां इसे देकर इसकी परीक्षाकरो यह मनुष्य बहुत काल से यहां रहता है मै भली भांति जानताहूं कि यह रस्सी बटके अपने कुटुम्ब समेत अति कठिनता से अपना निर्वाह करता है शादीने उत्तर दिया कि बहुत अच्छा परन्तु हम इन मनुष्यों को भली भांति देखलेवें फिर दोनों टहलते हुये मेरी ओर आये मैंने अपना काम छोड़ उसको प्रणाम किया शादी ने मेरा नाम पूंछा मैंने कहा मेरा नाम हसनहै परन्तु जोरस्सी बटताहूं इस निमित्त मुझे हसन हुब्बाल कहते हैं फिर शादी ने मुझसे कहा पेशेवाले को पेशा बहुत होताहै मुझे निश्चयथा कि तुम इस पेशेसे सुख में होगे और बहुतसी रस्सी बटने के वास्ते

वह सब तुझे दूंगी निश्चयहै कि मेरा पतिभी इस प्रतिज्ञा को स्वीकार करे जब उस स्त्रीने वह पैसालेजाकर अपने पतिको दिया और अपनी प्रतिज्ञाको कह सुनाया तो उसने प्रसन्नहोकर प्रतिज्ञा को अङ्गीकार कर लिया और अपनी स्त्री से कहा तूने अच्छा किया जो यह प्रतिज्ञा उनसे करके आई वह अपने जालको बनाकर दो मुहूर्त्त तड़के मछली पकड़ने को नदीपर गया जब उसने पहिला जालडालकर खींचा तो एकही मछली कुछ एक बालिश्त से बड़ी उसके जाल में आई उसने उस मछली को अलग रखकर फिरकई बेरजालडाल और बहुत से मत्स्य पकड़े परन्तु पहिलेवाली सब से छोटीथी जब वह धीमर अपने घर आया तो सबकार्यों के पहिले वह पहिली पकड़ी हुई मछली हाथ में लेकर मेरे पास आया और कहने लगा हे मित्र ! रात्रिको मेरी स्त्रीने तुमसे प्रतिज्ञाकीथी कि जितनी मछलियां पहिली बेर आवेंगी वह सब तुमको दूंगी सो एकही मछली पहिले पहिल आई सो वह यहहै तुम इसे लेलो क्योंकि मेरी स्त्री ने तुमसे प्रतिज्ञा कीथी मैंने उसको पूराकिया यदि पहिली बेर जालभर के आतीं तो उनसबको मैं तुम्हें ला देता परन्तु तुम्हारे भाग्य से यही एकथी मैंने बहुत कुछ उस मछली के लेने में तकरार की परन्तु उसने मेरे हाथ में जोर से रखदी मैंने अपनी स्त्री को वह मछली दी और कहा कि जो मैं रात्रिको धीमर की स्त्री को एक पैसा दियाथा उसके बदले यह मछली पाई परन्तु सादने हमसे प्रतिज्ञा की थी कि इस पैसे के द्वारा तुमधनवान् हो जाओगे फिर मैंने अपनी स्त्री से उनदोनों मित्रोंके आनेका और पैसाके देनेका हाल वर्णन किया मेरी स्त्री भी उसमछली को देख कर आश्चर्यमें हुई और कहने लगी मैं इसको क्या करूं फिर शोच

तुम्हारे पास इकट्ठी होंगी किन्तु तुम्हारे बाप दादा कि वेभी सदा से यही काम करते थे तुम्हारे लिये बहुत कुछ सामग्री छोड़गये होंगे और तुमने उनको यथाशक्ति बढ़ाया होगा मैंने उत्तर दिया मेरे पास कुछ भी नही है जिसमें मुझे सुखहो और पेटभर रोटियां मिलें मेरा हाल यहहै कि भोरसे सन्ध्या पर्य्यन्त मैं रस्सी बटता हूं एक क्षणभी श्वास नही लेता फिरभी कठिनता से सूखीही रोटियां मेरे कुटुम्बको प्राप्त होती है मेरे एक स्त्रीहै और छोटे पांचबालक हैं उन लड़कों मेसे कोई इस योग्य नही कि मेरी सहायता करे मैं यथाशक्ति उनके भोजन आदिकी खबर लेताहूं जो रस्सी बनाता हूं उसे बेंचकर कुछ तो खानेमें खर्च करताहूं जो कुछ बचताहै दूसरे दिन रस्सी मोल लाकर यही काम करताहूं इस दशा पर फिर भी ईश्वरका धन्यवादहै कि उसने मुझे दूसरे के आधीन न किया जब मैं अपना परिपूर्ण वृत्तान्त शादी से कहचुका तो उसने मुझ से कहा मुझे तेरा वृत्तान्त विस्तारपूर्वक विदित हुआ यह बात तो मेरी समझ के प्रतिकूल दिखाईदी जो तुझे दोसौ अशरफियों की थैलीदूं तो तू आनन्दपूर्व्वक अपना निर्वाह करसक्ता है और इतने द्रव्यकी प्राप्तिसे धनवान् होजावेगा वा नही मैने शादी को उत्तर दिया इतनी अशरफी कि आप मुझे देनेको कहते हैं इनसे मैं एकही बेर द्रव्यवान्नही होसक्ता पर तु उपायसे निःसन्देह पेशेवालेके बराबर द्रव्यसञ्चय करलूंगा शादीने मुझे विश्वासित और सत्यवादी देख अपनी जेबसे दोसौ अशरफियोंकी थैली निकालकर दी और कहा मैं तुमको यह थैली दान देताहूं तुम इसेलो और अपना व्यवहार करो ईश्वर तुम्हें इसमें बरकत दे तुम इसे बहुत समझ बूझकर खर्च करना यह वृथा नष्ट न होनेपावे तुम्हारे आ-

विचारकर मनमें कहने लगी कि इसे वालकों के लिये भूनलूं क्योंकि मसाला नहीं है कि जो इसका शोरवा पकाऊँ निदानमेरी स्त्री ने उस मछली को साफ़करती समय उसके उदर से एकबड़ा टुकड़ा हीरेका पाया उसने जाना कि यह टुकड़ा सीसेका है यद्यपि उसने केवल हीरेका नामही सुनाथा परन्तु आंखों से कदापि न देखाथा तो उसे छोटे लड़को के खेलने को दिया वह उसे खेलरहे थे तो इतने में उस के और भाइयों ने देखकर उसे लेलिया और उसकी सुन्दरता और चमक देखकर सब उसके लेनेकी लालसा करने लगे और हरएक उसे पारी पारी से अपने पास रखता जबरात्रि हुई और दीपक लाया गया तो दीपक के प्रकाश में देखकर प्रसन्न होते और चिल्लाते इतने मे मेरी स्त्रीने भोजन तय्यार कर लिया और हम सब भोजन करने लगे बड़े पुत्रने उसहीरे को एक ओर थाली के रखदिया और चुपके होके भोजन करने लगा भोजन से निश्चिन्त होने के उपरान्त फिर वह बालक पूर्व्ववत् हीरेके लिये झगड़ने लगे उनके शोर करनेपर हमने कुछ ध्यान न किया निदान जब बहुत शोरकिया तो मैंने बड़े लड़के को बुलाकर पूंछा आज तुम किसलिये झगड़ते हो उसने कहा हे पिता! हम एक सीसे के लिये कि वह अत्यन्त प्रकाशमान है झगड़ते हैं मैंने उसे मँगवाकर देखा तो उसकी चमक दमक देख आश्चर्य में हुआ और अपनी स्त्री से पूंछा कि यह सीसे का टुकड़ा तुमने कहांसे पाया उसने कहा मैंने उस मछली के साफ़ करती समय उसके उदर में से पाया मैं समझा कि यह खाली सीसेका टुकड़ा है फिर मैंने अपनी स्त्रीसे कहा दीपक को ओटमें बुखारीके भीतर रखदो जब दीपक हमारे आगे से उठायागया तो उस हीरेका प-

नन्दसे शादि जो मेरा परमस्नेही है महाप्रसन्न होगा और यदि तुम्हें आनन्दमें देखेंगे तो हमको अतिहर्ष होगा मैंने वह अशरफियोंकी थैली लेके अपनीजेबमें रखली और महाहर्षसे फूला न समाया और शादीका बहुत गुणानुवादकर उसके वस्त्रोंको चूमा फिर वे दोनों मित्र मुझसे विदाहोके चलेगये हे स्वामी ! उनके जानेके उपरान्तमैं फिर अपनाकार्य्यकरनेलगा और मनमें शोचनेलगा कि इन अशरफियोंकी थैली कहांधरूं घरमें कोईस्थान नहीं और न कोई सन्दूकचाहै जिसमें उसे रक्खूं फिर शोचा कि इस थैलीको अपनी पगड़ी में बांधकर रक्खूं सो उसे घरमें लेगया और अपनी स्त्री व पुत्रों से छिपाकर दश अशरफी खर्च के लिये निकाल लीं और बाक़ी अशरफ़ियों को थैलीमें डोरेसे दृढ़बांधा और पगड़ीमें युक्ति से थैलीको रखलिया और वह पगड़ी शिरपर बांधी और सबकाम छोड़के पहिले बाजार में सन मोल लिया और मार्ग में लौटती समय थोड़ासा मांस कि बहुत दिनोंसे न खायाथा रात्रिके लिये मोललिया सो उसे हाथमें लियेहुये घर आताथा कि अकस्मात् एक चीलने झपट्टामारचाहा कि मेरे हाथ से मांसलीने मैंने उसे बचाया और दूसरे हाथसे उस चीलको हटाया- उसने दूसरी ओर आके फ़िर झपट्टामारा सो फिर मैंने बचाया उस उछल कूद में मेरी असावधानता से शिरपरकी पगड़ी गिरपड़ी और वह चील तुरंत अपने पंजोंमें पगड़ी को पकड़केलेउड़ी मैं बहुतही कूदा और चिल्लाया जिसके सुनने से मुहल्ले के स्त्री और बालक इकट्ठे हुये और उसचील को उड़ाने लगे परन्तु उसने वह पकड़ी न छोड़ी और ऐसी दूरलेके उड़ी कि हमारी दृष्टिसे गुप्तहोगई निदान मैं द्रव्य के जाने से महा चिन्तित होके अपने घर में आया और उन दश

काश इतना कि हम सब कार्य्य दीपक बिना करसके थे फिर मैंने उस ही रेको बुखारी के एकओर में रखदिया जिससे उजियालाहो उससमय मैं विचार ने लगा कि साद के पैसे के कारण इतना लाभ तो हुआ कि रात्रिको दीपक की आवश्यकता न हुई तेल की किफ़ायत हुई जब हमारे बच्चो ने देखा कि हमने दीपक को बुझाकर प्रकाश के लिये उससीसे के टुकड़ेको रक्खा तो वह और भी उछलने कूदने लगे और शोर मचाने लगे इतना चिल्लाया कि पड़ोसियों ने सुनलिया निदान घुड़कने से चुप होके सोरहे और हम भी अपनी शय्या पर सोरहे भोरको उठकर अपना काम करने लगे और उससीसे के टुकड़े का विचार मेरेमनसे जातारहा मेरे पड़ोस में एक यहूदी बड़ा जौहरी रहता था उस रात्रिको जब वह दोनों स्त्री पुरुष सोने की इच्छा करते तो बालकों के शब्दसे बेचैन होजाते और बहुकाल पर्य्यंत उनको चिल्लाहट से निद्रा न आती प्रभात के समय उसकी स्त्री अपने पतिकी ओरसे शोर की बात करने को मेरे पास आई मेरी स्त्री उसे देखते ही उसके अन्तःकरण की बात समझगई और उसका नामलेकर कहा तुमको मेरे बच्चों के शोरके कारण रात्रिको निद्रा में विघ्नहुआ होगा सो उनका अपराध क्षमाकरो और तुम जानती हो कि बालक थोड़े में हँस देते हैं और थोड़े में रोदेते हैं भीतर आवो मैं बालकों के झगड़ने का हाल कहूँ जब वह भीतरगई मेरी स्त्री ने वहसीसे का टुकड़ा उसे दिखाया और कहा इसीकारण आपस में बालक शब्द करते थे वह रत्नों की पहिचानती थी उसेदेख आश्चर्य्य में हुई मेरी स्त्री ने संपूर्ण वृत्तान्त मछली के पेटमें से निकलने का उससे कह दिया उसने यह वृत्तान्त सुन कहा यह टुकड़ा सीसे का और प-

अशर्फ़ियों का जो आगे थैली से निकाली थी सन मोललिया और कुछ अपने भोजनादिक ग्रहस्थी के कार्य्य में खर्चेकी इस लज्जा और शोक से मरना उत्तम था और शोचा जब शादी मेरा उपकारी आवेगा और इस हालको सुनेगा तो उसे कदाचित् चील के लेजाने का निश्चय न होगा उसे मेरे मक्र करने पर संदेह होगा फिर जबतक वह थोड़ी अशरफ़ियां मेरे पासरही तबतक मै चैनसे रहा और थोड़े दिन पेटभर अपने स्त्री पुत्रो सहित भोजन किया फिर मै वैसाही दरिद्री होगया फिरभी सन्तोपरख ईश्वरका धन्य-वाद कर यह विचारता कि उसी ईश्वरने मुझे ये अशरफियां दीं और फिर उसने लेलीं जो कुछ वह परमात्मा सच्चिदानन्द मनुष्य के लिये रचताहै सो उत्तमहै इसी चिन्तामें था कि मेरी स्त्री ने जिस्से मैंने अशरफियो के पानेका हाल न कहाथा मुझे इसदशामें देखा और कई पड़ोसी मेरी दशादेख इकट्ठे हुये और चिन्ता का हाल पूंछने लगे परन्तु मैंने उनसे कुछ न कहा ॥

दो० ॥ अपनो द्रव्य गँवाय के कहिये नाही रोय ।
हँसै पड़ोसी बहुरि तब यामें अचरज जोय ॥

परन्तु जब उन्होंने बहुत पूंछा तो मैंने सब हाल कह दिया वे सब मुझे झूठा समझ बहुत हँसे यहां तक कि बालकभी मेरीबात पर ठट्ठामार कहनेलगे कि जिसने जन्मभर अशरफी न देखी उसने इतनी अशरफ़ी कहांसे पाई कि चील पगड़ी समेत ले उड़ी परन्तु मेरी स्त्री सत्य जान बहुत रोई जब इस वार्ताको छःमहीने बीते तो वे दोनो मित्र अर्थात् शाद और शादी मेरी गली की ओर आये शादने शादी से कहा कि दोसौ अशरफियों से कितना उसका व्यापार बढ़ाया निश्चय है कि वह पूर्व से धनवान् होगा

कारके सीसोंसे वहुत अच्छा है मेरे पास भी एक इसीभांतिका सीसे का टुकड़ा है जिसे मै कभी कभी पहनती हूं जो तू इसे वेचे तो मैं मोललूं मेरे पुत्र बेचने का नामसुन अपनी माता से रोकर कहने लगे कि तू इसे मतवेच फिर हम शोर न करेंगे उन वालकों की यह दशा देख वह दोनों स्त्रियां चुपहोरहीं और यहूदी की स्त्री विदा होकर अपनेघर चली और धीरे से मेरी स्त्री से कहा कि चैतन्यरह कोई दूसरा मनुष्य इसको देखने न पावे और हमसे कहे बिना इस को दूसरे के हाथ मत वेचो प्रभात को वह यहूदी चौक में अपनी दूकान पर था उसकी स्त्री ने वहीं जाकर उस सीसेके टुकड़े का हाल उससे कहा यहूदीने यह सुनकर कहा अभी तू जाके उस सीसे के टुकड़े को मोलले पहिले उसका थोड़ा मोल कहियो जब वह न माने तो वढा दीजियो जितनेको हो लीजियो वह अपने पतिकी आज्ञानुसार मेरी स्त्री के निकट आई और कहने लगी कि बीस अशरफ़ी उस सीसे के टुकड़ेको देतीहूं मेरी स्त्री बीस अशरफियों का नाम सुनकर शोची कि यह इसका अधिक मोल देती है परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया इतने में मैं अपना काम छोड़कर भोजन करने के लिये घरमें आया और उन दोनों को द्वारमेंसे वातें करते देखा मेरी स्त्रीने मुझे ठहराके कहा कि बीस अशरफियां यह पड़ो-सिन सीसे के टुकड़ेकी देती है मैंने अवतक कुछ उसका उत्तर नहीं दिया तुम्हारी क्या इच्छा है मैंने सादके वाक्य को स्मरण किया कि उसने कहाथा कि वह सीसे का पैसा तुमको बहुत कुछ दिलवा-वेगा मेरे चुपरहने से पड़ोसिनने जाना कि इसमोलपर यह राज़ी नहीं है उसने कहा हे हसन! जो तुम इतनेपर प्रसन्न नहीं हो तो मैं पचास अशर्फी देता हूं मैंने देखा कि यहूदिन इतनी शीघ्र

शादीने कहा बहुत अच्छा उसे बहुतकाल से हमने नहीं देखा मैं भी चाहताहूं कि उसे अच्छे हाल में देख प्रसन्नहोऊं यह कह वह दोनों स्नेही मेरे घरकी ओर आये पहिले शादने शादी से कहा मैं तो उसे उसी दरिद्रता में देखताहूं कि वह फटे पुराने वस्त्र पहिने परन्तु कुछ उसकी पगड़ी उजली दिखाई देतीहै और कुछ अन्तर नहीं तुमभी भली भांति देखो कि जो मैं कहताहूं सत्य है वा झूंठ है शादीने आगे बढ़के जो मुझे देखा तो उसी दशामें पाया फिर वे दोनों मेरे पास आये पहिले शादनेपूंछा हे हसन ! तुम्हारी क्या दशा होगई और तुम्हारा व्यापार उन दोसौ अशरफ़ी से बढ़ा नहीं मैंने कहा मैं अपनी दुर्भाग्यता का वृत्तान्त तुमसे क्या वर्णन करूं न तो लज्जाके मारे कहसक्ताहूं और न छिपाकर रखनेकी सामर्थ्य है मुझपर अद्भुत वृत्तान्त हुआ उसे सुनकर विस्मित होगे मैं लाचार होकर वर्णन करताहूं फिर मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे कह सुनाया शादी को विश्वास न हुआ और कहा कि हे हसन ! तू हमसे हँसी करताहै और चाहताहै कि हमको छूले जो तूने कहा वह निश्चय मानने के योग्य नहीं चील्होंका काम पगड़ी लेजाना नहीं है वह वही लेते हैं जो उनका भक्षण होताहै और तुमने वही काम किया जो बहुधा तुम्हारे से मनुष्य करते हैं अर्थात् जब उनको कुछ नहीं मिलता है और बहुतसा द्रव्य पाते हैं तो वह अपने कामको छोड़ लम्पटता में उस द्रव्यको ख़र्च करते है फिर वह निर्धन होजाते हैं फिर अपने कामको करते हैं तुमने भी ऐसाही किया होगा क्योंकि तुमने इसी थोड़े दिनों में सम्पूर्ण द्रव्यको व्यर्थ खर्च किया और जैसे थे वैसेही बनेरहे मैंने कहा जितना आप मुझे बुरा भला कहिये सो यथार्थ है और मैं इसी योग्य हूं परन्तु इस अद्भुत

बीस अशरफ़ी से पचास अशरफ़ी तक आई है इसका बड़ा मोल होगा मैं चुपहोरहा और उसका कुछ भी उत्तर न दिया उसनेमुझे चुप देखके कहा एक सौ अशरफ़ी लो यह बहुत है मैं नहीं जानती कि मेरा पति इसमोल के देनेपर राज़ी हो या नहीं मैंने कहा तुम क्या कहती हो मैं इस टुकड़ेको लाख अशरफ़ी से कम न बेचूंगा और इस मोलपर तुम्हें और तेरे पतिको दूंगा क्योंकि तुम पड़ोसी हो यहूदिन बढ़ते २ पचास हज़ार अशरफ़ी तक आई और मुझसे कहा कि तुम इसे संध्यातक मत बेचना कि मेरापति इस को एक दृष्टि देखले मैंने कहा बहुत अच्छा रात्रिको उसका पति भी मेरे महल में आया और मैंने उस हीरे को उसे दिखाया अभी दीपक नहीं जलाया गया था कि वह हीरा दीपक के सदृश मेरे हाथ में चमक रहा था यहूदी को उस समय जो कुछ कि उसकी स्त्रीने कहा था विश्वास हुआ और उसी हीरे को अपने हाथ में लेकर बहुत काल पर्य्यंत जांचता रहा और फेरफारके देखा किया और अत्यन्त आश्चर्यमें हो कहनेलगा कि मेरी स्त्री पचासहजारअशर्फ़िये देतीहै मैं उससे बीसहज़ार अशरफ़ी अधिक देताहूं मैंने कहा तुमको तुम्हारी स्त्री से मालूम हुआ होगा कि मैंने उससे मोल कहा है कि लाख अशरफ़ीसे कम न बेचूंगा उसने कितनाही चाहा कि मैं लाख रुपये से कम लूं मैंने कहा जो तुम न लोगे तो मैं दूसरे जौहरी के हाथ बेचूंगा निदान वह यहूदी इतने पर राज़ी हुआ और दोहज़ार अशरफ़ी बयाने की तौरपर देके मुझसे कहा कि मैं सब कल हज़ार अशरफ़ियां तुझे लादूंगा और इस हीरे को लेजाऊंगा मैं भी इस बात पर राज़ी हुआ निदान दूसरे दिन उस यहूदी ने अपने इष्ट मित्रों से करज लेकर एकलाख अशरफ़ियां मुझे गिनदीं तब मैंने

वह हीरेका टुकड़ा उसे दिया और उसी में धनवान् होगया ईश्वर का धन्यवाद किया उसी ईश्वर के दिये हुये द्रव्य से अपना गृहस्थी का असबाव धनवानों के सदृश बनाया और मेरी स्त्रीने भी बालकोंके वस्त्र बनाये और मैंने एक बड़ा घर मोललेकर उसकी छत परदे आदि सामग्री से दुरुस्त करली मैंने अपनी स्त्रीसे कहा अब हमें यह उचितहै कि अपने पुराने कामको न छोड़े और कुछ द्रव्य उठारक्खे और थोड़ीसी द्रव्यसे काम काज कियाकरें फिर मैंने नगर के सम्पूर्ण कारीगर नौकर रक्खे और उनको कईसै रुपये देकर कई कारखाने रस्सी के जमाये और कई मनुष्योंको विश्वासित जान एक एक कारखाना उनको सौंपदिया अब बुगदाद नगरमें ऐसी कोई गली नहीं जिसमें मेरा गुमारता अथवा रस्सी का कारबारी न हो और इसी भांति प्रति नगर और जिलामे एक २ कारखाना नियत कर एक एक मुहर्रिर वहां नियतकिया अब मुझे इस प्रबन्ध से बहुतसा धन प्राप्त होताहै और अपने कारख़ाने के लिये मैंने एक विशाल मन्दिर मोल लिया जिसमें ज़मीन बहुतथी परन्तु वह घर छिन्न भिन्न था अब उसे तुड़वाकर नये सिरेसे विशाल स्वच्छ भवन बनवाया जिसको कल आपने देखा था उसमे केवल मेरे कारिन्दे रहते हैं और दफ्तर का हिसाब किताब वहीं है और अपना और अपने कुटुम्बका असबाव वहीं रखताहूं फिर मैं अपने प्राचीन घरको जिसमें साद और सादी आते थे छोड़कर नये घरमें जोकि वहां मैंने रहने के लिये बनवायाथा आरहा और कुछ दिनके पीछे मैं साद और सादी को स्मरणहो आया और उन्होंने चाहा कि फिर मुझे आकर देखें सो वे दोनों उसी पुराने घरमें आये मुझे और मेरे कुटुम्बको वहां न पाकर

थ्यार हैं तब वह सबके आगे होलिया और जिस ओरसे वह आये थे उसी ओर चलेगये अलीबाबा उनके जानेके उपरान्त कईक्षण उस वृक्षपर से न उतरा और यह शोचा कि ऐसा न हो कि वह फिर आवें और मुझे देखलेवें जब वह दूर निकलगये और दृष्टिसे लोप होगये तब उसने वृक्षसे उतर परीक्षा की इच्छा की कि मैं भी वही शब्द पढकर देखूं कि वह किवाड़ खुलता है वा नहीं अथवा बन्द होता है वा नही सो उस द्वारके पास पहुंच उसने कहा खुल अय समसम इस वचनके कहतेही वह खुलगया और उसमें जाकर क्या देखा कि वह बड़ी विशाल और स्वच्छ कन्दरा है इससे वहअत्यन्त आश्चर्य मे हुआ कि ऐसा मन्दिर पहाड़ को खोदकर क्योंकर बनाया परन्तु छत उसकी एक मनुष्य की उंचाईके बराबरथी और पर्वत के शिखर से रोशनदानों के द्वारा उस कन्दरा में प्रकाश पहुंचता था तो उसने उजियाले में देखा कि बहुतसी वस्तु धरी हैं और हरएक भांति की मालकी गठरियां रक्खी हैं और नीचे-ऊपर भारी भारी कमखाब चिकन आदि के थान ढेर पड़े हैं इसके विशेष असंख्य द्रव्यहै कुछ तो ढेरों रक्खाहै और कुछ बड़े बड़े चमड़े की बड़ी बड़ी थैलियों मे सीकर रक्खाहै इतनी वस्तु और द्रव्यदेख उसने शोचा कि यह कन्दरा थोड़े वर्षों से नही भरी किन्तु सैकड़ों वर्षों से ठगोंने इस वस्तुको लूटकर यहां इकट्ठा कियाहै। फिर दरवाजा आपही आप बन्दहोगया अलीबाबा उसके बन्दहोनेसे न डरा क्योंकि उसे उसके खोलनेका भी मंत्र याद था फिर वह इतनी अशरफी उस कन्दरासे बाहर निकाल लाया कि उसके गधे उठा सकें और गधोंको एक ओर कर उनपर थैलियां अशरफियों की लादीं और ऊपर से थोड़ासा काठ रखकर उसे चहुंओरसे छिपालिया जिससे

लकड़ियों का गट्ठा जानपड़े जब वह लाद चुका तो कहनेलगा (बन्द हो अयसमसम) यह कहतेही वह दरवाजा बन्द होगया और उस दरवाज़ेका यह प्रभावथा कि जब कोई उसके भीतर जाता तो वह आपसे बन्द होजाता और जब तक कोई (खुल अयसमसम) उच्चारण न करता कभी भी वह न खुलता अलीबाबा गधोंको आगे कर नगर को चला जब वह भीतर पहुंचा तो उन गधों को अपने घर के भीतर लेगया और बाहरका किवाड़ मूंद ऊपरकी लकड़ियां उतार और अशरफ़ियों की थैलियां उतार उतार अपनी स्त्रीके सम्मुख लेगया उसकीस्त्रीने टटोलके देखा कि उनमें अशरफ़ियां भरी हैं समझी कि उसका पति कहीं से चुराकर लायाहै तो अपने भर्त्ता को दुर्वचनदे कहनेलगी तुझे यहकर्म उचित न था उसने कहा मैंने चोरी नहीं की मैं इस वृत्तान्त को तुझसे कहताहूं तू मेरे भाग्य के उदय होने का हाल सुनकर हर्षित होगी फिर उसने थैलियों में से अशरफ़ियां निकाल उसके आगे ढेर करदी जिसके देखने से उसकी स्त्री के नेत्र चौंधियाने लगे और उस हालको सुन अत्यन्त प्रसन्न हुई और उनको गिनने लगी अलीबाबा ने कहा तुम क्या बे समझहो कहांतक गिनोगी अब मैं इसको गढा खोद गाड़े देताहूं उसकी स्त्रीने कहा अच्छा परन्तु मैं इनका अनुमान करना चाहतीहूं कि यह सब कितनी हैं अलीबाबाने कहा बहुत अच्छा परंतु चैतन्यरह कि यह भेद खुलने न पावे सो उसकी स्त्री तराजू लेने को क़ासिमके घरमें गई परन्तु क़ासिमको घरमें न पाया उसने उसकी स्त्रीसे कहा अपनी तराजू एक क्षणके लिये मुझेदे उसने पूंछा बड़ी चाहिये अथवा छोटी उसने कहा मुझे छोटीसी तराजू चाहिये उसकी जिठानीने कहा ज़रा ठहरजा मैं ढूंढकर लातीहूं इस

ानेमे बैठे हैं वहां बहुतसे उन के नौकर होंगे कोई उनसे जाकर तुम्हारे आनेका समाचार देगा फिर वे दोनो मित्र वहां आये जहाँ मैं बैठाथा मैंने देखतेही पहिचान लिया और तुरन्त अपने स्थान से उठ मैं दौड़ा और उनके वस्त्र चूमें वे बहुतेरा चाहतेथे कि मैं गले मेलूं पर मैं न मिलता निदान उनको भीतर लेजाकर एक दालान मे बहुत अच्छे स्थानपर बैठाना चाहा परन्तु उस स्थानपर वे चाहते थे कि मैं बैठूं मैंने कहा कि हे सज्जनो ! मैं अपने को नहीं भूला मैं वही हसन रस्सी बटनेवाला हूं मैं सदा आपको आशीर्वाद देता हूं निदान वे एक स्थानपर बैठगये और मैं भी उनके सम्मुखहो बैठगया सादीने कहा मैं तुम्हें इस दशा में देखकर बड़ा प्रसन्नहुआ और ईश्वर ने जैसा कि हमारा मन चाहता था तुम्हें उसपदवी को पहुंचाया और मुझे निश्चय है कि उन्हीं चारसौ अशरफ़ियों से जो मैंने तुमको दीथीं यह सबधन, ऐश्वर्य्य प्राप्त हुआ परन्तु सत्य कहो कि तुम क्यों पूर्व मे दो बेर मुझ से झूंठ बोले थे साद यह बात सादी से सुन कर बहुत से पेचखाकर चुपके चुपके सुना किया जब सादी कहचुका तो वह बोला कि इसका उत्तर मैं तुम्हें देताहूं कि जो कुछ पूर्व्व में हसनने अशरफियों के खोजाने का हाल कहाथा वह सबसचहै उसमें कुछ अन्तरनहीं फिर उन मे परस्पर इसी बात पर तकरार होने लगी मैंने कहा भाइयो उसबातको जाने दो मेरेवास्ते क्यों परस्पर खेद करतेहो आगे जो कुछ मेरेऊपर बीता था वहकह सुनाया उसको सचजानो या झूठ और अबभी जो कुछ हुआ है तुमसे कहताहूं सोसुनो उसने सम्पूर्णवृत्तान्त धीमर को पैसा देने और मछली के पेट से हीरेके निकलनेका कहा जैसा कि हे खलीफा ! मैंने आपके सम्मुख

वहाने वह दृष्टिकी ओटहोकर तराजू के पलड़ोंके ऊपर मोम और चर्बी लपेट कर लाईकि मालूम करे कि कौनसी वस्तु अलीबाबा की स्त्री तोलेगी कि चिकनाईसे उसमें निस्सन्देह कुछ न कुछ लगरहेगा निदान अलीबाबा की स्त्रीने उस तराजूको अपने घरले-जाके सम्पूर्ण ढेर अशरफ़ियों का तोला और अलीबाबा गढ़ा खोदने लगा निदान दोनों स्त्री पुरुषोंने मिलके उन अशरफ़ियों को गढ़े में गाड़दिया और अलीबाबाकी स्त्री कासिमकी स्त्री को तराजू देने आई और जल्दी मे कुछ विचार न किया एक अशरफी चर्बी की लससे उस तराजू में लगगई थी क़ासिम की स्त्री वह अशरफी लगीहुई देख डाहकी अग्निसे जलनेलगी और समझी कि इस तराजू में अशरफ़ियां तुलीहैं इससे अति आश्चर्य में हुई और शोचनेलगी कि अलीबाबा ने जो अत्यन्त निर्धन और दरिद्री था इतनी अशरफियां कहां से पाई जिनको उसने तराजू परतोला कासिम अलीबाबा का भाई सायङ्कालको जब अपने घर में आया उसकी स्त्रीने कहा तू अपने को वड़ा भाग्यवान् और धनवान् समझता है परन्तु तुझसे तेरा भाई वड़ा धनवन्त है उसकी स्त्रीने अशरफियों को आधिक्यता से तोल कर रक्खाहै तू गिनकर रक्खाकरता है कासिमने पूंछा तुम क्योंकर जानती हो उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया और वह अशरफ़ी जिसपर किसी प्राचीन बादशाह का सिक्काथा उसे दिखाई क़ासिम को रात्रिभरईर्षा से निद्रा न आई भोरको उठकर अपने भाई के पासगया और उससे कहा भाई प्रकट में तुम अत्यन्त धनहीन जान पड़ते हो परन्तु तुम्हारे पास वहुतसा धनहै और इतनी अशरफियां है कि तुम उनको तराजू में तोलते हो अलीबाबा ने कहा मैं तुम्हारे अभिप्राय को नहीं समझता उसे

वर्णनकियाहै उसनेभी कहा सादीने उसेसुनकेकहा हे हसन ! इतने वड़े हीरेका मछलीके उदर मेंसे निकलना वैसाहै जैसा कि चील्ह तुम्हारे शिर परसे पगड़ी उड़ालेगई और मओर सूसी देके शिर धोने की मिट्टीली शायद सचहो परन्तु मुझे बिश्वास नहीं आता यह द्रव्य तुम्हें उन्हीं अशरफ़ियों से प्राप्त हुआ और उनसे कहने लगा भाइयो आपने मुझपर बड़ा अनुग्रह किया कि इतना श्रम कर. मेरेमहल में आये और इस घर को पवित्र किया परन्तु मेरी यह इच्छा है कि रात्रिको आप भोजनकर यहीं निवास कीजिये प्रभात को मैं तुम्हें नदी और भवनकी सैर के लिये जो मैंने इसी शहर में हवाखाने के लिये लिया है लेचलूंगा उन्हों ने न माना जब मैंने बहुत कहा तो उन्होने मान लिया मैंने उनके लिये नाना प्रकार के व्यञ्जन पकवाये और उनको अपने भवनके सब असबाब दिखाये और परस्पर हास्य और हर एक भांति से प्रसन्नता की वार्ता करते रहे इतने में दासीने कहा कि भोजन तय्यार है तब अपने उनदोनों मित्रो को अपने भोजन करने के कमरे में लेगया जिस में अनेक भांति के स्वच्छपाक थे और अति सुन्दर और उज्ज्वल दीपक उचित २ स्थानोंपर प्रज्वलित थे और एक मधुर स्वरसे गाना होरहाथा और एक तरफ़ स्त्रीपुरुष नृत्य करते थे इस के बिशेष बहुत से तमाशे उनको दिखाये और भोजन से निश्चिन्त होकर हमसोरहे प्रभातको उठकर हमएक किश्ती परसवार हुये केवट उसको बहावमें खेते हुये लेचले थोड़े काल में हम अपने घरमें जो गांव में था जा पहुँचे फिर किश्तीसे उतर सैर करतेहुये एक घर के भीतर आये मैंने अपने रहने की जगह और कारख़ाने उनको सब दिखाये वह घर और उसकी जगह

विस्तार पूर्व्वक वर्णन करो कासिम ने कहा अब तुम मुझे मत भुलाओ फिर उसने वह अशरफ़ी जो उसकी स्त्रीने दी थी अलीबाबा को दिखाई और कहने लगा कि इस प्रकार की लाखों अशरफ़ियां तुम्हारे पासहैं मेरी स्त्रीने इसे तराजू में पाया था अलीबाबा ने यह वृत्तान्त सुन जाना कि यह दोनों स्त्री पुरुष मेरे भेदको जान गये अब इनसे छिपाने में वैरहोगा लाचारीसे उनसे ठगोंका वृत्तांत कह सुनाया उसने यह सुन अलीबाबा से कहा यदि तुम वह स्थान न बताओगे तो मैं अभी तुम्हारी अशरफ़ियोंका हाल कोतवाल से जाकर कह दूंगा व्यर्थ में तुम्हारी अशरफ़ियां जावेंगी और तुम कैद होजाओगे अलीबाबा ने भयभीत होकर सबहाल उससे कह दिया और वह मन्त्रभी उसे बतादिया कासिम सबबातों को सीखकर दूसरे दिन प्रभातको दश खच्चर अपने साथ लिये उसी ओर को जिधर अलीबाबा ने बताया था सिधारा जब उस पर्व्वत और वृक्षके पास जिसपर अलीबाबा छिपाथा पहुंचातो उसे दरवाज़ा दीखा उसने कहा (खुलअयसमसम) उसके कहनेसे वह दरवाज़ा खुलगया और क़ासिम उसके भीतर गया वहां उसने बहुतसी वस्तु देखी कि चारों ओर पटी पड़ीहैं फिर वह दरवाजा उसके भीतर जाने के उपरान्त बन्द होगया वहउस कन्दरामें चहुंओरफिरा किया और भांति २ वस्तु और खजाने देखतारहा निदान

और तय्यारी को देखकर हर्षितहुये इसके अनन्तर वाग मे गये जिसमें सब भांतिके सघन वृक्ष लगेहुयेथे और नदीसे पक्की नहरो के द्वारा निर्म्मल जल सब जगह पहुँचताथा और पकेहुये फल सुन्दर वृक्षो में लगेहुये थे और सुन्दर पुष्पवाटिकामें अनेक भांति के सुगन्धित फूल लगे थे जिनकी सुगन्धि सारे वागो में चहुंओर फैलरही थी और स्थान, स्थान पर पानी की चादरें और फव्वारे छूटरहे और अनेक भांतिके पक्षी उन्ही सघन वृक्षोंपर अपनी ललित वाणी बोलते इसके विशेष वहां वहुतसी वस्तु उपस्थित थीं जिनके देखने से मनको अति आनन्द होता वे दोना मित्र देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुये कभी मेरा गुण मानकर कहते कि तुमने हमको वहुत सुन्दर स्थानपर लाके सैरकराई और कभी यह आशीर्वाद देते कि ईश्वरकरे यह विचित्र भवन और वाग फली भूतहो निदान मैं उनको एक सघन वृक्षके नीचे कि वह वाग के किनारे लगा हुआ था लेगया और उसको दिखाकर उनको छोटे से मकान में भोजनके लिये लेगया और दालान मे जहां मसनद तकिया लगाहुआ था उनको बिठलाया इस समयान्तरमे मेरे दो पुत्र जिनको मैंने दो तीन दिन पहिलेसे उनके अध्यापक समेत उस वाग में जल वायु वदलनेके लिये भेजाथा पक्षियोंका घोसला ढूँढ़तेहुये एक वृक्षके नीचे गये सो उनको एक घोंसला मिला उन्होने चाहा कि उस वृक्षपर घोसला उतारने के लिये चढ जावे परन्तु अभ्यास केन होने से और कमजोरीसे ऊपर चढनेकी शक्ति अपने मे न पाई निदान अपने नौकरको जो उनकी सेवाकिया करता था उसपर चढने को कहा वह सेवक उसपर चढ़गया और घोसले को देखके आश्चर्य्य में हुआ कि पगडी से वना हुआ था

परी २ से हर अनाज का नाम सिवाय समसम के पुकारा परन्तु वह किवाड़ न खुला समसम का शब्द उसे ऐसा भूला मानो उसने कभी इस शब्द को न सुना था निदान वह उन अशरफ़ियों को देखकरके अचम्भे मे उसकंदरामें कभी आगे बढ़ताथा और कभी पीछे को हटता और पहिले कि उसे उस असंख्य द्रव्य के देखने से खुशी हुईथी अब वही दुःखकी हेतु हुई किन्तु वह अपने प्राण से निराश हुआ अकस्मात् मध्याह्न के समय वह ठग वहां पर आये और दूरसे उसस्थान पर खच्चरों को देख अचम्भे में हुये कि इनको कौन यहां लाया जब पास पहुंचे तो खच्चरों के पीछे दौड़े प्रयोजन उनका यह था कि मालूमकरें कि उन को यहां कौन लाया फिर सरदार अपने साथियों समेत घोड़े से उतर द्वारकी ओर चला और वहां पहुंच उसने वह मंत्र पढ़ा कि वह किवाड़ खुलगया कासिम घोड़ों की टापें सुनते ही धरती पर गिरपड़ा और उसको निश्चय हुआ कि यह वही ठग हैं अब में निस्संदेह मारा जाऊंगा तो भी सँभल बैठा कि दरवाजे के खुलतेही निकलकर भागे उसके दौड़ने से ठगों का सरदार जो आगे था कि सदमें से गिरपड़ा सो किसी सवारने क़ासिम को देखते ही खड्ग ऐसामारा कि वह दो टूक होगया फिर वह सवार सब भीतर गये और वह अशरफियां जो कासिमने लेजाने के लिये द्वारे के पास

और घोसले को उसीतरह वृक्ष से उतार लाया और मेरे पुत्रों को वह पगड़ी दिखाई बड़ा बालक मेरे दिखाने को लेआया मैंने उसे दूरसे देखा कि अति प्रसन्नता से मेरी ओर चला आताहै औरउस को मेरे सम्मुख रखके बोला हे पिता! देखो यहघोंसला वस्त्रकाबना हुआ है साद और सादी उसे देख मुझसे अधिक आश्चर्य्यमें हुये जब मैंने अच्छी तरह उस घोंसले को देखा तो अपनी पगड़ी को पहिचाना कि यह वही पगड़ीहै जिसको पहिले चील्ह मेरे शिर पर से झपट्टा मारके ले उड़ी थी फिर मैंने उन दोनो मित्रों से कहा तुम भी ध्यान करके देखो कि यह वही पगड़ीहै कि जो उस दिन मेरे शिरपर थी जब आप पहिले पहिल मेरे कारखानें में आये थे सादने कहा मैं तो पहिचान नहीं सक्ता सादी बोला यदि एकसौ नव्वे अशरफ़ियां इसमें हों तो जानिये कि यह वही पगड़ीहै मैंने कहा निस्सन्देह वही मेरी पगड़ीहै जो उसदिन मेरे शिरपर रक्खी हुई थी जब मैंने हाथमें लेकर अनुमान किया तो बहुत भारी पाया और उसे खोला तो एक वस्तु भारी सी उसमें थी जब गिरह खोली तो उसमें वही थैली अशरफ़ियों की निकली मैंने उस थैली को दिखाकर सादी से कहा पहिचानों यह वही थैली तुम्हारी है उसने पहिचान कर कहा वास्तव में यह वही थैली अशरफ़ियों की है जो मैंने तुमको पहिलीबेरदी थी फिर मैंने उस थैली का मुख खोल सादी के सम्मुख अशरफ़ियों का ढेर करदिया और कहा इनको गिनो उसने गिनी वह पूरी एकसौ नव्वे अशरफ़ियां थीं सादी देखतेही अति लज्जित हुआ और कहने लगा कि अब मुझ को तुम्हारे वचन का विश्वास हुआ परन्तु वह अशरफ़ियां जो तुमको दूसरी बेर मैंने

विस्तार पूर्व्वक वर्णन करो क़ासिम ने कहा अब तुम मुझे मत भुलाओ फिर उसने वह अशरफ़ी जो उसकी स्त्रीने दी थी अलीबाबा को दिखाई और कहने लगा कि इस प्रकार की लाखो अशरफ़ियां तुम्हारे पासहैं मेरी स्त्रीने इसे तराज़ू में पाया था अलीबाबा ने यह वृत्तान्त सुन जाना कि यह दोनों स्त्री पुरुष मेरे भेदको जान गये अब इनसे छिपाने में वैरहोगा लाचारीसे उनसे ठगोंका वृत्तांत कह सुनाया उसने यह सुन अलीबाबा से कहा यदि तुम वह स्थान न बताओगे तो मैं अभी तुम्हारी अशरफ़ियोंका हाल कोतवाल से जाकर कह दूंगा व्यर्थ में तुम्हारी अशरफ़ियां जावेंगी और तुम क़ैद होजाओगे अलीबाबा ने भयभीत होकर सबहाल उससे कह दिया और वह मन्त्रभी उसे बतादिया क़ासिम सबबातों को सीखकर दूसरे दिन प्रभातको दश खच्चर अपने साथ लिये उसी ओर को जिधर अलीबाबा ने बताया था सिधारा जब उस पर्व्वत औ वृक्षके पास जिसपर अलीबाबा छिपाथा पहुंचातो उसे दरवाज दीखा उसने कहा (खुलअयसमसम) उसके कहनेसे वह दरवाज खुलगया और कासिम उसके भीतर गया वहां उसने बहुतसी वस्तु देखी कि चारों ओर पटी पड़ीहैं फिर वह दरवाजा उसके भीतर जाने के उपरान्त बन्द होगया वहउस कन्दरामें चहुंओरफिर किया और भांति २ की वस्तु और खजाने देखतारहा निदान दश खच्चरों के बराबर अशरफ़ियों की थैलियां भरके द्वारके पा लाया और चाहा कि दरवाजे को खोल अशरफ़ियों को खच्चरों परलादे परन्तु (समसम) अर्थात् तिलिस्मका शब्द भूलकर न हने लगा कि (अपनबारले) तात्पर्य्य खोल है जो जब वह द वाजा न खुला इसबात से वह अत्यन्त आश्चर्य्य में हुआ अ

दी हैं उनसे तुमको आधा धन प्राप्त हुआ है और आधा उस पैसे से मैं सुन चुपहोरहा परन्तु साद और सादी में झगड़ा होने लगा भोजन करने के उपरान्त हम तीनों बाग़ में हवादार मकान पर सोरहे सन्ध्या को जब सूर्य्य अस्त हुआ तो जगे और घोड़ों पर सवार होकर बुग़दाद को चले मार्ग में सम्पूर्ण सेवक हमसे अलग होके पीछे रहगये दाना घोड़ोंने नहीं खाया था और नगर की सब दूकानें बन्द होगई थीं दो तीन दास जो हमारे संग चले आये थे दाना ढूंढ़ने गये सो किसी सेवक ने भूसी की मठोर भरीहुई किसी बनिये की दूकान पर देखी वह उस बनिये से मोल लेके मटुकी सहित मेरे पास उठालाया इसबात पर कि कल हम तेरी मठोर तेरी दूकान पर भिजवा देवेंगे फिर नौकर हर एक घोड़े के आगे उस भूसीको मठोर में से निकाल कर डालने लगा अँधियारे में एक वस्त्र उसके हाथ लगा और वह उसे बहुत भारी मालूम हुआ वह उसे उसी भांति मेरे पास ले आया और मुझे देखकर कि देखिये यह वही वस्त्र तो नहीं है जिसका हाल कईबेर तुमने हमसे कहा मैंने उसे हाथमें लेकर पहिचाना कि यह वही कपड़ा है जिसमें एकसौ नव्बे अशरफियां बांध के भूसी की मठोर में रक्खी थीं इससे अति प्रसन्न होके मैंने अपने मित्रों से कहा भाइयो ईश्वरने मुझे सच्चा किया और सादी से कहा यह दूसरी एकसौ नव्बे अशरफियां हैं जो तुमसे मैंने पाई थीं और मैं इस पुराने चिथड़े को जिसमें उनको मँगवाया था भली भांति पहिचानताहूं फिर मैंने उस मठोर को अपने सामने उठवा मँगवाया और अपनी स्त्री के निकट भेजा उसने कहला भेजा यह वही मठोर है जिसमें भूसी रक्खी जाती थी सादीने यह दशा देख कहा

पारी २ से हर अनाज का नाम सिवाय समसम के पुकारा परन्तु वह किवाड़ न खुला समसम का शब्द उसे ऐसा भूला मानो उसने कभी इस शब्द को न सुना था निदान वह उन अशरफ़ियों को देखकरके अचम्भे में उसकंदरामें कभी आगे बढ़ताथा और कभी पीछे को हटता और पहिले कि उसे उस असंख्य द्रव्य के देखने से खुशी हुईथी अब वही दुःखकी हेतु हुई किन्तु वह अपने प्राण से निराश हुआ अकस्मात् मध्याह्न के समय वह ठग वहां पर आये और दूरसे उसस्थान पर खच्चरों को देख अचम्भे में हुये कि इनको कौन यहां लाया जब पास पहुंचे तो खच्चरों के पीछे दौड़े प्रयोजन उनका यह था कि मालूमकरें कि उन को यहां कौन लाया फिर सरदार अपने साथियों समेत घोड़े से उतर द्वारकी ओर चला और वहां पहुंच उसने वह मंत्र पढ़ा कि वह किवाड़ खुलगया कासिम घोड़ों की टापें सुनते ही धरती पर गिरपड़ा और उसको निश्चय हुआ कि यह वही ठग हैं अब मैं निस्संदेह मारा जाऊंगा तो भी सँभल बैठा कि दरवाजे के खुलतेही निकलकर भागे उसके दौड़ने से ठगों का सरदार जो आगे था कि सदमें से गिरपड़ा सो किसी सवारने कासिम को देखते ही खड्ग ऐसामारा कि वह दो टूक होगया फिर वह सवार सब भीतर गये और वह अशरफ़ियां जो कासिमने लेजाने के लिये द्वारे के पास रक्खीथीं भीतर लेजाकर कोपमें रखदीं और घबराहट में उन थैलियोंके न होने से जो अलीबाबा लेगया था कुछ ध्यान न किया सबके सब इसी चिन्तामें पड़े कि यह मनुष्य किधर से आया रौशनदानोंसे तो कोई नहीं आसक्ता क्योंकि इतने ऊंचे पहाड़ पर क्योंकर चढ़सक्ता यदि द्वारसे आता तो अवश्यथा कि उसे खोलने

कि मेरा विचार अशुद्ध था और साद से कहा अब मैंने तुम्हारी बात को सच्चा जाना और उसपर विश्वास हुआ कि धन धन से नही बढता किन्तु ईश्वर की अनुग्रह से दरिद्री धनाढ्य होजाता है इतना कह हम सब सोरहे दूसरे दिन प्रभात को विदा होकर वह दोनों मित्र अपने महल को पधारे जब बादशाह ने यह सम्पूर्ण कथा हसन से सुनी तो कहने लगा कि मुझे प्रथम से तुम्हारे पड़ोसियों के द्वारा विदित है कि तुम व्यर्थ खर्च नही करते और वह हीरा जिसने तुमको धनवान् करदिया मेरे कोषमे है तू सादी को यहां बुलाला कि उस हीरे को अपने नेत्रो से आके देखे और उसे निश्चयहो कि रुपये पैसे से सब निर्धन धनवान् नही हो जाते और तू इस कहानी को मेरे कोषाधिप से भी कह कि वह इस चरित्र को लिखकर हीरे के साथ मेरे कोष मे रक्खे फिर बादशाहने सैन से हसन को विदाकर दिया तत्पश्चात् सादी नैमान और बाबा अब्दुल्ला भी तख्त को चूम विदा हुये मलका शहरज़ाद ने चाहा कि दूसरी कहानी आरम्भ करें परन्तु हिन्दुस्तान के बादशाह ने प्रातःकाल हो जाने से कहा उस कहानी को मैं कल सुनूंगा ॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिन्याचतुर्थभागे चतुर्थः प्रदीप ॥ ४ ॥

अथ दृष्टांतप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चमःप्रदीपः ॥ ५ ॥

अलीबाबा और चालीस ठगों की कहानी जो एक दासी के उपाय से मारेगये ॥

सत्यशीलस्य रक्षाहि जायते चौरतो यथा ॥
अलीबाबा हन्यमानः स्त्रीदासपरिरक्षितः ५

अर्थ । जो जन सत्य स्वभाववाला होवे उसकी चोर तथा शत्रु

विस्तार पूर्व्वक वर्णन करो क़ासिम ने कहा अब तुम मुझे मत भुलाओ फिर उसने वह अशरफ़ी जो उसकी स्त्रीने दी थी अलीवाबा को दिखाई और कहने लगा कि इस प्रकार की लाखों अशरफ़ियां तुम्हारे पासहैं मेरी स्त्रीने इसे तराजू में पाया था अलीवाबा ने यह वृत्तान्त सुनजाना कि यह दोनों स्त्री पुरुष मेरे भेदको जानगये अब इनसे छिपाने में बैरहोगा लाचारीसे उनसे ठगोंका वृत्तांत कह सुनाया उसने यह सुन अलीवाबा से कहा यदि तुम वह स्थान न बताओगे तो मैं अभी तुम्हारी अशरफ़ियोंका हाल कोतवाल से जाकर कह दूंगा व्यर्थ में तुम्हारी अशरफ़ियां जावेंगी और तुम क़ैद होजाओगे अलीवाबा ने भयभीत होकर सबहाल उससे कह दिया और वह मन्त्रभी उसे बतादिया क़ासिम सबबातों को सीखकर दूसरे दिन प्रभातको दश खचर अपने साथ लिये उसी ओर को जिधर अलीवाबा ने बताया था सिधारा जब उस पर्व्वत और वृक्षके पास जिसपर अलीवाबा छिपाथा पहुंचातो उसे दरवाज़ा दीखा उसने कहा (खुलअयसमसम) उसके कहनेसे वह दरवाज़ा खुलगया और कासिम उसके भीतर गया वहां उसने वहुतसी वस्तु देखी कि चारों ओर पटी पड़ीहैं फिर वह दरवाजा उसके भीतर जाने के उपरान्त बन्द होगया वहउस कन्दरामें चहुंओरफिरा किया और भांति २ की वस्तु और खजाने देखतारहा निदान दश खचरों के बराबर अशरफ़ियों की थैलियां भरके द्वारके पास लाया और चाहा कि दरवाजे को खोल अशरफ़ियों को खचरों परलादें परन्तु (समसम) अर्थात् तिलिस्मका शब्द भूलकर कहने लगा कि (अपनवारखे) तात्पर्य्य खोल है जो जब वह दरवाजा न खुला इसबात से वह अत्यन्त आश्चर्य्य में हुआ और

आदिकों से भी रक्षा होजाती है । जैसे बहुत प्रकार से हताजाने पर भी अलीबाबा स्त्री करके रक्षा कियागया ५ ॥

दृष्टान्त । दूसरी रातको मलका कहानी को इस भांति वर्णन करने लगी कि पारस देशमें दो भाई थे एक का नाम क़ासिम और दूसरे का अलीबाबा था उन्होंने अपने पिताके मृत्युके पश्चात् थोड़े द्रव्य को आपसमे लिया और थोड़ेही समय मे दोनों भाइयो ने उसे खर्च करडाला क़ासिम ने एक स्त्री के साथ जिसका पिता बड़ा धनवान् था विवाह किया और अपने ससुरके काल के उपरान्त उसको ससुरकी एक दूकान मिली जिसमें व्यापार की बहुमूल्य वस्तुभरीथीं और बहुतसा द्रव्य जो पृथ्वी में गड़ाथा पाया इससे वह उस नगर मे बड़ा व्यापारी विख्यात हुआ । अलीबाबा ने जिस लड़की के साथ विवाह किया उसका पिता निर्धन और दरिद्रीथा वेदोनों छोटे से घरमें रहते थे अलीबाबा प्रतिदिन सूखा काठ कंधेपर लादके नगर मे लाता और उसकोबेच अपना निर्वाह करता था एकदिन अलीबाबा ने निज आवश्यकता के अनुसार काष्ठ काटा और चाहता था कि गधों पर लादे अकस्मात् उसने दाहिनी ओरसे धूलि उड़ती अपनी ओर आती देखी जब उसने भली भांति देखा तो तिसे बहुत से सवार देख पड़े जो पांव उठाये उसी की ओर चले आते हैं वह उनको देखकर भयभीत हुआ कि कहीं लुटेरे न हों मेरेगधों को छीन न लेजावे और मुझे मारडालें इससे भयमान होकर भागने लगा परन्तु सवार पासही पहुंच चुके थे इससे वह वनसे निकल कर न जासका इसलिये उसने गधोंको एक ओर हांक दिये और आप अपनेको छिपाने के लिये एक सघन वृक्षपर चढगया औरऐसे स्थानपर बैठा कि उसको वहां से

उच्चारण किया तुरंत वह दरवाजा खुलगया तो वहां दरवाजे के दाहिने वायें अपने भाई की लोथ को टुकड़े टुकड़े हुआ देख अत्यन्त भयभीत हुआ उसने अपने भाई की लोथ को चादर में बांध एक गधेपर लादा और उसको काठ़से चहुंओर छिपालिया और दो गधोंपर अशरफ़ियों की थैलियां लाद उनपर भी छिपाने के लिये लकड़ियां रक्खीं जब निश्चिन्त हुआ तो उसने द्वारको उसी मंत्र से मूंददिया और नगरको सिधारा और बड़ी रक्षासे अपने घर में पहुंचा और वह गधे अशरफ़ियो के लदेहुये घर में लेजाकर अपनी स्त्री से कहा कि यह अशरफ़ियां उतारले परन्तु उससे कुछ भी क़ासिम के मारे जाने का वृत्तान्त न कहा और उसीगधे के सहित जिसपर कासिम की लोथ थी कासिम के घर में आया और दरवाजेपर हांक दी मरजीना नामक एक लौंडी ने जो अत्यन्त चतुर और समझदार थी आकर किवाड़ खोला अलीबाबा उसगधे को महल के भीतर लेगया और क़ासिमकी लोथ को उतार मरजीना से कहा हे मरजीना! शीघ्र तू इस लोथके गाड़ने का उपाय कर मैं अभी अपनी भावज को एकबात कह के तेरा साथ देताहूं कासिम की स्त्री ने अलीबाबा को दूरसे देख पूंछा हे अलीबाबा! मेरे पतिका क्या समाचार लाये परन्तु खेद है कि मैं तेरे मुखसे दुःख के चिह्न पातीहूं अलीबाबा ने उससे उसके पतिका ठगोंके हाथसे मारेजाने और उनकी लोथके लानेका वृत्तान्तवर्णन किया और कहा हे सुन्दरि! अब जो कुछ होनाथा वह हुआ परन्तु यह भेद छिपारखना उचितहै जिससे हमारे प्राणबचें इतना कह फिर अलीबाबा ने अपनी भावज से कहा किईश्वरकी इच्छामें किसी का उपाय नहीं चलता अब सन्तोष रक्खो अब ...

सब कुछ दीखे और वह किसी को देख न पड़े वह वृक्ष एक पहाड़ से लगा हुआथा परन्तु वह पर्वत बहुत ऊँचा था वह सवार जो अत्यन्त बलवान् और चोरथे उस पर्वत के नीचे पहुँच कर अपने २ वाहनों से उतरे अलीबाबा ने उन्हें देख भली भांति जान लिये कि निस्सन्देहही ये लुटेरे हैं किसी विदेशियों के समूह को अभीलूट कर लाये हैं उनकी वस्तु किसी अच्छे स्थानपर रक्खेगे सो वैसाही हुआ कि उनचालीसठगों ने उसी वृक्ष के समीप पहुँचकर घोड़ों की लगाम उतार डाली और उनको बागडोर से बाँधखुरजियां जिन में सोना चांदी था उतारी फिर अलीबाबा ने क्या देखा कि सबके आगे उनका सरदार अपने बोझको कंधेपर धरे हुये उसी वृक्षके नीचे आया औरकांटे झाड़ियों से होता हुआ एक स्थान परखड़ाहो यह कहने लगा (खुल अयसमसम) इस बचन के कहतेही वहां एक किवाड़ खुलगया जब सब उसके साथी उस किवाड़ के भीतर जाचुके तब वह आपभी उसी दर्वाजे में चलागया अलीबाबा लाचारी से उसी वृक्षपर छिपा बैठा रहा इसभयसे कि वहठग कहीं निकल न आवें और मुझे मारडालें और कभी यह विचारता कि चुपके से नीचे उतर उनके एक घोड़े पर सवारहूं और एकपर सब लगामों को लाद अपने आगे गधोंको कर नगर मे चलाजाऊं इतने में वही दरवाज़ा खुलगया और वहचालीसों ठग वहां से निकले उनका सरदार पहिले आप निकला, और दरवाजे के पास खड़ाहो आप देखा किया फिर उसके साथी वहांसे निकले अलीबाबा ने फिर सुना कि वह सरदार कहताहै बन्द हो समसम इस बात के कहतेही वह किवाड़ मुंदगया सब अपने अपने घोड़ों को लगाम दे सवारहुये जब सरदारने देखा कि सब चलने को त-

र बंद करने का मंत्र मालूम होता फिर उन्होंने क़ासिम की
थ के चार टुकड़े किये और कन्दराके वाहर उन्होंने बांई ओर
टुकड़े और दाहिनी ओर दो रक्खे कि औरों को वह लाशदे-
कर उपदेश हो और गुफामें जानेकी इच्छा न करें फिर वह
न्दरा का द्वार मूंद घोड़ोंपर सवारहो चले गये जव क़ासिम की
ीने देखा कि रात्रि होगई और क़ासिम लौटकर घरमें नहीं आया
ो घवड़ाकर अलीवावा के निकट दौड़ी गई और रोकर कहने
ागी भाई अवतक क़ासिम घरमें नहीं आया तुमको अवश्य मा-
लूमहोगा कि वह किस वनमें गयाहै ऐसा नहो जो उस पर कुछ
दुःख पड़ा हो अलीवावा समझा कि कुछ न कुछ विघ्न हुआहै जो
क़ासिम वहांसे नहीं आया सो उसकी स्त्री को धीर्य्य देकर कहा
कि क़ासिम अति चतुरहै वह नगरमें से होकर नहीं आवेगा नगर
के वाहर से होकर आवेगा इसीलिये उसे विलम्बहुआ इस वात
के सुनतेही उसकी स्त्री को कुछ धीर्य्य हुआ और अपने घर में
आई जव आधीरात वीती तो अपने पतिके लिये अधिक व्याकु-
लहुई परन्तु भयसे चिल्ला नहीं सक्ती थी कि उसके पड़ोसी उस
भेद को जान न लें अपने मनही मनमें रुदनकरती और धिक्कार
देती थी कि क्यों मैंने इस भेदको कहा और अलीवावासे ईर्षाठानी
निदान वह रात्रि उसे रोते कटी जब प्रभात हुआ तो अलीवावा
के पास दौड़ीगई अलीवावा अपनी भाभीको धीर्य्यदे तुरंत अपने
गधों समेत उसी वनको सिधारा जव उसपर्वत के नीचे पहुंचा तो
वहां रुधिर वहा देख आश्चर्य्य में हुआ न तो उसने अपने भाईको
देखा और न दश खच्चरों को इससे अति आश्चर्यमें हो शोचनेलगा
कि यह कुछ बुरा शकुन मालूम होता है फिर उसने उसी मंत्रका

तक चलो मुस्तफ़ा ने कहा मैं इसतरह नही चलूंगा मरजीना ने एक और अशरफ़ी उसके हाथ में रखके बहुतसी बिनती की यहां तक कि वह दरजी अशरफ़ियों के लोभ से चलने के लिये राजी हुआ फिर मरजीना उस के नेत्रोंपर रूमाल बांध और हाथउसका पकड़ उसी मकान मे जहां उसके स्वामी की लाश पड़ी हुई थी लेगई और क़ासिम की लोथ को क्रम से रख और उसपर चादर डाल अंधेरी कोठरी में मुस्तफ़ाकी आंखें खोलदी और कहा तुम इस लोथके बराबर कफ़न सीकर तय्यार करदो तुम को एक अशरफ़ी और दूंगी जब मुस्तफ़ाने सीकर तय्यार कर दिया तब मरजीना ने तीसरी अशरफ़ी भी उसे देडाली और फिर उस की आंखों मे पट्टीबांधकर उस कोठेसे हाथ पकड़ ले आई जहां पहिले उसने उसकी आंखो पर रूमाल बांधाथा और उसको बिदाकर अपने घरमें लौटआई और जल गरमकर उसने और अलीबाबा ने मिलकर क़ासिम की लोथको स्नान कराया और उसको कफ़नाकर स्वच्छस्थान पर रक्खा मरजीना एक मस्जिद के इमामके पास गई और उससे कहा एक अरथी तय्यार है चलके उसपर निमाज़पढ़ो और उसको फ़लाने क़बरिस्तानपर लेजाकरगाड़दो उस मस्जिदके इमाम और वहां के रहनेवाले जिनका यही काम था उस के साथ आये और चार मनुष्य उसके पड़ोसी उसके जनाज़े को अपने कांधेपर उठा उसे निमाज़ पढ़नेके स्थान पर लेगये निमाज़ पढ़ने के उपरान्त और चार मनुष्य अरथी को कबरिस्तान से ले चले मरजीना जनाज़े के आगे शिरनंगी रोती पीटती विलाप करती चली यहातक कि अलीबाबा पड़ोसियों के साथ जनाज़ा लेकर कबरिस्तान मे और गाड़ अपने भ्राता के

हरएक कुप्पेमें एक मनुष्य तुममेंसे मेरे और उन कैदीदा मनुष्यों के सिवाय शस्त्र सहित बैठें और दो कुप्पे एक खच्चर पर लादे जावें उन्नीसवें खच्चर पर एक मनुष्य और दूसरी ओर उसके कुप्पा तेलका रक्खाजावे और हम भठियारों के वेपमें नगर के भीतर खच्चरों समेत जावें और रात्रिको उसी दरवाज़े पर पहुंच उसके धनीसे रात्रिके रहने के लिये कहे फिर वहां रहकर रात्रिको सब मनुष्य कुप्पे मेंसे निकलकर उसे मारडाले और जितना कि द्रव्य वह यहांसे उठाकर लेगयाहै उन खच्चरों पर लादकर लेआवें यह मत सबने माना और गांवमें जाकर खच्चर और कुप्पे मोल लाये और जिसभांति उसने कहा था एक एक ठग उस कुप्पे में बैठा और कुप्पों के ऊपर तेल मलदिया कि सब कुप्पे तेल के कुप्पे दिखलाई देवे फिर उस सरदार ने अपना वेप तेल वेचने वालों का बनाया और उन्नीस खच्चरों पर सैंतीस कुप्पे जिनमें एक एक ठग को बैठाया था और तेल का कुप्पा लादके नगर में ऐसे समय लाया कि अलीबाबा के घर सन्ध्या को पहुंचा संयोग वश उस समय अलीबाबा भोजनकर अपने दरवाज़े पर टहलता था सो ठगों के सरदारने उसे दण्डवत् करके कहा मैं अमुक गांवका रहने वालाहूं और तेलका बहुधा व्यापार करताहूं परन्तु आज सन्ध्या होगई इसलिये शोचितहूं कि रात कहां बिताऊं जो आप कृपाकर मुझे खच्चरों सहित अपने घर मे जगहदें तो मैं कुप्पे उतारूं और घोड़ों का दाना घास करूं अलीबाबा उस दुष्ट का शब्द पहिंचानकर भी कि वह उसने वृक्षपर से कन्दरा के भीतरसे सुनाथा उसे भठियारे के स्वरूपमें देख पहिंचान न सका कि वह ठगों का सरदारहै सुशीलतासे उसकी बातको स्वीकार कर कहा बहुत अच्छा

शोकके दिन पूर्ण होने के उपरान्त मुझसे विवाह करलो ऋ
आनन्द में रहोगी मेरी स्त्री अति सुशील है तुमसे वह वैर न
रेगी क़ासिम की स्त्रीने रोकर कहा मैं तुम्हारी इच्छा से बाहर न
फिर उसने पतिके लिये महाविलाप किया और शिरके बाल न
अलीबाबा ने उसे वहीं छोड़ मरजीना से आकर अपने भाई
कफ़न के लिये बातचीत की जो कुछ समय के अनुकूल था
बांदी से कहकर गधों समेत अपने घरमें आ अलीबाबा के ज
के उपरान्त मरजीना अत्तारकी दूकान पर गई और उस भेद
छिपाने के लिये ऐसी औषध मांगी जिसे मरणप्रायके समय
मार को देते हैं अत्तारने औषध देकर उससे पूंछा तेरे घरमें कौ
ऐसा बीमारहै उसने रोकर कहा मेरा स्वामी क़ासिम बहुत बीम
होगया है न तो कुछ खाताहै और न कुछ बात करताहै इसलि
सब उसके जीने से निराशहैं दूसरे दिन मरजीना फिर उसी
कानपर गई और उससे वह औषध और सुगन्ध मांगी जो अं
समय में रोगी को देते हैं कि उस औषधके प्रभावसे कुछ बीमारक
आराम होतीहै जब अत्तारने उसे वह औषध दी तो मरजीना उ
लेकर रोई और हाहाखाय कहनेलगी मैं नहीं जानती कि औष
के खाने की भी अवसर मिले वा न मिले अथवा मेरे जातेहीना
देहान्त होजावे इस तरफ़ तो अलीबाबा बाट देखताथा कि जि
समय रोने पीटने का शब्द कासिम के घरसे सुने तो शीघ्र जावे
शोककरे दूसरे दिन प्रभात को मरजीना मुंह अंधेरे एक बूढ़े दर्जी
के पास जिसकानाम मुस्तफ़ाथा गई वहदर्जी बहुधा कफ़न सिय
करताथा उसीसमय उसने दूकान खोली थी मरजीना ने एक अ

आजकी रात्रि मेरे घरमें रहो फिर एक विशाल कोठा खाली करके उसे बतलादिया कि इसके भीतर तुम उतरो और अपने खचरों को बांधो और एक सेवक को दाने घासके लिये नियत किया और मरजीना से कहा एक मेहमान मेरे घरमे आया है उसके लिये जल्दी भोजन बना और स्वच्छ शय्या बिछाकर तय्यार रख जब ठगोंका सरदार कुप्पे उतार चुका तो अलीबाबाने उसका बड़ा सन्मान किया और उसके सन्मुख मरजीना को बुलाके आज्ञादी कि मेरे मेहमान की बड़ी सेवा कीजियो जिससे कि उसे किसी प्रकारका परिश्रम न पड़े और भोर को मैं हम्मामकरूंगा गर्म जल तय्यार रखियो और एक जोड़ा वस्त्रका निकाल अब्दुल्ला नौकर को दे कि उसे स्नान केउपरान्त मैं पहनूंगा और मेरे पीने के लिये भोर के वास्ते शोरुवारातही को तय्यार रखियो मरजीना ने कहा बहुत अच्छा जिस २ कामकी आपने आज्ञादी है उसे मैं समयपर करूंगी अलीबाबा यह आज्ञा मरजीना को दे अपने सोने की जगह मे जायसोरहा और ठगों का सरदार भोजन करने के उपरांत अश्वशाला मे गया और खचरों और साथियोंको भोजन खिलाया फिर हरएक कुप्पे के पास जिसमें मनुष्यये गया और धीरे से अपने साथियो को समझा बुझाकर कहा आधी रात्रिको जब मैं तुमको बुलाऊं तो तुम तुरन्त कुप्पेको मुंह से पेंदीतक छुरी से काटकर निकल आना फिर वह सरदार आज्ञा देकर रसोई के दरवाजे से सोनेकी [illegible] रज [illegible] दीपक लिये उसके साथथी उसने उस [illegible] तु [illegible] और आवश्यक [illegible] भसे कर [illegible] र कुछनहीं चाहिये [illegible] दी [illegible] और

तक चलो मुस्तफ़ा ने कहा मैं इसतरह नही चलूंगा मरजीना ने एक और अशरफ़ी उसके हाथ मे रखके बहुतसी बिनती की यहां तक कि वह दरजी अशरफ़ियों के लोभ से चलने के लिये राज़ी हुआ फिर मरजीना उस के नेत्रोंपर रूमाल बांध और हाथउसका पकड़ उसी मकान में जहां उसके स्वामी की लाश पड़ी हुई थी लेगई और क़ासिम की लोथ को क्रम से रख और उसपर चादर डाल अंधेरी कोठरी मे मुस्तफ़ाकी आंखें खोलदी और कहा तुम इस लोथके बराबर कफ़न सीकर तय्यार करदो तुम को एक अशरफ़ी और दूंगी जब मुस्तफ़ाने सीकर तय्यार कर दिया तब मरजीना ने तीसरी अशरफ़ी भी उसे देडाली और फिर उस की आंखों मे पट्टीबांधकर उस कोठेसे हाथ पकड़ ले आई जहां पहिले उसने उसकी आंखो पर रूमाल बांधाथा और उसको बिदाकर अपने घरमें लौटआई और जल गरमकर उसने और अलीबाबा ने मिलकर क़ासिम की लोथको स्नान कराया और उसको कफ़नाकर स्वच्छस्थान पर रक्खा मरजीना एक मसजिद के इमामके पास गई और उससे कहा एक अरथी तय्यार है चलके उसपर निमाज़पढ़ो और उसको फ़लाने क़बरिस्तानपर लेजाकरगाड़दो उस मसजिदके इमाम और वहां के रहनेवाले जिनका यही काम था उस के साथ आये और चार मनुष्य उसके पड़ोसी उसके जनाज़े को अपने कांधेपर उठा उसे निमाज़ पढ़नेके स्थान पर लेगये निमाज़ पढ़ने के उपरान्त और चार मनुष्य अरथी को कबरिस्तान से ले चले मरजीना जनाजे के आगे शिरनंगी रोती पीटती विलाप करती चली यहांतक कि अलीबाबा पड़ोसियों के साथ जनाज़ा लेकर कबरिस्तान में आया और उसको गाड़ अपने भ्राता के

अपने मनमें कहा एक नींद सोके उठूंगा और अपने साथियों को अपने कार्य्य के लिये बुलाऊँगा मरजीनाने स्वामीकी आज्ञानुसार एकजोड़ा सफेद कपड़ोंका निकाल अब्दुल्ला नौकरको कि वह उस समय तक जागताथा दिया फिर उसने शोरुवा पकानेके लिये भाजन चूल्हेपर रक्खा और आँचकरदी थोड़ी देरके पश्चात् उसको शोरुवा देखनेके लिये दीपककी आवश्यकता पड़ी अकस्मात् दीपक सब बुझगये थे और तेलघरमें न था और कोई मोमकी बत्ती भी उस समय उसे न मिली वह दासी दीपक जलानेके लिये अति शोचित थी अब्दुल्ला सेवक ने उसे चिन्तित पाके पूंछा तू क्यों इस समय शोचमें है उस मकान में बहुतसे कुप्पे तेलके रक्खे हैं जितना तुझे तेल चाहिये ले आ यह कहके सेवक तो इसबात को विचार कर सोरहा कि प्रभात को अपने स्वामी के साथ मुझे भी हम्माम जाना होगा इस समय अवश्य है कि सोरहूं और मरजीना अकेली तेलका लोटा उठा उस मकान में जहां तेलके कुप्पे बराबर रक्खे थे गई जब वह एक कुप्पेके समीप पहुंची तो उसमें ठग जो अपने सरदार के आगमन कीबाट देखताथा आहट पाके धीरेसे पूंछने लगा क्या हमारे निकालने का समय है मरजीना उसका शब्द सुन यद्यपि उसने बहुत धीरेसे पूंछाथा भयभीत हुई और उनकी धूर्त्तता को समझ गई और उसके प्रश्नका उत्तर सरदार की भांति यह दिया कि अभी नहीं अर्थात् अभी तुम्हारे निकलने का समय नहीं पहुंचा फिर वह दूसरे कुप्पे के पासगई वहां से भी यही शब्द सुना और उसने वही उत्तर दिया निदान इसभांति सब कुप्पों पर गई तो शोची हे ईश्वर! सब ठगोंको मेरे स्वामीने तेल बेंचनेवाला समझ कर उतारा है और यह सब चोरहैं कि

शोक में चालीस दिनतक बैठरहा और नगरकी रीतिके अनुसार मुहल्ले के घरकी स्त्रियां घड़ीभर के वास्ते एकत्र हो क़ासिम की स्त्री के साथ रोई और उसको धैर्य्य देकर चलीगई और अलीबाबा और उसकी स्त्री और कासिम की स्त्री के विशेष नगर का कोई मनुष्य इस भेदको न जानता था चालीस दिनके उपरान्त अलीबाबाने क़ासिमकी स्त्रीके साथ विवाहकिया अलीबाबा का एकपुत्र था वह किसी बड़े व्यापारी के साथ रहा करता था और व्यापारी के कार्य्य को भलीभांति जानता सो उस के पिताने क़ासिम की दूकान उसे सौंपी सो वह दूकान पर बैठने लगा ॥

अब यहांसे उन्हीं चालीसों ठगोंका वृत्तान्त वर्णन किया जाताहै ॥

एकदिन वे ठग अपनी कन्दरा में आये और वहां क़ासिमकी लोथका कुछ भी चिह्न न पाकर अत्यन्त आश्चर्य्य में हुये इस के सिवाय देखा कि उस खजाने से बहुतसी अशरफियां भी निकलगई हैं उनके सरदारने कहा यदि इस बातका खोज नहीं करते तो आगेको हमें अधिक दुःख होगा और सिवाय इसके धीरे२ यह सम्पूर्ण द्रव्य जो हमने और हमारे पुरुषों ने बड़े श्रम से बहुकाल में सञ्चय किया है नष्ट होजावेगा फिर सबोंने सोचा कि इसमें कुछ सन्देह नहीं कि वह मनुष्य जिसे हमने बध किया दरवाजे के खोलने और बन्द करने के मन्त्रको जानता था इसके विशेष कोई और मनुष्य भी इस भेदको जानता है जो दरवाज़ा खोलकर बहुतसा धन और मुर्देको उठाकर लेगया अवश्य है कि हममें से एकमनुष्य अति चतुर और प्रवीणनगर मे विदेशीके वेषसे जावे गली २ महल्ला महल्ला फिरके मालूम करे कि कौन मनुष्य नगरमें इन दिनों मराहै और वह कहां रहता है जब इतना

आजकी रात्रि मेरे घरमें रहो फिर एक विशाल कोठा खाली करके उसे बतलादिया कि इसके भीतर तुम उतरो और अपने खच्चरों को बांधो और एक सेवक को दाने घासके लिये नियत किया और मरजीना से कहा एक मेहमान मेरे घरमें आया है उसके लिये जल्दी भोजन बना और स्वच्छ शय्या बिछाकर तय्यार रख जब ठगोंका सरदार कुप्पे उतार चुका तो अलीबाबाने उसका बड़ा सन्मान किया और उसके सन्मुख मरजीना को बुलाके आज्ञादी कि मेरे मेहमान की बड़ी सेवा कीजियो जिससे कि उसे किसी प्रकारका परिश्रम न पड़े और भोर को मैं हम्मामकरूंगा गर्म जल तय्यार रखियो और एक जोड़ा वस्त्रका निकाल अब्दुल्ला नौकर को दे कि उसे स्नान के उपरान्त मैं पहनूंगा और मेरे पीने के लिये भोर के वास्ते शोरुवारातही को तय्यार रखियो मरजीना ने कहा बहुत अच्छा जिस २ कामकी आपने आज्ञादी है उसे मैं समयपर करूंगी अलीबाबा यह आज्ञा मरजीना को दे अपने सोने की जगह मे जायसोरहा और ठगों का सरदार भोजन करने के उपरांत अश्वशाला मे गया और खच्चरो और साथियोंको भोजन खिलाया फिर हरएक कुप्पे के पास जिसमे मनुष्यथे गया और धीरे से अपने साथियो को समझा बुझाकर कहा आधी रात्रिको जब मैं तुमको बुलाऊं तो तुम तुरन्त कुप्पेको मुंह से पेंदीतक छुरी से काटकर निकल आना फिर वह सरदार आज्ञा देकर रसोई के दरवाजे से सोनेकी जगह में आया मरजीना दीपक लिये उसके साथथी उसने उस सरदारसे पूंछा कोई वस्तु तुमको और आवश्यक हो तो मुझसे कहो उसने कहा अब मुझे और कुछनहीं चाहिये यहकह उस दीपक को बुझादिया और शय्यापर जायलेटा और

मालूम होगा तो उससमय कोई और यत्न कियाजावेगा उनमें से एकठगने कहा मैं इस कार्य्यके निमित्त नगरमें जाताहूं या तो उस मनुष्यका ठिकाना मालूमकर तुमसे कहूंगा या अपने प्राण दे डालूंगा निदान वह ठग रात्रिको नगर में आया और भोरको चौक में गया तो मुस्तफ़ा की दूकान के सिवाय सब दूकाने बन्द पाई वह दरजी अपनी दूकान मे अपना काम हाथमे लियेहुये मोढेपर बैठाहुआ था इसने उसे जाके प्रणाम किया और कहा अभी अंधियाराहै तुम इससमय अपना कार्य्य क्योंकर करसक्ते हो मुस्तफ़ा ने कहा जानपड़ताहै कि तुम विदेशी हो इस बुढ़ापे के व्यापने परभी मेरी दृष्टि अबतक ऐसी तीव्रहै कि अभी कलके दिन अंधियारे घरमे एक लोथका कफ़न सिया यह बात सुनकर ठग अपने मे समझा कि इस वृद्धका उत्तर मेरी अभिलाष के अनुकूल है फिर इस भेदके अधिक खुलने के लिये कहा कि मालूम होता है कि तुम कफ़न सिया करतेहो मुस्तफ़ा ने कहा जो कुछ कि हो मुझसे कुछ और अधिक मत पूंछो ठगने एक अशरफ़ी उसी दरजी के हाथमें रखके कहा मै कोई भेद तुमसे नही पूंछता केवल इतनाही चाहताहूं कि मुझे पतेसे या अपने साथ लेजाकर उसघर को बता दो जिसमें तुम कफन सीनेको गयेथे मुस्तफ़ा ने लालच के वश कहा उसघरको तो मैंने अपनी आंखोसे नहीं देखा मुझे एक स्त्री एक महलमें लेगईथी उसे मैं निस्सन्देह जानता हूं वह मेरे नेत्रों में पट्टी बांध एक घरमे लेगई और एक अंधियारे मकान में मेरी आंखें खोलकर मुझे वह लोथ दिखलाई और उसका कफन सिलवाया फिर मेरे नेत्रों मे पट्टी बांध उसी स्थान मे जहां से कि लेगईथी लाकर छोड़गई और पट्टी खोलदी भला मैं क्योंकर तुझे

अपने मनमें कहा, एक नींद सोके उठूंगा और अपने साथियों को अपने कार्य्य के लिये बुलाऊँगा मरजीनाने स्वामीकी आज्ञानुसार एकजोड़ा सफेद कपड़ोका निकाल अब्दुल्ला नौकरको कि वह उस समय तक जागताथा दिया फिर उसने शोरुवा पकानेके लिये भाजन चूल्हेपर रक्खा और आँचकरदी थोड़ी देरके पश्चात् उसको शोरुवा देखनेके लिये दीपककी आवश्यकता पड़ी अकस्मात् दीपक सब बुझगये थे और तैलघरमे न था और कोई मोमकी वत्ती भी उस समय उसे न मिली वह दासी दीपक जलानेके लिये अति शोचित थी अब्दुल्ला सेवक ने उसे चिन्तित पाके पूंछा तू क्यों इस समय शोचमे है उस मकान मे बहुतसे कुप्पे तैलके रक्खे हैं जितना तुझे तैल चाहिये ले आ यह कहके सेवक तो इसबात को विचार कर सोरहा कि प्रभात को अपने स्वामी के साथ मुझे भी हम्माम जाना होगा इस समय अवश्य है कि सोरहूं और मरजीना अकेली तैलका लोटा उठा उस मकान मे जहां तैलके कुप्पे बराबर रक्खे थे गई जब वह एक कुप्पेके समीप पहुंची तो उसमे ठग जो अपने सरदार के आगमन कीबाट देखताथा आहट पाके धीरेसे पूंछने लगा क्या हमारे निकालने का समय है मरजीना उसका शब्द सुन यद्यपि उसने बहुत धीरेसे पूंछाथा भयभीत हुई और उनकी धूर्त्तता को समझ गई और उसके प्रश्नका उत्तर सरदार की भांति यह दिया कि अभी नही अर्थात् अभी तुम्हारे निकलने का समय नहीं पहुंचा फिर वह दूसरे कुप्पे के पासगई वहां से भी यही शब्द सुना और उसने वही उत्तर दिया निदान इसभांति सब कुप्पों पर गई तो शोची हे ईश्वर! सब ठगोंको मेरे स्वामीने तैल बेंचनेवाला समझ कर उतारा है और यह सब चोरहैं कि

उस मकानको दिखाऊं ठगने कहा मुझे वहां लेचल जहांसे तेरी आंखें वन्दकी थीं कि मैं तेरी आंखोंको रूमालसे बांधूं और तेरे साथ रहूं तू उसी विचार से चलियो जैसे कि पहिले पट्टी बांधकर चलाथा शायद इस उपायसेही मुझे वह घर मालूम होजावे यदि आप मुझपर इतनी दया करोगे तो मैं एक अशरफ़ी और तुम्हारी भेंट करूंगा इतना कह एक अशरफ़ी और मुस्तफा के हाथमें धर दी मुस्तफ़ा ने उन दोनों अशरफ़ियों को जेबमें रख ठगसे उसी प्रकार से जानेकी प्रतिज्ञाकी फिर उसने अपनी दूकान उसी भांति खुलीछोड़ी और उसको उस जगहपर लाकर कहा यहस्थान वही है जहांसे मुझे वह स्त्री आंखें वन्द करके लेगईथी ठगने रूमाल उसकी आंखों मे बांधा और उसके साथ सिधारा मुस्तफा उसी भांति उस ओरको चला जिधर पहिले मरजीना के साथ गया था और इतनाही चलकर खड़ा होगया कि यहींतक पहिलेभी आया था उस ठगने शीघ्र एक चिह्न खड़ियाका उसपर करदिया और मुस्तफ़ा की आंखें खोल पूछा यह किसका घरहै उसने कहा मैं नहीं जानता मैं इस महल्ले के लोगों को नहीं जानता ठगने जाना कि इससे अधिक मुस्तफ़ासे हाल मालूम नहीं हो सक्ता तो मुस्तफ़ा का अति गुण मानकर कहा तुमने मेरे लिये अति परिश्रम किया फिर वह ठग उससे बिदाहो वनको गया और मुस्तफा अपनी दूकान पर आया उसी समय मरजीना अपने घरसे वाहर किसी काम के लिये गई थी जब वह अपने घर पहुंची तो दरवाजे पर चिह्न देख आश्चर्य में खड़ी रहके शोची कि मेरे स्वामी को किसी वैरीने पहिचानने के लिये यह निशान किया न जानिये क्या उपाधि मचे सो उसने महल्ले भरके पड़ोसियों के दरवाज़ों

लूटने और उसके वध करने के लिये तेल बेचनेवाले का वेषधर आये हैं निदान मरजीनाने तेलवाले कुप्पे से कुल्हड़ा तेल का भर लिया और रसोई में जाकर दीपकमें तेल डाला उसे जलाया और बड़ी एक डेग निकाल उस कुप्पे में से तेल लाकर भलीभांति गर्म्म किया जब खूब गर्म्म होगया तब मरजीना उसमें से एक डेगची भर एक सिरेसे कुप्पोंमें डालनेलगी वह सबठग उन्हीं कुप्पोंमेंजल भुनके रहगये और उस चतुर और बुद्धिवन्त बांदी के उपाय से झगड़े और शोर के बिना वह सबके सब मरगये फिर मरजीना उस डेग समेत रसोई में दरवाजा मूंदके बैठरही और अलीबाबा के लिये शोरुवा पकानेलगी एक घड़ी न बीतीथी कि ठगों का सरदार जागा और दरवाजे को खोलकर क्या देखा कि चहुँओर अंधियारा है उसने हांकदी परन्तु वहांसे आवाज़ न आई क्षणभर के उपरान्त उन सबको फिर पुकारा तथापि कोई उत्तर न आया तीसरीबेर फिर बड़े ज़ोरसे आवाजदी फिर भी कुछ न सुना तब व्याकुलहो उसी मकान में गया जहां वह सब कुप्पे रक्खेहुये थे उसने विचारा कि यह सब अचेत सोगये हैं वहांजाय सबको जगाऊं जब एक कुप्पे के पास गया तो उसमें से जलेहुये मनुष्यकी दुर्गन्धि आई और उसे बहुत गर्म पाया इसीभांति सम्पूर्ण कुप्पों के निकट गया और यहीदशा देखी तब आपभी भय से दीवारपर चढ़ बागकी ओर कूदपड़ा और वहां से भागा जब बहुत देरहुई और वह सरदार वहांसे न लौटा तो मरजीना ने जाना कि वह दुष्ट पिछवाड़े से कूद भागा क्योंकि बाहरके दरवाजे पर दो कुफुल लगे हुयेथे फिर मरजीना उन ठगोंसे सुचित्तहो सोरही दो घड़ीके तड़के अलीबाबा उठ हम्माममें गया अबतक उसे रात्रिका समाचार

पर वही निशान खड़िया के कर दिये और यह भेद किसी से न कहा वह ठग अपने समूह में गया और सम्पूर्ण वृत्तान्त सरदार से वर्णन किया वह सब लोग पृथक् २ होकर सरदार समेत उस नगर में आये और जब वह मनुष्य जो अलीबाबाके घर पर निशान करगया था अपने सरदारको पहिचनवानेके वास्ते लाया तो पहिले सरदार ने एक दरवाजे पर खड़िया का निशान पाया इससे वह समझा कि यह घर उसी मनुष्य का है जिसको हम ढूंढते हैं फिर जब उसकी दृष्टि दूसरे और तीसरे किन्तु महल्ले भरके दरवाजों पर पड़ी तो वही ठीक चिह्न सब द्वारों में पाकर आश्चर्य में हुआ कि हम क्योंकर उस घरको मालूम करें वह पहिला ठग इस हालसे अत्यन्त लज्जित हुआ और उसको उत्तर देते न बनिआया निदान सौगन्दखाके अपने सरदार से कहा कि मैंने उसी एकदरवाजे पर निशान किया था परन्तु मैं नहीं जानता कि क्योंकर और दरवाजों पर एक २ चिह्न बनाहुआ है इससे उस दरवाजे को भलीभांति नहीं पहिंचान सक्के फिर वह सरदार वहां से चौक में आया और अपने साथियो से जो वहां मिलते गये कहने लगा हमारा परिश्रम व्यर्थ गया और वह द्वार न पास के इस वृत्तान्त को अपने सब साथियों से कहदेना अब मैं वनमें जाता हूं जो उसे मिले थे अपने सरदार के साथ उसी कन्दरा की ओर लौट गये जब सब ठग वहां एकत्र हुये सरदारने उस ठगको जो निशान कर आया था और उसकी बात झूंठ हुई थी सबके सामने दण्ड दिया और सबसे कहा जो तुम सबमें से नगर में जाकर मेरे चोरका ठीक पतालगाकर लावे और मुझसे आकर कहेगा मैं उस के साथ बड़ा उपकार करूंगा यह सुन उनमेंसे एक मनुष्य ने उस

मालूम न हुआ जब अलीबाबाने सूर्योदयके प्रथम हम्माम किया तब उन कुप्पों को अपने घरमें रक्खा देख आश्चर्य्य में हुआ कि क्या अबतक व्यापारी अपने खच्चरोंपर कुप्पे लादकर बाजार नहीं लेगया उसने मरजीना से इसका हेतु पूंछा उसने उत्तर दिया कि ईश्वर आपकी १२० वर्षकी आयु करे मैं इस व्यापारी का वृत्तांत आपसे एकांत में कहूंगी अलीबाबा उसके साथ एकान्त में गया मरजीना दरवाजे को मूंद उसे एक कुप्पे के निकट लेगई और कहनेलगी कि देखिये इसमें तेलहै जब उसने कुप्पे मे देखा तो उसे मनुष्य दृष्टिपड़ा वह चिल्ला और भय खा भागा उसने कहा तुम इस मनुष्य से मत डरो यह तुमको कष्ट नहीं देसक्ता यह मरापड़ा है अलीबाबा ने पूंछा कि यह मनुष्य क्योंकर मारागया उसने कहा इसका हाल आपसे कहूंगी अब चुपके होरहिये कि तुम्हारे पड़ोसी इस भेदको जान न लें अब तुम एक सिरे से दूसरेसिरेतक देखते जाओ उसने एक सिरे से दूसरे सिरेतक देखा सबको मरा हुआ पाया महा आश्चर्य्य से कभी मरजीना को देखता और कदापि कुप्पोंकी ओर दृष्टि करता फिर मरजीना से पूंछा वह व्यापारी क्या हुआ उसने कहा वह व्यापारी नहीं था उसका हालभी तुमसे कहूंगी कि वह कौनथा और क्या हुआ अब तुम हम्माम से आयेहो ईश्वरने कुशलकी शोरुवा तय्यार है उसको पीजिये उसने कहा इस हालको मुझसे वर्णनकर जिससे मुझको धैर्य्यहो उसके सुननेके लिये अत्यन्त विह्वल होरहाहूं सो वह इसप्रकारसे कहनेलगी हे स्वामी! जब आप मुझसे शोरुवा पकानेकेलिये आज्ञा देकर सोगये मैंने एक वस्त्रोंका जोड़ा निकाल अब्दुल्लाको दिया और शोरुवा पकाने के लिये चूल्हेमें आंच करतीरही जब शोरुवा

समूह मेंसे निकलकर कहा मैं नगरको जाताहूं और उसका घर मालूम कर उसका समाचार लाय तुमको देताहूं सरदार ने उसे पारितोषिकादि देकर विदा किया वह भी पहिले मुस्तफ़ा दरजीके पास आया और पहिले ठगकी सदृश दरजी को अशरफ़ियां दे उसे राज़ी किया और नेत्रों में पट्टी बांध अलीबाबा के घरतक ले गया और उसके द्वारपर लाल चिह्न किया क्योंकि श्वेत चिह्नों में लाल चिह्नवाला घर प्रतीत होसक्ता है उसके चले जाने के उपरान्त मरजीना लाल देख शोचित हुई और उसने वैसाही चिह्न और दरवाज़ों पर भी करदिया और चुपकी होरही उस ठग ने अपने समूह में अपने सरदारसे कहा मैं द्वारपर चिह्न कर आया हूं अब वह दरवाज़ा औरों से स्पष्ट प्रतीत होता है वह सरदार कई ठगों सहित वहां आया तो उसने पूर्व्ववत् सब द्वारोंके एकसे चिह्न पाये इससे खिसियाना हुआ और अपने घरको लौटकर उस दूसरे ठगको भी यथोचित दण्ड दिया फिर शोचने लगा कि दो मनुष्यों से चूकभई और दण्ड पाया निश्चय है कि अब कोई मनुष्य इसकाममें पग न डालेगा इससे उत्तम है कि आप नगर में अकेले जाके वैरीका घर मालूम करूं फिर आपही अकेला नगर में आके उसी दरजी के बताने से जिसको बहुत कुछ दिया था अलीबाबा के घरतक पहुंचा उसपर कोई चिह्न न किया किन्तु दो बेर भीतर बाहर से उस द्वारेको देख और उसके निशानों को भलीभांति ध्यान में रख फिर वनमें गया और अपने समूह से कहा मैं उसको भलेप्रकार देख आयाहूं उसके पहिंचानने में अब धोखा न पड़ेगा परन्तु तुम एक कामकरो कि उन्नीस खच्चर मोल लो और एक कुप्पा तेलका और सैंतीस कुप्पे ख़ाली इकट्ठे करो फि-

पकचुका तो उसको साफ़ करने के लिये मैंने चाहा कि दीपक ज-लाऊं घरमें तैल होचुकाथा अबदुल्ला ने मुझे चिन्तित पाके कहा कि उस मकान मे बहुतसे कुप्पे तैल के भरेरक्खे हैं जितना तैल चाहिये जाकर लेआ मैं तैलका पात्र लेकर एक कुप्पेके पासगई उस मेंसे एक शब्द सुना कि यह समय निकलने का है मैं वह शब्द सुन कुछ न डरी और तुरन्त जानगई कि इस महादुष्ट व्यापारीने तुम्हारे मारनेके लिये यह उपाय कियाहै मैंने उत्तरदिया कि अभी निकलनेका समय नहीं पहुँचा फिर दूसरे कुप्पेके निकट गई वहां भी यही शब्द सुना उसेभी यही उत्तर दिया और इसीभांति पारी पारीसे सब कुप्पों के निकटगई और पूर्वोक्त उत्तर देतीरही वह सब अपने सरदारकी आज्ञा की बाट देखतेथे जिसको आपने व्यापारी समझ कर अपने घरमें उतारा था और उसका भलीभांति से स-न्मान कियाथा वहदुष्ट अपने लोगोंको तुम्हारे मारने और घरलूट ने के लिये लायाथा और चाहता था कि तुमको मारे परन्तु मैंने उसे अवसर न दिया शीघ्रही अन्तके कुप्पेमेंसे तैल भरलाई और दीपक जलाया फिर मैंने रसोई मेसे एक बड़ा बर्तन तैलसे भर उसे चूल्हे पर रक्खा और उसके नीचे प्रचण्ड अग्नि जलाई जब वह तैल इतना औटगया कि हरएक मरजावे इतना तैल डालती गई और क्षणमात्र में उन्हें मार रसोई में आयी और दीपक को बुझाकर खिड़कीसे देखनेलगी कि देखूं वह दुष्ट व्यापारी अब क्या करताहै, कुछ कालके उपरान्त वह जगा और कईबेर उसने निज साथियों को बुलाया जब उसने किसीका शब्द न सुना तो वहांसे नीचे आकर उन कुप्पोके पास गया और वह दशा देख मुझे अँधियारे में मालूम हुआ कि वह किसी ओरको भागगया जब बहुतकाल

हरएक कुप्पेमें एक मनुष्य तुममेंसे मेरे और उन केदीदा मनुष्यों के सिवाय शस्त्र सहित बैठें और दो कुप्पे एक खच्चर पर लादे जावें उन्नीसवें खच्चर पर एक मनुष्य और दूसरी ओर उसके कुप्पा तेलका रक्खाजावे और हम भठियारों के वेपमें नगर के भीतर खच्चरों समेत जावे और रात्रिको उसी दरवाज़े पर पहुंच उसके धनीसे रात्रिके रहने के लिये कहें फिर वहां रहकर रात्रिको सब मनुष्य कुप्पे मेंसे निकलकर उसे मारडालें और जितना कि द्रव्य वह यहांसे उठाकर लेगयाहै उन खच्चरों पर लादकर लेआवें यह मत सबने माना और गांवमें जाकर खच्चर और कुप्पे मोल लाये और जिसभांति उसने कहा था एक एक ठग उस कुप्पे मे बैठा और कुप्पों के ऊपर तैल मलदिया कि सब कुप्पे तैल के कुप्पे दिखलाई देवें फिर उस सरदार ने अपना वेप तेल बेंचने वालों का बनाया और उन्नीस खच्चरों पर सैंतीस कुप्पे जिनमें एक एक ठग को बैठाया था और तैल का कुप्पा लादके नगर में ऐसे समय लाया कि अलीबाबा के घर सन्ध्या को पहुंचा संयोग वश उस समय अलीबाबा भोजनकर अपने दरवाजे पर टहलता था सो ठगों के सरदारने उसे दण्डवत् करके कहा मैं अमुक गांवका रहने वालाहूं और तैलका बहुधा व्यापार करताहूं परन्तु आज सन्ध्या होगई इसलिये शोचितहूं कि रात कहां बिताऊं जो आप कृपाकर मुझे खच्चरों सहित अपने घर मे जगहदें तो मैं कुप्पे उतारूं और घोड़ों का दाना घास करूं अलीबाबा उस दुष्ट का शब्द पहिचानकर भी कि वह उसने वृक्षपर से कन्दरा के भीतरमें सुनाथा उसे भठियारे के स्वरूपमें देख पहिचान न सका कि वह ठगों का सरदार है सुशीलतासे उसकी बातको स्वीकार कर कहा बहुत अच्छा

ता और वह न फिरा तो मैंने जानलिया कि वह बाग से फांद-
कर भागगया फिर मैं सोरही इतना कह मरजीना ने निज स्वामी
से कहा कि जो कुछ सच २ हालथा मैंने कह सुनाया और दो
तीन दिन पहिले मुझे इस बात के चिह्न भी मालूम होगयेथे परन्तु
मैंने आपसे नहीं कहा अब वह भी कहती हूं उसे सुनिये कि एकदिन
प्रभातको जब मैं घरसे बाहर निकली तो दरवाज़े पर एक शफेद
निशान मैंने देखा और दूसरेदिन लाल चिह्न देखा दोनों बेर मा-
लूम करने के लिये मैंने अपने पड़ोसियों के भी सब पौठोंपर वैसे
ही चिह्न करदिये जिसमें हमारा दरवाजा प्रतीत न हो वे तुम नि-
श्चय समझो कि यह प्रद्युत उसी बनके ठगोंकीथी पहिचानके लिये
तुम्हारे द्वारेपर निशान करगयेथे परन्तु उनचालीसों में से दो को
न जाने क्या हुआ अब उन दो ठगों और सरदारसे जो बचकरगये
हैं निश्चिन्त न रहना वे अवश्य तुम्हारे पीछे लगे रहेंगे अव-
सरपाकर निस्सन्देह तुमको बचकरडालेंगे मैंने तो जो कुछ तुम्हारी
प्राण रक्षा के लिये यत्न बनपड़ा वह किया और आगे भी यथोचित
प्रबन्ध करूंगी अलीबाबा यह वृत्तान्त अपनी लौंड़ी से सुनकर
हर्षित हो कहने लगा कि मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हुआ अब जो कुछ
तू अपने लिये कहे मैं जीते जी करदेऊं मरजीना ने कहा अब प-
हिले अवश्य है कि इन लोथों को शीघ्र अपने बाग में गाड़दो
जिसमें लोगोंको यह हाल मालूम न हो अलीबाबा अपने नौकरों
को साथ ले बाग में जो बाड़ाथा वहां गया और वृक्षोंके नीचे बड़ा
गहरा गढ़ा खोदकर उन सब मुर्दों के शस्त्र छीनकर बाग में ले-
जाय गाड़ दिये और ऊपर से कूटपीट के पृथ्वी को बराबर करदी
जिससे कुछ चिह्न न जानपड़े और सब कुप्पे हथियार छिपाकर

समूह मंसे निकलकर कहा मैं नगरको जाताहूं और उसका घर मालूम कर उसका समाचार लाय तुमको देताहूं सरदार ने उसे पारितोषिकादि देकर बिदा किया वह भी पहिले मुस्तफ़ा दरजीके पास आया और पहिले ठगकी सदृश दरजी को अशरफ़ियां दे उसे राजी किया और नेत्रो में पट्टी बांध अलीबाबा के घरतक ले गया और उसके द्वारपर लाल चिह्न किया क्योंकि श्वेत चिह्नों में लाल चिह्नवाला घर प्रतीत होसक्ता है उसके चले जाने के उपरान्त मरजीना लाल देख शोचित हुई और उसने वैसाही चिह्न और दरवाजों पर भी करदिया और चुपकी होरही उस ठग ने अपने समूह में अपने सरदारसे कहा मैं द्वारेपर चिह्न कर आया हूं अब वह दरवाजा औरों से स्पष्ट प्रतीत होता है वह सरदार कई ठगो सहित वहां आया तो उसने पूर्ववत् सब द्वारोंके एकसे चिह्न पाये इससे खिसियाना हुआ और अपने घरको लौटकर उस दूसरे ठगको भी यथोचित दण्ड दिया फिर शोचने लगा कि दो मनुष्यों से चूकभई और दण्ड पाया निश्चय है कि अब कोई मनुष्य इसकाममें पग न डालेगा इससे उत्तम है कि आप नगर में अकेले जाके वैरीका घर मालूम करूं फिर आपही अकेला नगर में आके उसी दरजी के बताने से जिसको बहुत कुछ दिया था अलीबाबा के घरतक पहुंचा उसपर कोई चिह्न न किया किन्तु दो बेर भीतर बाहर से उस द्वारको देख और उसके निशानों को भलीभांति ध्यान में रख फिर बनमें गया और अपने समूह से कहा मैं उसको भलेप्रकार देख आयाहूं उसके पहिंचानने में अब धोखा न पड़ेगा परन्तु तुम एक कामकरो कि उन्नीस खच्चर मोल लो और एक कुप्पा तेलका और सैंतीस कुप्पे खाली इकट्ठे करो कि

एक २ दो २ खच्चर अपने सेवक के हाथ बाजार में भिजवाय के विकवाय दिये और अलीबाबा बड़ी होशियारी से रहता कि उस के घर धनहोनेका किसी को मालूम न होने पावे और वह ठगोंका सरदार भागकर उसी वनमें अत्यन्त विकलतासे गया और विचार ने लगा कि अब कोई ऐसा यत्नकरूं कि अलीबाबा का वधहो नहीं तो वह इस कोष का सबधन निकाल लेजायगा सो अब किसी दूसरे को साथी न करूं अपने आपही जैसे होसके उसको मारूं फिर अपने मतलब के मित्र रख यहही कार्य्यजो पीढियोंसे पहिले चला आताहै सो कियाकरूं यह मन में ठान रात्रिको वहींसोरहा प्रभातको जगकर अपना कोई अन्य भेष किया और वहां आय एक सराय में उतरा वहां यह शोचा कि इतने मनुष्यों के मरनेका हाल बादशाह के जरूर पहुँचा होगा और अलीबाबा पकड़ा गया हो तथा उसका घरमाल सब छिनगया होगा यह सब वृत्तान्त नगरमें अवश्य विदित होगा यह शोच किसी से पूछा कि कोई भारी वारदात यहां हुई हो तो कहो उसने कोई नई बात न कही तब वह समझा कि निस्सन्देह अलीबाबा बड़ा बुद्धिमान्है जो कि इतनी द्रव्य लेजानेपर तथा मनुष्यों के मारनेपर भी अपनी होशियारीसे अबतक बचाहै ऐसा न हो जो तूभी इसके हाथसे मारा जावे इस चिन्ता परभी उसने अलीबाबा को धोखा देनेके लिये उत्तम २ वस्तु व्यापार की अपने स्थान से लाकर एकत्र कीं और एक दूकान मोल लेकर वह असबाब उसमें, लेजाय धरके बेचनेलगा संयोग वश वह दूकान अलीबाबा के पुत्र के सम्मुख थी उस दुष्टने अपना नाम (ख्वाजेहसन) ऐसा विख्यात किया और दूकानदारों और व्यापारियों से उसने मित्रता की और हरएक से सादे स्वभाव रहने

लगा विशेष अलीबाबा के पुत्र से जो तरुण और स्वरूपवान् और सुन्दर वस्त्र पहिरता था उसके साथ बड़ी मित्रता की और बहुधा उसीके पास बैठाकरता था तीन चार दिन पीछे अलीबाबा जो बहुधा निज पुत्रको देखने दूकान पर आया जाया करताथा तो तिसे देख उसठगने पहिंचाना और उससे पूछा कि यह तुम्हारा कौनहै तब वह बोला मेरा पिताहै इस बात को सुनतेही वह महाधूर्त, कासिम को बहुत प्यार करने लगा और बहुत सी सौगात मित्रवत् देता और बहुधा उत्तम २ भोजन बनाकर उसे अपने साथ खिलाता अलीबाबा के पुत्रने भी चाहा कि एक दिन उसको न्योतें यदि उसका घर बहुत छोटाथा इसलिये यह बात उसने निज पिता से कही उसके पिता ने कहा बहुत अच्छा है तुमभी अपने मित्रकी ज्यवनार करो जिस भांति उसने तुम्हारा आदर कियाथा वैसाही करना कल शुक्रवारहै तुम बड़े व्यापारियोंके समान निज दूकान मूंदकर दोपहर के उपरांत टहलतेहुये मेरे घरमें लेआओ मैं मरजीना को आज्ञा देरखताहूं कि वह भोजन तय्यार रक्खे निदान दूसरे दिन शुक्रवार को ठग और अलीबाबा का पुत्र उसको उसी कूंचे में जहां घरथा लेआया और जब द्वारपर पहुँचे तो उसने ठगको ठहराकर द्वारखुलवाया और ठग से कहा यह द्वार मेरेपिता काहै जबसे उसने मेरे साथतुम्हारे अधिकस्नेहका वृत्तान्त सुना तब से तुम्हारे साथ भेंटकिया चाहताहै यदि भीतरचलकर उनसे भेंटकीजिये तो मुझे हर्षहोगा यद्यपि ठगकी यही इच्छा थी कि किसी प्रकार मेरा आवागमन अलीबाबा के घरमें हो तो अवसर पाकर अपना काम करूं परन्तु तिससमय वह न गया और अलीबाबाके पुत्र से चाहा कि कोई बहाना कर चलेजावे फिर अलीबाबा के

भांति के उत्तर देनेसे मुझे सूचित हुआ कि हब्शीने सत्य कहा है इसविषय के समझतेही मै लज्जा और क्रोध मे ऐसा बेवश हुआ कि छुरी निकाल उसके कण्ठ में फेर उसके शिर को काटलिया और उसके शरीरके चार खण्डकर वस्त्र में बांधके चटाई में लपेट ऊपर लाल डोरे से बांध रात्रिके समय उसे सन्दूक में रख टिकरेस नदी पर लेगया और गहरे जलमें डुबो दिया घर मे आया देखा कि दो छोटे पुत्र मेरे सोते हैं और बड़ा लड़का घर से बाहर दरवाजे पर बैठा रोरहाहै मैंने उससे पूंछा तू क्यो रोताहै उसने उत्तर दिया मैं भोरके समय एक सेबको कि उनतीनो सेबों मे से जिनको तुम मेरी माता के वास्ते लाये थे वे पूंछे उठा लाया और चिरकाल पर्य्यंत अपने छोटे भाइयो के साथ खेलता रहा एक गुलाम हब्शी कि उधर को जाता था सेबको मेरे हाथसे छीनके ले भागा मैं उसके पीछे दौड़ा कितनाही सेबको मांगा और रोदन कर कहा कि मेरा पिता दो सप्ताह की यात्राकर मेरी रोगी माताके वास्ते लायाहै परन्तु उसने मुझे न दिया तब दौड़कर उसके पीछे गया उस गुलामने मुझे फिर कर मारा और तुरन्त दूसरे मार्ग हो भाग गया और मेरी दृष्टि से गुप्त होगया तब से इससमय पर्य्यन्त उसके ढूंढ़ने मे फिरता था अभी थकित होय दरवाजे पर बैठा था कि तुमको उधरसे आते देखा और तुम्हारे भयसे रोनेलगा हे पिता! सेबके खोजाने के कारण मेरी माता को कुछ न कहना फिर मेरा पुत्र फूट २ कर रोनेलगा उसका वचन सुन मेरी ऐसी दशा हुई जिसका वर्णन नहीं होसक्ता बहुकाल पर्य्यन्त मूर्च्छा वशरहा जब चैतन्यहुआ अपनेको बुराभला और धिक्कारें देनेलगा कि हे भाग्य-हीन! तूने ऐसी अपनी प्यारी और पतिव्रता स्त्री को निर्दोष मारा

नौकरने द्वारखोला तो वह उसकी बहुत बिनतीकर उसको भीतर लेगया जब वह घरमें गया तो अलीबाबासे प्रसन्नता सहित मिला जिससे जानपड़े कि वह अपनी प्रसन्नता से आया है अलीबाबाने आनन्द सहित उससे कुशल पूंछी और कहने लगे कि तुम मेरे पुत्रसे अत्यन्त स्नेह रखतेहो और दया करते हो इससे मैं तुम्हारा बहुत गुणमानताहूं और जानताहूं कि मैं जितनी प्रीति उससे रखताहूं तुम उससे भी अधिक रखते होगे तब ठगने भी बहुतसी प्रसन्नताकी बातें करके कहा कि मैं आपके पुत्र से अत्यन्त राजी हूं क्योंकि यद्यपि वह छोटाहै पर ईश्वर ने उसे ऐसी बुद्धि दी है वह बड़ासुपूत है ऐसे वह बड़ी प्रीतिसे वार्त्तालाप करनेलगा थोड़ीदेर पीछे ठगने बिदामांगी तो अलीबाबा ने कहा कहां जाते हो तुम को न्योताहै कृपाकर भोजन करके जाना यद्यपि आपके योग्य भोजन श्रेष्ठ न होगा पर मेरेपर दयाकरके थोड़ा खालेना तो वह बोला मैं आपकी दयालुतापर अत्यंत कृतकृत्य हुआ और तो कुछ चिन्ता नहीं पर एक काम मुझे ऐसालगाहै कि न मैं ठहरसकूं न कुछ खासक्ताहूं पूछा क्यों तो बोला कईदिन से मुझे ऐसा रोगलगा है कि नमकदार चीज कोई नहीं खासक्ताहूं तो अलीबाबाने कहा मैं अभी रसोइये से कहे देता हूं कि किसी भोजन में नमक न डाले यह कह आपने रसोइये से कहा कि बेनमक की रसोई बना यह सुनकर मरजीना आश्चर्य्य में हुई कि ऐसा कौन मनुष्यहै जो नमक नहीं खाता वह बोला कोई हो तुम्हें क्या हम कहैं जैसा करो तो मरजीनाने उनसे तो वैसाही कहा पर आप आश्चर्य्य भरीगई कि कैसाहै जो नमक नहीं खाता यह शोच भोजनके पात्र बिछाने गई यद्यपि वह ठग व्यापारियों के वस्त्र पहिरे था और अपना भेष

और उस दुष्ट गुलामके झूठ वचन सुन जो मुझसे छल करके कहे थे सत्य जानकर इतना क्रोधकिया इसी रञ्ज और शोकमें बैठा पश्चात्ताप करता था कि मेरा चचा अपनी पुत्री के देखनेको आया मैंने उससे इस वृत्तान्त को प्रकट किया वह भी मुझे कुछ कहने सुनने वा उसके मरने के वादानुवाद विना मेरे साथ रोने पीटने लगा तीनदिन पर्य्यंत मैंने और उसने शोक किया फिर यह वृद्ध अपनी प्रिय-पुत्री के मारे जाने से शोक में मग्नहुआ और इसी भांति मैं अभागा भी उस दुष्ट गुलाम के वचन को स्मरणकर अपने घरके नष्ट होने और अपने अपराध से नानाप्रकार के शोक को प्राप्तहूं इसीसे मैंने आपके सम्मुख यह कहा और आशारखता हूं कि मेरे मारेजाने की आज्ञा हो कि उसके बदले में दंड पाऊं अब मेरा जीना व्यर्थ है ऐसे जीने से मरनेको उत्तम जानता हूं खलीफ़ा इस वृत्तान्त को उस मनुष्य के मुखसे सुन अत्यन्त आश्चर्य्य में हुआ और उसकी दीनतापर दया की और कहा कि जिस मनुष्यने अनजाने अपराधकिया वह परमेश्वर और मनुष्यों के विचार में क्षमायोग्य है और मारने के योग्य यह गुलामहै जो इस स्त्री के मारे जाने का कारण हुआ फिर खलीफ़ा ने मंत्री से कहा कि तीनदिन का फिर सावकाश देता हूं कि या तो उस हब्शी को लेआ नहीं तो तू ही माराजावेगा मन्त्री जो छूटा था फिर फँसा तो खलीफ़ासे बिदा हो रुदन करताहुआ अपने घर आया और समझा कि केवल तीनही दिनतक में जीऊंगा चौथे दिन अवश्यही माराजाऊंगा क्योंकि इस बग़दाद नगरमें हजारों लाखों गुलाम हैं क्योंकर उसका पता मिलेगा

कृपा से निराश होना नहीं चाहिये

बदले था तथापि उसको देखतेंही उसने पहिचान लिया फिर मरजीनाने यह कि वह ठग एक खड्ग अपने कपड़ो में छिपाये है यह शोची कि यह दुष्ट इसी से नमक नहीं खाता कि उसे छलसे मारडाले यह उसका बड़ा शत्रुहै फिर मरजीनाने निज मनमे कहा कि जोतू रांध्याको मेरे स्वामी को मारना चाहे तो मै भोरही तुझे मारडालूंगी निदान वह पात्र बिछाय भोजन परोसके चलीगई फिर जब भोजन होचुका तो फल खिलाये फिर मद्यपिलाई और आप रसोई जीमने के बहाने से भीतर गई तब वह अवसरपाय प्रसन्न हो विचारा कि अब इससे अपना बैरलूं और लड़का बोलै तो तिसे भी मारडालूंगा पर यह काम जब सब रसोई जीमे तब करू मरजीनाने उसकी घात परखलई तो विचारा कि भोजन से पहिले इसी को मारना तो तिसने तुर्तही नाचने के बस्त्र पहिरे और मुंह छिपाने को एक दुपट्टा ओढ़ा ऐसे भेषबदल फिर नौकर से बोली तू तबला लेले हम दोनो मिलके स्वामीको रिझावैं ऐसे कह वे वहां जाय नाचने गानेलगे और मरजीना एक खड्ग हाथ में लेकर नाचती २ अलीबाबा के पास गई उसने प्रसन्न हो एक अशर्फी दी वैसेही पुत्रने भीदी फिर ठगकी तरफभी गई तो उसने भी अशर्फी काढ़ने को जेब में हाथ डाला तो उसने अवकाशपाय बड़ी होशियारी से ऐसा खड्ग मारा कि उसका शिर अलगहोगया अलीबाबा यहदेख डरकर क्रोधसे बोला अरी यहक्या अनर्थ किया अब में माराजाऊंगा वह बोली नहीं आप बचगये निगाह करो उसने उसके कपड़े खोले तो एक छुरी छोटी बड़ी कामिल निकली तो बोली यह वही ठग है या नहीं ॥

इतिश्रीमच्चतुर्भुजोपाध्यायदेवीसहायकृतायाहदशान्तप्रदीपिनी
चतुर्थभागेपञ्चम प्रदीप ५॥

वालेका पता लगायाहै तैसेही वह उसको भी बतावेगा फिर दो दिन उसके ढूंढने में भी व्यतीत हुये फिर तीसरे दिन सब मनुष्य मंत्रीके घरानेवाले उसके चारो ओर इकट्ठे हो रोने पीटने लगे कि ज़ाफ़र मंत्री अपने मारेजाने पर तत्पर हो अपनी स्त्री और मित्रोंसे विदा होने लगा और वह भी उसके कण्ठसे लग २ विदाहोते थे इतने में खलीफ़ाने एक प्रधान को आज्ञादी कि तीन दिनव्यतीतहुये यदि मन्त्री ने उस गुलाम हब्शी को प्रकटकिया तो लेआवे नहीं तो उसको मेरे सम्मुख लाओ मंत्री खलीफ़ाकी आज्ञानुकूल घरसे बाहर उसे पहरे के साथ जो इसे लेने को आया था जब वहां चलने की इच्छा की कि एक उसकी बालक खिलाने वाली उसकी पुत्री पांच छःवर्ष की थी जिसको मंत्री बहुत प्यार करता था लेकर सम्मुखआई मंत्री ने पहरे के मनुष्यों से कहा कि यदि मुझे आज्ञाहो तो इसपुत्रीका प्यार करलूं यहकह उसलड़की का प्यार करने लगा अकस्मात् उसकी छाती में एक वस्तु गोल सी उसके वस्त्र से बँधीहुई देखी पूंछा हे पुत्री! तुम्हारे पास यह क्या वस्तु है उसने कहा बाबा यह सेबहै जिसपर हमारे बादशाह का नाम लिखाहै मैंने अपने गुलाम हब्शी को जिसका नाम रैहान है ४) रु० को मोल लिया ज़ाफ़र मंत्री उस सेब और गुलाम का नाम सुन अचम्भित हुआ और तुरंत अपना हाथ उसके वस्त्र में डाल वह सेब निकाल लिया और उस गुलाम हब्शीको कि उसीके मंदिर में वर्त्तमान था बुलाकर पूंछा सत्यकह तूने यह सेब कहांसे पाया उसने कहा मैं आपकी सौगन्दखाकर विनय करता हूं न तो मैंने आप के घरसे चुराया और न बादशाह के घरसे कई दिन हुए मैंने एक गली में तीनचार छोटे छोटे बालको को खे-

अथ षष्ठःप्रदीपः ॥

तुल्येऽपराधेसतितुल्यएवदण्डःप्रदेयोविषमोन देयः ॥ फलेगृहीतेलवणाप्रयातेदण्डोद्वयोर्मृत्युसमोयथाभूत् ६ ॥

(अर्थ) जिसका जितना अपराध हो उस समानही उसे दण्ड देना ठीकहै और विषम अर्थात् थोड़े से अपराध पर बहुतभारी दंड देना ठीक नही है । जैसे सेव फलके लेलेनेमेंसेवकको और नमक न डालने पर बदरुद्दीन को शूलीदेनेका दंड दियाजाताथा इसपर दृष्टान्त ॥

पर स्त्री और तीन सेवकोंकी कहानी ॥

खलीफ़ाहारूरशीदबहुधा रात्रिको अकेला भेष बदलकरबुगदाद नगरमें फिराकरता सो उसने एकदिन जाफर मंत्रीको आज्ञादी कि आज की रैनि में इस नगरीमें फिरूंगा जिससे विदितहो कि मेरी प्रजाका क्याहालहै और थानेदार किसप्रकार नगरीकी रक्षा करते हैं यदि उन को अचेत पाऊंगा तो उन्हें छुड़ाकर दूसरोंको नियत करूंगा और यदि अपने आधीन कार्य्यपर तत्पर पाऊंगा तो उन्हे पारितोषिक दूंगा जाफरमंत्री अपने स्वामीकी आज्ञानुसार नियत समयपर आया खलीफ़ा मंत्री और खोजियोंके दारोग़ा मसरूरको अपने साथले नगरकी ओर गया तीनोंने अपना ऐसाभेष किया कि जाने न जातेथे फिर कई बाजारों और गलियों से होतेहुये एक सूक्ष्म गलीमें पहुँचे यहां उन्होंने चन्द्रमाके प्रकाशमें एक बड़े डील और श्वेत दाढ़ीके पुरुषको देखा कि जाल शिरपर और नारियलके पत्तोंका टोकरा कांधेपर धरे लाठी टेकता टेकता चलाजाताहै खली-

लते देखा एक बालक के हाथ से जो सबसे बड़ा था और सेब हाथ में लिये था छीनकर ले भागा वह बालक रोता हुआ मेरे पीछे दौड़ा और कहनेलगा कि यह सेब मेरा नहीं मेरी माता का है मेरा पिता बहुतदूर की यात्रा कर तीन सेब लाया में उनमें से एक सेब अपनी माता के पूंछे विना खेलने को लायाहूं वह बालक बहुत रोया परंतु मैंने उसे न दिया अपने घर में लाकर उसे अपनी छोटी लड़की के हाथ बेचा मन्त्री जाफ़र ने उसकी दुष्टता पर बहुत ही अचम्भा किया और उसे बादशाह के सम्मुख लाया उस गुलाम ने वहही वार्त्ता बादशाह के सम्मुख भी प्रकट की बादशाह को उसी का यह अपराध सूचितहुआ और उसके वचन सुन बेवश हो हँसपड़ा फिर सँभल मंत्री से कहा कि तेरे गुलाम के कारण यह उपद्रव हुआ यह ही दंड योग्यहै इसका अपराध क्षमा योग्य नहीं परन्तु मुझे नूरुद्दीन और बदरुद्दीन हसन की कहानी स्मरण आगई जो आज्ञा होतो मैं उसे वर्णन करूं वह कहानी अद्भुत और विचित्र है उसके सुनने से प्रसन्न हो तो आशा रखताहूं कि मेरे गुलाम का अपराध क्षमाहो राजाने आज्ञा की कि तुम उस चरित्रको कहो परन्तु मैं जानताहूं कि तेरी वह कथा सेबों के वृत्तान्त से अद्भुत न होगी और तू अपने सेवकको दंड से न बचासकेगा फिर मंत्री वह कहानी कहनेलगा॥

इति दृष्टांतप्रदीपिन्याचतुर्थभागेषष्ठप्रदीपः॥ ६॥

अथ सप्तमःप्रदीपः ७-

नूरुद्दीनअली और बदरुद्दीनहसन का चरित्र जाफ़र मन्त्रीने अपने स्वामी के सम्मुख कहा कि पूर्वकाल में मिसरका एक बादशाह अत्यन्त सामर्थ्यवान् दयावान् और दानीथा जिसके भय

फ़ाने कहा यह मनुष्य बहुत निर्धन जान पड़ताहै इससे उसका वृत्तान्त चलके पूंछिये मन्त्री ने आगे बढके पूछा तू कौनहै उसने उत्तरदिया स्वामी मैं धीमरहूं इससमय में अत्यन्त पीड़ितहूं आज मध्याह्नसमय मैं मछलियां पकड़नें गया तब से इससमय पर्य्यन्त एक मत्स्य भी मेरे हाथ न लगा खाली मैं अपने गृहको फिराजाता हूं एकस्त्री और कई छोटे २ पुत्रहैं मैं अत्यन्त विस्मितहूं कि आज कहां से उन्हें भोजनदूंगा खलीफ़ाको उसपर दया उपजी और उस से कहा नदीपर फिरचल एक बेर तू जालडाल कुछ निकले वा न निकले परन्तु ४००) रु० तुझे मिलेंगे यह धीमर इस वचनपर विश्वासकर उन तीनों सहित उठकर उस नदीके किनारे पर जाकर जाल खोला और अपने मनमें शोचनेलगा कि यह तीनों मनुष्य अत्यन्त बुद्धिमान् और भलेमनुष्य जानपड़तेहैं मुझसे असत्य न कहेंगे विश्वास है अपने प्रण को पूराकरे और मुझे एकरुपया भी बहुतहै उन्होंने ४००) रु०के देनेका प्रण कियाहै यह विचार उस ने अपना जाल समुद्रमें डाला कुछ कालके पश्चात् उसको खींचा अकस्मात् उस जालमें एकसंदूक बंद बहुतभारी निकला खलीफ़ा ने धीमर को मन्त्री से ४००)रु० दिलवा तुरन्त बिदाकिया और मसरूर अपने स्वामी की आज्ञानुसार उस सन्दूक को अपने कंधेपर रखलेचला खलीफ़ा को अत्यन्त लालसाहुई कि उसे खोलकर देखें कि उसमें कौनसी वस्तुहै तुरन्त उसे निज भवन में लेगये वहां पहुँच उस सन्दूक को खोला उसमे कोई वस्तु नारियल की चटाई में लालडोरे से सीहुई देखी खलीफ़ाकी शीघ्रताके कारण उन्हें टांके खोलने का अवकाश न मिला छूरीसे उन टांकों को खोला उस चटाई के भीतर से एक कोईवस्तु पुराने वस्त्रमें लपेटीहुईथी और उस

से चारों ओर के बड़े २ बादशाह डरते और वह नानाप्रकार की विद्या और गुणका ग्राहक था उस बादशाह का बड़ा प्रवीण और बुद्धिमान् एकमंत्री था वह काव्य आदिक शास्त्रों में निपुण था उस मंत्री के दोपुत्र थे वह अत्यन्त सुन्दर और अपने पिता समान गुणवान् थे बड़े पुत्रका नाम शमसुद्दीन मुहम्मद था और छोटे का नाम नूरुद्दीन अली अत्यन्त बुद्धिमान् था जब वह मंत्री कालवश हुआ तब बादशाहने उसके दोनों पुत्रोंको बुलवाय मंत्रीकी पदवीदी और कहा कि तुम्हारे पिता के मरनेसे मुझे अति शोकभया अब चाहिये कि तुम दोनों भ्राता अपने पिताकी जगह अपने कार्य्य करो वह दोनों विदाहोय अपने घरआये एकमास पर्यंत अपने पिता के शोक में रहे फिर बादशाह के सम्मुख जा-राजसभा के नाप आदि कार्य्यों में जो मंत्री के अधिकार में हो-तेहैं प्रवृत्तरहे जब बादशाह अहेर की इच्छाकरता पारी २ से एक भाई को अपने साथ लेजाता और दूसरे को राजकाज के देख भालमें छोड़जाता एक दिन सायङ्काल को कि भोरभये बादशाह बड़े भाई को आखेट को लेजाने के लिये वह दोनों भ्राता भोजन कर रात्रि को परस्पर बातचीत और हास्य कररहे थे वार्त्तान्तर मे बड़े भाईने छोटे से कहा मैं चाहता हूं जिसभांति कि हम और तुम एक सम्मत से एक स्थानपर रहते हैं एकही दिन एक एक सुन्दर कन्या से विवाह करें कि जिनके माता पिता प्रतिष्ठा मे समानहों इस विषय में तुम्हारा क्या सम्मत है और क्या कहते हो नूरुद्दीन ने उत्तर दिया भाई मैं आपका सेवक हूं जो आपने आज्ञा की मुझे स्वीकार है और मेरे वास्ते उत्तम है बड़े भाई ने कहा इसके विषय में मेरी कुछ और भी इच्छाहै वह यह है कि

पर एक रस्सी बँधीहुई थी जब उसको खोला तो देखकर अत्यन्त आश्चर्यित हुआ उस वस्त्रमे एक स्त्रीकी लोथ जो बरफ से भी अधिक श्वेत थी टुकड़े २ हुई देखी खलीफ़ा उसे देख अत्यन्त क्रोधित हुआ और मंत्री से कहनेलगा तू ऐसेही मेरी प्रजाकी रक्षा करताहै तेरे अधिकार में ऐसे अन्यायी और दुष्टमनुष्यहैं जो मेरी प्रजाको इस निर्दयता से मारकर नदी में डालतेहैं बड़ा आश्चर्यहै प्रलय मे मैं इसका क्या उत्तर दूंगा यदि तू इसके वधकरनेवालेको न लावेगा तो मैं सौगन्दखाकर कहताहूं इस खूनी के बदले तुझे और तेरे घराने के चालीस मनुष्योंको फांसी देकर मरवाडालूंगा मंत्रीने विनयकी हे स्वामी ! इस सेवकको कुछ सावकाश मिले तो इस स्त्रीके मारनेवाले को ढूंढलावे खलीफ़ा ने आज्ञादी कि तीन दिनका सावकाश दियाजाताहै इस समयान्तरमें उसे ढूंढला जाफ़र मंत्रीशोकयुक्त अपने गृह मे आया और मनमें कहनेलगा कि इतने बड़े और बसेहुये नगर में मारनेवालेका मिलना अतिकठिन है और जो उसे मैने पायाभी तो साक्षियोंको कहां से पाऊंगा और विश्वासहै कि इसका हिंसक कबका कब इस नगर से चलागया होगा और जो अपने छुटकारेको किसी अन्य हिंसक अपराधीको जो वंदीखाने में कैदहो खलीफ़ा के सन्मुख लाके उसे उसस्त्रीकी हिंसा प्रकट करूं तो होसक्ताहै परन्तु मेरा मन नहीं चाहता कि ऐसा काम करूं और दूसरे मनुष्य का अपराध दूसरेपर रक्खूं फिर उसने थानेदारों और सिपाहियों को आज्ञादी कि उस स्त्री के हिंसकको तीन दिनके समयान्तरमें तुरन्त ढूंढके लावें जो न लावेंगे तो मेरे प्राण जावेंगे वह सब और मंत्री अपने प्राण के डरसे नगर के चारोंओर गये और घर २ उस हिंसकको ढूंढ़नेलगे बहुत ढूंढ़ने

विवाह करने के पश्चात् हम दोनों की स्त्रियां एकही रात्रि को स गर्भहों नौमासके पश्चात् एकही दिन वहजनें और तुम्हारे घरपुत्र हो और मेरे घर पुत्री फिर जब वह तरुणहों तब हम दोनों भाई उन का परस्पर विवाह करें उसने कहा यह भी विचार बहुत उत्तम है मैं इसपर प्रसन्नहूं जो परमेश्वर इसे सत्यकरें और बिश्वास है कि मेरा पुत्र भी तुम्हारी कुँवरि से प्रीति करेगा दूसरेने कहा निस्संदेह–प रन्तु एक शर्त है तू अपनी पुत्री की ओर से यह वचनदे कि नि मित्त दहेज के विशेष (६०००) रु० और तीन उत्तम बसे हुये ग्राम जागीर और तीन बांदियां दुलहिन की सेवाकरने के अर्थदे छोटे भाईने कहा मुझे ये अङ्गीकार नहीं क्योंकि हम तुम दोनों भाई पदवी मे तुल्यहैं तुम जानते हो कि पुरुषकी पदवी स्त्री से अधिक होती है तुमको चाहिये कि तुम अपनी पुत्री को बहुत दहेज दो न कि तुम हमसे लो जो कुछ कि तुम्हें करना उचित है दूसरे के शिर डालते हो यद्यपि नूरुद्दीन ने हास्यसे यह कहा था परन्तु बड़ा भाई उसका क्रूरप्रकृति था उसका वचन बहुत कटुलगा अति रिससे उत्तरदिया कि तू अपने पुत्रको मेरी पुत्री पर बड़ाई देताहै मैं तो जानता था तू मेरी पुत्री की प्रतिष्ठा करे गा उसके बिरुद्ध तूने उसको अपने पुत्रकी अपेक्षा थोड़ी पदवी का समझा और तूने जो अपने को मेरे अत्यन्त पदवी के बरा बर समझा यह अनुचित है मैं अपनी पुत्री का विवाह तेरेपुत्रके साथ कभी न करूंगा यह झगड़ा उन दोनों का अपने विवाह करने और उनकी स्त्रियों के गर्भ रहने और सन्तान उत्पन्न होने के पहले था इसमें बहुत वादानुवादहुआ यहांतक कि बड़े भाई ने छोटे को डराकर कहा भोर होने दे मैं बादशाह के सम्मुख

जाकर तुझे इस ढिठाई का दण्ड दिलाऊंगा जिससे सब लोगों को बोधहो और कोई छोटा भाई अपने बड़े भ्राता की इस भांति से ढिठाई जैसे कि तूने की है न करै यह कह अपने मकान में चला गया और छोटा भाई अपने, शयनालय में जाय सोरहा शमसुद्दीन मुहम्मद दूसरे दिनके भोर को उठ बादशाहके निकट गया और वहां से बादशाह के साथ अहेर खेलनेगया और छोटा भ्राता अपने बड़े भाई के धिक्कार और बुराभला कहने से रात्रिको न सोया क्रोधमें तड़फता और तलमलाता रहा और इच्छा की कि अब भाई के साथ न रहूंगा उसने मुझे बहुत बुराकहा तब उसने एक पुष्ट खच्चरपर असंख्य रत्न द्रव्य और खाने पीने की वस्तु साथलाद चलते समय अपने भृत्यों से बहानाकर कहा कि दो तीन दिन के वास्ते कहीं जाताहूं फिर वहां चला जब उस नगरकी सीमा बाहर निकला उसने अरब मे जाने की इच्छा की मार्ग में खच्चर उसका रोगीहुआ वह उसे छोड़ पैदलचला अकस्मात हसननगर से एक सवार बांसरा को जाताथा उसने नूरुद्दीन को पैदल देख अपने पीछे चढ़ालिया और जब वह बांसरामें पहुँचा तो नूरुद्दीन ने उसकी कृतज्ञताकी और उससे बिदाहो रहने का स्थान ढूंढ़ता आगे बढ़ा मार्गमे बड़े अमीर और जब वह बांसरामें सुपात्र मनुष्य को देखा कि बड़ी सजधज धूमधाम से उसकी सवारी जाती है औ नगरके लोगों ने झुकझुक उसे प्रणामकिया और पंक्ति बांधखड़ेरहे यहां तक कि बाज़ार से उसकी सवारी चलीगई नूरुद्दीन ने भी उसको देख सबके साथ प्रणाम किया वह बांसरा के राजमंत्री की सवारी थी प्रजाके भलेबुरे को देखने आयाथा नूरुद्दीन के सुन्दर रूप और भलमनसात को देख विस्मित हुआ और सवारी उसके

नुष्य निर्दोषहै यह कह उस वृद्धने तरुण के सम्मुख हो कहा अय पुत्र तू क्यों घबराकर शुद्धस्त्रियों के मारने का इकरार करत और क्यों इस वधागारमें आया मैं तो बहुत इस संसारमे रहचुका हूं अपने पलटे माराजानेदे उस तरुण मनुष्यने मन्त्री से कहा वृद्ध झूंठकहताहै उसका मारनेवाला मैं ही हूं वह मन्त्री उन दोनों वादानुवाद को सुन अत्यन्त विस्मित हुआ और खलीफ़ाके सम्मुख लेगया और विनयकी कि हेस्वामी! ये दोनों उसस्त्री के मारने इकरार करतेहैं उनदोनों ने खलीफ़ाके सम्मुख भी यही कहा खलीफ़ाने यह सुन आज्ञादी कि मन्त्री आदिको छोड़दो और इनदो को मारो मन्त्रीने झुककर खलीफ़ासे विनयकी कि हे स्वामी! दोनों मारना एक हिंसाके बदले न्यायके विरुद्धहै इतनेमें तरुणने सौगन्द खाकर कहा कि इस स्त्री को मैंने माराहै चारदिन व्यतीत हुयेहैं मैंने इसे वधकर और सन्दूक मे बन्दकर नदीमें डालदिया था जो मैं इस बातको असत्य कहताहूं तो प्रलय में अन्धा और काले मुख होके उठूं खलीफ़ा को इस बचन के कहने से विश्वास हुआ कि स्त्रीका मारनेवाला यही है और वृद्ध मनुष्य भी चुपहोरहा और कुछ न बोला खलीफ़ाने जवानसे पूंछा कि तूने क्यों इस निर्दयता से उस स्त्रीको मारा और अब क्यों आपही उसके बदले मरने को आया और तूने कुछभी परमेश्वर का और मेरा भय न किया तरुण मनुष्यने कहा अय स्वामी जो कुछ मुझे और उस स्त्री को हुआ वह सब लिखाजावे कि जिसमे सांसारिक मनुष्योंको उपदेश और बोधहो यदि आज्ञाहो तो मैं उस वृत्तान्त को प्रकटकरूं खलीफ़ाने कहा अच्छा कहु फिर उस तरुण मनुष्य ने अपने और

समीप पहुँची उसने मुसाफ़िरों की भांति उसे पाया उसके पास ठहर पूछा कि तू कौन है और किधरसे आताहै नूरुद्दीन अली ने कहा स्वामी मैं मिसरीहूं और केरू देशमें मेरा निवासहै किसी विषय में अपने संबंधीसे अप्रसन्न हो मैंने परदेश अंगीकार किया अब यह इच्छा रखता हूं कि निज नगर में कभी न जाऊं और शेष आयु नगर नगर देश देश में फिर व्यतीत करूं उस मंत्री ने जो वृद्ध और बुद्धिमान् था नूरुद्दीन के इस वचन को सुन कहा हे पुत्र! इस इच्छा को अपने मन से दूरकर यात्रामें दुःख और हानिके विशेष कदापि लाभनहीं तुम मेरे साथ चलो तुम्हारे साथ ऐसा उपकारकरूंगा कि उसशोक को निपट विस्मरणकरोगे नूरुद्दीन अली मंत्री के साथ गया और उसके निकट रहने लगा वह राजमंत्री उसकी बुद्धि और चतुरता को देख उसका बड़ा सत्कार करताथा यहां तक कि एकदिन उसने एकांत में कहा हे पुत्र! अब मैं बहुत शिथिल होगया हूं और जीने की कुछ आशा नहीं परमेश्वर ने मुझे केवल एकपुत्री अतिरूपवती दीहै अब वह विवाहने योग्य है बहुत से भलेमानस धनाढ्य और प्रधान उसकी चाहना करते हैं परन्तु मैंने स्वीकार नहीं किया अब तुझे प्राणसे भी अधिक प्रिय जानताहूं वह तेरे योग्य है यदि तू इस बातको स्वीकारकरे तो मैं तुझे दूं और बादशाह की आज्ञानुसार उसको तुझे विवाहदूं और अपने बदले इस देश का मंत्री करूं और अपनी सब वस्तु तुझे दूं नूरुद्दीन ने उसकी कृतज्ञता कर कहा आप मेरे बड़े हैं आपकी आज्ञा मुझे स्वीकारहै मंत्रीने उसकी खुशीपाकर विवाहकी तय्यारी की और नगर के वासियों को इस विवाह के निमित्त न्योता जब सबलोग आये नूरुद्दीन ने मंत्री से कहा अबतक मैंने अपनी जाति

उस मनुष्य और मरीहुई स्त्री की कहानी ॥

मनुष्यने कहा कि हे स्वामी! यह मृतक स्त्री मेरी स्त्री और इस वृद्ध मनुष्यकी पुत्रीथी यह वृद्ध मेरा चचाहे अभी यह द्वादशवर्ष की न हुइथी कि इस वृद्धने इसका मेरे साथ विवाह कर दिया ११ वर्ष बिनाह को व्यतीत हुयेहैं कि तीन पुत्र इससे उत्पन्न हुये सो वह तीनों पुत्र अबतक जीते हैं यह स्त्री अत्यन्त पतिव्रता और मेरी आज्ञापालक और सदैव मेरी प्रसन्नतापर हर्षित रहती थी और मैं भी उससे अत्यन्त प्रीति रखताथा और प्रत्येक समय उसका मनोरथ पूरा करता था एकमास व्यतीत हुआ कि वह रोग युक्त हुई मैंने यथोचित उसकी औषधी की फिरवह अच्छी होगई स्नान के निमित्त स्नानागारमे जानेकी इच्छा की अपने जानेके पहले उसने मुझ से कहा मेरा जी सेवखाने को चाहता है कहीं से ढूंढ़के उसे लायदीजिये सेव न मिली तो फिर मैं रोगी होजाऊँगी मैंनेकहा हे सुन्दरी धैर्य रख जिसभांति होसकेगा तेरेवास्ते ढूंढलाऊंगा यह वचन इससे कह मैं तुरन्त बाज़ारको गया और सम्पूर्ण फल बेचनेवालों की दूकान पर ढूंढने लगा और एक सेब के बदले ४) रुपये तक देने लगा तौ भी मुझे एकसेब हाथ न लगी निदान मैं घरआया जब यह सुन्दरी स्नानकर घरआई और उसने सेब को न पाया अत्यन्त शोचयुक्त हुई और रातभर उसे निद्रा न आई उसके शोचयुक्त होने से मुझे शोक हुआ भोरको उसे इसी दशा में देख नगरके बागों में जाय ढूंढा वहां भी कहीं न पाया एक वृद्धमाली ने कहा इनदिनों बादशाही बागों के सिवाय जो बांसरानगर में हैं कहीं सेव तुमको न मिलेगा मैंने बॉसराको जाने की इच्छा की और इतनी दूरकी यात्रा स्वीकार की

पांतिको छिपाया अब मैं प्रकट करताहूं मेरा पिता मिश्रके बा, दशाह का राजमंत्री था मैं उसका छोटा पुत्रहूं एक मेरा बड़ाभाई है मेरे पिता के मरने के पश्चात् बादशाह ने हम दोनो भाइयों को हमारे पिताके अधिकार पर नियत किया सो हम यथोचित उसकार्य को करतेरहे एकदिन हम दोनो भाइयों में कुछ बादानुवाद हुआ मैं अप्रसन्न हो इधरको चलाआया बांसराका राजमंत्री इस वचन को सुन अत्यन्त हर्षित हुआ कि यहभी मंत्री सुवनहै फिर उसने सभासदों से कहा एकबात में मैं सम्मत पूछताहूं वह यहहै कि एकभाई मेरा मिश्रके बादशाह का मंत्री है उसने अपने पुत्रको यहां भेजा है और मिश्रमें बिवाह उसका न किया सिवाय उसके कोई संतान नहीं और उसकी इच्छाहै कि मैं उसका बिवाहकर अपने निकट रक्खूं मुझे तो यह बात परस्पर अधिक प्रीति का कारण जानपड़तीहै तुमसब इसमें क्याकहते हो उन सबने एकमत हो कहा यह बहुत उचितहै परमेश्वर उन दोनों की आयु दीर्घकरे निदान जब वह सब इस बात में प्रसन्न हुए मंत्री ने सबको नानाप्रकार के उत्तम उत्तम व्यंजन खिलाये और उनका यथोचित सन्मान किया फिर प्रत्येक मनुष्य के सन्मुख मिठाई रक्खी कि यही वहांकी रीतिथी और क़ाज़ीने वहां आनकर बिवाह किया फिर सम्पूर्ण मनुष्य उस राजमंत्री से बिदाहुये उक्त मंत्रीने अपने सेवकों को आज्ञादी कि नूरुद्दीन को स्नानागार मे लेजाय नहलाओ और उसने नानाप्रकार के वस्त्र और रत्न किश्तियों में लदाकर जैसे कि बिवाहके दिन दूल्हे को पहिनावतेहै वहीभेजे नूरुद्दीन ने स्नानकरने के पश्चात् चाहा कि अपने वस्त्र पहिने परन्तु मंत्रीके सेवकों ने वही वस्त्र पहिनाकर नानाप्रकारकी

वहां पहुँचा और ढूंढते २ तीन सेब चार चार रुपये देकर मोल लिये और दोसशाह के समयान्तर में अपने घर आया और वह तीनों सेब अपनी पत्नी को दिये वह देख प्रसन्नहुई और उन को सूंघने लगी और अपनी शय्याके नीचे अपने समीप रखदिये और निर्बलताके कारण उसी भांति लेटी रही मैं अपनी दूकानपर की चौक के बजाजे मे थी जाय बैठा थोड़ी देरमें मैंने एकगुलाम हब्शी कि बड़े डीलका था क्या देखा कि वह दूकान के आगेसे एक सेब हाथ में लिये हुये उछालता जाता है मैंने उस सेब को पहिंचाना कि यह तो उन्ही सेवोंमे से है जिनको मैं चन्दरोज में बाँसरा से लायाथा नही तो इन दिनों में इस हब्शी ने कहांपाया मुझे भलीभांति विदित था कि बुगदाद नगर में कहीं सेबका नाम भी नहीं तो उस सेब को हब्शी के हाथ मे देख ऐसी डाह उपजी की अधीर होगया निदान उस हब्शी से बुलाकर पूंछा कि तूने इस सेबको कहां से पाया उसने मुस्कराय उत्तरदिया कि यह सौगात मेरी प्यारी की है आज मैं उसे देखनेको गया था उसके निकट तीन सेबथे मैंने उस से पूंछा कि यह सेब कहांसे आये उसने कहा मेरा भर्त्ता दोसशाह की यात्रा कर इन्हे मेरेवास्ते लाया है फिर मैंने और उस सुन्दरीने मिलके भोजन किया और बिदाहोते मैंने एक सेब वहांसे उठालिया इस वार्त्ताको हब्शी से सुन मेरी सुधि जाती रही तुरन्त अपनी दूकान बंदकर घर आया और अपनी स्त्रीके निकट जाय देखा केवल दोही सेब उसके निकट रक्खेहुये थे मैंने उससे पूंछा तीसरा सेब क्या हुआ उस स्त्रीने अपने मुखको फेर उस ओर को दृष्टिकी जहां वह तीनो सेब रक्खे थे दोही सेबको देख बेपरवाही से उत्तरदिया मैं नहीं जानती कि तीसरा सेब यहांसे क्याहुआ इस

सुगंधें लगाई नूरुद्दीन भी वस्त्रादि से अलंकृत होकर मंत्री के निकट जो उसका श्वशुर था गया उसने हर्ष से समीप बैठाय पूंछा कि तुमने सब हालतो मुझसे कहा कि मिश्रके मंत्री के पुत्रहो और आपभी बादशाह के मंत्री थे परन्तु एक बात तुमने अबतक नहीं प्रकटकी कि क्यों तुम निजदेश और कुटुम्बको छोड़कर यहां आये अब हमारा तुम्हारा एकवास्ता है और किसी भांति का परस्पर में अंतर नहीं नूरुद्दीन ने अपना वृत्तांत बिस्तार पूर्वक जैसा कि उन दोनों भाइयों में तकराहुई थी मंत्री से कहा मंत्री यह सुन बहुत हँसा और कहा केवल इतनेही बातके वास्ते तुम दोनों भाइयों में वादहुआ यह निपट विचारही था कहां तुम्हारा पुत्र और कहां तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राताकी बेटी जिनका विवाह उन प्रतिज्ञाओं पर होता तुमने निजदेश को छोड़ा परन्तु तुमने केवल हास्य में कहा था इस विषय में तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राताकी अधिकता जान पड़ती है इस विषय में तुम्हें जाना परदेश उचित न था परन्तु मेरे प्रारब्ध में था कि तुम ऐसा कुलीन और उच्चजाति का मनुष्य मेरा दामाद हो इसी कारण तुम्हारे मनमें यह उपजी और इस नगर में आये अब देर न करो अपनी दुलहिन के समीप जावो वह तुम्हारी राह देखती होगी कलमें तुमको बादशाहके समीप लेजाऊंगा मुझे विश्वासहै कि तुम्हारी भेंट होतेही वह तुमपर प्रसन्नहोगा जिससे हम दोनोंको हर्षहो नूरुद्दीन अपने श्वशुरसे बिदाहोकर अपनी दुलहिनकी शय्यापर गया अब शमसुद्दीन नूरुद्दीन के ज्येष्ठभ्राताका भी वर्णन किया जाताहै जो शिकारको गया था एकमास पर्यन्त वह बादशाह के साथ अहेर खेलतारहा जब वह आया और नूरुद्दीन के भवन में गया तो उसे उसके सेवकों से विदित हुआ कि

वह उसीदिन दोदिनकेवास्ते कहीं गयाहै शमसुद्दीनको बड़ाशोक हुआ और जानलिया कि मेरे कठोर वचनसे वह अवश्य अप्रसन्न होकर किसी ओर को निकलगया उसने चारों ओर उसके ढूंढनेके लिये मनुष्य दौड़ाये वह दमिश्क और हलब पर्यंत हो आये कहीं उसका पता न लगा क्योंकि वह बांसरा में था फिर दूरदूर के देशों में भी ढूंढहुई वहांपर भी न मिला निदान हार मान शमसुद्दीनने विवाह का विचार किया संयोग वश उसी दिन और उस मुहूर्त्त में कि जिसमें नूरुद्दीन का विवाह हुआ था उसने अपना विवाह एक प्रतिष्ठित मनुष्य की कन्याके साथ किया और अद्भुत यह कि नौ मास व्यतीत होने के पश्चात् शमसुद्दीन के घर में कन्या और नूरुद्दीन के घरमें पुत्र हुआ जिसका नाम उसने बदरुद्दीनहसन रक्खा बांसराका मंत्री नवासे के होने से अत्यंत हर्षित हुआ छठी के दिन बड़ी धूमधाम की और अपने सेवकों आदिको पारितोषिक दिया कुछ काल के पश्चात् इच्छाकी कि अपने दामाद नूरुद्दीन को बादशाह के सन्मुख लेजाय उसे अपना अधिकार दिलाये जब वह उसे पहले बादशाहके सन्मुख लेगयाथा बादशाहने उसे योग्य और बुद्धिमान् और गुणवान् पाके और बहुत से मनुष्यों से उसकी प्रशंसा सुन बहुत खुश हुआ था सो निज पुराने मंत्री के चाहनानुसार राजमंत्री का अधिकार नूरुद्दीन को दिया दूसरे दिन मंत्रीने अपने दामाद को देखा कि उसने निजसम्बन्धित न्याय के कार्यको भलीभांति किया अत्यंत हर्षित हुआ और नूरुद्दीनअली राजसभा में सदैव प्रवृत्त रहनेलगा और प्रत्येक मनुष्यको अपनी शीलता और मिलनसारी से ऐसा प्रसन्न रखता कि सब छोटे बड़े उसको आशीर्वाद देतेथे जब इसी

के वर्णनमें बीती सो अंगरेजीभाषाके उल्थकने उनको छोड़दिया इस वास्ते इस पुस्तकमें कि अंगरेजीभाषा से सलिलउर्दू में उल्था होकर भाषान्तर हुई है छोड़ दियागया निदान डोमनियों ने सात जोड़े सातप्रकारके शमसुद्दीन मन्त्रीकीपुत्रीको प्रत्येकरागपर पहिनाये जब उस देशकी रीत्यनुसार दुलहिन जोड़ेबदलचुकी तब और स्त्रियोंके सहित अपनेस्थान अर्थात् कुबड़े दूल्हेके निकटसे उठ और ग्लानिपूर्वक दृष्टिसे उसेदेख बदरुद्दीनहसन के निकट जावैठी बदरुद्दीनहसन उसपिशाचके उपदेशानुसार उनबांदियों और गानेवालियोंको अपनी थैलीसे निकाल मुट्ठी २ भरभर रुपयेदेतारहा वह प्रसन्नहोय एकदूसरीको झिड़क झिड़ककर चुननेलगीं और आशीर्व्वाद देती थीं और परस्पर यह सैनसे बतलातीथीं कि यह दूल्हा मन्त्रीकी पुत्रीके योग्यहै और यह कुबड़ा कुरूप मन्त्री कुँवरिके योग्य नहीं और महल के सेवकों में भी यही वार्त्ता होतीथी वह कुबड़ा कुछ तो उनकी बातें सुनता और कुछ नहीं क्योंकि हजारों नकल कर उसे रिझाय रक्खा था फिर जब यह रीति वस्त्र बदलनेकी होचुकी और गाना बजाना बन्द हुआ तब उन्होंने बदरुद्दीनहसन को सैनकी कि खड़ाहो उसके खड़ेहोने से सम्पूर्ण भवनके मनुष्य उस स्थान से चलेगये और दुलहिन अपने मकान में गई तब बांदियों ने रात्रिके वस्त्र दुलहिन को पहिराये उसस्थानपर केवल बदरुद्दीनहसन और कुबड़ा और बांदियां रहगईं कुबड़ेने क्रोधकी दृष्टिसे बदरुद्दीनकी ओर देखकर कहा तू क्यों यहां ठहराहै यहांसे चला नहीं जाता बदरुद्दीनहसन उसके क्रोधितवचनसुन घबराया और वहांसे चलेजानेकी इच्छाकी पिशाच और अप्सरा ने उससे कहा तू कहां जाता है ठहर कुबड़े को हम यहां

भांति उसे चारवर्ष व्यतीत हुये खुसरो नूरुद्दीन शिथिलता वृद्धता के कारण कालवश हुआ नूरुद्दीनअलीने रोनापीटना और शोक वहां की रीत्यनुसार भलीभांति किया जब बदरुद्दीनहसन सातवर्ष का हुआ नूरुद्दीनने उसके पढ़ाने और उपदेशार्थ बड़े बड़े गुणवानों को नियत किया जो बदरुद्दीन अति कुशल बुद्धिथा कुछ समय में उसने कलाम अल्लाह मुखाग्र करली और द्वादशवर्षकी अवस्था में संपूर्ण विद्या पढ़ली और वह ऐसा सुन्दर था कि उसे सब लोग देख प्रसन्नहोते और आशीर्वाद देते फिर जब राज दरबार तथा मंत्री कार्य में निपुण हुआ नूरुद्दीन उसे बादशाह के सन्मुख लेगया उसने ऐसी सुबुद्धी से प्रणाम किया कि बादशाह प्रसन्नहुआ और उसपर परम अनुग्रह की पिता उसकी निपुणता और गुणवानता से अत्यन्त प्रसन्नरहता और सदैव उससे उपदेश किया करता जब वह समय आया कि उसके कार्यसे कुछ लाभहो अकस्मात् नूरुद्दीनअली रोगी हुआ और धीरे२मरने के निकट पहुँचा अंतसमय अपने पुत्र बदरुद्दीन हसन को बुलवा कर उपदेश किया कि यह संसार असार त्यागने योग्य है मेरे मरने पर रुदन न करना और संतोष रखना जैसा कि तुम्हारी जाति में है और तुमने अपने गुरुसों भी पढ़ाहै और उन सब को भलीभांति जानते हो अब मैं थोड़ीसी बातें तुमको बताताहूं और कुछ उपदेश करताहूं विश्वासहै तुम मेरे उपदेशानुसार मेरे पीछे करोगे प्रथम यह कि मैं मिश्रका वासीहूं मेरा पिता वहांके बादशाह का राजमंत्री था मैं और मेरा भाई शमसुद्दीन मुहम्मद नामी जो अबतक जीता है हम दोनों मंत्री उसी बादशाह के थे कोई ऐसा कारण हुआ कि [illegible] ने भाई से अलग होकर

से निकाले देते हैं तू दुलहिन के निकट जा और उससे कह तेरा पति मैंहूं बादशाह ने हास्यसे कुबड़े को दूल्हा बना यहां भेजाथा उसके वास्ते कुछ भोजन अश्वशाला में भेजो और दुलहिन को अपने साथ मिलालो दुलहिन तुझे देखि बहुत प्रसन्न होगी तुम कुछ कुबड़ेका भय न करो उसको अभी दूर करते हैं निदान जब अप्सराने बदरुद्दीन को इस भांतिकी शिक्षासे दृढ़ किया तो वह उसी स्थानपर ठहरा और वह कुबड़ा मलिन वहांसे भागा क्योंकि पिशाच बिल्लीबन ऐसी तीक्ष्णदृष्टिसे देखने और घुरनेलगा जैसे सिंह अपने भक्ष्य को देख नाद करता है कुबड़ा उसे धमका कर दोनों हाथों से बड़ेवेग से मारनेलगा कि वह डरकर भागजावे परन्तु वह बिल्ली उसकी ओर घुरनेलगी और नेत्र अङ्गारों के समान लाल किये और प्रथमसे अधिक शब्द करनेलगी और इतनी फूली और बड़ीहुई कि गधे के समान होगई तब वह कुरूप देखकर डरा और भाग जानेकी इच्छाकी इतने में वह पिशाच बहुत बड़ा भैंसा बन डकारने लगा और बड़ा शब्द कर कहा हे कुबड़े कहां भाग जावेगा खड़ारह कुबड़ा भयसे पृथ्वीपर गिरपड़ा और अपना मुख वस्त्रमें छिपालिया कि उस विकराल भैंसेका स्वरूप दृष्टि न पड़े और अतिनम्र होकर गिड़गिड़ा के कहने लगा हे महिषराज! मुझे क्या आज्ञाहै भैंसे ने उत्तर दिया तुझे इतनी शक्तिथी कि मेरी स्त्री के साथ विवाह करनेको आया कुबड़ेने उत्तर दिया हे स्वामी! मेरा अपराध क्षमा कीजिये मुझे विदित न था कि यह सुन्दरी तुम्हारी प्यारी है महिष ने कहा तू यहांसे सूर्य्योदयपर्य्यन्त न जाइयो चुपका यहां पड़ारह दिनहोतेही इसस्थानसे चले जाइयो और फिरके इस ओर न देखियो नहीं तो अपने दोनों सींग

यहां आया और यहीं मन्त्री की पदवी पाई फिर उसने जेवी कलमदान खोल एक कागज़ को जिसको वह सदैव अपने समीप रखताथा निकालकर वदरुद्दीनहसन को दिया और कहा अवकाश पा इसको पढ़ना तुमको इसका वृत्तान्त भलीभांति विदित होगा सबबातोंके विशेष तुम मेरे विवाह और अपने उत्पन्नहोनेकी तिथि पाओगे तुम इसपत्र को रक्षापूर्व्वक रखना वदरुद्दीन हसन अपने पिताको मृत्यु के निकट देख अत्यन्त शोकवान् हुआ और उसपत्र को ले प्रण किया कि इसे कभी अपने पाससे अलग न करूंगा फिर नूरुद्दीनअली ऐसा वेसुध होगया जिससे विदितहुआ कि वह मरगया थोड़ी देरके पश्चात् फिर उसने सुध सम्हाली और अपने पुत्र वदरुद्दीन को यह उपदेश किया प्रथम यह कि तुम किसी से मित्रता न करना और न किसी से अपना भेद कहना द्वितीय किसी मनुष्य पर अन्याय न करना कि वह तुमसे वैर और डाहरक्खे तुम समझो यह संसार देने लेनेकी जगह है जैसा कि तुमको भी बदला भोगना पड़ेगा तृतीय यह कि तुम ऐसावचन न कहना जिससे लज्जा उठानी पड़े और वहुतवार्त्ता न करना कि वहुवाची सदैव लज्जा उठाताहै और गम्भीर वहुधा अनेकदुःखो से वचारहता है इन वातोंको सदा करना बुद्धिमानों का वचन है कि गम्भीरता प्रतिष्ठाकी बचानेवाली और प्राणकी रक्षा करनेवाली होती है जो मनुष्य थोड़ा बोलता है लज्जा कदापि नही उठाता और जो वहुत वकता है वह पीछे से कष्ट पाता है चतुर्थ यह कि मद्य न पीना बुद्धिकी नष्टता का कारणहै पञ्चम यह कि सर्वदा किफायत करना क्योंकि तुम वहुत खर्च करोगे तो तुरन्त निर्धन हो जावोगे मेरा प्रयोजन यह है कि न तो इतना खर्च करना कि

ते रेउदर में चुभोकर मारडालूंगा तदनन्तर महिष वह शरीर त्याग मनुष्यबनगया और उस कुबड़ेकी टांगेउठा शिर नीचेकर दीवारके साथ खड़ा करदिया और कहा जो तू भोरपर्य्यन्त हिला और इसी भांति खड़ा न रहा तो तुझे इसीदीवारके साथ रगड़ डालूंगा फिर वह पिशाच और अप्सरा दोनों चलेगये और वदरुद्दीन अति हर्षसे दुलहिन के मकान में गया उस समय एक वृद्धा उसे कहीं एकान्त मे लेआई और दूल्हे से कहा भैया इस दुलहिन के साथ संसारिव्यवहार वर्त्तना इतनाकह उसमकानका द्वार बन्दकर उसमें तालालगा चलीगई वह दुलहिन वदरुद्दीनको पाकर अगंतप्रसन्न हुई और पूंछा तुम मेरे पतिके साथियों में से हो वदरुद्दीनहसनने उत्तर दिया मैं कुबड़े का साथी नहीं किन्तु तेरा पतिहूं प्रथम बादशाहने चाहाथा कि अपना विवाह तुम्हारे साथ करे परन्तु तेरेपिताने उसे स्वीकार न किया बादशाहने क्रोधितहो प्रकट में हास्य से कुबड़े को नियत किया उसके साथ विवाहहो परन्तु वास्तव मे मुझे कि मैं तुम्हारा सजातीहूं विवाह के निमित्त भेजा है तुमने देखा कि सम्पूर्ण मनुष्य उससे हास्य करते थे अब मैंने उसे फिर अश्वशाला में भेज दियाहै तुम धैर्य्य रक्खो वह तुम्हें दिखाई न देगा मन्त्रीकुँवरि जो चिन्तामें थी इस वचन को सुन और अपने भर्त्ताको सुन्दरदेख अत्यन्त प्रसन्न और हर्षितहुई और कहनेलगी मैं अत्यन्त शोच विचारमें थी कि सम्पूर्ण आयु मेरी दुःख में उस कुबड़े के साथ कटेगी परन्तु परमेश्वरका धन्यवादहै कि उससे मुझे बचाकर तुम्हारे साथ विवाह किया यहकहवह बदरुद्दीनके साथ सोरही बदरुद्दीन भी उसके रूप अनूपको देख हर्षितहुआ और अपने वस्त्र और थैलीसहित जिसे असहाक यहूदी से पायाथा

निर्धन होजावो न इतना न्यून कि तुम्हें लज्जा प्राप्तहो सर्वदा स
रहना चाहिये क्योंकि जब तुम्हारे निकट द्रव्य रहेगा सबमित्र तु
को घेरे रहेंगे और जो खाली होगे तो तुम्हें कोई बातभी न पूंछे
न कोई तुम्हारे समीप आवेगा निदान श्वास निकले पर्य्यन्त
रुद्दीन अपने पुत्र बदरुद्दीन को उपदेश करतारहा जब वहमरग
बदरुद्दीन ने बड़ी धूमधाम से उसके शोककी रीतिकी इतनीक
कह रानी शहरजाद ने बादशाह शहरयार से कहा खलीफ़ाहार
रसीद यहांतक इस कहानी को सुन अतिप्रसन्न हुआ फिर जाप
मन्त्री कहने लगा कि नूरुद्दीन के मरने के पश्चात् सब लो
बदरुद्दीन को बांसराई कहनेलगे क्योंकि वह उसी नगरमें उत्प
हुआ था बदरुद्दीनहसन उस देशकी रीत्यनुसार एक मासपर्य्यन
अपने पिता के शोकमें ऐसा बैठा कि किसी से न मिलताथा इस
कारण राजसभा में न गया किन्तु द्वितीयमास भी उसी दशा
व्यतीत किया इस बेपरवाहीसे बादशाह अप्रसन्न हुआ और उसक
स्थानपर किसी अन्यमनुष्यको अपना मन्त्रीकर काम लियाकरत
एक दिन अपने नवीनमन्त्री को बुलाकर आज्ञादी कि प्रथममंत्र
का मन्दिर धन आदि छीनलो और बदरुद्दीनहसन को कैदक
मेरे सम्मुख तुरन्त लावो नवीनमन्त्री बादशाह की आज्ञानुसा
सेनासाथले चला एक बदरुद्दीनका सेवक मार्ग्ग में यह दशा देख
दौड़ा आया और बदरुद्दीनहसन के निकट घबरायाहुआ पहुँच
कर उसके चरणोंपर गिरपड़ा और उसके वस्त्रको चूम कहा स्वामी
शीघ्र यहांसे भाग जावो बदरुद्दीनहसनने उसके शिरको अपने
चरणों से उठाकर पूंछा कुशल तो है उसने उत्तर दिया अब कहने
सुनने का अवकाश नहीं बादशाहने क्रोधितहो तुमको पकड़ने

से निकाले देते हैं तू दुलहिन के निकट जा और उससे कह तेरा पति मैंहूं बादशाह ने हास्यसे कुबड़े को दूल्हा बना यहां भेजाथा उसके वास्ते कुछ भोजन अश्वशाला में भेजो और दुलहिन को अपने साथ मिलालो दुलहिन तुझे देख बहुत प्रसन्न होगी तुम कुछ कुबड़ेका भय न करो उसको अभी दूर करते हैं निदान जब अप्सराने बदरुद्दीन को इस भांतिकी शिक्षासे दृढ़ किया तो वह उसी स्थानपर ठहरा और वह कुबड़ा मलिन वहांसे भागा क्योंकि पिशाच बिल्लीबन ऐसी तीक्ष्णदृष्टिसे देखने और घुरनेलगा जैसे सिंह अपने भक्ष्य को देख नाद करता हैं कुबड़ा उसे धमका कर दोनों हाथों से बड़ेवेग से मारनेलगा कि वह डरकर भागजावे परन्तु वह बिल्ली उसकी ओर घूरनेलगी और नेत्र अङ्गारों के समान लाल किये और प्रथमसे अधिक शब्द करनेलगी और इतनी फूली और बड़ीहुई कि गधे के समान होगई तब वह कुरूप देखकर डरा और भाग जानेकी इच्छाकी इतनें में वह पिशाच बहुत बड़ा भैंसा बन डकारने लगा और बड़ा शब्द कर कहा हे कुबड़े कहां भाग जावेगा खड़ारह कुबड़ा भयसे पृथ्वीपर गिरपड़ा और अपना मुख वस्त्रमें छिपालिया कि उस विकराल भैंसेका स्वरूप दृष्टि न पड़े और अतिनम्र होय गिड़गिड़ा के कहने लगा हे महिषराज मुझे क्या आज्ञाहै भैंसे ने उत्तर दिया तुझे इतनी शक्तिथी कि मेरी स्त्री के साथ विवाह करनेको आया कुबड़ेने उत्तर दिया हे स्वामी मेरा अपराध क्षमा कीजिये मुझे बिदित न था कि यह सुन्दरी तुम्हारी प्यारी है महिष ने कहा तू यहांसे सूर्य्योदयपर्य्यन्त न जाइयो चुपका यहां पड़ारह दिनहोतेही इसस्थानसे चले जाइयो और फिरके इस ओर न देखियो नहीं तो अपने दोनों सींग

और सम्पूर्ण तुम्हारा द्रव्य हरनेको सेना भेजीहै बदरुद्दीनहसन उस अपने हितैषी सेवककी बात सुन घबरागया और कहने लगा इतना अवकाशहै कि कुछ धन वा रत्न अपने साथलूं उसने कहा इस समय किसी वस्तुका विचार न कीजिये केवल यहांसे बच भाग जाइये मन्त्री आपके घरके समीप पहुँचचुका क्षणमात्र मे यहां आया चाहताहै बदरुद्दीन इस बातको सुन यहां से उठा जूती पांवोंमें पहिनकर अपने वस्त्र से अपना मुख छिपाया कि कोई उसे न पहिचाने और परमेश्वरपर भरोसा रख एकओर को चला परन्तु इतनी चातुरता की कि भवन के दूसरे दरवाजे से होकर तुरन्त कबरिस्तान को चला जाते जाते, सूर्य्यास्त होजाने से अँधियारा होगयाथा वह अपने पिताकी कबर में कि बहुत बड़ीथी और उसे नूरुद्दीनही बनवागया था पहुँचा अकस्मात् वहां एक यहूदी व्यापारी से भेंट भई वह यहूदी बदरुद्दीन को पहिचान कर ठहरगया और बड़ी प्रतिष्ठा से उसे नम्रतापूर्व्वक प्रणाम किया और हाथ चूमा फिर आश्चर्य्य कर कहनेलगा कि रात्रिको अकेले कहां जातेहो वह कौनसा ऐसा कार्य्य है कि तुमने इतना श्रम किया बदरुद्दीन हसन ने उत्तर दिया मैंने अपने पिताको स्वप्न में देखा कि मेरी ओर अप्रसन्नतासे दृष्टि करताहै उसको मुझसे कुछ क्रोधहै यहां तक कि मैं जगकर उठ वहां से अकेला दौड़कर यहां आया उस यहूदी ने उसके वचनका विश्वास न कर कहा तुम्हारापिता बड़ाप्रतापवान् व शीलवान् और मेरा स्वामी था कईजहाज असबाब के लदेहुये स्थान स्थानपर गयेहैं और अभी कोई यहां नही पहुँचा अब तुम उस असबाब के स्वामीहो यदि जहाजका असबाब जो प्रथमही इस नगरमें पहुँचे मेरे हाथ बेचो तो मैं इसी समय आपको ६०००) रु०

कर दमिश्क में पहुंचा इस वचनको सुन बहुधा मनुष्यों ने कहा यह मनुष्य दया करने योग्यहै कि ऐसा सुन्दर पुरुष सौदाई हो और ऐसी वहकी बातें करे उनमेंसे एक वृद्धने कहा हे पुत्र ! तुम क्या कहतेहो ऐसा हो नही सक्ता कि रात्रिको तुम कैरूमे हो भोर को दमिश्क में बदरुद्दीन ने कहा मैं सत्य कहताहूं कल भोरको मैं बांसरामें था इस वचन के सुनतेही सम्पूर्ण मनुष्य ठट्ठामार हँसने और बड़ा शब्द कहने लगे क्या तू विक्षिप्त वा निर्बुद्धिहै वा इसमें कुछ गुप्त भेदहै बड़ा पश्चात्ताप इसकी तरुणअवस्था पर है ऐसा उत्तम मनुष्य विक्षिप्त होजावे फिर एकने कहा यह बात क्योंकर होसक्ती है कि तुम कहतेहो एक मनुष्य उसी रात्रिको कैरूमें और उसके भोरको दमिश्क में जानपड़ता है अभीतक तुम सोते हो यह स्वप्नअवस्था की तुम्हारी बातें है बदरुद्दीनहसनने उत्तरदिया कि यह बात सत्यहै कल रात्रिको मेरा विवाह कैरूमें हुआ यह सुन मनुष्य अधिक हँसने लगे फिर उसी मनुष्य ने कहा तूने अवश्य स्वप्न देखा है अभीतक तेरा वही विचारहै बदरुद्दीन हसन ने कहा मैंने स्वप्न नहीं देखा कल रात्रिको मेरी दुलहिनको सात प्रकारके वस्त्र पहिनाये गये और उस स्थानपर एक कुरूप कुबड़ा भी था उन्होंने चाहा कि उसका विवाह उसी दुलहिन से करें मैं अत्यन्त विस्मित हूं कि मेरे वस्त्र पगड़ी और धनकी थैली कैरूमें मेरे साथ थी क्याहुई यद्यपि वह इन बातोंको ऐसा कहता था कि विश्वास हो परन्तु किसी को विश्वास नहीं आता था और हँसते थे निदान जब बदरुद्दीन अपना वृत्तांत कह चुका तब वहां से उठ नगरकी ओर गया उसके पीछे मनुष्य कहते जाते थे कि यह मनुष्य विक्षिप्तहै इस शब्दको सुन और बहुतसे मनुष्य चारो

देताहूं और एक तोड़ा उसके सम्मुखरखदिया वदरुद्दीनने उसदशा में कि केवल एक नाक और दो कानके सिवाय कुछ न रखताथा इतने रुपयों को परमेश्वरकी देनसे समझ हर्षपूर्व्वक इसको अङ्गीकारकिया फिर यहूदीने कहा कि आपने अपनामाल प्रथम जहाज का जो इस नगरमें पहुँचे ६०००) को बेचा वदरुद्दीनहसन बोला मैंने अपनी खुशी से तेरे हाथ बेचा यहूदी ने तोड़ा उसके हाथ में देकर कहा हे स्वामी ! यद्यपि मुझे आपके कहने पर विश्वासहै परन्तु लिखतम लिख दीजिये कि औरों के निकट सनद हो वदरुद्दीनहसन ने कहा बहुत अच्छा फिर उस यहूदी ने अपनी कमरसे मसि और लेखनी और कागज़ निकाल सामने रखदी वदरुद्दीनहसन ने उसमें लिखा वदरुद्दीनहसन बांसराई ने अपने प्रथम जहाजकी वस्तु को ६०००) रु० पर इसहाक यहूदी के हाथ बेचा और नीचे अपने दस्तखत कर यहूदी को दिया यहूदी वह ले चलागया और वदरुद्दीनहसन सीधा अपने पिताकी कबर पर गया और रोकर कहने लगा अभी मेरे प्रिय पिता के मरने का शोक मेरे हृदय से न गया था कि इस अन्यायी बादशाह ने मेरे घरबारको छीनलिया और मेरे पकड़ने की आज्ञादी अब मैं भागकर यहां आयाहूं कि मैं उसके हाथ से छूटूं इसीभांति देरतक रोता और बातें करतारहा निदान उसी दशामें वहां सोगया एक क्षण न हुआ था एक पिशाच कि वहांपर रहताथा और रात्रिको सैरके निमित्त वहां फिरा करता वदरुद्दीनहसन को वहां पड़ेदेख

चौकीपर उतार रखदिया इतनी दातव्य परभी वह थैली उसीभांति द्रव्यसे भरीरही यह केवल पिशाचकी मन्त्रविद्याथी फिर पगड़ी भी शिरसे उतार रात्रिका मुकुट पहिन लिया और एक तंग पायजामा और मिरजई पहनकर अपनी दुलहिनके साथ सोरहा जब कुछ रात्रि शेषरही तब वह पिशाच फिर उस अप्सरा से मिला पिशाच ने कहा भोरहोने के पहिले उस मनुष्य को सोतेहुये वहां से उठाकर किसी अन्यदेश में पहुंचा दे सो अप्सराने धीरेसे दूल्हे को दुलहिन के समीप से उठाय दमिश्कनगर की जामामसजिद पर ले जा लिटादिया और आप पिशाचसहित वहांसे चलीगई जबवहां के वासी भोरके तड़के की अजांसुन निमाज पढ़ने आये इस को रात्रिके वस्त्र पहिने देख अत्यन्त विस्मित हुये किसी ने कहा कि यह अपनी स्त्रीसे रूठके आया है इतना अवकाश न पाया कि कपड़े पहिनता दूसरे ने कहा कि यह पुरुष सम्पूर्णरात्रि अपने मित्रोंके साथ मदिरा पीतारहा अब मदमत्त हो यहां आपड़ा है और निद्रावश हो अचेत पड़ा है तीसरा और कुछ कहता परन्तु किसीको ठीक विदित न हुआ कि वह क्योंकर यहांआया अबकुछ मनुष्योंकी चिल्लाहट और छेंदाहवाचलनेसे जगा और मनुष्योंको अपने चारों ओरदेख आश्चर्यमेंहुआ और अपनेको एकमसजिदके निकट जिसे कभी न देखाथा पाया अत्यन्त विस्मितहो नेत्रखोल उनसेपूंछा कि सुभेवताओं में कौनहूं और तुम क्यों मेरे चारोंओर इकट्ठे होकर क्या बार्ता करतेहो एक मनुष्य ने उस समूह में से कहा हे मित्र! हमने तो अभी तुझे देखाहै और क्या तू नहीं जानता यह दमिश्क की मसजिद का दरवाजा है तब बदरुद्दीनहसन ने कहा वाह परमेश्वरकी माया कलमें क़ैरूमें सोयाथा भोरको क्यों-

ऐसा सुंदर नहीं देखा फिर जब उसे मन भरके देखचुका वहांसे उड़ कर वायुमे मिलकर एक अप्सरासे मिला और परस्पर प्रणाम किया फिर उस पिशाचने उस अप्सरा से कहा मेरे साथ पृथ्वीपर उतर मै तुझे एक सुंदर मनुष्यको कि उस कबरपर सोताहै दिखाऊं उसके देखने से तू प्रसन्नहोगी वह अप्सरा चलने को तत्पर हुई फिर वह दोनों क्षणमात्र में वहां आपहुंचे पिशाच ने उसे बदरुद्दीन हसन को दिखाकर कहा सत्यकह तूने कहीं ऐसा रूपवान् मनुष्य देखाहै अप्सरा ने ध्यानधर देख कहा वास्तव में यह मनुष्य महास्वरूपवान्है परंतु मै कैरूमे एकअद्भुत चरित्र देख आई हूं यदि तू सुनाचाहै तो वर्णनकरूं पिशाचने उत्तरदिया जो तू उसकहानी को सुनावैगी तो मुझे अत्यन्त हर्षहोगा अप्सराने उस वृत्तांत को इस भांति वर्णन किया कि मिसरके बादशाह का एक मंत्री है जिसका नाम शमसुद्दीनमुहम्मद है उसकी एक लड़की बीसवर्ष की अति सुंदरी है बादशाहने उसके रूप अनूप की प्रशंसा सुन मंत्री से कहा कि अपनी पुत्रीका विवाह मेरे साथकर मंत्रीने अंगीकार न किया और अत्यन्त शोचकर बादशाह को उत्तर दिया आपकी इच्छा मुझे स्वीकार नहीं क्योंकि आपकोभी विदित होगा कि मेरा एक भाई नूरुद्दीनअली नामहै प्रथम वहभी मेरे समान आपका मंत्रीथा बहुत दिनसे वह कहीं चलागया है अबतक उसका समाचार विदित नहीं परंतु पांचचार दिन व्यतीत होते हैं मैंने सुना कि वह बांसराका मंत्री होगया था अब वह पुत्र छोड़ मरगया और प्रथम से हम दोनो भाइयों में प्रण होचुका है कि हम दोनो की संतान में परस्पर विवाह होगा मुझे विश्वास है कि उसने अंत समय इस विषयमे अपने पुत्रको उपदेश कियाहोगा

ठहराया फिर वह हलवाई साक्षियों सहित न्यायाधीश के निकट लेगया बदरुद्दीनने भी उसके सम्मुख यही कहा कि मैं इसका गोद बैठाला हुआ पुत्रहूं फिर वह उसके घर में आनन्दपूर्व्वक रहने लगा और दमिश्क में हसन नामसे ख्यात होकर हलवाई कार्य्य सीखा अब उस दुलहिन अर्थात् मन्त्री कुवाँरिका भी वृत्तान्त सुना चाहिये भोरको जब शमसुद्दीन मुहम्मदकी पुत्री जगी तो उसने बदरुद्दीन को छपरखटमें न पाया जाना कि वह लघुशङ्का आदि को उठ बाहर गया शीघ्र फिर आवेगा वह दुलहिन उसके आनेकी बाट देखती थी इतने में मंत्री शमसुद्दीन मुहम्मद अत्यन्त चिन्ता और लज्जापूर्वक वहां आया और मुरझाकर अपनी पुत्री का नाम लेकर पुकारा दुलहिनने तुरन्त उठ किवाड़ खोला और रीतिपूर्वक अपने पिताके हाथको चूमा मंत्रीने उसे प्रसन्न पा आश्चर्य किया वह जानता था यह भी इस लज्जासे दुःख को प्राप्तहुई होगी मंत्री ने कहा अभागी तू मेरे सम्मुख अपनी प्रसन्नता प्रकट करती है दुलहिनने उत्तर दिया यहांपर वह कुरूप कुबड़ा नहीं और मैं उस के साथ विवाही नहीं गई वह यहांसे कभी का भागा है और मेरा विवाह किसी रूपवान् मनुष्यसे हुआ है और वही मेरा पति है शमसुद्दीन मंत्रीने कहा तू क्या कहरही है क्यों तेरे साथ वह कुबड़ा नहीं सोया दुलहिनने कहा नहीं वह मनुष्य है जिसकी भवें काली और बड़े २ नेत्र हैं मंत्री उसके वचनका विश्वास न कर क्रोधितहुआ कहा तूने दुष्टतासे यह विरुद्ध वचन कहे तेरा पति वही कुबड़ा है उसने कहा मैं कुबड़े को धिक्कार देतीहूं मैं उसके साथ नहीं सोई मेरा पति मलमूत्र त्यागने बाहरगयाहै अभी [illegible] होगा उसे तुम देखलेना कि वह कैसा है [illegible] नेलगा

अब अवश्यहै कि उसके अंतकाल के उपदेश को करें परमेश्वर के वास्ते आप मुझे इस वातमें क्षमाकीजिये इस नगरमें वहुत से मेरे समान अति प्रतिष्ठित सुंदर लड़कियां रखते हैं उनसे आप विवाह कीजिये वादशाह इसवातको सुन अत्यंत अप्रसन्न हुआ और क्रोधित होकर कहा मुझे वहुत तुच्छ समझा इस तेरी ढिठाई से देख तुझे कैसा दंड देताहूं और मैंने प्रतिज्ञा की है कि तेरी कन्या महा कुरूप सेवकको व्याहदूंगा यह कह मंत्रीको विदाकिया वह अत्यन्त शोचित होय अपने घरमें आया उसीदिन वादशाह ने अश्वपालकों में से एक गुलामको जो वहुतही वदसूरत और कुवड़ा और पेट उसका वहुत वड़ा और पांव टेढ़े मिरगीवाले रोगीके समान थे विवाह के निमित्त नियत किया और मंत्री को कहला भेजा कि अपनी पुत्री के विवाह की सामग्री तय्यारकर और काजीको साक्षियो सहित विवाह करने को वुला मंत्री ने अति ग्लानि से वादशाह की आज्ञापालन की रात्रिको मिसरनगर के गुलाम इकट्ठेहुये और मशालें हाथोंमे ले स्नानागारके किवाड़ पर उस कुवड़ेके आने की वाट देखते रहे कि उसे स्नानागार में लेजाय नहलाधुला दूलह वनाकर मंत्रीके घर व्याहने को लेजावें इतना उस अप्सराने कहा अब वह उसे दूलह वनारहे हैं मैंने जाकर देखा कि उस लड़की को भी नहलाधुला उस कुवड़े के वास्ते दुलहिन वनायीहै परन्तु पश्चात्ताप है कि वहमंत्री की कन्या ऐसी रूपवान् ऐसे अयोग्य भयानकरूप मनुष्य के साथ विवाही जावे जब वह अप्सरा इस वृत्तांतको कहचुकी पिशाचने [illegible] क्या ऋच्छीवातहै कि मंत्री की लड़की ऐसी सुंदरी [illegible] किशोरके साथ विवाही जावे अप्सरा

और द्वारों पर खड़े होकर उसको देखते और हँसते थे और कोई २ चिल्लाने वालों के साथ होकर शब्द करते और कहते थे कि यह सौदाई है परन्तु उसकी विक्षिप्तता का वृत्तांत किसीको विदित न था यहांतक कि वह बिचारा घबराकर एक हलवाईकी दूकानपरगया और दूकानके भीतर जाकर अपना पीछा उनसे छुड़ाया विदित हो कि यह हलवाई प्रथम पश्चिम कथाड़ियों का प्रधान था जो परदेशियोंको लूटा करते अब वह निंद्यकर्म को छोड़ दमिश्कमें वास करता था यद्यपि उसकी मिलनसारी और शीलसे उसनगरके वासी उससे प्रसन्न थे परन्तु अब भी बहुत से मनुष्य उससे डरते इसलिये उसके भयसे सब भागगये तब उसने बदरुद्दीन हसन से पूछा तू कौनहै और यहां क्योंकर आया उसने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त जन्म से विवाह पर्यंत विस्तारपूर्वक वर्णन किया और कहा इसभोर को मैंने अपने को इस नगरकी मसजिदके द्वारे पृथ्वीपर पड़ापाया यह अद्भुत चरित्र कुछ भी विदित नहीं कि क्योंकर मैं इस थोड़े समय में उन नगरों को लांघता हुआ यहां पहुँचा उस हलवाई ने उसका वृत्तांत सुन कहा तेरी कहानी अद्भुतहै इस वृत्तान्त को किसी से न कहियो मेरे संतान नहीं है मैं तुझे अपना पुत्र बनाया चाहता हूं जो तू भी प्रसन्नहोवे और इस विषयमें मनुष्यों के सन्मुख प्रतिज्ञा करे फिर तू हर्षपूर्वक इस नगरमें फिरियो मेरा पुत्र जान तुझे कोई न टोकेगा यद्यपि हलवाई की गोदमें बैठना उसको अनुचित और जाति हीनता का कारण था परन्तु उस आपत्ति की दशामें उसने इसे उत्तमजान स्वीकार किया फिर हलवाई ने उसे उत्तम २ वस्त्र पहिनाये और बहुतसे मनुष्यों को इकट्ठा किया और बदरुद्दीनहसन ने अपने को उनके सामने भी उसका पुत्र

कि बादशाहके अन्याय से बचाय और कुबड़े को धोखा दे उसी जगह इस मनुष्य को बिठाऊं और बादशाहके व्यर्थ क्रोधका बदलालूं कि उस दुलहिन और उसके पिताको लज्जाप्राप्त न हो और उस कुबड़े के बिवाह से उसकी जाति पांतिमें अप्रतिष्ठा न हो पिशाच ने अप्सरा से कहा यदि तू भी इस कार्य मे मेरी सहायता करे तो होसक्ताहै मैं इसके जागने के पहिले इसे यहां से उठाय कैरूमें लेजाताहूं तब पिशाच और अप्सरा दोनों इस कार्य में उद्यत हुये सो पिशाच बदरुद्दीनहसन को धीरे से उठा उसी स्नानागार के समीप जहां वह कुबड़ा गुलामों के साथ स्नानको आया था लेगया जब बदरुद्दीनहसन जगा अपने को एक समूह मे पा भयमान हो इच्छाकी चिल्लावे परन्तु पिशाचने कंधेपर उसकेहाथरख समझाया कि तू न बोलियो चुपकाहोरह और मशालको हाथ में ले इस समूह के साथ होले और मंत्री भवन में जाय जहां सब विवाह करने जाते हैं तू भी बेधड़क चलाचल और उस कुबड़े के दाहिनी ओर जिसका वृत्तांत तुझे अभी विदित होगा होकर निर्भय सभा मे जा और मुट्ठी २ रुपये अपनी थैली से निकाल गाने बजाने वालोंको जो दूल्हे के साथ जावेंगे दीजियो और सभा में पहुंचकर उन बांदियोंको जो दुलहिन के चारों ओर होंगी बहुत द्रव्य दीजियो चैतन्यरह अपनी थैलीमें कुछ न रखियो और जो मे कहताजाऊं वही कीजियो और किसी से भयभीत न हूजियो बदरुद्दीन उस पिशाच से यह बातें सुन और भलेप्रकार स्मरण रख स्नानागार के दरवाजे पर गया और पहिले उसने गुलामों के समान अपने हाथ मे मशाललेली और उस समूह में ऐसा मिला कि कैरूके बासियों में जानपड़नेलगा और उन सबके साथ कु-

उसमें से एकवस्तु वस्त्रमें लपेटी हुई पाई उसने उसे खोला तो उसमें एक पत्र जो नूरुद्दीन मंत्री ने अंत समय बदरुद्दीनहसन को लिखदिया था पाया बदरुद्दीन अपने पिता की निशानी को अपनी पगड़ी में रखताथा मंत्री ने वह पत्र देखतेही अपने भ्राताका पहिचान और एक द्रव्यसे भरीहुई थैली पाई और उस थैली के बीचमें इसहाकयहूदी के हाथ का लिखाहुआ पत्र दृष्टिपड़ा उसमें यह लिखाथा कि मैंने ६०००) रु० पर बदरुद्दीन के हाथ जहाज मोल लिया मंत्री बदरुद्दीन। इस विषय को पढ मूर्च्छित होगया और पत्र उसके हाथ से गिरपड़ा जब सुधि सम्हाली लड़की से कहा तुम्हारी प्रसन्नता बहुत ठीक है पति तुम्हारा चचेरा भाई है फिर उसने अपने भ्राता के पत्रकोउठा कईबेर चूमा और रोया उसका लेख यहथा कि मैं अमुक तिथिको कैरूसे बांसरा में आया अमुक तिथिको बिवाहहुआ और अमुक मुहूर्त्त में मेरा पुत्र बदरुद्दीन उत्पन्नहुआ शमशुद्दीन ने जब उन तिथियोंका मिलानकिया तो अपने और अपने भ्राताकी तिथि मुहूर्त्त बिवाह आदिक की एकही पाई और जिस मुहूर्त्त पर बदरुद्दीन उत्पन्नहुआ उस पर मंत्री के घर कन्याहुई इससे वह अत्यन्त आश्चर्यमें हुआ कि क्योंकर यह संयोग ठीक मिलगया इन गुप्तबातों के जानने से सब शोच और दुःख भूलकर प्रसन्नहुआ और वह पत्र और पगड़ी बादशाह के सम्मुख लेगया वह भी देख अत्यन्त हर्षित और अचंभे में हुआ और आज्ञाकी कि यह वृत्तांत हमारी इतिहास की पुस्तकों में लिखाजावे और शमशुद्दीन एक सप्ताहपर्यंत अपने भतीजे के आनेकी राह देखतारहा जब वह [illegible] समयांतर आया तब उसने सम्पूर्ण कैरू नगर में ...

बड़े के पीछे स्नानागार से नहाकर बाहर निकला और बादशाह के घोड़ेपर सवारहोके चला जब गाने बजाने वालोंके निकट पहुँचा तो एक मुट्ठी २ भर रुपये उनको देनेलगा जिससे वह सब प्रसन्नहुये और उसके रूप अनूपको देख अत्यन्त आश्चर्यमें हुये निदान इसीभांति देतालेता मंत्री शमसुद्दीन अपने चचाके द्वारपर पहुंचा तब चोबदारोंने सबको भीतरजाने न दिया तथा बदरुद्दीन को भी वर्जा परन्तु गानेबजाने वालोंने जिन्हें कोई न रोकसकता था धनके लोभसे बदरुद्दीनहसन की ओर सैनकर कहा इस मनुष्यको क्यों रोकते हो यह गुलाम नहीं किंतु अन्यदेश का वासीहै इस नगरमें बरात देखने आयाहै यह कह उनसबोंने बदरुद्दीनहसन का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचलिया और अपने साथ महलमें लेगये और मशाल उसके हाथसे ले और सभा में लेजाय दूल्हेके दाहिनी ओर जो तख्तपर दुलहिनके बराबर बैठाथा बैठाया यद्यपि वहदुलहिन अति सुन्दरी अप्सराके तुल्यथी परन्तु शोकके कारणमुरझाईहुई दिखाईदेतीथी उस समय मिसरकी स्त्रियां और बांदियां मोमी मशालें हाथोंमें लियेहुये और उस कुबड़ेका कुरूप देखएकमत होय कहनेलगी कि हम इसदुलहिनको इसमनुष्य अर्थात बदरुद्दीनहसनको देंगे इसकुरूप कुबड़ेको नहीं और बादशाहके इस विचार की जिसने चाहाथा कि रूपवान् स्त्रीकेसाथ कुरूपमनुष्यबिवाहाजावे उसका कुछ भय न किया [illegible] में ऐसाशब्द किया कि गाना बजाना बंद होगया क्षणमें [illegible] ॥ बजानेवालियां

कहीं न पाया परन्तु एक ओर देखा वह कुवड़ा दीवार के साथ लगा उलटा खड़ाहै पांव ऊपर शिर नीचे जैसा वह पिशाच उसे खड़ा करगया था उसके भयसे अटल खड़ा था मंत्रीने उसे इस दशामें देख पूंछा तुझे इसभांति किसने खड़ा किया कुवड़ेने मंत्री का शब्द पहिचान उत्तर दिया आपने मुझसे अच्छी हँसीकी कि महिषकी स्त्रीके साथ मेरा विवाह ठहराया वह सुन्दरी तो एक कुरूप पिशाचकी प्यारी हैं मन्त्री समझा कि यह बड़बड़ा रहाहै उसकी बातोंको सुनी अनसुनी कर कहा सीधा होकर खड़ा रह उस कुवड़े ने उत्तर दिया सूर्य उदय पर्यंत मैं हिल भी नही सक्ता क्योंकि मै रात्रि को बड़े दुःख में पड़ा प्रथम तो एक श्यामवर्ण बिल्ली मेरे सम्मुख आई और क्षणमात्र में और एक बड़ा महिष बनगई और जो कुछ उसने मुझसे कहा मैं नही भूला तुम मुझे इसी दशामें छोड़ अपना कार्य करो मन्त्रीने उस कुवड़ेको पकड़ सीधा करदिया सीधा होतेही वह कुवड़ा ऐसा भागा कि तनक भी न ठहरा और न पीछे फिरके देखा दौड़ताहुआ बादशाह के सम्मुख गया और अपने सम्पूर्ण वृत्तान्तको प्रकट किया बादशाह इस कहानी को सुन बहुतहँसा और मन्त्री अपनी पुत्रीके निकट आय कहने लगा क्या तू यह बातें सत्य कहती है कुँवरिने कहा इन सबके विशेष अपनी सत्यता की एक और साक्षी देतीहूं वह यह है इस कुरसीपर मेरे पतिकेवस्त्र रक्खेहैं उनको तुम भलीभांति देखो उनमेंसेही कोई ऐसी वस्तु प्रकट होगी जिससे तुम्हारे हृदय का सन्देह मिटजावे फिर उसने बदरुद्दीनहसन की पगड़ी उठाय मन्त्री को दी मन्त्री ने जब उसको चारोंओर घुमाकर देखा तो विदितहुआ कि यह बुस्सरल के वासियों के मन्त्रीकी पगड़ी है

एक तुममेसे यह कह आज हम यहखेल खेलते हैं कि प्रत्येक वि-
द्यार्थी अपने माता पिता का नाम वतलावे जो न वतावे तो हम
उसे जानेगे कि वह वर्णसंकर है हमारे साथ खेलने योग्य नहीं
निदान जव वह सव विद्यार्थी खेलने को इकट्ठे हुये उन्हों ने अ-
पने गुरुके उपदेशानुसार वही खेलखेलना आरम्भ किया और अ-
जव के चारो ओर होय एकने कहा आवो हमसव अपनी अपनी
पारी पारी से पिताका नाम वताते जावें और जो न वतासके उ-
ससे हम न खेलाकरेंगे उन सन वालकोने कहा वहुत उत्तम हम
सव इस खेलमे प्रसन्न हैं फिर एक एक ने प्रत्येक विद्यार्थी से नाम
पूंछना आरम्भ किया और तुरन्त उत्तर पाया सवोने ठीक ठीक
अपने मातापिताका नाम वताया जव यही प्रश्न अजव से किया उस
ने कहा मेरा नाम अजव है और मेरी माताका नाम हसना और
पिताका नाम शमशुद्दीनहसन जो वादशाहका मंत्री है उसके
वचन को सुन सव वालक वोलउठे अजव तू क्या कहता है यह
तेरे पिताका नाम नहीं किंतु तेरे नानाका नाम है अजवने उन्हें
कुवाच्यदे कहा क्या शमशुद्दीनहसन मेरा पिता नहीं उन सवो,ने
ठट्ठामार कहा वह तेरा पिता नहीं नाना है जो तुझे अपने पिता
का नाम विदित नही और तू नही वतासका तुझे उचित है आज से
तू हमारे साथ न खेलाकर यह कह वह सव वहांसे उठखड़े
हुये और उसे दुर्वाच्य कहने और हँसने लगे अजव अत्यन्त ल-
ज्जितहो रोनेलगा गुरु जो वहां समीपही यह सव वार्ता सुनता
था तुरन्त अजव के निकट चलाआया और कहा अजव क्या यह
सत्यहे शमशुद्दीन मुहम्मद तो तेरापिता नहीं तेरा मातामह अ-
र्थात् तेरी माता का पिता है और तेरे पिताका नाम

अजब ने बदरुद्दीन को भी अपने साथ बैठाया उन्होंने परस्परभलीभांति मलाई भोजनकी और भोजनके उपरांत अजबने प्रीतियुक्त वार्ताकर ताकीदकर कहा अपनी प्रीति कदापि प्रकट न करना और हमारे पीछे जानेकी इच्छा न करना बदरुद्दीन ने कहा मैं आपके कहने के विपरीत न करूंगा बदरुद्दीन ने मलाई न खाई क्योंकि अपने अतिथियों का सत्कार करतारहा जब अजब भोजनकरचुका बदरुद्दीन उसके हाथ धुलाकर एक अति उज्ज्वल वस्त्र हाथपोछने के लिये लेआया फिर उसने चीनी के पात्र में शरबत बनाया और कंदके ओलेडाल अजब को दिया और कहा यह गुलाबका शरबत अत्यन्त मिष्ठ स्वादिष्ठ है केवल इस नगर में ऐसा मेरी दूकानपर बनता है अजब उसे पानकर अत्यन्तहर्षित हुआ फिर बदरुद्दीन ने उसके रक्षकको भी दिया वह उसे एकही बेर पीगया फिर अजब और उसका सेवक बदरुद्दीन की कृतज्ञता कर अपने डेरेकी ओर चले और समसुद्दीन के डेरे मे पहुंचे अजब और उसका रक्षक अपनी दादी के डेरे में गये दादी उसे अपने कंठसे लगा रोई और कहा परमेश्वर मुझे वह दिन दिखाये कि मैं तुम्हारे पिताको देखूं और उसे भी अपने हृदय से लगाऊं फिर उसकी दादी रात्रिके भोजन के हेतु मेजपर बैठी और अजब को भी अपने साथ बैठाया और उसने इधर उधरकी बातें पूंछी और अजब नगरके सैर तमाशे आदिका वृत्तांत जो अपने रक्षकसहित देख आयाथा उससे कहने लगा फिर उसकी दादी ने उस से खानेको कहा अजबने न खाया और कहा इससमय मुझे कुछ इच्छानही फिर उसने एकटुकड़ा मलाईका उसे और उसके रक्षक को दिया यद्यपि यह मलाई आपही जमाईथी परन्तु वह पेटभरखा

पाया इससे अत्यन्त शोचितहुआ और विचारने लगा कि य
कहांगया और उसे क्या हुआ जो नहीं मिलता फिर उसने विवा
के मकान को सब विवाह की वस्तुसहित बंदकिया और बदरु
द्दीन के वस्त्र और पगड़ी को गठरियों में रक्षापूर्वक बांध एकमकान
में रक्खा और कुफुल लगाया और कई दिवस के पश्चात मंत्री
की पुत्रीने अपने को गर्भयुक्त पाया और नवमासके पश्चात् पुत्र
उत्पन्न हुआ उस सुन्दर पुत्र के पालन पोषणार्थ बहुत से मनुष्य
नियत किये और नाना ने उसका नाम अजबरक्खा जब अजब
सात वर्षकाहुआ मंत्री ने उस लड़के का पढ़ाना घरमें उचित न
जान उसे पाठशाला में जिसका गुरु अत्यन्त गुणवान् और बु
द्धिमान् था सौंपा और दो अनुचरसेवाके निमित्त उद्यत रहते ब-
हुधा अजब पद लिखकर अपने सहपाठियों से खेलाकरता जो वि-
द्यार्थी अजब से पदवी में न्यूनथे सो वह सब अपने गुरुकी आ-
ज्ञानुसार उसकी अत्यन्त प्रतिष्ठा और सत्कार करते इसकारण अ-
जब को अत्यन्त गर्व हुआ और बालकों को दुर्वाच्य कहाकरता
बहुधा मारता इससे वह सब उसकी संगतिसे दीन होगये और
इसबातको अपने गुरूसे कहा गुरूने उन्हें समझाया कुछ तुम इ-
सके दुर्वाच्यका बिलग न मानो क्षमा कियाकरो मैं उसे समझा-
ऊंगा और अजबको एकांत में लेजाय बहुत वर्जा परन्तु उसने
अधिक उनको दुःखदेना आरंभ किया तब गुरूने विद्यार्थियों से
कहा अजब मेरे समझाने से नहीं समझता दिन प्रतिदिन ढीठ
होताजाताहै तुमको अब मैं एकबात सिखाताहूं जिससे वह तुम्हें
फिर दुःख न पहुंचावेगा और शाला आना छोड़देगा वह यह है
कल जब तुम और वह खेलने को इकट्ठेहो तो तुम सब उसे घेरना

आयेथे सेवक और अजब ने उसकी ओर दृष्टिभी न की परन्तु दादी के कहने से उसे अपने सम्मुख रखलिया उसकी दादी ने उसके न खानेसे अत्यन्त आश्चर्य किया और कहा इस उत्तम मलाई को जो मैने अपने हाथसे बनाई है क्यों नहीं खाते इसभांति की मलाई केवल मैं और मेरापुत्र बदरुद्दीन जो तुम्हारा पिता है और मैंनेही उसे बनाना सिखाया है संसार भरमें कोई नहीं बना सक्ता अजब ने कहा यदि मेरा अपराध क्षमाहो तो विनय करूं इसनगर में एक हलवाई है मैंने उसकी दूकानपर बैठकर मलाई खाई है उससे तुम्हारी मलाई उत्तम न होगी यह वचन सुन उसकी दादी उस रक्षकसे अत्यन्त अप्रसन्न हुई और क्योंरे शावान तू मेरे बच्चेकी कैसी रक्षा करताहै उसने हलवाई की दुकान पर बैठ भिक्षुकों की भांति भोजन किया शावानने उत्तर दिया हम केवल उसकी दूकानपर सुस्ताने को बैठेथे हमने कुछ खाया पीया नहीं अजब ने उसको विपरीत कहा हम उसकी दूकान गयेथे मलाई भी खाईथी यह सुन वह अधिक शावानपर क्रोधित हुई और उसी कोपमें समसुद्दीन मुहम्मद के डेरे में जाकर उस ने इस वृत्तांत को कहा समसुद्दीन मुहम्मद अपनी भावज के डेरे में आया और शावानपर अति क्रोधित हुआ और कहा क्या यह सत्यहै शावानने इनकार किया परन्तु अजब ने अपने नानासे कहा हम दोनों ने उसकी दूकानपर बहुतसी मलाई खाई इससे हमें इस समय भोजन करनेकी इच्छा अपनी दादी के साथ न हुई इसके विशेष उसहलवाई ने हमें शरबत भी पिलायाथा समसुद्दीनमुहम्मदने शावान से कहा क्योंरे तू मुझसे असत्य कहताहै उसकी दूकान पर नहीं गये न वहां बैठ कुछ खाया शावानने फिर

एक तुममेसे यह कह आज हम यहखेल खेलते हैं कि प्रत्येक वि-
द्यार्थी अपने माता पिता का नाम बतलावे जो न बतावे तो हम
उसे जानेगे कि वह वर्णसंकर है हमारे साथ खेलने योग्य नहीं
निदान जब वह सब विद्यार्थी खेलने को इकट्ठे हुये उन्हों ने अ-
पने गुरुके उपदेशानुसार वही खेलखेलना आरम्भ किया और अ-
जब के चारो ओर होय एकने कहा आवो हमसब अपनी अपनी
पारी पारी से पिताका नाम बताते जावे और जो न बतासके उ-
ससे हम न खेलाकरेंगे उन सब बालकोने कहा बहुत उत्तम हम
सब इस खेलमे प्रसन्न हैं फिर एक एक ने प्रत्येक विद्यार्थी से नाम
पूंछना आरम्भ किया और तुरन्त उत्तर पाया सबोने ठीक ठीक
अपने मातापिताका नाम बताया जब यही प्रश्न अजब से किया उस
ने कहा मेरा नाम अजब है और मेरी माताका नाम हसना और
पिताका नाम शमशुद्दीनहसन जो बादशाहका मंत्री है उसके
वचन को सुन सब बालक बोलउठे अजब तू क्या कहता है यह
तेरे पिताका नाम नहीं किंतु तेरे नानाका नाम है अजबने उन्हें
कुवाच्यदे कहा क्या शमशुद्दीनहसन मेरा पिता नही उन सबो,ने
ठट्ठामार कहा वह तेरा पिता नही नाना है जो तुझे अपने पिता
का नाम विदित नही और तू नही बतासका तुझे उचित है आज से
तू हमारे साथ न खेलाकर यह कह वह सब वहांसे उठखड़े
हुये और उसे दुर्वाच्य कहने और हँसने लगे अजब अत्यन्त ल-
ज्जितहो रोनेलगा गुरु जो वहां समीपही यह सब वार्ता सुनता
था तुरन्त अजब के निकट चलाआया और कहा अजब क्या यह
सत्यहै शमशुद्दीन मुहम्मद तो तेरापिता नहीं तेरा मातामह अ-
र्थात् तेरी माता का पिता है और तेरे पिताका नाम हमें भी नि-

भी मन्त्री के भयसे इन्कार किया और झूठी सौगन्दखाई कि हमने उसकी दूकान पर कुछ नही खाया समसुद्दीन मुहम्मद ने कोपित हो भलीभांति दण्ड दिया यहांतक कि बेचारा शावान मानगया और कहा उस हलवाई की मलाई अजवकी दादीसे अधिक स्वादिष्ठथी अजवकी दादी ने अप्रसन्नहो कहा तू असत्य कहता है कभी उसकी मलाई मेरी से उत्तम न होगी फिर उसने शावान से कहा मेरे वास्ते तू वही मलाई ला सो वह बदरुद्दीनकी दूकान पर गया उसे कुछ द्रव्य दे कहा मुझे मलाई दे मेरी स्वामिनी ने मँगवाई है बदरुद्दीन ने उसे एकपात्रमे मलाई दे कहा यह मलाई बहुत उत्तम बनीहै इसको केवल मैं और मेरी माता बनासक्ते हैं शावान ने उसे लाकर अजबकी दादीको दी वह खातेही मूर्च्छित होगई समसुद्दीनमुहम्मद इसदशा को देख अत्यन्त दुःखित हुआ और उसके मुंहपर गुलाबनीर छिड़क। जब वह चैतन्यहुई कहने लगी यह मलाई अवश्य मेरे पुत्र बदरुद्दीनकी बनाईहुई है समसुद्दीनको जब भलीभांति विदित हुआ इसका बनानेवाला बदरुद्दीनहसनहै अत्यन्त हर्षित और प्रसन्नहुआ परन्तु प्रकट मे अपनी भावज से कहा क्या और कोई संसार मे तुम्हारे पुत्र के सिवाय नही बनासक्ता उसकी भावज ने कहा निःसन्देह इस मलाई को सिवाय बदरुद्दीन के और किसीने नहीं बनाया मन्त्री ने कहा जराठहर मैं उसे बुलवाताहूं तुम और तुम्हारी बहू जिन्होंने उसेदेखा है पहिंचान लेना यदि वहीहै तो हम उसे तुरन्त अपने साथ लेकर कैरू में चलें यह कह समसुद्दीनमुहम्मद वहां से अपने डेरेमे आया और पचास सिपाहियो को आज्ञादी तुम एक एक लाठी अपने हाथ में लो और शावान के साथ यहां के वासी हलवाईकी दूकान

पाया इससे अत्यन्त शोचितहुआ और विचारने लगा कि यह कहांगया और उसे क्या हुआ जो नहीं मिलता फिर उसने विवाह के मकान को सब विवाह की वरातसहित बंदकिया और वदरुद्दीन के वस्त्र और पगड़ी को गठरियों में रक्षापूर्वक बांध एकमकान में रक्खा और कुफुल लगाया और कई दिवस के पश्चात् मंत्री की पुत्रीने अपने को गर्भयुक्त पाया और नवमासके पश्चात् पुत्र उत्पन्न हुआ उस सुन्दर पुत्र के पालन पोषणार्थ बहुत से मनुष्य नियत किये और नाना ने उसका नाम अजबरक्खा जब अजब सात वर्षकाहुआ मंत्री ने उस लड़के का पढाना घरमें उचित न जान उसे पाठशाला में जिसका गुरू अत्यन्त गुणवान् और बुद्धिमान् था सौंपा और दो अनुचरसेनाके निमित्त उद्यत रहते बहुधा अजब पढ़ लिखकर अपने सहपाठियों से खेलाकरता जो विद्यार्थी अजब से पदवी में न्यूनथे सो वह सब अपने गुरुकी आज्ञानुसार उसकी अत्यन्त प्रतिष्ठा और सत्कार करते इसकारण अजब को अत्यन्त गर्व हुआ और बालकों को दुर्वाच्य कहाकरता बहुधा मारता इससे वह सब उसकी संगतिसे दीन होगये और इसबातको अपने गुरूसे कहा गुरूने उन्हें समझाया कुछ तुम इसके दुर्वाच्यका बिलग न मानो क्षमा कियाकरो मैं उसे समझाऊंगा और अजबको एकांत में लेजाय बहुत वर्जा परन्तु उसने अधिक उनको दुःखदेना आरंभ किया तब गुरूने विद्यार्थियों से कहा अजब मेरे समझाने से नहीं समझता दिन प्रतिदिन ढीठ होताजाताहै तुमको अब मैं एकबात सिखाताहूं जिससे वह तुम्हें फिर दुःख न पहुंचावेगा और शाला आना छोड़देगा वह यह है कल जब तुम और वह खेलने को इकट्ठेहो तो तुम सब उसे घेरना

पर जावो और जब वहांपहुँचो तो जो बरतु उसकी दूकानपर पावो उसे तोड़डालो जो वह तुमसे उसका कारण पूंछै तो कुछ न कहना किन्तु उससे पूंछना तूनेही वह मलाई बनाई है जो शावान लेगयाहै और तुरन्त उसे बांध मेरे निकट लेआना परन्तु उसे न मारना औरन किसी भांतिका दुःख देना तुरन्त जावो देर नकरो सो पचास सिपाही मन्त्री की आज्ञानुसारशावाने के साथ बदरुद्दीनकी दूकानपर गये और सब बरतन जो उसकी दूकानपर रक्खे थे तोड़ फोड़ चूर्णकर दिये और मिठाई आदि फेंक फांकदी बदरुद्दीन इस दशाको देख अत्यन्त दुःखित हुआ और नम्रतापूर्व्वक उनसे पूंछा भाइयो मैंने तुम्हारा कौनसा अपराध किया जिससे दण्ड देतेहो उन्होंने कहा वह मलाई जो तुमने शावान के हाथ बेचीथी तुम्ही ने बनाई है वा नही बदरुद्दीन ने कहा हां मैंने उसे अपने हाथ बनाईथी और मैं प्रतिज्ञाकरताहूं इस नगर में सिवाय मेरे और कोई वैसी नही बनासक्ता इस वचन के सुनतेही उन्होंने चारो ओरसे उसे घेरलिया और उसकी पगड़ीसे उसके हाथ पांव बांधलिये बाजारके मनुष्य यह दशा देख इकट्ठेहुये और चाहा कि समसुद्दीन मुहम्मद के सेवको से बदरुद्दीन को छीनलें परन्तु अशक्त थे निदान मन्त्री के डेरे में लेगये समसुद्दीन उस समय दमिश्कके बादशाहके सम्मुख ले गये समसुद्दीन उस समय दमिश्क के बादशाहके सम्मुख गयाथा कि उसे विदित करे कि जिसकी ढूंढमे मैं निकलाथा उसे मैंने पाया परन्तु थानेदारो को आज्ञाहो कि मेरे काममे कोई बाधक न हो किन्तु यथोचित मेरी सहायता करे जब समसुद्दीन अपने डेरे मे आया सिपाहियो ने बदरुद्दीन को मन्त्री के सम्मुख ला खड़ाकिया बदरुद्दीन ने रोके मन्त्री से पूंछा स्वामी

क तुममेसे यह कह आज हम यहखेल खेलते हैं कि प्रत्येक वि-
द्यार्थी अपने माता पिता का नाम वतलावे जो न वतावे तो हम
उसे जानेगे कि वह वर्णसंकर है हमारे साथ खेलने योग्य नही
निदान जब वह सब विद्यार्थी खेलने को इकट्ठे हुये उन्हों ने अ-
पने गुरुके उपदेशानुसार वही खेलखेलना आरम्भ किया और अ-
जब के चारो ओर होय एकने कहा आवो हमसब अपनी अपनी
पारी पारी से पिताका नाम बताते जावे और जो न वतासके उ-
ससे हम न खेलाकरेगे उन सब बालकोंने कहा बहुत उत्तम हम
सब इस खेलमें प्रसन्न हैं फिर एक एक ने प्रत्येक विद्यार्थी से नाम
पूंछना आरम्भ किया और तुरन्त उत्तर पाया सबोंने ठीक ठीक
अपने मातापिताका नाम बताया जब यही प्रश्न अजब से किया उस
ने कहा मेरा नाम अजब है और मेरी माताका नाम हसना और
पिताका नाम शमशुद्दीनहसन जो बादशाहका मंत्री है उसके
वचन को सुन सब बालक बोलउठे अजब तू क्या कहता है यह
तेरे पिताका नाम नही किंतु तेरे नानाका नाम है अजबने उन्हें
कुवाच्यदे कहा क्या शमशुद्दीनहसन मेरा पिता नही उन सबों ने
ठट्ठामार कहा वह तेरा पिता नही नाना है जो तुझे अपने पिता
का नाम विदित नही और तू नही वतासका तुझे उचित है आज से
तू हमारे साथ न खेलाकर यह कह वह सब वहांसे उठखड़े
हुये और उसे दुर्वाच्य कहने और हँसने लगे अजब अत्यन्त ल-
ज्जितहो रोनेलगा गुरु जो वहां समीपही यह सब बातें सुनता
था तुरन्त अजब के निकट चलाआया और कहा अजब क्या यह
सत्यहै शमशुद्दीन मुहम्मद तो तेरापिता नहीं तेरा मातामह अ-
र्थात् तेरी माता का पिता है और तेरे पिताका नाम हमें भी नि-

मैंने आपका कौनसा अपराध किया जिससे मेरी आपने दूकान लुटवाई और मुझे अप्रतिष्ठा और दुर्गतिसे पकड़ बुलाया मन्त्रीने उत्तर दिया तू वही है जिसने अपने हाथ से मिठाई बनाकर मेरे सेवकके हाथ वेची बदरुद्दीनहसन ने कहा निःसन्देह मैं वहीहूं समसुद्दीनमुहम्मद ने कहा यही तेरा अपराधहै इस वास्ते मैंने तुझे पकड़वाय बुलवाया अभी तुझे कुछ दण्ड नहीं मिला इससे अधिक तुझे दण्ड दूंगा किन्तु तेरे प्राणलूंगा तूने ऐसी बुरी मलाई मेरेवास्ते भेजी बदरुद्दीन ने कहा जो कोई बुरी मलाई जमावे वह अपराधी होताहै मन्त्री ने कहा निस्सन्देह सो इधर यही वार्त्ता होरही थी उसकी माता और स्त्री अपने डेरोंमें से उसे देख पहिंचान मूर्च्छित होगई जब सुधिहुई उन्हों ने दौड़कर बदरुद्दीन से लिपटना चाहा परन्तु प्रथम से समसुद्दीन ने उनसे यह प्रण कियाथा जबतक मैं न कहूं तुम उसके निकट न जाना न उसको अपना दर्शन देना निदान वह स्त्रियां सन्तोष रख चुप हो रही मन्त्री उसीदिन तैयारीकर भोरको वहांसे मिसरकी ओरको चला बदरुद्दीन को सन्दूक में बन्द कर ऊंटपर लाद अपने साथ ले चला सन्ध्याको उसे निकाल कर बैठाता और फिर उसे बन्द कर रखता इसीभांति मन्त्री नगरके निकट पहुंच एक स्थानपर उतरा और उसे अपने सम्मुख निकलवा कर बैठाया और उसके सम्मुख एक बढ़ई को आज्ञादी एक लकड़ी शूली की तुरन्त बना बदरुद्दीन ने मन्त्री से पूंछा यह किसके निमित्त शूली बनती है मन्त्रीने उत्तर दिया कल रात्रिको नगरमें प्रवेश करूंगा और तुझे इस काठपर बैठाय सम्पूर्ण नगरमें फिराऊंगा और तेरे आगे एक मनुष्य यह डौंड़ी पीटता जावेगा कि यह उस मनुष्यका दण्डहै जो

दित नही इतना जानताहूं बादशाह ने चाहाथा तेरी माताका वि: वाह एक कुबड़े अश्वपालसे करें परन्तु किसी पिशाचने उसे नि- कालदिया और आपतेरी माता के साथ भोग किया अब तू वि- द्यार्थियों को दुःख न दियाकर अजब इसवचन को सुन तुरन्त रोता हुआ अपनी माता के समीप गया और मासे कहा परमेश्वर के वास्ते मुझे बता मेरा पिता कौन है उसकी माताने उत्तर दिया हे मेरे प्रियपुत्र ! तेरा पिता शमशुद्दीन है जो तुझे नित्य प्यार क- रता है अजब ने कहा तू मुझसे असत्यकहती है वह मेरा पिता नहीं किंतु तेरा पिताहै मेरे पिताका नाम बता में किसका पुत्रहूं उसकी माता प्रथम संगकी राति और अपने पतिके खोजाने को स्मरण कर रुदनकरनेलगी यह दोनों मा बेटे रोरहेथे इतनेमें मंत्री शमशुद्दीन आया और उनसें रोनेका कारण पूंछा अजबकी माता ने विद्यार्थियोसे लज्जितहोने का हाल विस्तारपूर्वक कहा मंत्री भी उसके साथ रोनेलगा और अत्यन्त शोचयुक्त हो अपने मनमें कहा बड़ापश्चात्ताप है कि मेरी लज्जाका हाल संपूर्ण नगर में ख्यात है और सब छोटेबड़े जानते हैं इसी भांति रोता हुआ बादशाह के सम्मुख गया और उसके चरणों पर गिर विनय कर कहा कि थोड़े दिनों की मुझे छुट्टी मिले तो मैं अपने भतीजे ब- दरुद्दीनहसनको मुख्य मुख्य नगरों और विशेष बसरा में जाय ढूंढूं क्योंकि इस सेवक को इसकुवाच्य सुनने से धीर्य नहीं है कि नगरके बासी कहते हैं कि मेरी पुत्री ने पिशाच से पुत्र उत्पन्न किया बादशाह भी बहुत पछताया और उसकी इच्छा स्वीकार की और स्थान स्थानपर राहदारी के पत्र अपने भृत्यों और बाद- शाहोंके नाम इस विषयमे लिखवाकर उसके साथकिये कि जिस

मलाई में काली मिर्च नहीं डाली वदरुद्दीन यह बचन सुन रोने लगा और कहा मैं कल इस दुर्दशा से मलाई में कालीमिर्च न डालने के कारण मारा जाऊंगा इतना कह मलका शहरजाद ने शहरयार से कहा खलीफ़ाहारूंरशीद यद्यपि गम्भीरथा मन्त्रीजा-फरसे यह वृत्तान्त सुन ठट्ठा मार हँसा वदरुद्दीनहसनने कहा हे परमेश्वर! कहीं ऐसाभी होताहै और किसीने सुनाहै कोई मनुष्य इतने अपराधके कारण लूटलिया जावे और पकड़कर शूली दिया जावे इतना अन्याय केवल इतनेही अपराधपर कि मलाईमें काली मिरच क्यों न डाली मुसल्मानोके न्यायके विरुद्धहै इसीभांतिकी बातें कर रुदन करता और कहता ऐसी मलाई बनाने पर धिक्कारहै इससे मैं संसारमें उत्पन्न न होता इसी समय परमेश्वर ऐसा करे कि मैं मर जाऊं कि ऐसी अप्रतिष्ठाके मरने से छूटूं यह विचार कर वदरुद्दीन रोताथा इतने में लकड़ी मन्त्री के सम्मुख लाईगई और उसके शिरपर लोहेकी सलाख लगाईगई जिसे देख वदरुद्दीनहसन बहुत घबराया और कहने लगा न तो मैंने किसीकी चोरीकी न किसीको मारा और न कुछ अपने धर्म्म में विपरीतताकी केवल इतनीही बात के वास्ते कि मैंने मलाई में कालीमिरच न डाली मुझे शूली देंगे फिर जब सन्ध्याहुई मन्त्री समसुद्दीनने आज्ञाकी कि इसे उसी सन्दूकमें बन्दकरो और उसकी ओर देख कहा तू आज रात्रिको इसी में रहेगा कल मैं तुझे नगरमे लेजाय वध करूंगा सो उसे सन्दूक में बन्द किया और उसी ऊंट पर चढ़ाया और मन्त्री अपने वाहनपर चढ़ा और आज्ञादी कि इस ऊंटको मेरे आगे लेचलो और वह बड़ी धूमसे कैरुमें पहुँचा और अपने घरमें प्रवेश कर आज्ञादी इस संदूक को उतारो परन्तु खोलना नहीं जब सब

नगरमे वा देशमें बदरुद्दीन नामक मेरे मंत्रीका भतीजाहो उचितहै कि उससे इसकी भेंट करादे और उसकी यथावस्थित सहायताकरे जो मेरी यह आज्ञा पालनकरेगा मैं उससे अति प्रसन्नहूंगा शमशुद्दीन मुहम्मद अपने स्वामी की इस दयालुतापर कृतज्ञहुआ और फिर उसके चरणों को चूम विदाहुआ और अपनी पुत्री और नवासे को साथले वहांसे निकला और बीस दिवस के अन्तर मे दमिश्क में पहुंचा और नदीके तटपर जो उस नगर के नीचे बहतीथी डेरे खड़े किये और अपने सेवकों को आज्ञादी कि इस नगरमें जावो और जो कुछ चाहो बेचो और मोललो बहुतसे मनुष्य जो मिसरसे वस्तु लायेथे उन्होंने बेचा और वहां की उत्तम उत्तम वस्तु मोलली और मंत्री बदरुद्दीन को ढूंढनेलगा एक दिवस अजब भी अपने कई सेवकों के साथ दमिश्क नगर मे गया उस नगरके मनुष्य उस स्वरूपको देख अत्यन्त प्रसन्नहुये और उसके चारो ओर इकट्ठे हुये अकस्मात फिरते २ बदरुद्दीन की दुकानपर गये और उस दुकान पर उन्होंने विश्राम किया क्योंकि मनुष्यों के एकत्र होनेसे घबरागये थे और वह हलवाई जिसने कि बदरुद्दीन को गोद बैठायाथा मरगयाथा और अपना धन बदरुद्दीन को देगया और बदरुद्दीन की हलवाइयों मे बड़ी प्रतिष्ठा थी क्योंकि वह मिठाई बनाने में बहुत प्रवीणथा बदरुद्दीन ने अपनी दुकान पर भीड़ देखी और उस समूह में उसकी दृष्टि अजब पर पड़ी देखतेही प्रीति उत्पन्नहुई और बेबशहो उसे देखनेलगा परन्तु प्रीति का कारण न जानताथा यद्यपि नगरके वासी भी उसे प्रीतिकी दृष्टिसे देखते परन्तु बदरुद्दीनको अपने रुधिरसे उत्पन्नहोने के कारण अधिक मोह उपजा यहां तक कि बदरुद्दीन अपनी दु-

असबाब उतारागया मन्त्री ने अपनी पुत्रीको एकान्त में लेजाय कहा परमेश्वर का धन्यवादहै तुम्हारा पति मिला आज तुम उसी भांति अपना शयनस्थान अलंकृत करो जैसा कि विवाह को सजाहुआथा और प्रत्येक वस्तुको उसी मकानमें उसीभांति रक्खो जिस प्रकार उस रात्रिको रक्खीगई थी जो कुछ तुम्हें भूला होगा मैं तुम्हें स्मरण कराढूंगा निदान उस मन्त्री की पुत्री ने अपनी पुत्रीकी आज्ञा पालनकी और प्रत्येक वस्तुको उसी स्थान पर रक्खा उसी भांति सिंहासन बिछायागया और मोमकी बत्तियां जलाईगई जब वह मकान पूर्व्वकी भांति अलंकृत हुआ शमशुद्दीन मुहम्मद ने आप वहां जाय बदरुद्दीन के वस्त्र जिसे वह विवाहकी रात्रिको पहिने था उसी द्रव्यकी थैलीसहित रक्खे जैसा कि बदरुद्दीन रखकर अपनी स्त्रीके साथ सोगयाथा तदनन्तर मन्त्री ने अपनी पुत्रीसे कहा तू रात्रिके चीर पहिर और उसी दिनके समान शय्यापर रह जब बदरुद्दीनहसन इस मकान से आवै तुझे जगावै तू उसके आनेका आश्चर्य न करना किन्तु उसे अपने समीप सुलाना और भोरको जो कुछ परस्पर वार्त्ताहो अपनी सास और मुझसे कहना इतने में भोर हुआ मलकाशहरजाद इस कहानीको यहींतक छोड़ चुप होरही फिर जब रात्रिहुई बादशाह को इसकहानीकी लालसा से रात्रिभर निद्रा न आई और नियमित समय पिछलेपहर आप मलका को जगाया और कहा उस चरित्र की समाप्ति में क्या हुआ मलका इस भांति वर्णन करने लगी कि मन्त्री शमशुद्दीन ने आज्ञादी कि केवल इस मकान में दो वा तीन बांदियांरहैं जब रातहुई और अनुमान पहररात्रिके व्यतीतहुई मन्त्री ने बदरुद्दीनहसन को सन्दूकसहित उस मकान के समीप भिजः

समझाबुझाकर फेरा वहउसी दशामें नगरको लौट आया और अपने को धिक्कार देनेलगा कि क्यों अपनी दुकान छोड़ ऐसों के पीछे गयाथा यदि मुझसे शंका न होती तो कदापि मुझे इस निर्दयतासे न मारता निदान वह अपने घरमें आया और घावपर पट्टी बांधी फिर दुकानपर गया उसका चचा अर्थात् मंत्री शमशुद्दीन तीन दिवस ठहर और, और नगरों में अर्थात् हलब, मार्दीन, मवस्सल, सरवर आदिमें गया और प्रत्येक नगरमें अपने भतीजे को ढूंढ़ताहुआ बांसरा में पहुंचा और वहांके बादशाह से भेंटकी बादशाह नें उसपर बहुत कृपाकर आगमनका कारण पूंछा शमशुद्दीन मुहम्मद ने विनयकी मै नूरुद्दीन अपने भाई के पुत्र वदरुद्दीन को ढूंढ़ने आयाहूं यदि कुछ आपको उसका वृत्तान्त विदितहो तो मुझे बतलाइये बादशाहने कहा बहुत दिनहुये नूरुद्दीन कालवशहुआ और उसका पुत्र वदरुद्दीन अपने पिता के मरने के दोमास पश्चात् यहांसे कहीं चलागया उसका कुछ भी वृत्तांत मुझे मालूम नहीं बहुत ढूंटने पर भी उसका मुझे कुछ पता नहीं मिला परंतु उसकी माता हमारे मंत्री की स्त्री अबतक जीती है शमशुद्दीन मुहम्मदने अपनी भावजसे भेंट करने और उसे अपने साथ मिसरमें लेजाने की आज्ञाली और दूसरे दिन तक उसका वासस्थान पूंछकर अपनी पुत्री और नवासे सहित गया वह एक बहुत अच्छे घरमे रहती थी शमशुद्दीन मुहम्मदने प्रथम उसके घरके द्वारपर जाकर नूरुद्दीन का नाम जो एकपाट पर सुनहले वर्णों में लिखाथा चूंबा फिर उसने उन मनुष्यों से जो उसघरमें रहते थे अपनी भावजको पूंछा कि वह कहां है उन्हों ने कहा कि वह बहुधा अपने पति की कबरपर रहती है और अपने

वाया और सन्दूक से निकाल मिरजई आदिक वस्त्र पहिनाये और मकान के भीतर छोड़ बाहरसे बन्द करने को आज्ञादी बदरुद्दीन हसन दुःख के कारण ऐसा अचेत सोगया कि मन्त्रीके सेवकों ने उसे सन्दूक से निकाल नंगा किया और उसे मकान में लेगये तदनन्तर जब वह मकान में पहुंचकर जगा उसने अपने को एकान्त उस कोठेमें पाया और चारोंओर विवाह की सामग्री देख अपने विवाह की रात्रि स्मरण करके उसे पहिचाना कि यह वही मकान उसी स्त्रीकाहै जिसमें मैंने बादशाहके कुरूप अश्वपालक को देखाथा अत्यन्त आश्चर्य में हुआ और उसके भीतर अपने वस्त्र देखे कि उसी भांति रक्खे हैं इससे वह अधिक विस्मित हुआ और कहनेलगा हे परमेश्वर! यह क्या बातहै क्या मैं स्वप्न अवस्था मे देखताहूं वा जाग्रत् में इतने में उसकी स्त्रीने मसहरीसे शिर निकाल मुख बदरुद्दीनहसन की ओर कर बड़े प्यार से कहा हे मेरे प्रियप्रीतम! तुम किवाड़पर खड़े क्या करतेहो शय्यापर आय आनन्द करो जब जगकर तुम्हे शय्यापर न पाया अत्यन्त आश्चर्य में हुई और चिरकाल पर्य्यन्त जागती और तुम्हारे आगमकी बाट देखतीरही बदरुद्दीन उस वचन को सुन अत्यन्त हर्षित हुआ वह शोक और भय जो उसे मन्त्री से प्राप्तहुआ था भूल गया और उसके मुखका वर्ण बदल गया और उस स्त्री को वैसाही रूपवान् मनहरण पाया जैसाकि विवाह की रात्रिको देखा था फिर मकान के भीतर गया और मनमें शोचनेलगा क्योंकर दशवर्ष की अवधि एक रात्रि में बीती तदनन्तर उस स्थानपर गया जहां उसके वसन और द्रव्यकी थैली रक्खीथी उसे वहीं और उसीभांति रक्खाहुआ पाया कि कुछ भी अन्तर नही था बड़े शब्द

पुत्रके चित्रको देखकर जो बहुत दिनसे गुप्त होगया है प्रतिदिन रोती और नानाप्रकार के कष्ट सहती है निदान समसुद्दीन मुहम्मदने घरके भीतर प्रवेश कर सम्पूर्ण वृत्तांत विवाहादिका अपनी भावज से कहा और अपनी पुत्री और नवासे को दिखाया वह स्त्री कि बदरुद्दीन के मिलनेसे निराशथी इस वृत्तांत और अपने बहूबेटे के देखने से हर्षित हुई उस समय उसे विश्वास हुआ कि मेरापुत्र जीताहै फिर उठ अपनी बहू और अजब को कण्ठसे लगाया और प्यारकिया और अजब के रूप और मुखको अपने पुत्रके समान देख अत्यन्त प्रसन्नहुई फिर उसे अपने हृदयसे लगा बदरुद्दीनहसनको स्मरणकर रुदन करनेलगी समसुद्दीन मुहम्मद ने कहा हे सुन्दरी ! यह रोनेका समय नहीं किन्तु हर्षका है अब तुम इसशोक को अपने मनसे परित्यागकर मेरे साथ मिसरको चलो मैंने बादशाह से तुम्हे अपने साथ लेजाने की आज्ञालेली है और मुझे परमेश्वर से परिपूर्ण आशाहै कि बदरुद्दीनहसन तुम्हारा पुत्र अवश्य हमको मिलेगा और मेरी पुत्री के विवाहका अद्भुत चरित्र इसकी पुस्तकों मे लिखने के योग्य है उसकी भावज इसवृत्तांत को विस्तारपूर्वक सुनके प्रसन्नहुई और तुरन्त यात्राकी तय्यारी की चलते समय समसुद्दीन मुहम्मद फिर वहां के बादशाह के पाससे बिदाहोने गया बांसराके बादशाह ने मिसर के नरेशकी प्रसन्नता के लिये दिव्य सौगातें और उत्तम २ वस्त्र और पारितोषकादि दे उसे बिदाकिया समसुद्दीन मुहम्मद फिर अपने कुटुम्बसहित दमिश्ककी ओर चला और नगरमे पहुंच कर नगर के बाहर डेराकिया और बादशाह से भेटकरने को वहां की बहुत अच्छी २ वस्तु लेनेको तीन दिनतक ठहरा ॥

से कहनेलगा हेपरमेश्वर! यह क्या बातहै जिसे नतो मैं कुछ समझ सक्ता न विचार सक्ताहूं उस सुंदरीने दूसरी बेर कहा हे पति! शय्या पर आके शयनकरो खड़े क्या शोचते हो इस वचनको सुन शय्याके समीप खड़ाहुआ और कहा हे सुंदरी! सच कहो मुझे तुम से बिछुड़े कितना समयांतर हुआ होगा उसने कहा मुझे तुम्हारे इस प्रश्नसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ अभी तो तुम सोतेहुये शय्यापर से उठे बदरुद्दीन हसनने कहा तुम क्या कहती हो हां यह सत्य है एक रात्रि मैं तुम्हारे साथ सोया परन्तु इसे दशवर्ष का समयांतर हुआ और तबसे मैं दमिश्कमे था कुछ नही जानाजाता यह वही रात्रिहै जिसमें मेरा विवाह तुम्हारे साथ हुआ वा नहीं जो वहीरात है तो दशवर्ष पर्य्यन्त मैं क्यों तुमसे बिछुड़ारहा अब तुम मुझे बताओ मैं कौनसी बातको सच जानूं दशवर्षके वियोगको स्वप्न समझूं व इस बातको उसकी पत्नीने उत्तर दिया क्या तुम विक्षिप्त होगये हो कि तुम यह कहतेहो कि मैं दमिश्कमे था बदरुद्दीन इस वचनको सुन हँसा और कहा यह बड़ी हँसी की बातहै क्योंकि दमिश्कके द्वार पर यही बसन पहिने पडाथा और वहांके वासी मुझे देख हँसते और ठट्ठामारते यहां तक कि वहांसे मै भागा और एक हलवाई की दूकान में जाछिपा उसने मुझे गोद बैठाया और अपना जाति कार्य सिखाया और अंत समय अपना धन सौंपा सो मैं उसी दूकानपर बैठ दशवर्ष पर्यंत कालक्षेप करता रहा एक मंत्री कहींसे उस नगरमे आया उसका पुत्र अत्यन्त स्वरूपवान् और सुकुमारथा जिसके देखने से मुझे प्रीति उत्पन्नहुई एक दिन वह अपने सेवक सहित मेरी दूकान पर आया और मलाईले वहीं बैठ खाई जब वह अपने पित.के डेरे मे गया तब उस मंत्रीने बालके

और उत्तम २ वस्तु आदिके देखनेमें जो व्यापारी वहांके लाते थे प्रवृत्तहुआ अजब ने अपने नानाको उक्तकार्य मे लगादेख अपने रक्षक सेवकों से कहा मुझे नगरमे लेचलो कि मैं भलीभांति देखूं और उस हलवाई को जिसे पत्थरसे माराथा उसका हाल मालूम करूं क्योंकि उसवेर मुझे इतनासावकाश न मिलाथा कि अच्छे प्रकार देखता वह सेवक स्वीकारकर, उसकी माताकी आज्ञालेने उपरांत नगरकी ओर गया और फिरदोसीनाम नगरके दरवाजे से होकर चौक मे जहां बहुत उत्तम वस्तु विकती थी लाया और धीरेधीरे देखते भालते मध्याह्नसमय में बदरुद्दीनहसन की दूकानपर पहुंचा और बदरुद्दीनहसन को अपने कार्य में प्रवृत्तदेख प्रणाम किया और कहा तुम मुझे पहिचाने हो और कुछ तुमको स्मरण है प्रथम भी तुमने मुझे देखाथा बदरुद्दीनहसनको अजब के इस वचन सुनने और उस की ओर देखतेही अति प्रीति उमँगी और पहले कीसी उसकी दशाहुई कुछ कहने सुनने बिना विह्वलहो खड़ारहगया थोड़ीदेर के पश्चात् नम्रता और विनयपूर्वक कहा हेस्वामी! अपने सेवकसहित एकक्षण मेरी दूकानपरठहरो और थोड़ीसी मलाईखाओ पश्चात्ताप है कि मैंने आपको नहीं जाना नहीं तो मैं आपको अवश्य ठहराता अजब ने कहा यदि तुम पहली वेरकी भांति हमारा पीछा न करो तो हम तुम्हारी दूकानपर बैठते हैं और हम कलभी तुम्हारी दूकानपर आवेंगे किंतु जबतक मेरा नाना यहां ठहराहै हम प्रतिदिवस एकवेर तुम्हारे यहां आया करेंगे बदरुद्दीनने कहा जैसा आपकहते हैं वैसाही करूंगा तुम्हारी आज्ञाका कदापि उल्लंघन न करूंगा फिर जब अजब अपने सेवकों सहित बैठगया बदरुद्दीन ने मलाई के प्याले उनके सम्मुख रक्खे

रक्षकसे थोड़ीसी मलाई मेरी दूकान से मँगवाई फिर मुझे पकड़वामँगाया और कालीमिरचके न डालने से मेरी दूकान लुटवाई और मुझे संदूकमें बंदकिया और दमिश्कसे ऊंटपर रखचढ़ अपने घरमें लाया तदनंतर मुझसे कहा तू फांसी दिया जावेगा यह वचन सुन शोक युक्त होय मैं संदूकमें बेसुध होगया जब जगा अपने को तुम्हारे निकट पाया यह सुन उसकी स्त्री ने कहा जान पड़ता है तुमने कोई बड़ा अपराध कियाहोगा जिस से तुमपर यह आपत्ति पड़ी और यह कठिनदंड विचारागया बदरुद्दीन ने कहा सुंदरी मैंने कोई ऐसा अपराध नही किया यह दंड केवल इतनेही के लिये मेरेवास्ते विचारा गयाथा कि मैंने काली मिरच विन क्यों मलाई जमाई और वेंची वह सुन्दरी इस बात को सुन बहुत हँसी और कहने लगी नही तुमने कोई और बड़ा अपराध किया होगा बदरुद्दीन ने कहा और तो कोई भी नही केवल इसी से मेरी दूकान की सब वस्तु नष्टकी और मुश्केंबांध मुझे संदूकमें बंद किया जिसमें मैं दिनरात रहता था कल मुझे बाहर निकाल मेरे सन्मुख बढ़ई को आज्ञादी कि शूलीकी लकड़ी बना और उस पर लोहेकी शलाख लगाकर रखिदे परन्तु परमेश्वरका धन्यवाद है वह सब बातें स्वप्नथी बादशाह शहरयार इस कहानीको सुन बहुत हँसा और यहवृत्तांत अत्यन्त अद्भुत है और मुझे विश्वास हैकि शमशुद्दीन मुहम्मद और उसकी भावज कमरको बदरुद्दीन की यह वार्त्ता सुन के अत्यन्त हर्षित होगे दूसरेदिन मलका शहरजादने रात्रि के अंतमें बादशाह शहरयार से कहा स्वामी उस रात्रि को बदरुद्दीन इसी भ्रममें रहा कि मैं स्वप्नमें अपनी स्त्री के समीप हूं वा जाग्रत अवस्थामें कभी शय्या से उठ मकान के चारो ओर घूमता

और सब वस्तुको पहिचान कहता यह मकान वहीहै जिससे मेरा विवाह हुआथा और यह वह स्त्रीहै जिससे वादशाह ने उस कुरूप कुबड़े के साथ विवाह विचाराथा, अब मैं उसके साथ सोताहूं वह इसी विचार मे था और होतेही मंत्री शमशुद्दीन ने आकर ताली बजाई और भीतर जाय प्रणाम किया बदरुद्दीन हसनने मन्त्रीको पहिचान कहा आपहीने मेरे वास्ते शूली बनानेकी आज्ञादी जिसके भयसे मैं अबतक कांपताहूं और केवल इतनेही अपराध के लिये कि मैंने मलाई में काली मिरच नही डाली यह दंडमेरे निमित्त नियत किया मंत्रीने मुसकराय उत्तर दिया मैंनेही तेरा विवाह अपनी पुत्री के साथ जिसका विवाह वादशाहने एक कुबड़ेके साथ विचाराथा किया तू मेरा भतीजा है तदनन्तर उस पत्रको जो नूरुद्दीन के हाथ से लिखाथा उसको दिखाया कि केवल तेरे ढूंढ़ने को मैं कैरूसे बासरा और दमिश्कको गया मन्त्री ने बदरुद्दीन को हृदयसे लगाय प्यार किया और कहा यह सब बातें जो मैंने तुमसेकी हैं क्षमाकरो इन बातोंसे मेरा यह प्रयोजनथा कि तुमको इस उपाय से कुशल पूर्वक अपने घरमें लाकर तुम्हारे परिवार से मिलाऊं जो यह उपाय न करता तो संभवथा इस हर्षमें तुम्हारेशरीरमें किसी भांतिका दुःख पहुंचे व आनन्द मृत्युहोजावे इसी से तुम्हें इस भयमें रक्खा तुम अपने वस्त्र लो कि मैं तुम्हारी माताको जो तुमसे बिछुड़नेके कारण दुःखित और अधीर्य होरही है भेटकराऊं और तुम्हारे पुत्रको जिसे तुमने दमिश्कमें अपनी दूकानपर बड़ी प्रीतिसे मलाई खिलाईथी लाऊं और जो बदरुद्दीन और उसकी माता से भेट करनेमें हर्ष हुआथा सो लिखनेमें नहीं आसक्ता निदान उसकी माता उसके कंठलग बहुतरोई जो कुछ आपत्ति और

एक हिन्दी कारीगर कल का घोड़ा बनाकर भेटकरने को लाया तो मैं परीक्षा करने को उसपर चढ़ा सोहीं वह मुझे ले उड़ा तो बहुतही घूमता रहा फिर कल मिलने से दैववश तुम्हारी छतपर ले उतरा वहां एक सीढी देखी जिसके किवाड़का एकपट खुला हुआ था और एक बन्द में उससीढी से धीरे २ नीचेको आया वहां मैंने झिलमिलाता प्रकाश देखा और सब खोजियोंको सोते हुये पाया अपने सामने के मकानमें बहुत उजियाला देखा जिस के दरवाजेपर रेशमी परदा लटक रहाथा यद्यपि मुझे वहां बहुत भयहुआ कि कोई खोजी जगकर मुझको देखेगा तो निस्सन्देह मारडालेगा तथापि आगे बढ़ा और समझा कि उस स्थानपर अवश्य कोई शाहजादी सोती होगी फिरतो सब आपको मालूम है और जो आपने ऐसे समय मुझपर कृपाकी है उसका सहस्र जिह्वासे गुणानुवाद नहीं करसक्ता अब मैं मन वचन से तुम्हारा सेवकहूं और मनके विशेष और कोई वस्तु मेरे पास भेट देने को नहीं है परन्तु कठिनता यहहै कि वह भी मेरे अधिकारमें नहीं उसे भी तुम्हारी प्रीतिने आकर्षण करलिया है अब जो कुछ मुझे आज्ञाहो उसे करूं शाहजादी यह प्रीतिकी वार्ता सुन अत्यन्त प्रसन्नहुई और एकबारगी उत्तर दिया तुमने अपना अति विचित्र वृत्तान्त सुनाया और मुझे प्रसन्न किया अब तुम बताओ कि तुम बहुधा इस घोड़े पर सैर करते होगे संयोग से आज मेरे यहां भी आय निकले इससे तुम्हारे वचनपर विश्वास करना और अपने मनको तुमसे लगाना वृथा है और ईरान देश तुम्हारी जन्मभूमिहै तुम्हें वहां जाने की अवश्य लालसा होगी फीरोज शाह ने हरएक प्रश्नका उत्तर यथार्थ देकर अपनी ओरसे उसे धैर्य्य दिया इतनेमें

कष्ट उसके बिछुड़ने में उसपर पड़ेथे अपनेपुत्र वदरुद्दीनहसन से उसे पहिचान कर कहसुनाये उसका पुत्र उसकी छातीसे लिपट गया और वदरुद्दीनहसन ने उसे पहिचान कहा यह वह बालकहै जिसे मैंने दमिश्क मे देखाथा और इसकी मुझे अत्यन्त प्रीति उत्पन्नी थी फिर कंठसे लगा वहुत प्यारकिया और शमशुद्दीन मंत्री उन्हें वहीं छोड़ बादशाह के सम्मुख गया और अपनी यात्रा का विस्तार पूर्वक वर्णन किया बादशाह इस वृत्तांत को सुन हर्षित हुआ और आज्ञादी कि यह सब कहानी हमारी पुस्तकों में लिखी जावे तदनन्तर मन्त्री ने बादशाह से विदाहोय हर्षपूर्वक सकुटुम्ब नानाप्रकारके व्यंजन और पाक भोजन किये वह दिवस तो बड़ी प्रसन्नता में कटा जाफरमन्त्रीने इस कहानी को समाप्तकर बादशाह हारूंरसीद से विनयकी आपहव्शीरेहांका भी अपराध क्षमा कीजिये बादशाह उसका अपराध क्षमा कर उस मनुष्य को जिसने धोखेसे अपनी स्त्री को माराथा धीयंदे एक अपनी बांदीके साथ विवाह कर दिया और वहुतसा धन पारितोपिकादि देकर कुछ मासिक नियत किया सो वह उस बादशाह दीनपोषक अणपाल की दयासे जन्मभर आनन्द में रहा ॥

इति श्रीमच्छुक्लोपाध्यायदेवीसहायकृतायांदृष्टान्तप्रदीपिन्यां चतुर्थभागेसप्तम प्रदीपः ७ ॥

अथ अष्टमःप्रदीपः ॥ ८ ॥

सरस्वती बालमुखे वसति व्यवहारिणः ॥
यथा [illegible] लैह्तेनापिसकृतः ॥

(अर्थ)— [illegible] निवास करती है जैसेव्या-

एक दासी ने आकर कहा कि भोजन तय्यार है शाहजादी फीरोजशाह का हाथ पकड़कर लेगई और उसको बैठाया और आप भी उसके सन्मुख जा बैठी यद्यपि शाहज़ादी के भोजन का समय न था परन्तु यह विचारकर कि रात्रि को फीरोज़ शाह ने भली भांति भोजन नहीं किया होगा आपभी उसके मन रखने को भोजन करने लगी दासियोंने अति स्वच्छ पात्रोंमें अनेक प्रकारके स्वादिष्ठ भोजन परसे जब वह खाने लगेतो उसी समय सब बांदियां जो महा रूपवान् थीं मीठेस्वरों से गानकरने लगी और नाना भांति के दिव्य बाजे बजाने लगी और शाहजादी अत्यन्त प्रीतिसे फीरोजशाह को भोजन कराती और परस्पर के हावभाव से दोनों का हृदय काम रूपी अग्नि से दहकता जब भोजन से निश्चिन्त हुये तो शाहज़ादी उसे पकड़ के और कमरेमें लेगई जिसमें अति शोभायमान सुनहली और लाजवर्द की अति विचित्र चित्रकारियांथी और उसकी सम्पूर्ण सामग्री सुनहली रुपहली वस्तु की थी वह दोनों एक दिव्य दालानमें जाकर बैठे जिसके सन्मुख महा सुन्दर पुष्पवाटिका थी जिसमें अनेक भांतिके रङ्गों के फूलों की लपट से मनुष्यों का मनलोभता और ठौर२ पर मिष्टफलों के घनेवृक्ष फलेहुये जिनपर भांति भांति के पक्षी मीठी मीठी वाणी से बोला करते फीरोजशाह उस वाटिका और दिव्य सामग्री को देख महाप्रसन्न हुआ और कहने लगा मैं जानता था कि जो जो भवन और बाग हमारे फ़ारस देशमें हैं वैसे पृथ्वी मण्डल में न होंगे परन्तु अब सूचितहुआ कि वहांके सब मन्दिर इस के सामने तुच्छहैं शाहजादी ने कहा यह भवन जिस की तुमप्रशंसा करते हो ऐसा उत्तम नहीं यदि मेरे पिताका भवन जो यहां

पारी अलीख्वाजे का फैसला वालकों ने किया तो फिर तैसेहीबा-
दशाह ने भी किया ॥ ८ ॥

दृष्टान्त–जैसे कि खलीफ़ा हारूंरसीद्की सल्तनतमें एक व्या-
पारी बुग़दादमें रहताथा और थोड़ीसी वस्तुसे व्यापार करता और
अपने दादे परदादे के बनाये हुये घरमें रहता उसके कुटुम्बमें से
कोई न था उसने तीन रात्रितक बराबर यह स्वप्न देखा कि कोई
सत्पुरुष यह कहता है कि मक्केकी यात्रा जो तुझपर उचितहै क्यों
नहीं करता है व्यापारी इस स्वप्नको देख मनमें बहुत डरा और उस
सत्पुरुष का कहना मनमें ऐसा गड़ा कि अपना सब असबाब दू-
कान बेंचकर मक्काको जानेकी इच्छा की और अपने मकान में
एक किरायेदार रख मक्केको जाते विदेशियों के साथ होलिया और
जाने से पहिले एक हजार अशर्फी जो राहखर्च से अधिक बच-
रहीथीं उन्हे एक ठिलिया मे रख और उसके भीतर जैतूनका तेल
भरकर उसका मुंह बन्द किया और एक सौदागर जो उसका
पुराना मित्रथा उसके घर लेगया और उससे कहा कि आपने सुना
होगा कि मैं मक्काकी यात्रा को जाताहूं सो एक ठिलिया जैतून
के तेलकी तुम्हारे घर रखने आयाहूं इसे मेरे लौट आनेतक अपने
पास रखना उसने सुन निज मकान की कुंजी उसे देकर कहा
कि तुम जहां रखजाओ वहांहीं आय सँभाल लेना यह सुन वह
वहां रखके निजव्यापार की वस्तु ऊंटपर लाद सवार होकर मक्के
को चला जब कुशलसे वहां पहुँचा तो तिसने सबके साथ मक्के
की परिक्रमाकी जब वह निश्चिन्त हुआ तो असबाब बेचनेचला
अकस्मात् दो व्यापारी सैर करतेहुये अलीख्वाजे के मकान पर
गये और उसकी वस्तु देखके प्रसन्न हुये आपस में बोले कि यह

का बादशाह है देखोगे तो निस्सन्देह प्रसन्न होगे तुम मेरे पिता से अवश्य भेंट करो वह तुम्हारा भलीभांति सत्कार करेगा फीरोजशाह को इस बात के सुनने से राजमन्दिर के देखने की अति लालसा हुई और शाहजादी का यह विचार था कि जब उसका पिता ऐसे रूपवान् और सुशील शाहजादे को देखेगा तो अति प्रसन्न होगा और मुझे उसे विवाह देगा और फीरोजशाह कईदिन उसके पास रहा उसका मन वहां ऐसा लगा कि और जगहपर जानेका उद्योग न करता था फिरइस हेतु वहांके बादशाह के निकट न गया एक दिन फिर शाहजादीने अपने पिता के निकट जानेकी रुचि दिखाई परन्तु फीरोजशाहने कुछ शोच विचार उससे कहा कि हे सुन्दरी ! जो कुछ तुम कहती हो मुझे स्वीकारहै परन्तु बादशाही सामग्री विना ऐसे चक्रवर्ती बादशाह के पास जाना उचित नहीं यद्यपि वह मेरे कुलका नाम सुन प्रसन्न होगा परन्तु इस दशा में मैं उसकी दृष्टि में तुच्छ हो जाऊंगा शाहजादी ने कहा यहां सब कुछ उपस्थित है इस जगह बहुत से व्यापारी तुम्हारे देश और जाति के हैं तुम उनसे सब सामग्री जो कुछ तुम को आवश्यक हो मोल लो और एक अलग मन्दिर में रहकर अपनी पदवी समान सामग्री इकट्ठी करो उसने कहा बहुत अच्छा अब एक अभिलाषा यह है उसे मन लगा के सुनो कि मुझे अपने पिताका हाल मालूम नहीं कि उसकी मेरे वियोग मे क्या दशा हुई मुझे अत्यन्त भय है कि ऐसा न हो जो शोच के कारण उस का देहान्त होजाय इस लिये आपकी कृपा से आशा है यदि प्रसन्नता पूर्वक मुझे आज्ञादो तो तुरन्त जाकर अपने पितासे भेंट करूं और उनको धैर्य दूं और विवाह को जो तुम्हें भी स्वीकार है

व्यापारी इस असबाब को केरू में जो मिसरकी राजधानी में है वहां लेजावे तो बड़ा मोल पावेगा अलीख्वाजे भी पहिले से ही उस देशकी प्रशंसा सुन देखना चाहताथा यह बात सुन बहुत प्रसन्नहुआ और बुगदाद देशको छोड़ मिसर के जानेकी इच्छाकी और यात्रियों के साथ उस देशको पधारा जब वहांपहुँचा तो तहां सेर करके अत्यन्त हर्षित हुआ और वहां निज असबाब बेचकर बहुतसा लाभ उठाया और दूसरा असबाब मोलले दमिश्क में जानेकी इच्छाकरी एक मास केरूमें रहकर सेर करी जो नीलनदके तटपर कई मंजिल से दीखताहै और औरभी नीलनदके कूल के बसे नगरों को देखके दमिश्क की ओर चला मार्ग में सय्यदसलेम आदि मसजिदों का जो मुसल्मानों ने बनायीथीं उनका दर्शन किया फिर दमिश्क नगर में गया वहां उस देशको बहुत आबाद देख और उसमें कुण्ड बहुत देखे तथा खेती और बागोंको खिले फूलवाले देखे तो बुगदादकी याद भूलगया फिर यहांसे हलब मवस्सल और शीराज देशको गया वहांसे हर्षसहित सातवर्षमें बुगदाद को आया तो तिस प्राचीन व्यापारी ने जो धूर्त्तता करी वह सुनिये कि इस सातवर्ष के समयान्तर में उसने इसकी वस्तु की कुछभी सुधिकी सो एक दिन अकस्मात् निज स्त्रीके साथ भोजन करताथा तो तिस समय जैतून के तेलकी बात चली तो तिसकी स्त्रीने कहा कि मेरा मन उसे खानेको चाहता है तो तिसके पतिने कहा कि तेरी बात से मुझे अलीख्वाजेकी याद आगयी वह सातवर्ष हुये कि मक्काको गयाहै और जातीसमय एक टिलिया जैतून के तेलकी धरगया पर न जाने अब वह कहां है और वह भी न जाने जीता है या मरगया यदि उसका तेल बिगड़ न

अपने पिता से वर्णन करके उनसे आज्ञा ले आऊं शाहजादी ने यह बचन सुन पसन्द किया परन्तु उसी समय यह विचार पैदा हुआ यदि यह शाहजादा फिर अपने देशसे न आवे और अपने माता पिता की प्रीति में वहीं रहजावे और मुझे अपने विरह में तड़पता छोड़े तो मैं उसका क्या कर सकूंगी इससे उत्तम है कि थोड़े दिन और यहां इसे रखना चाहिये कदाचित् यहां रहने से मुझसे प्रीति अधिक हो और अपने देश में जानेका उद्योग न करे निदान यह विचार मनमें ठान फीरोजशाहसे कहा कि थोड़े दिन और ठहरजाइये उसने स्वीकार किया फिर बहुकाल पर्य्यन्त फीरोजशाह शाहजादी के साथ रहकर नानाभांति के तमाशे देखता और मन मानता आनन्द उठाता रहा और प्रतिदिन वनमें जाकर अहेर खेलता और शाहजादी उसके मन बहलाने को नकलें दिखाती और सन्ध्या को उसी दिव्य मन्दिर में जिसमें नानाभांति के अतिसुन्दर बिछौने और उत्तम २ तकिये रक्खेहुये थे आनन्द भोगते और हरएक प्रकार की वार्त्ता करते बहुधा फीरोजशाह फारसदेश के कोशों और सेनाका वर्णन करता जबदो महीने बीते उसका मन शाहजादी के प्रेम और अमृतरूपी बातों में ऐसा फँसा कि उसका वियोग क्षणमात्र उसको न सुहाता बहुत कालके पश्चात् उसने अपने पिताका स्मरण कर शाहजादी से जाने के लिये आज्ञामांगी और कहा यदि तुमको मेरे वचनपर निश्चय न हो तो तुम भी मेरेसाथ चलो वह इसबात से प्रसन्नहुई दूसरे दिन रातको जब सारेमन्दिर के नौकर और दासियां सोगईं तब फीरोजशाह शाहजादी को छतपर लेगया और उसको अपने आगे घोड़ेपर चढ़ालिया और घोड़े का मुख फारसदेश की

गयाहो तो तिसमें से थोड़ा निकाल लेआवो जो चखके देखे तो तिसकी स्त्री अत्यन्त धर्मिष्ठाथी बोली कि ऐसा कर्म न करो किसी की धरोहरमें चोरी करना ठीक नहीं यह तुमने कैसे जानलिया कि वह जीते जी नहीं आवेगा क्या तुमने किसी से उसका मरनासुन लियाहै बड़ा अचरजहै कि वह कल वा परसों लौट आवे और अपना तेल मांगे और तुम लज्जितहो तो मैं तुम्हारी साथिन नहीं हूं और यह भी विचारो कि सातवर्ष का पुरानातेल कब खाने योग्य होगा मैं तुम्हे सौगंद देतीहूं इस कामको मत करना ऐसे उस धर्मव्रती ने निजपतिको बहुत समझाया और उसने भी उस समय उसकी इच्छा छोड़दी पर दूसरे समय एक रकाबीले तेलकी कोठरीमें चला तब फिर स्त्री बोली मैं इस कर्मकी साथिन नहीं हूं तुमपर कोई उपाधि फैलेगी उसने उसका कहना नहीं माना और कोठरी मे जाय उस तेल को खोला यद्यपि वह तेल सड़गया था तबभी उसने ठिलिया को हिलाय उसमें से निकाला तो एक अशर्फी उसको दिखाईदी तो तिसने लोभवश हो सब अशर्फी निकालली और स्त्री से आय यही कहा कि तू सत्य कहती थी वह बिगड़गया और आप नवीन तेल लाय उसमें भरकर मुँह वैसेही बन्द करके कोठरीमें रखदी ईश्वरकी कृपासे एक महीने बाद वह व्यापारी भी आकर निजमित्र से मिलने आया उससे मिल प्रकट प्रसन्नता पूंछ अपनी वस्तु मांगी तो तिसने कहा मैं नहीं जानता तुमने कहां धरी है यह कुंजी लो अपनी वस्तु ले जाओ वह जाय निज ठिलिया को निकाल ले आया और बिदाहो अपनेघर आया और जब उसने उसमें निज अशर्फियां न पायीं तो बहुतरोया और उससे बोला कि हे मित्र! ईश्वर साक्षी है मैं यात्रा की समय एक

ओर कर चलने के पेंचको घुमाया सो वह घड़ी भरमें शीराज में जो फ़ारसकी राजधानीहै जाय पहुँचा फ़ीरोज़शाह न तो अपने मन्दिरमें उतरा और न अपने पितासे मिलनेको गया किन्तु एक ग्राममें जो शीराज़के पासथा घोड़ेसे नीचे उतरा और शाहजादी को एक बादशाही महल मे जो उस गाँव में बनाहुआथा उतारा और शाहजादी से कहा अब मैं जाकर अपने पिता से तुम्हारे आनेका समाचार देकर तुम्हारेपास चलाआताहूं फिर उस मंदिर के प्रबन्धक को आज्ञादी जो २ वस्तु शाहजादी के लिये अवश्य हों संग्रहकर और एक घोड़ा मेरे लिये ला और दिव्यपात्रों में स्वादिष्ठपाकलाकर शाहजादी को भोजन करा मैं अभी शीराजसे लौटकर आताहूं यह आज्ञा प्रबंधकको दे घोड़ेपर सवारहुआ मार्ग में पुरवासी उसे देखकर प्रसन्नहोते क्योंकि वहांके रहनेवाले उस के लिये ईश्वर से प्रार्थनाकरते कि ईश्वर उसे कुशल पूर्वक यहां पर पहुँचाये जब शाहज़ादा अपने पिताके पासगया तो बादशाह को उसके देखने से अतिप्रसन्नता हुई और महाप्रीति से अपने कण्ठ में लगाया और अत्यन्त हर्ष से बहुत रोया और वृत्तान्त वर्णन किया तदनन्तर बंगाल देश की शाहज़ादी का हाल वर्णनकर कहा मैं उसे अपने साथ बिवाह करने की प्रतिज्ञाकर कल के घोड़े पर लायाहूं और अमुक गाँव के मन्दिर में उसको छोड़कर पहिले आप आया कि आप की आज्ञा पाकर उसे सन्मान पूर्वक लेआऊं इतना कह फीरोजशाह अपने पिता के चरणों पर गिर पड़ा और उस को लाने और उसके साथ विवाह करने की आज्ञा मांगी बादशाह ने उसको अपने चरणों से उठाकर फिर अपने हृदय से लगाया और कहा हे पुत्र! मैं तुम्हें

हज़ार अशर्फ़ियां ठिलियामें रखकर धरगयाथा अब उसमें नहीं हैं जो तुमने किसी आवश्यकतामें उन्हें खर्च किया तो कुछ चिंता नहीं है चाहे जब देना पर कह दीजिये वह बोला मैं जानताही नहीं तुमने तेल की ठिलिया धरीथी अपनी लेगये मैं क्या जानूं अशर्फ़ी कहां थी तुमने नामभी अब लियाहै निदान उसमें बहुतसी बिनती की कि यह मेरी जन्मभर की कमाईहै पर लोभीने देनी न चाही और मुँह लालकर बोला चले जाओ मेरे घर फिर न आना यह वार्त्ता होरहीथी इतने में मुहल्ले के बालक वृद्ध एकट्ठे होगये और उनके झगड़े का हाल नगर भर मे फैलगया और यह लाचार हो उसे न्यायाधीश के पास लेगया उसे सब वृत्तान्त सुनाया तो न्याया: धीश ने ख्वाजे व्यापारी से कहा कि तेरा कोई साक्षी भी है वह बोला मैंने भेद खुल जाने के कारण कोई साक्षी नही किया मैं इसे अपना विश्वासीमित्र समझ इसके पास रखगयाथा तब न्या- याधीश ने उस व्यापारी से सौगन्द खानेको कहा तो तिसने सौ- गन्द खाकर कहा कि मैं नहीं जानता इसकी अशर्फ़ियां कहां हैं तब न्यायाधीश ने व्यापारी को निर्दोष समझ कर छोड़ दिया तो अलीख्वाजे इसके न्याय से निराशहुआ और दूसरे दिन एक अर्जी लिखकर बादशाह को जिस समय वह मसजिद में निमाज़ पढ़ने आया तब दी बादशाह ने अर्जी को पढ अभिप्राय समझके आज्ञादी कि कल दोनों मनुष्य मेरी सभा में आवें और आप स- न्ध्यासमय निज नियमानुसार भेष बदल नगर का हाल जानने को निकला और दूरसे देखा कि चन्द्रमा की चांदनी में दश बा- रह बालक खेल रहे हैं वहां उनमें एक जो अत्यन्त स्वरूपवान् च- तुरथा वह बोला आओ हम तुम मिलकर उस न्यायाधीश की

केवल विवाह करने की आज्ञा नहीं देता किन्तु मुझे इच्छाहै कि मैंही जाकर उसका सत्कार करूं और फिर उसको सवार कराके अपने मन्दिर में लाऊं और आज सबरीतें विवाह की करूं फिर बादशाह ने आज्ञादी कि मेरी सवारी शीघ्र तैयाररहो और सब मनुष्य खुशीकरें और विवाहके बाजे बजें और आज्ञादी कि उस हिन्दीको जो कैदमें है मेरेसामने लाओ सो उस हिन्दीको तत्काल बादशाहके निकटलेगये बादशाहने उससे कहा यद्यपि तू मारडालने के योग्य था परन्तु ईश्वरका धन्यवाद कर कि मेरा पुत्र मुझसे कुशलपूर्वक मिला इस लिये मैंने अब तुझे छोड़ दिया इसी समय अपना घोड़ा लेकर यहां से चलाजा फिर कभी मेरे पास न आइयो उस हिन्दीने बन्दीखाने से निकलतेही सुना था कि फ़ीरोजशाह उस घोड़े पर एक शाहजादी महारूपवान् अपने साथ लाया है और उसे अमुक गांव में बादशाह के महल में छोड़कर आप अकेला यहां आया बादशाह ने वहां जानेकी तय्यारी की है कि उस गावँ में जाकर शाहजादी कोलेआये सो हिन्दी बादशाहके जाने के पहिले उस गावँ को चला और उस भवन के प्रबन्धक से जाकर कहा कि बादशाह और फ़ीरोजशाह ने मुझे बंगालेकी शाहजादीके लेजाने के लिये आज्ञादी है कि उस कलके घोड़े पर उस को सवारकराके लेजाऊं अब वह दोनों शाहजादी की बाट देखते हैं क्योंकि बादशाह की इच्छा है कि इस घोड़े के चरित्रको सब शीराज के वासीभी देखें प्रबन्धक उसके कैदके छूटने का हाल तो सुन चुकाथा उसकी बातको निश्चय समझा और उस शाहजादी के पास लेजाकर कहा कि बादशाह ने तुम्हारे लेजाने के लिये इस मनुष्य को भेजा है वह प्रसन्न हो-

कल करें मै न्यायाधीश बनताहूं और तुम व्यापारी बनो यह सुन बादशाह अचरज से विचारने लगा कि इनकी तो अर्जी ही कल मेरे पास लगी है देखूं तो क्या निर्णय होताहै तब न्यायाधीश बने बालकने उनका हाल सुन उस व्यापारी से कहा तुमने अशर्फियां नही लीं वह सौगन्द खानेलगा तो कहा सौगंदका काम नहीं मैं वह ठिलिया देखना चाहताहूं जिसे नालिशीने तेल से भरकर तेरे द्वार धरीथी वह लाया तो दोनों से पूंछा यही है तब कहा कि इसमे से थोड़ा तेल लाओ चखके देखूं कैसाहै ये लाये देखा तो बोला कि इसका स्वाद अच्छा है मैं जानताथा कि सातवर्ष में स्वाद बुरा होगया होगा यह कहके कहा कि बाजारसे दो तेल-वालों को बुलालाओ वे बुलालेआये उनसे पूंछा कि जैतूनका तेल कबतक अच्छा रहता है वे बोले कि यत्नसे रखने पर भी तीनवर्ष मे सड़ बिगड़ जाता है तब कहा इस ठिलिया के तेलको देखो कि कै वर्षका धरा है तो तिसे देखकर कहा यह तो अच्छा स्वादिष्ट है तब न्यायाधीश ने कहा तुम झूंठ बोलतेहो यह सात वर्ष से धरा बतलाता है तब वे बोले यह तेल वर्षएक के भीतरका धराहुआ है तब उस व्यापारी से न्यायाधीश ने कहा तू चोर है यह कहके सब बालक ताली बजाने लगे और उसे पकड़के दंड देनेको लेगये बादशाह यह हाल देख अत्यन्त आश्चर्य युक्त हो विचारताहुआ कि कल मैंभी इसीतरह निर्णय करूंगा यह बिचार जाकर मंत्री से कहा कि इस बालक को पहिचानलेना कल इसे मेरे पास लाइयो और उस व्यापारी से कहना वह ठिलिया और दो तेलवालो को भी लेताआवे बादशाह यह आज्ञादे महल मे गया प्रभात को मंत्री उसी बालक को लानेगया तो सबसे पूंछा

कर जाने के लिये तय्यार हुई वह हिन्दी पहले आप कलके घोड़े पर सवार हुआ फिर शाहजादी को अपने आगे बैठाकर कलको मरोड़ा सो वह घोड़ा आकाशकी ओर उड़ा और उसीक्षण बादशाह भी बड़ी धूमधामसे उस गावँकी ओर चला उस समय फीरोजशाहकी यह इच्छाहुई कि बादशाहके पहुंचने के पहिले शाहजादी को बादशाह के पहुँचने का समाचारदे कि वह चलनेकी तय्यारी करे जब वहां पहुँचा तो प्रबन्धकसे शाहजादी के लेजाने का हाल सुन महा दुःखित हुआ जिसका वर्णन नहीं होसक्ता और सभासद इस समाचार को सुन अति व्यथित होय अपने महल को लौट गये परन्तु फ़ीरोजशाह बहुकाल पर्यन्त मूर्च्छित रहा जबसुधि सँभाली तो उसी समय प्रबन्धकने आकर फ़ीरोजशाहके चरणोंपर शिर रक्खा और कहा इससेवकसे यह अपराध अज्ञानतामें हुआ अब जो चाहिये दण्डदीजिये फ़ीरोजशाहने उससे कहा उठ तुझसे मेरीही गफलत से अपराध हुआ अब विलंब मत कर शीघ्र मेरे लिये योगियों के वस्त्र ला उस मन्दिरके पास एक योगी और उसके कई चेले रहते थे सो रक्षकने जाकर कहा कि बादशाह एक रईससे अति अप्रसन्न हुआ है और उसकी इच्छा है कि उसे पकड़कर मारडाले सो वह ऐसी दशामें अमातिशके कारण मुझसे कहने लगा यदि मुझे योगियोंके वस्त्र मिलें तो मैं वेष बदल इस नगरसे निकलजाऊं सो उस योगीने अपने वस्त्र उसे दिये वह लेकर फ़ीरोजशाहके पास लाया फ़ीरोजशाह उन वस्त्रों को पहिन और अपने वेष को बदल और उत्तम २ रत्नोंका सन्दूकचा राह खर्च के लिये लेकर रात्रि को अँधियारे में वहांसे वनको चला और मनमें यह ठाना कि जबतक बंगाले की शाहजादी

कि किसने तुममेंसे वहन्याय निर्णय कियाथा उनमें जिसने किया बताया उससे कहा कि तुझको बादशाह नें बुलवाया है मेरे साथ चलो तब उसकी माता रोनेलगी तो तिससे कहा तू न घबरा एक घड़ी में तेरे लड़के को लौटालेआऊंगा यह कह वह वस्त्र पहिराय वहां लेगया बादशाहने उस लड़के को अपने पास बैठाया जब वे नालिशी आये तो बादशाह ने उनसे कहा तुम सब अपना हाल इसबालक से कहो यहही निर्णय करेगा तब दोनोंने निज २ वर्णन किया और वह व्यापारी इनकार करके सौगन्द खानेलगा तब बालक बोला अभी सौगन्द खानेका काम नही वह ठिलिया लाओ जब ठिलिया आई तब बादशाह को उसमें से थोड़ा तेल चखाया और तेलवालो को भी चखाया उन्हों ने कहा यह तेल इसी वर्षका धराहुआहै फिर कहा तुम झूठ बोलतेहो यह सातवर्ष से धराहै तब तेलवाले बोले यह कभी नही होसक्ता तीसरेवर्ष यह तेल सड़ बिगड़ जाता है निदान व्यापारीने हारमानके अपराधी को दंड दिवाना चाहा तब बालकने बादशाह से कहा यह काम आपका है हमने तो कल यह खेल खेला वह दिखलादिया है यह हमारेमें सामर्थ्य नही आप उसे दंड देकर अशर्फी ख्वाजे व्यापारी को दिलादीजिये सोही बादशाहने उस व्यापारी को शूली का हुक्मदिया और अशर्फियां अलीख्वाजे को दिया और उस बालक को कंठ से लगाय हजार अशर्फियां और इनाम में दीं और उसके घरको पहुँचा दिया ॥

इति श्रीयुतशुक्लोपाध्यायदेवीसहायसंगृहीतायादृष्टान्तप्रदीपिन्याम् चतुर्थभागेऽष्टम प्रदीप ८ ॥

केवल विवाह करने की आज्ञा नहीं देता किन्तु मुझे इच्छाहै कि मैंही जाकर उसका सत्कार करूं और फिर उसको सवार कराके अपने मन्दिर में लाऊं और आज सबरीतें विवाह की करूं फिर बादशाह ने आज्ञादी कि मेरी सवारी शीघ्र तैयाररहो और सब मनुष्य खुशीकरें और विवाहके बाजे बजें और आज्ञादी कि उस हिन्दीको जो कैदमें हैमेरेसामने लाओ सो उस हिन्दीको तत्काल बादशाहके निकटलेगये बादशाहने उससे कहा यद्यपि तू मारडालने के योग्य था परन्तु ईश्वरका धन्यवाद कर कि मेरा पुत्र मुझसे कुशलपूर्वक मिला इस लिये मैंने अब तुझे छोड़ दिया इसी समय अपना घोड़ा लेकर यहां से चलाजा फिर कभी मेरे पास न आइयो उस हिन्दीने बन्दीखाने से निकलतेही सुना था कि फ़ीरोजशाह उस घोड़े पर एक शाहजादी महारूपवान् अपने साथ लाया है और उसे असुक गांव में बादशाह के महल में छोड़कर आप अकेला यहां आया बादशाह ने वहां जानेकी तय्यारी की है कि उस गावँ में जाकर शाहजादी कोलेआये सो हिन्दी बादशाहके जाने के पहिले उस गावँ को चला और उस भवन के प्रबन्धक से जाकर कहा कि बादशाह और फ़ीरोजशाह ने मुझे बंगालेकी शाहजादीके लेजाने के लिये आज्ञादी है कि उस कलके घोड़े पर उस को सवारकराके लेजाऊं अब वह दोनों शाहजादी की बाट देखते हैं क्योंकि बादशाह की इच्छा है कि इस घोड़े के चरित्रको सब शीराज के बासीभी देखें प्रबन्धक उस के कैदके छूटने का हाल तो सुन चुकाथा उसकी बातको निश्चय समझा और उस शाहजादी के पास लेजाकर कहा कि बादशाह ने तुम्हारे लेजाने के लिये इस मनुष्य को भेजा है वह प्रसन्न हो-

अथ नवमःप्रदीपः ॥ ६ ॥

कलके घोड़ेका दृष्टान्त।

वस्तुसम्पद्यतेयोग्यंयोग्येऽयोग्येद्विषत्यपि ॥
शाहजादीहृताप्येवंयथायोग्यपतिंगताः ॥ ९ ॥

(अर्थ)—योग्य वस्तुहै वह योग्यही के पास जा पहुँचती है चाहे कोई अन्य कपटी उससे द्वेष भी करताहोवे जैसे शाहजादी हरीगई भी निज योग्य पति के पास जा पहुँची ६ ॥

दृष्टान्त—आपको भलीभांति मालूमहोगा कि हजारों वर्ष से पारस के निवासी नौरोज अर्थात् वर्षका प्रथम दिन जानकर खुशी करतेथे विशेष अग्निपूजक उस दिन नृत्य और अनेक भांतिके तमाशे देखते और अति उत्तम और विचित्र २ वस्तु बड़े २ बादशाह और धनवानों को भेंटदेते और दूसरे नानाप्रकार के गुणवान् महासुन्दर और दिव्य वस्तु बादशाह के सामने लाते और हजारों रुपये पारितोषिक पाते सो किसी काल में नौरोजको कोई पारसका महा तेजवान् बादशाह जो उदारता में अति विख्यातथा तमाशा देखने को नगर के बाहरगया और सम्पूर्ण सभासद और नौकरोंने आन आन कर अपनी अपनी भेंटदी और बड़े बड़े गुणवान् कारीगरों ने नानाप्रकारकी वस्तुदीं उनमें हिन्दुस्तानका निवासी एक गुणवान् हिंदू आया और करजोड़ दण्डवत् कर एक कलका घोड़ा बादशाह को भेंट दिया और विनय किया कि इसे इस सेवकने बहुत दिनमें परिश्रमसे बनाया है निश्चयहै कि ऐसी अद्भुत वस्तु आपको अबतक किसी ने नहीं दीहोगी तब बादशाह ने कहा कि केवल काष्ठ का घोड़ा बनाहै

कर जाने के लिये तय्यार हुई वह हिन्दी पहले आप कलके घोड़े पर सवार हुआ फिर शाहजादी को अपने आगे बैठाकर कलको मरोड़ा सो वह घोड़ा आकाशकी ओर उड़ा और उसीक्षण बादशाह भी बड़ी धूमधामसे उस गाँवकी ओर चला उस समय फ़ीरोजशाहकी यह इच्छाहुई कि बादशाहके पहुंचने के पहिले शाहज़ादी को बादशाह के पहुँचने का समाचारदे कि वह चलनेकी तय्यारी करे जब वहां पहुँचा तो प्रबन्धकमे शाहजादी के लेजाने का हाल सुन महा दुःखित हुआ जिसका वर्णन नहीं होसक्ता और सभासद इस समाचार को सुन अति व्यथित होय अपने महल को लौट गये परन्तु फ़ीरोजशाह बहुकाल पर्य्यन्त मूर्च्छित रहा जबसुधि सँभाली तो उसी समय प्रबन्धकने आकर फीरोजशाहके चरणोंपर शिर रक्खा और कहा इससेवकसे यह अपराध अज्ञानतामें हुआ अब जो चाहिये दण्डदीजिये फ़ीरोजशाहने उससे कहा उठ तुझसे मेरीही गफलत से अपराध हुआ अब विलंब मत कर शीघ्र मेरे लिये योगियों के वस्त्र ला उस मन्दिरके पास एक योगी और उसके कई चेले रहते थे सो रक्षकने जाकर कहा कि बादशाह एक रईससे अति अप्रसन्न हुआ है और उसकी इच्छा है कि उसे पकड़कर मारडाले सो वह ऐसी दशामें अप्रतिष्ठाके कारण मुझसे कहने लगा यदि मुझे योगियोंके वस्त्र मिलें तो मैं वेष बदल इस नगरसे निकलजाऊं सो उस योगीने अपने वस्त्र उसे दिये वह लेकर फ़ीरोजशाहके पास लाया फ़ीरोजशाह उन वस्त्रों को पहिन और अपने वेष को बदल और उत्तम २ रत्नोंका सन्दूकचा राह खर्च के लिये लेकर रात्रि को अँधियारे में वहांसे वनको चला और मनमें यह ठाना कि जबतक बंगाले की शाहजादी

देशमें थे तैसेही यहां भी रहोगे। मैं तुम्हारी सहायता करूंगी तो तुममें ही इतनी सामर्थ्य होगी कि तुम्हीं औरोंके सहायक होओगे तुम्हारा कुछ मेरेही भवन में अधिकार न होगा किन्तु सब बंगाल देशमें होगा यह सुन उसने बड़ी प्रशंसा की और निज मस्तक धरती पर रखने लगा पर उसने नहीं धरनेदिया और बोली कि कहो तुम्हारा आना कैसे हुआ और राजधानी कबसे छोड़ी और किस उपाय वा मन्त्रके बलसे तुम मेरे मकानमें पहुँचे अब मालूम होताहै कि तुम भूखेहो भोजन करके विश्राम लेओ मैं कल आप को दूसरे मकानमें रखदेऊंगी ये दोनो बातें करतेही थे कि वे सब दासी भी जगउठीं और दोनोंको देख आश्चर्य में हुई और विचार-ने लगीं कि यह यहां कैसे आया फिर आज्ञापाय वे उसे एक म-कान में लेगई और उसके आरामके लिये नाना प्रकारकी वस्तु धरीं और सुन्दर सेज बिछादी और रसोई में जाय शीघ्र सामान बनाया फिर उसे भोजन कराय शय्या पर सुवाया वह शाहजादी भी उसे देख मोहित होगई थी थोड़ी देरमें दासी उसके पास से शाहजादी के पास आयी और भोजन करने का हाल कहा उनमें से कोई दासी शाहजादी के बहुत मुँह लगी थी उसने शाहजादे की बहुत प्रशंसा करके कहा कि यदि ऐसे किशोर सुन्दरसे आप का विवाह होजावे तो क्याही अच्छी बातहै शाहजादी इस बात को सुन मनमें अति प्रसन्नहुई पर प्रकट में बोली कि चुपरहु बकै मत अपनी जगह जा सोरह फिर शाहजादी प्रभात को उठतेही बहुत काल दर्पणमें मुख देखके शृंगार करतीरही फिर शाहजादेके पास आयी और पूंछा कि अब कहिये सब हाल खुलासा क्या है तब शाहजादा कहने लगा कि नौरोजे उत्सवमें मेरे पिताके पास

मुझे न मिलेगी तबतक ईश्वरका मुख न करूंगा अब यहांसे उस हिन्दीका हाल वर्णन करते हैं कि उस कलके घोड़ेने दो अथवा तीन घड़ीके समयमें उनको काशमीर की राजधानी में पहुँचादिया उस समय उस हिन्दी को भूख लगी और समझा कि शाहज़ादी भी भूखी होगी फिर वह सघन शीतल छायादार वृक्षोंके नीचे जहां निर्म्मल जलका दिव्य सरोवर था उस घोड़ेपर से उतरा और भोजन की कोई वस्तुके ढूंढ़ने के लिये एकओर को गया उसके जाने के उपरान्त शाहज़ादी महाकुरूप मनुष्यके अधिकारमें अपने को देखकर अति चिन्तितहुई और उसे इच्छाहुई कि किसी भांति मेरा पतिव्रत धर्म्म बचे और कहीं जाकर उससे छिपे परन्तु बहुत देरसे भोजन न किया था और मार्गके श्रमसे निर्बलताके कारण इतनी सामर्थ्य अपनी देहमें न पाई कि वहांसे उठकर छिपे और ईश्वरसे प्रार्थना करती थी कि मरजाऊं निदान वह इन्हीं विचारोंमें थी कि इतनेमें हिन्दीने आकर उसे कुछ भोजन कराया भोजन के उपरान्त उस दुष्टने उससे भोगकी इच्छाकी जब उस पतिव्रताने इन्कार किया तब वह दुष्ट उसे धमकाने लगा और उसे मारने लगा वह बिचारी लाचार होके चिल्लाने और रोनेलगी उसके रोने से उस वनमें कोलाहल मचगया संयोग वश मनुष्योंके बड़े सवारोंके समूहने आकर उन दोनों को घेरलिया वह सवार कशमीर के बादशाह के साथ थे जो अहेर खेलकर लौटते समय शाहज़ादी के भाग्य से उधर को होनिकले और रोनेका शब्द सुनकर वहां दौड़ेआये निदान कशमीरके बादशाहने हिन्दीसे पूंछा तू कौन है और तेरा क्या नाम है और यह स्त्री तेरी कौन है और इसके आंसू क्यों नहीं थमते हैं उस हिन्दीने कड़े होके कहा यह

मेरी जोरू है किसी को क्या सामर्थ्य है कि हम दोनों मे बोलसके शाहजादी ने कशमीरके बादशाह से कहा ईश्वर तुमको केवल मेरे धर्म के बचाने के लिये लाया है यह झूंठा है इसकी बातों को निश्चय न करना ईश्वर मुझे इसकी स्त्री न बनावे यह जादूगर मुझे फ़ारसके शाहज़ादे के घरसे चुराकर जादू के घोड़े पर बैठाकर ले भगाहै बादशाह को उस शाहजादी के रोने पर दया आई और उसके रूप अनूप चन्द्रमुख को देख आश्चर्य में हुआ और उसके वचन पर विश्वास कर सवारों को आज्ञादी कि इस दुष्टको ऐसे कुकर्म्म के पलटे वध कर डालो सो उसी समय सवारों ने उस हिन्दी का शिर तनसे काट डाला अब वह शाहज़ादी एकसे छूट दूसरे के फन्दे में पड़ी फिर कशमीर का बादशाह उसको एक घोड़े पर सवार करा अपने नगरमें लेगया और महाविशाल भवन उसके रहने के लिये नियत किया और बहुतसी दास दासियां उसकी सेवाको दीं और उसको बहुत धैर्य देकर कहा हे सुन्दरी ! तुम थकी मालूम होतीहो इसलिये विश्राम करो इतना कह बादशाह चलागया शाहज़ादी ऐसे अयोग्य और दुष्ट मनुष्य की संगति से अतिचिन्ता को प्राप्तहुई थी आराम पाकर सोरही जब जगी तो शोचने लगी कि कशमीर के बादशाह ने प्रयोजन विना मुझे उस दुष्ट से छुड़ाया और मेरा भलीभांति सत्कार किया दो तीन दिन के उपरान्त बादशाहने उससे विवाह की इच्छा की और तय्यारी करने की आज्ञादी और चारोंओर नौबतें बजने लगी और सल्तनतभर में यह समाचार फैलगया कि हरमनुष्य अपनी शक्तिभर तमाशा देखकर खुशीकरे जब बादशाह को यह इच्छा भई कि बंगाले की शाहजादी से जाकर

विचारा कि तरुणावस्थामें इसका विवाह किसी दूसरे शाहजादे के साथकरूंगा परन्तु जब उसकोमालूम हुआ कि तीनों मेरे पुत्र उस पर मोहितहैं और प्रत्येक की यह लालसाहै कि विवाह उसका मेरे साथ हो तो वह अति चिन्ता करने लगा और सोचा कि यदि इसका विवाह उन तीनोंमें से जिसके साथ करूंगा तो दूसरे अ-प्रसन्न होंगे और मैं किसीकी अप्रसन्नता नहीं चाहता यदि किसी दूसरे शाहज़ादे को व्याहदूं तो सबके सब अप्रसन्न होंगे न जानिये कि उसके मोहमें मग्न होकर अपने प्राण त्यागदें अथवा किसी दूसरे देशमे चलेजावें यह बात उपाधि उठाये विना न रहेगी ऐसा कोई उपाय करना चाहिये कि चाहे जिसके साथ उसका विवाह हो दूसरे दो भाई अप्रसन्न न होवें इसीभांति वह बादशाह बहु-काल पर्य्यन्त सोचता रहा अन्त को उसने एक उपाय विचार लिया और तीनों अपने पुत्रों को बुलाकर कहा कि मेरे विचारमें तुम तीनो बराबरहो मैं एक को तुममे से बड़ा समझकर नूरुन्नि-हार का विवाह नहीं करसक्ता और यहभी नहीं होसक्ता कि उस का विवाह तुम तीनोंके साथ करदूं परन्तु एक बात मैंने विचारी है इस कारण किसी न किसीके साथ उसका विवाह होजावेगा और कोई तुममें से अप्रसन्न न होवेगा और तुम तीनों की प्रीति स्थिर होवेगी और तुम मेंसे कोई डाह और वैर न करेगा वह बात यह है कि तुम तीनों पृथक् २ यात्रा करो और एक विचित्र वस्तु मेरे लिये लाओ जिसकी वस्तु अद्भुत होगी उसीके साथ नूरुन्नि-हार का विवाह करूंगा और जो कुछ तुमको उस वस्तुके लानेको द्रव्य चाहिये वह मेरे कोशसे लेजाओ इतना सुन उन तीनों ने इस बात को स्वीकार करी और हरएक अपने मनमें प्रसन्न हुआ

यह कहे कि वह शृंगारकर मेरे आगमन की वाट देखे इतने में शाहज़ादी की आंखें बाजोंके शब्द से खुलगईं उसने दासियोंसे पूंछा बाजे क्यों बजते हैं उन्होंने कहा तुम्हारा विवाह बादशाहके साथहोगा यह सब उसकी भूमहै इतना सुनतेही शाहज़ादी मूर्च्छा खाकर गिरपड़ी बांदियों ने यह दशा देखकर बादशाह कशमीर को यह हाल कह सुनाया वह सुनतेही उसकी औषधि आदि यत्न करनेलगा पर शाहज़ादी उसी दशामें पड़ीरही जब चैतन्य हुई तो उसने मरनेकी इच्छाकी क्योंकि उसको फ़ारसके शाहज़ादे के सिवाय किसी से विवाह करने की इच्छा न थी तदनन्तर उसने आपको विक्षिप्त बनाया और बादशाह को हज़ारों गालियां देने लगी और धा धाकर मारनेलगी बादशाह उसकी यह दशा देखकर अत्यन्त चिन्तित हुआ और उसके पाससे उठकर बाहर आया और दासियों को आज्ञादी कि इसका घड़ी २ का हाल मुझसे कहो और यह समझा कि इस सुन्दरी को कोई भूत बाधाहुई है इसलिये आज्ञादी कि वैद्य और फूंकने और झाड़नेवाले आवें और इस शाहज़ादी को हजार यत्न और मन्त्र इत्यादि से चंगाकरें पहिले नगरके वैद्योंने उसकी औषधिकी फिर सब सयानोंने यन्त्र आदिक किये और नानाप्रकारके अभिमंत्रित जल पिलाये और धूनी दी पर वह कुछ अच्छी न हुई किन्तु सन्ध्या को और भी उसकी बुरीदशा भई जिससे बादशाह रात्रिभर बेचैन रहा दूसरे दिन प्रभात को भी वही दशा उसकी रही तो बादशाहने यह इश्तिहार दिया जो कोई शाहज़ादी को अच्छा करेगा तो उसे बहुतसा पारितोषिक दूंगा फिर वैद्यों ने परस्पर सम्मतकर बादशाह से विनय [illegible] शाहज़ादी को नवीन उपजा होगा तो निस्स-

के पासगया बादशाह अपने पुत्र को देखकर अति प्रसन्नहुआ और कईदिन के पश्चात् उसका विवाह बड़ी धूमधाम से करदिया विवाह के उपरान्त बादशाहने बङ्गाले के बादशाहको यह संदेशा भेजा कि तुम्हारी बेटीके साथ मैंने अपने बड़े बेटेका विवाह कर दिया और तुम्हारी बेटी यहां अति प्रसन्नहै बङ्गाले के बादशाह को इसबात से अति हर्ष हुआ और उसका उत्तर यथोचित लिख असंख्य द्रव्य और रत्नादिक भेजे ॥

इति नवम प्रदीप ॥ ९ ॥

अथ दशमःप्रदीपः ॥ १० ॥

अहमदशाहज़ादा और बानूपरी का दृष्टान्त ॥

उपकारेऽपकारंयोमन्यतेकेनचित्कृते ॥
सनश्यतियथाबादशाहोभूतान्मृतोऽकृतः १०

जो कोई किये उपकार को अपकार बुराई जानता वह आपही नष्ट होजाताहै जैसे बादशाह ने निज उपकार को बुरा जाना तो वह जिन्द से मारा गया ॥ १० ॥

इसपर अहमदशाह का दृष्टान्त ॥

पूर्वकाल में एक तेजवान् हिन्दुस्तानके बादशाहके तीन पुत्र थे बड़े का नाम हुसेन दूसरे का नाम अली तीसरे का नाम अहमद और नूरुन्निहार उसके भाईकी पुत्रीथी सो बादशाहने अपने भाई के मरनेके उपरान्त अपनी भतीजी को अपने मन्दिरमें लाकर रक्खा था और बड़े बड़े विद्वानों और गुणवानों से उसको प॰वाया वह अपनी हमजोलियों और निज कुटुम्ब और बादशाह के परिवार से अधिक रूपवान् और बुद्धिमान् थी और बाल्यावस्था से उन पूर्वोक्त शाहजादों के साथ खेलती बादशाह ने

न्देह साध्य है यदि प्राचीन है तो असाध्य होगा यह बात बिना देखे रोगी के स्पष्ट विदित नहीं होसक्ती बादशाह ने खोजियों को आज्ञादी कि इन वैद्यों मेसे एक अथवा दो को लेजाकर शाहजादीकी नाड़ी दिखाओ वह लेजाने लगे शाहजादी यह बात सुनकर मनमें विचार करने लगी यदि वैद्य मेरी नाड़ी देखेंगे तो उनको मालूम होगा कि मुझे कुछ रोग नहीं है मकर से विक्षिप्त बन गई है तो मेरी बनावट का हाल खुल जावेगा अब ऐसा हाल अपना बनाना चाहिये कि कोई मेरे पास न आसके जो कोई उसके पास जाता तो वह उसको काटने और मारने दौड़ती इस भय से कोई उसके पास न जा सक्ता फिर उन सब वैद्यों ने यह दशा देख नाड़ी के देखे बिना अनेकभांतिकी ओषधि और क्वाथ विक्षिप्तता को हटानेवाले उसके पीनेकोदिये शाहजादी उन्हें तत्काल पी जाती फिर वह मनुष्यों के दिखाने के लिये विक्षिप्त बन जाती और एकान्त में अच्छी होजाती निदान बादशाह ने देशदेश के वैद्य शाहजादी के लिये बुलाये परन्तु किसी से वह अच्छी न हुई और फ़ीरोजशाह योगियों के वस्त्र पहिन अपना वेष बदल बंगालदेश के नगर नगर ढूंढता फिरता और उसके सब अङ्ग सूख गये इसीभांति घूमता घूमता एक नगर में पहुँचा जो हिन्दुस्तान से सम्बन्धित था उसने वहांके निवासियों से सुना कि कश्मीर में एक बंगालदेश की शाहजादी है जिससे वहांका बादशाह विवाह करना चाहता है वह ऐसी विक्षिप्त हो गई है कि किसीभांति अच्छी नहीं होती यह सुनतेही फ़ीरोजशाह समझ गया कि वही शाहजादी है जिसको मैं ढूंढता यहांतक पहुंचा तो वहांसे सिधारा और बहुतसा मार्ग का कष्ट उठाकर कश्मीर

विचारा कि तरुणावस्थामे इसका विवाह किसी दूसरे शाहजादे के साथकरूंगा परन्तु जब उसकोमालूम हुआ कि तीनों मेरे पुत्र उस पर मोहितहैं और प्रत्येक की यह लालसाहै कि विवाह उसका मेरे साथ हो तो वह अति चिन्ता करने लगा और सोचा कि यदि इसका विवाह उन तीनोंमें से जिसके साथ करूंगा तो दूसरे अ-प्रसन्न होंगे और मैं किसीकी अप्रसन्नता नही चाहता यदि किसी दूसरे शाहजादे को व्याहदूं तो सबके सब अप्रसन्न होगे न जानिये कि उसके मोहमें मग्न होकर अपने प्राण त्यागदें अथवा किसी दूसरे देशमे चलेजावें यह बात उपाधि उठाये बिना न रहेगी ऐसा कोई उपाय करना चाहिये कि चाहे जिसके साथ उसका विवाह हो दूसरे दो भाई अप्रसन्न न होवें इसीभांति वह बादशाह बहु-काल पर्य्यन्त सोचता रहा अन्त को उसने एक उपाय विचार लिया और तीनों अपने पुत्रों को बुलाकर कहा कि मेरे विचारमे तुम तीनों बराबरहो मैं एक को तुममें से बड़ा समझकर नूरुन्नि-हार का विवाह नही करसक्ता और यहभी नहीं होसक्ता कि उस का विवाह तुम तीनोंके साथ करदूं परन्तु एक बात मैने विचारी है इस कारण किसी न किसीके साथ उसका विवाह होजावेगा और कोई तुममें से अप्रसन्न न होवेगा और तुम तीनों की प्रीति स्थिर होवेगी और तुम मेंसे कोई डाह और बैर न करेगा वह बात यह है कि तुम तीनो पृथक् २ यात्रा करो और एक विचित्र वस्तु मेरे लिये लाओ जिसकी वस्तु अद्भुत होगी उसीके साथ नूरुन्नि-हार का विवाह करूंगा और जो कुछ तुमको उस वस्तुके लानेको द्रव्य चाहिये वह मेरे कोशसे लेजाओ इतना सुन उन तीनों ने इस बात को स्वीकार करी और हरएक अपने मनमें प्रसन्न हुआ

यह कहे कि वह शृंगारकर मेरे आगमन की बाट देखे इतने में शाहज़ादी की आंखें बाजोंके शब्द से खुलगई उसने दासियोंसे पूंछा बाजे क्यों बजते हैं उन्होंने कहा तुम्हारा विवाह बादशाहके साथहोगा यह सब उसकी धूमहै इतना सुनतेही शाहज़ादी मूर्च्छा खाकर गिरपड़ी बांदियों ने यह दशा देखकर बादशाह कश्मीर को यह हाल कह सुनाया वह सुनतेही उसकी ओषधि आदि यत्न करनेलगा पर शाहज़ादी उसी दशामें पड़ीरही जब चैतन्य हुई तो उसने मरनेकी इच्छाकी क्योंकि उसको फ़ारसके शाहज़ादे के सिवाय किसी से विवाह करने की इच्छा न थी तदनन्तर उसने आपको विक्षिप्त बनाया और बादशाह को हज़ारों गालियां देने लगी और धा धाकर मारनेलगी बादशाह उसकी यह दशा देखकर अत्यन्त चिन्तित हुआ और उसके पाससे उठकर बाहर आया और दासियों को आज्ञादी कि इसकी घड़ी २ का हाल मुझसे कहो और यह समझा कि इस सुन्दरी को कोई भूत बाधाहुई है इसलिये आज्ञादी कि वैद्य और फूंकने और झाड़नेवाले आवें और इस शाहज़ादी को हज़ार यत्न और मन्त्र इत्यादि से चंगाकरें पहिले नगरके वैद्योंने उसकी ओषधिकी फिर सब सयानोंने यन्त्र आदिक किये और नानाप्रकारके अभिमंत्रित जल पिलाये और धूनी दी पर वह कुछ अच्छी न हुई किन्तु सन्ध्या को और भी उसकी बुरीदशा भई जिससे बादशाह रात्रिभर बेचैन रहा दूसरे दिन प्रभात को भी वही दशा उसकी रही तो बादशाहने यह इश्तिहार दिया जो कोई शाहज़ादी को अच्छा करेगा तो उसे बहुतसा पारितोषिक दूंगा फिर वैद्यों ने परस्पर सम्मतकर बादशाह से विनय [illegible] होगा तो निस्स-

कि सब भाइयों में मैंही अच्छी वस्तु लाकर नूरुलनिहारके साथ विवाह करूंगा तदनन्तर बादशाह ने सबको उनकी इच्छानुसार द्रव्यदेकर आज्ञादी कि अवशीघ्र यात्राकी तय्यारी करके सिधारो सो वह व्यापारियों का वेषधर कुछ वस्तु और दासों को साथ लेकर साथही अपने पिताकी राजधानी से चले और कई मंजिलों तक इकट्ठेगये फिर वह एक ऐसे स्थानपर पहुँचे जहां देशोंके मार्ग भिन्न भिन्न थे वहां एक सराय मे उतरे उन्हों ने परस्पर मिल भोजन किया और यह प्रतिज्ञाकी कि अब तक हम तीनो भाइयों की एकही राहथी कल हम भिन्न भिन्न होकर भिन्न भिन्न देशों मे जावेगे उचितहै कि हम तीनों भाई एक वर्ष से अधिक यात्रा न करें और इतनी अवधि के उपरान्त इस सराय मे आवें और यहां परस्पर भेंटकर पिताके निकट जावें और जो एक भाई पहुँचे वह यहां बैठकर दोनो भाइयों के आगमन की राह देखे निदान दूसरे दिन वह तीनों भाई परस्पर कंठ लग विदाहो घोड़ोपर सवारहो न्यारे न्यारे देशोंमें गये हुसेन शाहज़ादा जो सब से बड़ा था सदा विष्णुगढ की प्रशंसा सुनता और उसके देखनेकी अति लालसा रखता सो वह उस नगरकी ओर यात्रियो के समूह के साथ जहाजपर चढ़ा तीन मास पर्य्यन्त जलकी यात्रा की उपरान्त पृथ्वी पर बहुत से नगर और दिव्य देश लांघकर विष्णुगढ मे जापहुँचा और एक सराय में उतरा जहां विशेष कर व्यापारी उतरा करते थे वहां के निवासियो से मालूम हुआ कि वहां एक बाजार हैं जहां अति विचित्र और उत्तम वस्तु बिकती हैं दूसरे दिन शाहजादा उसी बाजार में गया उसकी लम्बान चौड़ान और परिधि को देख आश्चर्य में हुआ उसमें हजारों दूकाने अति

भाग्यता के गीत गारहीहै जिसके सुनने से मनुष्यका मन फट जाताहै फ़ीरोजशाहने उसे देखकर पहिचाना और ध्यान धरकर देखा कि उसने अपने को विक्षिप्त बनायाहै वास्तव में उसे कोई भी रोग नहीं तदनन्तर शाहजादेने उस मकानसे आके कहा कि मैंने उसे भलीभांति देखा उसका रोग साध्यहै यदि आज्ञा हो तो मैं उससे कुछ पूंछूं और हाल मालूम करने के उपरान्त यत्न उस का अति सुगम होजावेगा क्योंकि फ़ीरोजशाह भलीभांति जानताथा कि मेरा शब्द सुनतेही अपनी बनाई हुई विक्षिप्तता को छोड़देगी और जो मैं कहूंगा वही करेगी बादशाहने आज्ञादी कि उस मकानका किवाड़खोलदो और इस वैद्यको उसके पास जाने दो जब शाहजादा उस मकान में गया तो शाहजादी उसे वैद्य के वेषमें देख क्रोधकरके और गालियां देनेलगी परन्तु वह न हटा और उसके पास चलागया निदान नम्रतापूर्वक धीरेसे उससे कहा मैं वैद्य नहींहूं मैं फ़ीरोजशाह फारसदेशका शाहजादा हूं तेरे लिये मैंने अपनी यह दशा बनाई यद्यपि शाहज़ादेने अपना वेष बदला और लम्बी दाढ़ी रक्खी हुईथी पर वह शब्द और रूपसे पहिचानकर सावधान होगई और अति प्रसन्न होकर उसका मुख देखनेलगी जैसे कि कोई मनुष्य किसी वस्तु की इच्छाकरे और उसे बहुकालके उपरान्त अति परिश्रमकर पावै फिर फ़ीरोजशाह ने उससे सब हाल पूंछा और अपना वृत्तान्त भी संक्षेप मे वर्णन किया कि नगर २ देश २ फिर तेरा यहां ठिकाना लगा अब प्रसन्नहो मैं तुझे यहांसे निकाल लेजाऊंगा शाहजादी ने यह वृत्तान्त सुन कहा कि मैंने अपने धर्म्म के बचानेके लिये यह उपाय किया उसका सबहाल सुन फ़ीरोजशाहने कहा तुझे मालूम है कि उस

स्वच्छतापूर्व्वक बनीथी और प्रत्येक दूकान के सामने सायबान गर्मी के बचावके लिये इस शोभा और उपाय से लगा हुआ था कि दूकानोपर तनक अँधियारा न होता प्रति वस्तु की दूकानें भिन्न भिन्न थीं और भांति भांति के दिव्य वस्त्र रंग बरंग बूटेदार दूकानो पर क्रमसे रक्खे हुयेथे वृक्ष और सुन्दर पुष्पों के चित्र विचित्र इस उत्तमता से उन कपड़ोंपर कढ़ेहुये उनके देखने से यही ज्ञात होता था कि वास्तव में हीं ये वृक्ष और पुष्पहै इससे विशेष रेशमी आदि ईरान और चीन के बनेहुये असंख्यथान थे कहीं तो शीशे और चीनी आदिक के दिव्यपात्र दूकानों पर भरेहुये और हजारों प्रकारके सुन्दर कालीन आदिक बिकते थे जिनके देखने से वह अचम्भे मे हुआ फिर वहां से उन दूकानों पर आया जिनमे सुनहले रुपहले भाजन और रत्न हीरे आदिक थे जिन की चमक दमक से दूकाने प्रकाशित होरहीथी हुसेन एकही बाजारमे इतना असबाब और रत्न देख मनमे समझा ईश्वरजाने नगर भरमे कितना माल और असबाब होगा और वहां के प्राणी को देख अधिक आश्चर्य मे हुआ कि सबके सब द्रव्यकी आधिक्यतासे दिव्य आभूषणों से अलंकृत होकर फिरते है और उनके दास भी सुवर्ण के कड़े और कण्ठे और अनेक भूषण पहिने रहतेथे और प्रत्येक बाजार मे हरएक भांति के फूलों के ढेरके ढेर और वहांके वासी दिव्य पुष्पोंकी माला कोई तो हाथोंमे लिये और कोई बद्धियां कण्ठोंमे बांधे नगर मे घूमरहे हैं और हाट बाटपर दूकानदार फूलों के गुलदस्ते चुन रखते इस सुगन्ध से बाजार भर सुगन्धित होरहा था हुसेन बहुत काल पर्य्यन्त फिरा फिर थककर कहीं बैठने की इच्छा की सो एक दूकानदारने अपनी बुद्धिसे जानकर प्रीति

में जा पहुँचा और एक सरायमें जा उतरा और दिनभर शाहज़ादी का हाल सुना किया और उसकी यहभी इच्छा हुई कि उस हिंदी दुष्टका हाल जो शाहज़ादी को ले भगाया मालूम करे परन्तुउस का वृत्तान्त किसी ने उसे न सुनाया फिर वह समझ गया कि शाहज़ादी ने अपने बचाव के लिये यह उपाय किया होगा निदान फ़ीरोज़शाह ने योगियों के वस्त्र उतार सांगोपांग वैद्यों के वस्त्र जैसा कि उस देशमें प्रचार था पहिन लिये और दूसरे दिन वह वैद्योंकी भांति गलियों में फिरने लगा एक दिन बादशाह के दरवाज़े पर जाकर उसके रक्षक से कहा कि मैं शाहज़ादी के अच्छा करने के लिये बहुत दूरसे आयाहूं उसने घृणा से उत्तर दिया अपना मुख तो देख तू क्या शाहज़ादी को अच्छा करेगा हज़ारों बुद्धिमान् वैद्यों से तो कुछ न हुआ तुझसे क्या हो सकेगा उसने कहा मैं कुछ बादशाह से नहीं मांगता केवल भाग्य की परीक्षा के लिये यहां आया हूं और बहुत सी लाभकारी औषधियां मैं जानता हूं रक्षक को उस पर दया आई और उसको ठहराकर बादशाह से जो शाहज़ादी के अच्छे होनेसे निराश हो चुकाथा जाकर बिनती की कि एक वैद्य बहुत दूरसे आया है और उसके पास बहुत अच्छी दवाइयां हैं इतना सुनतेही बादशाह ने आज्ञादी उसको मेरेपास लाओ सो वह बादशाह के पास गया बादशाहने सम्पूर्ण वृत्तान्त उससे वर्णन करके कहा वह अपने पास किसी को आने नहीं देती परन्तु तुम उसे दूरसे देख करके औषधि ऐसी दो जिससे वह अच्छीहो इतना कह उसे एक मकान में जो शाहज़ादी के भवनसे लगाहुआ था लेगया फ़ीरो-

पूर्वक उसको अपनी दूकानपर बैठाया एक घड़ीके उपरान्त एक दल्लाल को देखा कि एक गलीचा चारगज का चौकोण लियेहुये कहताहै कि यह गलीचा तीस हज़ार अशरफ़ी को बिकताहै जिसका मनचाहे मोलले शाहज़ादेने यह शब्द सुन आश्चर्य किया और उस दल्लाल को बुलाया और गलीचे को देखकर कहा ऐसा गलीचा एक रुपये को बिकताहै इसमें ऐसा कौन गुण है जिसकी तुम तीस हज़ार अशरफ़ी मांगतेहो उसने शाहज़ादे को व्यापारी समझ कर कहा भाई क्या तुम इस गलीचा का बहुत मोल जानतेहो इसके स्वामी ने मुझसे कहाहै कि मैं चालीस हज़ार अशरफ़ी से कम न बेचूंगा शाहज़ादेने कहा इसमें कोई बड़ागुण होगा जिसका इतना बड़ा मोलहै उसने कहा इसमें बड़ा गुणहै जिस समय तुम इसपर बैठकर किसी स्थानपर दूरहो अथवा निकट जानेकी इच्छाकरो तो तत्कालही तुम उसी स्थानपर पहुँच जावोगे शाहज़ादा यह सुन समझा कि इससे संसार में कोई भी विचित्र वस्तु न होगी ईश्वर का धन्यवादहै कि इस यात्रा का जो मुझे प्रयोजन था वह प्राप्त हुआ निश्चय है कि इस को बादशाह देख अत्यन्त प्रसन्न होगा और पसन्द करेगा तदनन्तर शाहज़ादेने मोल लेनेकी इच्छासे दल्लालसे कहा यदि इस का यही गुण है तो इतने मोलपर मैंही लिये लेताहूं दल्लाल ने कहा जो तुम्हे मेरे वाक्यपर संदेहहो तो इसकी परीक्षा करलीजिये और इसीपर बैठकर सारय में चलिये वहीपर मोल इसका दे दीजियेगा निदान दल्लालने उस दूकानके पीछे गलीचा को बिछा शाहज़ादे को उसपर बैठाय आपभी उसपर बैठकर जानेकी इच्छाकी वह गलीचा तत्कालही देवता के विमान के सदृश वा-

वस्त्र पहिनने उचित हैं बादशाह ने अपने सम्पूर्ण सभासदों को आज्ञा दी कि जिस बात को यह वैद्य आज्ञा करे उसे तुरन्त प्रतिपालन करो निदान दूसरे दिन कल के घोड़े को उठवाओ एकबड़े मैदान मे जो राजभवन के आगे था रक्खा और डौंडी पिटवाई कि नगर के सब लोग अमुक मैदान में इकट्ठे हों और सेना भी घेरा बांधकर खड़ी हो जब नगरवासी इकट्ठे हुये और बादशाह का कटक भी वहीं आया तो वैद्यने आज्ञाकी कि किसी को उस घोड़े के पास न जाने देना और बादशाह भी अपने डेरे मे विराजमान हो और उसके चारोंओर सम्पूर्ण सभासद खड़ेहो और बङ्गालदेश की शाहज़ादी अपनी लौंडियों समेत उसघोड़े पर सवारहो जब उसके कहने के अनुसार सब हो चुका और दासियोंने शाहज़ादीको घोड़ेपरसवारकर घोड़ेकी बागपकड़ के खड़ीहुई तो उस वैद्यने घोड़े के आसपास बहुतसी अग्निकी अङ्गीठियां रखवाई और उसमें तेल और भट्टी भरभर सुगन्ध डाल तीनबेर उसकी परिक्रमा की और कुछ धोखा देनेको पढ़ने लगा तब अङ्गीठियों से ऐसा धुवां निकला कि वह शाहज़ादी घोड़े समेत छिपगई तो वह अवसरपाकर उसके पीछे चढ़ा और चलनेके पेचको घुमाया तो वह घोड़ा तत्काल आकाशकी ओर उड़ा तब फ़ीरोज़शाह ने बड़े शब्द से कहा हे कशमीर के बादशाह! तूने शाहज़ादी से विवाह की इच्छाकीथी अब तू जान कि यह शाहज़ादी फ़ारस के शाहज़ादेका मालहै जो आपने साथ लियेजाता है बादशाह कशमीर और उसके सभासद यह बात सुन अति आश्चर्य में हुये सो [illegible] दिन फ़ीरोज़शाह कई घड़ी के उपरान्त [illegible] देशमें पहुंचा और बादशाह

युमे उड़ा और शीघ्रही सराय में पहुंचगये शाहज़ादेने चालीस हज़ार अशरफ़ियां उस गलीचेका मोल और बीस अशरफियां उस दल्लाल को इनामदीं और बड़ा प्रसन्न हुआ और निश्चय हुआ कि अपने पिताके निकट यह गलीचा लेजाने से अवश्य मुझेनूरुन्निहार व्याही जावेगी और ऐसी अद्भुत और अपूर्व वस्तु मेरे भाइयो को चाहे वह संसारभर में फिरें प्राप्त न होगी तदनन्तर यह शोचा कि उस गलीचेपर बैठकर उसी सरायमें जहां से वह तीनोंभाई अलगहुये थे जाकर उतरे और सब भाइयों के आनेकी राह देखे परन्तु साथही यह शोचा कि मुझे उस जगह बहुत ठहरना होगा और अकेला घबड़ाऊंगा इससे उत्तम है कि यहांके निवासियों और बादशाह को भलीभांति देखलूं और इस नगर की भलीभांति सैरकरूं इसलिये कई महीने तक वहां रहा वहां के बादशाह का यह नियम था कि प्रति सप्ताह में एक दिन परदेशी व्यापारियों की व्यवस्था सुन ने और न्याय चुकाने के लिये विराजता हुसेन उसको इस कारण भलीभांति देखता परन्तु हुसेन को अपने प्रगट करनेकी इच्छा न थी और शाहजादा कि अत्यन्त रूपवान् अति चतुर वाचाल तीव्र बुद्धिथा इस कारण विष्णुगढ का बादशाह और व्यापारियों से उससे अधिक प्रीति करता और बहुधा उससे हिंदुस्तान के राज्य का वृत्तान्त पूंछता फिर शाहज़ादा अति विख्यात मन्दिरों के देखने को गया सो एक देवालय को अति सुन्दर और पीतलका बनाहुआ था देखा जो भीतर से दशगज चौकोण था और उसके मध्य में एक देवता मनुष्य के डीलके समान इस भांति रक्खा हुआथा कि चहुँओर के देखनेवाले उसे अपनी ओर देखतेहुये

कलके घोड़े को बादशाहने कहां रक्खाहै उसने कहा मैं नहीं जानती फ़ीरोज़शाहने विचारा कि बादशाह ने उस घोड़ेको रक्षा पूर्व्वक रक्खा होगा फिर उसे धैर्य्य देकर कहा अब तुझे यह उचितहै कि तू अच्छी बनजा कि बादशाहजाने कि तू मेरी दवासे अच्छी हुई इसकारण जो कुछ कहूंगा वह मानेगा उसने कहा अच्छा दूसरे दिन शाहज़ादी वस्त्र बदल सुधि में आई और सब से भलीभांति यथोचित व्यवहार करनेलगी बादशाह उसको भली चंगी देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ और वैद्य की बहुतसी प्रशंसा की फ़ीरोज़शाह ने जो कुछ उचित था कहकर कहा यह बंगाल देश की शाहज़ादी क्योंकर यहां आई प्रयोजन उसका इसके पूछनेसे यहथा कि बादशाह कलके घोड़ेका वृत्तान्त वर्णन करे परन्तु बादशाह उसके अभ्यन्तर को कुछ न समझा निदान उसने शाहज़ादी के आगमनका हाल जैसा फ़ीरोज़शाह ने शाहज़ादी से सुनाथा कहा और यह भी कहा घोड़ा काठका जो उनके पास रक्खाहुआथा मैंने उसे रक्षापूर्व्वक रखदियाहै शाहज़ादे ने यह सब सुनकर कहा इससे मालूम होताहै कि यह शाहज़ादी उस जादूके घोड़े पर चढ़के आई थी उतरते समय उसे कोई सुगन्ध और धूनी नहीं दीगई इसीकारण उसे प्रेतबाधा हुई यद्यपि मैं उसे जादूके बल सुधिमें लाया परन्तु अभी वह भलीभांति अच्छी नहीं हुई यदि तुम्हारी यह इच्छा है कि वह अच्छी होजाय और फिर कभी उसे भूतबाधा न होतो आप सब नगर निवासियों को बड़े मैदान में इकट्ठा कीजिये और उस जादू के घोड़े को भी वहां मँगवाइये कि मैं शाहज़ादी को उसपर चढ़ाकर उसे धूनीदूं कि कदापि बीमार न हो परन्तु उस दिन शाहज़ादी को उत्तम उत्तम

पूर्वक उसको अपनी दूकानपर बैठाया एक घड़ीके उपरान्त एक दल्लाल को देखा कि एक गलीचा चारगज का चौकोण लियेहुये कहताहै कि यह गलीचा तीस हज़ार अशरफी को बिकताहै जिसका मनचाहे मोलले शाहज़ादेने यह शब्द सुन आश्चर्य किया और उस दल्लाल को बुलाया और गलीचे को देखकर कहा ऐसा गलीचा एक रुपये को बिकताहै इसमें ऐसा कौन गुण है जिसकी तुम तीस हज़ार अशरफ़ी मांगतेहो उसने शाहज़ादे को व्यापारी समझ कर कहा भाई क्या तुम इस गलीचा का बहुत मोल जानतेहो इसके स्वामी ने मुझसे कहाहै कि मैं चालीस हज़ार अशरफ़ी से कम न बेचूंगा शाहज़ादेने कहा इसमें कोई बड़ागुण होगा जिसका इतना बड़ा मोलहै उसने कहा इसमें बड़ा गुणहै जिस समय तुम इसपर बैठकर किसी स्थानपर दूरहो अथवा निकट जानेकी इच्छाकरो तो तत्कालही तुम उसी स्थानपर पहुँच जावोगे शाहज़ादा यह सुन समझा कि इससे संसार में कोई भी विचित्र बस्तु न होगी ईश्वर का धन्यबादहै कि इस यात्रा का जो मुझे प्रयोजन था वह प्राप्त हुआ निश्चय है कि इस को बादशाह देख अत्यन्त प्रसन्न होगा और पसन्द करेगा तदनन्तर शाहज़ादेने मोल लेनेकी इच्छासे दल्लालसे कहा यदि इस का यही गुण है तो इतने मोलपर मैंही लिये लेताहूं दल्लाल ने कहा जो तुम्हें मेरे वाक्यपर संदेहहो तो इसकी परीक्षा करलीजिये और इसीपर बैठकर सारय में चलिये वहींपर मोल इसका दे दीजियेगा निदान दल्लालने उस दूकानके पीछे गलीचा को बिछा शाहज़ादे को उसपर बैठाय आपभी उसपर बैठकर जानेकी इच्छाकी वह गलीचा तत्कालही देवता के बिमान के सदृश वा-

वस्त्र पहिनने उचित हैं बादशाह ने अपने सम्पूर्ण सभासदों को आज्ञा दी कि जिस बात को यह वैद्य आज्ञा करे उसे तुरन्त प्रतिपालन करो निदान दूसरे दिन कल के घोड़े को उठालाओ एकबड़े मैदान में जो राजभवन के आगे था रक्खा और डौंड़ी पिटवाई कि नगर के सब लोग अमुक मैदान में इकट्ठे हों और सेना भी घेरा बांधकर खड़ी हो जब नगरवासी इकट्ठे हुये और बादशाह का कटक भी वहीं आया तो वैद्यने आज्ञाकी कि किसी को उस घोड़े के पास न जाने देना और बादशाह भी अपने डेरे मे विराजमान हो और उसके चारोंओर सम्पूर्ण सभासद खड़ेहो और बङ्गालदेश की शाहजादी अपनी लौंडियों समेत उसघोड़े पर सवारहो जब उसके कहने के अनुसार सब हो चुका और दासियोंने शाहजादीको घोड़ेपरसवारकर घोड़ेकी बागपकड़ के खड़ीहुई तो उस वैद्यने घोड़े के आसपास बहुतसी अग्निकी अङ्गीठियां रखवाई और उसमें तेल और मट्टी भरभर सुगन्ध डाल तीनबेर उसकी परिक्रमा की और कुछ धोखा देनेको पढ़ने लगा तब अङ्गीठियों से ऐसा धुवां निकला कि वह शाहजादी घोड़े समेत छिपगई तो वह अवसरपाकर उसके पीछे चढ़ा और चलनेके पेचको घुमाया तो वह घोड़ा तत्काल आकाशकी ओर उड़ा तब फीरोजशाह ने बड़े शब्द से कहा हे कशमीर के बादशाह! तूने शाहजादी से विवाह की इच्छाकीथी अब तू जान कि यह शाहजादी फारस के शाहजादेका मालहै जो आपने साथ लियेजाता है बादशाह कशमीर और उसके सभासद यह बात सुन अति आश्चर्य मे हुये सो उस दिन फीरोजशाह कई घड़ी के उपरान्त बङ्गालेकी शाहजादी को लेकर फ़ारस देशमें पहुंचा और बादशाह

षट्शास्त्री चार पांच महीने की राहसे वहां आकर यथाविधि व-न्दना करते निदान हिन्दुस्तान भरके वासी पूजनके निमित्त इतने इकट्ठे होते जिनको देख शाहजादा आश्चर्य में हुआ उस मैदान के एक ओर चालीस स्तम्भों पर नव खण्डा एक बड़ा विशाल सु-न्दर भवन था जिसमें बादशाह और उसके मंत्री और प्रधान परदे-शियों के न्यायके लिये बैठाकरते वह मन्दिर भीतरसे बहुतसी दिव्य सामग्रीसे अलंकृतथा और बाहरसे नानाप्रकारके देशों और विशेष कर पशु पक्षी के महासुन्दर चित्रोंसे विचित्र था वह चित्रकारियां इस सुन्दरता और कारीगरी से खिची थीं कि सचमुच की मालूम होतीं दूसरे देहाती गँवार महाविकराल पशुपक्षी जैसे कि सिंहआ-दिके की चित्र देखकर डरजाते और इसमैदान के तीन ओर काष्ठ के अतिविचित्र मन्दिर इसीभांति भीतरबाहरसे सजे हुये इसकारी-गरी से बनेहुये थे जिस ओरको चाहें घुमाने से मनुष्योंसमेत फि-रते सो मनुष्य तमाशा देखने के लिये काष्ठके मन्दिरों को घुमाते और प्रति स्थानपर अनुमान एकहजार के मत्त हाथी जो सुन-हली झूलों और रुपहले हौदों से सुशोभित थे दृष्टि पड़े उनपर गवैये गाते और नकालनकलें करते और हाथियों के पाठे नाना भांतिके रंगोंमे चित्रितथे हुसेन शाहजादा हाथियोंका तमाशा देख अधिक आश्चर्य में हुआ अर्थात् एक बहुत बड़ा हाथी चारतिपा-ईयों पर जिनके नीचे पहिये लगे थे उनपर चारों चरण खड़ा हुआ शूंड़से बांसुरी बजाता जिस के सुनने से सब लोग वाह वाह क-रते और उस हाथी को जिधर चाहते खींचकर लेजाते और दूसरा हाथी पहिले से कुछ छोटा एककाष्ठके बड़े शहतीरके एक सिरे पर खड़ाथा और वह शहतीर एक ऊंची तिपाई पर जो अनमान आ-

के पासगया बादशाह अपने पुत्र को देखकर अति प्रसन्नहुआ और कईदिन के पश्चात् उसका विवाह बड़ी धूमधाम से करदिया विवाह के उपरान्त बादशाहने बङ्गाले के बादशाहको यह संदेशा भेजा कि तुम्हारी बेटीके साथ मैंने अपने बड़े बेटेका विवाह कर दिया और तुम्हारी बेटी यहां अति प्रसन्नहै बङ्गाले के बादशाह को इसबात से अति हर्ष हुआ और उसका उत्तर यथोचित लिख असंख्य द्रव्य और रत्नादिक भेजे ॥

इति नवमःप्रदीपः ॥ ९ ॥

अथ दशमःप्रदीपः ॥ १० ॥

अहमदशाहज़ादा और बानूपरी का दृष्टान्त ॥

उपकारेऽपकारंयोमन्यतेकेनचित्कृते ॥
सनश्यतियथाबादशाहोभूतान्मृतोऽकृतः १०

जो कोई किये उपकार को अपकार बुराई जानता वह आपही नष्ट होजाताहै जैसे बादशाह ने निज उपकार को बुरा जाना तो वह जिन्द से मारा गया ॥ १० ॥

इसपर अहमदशाह का दृष्टान्त ॥

पूर्वकाल में एक तेजवान् हिन्दुस्तानके बादशाहके तीन पुत्र थे बड़े का नाम हुसेन दूसरे का नाम अली तीसरे का नाम अहमद और नूरुन्निहार उसके भाईकी पुत्रीथी सो बादशाहने अपने भाई के मरनेके उपरान्त अपनी भतीजी को अपने मन्दिरमें लाकर रक्खा था और बड़े बड़े विद्वानों और गुणवानों से उसको पढ़ाया वह अपनी हमजोलियों और निज कुटुम्ब और बादशाह के परिवार से अधिक रूपवान् और बुद्धिमान् थी और बाल्यावस्था से उन पूर्वोक्त शाहज़ादों के साथ खेलती बादशाह ने

समझते और उसके नेत्र बहुमूल्य रत्नों से जड़े थे तदनन्तर दूसरे गावँ में देवालय देखा कि वह भी अति विचित्र पहिले के समान बनाहुआ था उस जगह एक मैदान अनुमान आधे बीघेके चौड़ाथा जिसमें अति सुगन्धित पुष्प आदिके वृक्ष अति सुन्दरता से लगे थे और उस पुष्पवाटिकाके चहुँओर दीवारें अनुमान तीस गज के ऊंची थी जिससे कोई पशु उसके भीतर न जासके और उस मैदान के मध्य में एक चबूतरा एक मनुष्य की ऊँचाई के अनुमान पत्थर का बना हुआथा और उसके पत्थरों को इस कारीगरी से जमाया था कि वह एकही पत्थर का मालूम होताथा और उस चबूतरे पर एक देवालय पचासगज का ऊंचाथा कि चारों ओर कोसों से दीखता लम्बान उसका तीस गजका चौड़ाई उसकी बीसगज की थी वह निपट संगमरमर का बनाहुआ था और उसका पत्थर ऐसा साफ और चिकना था कि शीशे के सदृश उसमें मुखदीखता था मण्डप उसका अति विचित्र बनाहुआ था उसमें देवताओं के सैकड़ो चित्र रक्खेहुये थे प्रतिदिन भोर और सन्ध्याको ब्राह्मणोंकी स्त्री पुरुष और बालक आते और नाना भांति की पूजाकर कुतूहल करते कोई तो मग्न होकर नाचता और कोई प्रसन्नता से गाता बजाता और स्थान स्थानपर इन्द्रके तुल्य सभा लगाकर नाच तमाशे देखते और दूरदूर से लाखो मनुष्य भेटदेने को एकत्र होते और नानाभांति की असंख्य वस्तु और बहुतसी द्रव्य उस देवालय में चढ़ाते शाहजादे ने वहां का वार्षिक मेला भलीभांति देखा मेले के दिन सब नगरों के प्रधान और मुख्य मुख्य नगरनिवासी उस देवालय में पूजन कर परिक्रमा करते विशेष एक महा विशाल देवालय में बड़े बड़े पण्डित

खाते फिरते थे उनमें से एक दलाल आधे गजकी लम्बी और पौन गजकी चौड़ी दिव्य हाथीदांत की दूरबीन हाथो मे लियेहुये कहता फिरताहै कि इस दूरबीन का मोल तीस हजार अशर्फी है शाहजादा अली यह सुन विचारा कि यह दलाल विक्षिप्त होगा तदनन्तर शाहज़ादे ने एक दूकानदार से पूंछा क्या यह दलाल विक्षिप्तहै कि तीस हज़ार अशर्फी एक हाथीदांतकी कहता फिरताहै भला कोईभी दिवानां होगा जो इस ओछी वस्तु को इतनी अशरफियों पर मोल लेगा उस दूकानदार ने कहा भाई यह दलाल और दलालों से अधिक चतुर और विश्वासित है इसके द्वारा हज़ारों रुपयो का व्यवहार होता है कलतक भला चङ्गा था आजका हाल मालूम नही कि विक्षिप्त होगया हो यदि वह इस दूरबीनकी तीस हजार अशरफी कहता है तो वह अवश्य इसी मोलकी होगी अभी इसका हाल मालूम हुआ जाताहै जरा यहां आनेदो तबतक आप मेरी दूकान पर ठहरिये सो वह वहां ठहर गया इतने में वह दलाल वहां पहुंचा उस व्यापारी ने उसे निकट बुलाकर कहा कि इस दूरबीन का गुण कह कि बहुधा मनुष्य इसका मोल सुनकर आश्चर्य करते हैं विशेष कर इसने तुझे विक्षिप्त बनायाहै उसने उत्तर दिया कि आप इसका मोल सुन कर मुझे विक्षिप्त बनाते है जब मैं इसका गुण वर्णन करूंगा तो इसी समय इसको मोल ले लीजियेगा आपही किन्तु नगर के आदमी भी इसकी कीमत सुनकर हंसते हैं फिर उसने वह दूरबीन अली शाहजादे को दिखाकर कहा इसके देखने का प्रकार मैं तुमको बताताहूं इसके दोनों सिरों पर शीशे के दो टुकड़े लगेहुये हैं तुम अपनी दृष्टि को उन दोनों शीशोंके सामने

कड़ों कोसों की वस्तु इस प्रकार दिखाई देती है जैसे कि सामने रक्खी है जिसका मन चाहे परीक्षा लेले मैं तुमको इसकी विधि ब-त.तांहूं हुसेन ने उस दूरबीन को उससे लेकर जिस विधान से उ-सने उसे बताया था नूरुन्निहार के देखनेकी इच्छाकी दूरसे दोनों भाई उसकी ओर देखरहे थे कि देखें वह क्या कहताहै अकस्मात् उन्होंने उसके मुखका रङ्ग बदलगया देखा उसे चिन्तायुक्त देखकर आश्चर्य में हुये हुसेन ने कहा कि हम तीनोंने जो इतना परिश्रम नूरुन्निहार के लिये कियाथा सब व्यर्थगया अब मैंने इसको देखा अत्यन्त रोगी मृत्यु के निकट पाया उसके चहुंओर दासियां और खोजे खड़े होरहे हैं यदि तुम भी चाहो तो उसका अन्तका दर्शन करलो शाहजादा अलीने भी देखा वही दशा पाई तदनन्तर वह दूरबीन अहमद को दी तो उसने भी उसे उसी दशा में देखा तब अपने भाइयों से कहा यद्यपि नूरुन्निहार पर हम सब मोहितहैं परन्तु मैं उसे इसी समय नीरोग करसक्ता हूं इतना कह उसने उ-सी सेव को जेब से निकालकर उन दोनों को दिखाया और कहा यह भी गलीचे और दूरबीन के मोलसे कम मोलका नहीं है अब इसकी परीक्षा का यही समय है इसमें बड़ा गुणहै जो मनुष्य चाहे कैसाही रोगीहो इसके सुंघाती समय देखलेना परन्तु इसी समय वहां पहुँचजावें हुसेन ने अहमद से कहा यह कुछ कठिन नहीं हम गलीचेपर बैठकर तत्कालही नूरुन्निहार के समीप पहुँचसक्ते हैं अब विलम्ब मतकरो मेरे साथ तुम दोनों बैठजावो कि बातकी बातमें वहां पहुँचजावें और सेवकों को यहीं छोड़ो पीछेसे वहां पहुँच रहेंगे निदान वह तीनों उसी गलीचेपर बैठे और सबने प-हुँचनेकी इच्छाकी सो तत्कालही वह नुरुन्निहार के समीप प-

ठगज के थी रक्खाथा और उस शहतीर के दूसरे सिरे पर लोहा हाथी के बोझके समान था कभी वह हाथी ज़ोर करने के कारण पृथ्वीपर आलगता और कभी वह उठकर ऊपरको आजाता वह गज उस अवस्था में हावभावकर अपना नाचदिखाता और शूंड़ से तानके साथगाता और हाथी भी उसके साथगाते और मनुष्य उसको इसी दशामें इधर उधर लिये फिरते यह हाथियोंका तमाशा बादशाह के सम्मुख होता हुसेन शाहज़ादा ऐसे अनूठे तमाशे के देखने के लिये एक वर्षपर्य्यंत विष्णुगढ़ में रहा तदनन्तर एक दिन सरायके पिछवाड़े जिसमें वह रहता था जाकर उस ग़लीचे को बिछाया और उसपर अपने सेवकसमेत जिसको वह साथ लायाथा बैठा और मनमें उसी सराय में पहुंचने की इच्छाकी जिसमें उसके भाइयों ने पहुँचने की प्रतिज्ञा कीथी इतना विचारतेही वह तत्काल वहां पहुँचगया और व्यापारियों के वेष से वह ठहरकर अपने भाइयों के आनेकी राह देखने लगा और शाहज़ादाअली जो हुसेनसे छोटाथा एक यात्रियों के समूह के साथ ईरानदेशको सिधारा चारमहीने के उपरान्त शीराज़में जो फ़ारस की राजधानी थी पहुँचा और अन्य व्यापारियों के साथ जिनसे अति प्रीति होगई थी एक सराय मे उतरा और अपने को रत्नपारखी प्रसिद्ध कर उनके साथप्रीतिपूर्वक रहनेलगा जबव्यापारियों ने लेन देन का उद्योग किया तबशाहज़ादा भी अपने वस्त्र बदल वहां के बड़े बाजारमेंगया वह बाजार सब पक्का था दूकानें सब मण्डपाकारगोल स्तम्भों पर बनीहुई थीं अली उस बाजारकी सैरकर अचम्भा करनेलगा कि एक बाजार में तो करोड़ों रुपयों की वस्तुहैं सो नगर भरके द्रव्यकी क्या गिनती कीजाये इत्यादि प्रतिवस्तुके नमूनेदि-

हुँचगये सेवक उनको देखकर डरगये और कहनेलगे कि यह तीन मनुष्य क्योंकर यहां घुसआये पहिले उन्होंने चाहा कि उनको मारकर निकालदें फिर पहिचानकर आश्चर्य में हुये सबसे पहिले शाहज़ादा अहमदने आगे बढ़कर वह औषधमयी सेव नूरुल्-निहार को सुँघाया थोड़े काल के उपरान्त उसने अपने नेत्र खोल दिये और अपना मुख इधर उधर फेरकर उनको सब को देखा तदनन्तर अपनी शय्या से उठ वस्त्र मांगे और यह समझी कि सोकर अभी उठीहूं इतने में दासियों ने उससे कहा यह तीनों तेरे चचेरे भाई अभी आये हैं और अहमद ने तुम्हें कोई वस्तु सुँघाकर अच्छा कियाहै वह उनको देखकर अति प्रसन्न हुई और अहमदका गुण माना और तीनों शाहजादे भी उसके आरोग्य होने से प्रसन्न हुये तदनन्तर नूरुल्निहार से विदा होकर बादशाहके समीप गये उनके पहुँचने के प्रथम सेवक सम्पूर्ण वृत्तान्त कहचुके थे बादशाहने उठके सबको प्रीतिपूर्व्वक अपने कंठ से लगाया और नूरुल्निहार को इन शाहजादों के द्वारा नीरोग होने से अति आश्चर्य किया तदनन्तर उन्हों ने अपनी अपनी वस्तु बादशाहको दी और उनके गुण वर्णन किये और कहा इन तीनों वस्तुओं को देखकर जो सबसे उत्तम और विचित्रहो अपने प्रण के अनुसार उसके लानेवाले को नूरुल्निहार से विवाह कर दीजिये यह सुन बादशाह अति चिन्ता करने लगा और मनमें सोचा यदि मैं नूरुल्निहार को अहमदको विवाहदूं तो औरों पर अन्याय होगा जो अलीके निकट दूरबीन न होती तो क्योंकर उस के बीमार होनेका हाल विदित होता इसी प्रकार जो हुसेन का गलीचा न होता तो किस प्रकारसे नूरुल्निहार के समीप पहुँचते

विदाहोकर समरकन्दकी ओर गया और वहां जाकर एक सराय में उतरा दूसरे दिन उस नगर के चौक में गया, वहां उसने एक दल्लाल को देखा कि वह सेव हाथमें लिये हुये कहता फिरता है यह सेव पैंतिसहज़ार अशरफी को बिकता है अहमद ने उस को निकट बुलाकर पूंछा मुझको यह सेव दिखाकर इसका गुण कह दल्लालने वही सेव अहमदको देकर कहा आप इसको देखिये और इसका इतना मोल सुनकर अचम्भा न कीजिये इसके गुण सुनिये मनुष्य कितनाही रोगी होगयाहो अथवा मृत्यु निकट पहुंचे इसके सूंघतेही तत्काल आरोग्य होजावेगा मानो उसे कदापि रोग न व्यापाथा और तुरन्त उसकी देहमें बल आजाताहै फिर जन्मभर रोगी न होगा अहमदने कहा जो यह सत्यहै तो मैं इसे इसी संख्यापर मोल लेताहूं दल्लाल ने कहा भाई इस बातको यहां के सब व्यापारी जानते हैं यह सेव एक बड़े वैद्यनेकई बूटियां और औषधसंयुक्त कर बहुत वर्षों परिश्रम करके बनायाथा और औषधियों की प्राप्ति के लिये बहुतसा धन व्यय किया और सैकड़ों रोगियों को केवल सुंघाने सेही अच्छा किया परन्तु वह अकस्मात् कालवश हुआ और इससेवको आप सूंघने न पाया मरने के उपरान्त कुछ भी द्रव्य न छोड़ा उसके परिवार में बहुत से असमर्थ बालकहैं अब उसकी स्त्रीने लाचारहोकर इससेवको बेंचने के लिये निकालाहै दल्लालकी बातें सुनकर बहुत से मनुष्य एकत्र होगये संयोगवश उस समूह मेंसे एक मनुष्य ने आगे बढकर कहा कि मेरा मित्र बहुकाल से रोगी होगयाहै और अब वह अपने जीवन से निराश है तुम चलके ज़रा यह सेव उसे सुंघादो तो मैं तुम्हारा [redacted] मानूंगा जन्मभर तुम्हारा यशबखानूंगा अहमद ने यह

और उसको आरोग्य करते मेरे विचार मे तीनोंकी वस्तु तुल्यहै यदि एक वस्तु न होती तो उसका अच्छा होना असम्भवित था फिर भी इसका निर्णय न हुआ अभी वही कठिनताहै परन्तु अब चाहताहूं कि आज कोई दूसरा यत्न विचारकर उसमे जिसको श्रेष्ठ पाऊं उसे नूरुल्लनिहार व्याहदूं इतना शोचकर उनसे कहने लगा तुम तीनों भाई घोड़ों पर सवार हो और अपने साथ धनुषबाण लेकर अमुक मैदान में घुड़दौड़के लिये जाओ और मैं भी अपने सभासदों सहित आताहूं तुम तीनों भाई मेरे साम्हने एक २ तीर फेको जिसका तीर दूर जावेगा उसीको नूरुल्लनिहार मिलेगी वह सब अपने पिताकी आज्ञानुकूल उसी मैदान में गये और बादशाह भी उन्हीं विचित्र वस्तुओं को कोष मे भिजवाकर वहां पहुचा पहिले हुसेन ने जो सबसे बड़ा था तीरछोड़ा फिर अली ने सो इसका तीर थोड़ी दूर आगे गया इसके उपरान्त अहमद ने तीर चलाया परन्तु उसका तीर किसी को दृष्टि न पड़ा कि वह कहां गिरा निदान सबने यही विचारा कि वह तीर यातो इतना दूर गया कि किसी को दिखाई नहीं देता अथवा अहमद के हाथमेही रहगया सो बादशाहने इस बात का अधिक विचार न करके अली के साथ नूरुल्लनिहार का विवाह ठहराया और कुछ दिनके उपरान्त बड़ी धूम धाम से विवाह करदिया परन्तु हुसेन शाहजादा डाहसे उस समाज मे संयुक्त न हुआ क्योंकि वह और भाइयों की अपेक्षा नूरुल्लनिहारकी बहुत प्रीति रखताथा सो लज्जा से उसने योगियों के सदृश गेरुवे वस्त्र पहिने और संसारका माया मोह जो सदा स्थिर नहीं रहता परित्याग किया अहमद को भी बड़ी डाहउपजी और अत्यन्त लज्जा से विवाहमे न गया परन्तु योगीका वेष धा-

करो यद्यपि वह वस्तु हज़ार कोश पर क्यों न हो पर वह इसभांति तुमको दिखाई देगी जैसे तुम्हारे निकट रक्खीहुई है शाहज़ादेने कहा मुझे तेरे कहने का विश्वास नहीं जबतक कि मैं इसदूरबीन की परीक्षा न लेलूं दल्लाल ने दूरबीन शाहज़ादे के हाथ में दी और देखने की विधि उसको बताकर कहा जिसको तुम देखना चाहो अपने मनमें उसका सङ्कल्प कर देखो अली ने अपनेपिता के देखने के विचारसे दूरबीन को अपनी दृष्टि के सामने किया तो उसने अपने पिताको कुशल पूर्व्वक तख़्तपर बैठे देखा फिर अपनी प्रिया नूरुन्निहारको भी देखा कि वह भी अपनी शय्यापर कुशल-पूर्व्वक बैठी है और उसकी दासियां उसकी शय्याके चहुँओर हाथ बांधे खड़ी हैं इस अपूर्व्व दूरबीन को देख बहुत अचम्भे में हुआ और मनमें कहनेलगा यदि दशवर्ष पर्य्यन्त देशोदेश घूमता और ढूंढ़ता तो इस विचित्र दूरबीनसी कोईवस्तु प्राप्त न होती तदनन्तर उसदल्लालसे कहा वास्तवमें जैसा तुमने इसका गुण कहाथा वैसा हमने पाया तीसहज़ार अशरफ़ी मुझसे लो दल्लालने कहा भाई इस के स्वामीने प्रण कियाहै कि चालीसहज़ार अशरफ़ी से कम न लूंगा शाहज़ादेने दल्लालको खवाज़ान सरायमें लेजाकर चालीस हज़ार अशरफ़ियां उसको गिनदी और दूरबीन को जो वास्तव में संसार दर्शक थी मोललेकरअति प्रसन्न हुआ और समझा कि इस दूरबीन के कारण मुझे अवश्य नूरुन्निहार मिलेगी तदनन्तर वह पारस देशकी सैर करने लगा एक वर्ष के अनुमान वहां रह कर यात्रियों के साथ हिन्दुस्तान को सिधारा और कुशलपूर्वक उसी सराय में पहुँचा जहां हुसेन बैठा था और हुसेनके साथ रहने लगा तीसरा शाहज़ादा जिसका नाम अहमद था अपने भाई से

रण न किया और सदैव अपने तीर को ढूंढ़ता रहताथा एक दिन वह अकेला उस तीर के ढूंढ़ने के लिये चला और वहांसे सूधा दाहिने बायें देखता हुआ आगे बढ़ा और कई बड़े २ पर्व्वतों के शिखरों पर ढूंढने लगा तो उसे एक बड़े टीलेपर पड़ाहुआ पाया आश्चर्य्य में होकर मनमें विचारने लगा कि इतनी दूर तीरका आना असम्भवितहै और उस तीर को देखकर और अचम्भे मे हुआ कि पत्थरपर चिपका हुआहै विचारा कि इसमें कोई भेद अवश्य है फिर आगे बढ़कर एक कन्दरा में जो उसी शिखरपरथी गया और थोड़ी दूर जाकर एक लोहेका दरवाज़ा उसे दृष्टि पड़ा उसके भीतर जाकर उसने कुछ ढलाव पाया जिसमें वह तीर समेत चला और समझा कि यहां अधिक अँधियारा होगा परन्तु वहां दिव्य उजियारा था और वहां से पचास व साठ पगपर महा सुन्दर विशाल घरथा जिसमें उसने क्या देखा कि एक स्त्री अतिरूपवती राजसी स्वच्छ वस्त्र आभूषणो से अलंकृत अपनी अनुचरियों के मध्यमें धीरे धीरे द्वारकी ओर चली आतीहै शाहजादा उसे प्रणाम करने लगा उसने आपही निकट आकर अत्यन्त प्रीति और मीठी वाणीसे आगत स्वागत और शिष्टाचार कर कहा हे अहमद ! कुशल से तो हो शाहज़ादा अपना नाम सुन आश्चर्य मे हुआ कि यह मृगनयनी जिससे मेरी कभी भी भेट नहीं मेरा नाम क्योंकर जानतीहै फिर उसके चरणों को छूकर कहा हे मृगनयनी ! मै तुम्हारे सत्कार करने से गुण मानताहूं परन्तु आश्चर्य्य में हूं कि तुमने मेरा नाम क्योंकर जाना उसने कहा अब हम और तुम चलके बारहदरी में आनन्द भोगे वहां पहुंच कर तुम्हारे प्रश्नका उत्तर दूंगी इतना कहकर वह चन्द्रमुखी शाहज़ादे को अपने साथ

विदाहोकर समरकन्दकी ओर गया और वहां जाकर एक सराय में उतरा दूसरे दिन उस नगर के चौक मे गया, वहां उसने एक दल्लाल को देखा कि वह सेव हाथमे लिये हुये कहता फिरता है यह सेव तीसहज़ार अशरफ़ी को बिकता है अहमद ने उस को निकट बुलाकर पूंछा मुझको यह सेव दिखाकर इसका गुण कह दल्लालने वह सेव अहमदको देकर कहा आप इसको देखिये और इसका इतना मोल सुनकर अचम्भा न कीजिये इसके गुण सुनिये मनुष्य कितनाही रोगी होगयाहो अथवा मृत्यु निकट पहुँचे इसके सूंघतेही तत्काल आरोग्य होजावेगा मानो उसे कदापि रोग न व्यापाथा और तुरन्त उसकी देहमें बल आजाताहै फिर जन्मभर रोगी न होगा अहमदने कहा जो यह सत्यहै तो मैं इसे इसी संख्यापर मोल लेताहूं दल्लाल ने कहा भाई इस बातको यहां के सब व्यापारी जानते हैं यह सेव एक बड़े वैद्यनेकई बूटियां और औषधसंयुक्त कर बहुत वर्षों परिश्रम करके बनायाथा और औषधियों की प्राप्ति के लिये बहुतसा धन व्यय किया और सैकड़ों रोगियो को केवल सुंघाने सेही अच्छा किया परन्तु वह अकस्मात् कालवश हुआ और इससेवको आप सूंघने न पाया मरने के उपरान्त कुछ भी द्रव्य न छोड़ा उसके परिवार में बहुत से असमर्थ बालकहैं अब उसकी स्त्रीने लाचारहोकर इससेवको बेंचने के लिये निकालाहै दल्लालकी बातें सुनकर बहुत से मनुष्य एकत्र होगये संयोगवश उस समूह मेसे एक मनुष्य ने आगे बढकर कहा कि मेरा मित्र बहुकाल से रोगी होगयाहै और अब वह अपने जीवन से निराश है तुम चलके ज़रा यह सेव उसे सुंघादो तो मैं तुम्हारा बड़ा गुणमानूंगा जन्मभर तुम्हारा यशवखानूंगा अहमद ने यह

लेकर बारहदरी मे गई शाहजादा वहां पहुंचकर उसको देखने लगा जिसके सुनहली गोल मंडपाकार गुम्बजपर लाजवर्द से चित्रकारियांथीं और नानाभांतिकी दिव्य सामग्रीसे अलंकृत देख आश्चर्य में हुआ इस से परीने कहा यह मकान और मकानो से कि वास्तवमे तुम्हारे हैं तुच्छहै जब उन को देखोगे तो अतिप्रसन्नहोगे फिर अहमद को अपने निकट बैठाकर कहने लगी तुम मुझको नहीं जानते परन्तु में तुमको भलीभांति जानतीहूं अब में अपने कुलका हाल कहतीहूं तुम ने पुस्तकों में पढाहोगा कि धरती पर कहीं जिन्न भी रहते हैं मैं एक बड़े प्रतिष्ठित जिन्न की पुत्रीहूं और मेरा नाम परीबानू है अब तुम अपने पिताका वृत्तान्त जो बादशाह है मुझसे सुनो नूरुल्निहार तुम्हारी चचेरी बहिनहै और तुम तीन भाईहो और प्रत्येक को यह इच्छा थी कि नूरुल्निहार मुझे मिले तुम तीनोने अपने पिता के विचारके अनुकूल बहुत दूरकी यात्रा की और तुम पूर्व्वोक्त प्रयोजन के निमित्त समरकन्द में जाकर औषधियों का सेब जिसका कारण मै हुई लाये और इसीभांति तुम्हारा बड़ाभाई विष्णुगढ में जाकर गलीचा लाया और अली हाथीदांत की दूरबीन बस इतना वर्णन बहुत है कि तुम जानो कि मै तुम्हारे हाल को परिपूर्ण जानती हूं अब तुम सत्य कहो मैं अच्छी हूं या नूरुल्निहार के साथ तुम्हारा मन विवाहको चाहता है जब तुमने तीर फेकनेका इरादा किया था उस समय मैंने विचारा कि तुम्हारा तीर हुसेन से आगे न जावेगा तो तुम्हारे छोड़ते ही मैंने उसे वायु में पकड़ा और दृष्टि बन्दकर इस शिखरपर डाल दिया इसलिये कि तुम उसे अवश्य ढूंढने आओगे और इसी बहाने मेरी तुमसे भेंटहोगी अब

वचन सुनकर दल्लाल से कहा जो वह रोगी इस सेवके सूंघने से नीरोग होजायगा तो अभी चालीसहजार अशरफ़ी देताहूं उसने कहा बहुत अच्छा आप इसकी परीक्षा लेलीजिये मैंने तो इसके द्वारा अनेक रोगियों को नीरोग किया निदान वह रोगी उस सेव के सुंघातेही नीरोग हो गया तदनन्तर अहमद ने चालीस हज़ार अशरफ़ियां उसको गिनदीं और वह सेव मोललिया और इच्छा की जो कोई यात्री हिन्दुस्तान का जाने वाला मिले उसके साथ यहांसे चलूं और जबतक न मिले तबतक इधर उधर की सैर करूं कितने दिनों के उपरान्त अहमद यात्रियों के साथ हिन्दुस्तान को चला और कुछ काल में कुशलपूर्वक उसी सराय में जहां दोनों भाई उतरेथे जापहुँचा निदान तीनोंभाई परस्पर भेंट कर अत्यन्त प्रसन्नहुये और ईश्वरका धन्यवाद किया हुसेन शाहज़ादेने जो सबसे बड़ा था कहा अब हम अपनी अपनी यात्रा का हाल और अपनी वस्तुका हाल कहते हैं और उसका गुण वर्णन करतेहैं मैंने एक गलीचा जिसपर बैठाहूं मोल लिया यद्यपि यह प्रगटमें कुछ वस्तु नहीं परन्तु इसमें बहुत बड़ा गुण जब कोई मनुष्य इसपर बैठकर किसी दूर वा निकट देशके जाने की इच्छाकरे तो उसी समय वहां पहुँच जावे मैंने इसे चालीस हज़ार अशरफ़ी को मोल लिया मैं इसपर बैठ यहां आया

इतना हाल कहचुकी तो प्रीतिकी दृष्टिसे उसने अहमद को देखा और लज्जित होकर नयन नीचे कर दिये और शाहजादा यह सब बातें सुनकर अतिप्रसन्न हुआ यह तो जानता था कि अब किसीभांति नूरुल्निहार नहीं मिलसक्ती और परीबानू भी अति सुन्दरी है उसके रूप अनूप मनहरण को देखतेही मोहित होगया कि नूरुल्निहार की प्रीति भूलगया निदान उस सुन्दरी को अति सन्तुष्ट पाकर कहने लगा अब मुझको यही इच्छा है कि जन्म भर तुम्हारी सेवामें रहूं मैं मनुष्यहूं और तुम जिन्नकी पुत्रीहो तुम्हारे गुरुजन इस सम्बन्ध को क्योंकर स्वीकार करेंगे उसने कहा मैं इस विषय में स्वाधीनहूं जिसके साथ चाहूं अपना बिवाह करलूं परन्तु जो तुमने कहा कि मैं तुम्हारी सेवामें रहूं यह अनुचित है तुम मेरे पति और इनवस्तु और भवनादिक के स्वामी हो मुझे ही अपनी दासी समझो और मुझे तुम्हारे साथ बिवाहकी अतिलालसा है और मुझे तुम्हारी बुद्धि और प्रवीणता से परिपूर्ण आशाहै कि तुम इस बातसे इन्कार न करोगे और मैं तो कहचुकी कि मैं स्वाधीनहूं इसके विशेष हमारे कुलमें यह रीति है कि तरुण अवस्था पर हरएक परी जिन्न अथवा मनुष्य पर जिससे उस का मन लोभायमान हो उसके साथ अपना विवाह करले इससे जन्मभर स्त्री पुरुष में परस्पर प्रीति रहती है जब बानूपरी ने यह सबबातें कहीं तब शाहजादा उसके उत्तर में अत्यन्त कृतकृत्य हो कर उसके वस्त्रको झुककर चूमनेलगा परन्तु बानूपरी ने उसे झुकने न दिया और उसके पलटे अपना हाथ दिया जिससे शाहजादे ने अतिप्रीति से वहांकी रीतिके अनुकूल चूमा और अपने नेत्र और हृदय में लगाया बानूने मुसकरा के कहा अब इस हाथ

कड़ों कोसों की वस्तु इस प्रकार दिखाई देती है जैसे कि सामने रक्खी है जिसका मनचाहे परीक्षा लेले में तुमको इसकी विधि ब-तलाताहूं हुसेन ने उस दूरबीन को उससे लेकर जिस विधान से उसने उसे बताया था नूरुन्निहार के देखनेकी इच्छाकी दूसरे दोनों भाई उसकी ओर देखरहे थे कि देखें वह क्या कहताहै अकस्मात् उन्होंने उसके मुखका रङ्ग बदलगया देखा उसे चिन्तायुक्त देखकर आश्चर्य में हुये हुसेन ने कहा कि हम तीनोंने जो इतना परिश्रम नूरुन्निहार के लिये कियाथा सब व्यर्थगया अब मैने इसको देखा अत्यन्त रोगी मृत्यु के निकट पाया उसके चहूंओर दासियां और ख्वाजे खड़े होरहे हैं यदि तुम भी चाहो तो उसका अन्तका दर्शन करलो शाहजादा अलीने भी देखा वही दशा पाई तदनन्तर वह दूरबीन अहमद को दी तो उसने भी उसे उसी दशा में देखा तब अपने भाइयों से कहा यद्यपि नूरुन्निहार पर हम सब मोहितहैं परन्तु मैं उसे इसी समय नीरोग करसक्ता हूं इतना कह उसने उसी सेब को जेब से निकालकर उन दोनों को दिखाया और कहा यह भी गलीचे और दूरबीन के मोलसे कम मोलका नहीं है अब इसकी परीक्षा का यही समय है इसमें बड़ा गुणहै जो मनुष्य चाहे कैसाही रोगीहो इसके सुंघाती समय देखलेना परन्तु इसी समय वहां पहुँच जावें हुसेन ने अहमद से कहा यह कुछ कठिन नहीं

पकड़ने की लाज रखकर वचनघात न करना और इसी बात पर मैं भी स्थिरहूं अहमदने कहा उस मनुष्यकी जो तुमपर मोहित क्यों कर प्रीति भंग होसक्ती है मैंने अपने को तुम्हें सौंपा जैसा तुम्हारा मन चाहे करो उसने कहा तुम मेरे पतिहो और मैं तुम्हारी भार्या हूं यही प्रण जो परस्परहुआ है विवाह है और जो कुछ रीतें विवाहकी होती हैं सब व्यर्थ हैं अब हम तुम सन्ध्याको एक दिव्य भवनमें आनन्द भोगेंगे जिसको तुम देखकर अतिप्रसन्न होगे तदनन्तर दासियां नानाप्रकार के दिव्य व्यञ्जन लाईं और उन दोनोंने भोजन किया इसके उपरान्त शराब उड़ी जब निश्चिन्त हुये तब बानूपरी शाहजादा को अपने मुख्य भवन में लेगई जो मुख्य उसके सोनेका था वहां शाहजादा हरजगह रत्नोंके ढेर देख विस्मित हुआ और बानूसे कहने लगा कि ऐसा स्वच्छ भवन और यह अलभ्य सामग्री संसार भर में न होगी उसने कहा तुम मेरा वासस्थान देखकर उसकी इतनी प्रशंसा करते हो यदि जिन्नों के घर देखोगे तो क्या कहोगे मेरेबागको भी देखकर तुम अति हर्षित होगे परन्तु अब उसके देखने का समय नहीं रहा पुनि वह उसे और मकान में लेगई जहां रात्रिमे भोजन करती थी उसकी सजावट भी औरों से न्यून न थी उसमें सैकड़ों सुगन्धित दीपक उचित उचित स्थानोंपर प्रकाशितथे और बिल्लौर के बरतन जिनमें बहुरत्न जटितथे और अतिशोभायमान गुलदस्ते और अनेक भांतिके दिव्यपात्र धरेहुये थे और कई गानेवाली स्त्रियां अतिरूपवान् जो अतिउत्तम वस्त्र पहिनेहुयेथीं वह सब आन आनकर मिष्टवाणी से गान करनेलगीं फिर वह दोनों भोजन करने लगे बानूपरी दिव्य और स्वादिष्ट भोजन अपने हाथसे उठाकर अह-

वचन सुनकर दल्लाल से कहा जो वह रोगी इस सेवके सूंघने से नीरोग होजायगा तो अभी चालीसहज़ार अशर्फी देताहूं उसने कहा बहुत अच्छा आप इसकी परीक्षा लेलीजिये मैंने तो इसके द्वारा अनेक रोगियों को नीरोग किया निदान वह रोगी उस सेव के सुंघातेही नीरोग हो गया तदनन्तर अहमद ने चालीस हज़ार अशर्फियां उसको गिनदीं और वह सेव मोललिया और इच्छा की जो कोई यात्री हिन्दुस्तान का जाने वाला मिले उसके साथ यहांसे चलूं और जबतक न मिले तबतक इधर उधर की सैर करूं कितने दिनों के उपरान्त अहमद यात्रियों के साथ हिन्दुस्तान को चला और कुछ काल में कुशलपूर्वक उसी सराय में जहां दोनों भाई उतरेथे जापहुँचा निदान तीनोंभाई परस्पर भेंट कर अत्यन्त प्रसन्नहुये और ईश्वरका धन्यवाद किया हुसेन शाहज़ादेने जो सबसे बड़ा था कहा अब हम अपनी अपनी यात्रा का हाल और अपनी वस्तुका हाल कहते हैं और उसका गुण भी वर्णन करतेहैं मैंने एक गलीचा जिसपर बैठाहूं मोल लिया यद्यपि यह प्रगटमें कुछ वस्तु नहीं परन्तु इसमें बहुत बड़ा गुणहै जब कोई मनुष्य इसपर बैठकर किसी दूर वा निकट देशके जाने की इच्छाकरे तो उसी समय वहां पहुँच जावे मैंने इसे चालीस हज़ार अशर्फ़ी को मोल लिया मैं इसपर बैठ यहां आया अब पांच महीने से तुम्हारे आगमन की बाट देखताहूं जिसका मन चाहे परीक्षा लेले जब हुसेन बड़ा शाहज़ादा कहचुका तो अली कहने लगा किभाई सच है तुम्हारी वस्तु अति अपूर्व है तदनन्तर उसने हाथीदांत की दूरबीन को निकालकर दिखाया और कहा मैंने भी इसे इसी संख्यापर मोल लिया इसका गुण यहहै कि मै-

मद्के आगे रखती और उन पाकों का नाम बतलाकर शाहज़ादे को चखाती और जो जो पाक अहमद ने कदापि नहीं किये थे उनके बनाने की विधि बतलाती इसके उपरान्त उन्होंने मद्यपान की और मिठाई और फलादिक खाये जब इससे भी निश्चिन्त हुये तो वह दोनों एक बड़े दालान में जिस में अच्छी मसनद और सुनहरे तकिये रक्खेहुये थे जाकर बैठे उनके विराजमान होतेही बहुतसी परियां वहां आई और विचित्रनृत्य और मीठेस्वरो से गानेलगीं सो वह दोनों उनके अद्भुत गाने से अति प्रसन्न हुये और वहांसे उठकर और मकान में गये जहां रत्नजटित छपरखट था और सब बराती वहांसे छिन्न भिन्न होकर इधर उधर चले गये कि दूलह दुलहन आराम करें कईदिन इसीभांति आनन्द मंगल रहा यदि अहमद शाहज़ादा हज़ारों वर्ष मनुष्यों में रहता तौभी ऐसा आनन्द न देखता निदान छः महीने तक उस परीके साथ अनेकभांति के सुखोंको भोगतारहा और उसका मोह उस के मनमें ऐसा समाया कि उसके देखने बिना उसे क्षणमात्र न चैन पड़ता और इसीभांति बानूपरी भी उसकी प्रीतिसागर में मग्नथी प्रतिक्षण उसी के शिष्टाचार और आदर में रहती सो अहमद उस प्रीति में अपने कुटुम्बको भूलगया परन्तु कभी २ उसे पिताके दर्शनकी लालसा होती और इच्छा उपजती कि किसी प्रकार अपने पिताकी कुशल मालूम करे और यह सम्भव न था कि अपनी प्रियाकी आज्ञाबिना जावे निदान एकदिन उसनेबानू से इसबात के लिये आज्ञा मांगी कि यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं अपने पिताके दर्शन कर आऊं बानूपरी को इस विचार से कि शाहज़ादा यहांसे बहाना करके जाना चाहता है अतिचिन्ता हुई

कड़ों कोसों की वस्तु इस प्रकार दिखाई देती है जैसे कि सामने रक्खीहै जिसका मनचाहे परीक्षा लेले मैं तुमको इसकी विधि बताताहूं हुसेन ने उस दूरबीन को उससे लेकर जिस विधान से उसने उसे बताया था नूरुन्निहार के देखनेकी इच्छाकी दूरसे दोनों भाई उसकी ओर देखरहे थे कि देखें वह क्या कहताहै अकस्मात् उन्होंने उसके मुखका रङ्ग बदलगया देखा उसे चिन्तायुक्त देखकर आश्चर्य में हुये हुसेन ने कहा कि हम तीनोंने जो इतना परिश्रम नूरुन्निहार के लिये कियाथा सब व्यर्थ गया अब मैंने इसको देखा अत्यन्त रोगी मृत्यु के निकट पाया उसके चहुंओर दासियां और ख्वाजे खड़े होरहे हैं यदि तुम भी चाहो तो उसका अन्तका दर्शन करलो शाहजादा अलीने भी देखा वही दशा पाई तदनन्तर वह दूरबीन अहमद को दी तो उसने भी उसे उसी दशा में देखा तब अपने भाइयों से कहा यद्यपि नूरुन्निहार पर हम सब मोहित हैं परन्तु मैं उसे इसी समय नीरोग करसक्ताहूं इतना कह उसने उसी सेव को जेब से निकालकर उन दोनों को दिखाया और कहा यह भी गलीचे और दूरबीन के मोलसे कम मोलका नहीं है अब इसकी परीक्षा का यही समय है इसमें बड़ा गुणहै जो मनुष्य चाहे कैसाही रोगी हो इसके सुंघाते समय देखलेना परन्तु इसी समय वहां पहुंच जावें हुसेन ने अहमद से कहा यह कुछ कठिन नहीं हम गलीचेपर बैठकर तत्कालही नूरुन्निहार के समीप पहुंचसक्ते हैं अब विलम्ब मतकरो मेरे साथ तुम दोनों बैठजाओ कि बातकी बातमें वहां पहुंचजावें और सेवकों को यहीं छोड़ो पीछे से वहां पहुंच रहेंगे निदान वह तीनों उसी गलीचेपर बैठे और सबने पहुंचनेकी इच्छाकी सो तत्काल ही वह नुरुन्निहार के समीप प-

और उससे कहनेलगी तुमने मुझ से पहिले क्या प्रतिज्ञाकी थी अब उसके विपरीत किया चाहतेहो जानपड़ता है कि तुम्हारे हृदयसे मेरी प्रीति उठगई अहमद ने उत्तर दिया मेरा प्रयोजन यह नहीं कि यहांसे उदास होकर चला जाऊं और फिर न आऊं मेरे वुड्ढे पिताको मेरे वियोगसे अतिदुःख हुआ होगा यदि तुम्हारी आज्ञाहो तो दर्शन करके शीघ्र तुम्हारी सेवामें आऊं कदापि और कोई वात तुम्हारी इच्छाके विरुद्ध न होगी किन्तु मेरी ईश्वरसे यह प्रार्थना है कि जन्मभर तुम्हारी सेवामें रहूं निदान इस प्रकारकी वार्त्ता से उसे प्रसन्न किया और उसे विदितहुआ कि शाहज़ादाभी मुझे बहुतही चाहताहै फिर उसे आज्ञादी जाओ अपने पिताके दर्शन करके शीघ्र लौट आना अधिक न ठहरना अब यहांसे हिन्दुस्तान के बादशाह का हाल वर्णन किया जाता है जब उसने विधिपूर्व्वक अलीशाहज़ादे का नूरुन्निहार से विवाह कर दिया उस दिनसे हुसेन और अहमद को न देखकर अतिशोकवान् रहा करता था एक दिन उसने दोनोंका हाल पूंछासभासदोंने विनयकी कि हुसेन तो योगी वेष धारणकर तपस्या करता है और अहमद शाहज़ादा किसी ओर को निकलगया सो बादशाह ने यह बातसुनकर अहमद के ढूंढने के लिये पत्र अपने गुमाश्तों को लिखे कि जहां कहीं उसको पाओ सन्मानपूर्व्वक मेरे निकट लाओ बहुत ढूंढने पर भी उसे न पाया निदान जब सम्पूर्ण सभासदोंने बादशाह को अहमदके खोजाने से बहुत विकलपाया तो इस विषय में अति चिन्ता करने लगे एकको स्मरण हुआ कि इस नगरमें एक जादूगरनी अतिचतुर है तो उस को बादशाह के पास लाकर उसकी प्रशंसा की और विनयकी कि आप उसको

वचन सुनकर दल्लाल से कहा जो वह रोगी इस सेवके सूंघने से नीरोग होजायगा तो अभी चालीसहजार अशरफ़ी देताहूं उसने कहा बहुत अच्छा आप इसकी परीक्षा लेलीजिये मैंने तो इसके द्वारा अनेक रोगियों को नीरोग किया निदान वह रोगी उस सेव के सुंघातेही नीरोग हो गया तदनन्तर अहमद ने चालीस हज़ार अशरफ़ियां उसको गिनदीं और वह सेव मोललिया और इच्छा की जो कोई यात्री हिन्दुस्तान का जाने वाला मिले उसके साथ यहांसे चलूं और जबतक न मिले तबतक इधर उधर की सैर करूं कितने दिनों के उपरान्त अहमद यात्रियों के साथ हिन्दुस्तान को चला और कुछ काल में कुशलपूर्वक उसी सराय में जहां दोनों भाई उतरेथे जापहुँचा निदान तीनोंभाई परस्पर भेंट कर अत्यन्त प्रसन्नहुये और ईश्वरका धन्यवाद किया हुसेन शाहज़ादेने जो सबसे बड़ा था कहा अब हम अपनी अपनी यात्रा का हाल और अपनी वस्तुका हाल कहते हैं और उसका गुणभी वर्णन करतेहैं मैंने एक गलीचा जिसपर बैठाहूं मोल लिया यद्यपि यह प्रगटमें कुछ वस्तु नहीं परन्तु इसमें बहुत बड़ा गुणहै जब कोई मनुष्य इसपर बैठकर किसी दूर वा निकट देशके जाने की इच्छाकरे तो उसी समय वहां पहुँच जावे मैंने इसे चालीस हज़ार अशरफ़ी को मोल लिया मैं इसपर बैठ यहां आया अब पांच महीने से तुम्हारे आगमन की बाट देखताहूं जिसका मन चाहे परीक्षा लेले जब हुसेन बड़ा शाहज़ादा कहचुका तो अली कहने लगा कि भाई सच है तुम्हारी वस्तु अति अपूर्व है तदनन्तर उसने हाथीदांत की दूरबीन को निकालकर दिखाया और कहा मैंने भी इसे इसी संख्यापर मोल लिया इसका गुण यहहै कि से-

बुलवाकर शाहजादेका हाल पूंछलें बादशाहने कहा अच्छा तुम उसे अपने साथ लेतेआना निदान वह जादूगरनी आई बादशाहने उससे कहा जबसे मैंने अली अपने कुंवरका नूरुन्निहार से विवाह करदिया तब से अहमदका कुछ पता नही लगा तू अपने जादूके बलसे उसका हाल मालूम करके मुझसे कह कि जीता है वा नही यदि जीता है तो कहां है और किस दशामें है उस से मेरी भेंट होगी वा नही उसने उत्तर दिया मैं आपके प्रश्नका उत्तर इसी समय नही देसक्ती यदि आज सावकाश मिले तो कल मैं ठीक २ इस का उत्तर दूंगी बादशाह ने कहा यदि तू मेरे प्रश्नका उत्तर देगी तो मैं तुझे बहुत कुछ दूंगा दूसरे दिन प्रभात को वह जादूगरनी बादशाह के निकट आई और विनय की मैंने अपनी जादूकी विद्यासे मालूम किया कि अहमद जीताहै इस समय इस बात के सिवाय और कुछ नही बतला सक्ती कि वह कहां है बादशाह यह बात सुन अतिप्रसन्न हुआ और उसके मिलने की उसे आशा हुई अब अहमद का बृत्तांत फिर वर्णन करते हैं जब वह परीबानू से आज्ञा लेचुका तो परीबानू ने उससे कहा मेरे इस उपदेशको न भूलना वह यहहै कि अपने पिता और निवासियो से अपने बिवाह के सिवाय किसी विचित्र वस्तुका वर्णन न करना केवल अपने पिताके धैर्य्य के लिये यही कहना कि वहां अति प्रसन्नता से रहताहूं आपके दर्शन के निमित्त आया इतना कह बानूपरीने यात्राकी तय्यारी की आज्ञादी जब सामग्री तय्यारहोचुकी तो बीस सवार उसके साथ किये और दिव्य घोड़ा जो अति उत्तम रत्नोंकी सामग्री से सजाथा शाहजादे के चढ़ने को दिया और उसे कण्ठसे लगाकर विदाकिया और शाहजादा सिधारती

१ उस प्रतिज्ञाको हटाकर घोड़ेपर सवारहुआ और वीससवारों
त जो जिनथे वड़ी धूमधाम से नगरकी ओर चला शाहीम-
पासही था क्षणमात्र में पहुंचगये वादशाह के सम्पूर्ण सभा-
और नगरनिवासी अहमदको देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुये और
काज तज झुक २ कर प्रणामकरने और आशीर्व्वाद देनेलगे
बड़ी भीड़ दोनोंओर से उसके साथ वादशाही महलतक गई
जादा सभा में उतर अपने पिताके चरणोंपर जाय गिरा वा-
ह ने खड़ेहोकर उसे अपने हृदयसे लगाया और बहुत प्यार
। और कहनेलगा हे पुत्र ! तुम नूरुन्निहार से निराशहोकर
गुप्तहोगये कि बहुत ढूंढनेपरभी तुम्हारा ठिकाना न लगा और
म्हारे वियोगमें इस दशाको प्राप्तहुआ इतने कालतक कहां थे
किसभांति कालक्षेप किया अहमद ने विनती की कि जबसे
निहार विवाहीगई मुझे अतिखेद प्राप्तहुआ आपको भली-
स्मरण होगा जिसदिन हम तीनो भाइयोंने आपकी आज्ञा-
तीर चलाया बड़े मैदान होनेपर भी मेरा तीर दृष्टिसे लुप्त
ा सो मैं उसीचिन्तामें अपना तीर ढूंढते २ अकेलागया और
ने बायें इधरउधर ढूंढनेलगा परन्तु वह तीर कहीं न दीखा सो
ा ढूंढते २ दूर निकलगया और निराशहोकर मनमें विचारने
इतनीदूर मेरा तीर काहे को आयाहोगा किन्तु तीर चलाने
का भी तीर यहां नहीं आसक्ता निदान इसी चिन्तामें मैंने
तीर को एक ऊंचे पर्व्वत के शिखरपर जो यहांसे अनुमान
होसकेहै पाया फिर मनमें शोचा इतनीदूर आना तेरा बि
भेदके नहीं है यह शोच वहांसे ऐसे स्थानपर पहुँचा ज
रतके अति आनन्द से रहा इसके विशेष और वृत्ता

ड़ता है कि तुम को वह तुच्छ और दासवत् समझती है जो तुम उससे डेरा मांगोगे उसने दिया तो जानना कि वह तुम से अति हित रखती है नहीं तो नहीं मुझे निश्चय है कि वह तुमसे बहुत प्रीति रखती है जो कुछ उससे मांगोगे वह प्रसन्नतासे तुमको दे वेगी शाहजादा इसनियमके विपरीत कि तीनदिन रहकर चौथेदिन जाता था केवल दोही दिन रहकर तीसरे दिन उधर को चला जब भवनमें पहुंचकर बानूपरीके पासगया तो उसने उसे चिन्तित देखा तो पूछा कुशलतो है आज क्यों तुम उदासहोकर अपने पिता के पास से आयेहो शाहजादेने सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया बानूने इतना सुनकर उत्तरदिया तुम धैर्य रक्खो में तुमको अवश्य डेरा दूंगी परन्तु मुझे मालूम हुआ कि उसका काल निकट पहुंचा अहमद ने कहा ईश्वर मेरे पिताको बहुकालपर्यन्त जीतारक्खे हेसुन्दरी वो कुछ रोगी नहीं अभी उनको कुशलपूर्वक छोड़ आयाहूं परन्तु आश्चर्य में हूं कि मैंने कुछ हाल यहांका उससे नहीं कहा उनको सवहाल क्योंकर मालूम हुआ बानूपरीने उत्तरदिया हे प्रीतम तुम को स्मरण होगा कि मैंने उस वृद्धाको जिसे तुम रोगी समझ कर यहां उठालाये थे देखकर क्या कहा था वह बीमार न थी उसने केवल तुम्हारा हाल मालूम करने को बहाना किया था उसीने जाकर वहां यह सब हाल कहा जब तुम उसको यहां छोड़ गयेथे मैंने उसको औषध पिलाई बहाना करके वह अच्छी होगई और मेरे पाससे विदा होनेको आई मैंने उसके साथ दासियां करके उसे सब सामग्री इस भवन की दिखाई फिर वह देख भालकर विदाहुई इसके विशेष किसी की सामर्थ्य नहीं जो यहांतक पहुंचे क्या आश्चर्य है कि यहांका सब भेद जानगई हो शाहजादे ने

नही कहसक्ता केवल आपके धैर्य देने के लिये यहां आया अब मुझे फिर आज्ञाहो तो फिर मैं वहांजाऊं कभी कभी आपके दर्शन को आयाकरूंगा बादशाहने कहा मैंने प्रसन्नता से आज्ञादी और मुझे भरोसाहुआ कि तुम आनन्दपूर्वक मेरे नगरके पास रहतेहो यदि तुम्हारे आने में कुछ देरहुई तो मैं किसभांति तेरे कुशलका समाचार पाया करूंगा अहमदने विनयकी आप चाहते हैं कि मेरे भेदको मालूमकरें मैं तो पहिलेही विनय करचुकाहूं जोकुछ मैंने कहा इससे अधिक वर्णन आपके शरणमें नही करसक्ता आप धैर्य रखिये मैं बहुतदफे आयाकरूंगा बादशाह ने कहा बेटा मेरा प्रयोजन तो केवल यही है कि तुम्हारा समाचार मालूमहुआकरे मुझे तुम्हारे भेदके पूंछने की कुछ आवश्यकता नही अब मैंने तुझको विदाकिया कि यहां शीघ्र आकर मुझसे मिलजाना सो अहमद तीन दिनतक वहां रहा चौथे दिन भोर को वहांसे सिधारा और अपनी प्रियाके निकट पहुंचा वह उसके जल्दी लौट आनेसे अति प्रसन्नहुई फिर दोनों प्रिया प्रीतम अत्यन्त प्रीति और सन्मानपूर्वक अनेकभांति के भोग और बिलास करनेलगे जब एक महीना बीता और शाहजादा अपने पिताके दर्शनको न गया तो उसकी प्रियाने कहा कि तुमने पूर्व्वमें कहाथा कि मासके प्रारम्भमें अपने पिता के निकट जाऊंगा सो अब क्यों नही जातेहो तुम्हारा पिता तुम्हारा रास्ता देखता होगा शाहजादेने कहा सत्य है परन्तु आप की आज्ञा बिना मैंने वहांका उद्योग नहीं किया उसने कहा प्यारे तुम मेरीआज्ञापर मतरहो महीनेके आदि में तुम मेरे पूंछनेके बिना भेट करआया करो सो शाहजादा दूसरे दिन प्रभातको बड़ी धूम धाम से अपने पिताके पास गया फिर तो उसने एक नियम बांध

उसकी बहुतसी प्रशंसाकर कहा, अब मेरी इच्छाहै कि तुम्हारी कृपासे वैसा डेरा अपने पिताके पासलेजाऊं उसने कहा इस तुच्छ वस्तु के लिये इतनी चिन्ता क्यों करते हो उसे मैं अभी मँगातीहूं इतना कह उसने एकदासी को जो खजानची थी बुलवाकरकहा कि फलाना डेरा शीघ्रलेआ वह दौड़ी गई और उसी डेरे को लाई और बानूकी सैनके अनुकूल उसे अहमद शाहज़ादे को दिया अहमद उसे मुट्ठी में दबाकर समझा कि हमारी प्यारी ने मुझ से हास्य किया है बानू इस बातको जानकर ठट्ठामारके हँसी और कहने लगी हे प्यारे! तुमने अपने मनमें समझा होगा कि मैं तुम से हँसतीहूं फिर नूरजहां अपनी दासी से कहा कि इस डेरेको लेकर एक बड़े वनमें खड़ाकर जिससे अहमद को इसका गुण मालूम हो तदनन्तर वह दासी उस डेरे को लेकर भवनसे बहुत दूर चलीगई और वहां उसने वही डेरा खड़ाकिया शाहज़ादे ने उसे ऐसा बड़ा पाया कि दो बादशाह भी सेना समेत वहां भलीभांति बैठसकें और किसी को एक दूसरे से कष्टनहो उस दासी ने फिर उसे तहकरके शाहज़ादा अहमद को दिया यह उसी समय उसे लेकर सिधारा और अपने नियमित सवारों सहित अपने पिताके सन्मुखगया और उसडेरे को दिया बादशाह भी उसे देख समझा यह तो बहुत छोटा है जब वह खड़ाहुआ उसको बहुत बड़ा देख आश्चर्य्य मे हुये और ऐसी अद्भुत वस्तु लादेने से अहमद का अतिगुण माना फिर उसने अपने सेवकों को आज्ञादी इसे रक्षापूर्व्वक रक्खो और इस अपूर्व्व वस्तु की प्राप्ति से उसे भय और शंका अधिक हुई और विचारा यह परी वास्तवमे अहमद को बहुत चाहती है अपने द्रव्य और ऐश्वर्य्य से बड़े २ काम करसकी

लिया कि प्रति मासके आरम्भमें अपने पिताके पास जाकर और वहां तीन दिन रहकर चौथे दिन चला आता दिनपर दिन उसके साथ धूमधाम अधिक होतीजातीथी अन्तको एकदिन एकप्रधान जो बादशाह के मुंहलगा था शाहज़ादेकी सवारीकी धूम अधिक देख विस्मितहुआ और शोचनेलगा कि शाहज़ादेका हाल कुछ जाना नहीजाता कि कहां रहता है और यह ऐश्वर्य्य इसको कहां से प्राप्तहुआ सो उसने ईर्षासे बादशाहको बहकाकर कहा तुम अपने पुत्रसे अचेतहो यह नही देखते कि उसका ऐश्वर्य दिन २ बढ़ताजाता है ऐसा न हो जो तुमको अवकाशपाकर दुःखदे और तुमको कैदखाने में डालकर आपका तख्तछीनले और जबसे तुम ने नूरुन्निहार को अलीसे व्याह दिया तबसे हुसेन और यह अर्थात् अहमद अत्यन्त अप्रसन्नहैं इतना कि एकने संसारकोही परित्याग किया और अहमद जो अतितेजवान् है ऐसा न हो कि आपसे अपना पलटाले बादशाह अत्यन्त निर्बुद्धिथा उस प्रधान के छलमें आगया और अहमदके रहने का हाल खोज करनेलगा एक दिन वजीर के पूंछे बिना जो अहमद का हितैषीथा उसीजादूगरनीको चोर दरवाजे से निज शयनस्थानमें लेगया और उससे कहा जैसे तूने अपनी विद्यासे कहाथा कि अहमद जीता है उस बात को यथार्थ पाकर मुझे तेरा विश्वासहुआ सो अब यह इच्छा है कि कुछ और भी उसका वृत्तान्त वर्णनकर यद्यपि प्रकटहोकर प्रतिमास मेरी भेंटको आताहै परन्तु अबतक मैं उसके रहनेकी जगह को नही जानता मैं इसबातको उससे अधिक पूंछ नहींसक्ता अब तू मेरे सेवकोसे छिपकर उसके रहनेकी जगह मालूमकर अब वह नियमके अनुकूल आयाहुआहै और मेरे पूंछनेके विना थोड़ी

है मेरा राज्य लेना कौन बड़ी बातहै फिर उसने जादूगरनी को बुलवाकर इस विषयमें सम्मत पूंछा उसने कहा शाहजादे से पानी चश्मेंशेरों का मांगो जब बादशाह सन्ध्या के समय अपने सभाके समूह के मध्यमें बैठाथा कि अहमद आया और चरण चूम बादशाहके पास बैठगया बादशाह ने उससे कहा मैं तुम्हारे डेरेके लानेसे अतिप्रसन्न हुआ निस्सन्देह कोई ऐसी विचित्र वस्तु हमारे खजाने में नहीं परन्तु एकवस्तु मुझे और चाहिये यदि उसे भी लाओ तो मैं अतिप्रसन्न हूंगा तुम्हारी प्रिया के पास पानी चश्मे शेरोंकाहै जिसके पीतेही सर्वभांति के ज्वरादिक रोग नाश होजातेहैं और मुझे निश्चयहै कि मेरी आरोग्यता तुझको स्वीकार होगी थोड़ासा जल मेरे लिये लाओ कि आवश्यकता पर उसको पियाकरूं शाहजादा इस बातको सुनकर चुप हारहा और शोचने लगा कि डेरेको जिसतरह मैंने जाना उसतरह लादिया ऐसा न हो जो उस जलके मांगनेसे परी अप्रसन्न होजावे और अहमद को यह भलीभांति विदित था कि जो वस्तु मैं उससे मांगूंगा नाहीं न करेगी इस चिन्तना के उपरांत उसने उत्तर दिया मेरे अधिकारमें कोई वस्तु नहीं परन्तु मैं उस जलको भी मांगूंगा यदि उसने दिया तो लाऊंगा आपसे प्रतिज्ञा नहीं करसक्ता आपकी मांगी हुई वस्तु लानेमें अपनी सपूती समझताहूं परन्तु इस वस्तु के मांगने में कष्ट अवश्यहै निदान दूसरे दिवस बादशाह से विदाहोकर अपनी प्रियाके निकट आया और कुशल पूंछने के उपरान्त कहा मेरा पिता आपकी कृपासे बड़ागुण मानताहै परन्तु उसने सिंहरक्षित सरोवर का जलमांगाहै यदि तुमको उसके देनेमें कष्ट न हो तो मुझे मँगवा दो मैं उसको लाकर देआऊं बानूपरीने

दूर आगे जाकर गुप्त होजावेगा आज तू मार्गमे ऐसे स्थानपर छिपकर बैठ जिससे उसके जानेका हाल मालूम होजावे और फिर आकर मुझसे कहियो वह बादशाह से बिदाहोकर वहांगई जहां अहमदने अपना तीर पायाथा और किसी कन्दरामें छिपकर अहमदके आगमनकी बाट देखतीरही अहमद भोरको उठकर नगर से सिधारा जब उस गुफ़ाके समीप पहुंचा तो जादूगरनी ने क्या देखा कि वह और उसके सेवक बड़े बड़े टीलों और शिखरोंपर चढ़कर दूसरी दिशाको जाते है और वह ऐसा भयानक स्थानहै कि कोई मनुष्य सवार अथवा पैदल वहां नहीं जासक्ता निदान वह शोची कि उन शिखरोंके दूसरीओर कोई विशालकन्दराहै जिसमें जिन्न और राक्षस आदि निवास करते हैं वह इसीबिचार में थी अकस्मात् शाहजादा निजसेवको सहित वहांसे गुप्त होगया फिर वह जादूगरनी उसीगुफ़ासे बाहर निकली और चहुंओर दूरदूर अपनी सामर्थ्यभर फिरी परन्तु ठिकाना न लगा और वह लोहेका द्वारभी उसे न मिला क्योंकि वह द्वार और भवन उसमनुष्य के सिवाय ज़िसको बानू अप्सरा चाहती थी दूसरे को न मिलताथा उसजादूगरनी ने मनमें कहा मैंने इतना व्यर्थ परिश्रम किया जिसकामके लिये आईथी मालूम न हुआ फिर बादशाहके पासगई और वहां का सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया और कहा मैंने बहुतसा श्रम उस के निवासके ढूंढने के लिये किया परन्तु कुछ लाभ न हुआ यदि मुझे आप सावकाश दीजिये तो फिर जाकर जिस भांति होसके मालूमकरूं बादशाहने उसे आज्ञादेकर कहा जिसप्रकार चाहे उसे प्रकटकर मैं तेरे आनेकी बाट देखतारहूंगा इतना कहकर बादशाह ने एक हीरेका बड़ा टुकड़ा बहुमोल्य उसे देकर बिदा किया और

कहा जानपड़ताहै कि तेरा पितातुम्हारी और हमारी परीक्षा लेता है जो कुछ जादूगरनी उसको सिखाती है वही वस्तु वह मांगताहै अच्छा वह भी तुमको मैं दूंगी इसमें भी मुझे कुछ हानि नहीं प-रन्तु कुछ भयहै अब मैं उसे वर्णन करती हूं चित्तधरसुनो अमुक मैदानमें एक दिव्य सरोवरहै जिसकी रक्षाके लिये अतिबलवान् चार सिंह हैं उनकी उसपर चौकी रहती है पारी २ से दोसिंह जा-गतेहैं और दो सोते हैं और किसी मनुष्यको जलके पासजाने नहीं देते मगरमैं ऐसी तदबीर तुमको बताऊंगी कि जिसके स-बब से तुम्हें कुछ नुकसान और आसेब उन शेरोंसे न पहुँचेगा इतना कह उसने सुई और धागा निकालकर कई गेंदें अपने हाथ बनाईं एक गेंद शाहज़ादे को देकर कहा पहिले तुम इस गेंदको रक्षापूर्वक रक्खो दूसरे यह कि तुम दो घोड़े अति तीव्रगामी लेना एकपर तुम चढ़ना और दूसरे पर एक भेड़के चार टुकड़े करके लादना वह भेड़ मैं आजकाट रक्खूंगी तीसरे यह कि तुमको मैं एक पात्र देतीहूं तुम उसमें जलभरना अब भोर को सवारहो और दूसरे घोड़े की बाग पकड़ उसी मैदानकी ओर जाना जब उस मैदान के निकटवर्ती भवन के लोहे के द्वारपर पहुंचो तो इसगेंद को आगे डालदेना यह गेंद आपही लुढ़कता हुआ उस भवन के द्वारतक पहुँचेगा तुम उस गेंद के पीछे चले जाना जहां कहीं यह गेंद ठहरे वहीं पर तुम उनचारों सिंहोंको देखोगे और द्वार खुल जावेगा वह दो सिंह जो जगे होंगे तो सोते हु-ओंको भी जगा देवेंगे फिर वह चारों तुमको देखकर नाद करेंगे परन्तु तुम उनसे भय न करना भेड़ के चारों टूक तुम उनके स-न्मुख डाल देना घोड़े परसे न उतरना और एड़मारकर गेन के

कहनेलगा जिसदिन उसबात को मुझे सुनावेगी मैं तुझको अति प्रसन्नकरूंगा फिर वह जादूगरनी अपने घर में बैठकर अहमद के आगमन की बाट देखनेलगी क्योंकि उसे मालूमथा कि उक्तशाहज़ादा प्रतिमास के आरम्भ में एक बेर अपने पिता की भेंट को आया करताहै निदान जब महीनेके बीतनेमें एकदिन शेषरहा तो वह उसी शिखरपर सीढ़ी के समीप बैठरही दूसरे दिन जब शाहज़ादा अपने सेवको समेत जो उसके साथ सदा रहाकरते थे उसी लोहेके द्वारेसे उसी जादूगरनीके निकट होकर निकला तो उसे गुदड़ी ओढ़ेहुये देखकर समझा कि यह कोई शिला फूटकर गिरीहै परन्तु जब उस जादूगरनीने अहमद को अपने निकट चलतेदेखा तब वह महारुदन करनेलगी जैसे कोई दुखिया किसी से सहायता की इच्छाकरे अहमद को उसके रोनेपर अतिदया उपजी और खड़े होकर सैनसे पूंछा तू क्या कहती है वह जादूगरनी जो अत्यन्त धूर्त्ता और चतुराथी अधिक विलापकरनेलगी शाहजादेको उसपर अधिकदया आई जब उसने शाहजादे की अपने ऊपर अधिक कृपापाई तब ठंढी श्वासभर धीरे शब्दसे अपने वृत्तान्त इसभांति वर्णन करनेलगी कि मैं अपने घरसे किसी आवश्यक कार्य्य के उद्योगसे अमुकग्रामको जातीथी अकस्मात् मुझे ज्वर और शीत बड़े वेगसे आया जिसमे मेरी शक्ति जातीरही और बेहोश होकर गिरपड़ी शाहजादेने कहा कोई ऐसा स्थान नहीं जहांपर तुझको भिजवाऊं परन्तु एकमकान अतिसमीपहै जो तू कहेतो तुझे वहां भिजवाऊं वहां तू शीघ्र नीरोग होजावेगी तू उठकर मेरे पास आ उस दुष्टाने एक और श्वास भरकर कहा कि मैं ऐसीनिर्बल होगई हूं कि उठनहीसक्ती तब शाहजादेने एक सवार से कहा इस वृद्धा

भीतर पैठकर सरोवर पर पहुंच जाना और वहां से नीरभर लौट आना वह सिंह तो भोजन करते रहेंगे तुम से कुछ न कहेंगे शाहज़ादा ओर को उठ उधर को चला और उसी भवन के निकट पहुचा और पात्र जल से भरा जब कुछ दूर निकल आया तो दो सिंह उस के पीछे दौड़े उसने उनका भय न किया और अपने बचाव के लिये तलवार गिलाफ़ से निकाललो सो एक सिंह उसे जाते हुये देख लौटगया और दूसरे ने शाहज़ादे को शिर और पूंछसे सैन की कि तू अभय चलाजा परन्तु दूसरा सिंह उस के साथ लगाहुआ था इतने मे शाहज़ादा नगर में पहुचा बादशाह के महल मे चलागया और वह सिंह जो पीछे चला आता था अहमद को मन्दिर में प्रवेशकरते देख लौटगया उसे कुछ दुःख न दिया फिर बहुत से मनुष्य अहमद को अकेले देख उस के साथ होगये और वहां पहुंच उसे घोड़े से उतारा उस समय बादशाह सभा मे बैठ अपने देशके प्रबन्ध की वार्ता करता था शाहज़ादे ने उसे प्रणाम कर वही जलका घट उसे भेंट दिया और विनयकी कि यह वही जल है जो आपने मांगा था यह जल अलभ्य है ऐसी अपूर्व वस्तु आप के निकट कदाचित् न होगी ईश्वर न चाहे आपकी देह में किसी भांति की व्यथा हो तो थोड़ा सा इस को पीलीजियेगा तत्काल निवृत्त होजावेगी बादशाहने अतिहर्ष से उसका हाथ पकड़ उसे अपने दाहिने ओर बैठालिया और कहने लगा तुम इस जलको अतिभयानक स्थान से लाये हो इस से मैं तुमसे अति प्रसन्न हुआ और इस भयानक स्थान का हाल जादूगरनी ने बादशाह से कहा था फिर बादशाह ने अहमद से पूंछा तुम वहां क्योंकर गये और शेरों से क्योंकर बचकर जल लाये

को अपने घोड़ेपर चढाले उसने तुरन्त उसको अपने घोड़ेपर बैठा लिया और अहमद वहां से लौटकर लोहेके द्वारेको गया और भवनमें प्रवेशकर अपनी प्यारी को बुलवाया वह उसके पास आई और उससे पूंछा कुशल तो है तुम क्यों मार्गसे लौटआये और मुझे क्यों बुलवाया उसने वृद्धाका वृत्तान्त वर्णनकिया कि मार्ग में इसे मैंने बीमारपाया और दया से उसको अपने साथलाया अब तुम इसको यही रक्खो और इसकी औषधिकरो बानू अप्सराने अपनी अनुचरियों से कहा इसे लेकर किसीअच्छे स्थानमें रक्खो और इस की औषधकरो जब उसे लेगई तो बानू अप्सरा ने उसे कहा उपदेशकी भांति हे प्राणप्यारे! मैं तुम्हारी दयालुप्रकृतिसे अतिप्रसन्न हुई और तुम्हारे कहने के अनुसार उसकी सुधिलेती रहूंगी परन्तु भयमानहूं कि ऐसा न हो कि तुमको भलाई के पलटे बुराई मिले क्योंकि मैं इस वृद्धा को ऐसा रोगयुक्त नहीपाती जिससे वह इस दशाको प्राप्तहो मुझे मालूम होताहै कि किसी तुम्हारे वैरीने तुम से छलकियाहै अच्छा अब तुम सिधारो अहमद ने यह सुन कहा हे मेरीप्यारी! ईश्वर तुमको जीतारक्खे तुम्हारी कृपासे मुझे कोईदुःख न देगा और मुझे भलीभांति मालूमहै कि मेरा कोई वैरी नही मैं सबके साथ भलाई करताहूं इससे किसी से बुराईकी आशा नही इतना कहकर बिदाहुआ और अपने पिता के मन्दिर मे पहुँचा बादशाह जो अशुद्ध सूचकप्रधान के बहकाने से भय मानताथा जाकर भेटकी वे लौंड़ियां जो उस वृद्धा की सेवाके निमित्त नियत थीं उसे एक दिव्यभवन में लेगईं जो अतिउत्तम सामग्रीसे अलंकृतथा और एक सुन्दरी शय्यापर उसे लिटादिया एकदासी उसके पास बैठी और दूसरी शीघ्रही उठकर चीनी के पात्र में एक अर्क

शाहज़ादेने कहा आपके प्रताप से कुशलपूर्व्वक वहां पहुंचा फिर उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया जब बादशाहने अपने पुत्रका इतना साहस देखा तो प्रथम से अधिक डरा और दशगुणा बैर और भय उस के मन में समाया तब उसे शीघ्र बिदाकर मन्दिरमें गया और उस जादूगरनी को बुला भेजा और सम्पूर्ण समाचार उससे कहा वह तो पहिले यह सबहाल सुनचुकी थी अब बादशाह से सब वृत्तान्त सुन अत्यन्त विस्मित हुई फिर विनय की अबकी बेर अहमद से इस भांति की बस्तु मांगिये विश्वास है कि वह वस्तु न ला सकेगा बादशाह ने उसको बिदाकिया जब अहमद दूसरे दिन बादशाह के निकट आया तो उसने कहा हे प्रिय पुत्र ! मैं तुम्हारी सेवा से अति प्रसन्न हुआ अब तीसरी बात भी मुझ को अवश्य है यदि तुम उसे भी करो तो जन्मभर तुम से प्रसन्न रहूंगा शाहज़ादे ने विनय की वह कौनसी बात है आप कृपाकर कहिये बादशाह ने कहा मेरेपास एक मनुष्य लाओ जिसका डील एक गज से अधिक न हो और उसकी बीसगज़ की दाढ़ी हो साढ़े छःमन की जरीब कन्धे मे लेकर चले और वह उसे इस भांति घुमाये जैसे कोई काठके सोंटे को घुमाता है अहमदने विनयकी इस भांति का मनुष्य संसारमें उत्पन्न न हुआ होगा निदान जब वह बानूपरी के निकटगया तब उससे यह हाल वर्णन किया और बानूकी ओर देखकर कहा ऐसा मनुष्य जगत् भरमें न होगा बादशाह समझे बूझे विना यह आज्ञा मुझको दे चुका यदि ऐसा मनुष्य भी मिला तो इतनी भारी जरीब अपने कन्धेपर क्योंकर उठा सकेगा इतना कह फिर कहने लगा मेरे विचार में तो कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो तुम जानती हो तो बताओ उसनेकहा

लाई जो विशेषकरके ज्वरका हरानेवाला था फिर उनदोनोंने उसे पकड़कर बैठादिया और कहा इसको पीना इसके पीने से किसी भांतिका रोग शरीर में नहीं रहता जादूगरनी वह औषध लेकरपान करगई और फिर लेटगई उन्होंने उसे लिहाफओढ़ाकर कहा सोरह थोड़ेही कालमें तू नीरोग होजावेगी उसने यह छल केवल इसी लिये कियाथा कि अहमदका वासस्थान मालूमपड़े जब उसे भली-भांति विदितहोगया तो वह उठकर बैठी और उनदासियों से उस ने कहा मुझे उस औषध के पान करने से शरीरभर मे पसीना छूटा अब मै निपटनीरोग होगई और मेरी देहमे बल भी आगया अब यही समाचार अपनी स्वामिनी से जाय कहो कि मै उसके पास जाऊं और उनसे विदाहोकर अपने घरको सिधारूं फिर वह जादूगरनी को हरएक मकान दिखातीभई उस बारादरी में लेगई जो अतिसुन्दर दिव्यवस्तुओं से सजीथी वहां उसने उसपरी को दिव्य तख्तपर विराजमान देखा जो उत्तम२हीरे और मणियोंसे जटित था और उसके चारोंओर सुन्दर २ दासियांथीं जादूगरनी उस भवनको अतिसुन्दर देख अतिविस्मित हुई और बानूके भयसे कोई वचन न मुखसे निकाला तब वह उसके चरणों मे गिरपड़ी बानू परीने उसे भरोसा देकर कहा हे वृद्धा! तेरे यहां आने से मैं प्रसन्न हुई तुम मेरे महलको भलीभांति देखो मेरी दासियां सब दिखा-वेंगी तब जादूगरनी उसके नीचेकी धरती को चूम विदाहुई फिर वह भवनके हरएक महलको देखभाल वहांसे चली दासियोंने उसे लोहके द्वारसे बाहर लेजाकर जहां से अहमद लायाथा छोड़दिया और कहा अब तू अपने घरजा वह आगे बढ़ी तभी थोड़ी दूरजाय उसने लोहके द्वारको देखनाचाहा कि उसे पहिचानरक्खें वह द्वार

इस बात में तुम कुछ चिन्ता न करो तुमने तो बड़े भयानक स्थान से अपने पिता को जल लादिया यह बात उससे कठिन नहीं है इस गुणवाला मेरा भाई शब्बर है यदि वह और मैं एकही माता पिता की सन्तान हूं परन्तु ईश्वर ने उसका स्वरूप ऐसाही रचाहै और वह बड़ा धीर और साहसी है और अमुक स्थानका बादशाह है और एक लोहे की जरीब के सिवाय और शस्त्र अपने पास नहीं रखता अब मैं उसको बुलाती हूं तुम उससे कदाचित् न डरना शाहज़ादे अहमद ने कहा जो शब्बर तुम्हारा भाई है और उसका स्वरूप अद्भुत है मैं उसको देखकर अति प्रसन्नहूंगा जैसा कि कोई शख्स अपने मित्र और भाई बन्धु के देखने से प्रसन्न होताहै उसे देखकर क्यों डरूंगा फिर परी बानूने सुनहली अँगीठी मँगवाकर उसमें अग्नि जलाई और एक सुवर्ण का सन्दूकचा मँगवाकर उसने खोला और उस में से कोई सुगन्ध निकाल उस मे डाली जब उसका धुवांघना उठा तो कई क्षणके उपरान्त उसने कहा मेरा भाई शब्बर आया तुम उसको देखते हो वा नहीं शाहज़ादेने शिर ऊपर को उठाकर शब्बर को देखा कि वास्तव में उस का डील गजभर का था और बडी तमक झमक से आताथा उसके कन्धेपर लोहे की साढे छः मनकी जरीब रक्खी हुई थी और उसकी दाढ़ी बहुत घनी बीसगज की लंबी थी परंतु उसको इस उपाय से रखता था कि धरती मे नहीं लगती थी और मूछे उस की कानोतक पहुंचतीं जिस से उसका मुख छिपाहुआ था और नेत्र उसके शिर मे घुसे हुये थे और शिर उसका जिसपर अति उत्तम मणि जटित मुकुट था आगे और पीछे कुवड़ा था अहमद शब्बर को देख न डरा और उसीभांति अपनी प्रियाके पास बैठा

उसकी दृष्टिसे गुप्तहोगया वह वहां चहुंओरफिरीपर कुछ भी ठिकाना न लगा निदान लाचारहोकर नगरमें आई और गुप्त मार्गोंसे बादशाहके महलके चोरदरवाजे से भीतर गई और किसी बादशाह के सेवकसे बादशाहको अपने आगमनका संदेशाकहला भेजा बादशाहने उसे भीतर बुलवाया वह उसके सम्मुख चिंतित होके गयी बादशाह समझगया कि आजभी प्रयोजन सिद्ध न हुआ होगा निदान उससे पूछा वह काम कर आई या नहीं यह बोली कि उस बातको भलीभांति मालूम कर आईहूं सो मैं वर्णन करती हूं परंतु चिंताके चिह्न जो मेरे मुखपर हैं उनका कारण दूसराहै फिर उसने संपूर्ण वृत्तांत कह सुनाया और कहा उस परी और अहमदमें पुरुष स्त्री का व्यवहार है शायद आप उस परी के ऐसे व्यवहारको सुन के प्रसन्न हुए होंगे और यह समझा होगा कि अहमद को उसके साथ सांसारिक सुख प्राप्तहुआ परन्तु मेरेविचारमें ये सब बातें आप के लिये दुःखदायी जान पड़ती हैं कि ऐसा नहो जो आपका पुत्र आप से कुछ बैरठाने जो यह समझे कि अहमद मेरा पुत्रहै कि ऐसा काम उससे बन न पड़ेगा यह सच है पर इस समय वह परी की प्रीति मे फसा है क्या आश्चर्य है कि उसके उपदेश के अनुकूल किसी अनुचित कर्मका उद्योग करे तात्पर्य यह शंकाका स्थान है उसका उपाय आप अवश्य कीजिये इतना कह वह बादशाह से बिदाहोने लगी बादशाहने चलते समय उससे इतना कहा मैं तुझपर दो प्रकार से प्रसन्न हुआ एक जो तुमने इतना परिश्रम उस वृत्तांत के मालूम करने के लिये उठाया और दूसरे तेरे अति हितकारक उपदेश से जब बादशाहने समझा कि वह मंदिरमें से जा चुकी तब उसने अपने प्रधान को जिसने उस के मन में

रहा शब्बरने आगे बढकर उसको एक दृष्टि से देख पूंछा कि तुम्हारे निकट यह कौन बैठाहै बानूपरीने कहा यह अहमद नाम मेरापति हिन्दुस्तान के बादशाह का पुत्र है भाई मैंने अपने विवाह में तुम्हें इसलिये नहीं बुलाया कि तुम उन दिनों बड़े युद्ध में प्रवृत्त थे अब तुमने ईश्वर की कृपा से अपने बैरियों को परास्त किया इसलिये मैंने तुमको बुलाया इतना सुनतेही उसने अहमदको प्रीति से देखा और अपनी बहिन से कहा कोई ऐसा काम इस शाहजादे का अटका है कि मैं उसे करूं उसने उत्तर दिया हिन्दुस्तान का बादशाह अर्थात् इस शाहजादे का पिता तुम्हारे दर्शनों की इच्छा रखताहै कृपा करके तुम इसके साथ वहांजाओ उसने कहा मैं इसी समय जाने को तय्यारहूं बानूने कहा भाई आज तुम दिनभरके थके हो कल भोरको जाना और सन्ध्याको मैं सम्पूर्ण वृत्तान्त अहमदका तुमसे वर्णन करूंगी तदनन्तर बानूपरीने बादशाह और उसके मन्त्री आदिक सम्पूर्ण सभासदोंका विशेष जादूगरनी का वृत्तान्त वर्णन किया दूसरे दिन प्रभात को शब्बर अहमद के साथ चला मार्ग में मनुष्य शब्बर के विकराल स्वरूप को देखकर भयसे दुकानों और घरों में छिपकर बैठरहे और अपने अपने किवाड़ों को बन्दकरलिया और कोई घबराहट से पगड़ियों और जूतियों को छोड़कर भागगये फिर वह शाही दरबार में गया जहां बादशाह अपने सम्पूर्ण सभासदों और मन्त्रियों सहित बैठाथा वहांभी मनुष्य शब्बर को देख छिपगये शब्बर ने अतिग्लानि और अहंकार से बादशाह के तख्त के निकट जाकर कहा तूने मेरे दर्शन की अभिलाषाकीथीसो मैं आया कह मुझसे क्या इच्छा रखताहै बादशाह ने उसके विकरालरूपको देखतेही उत्तर देने के बदले अपने दोनों

शंका डालीथी बुलाकर कहा सम्पूर्ण वृत्तान्त कहसुनाया और उस से सम्मत पूंछा कि इस बातका क्या उपाय किया जावे उसने कहा इसका उपाय अतिसुगमहै अहमद अभी यही है उसे कैदमें डाल दीजिये मारडालना उसका उचित नही इस सम्मत को उस ने पसंद किया उस समय तो यह चुपहोरहा दूसरे दिन फिर उस ने जादूगरनी को बुलवाकर अहमदके कैद करने के लिये सम्मत पूंछा उसने कहा मेरे विचारसे यह उपाय अनुचित नहींहै क्योंकि जब आप उसे क़ैद करोगे तो यह भी अवश्यहै कि उसके साथियों को भी कैद करें वह सबके सब जिन्नहैं जिनको सब कुछ सामर्थ्यहै ऐसा न हो जो वह बन्दीखाने से निकल कर उस परी को जाय पुकारे तो वह अपने पतिकी दशा सुनकर एक उपाधि मचावे जिसका निवारण आपको कठिनहो यदि आपको मेरा विश्वासहो तो मैं एक ऐसा यत्न बताऊं जिससे आपको बहुत लाभ हो और किसी भांति की हानि न हो बहुधा आपको अहेर आदिक में खेमेंकी आवश्यकता पड़ती है और उसके बनानेमें बहुतसा द्रव्य व्ययहोताहै अब आप अहमदसे कहे कि एक बड़ा डेरा कहींसे मुझे लादे जिसमें मेरी सम्पूर्ण सभा और सेना समावे और वह ऐसा हलकाहो कि एक मनुष्य उसे जहां चाहे उठाले चले जब वह आपको यह मांगलादेवे तो बहुतसी वस्तु मँगानेके योग्य आपको बताऊंगी निदान वह आपकी मांगो से बहुत तङ्ग होजावेगा और इसी उपायसे जिन्नों की अद्भुत बनाई वस्तु आपको प्राप्त होंगी और अहमद दिक होकर मारेलज्जा के कदापि आपकी देहरी पर पग न धरेगा और आप उसके छल और वैरसे बचेंगे और ऐसे कपूत के मारने अथवा कैद करने की आप को

हाथ आंखोंपर रक्खे और वहां से भागने की इच्छा की शव्वर बादशाहकी अशीलता से अतिअप्रसन्न हुआ कि मैं तो इतना परिश्रमकर उसके बुलाने के अनुकूल यहां आया और वह मुझे देखकर भागताहै निदान लोहेकी जरीब को उठा उसके शिरपर मारा कि शिर उसका खण्ड खण्ड होकर चूर्ण होगया उस समय तक अहमद वहां नही पहुँचा था उसके पीछे यह उपद्रव हुआ इतने मे अहमद भी पहुँचा फिर शव्वर ने राजमंत्री को मारना चाहा परन्तु अहमद ने उसको बचाया कि यह मेरा अति हितैषी मित्रहै इसने कोई अनुचित बात मेरे लिये नहीं की और सब मेरे वैरी हैं इतना सुनतेही सब प्रधान और मन्त्री जो दोनों ओर पंक्ति बांध कर खड़ेथे उनलोगों के सिवाय जो भागगयेथे कोई जीता न बचा सबके सब मारे गये फिर शव्वरने सभासे राजभवन में आकर राजमन्त्री से जिसके प्राण शाहजादेने बचायेथे कहा उस जादूगरनी को जो शाहजादाकी बैरिन है और उन बादशाह के सम्मतियों को बुलाला कि उनको इस दुष्टकर्म्मका दण्डदूं इतना सुनतेही मन्त्री उस जादूगरनी को और सब सभासदों को जो शाहजादा के वैरी थे बुलालाया शव्वरने उनको भी जरीबसे मारा और जादूगरनीसे कहा तेरे बुरे उपदेश का फल यहीहै जो तुझको मिला तदनन्तर शव्वरने नगर भरके मनुष्यों को मारना चाहा परन्तु शाहजादेने सबको बचादिया फिर शव्वरने अहमद को शाहीबान पहिनाकर तख्तपर बैठाया और उसके नामकी नगर मे डौंड़ी पिटवादी नगरके सम्पूर्ण लोग अहमद से प्रसन्न थे उसके तख्तपर बैठनेसे संतुष्ट हुये और अपनी २ सामर्थ्यभर भेंटदे बड़े नादसे उसको आशीर्वाद देने लगे जब शव्वर यहां यथेच्छ प्रव-

आवश्यकता न पड़ेगी फिर बादशाहने यही बात अपनी सम्पूर्ण सभासे कह सम्मत पूंछा वह सुन चुपके होरहे बादशाह इस सम्मतको अच्छा समझ चुपहोरहा दूसरे दिन जब अहमद बादशाह के निकटगया और बहुतकाल पर्यन्त परस्पर-बातीरही तब बादशाह ने अवसर पाकर कहा पूर्व मे मै बहुत दिन तक तुम्हारे वियोग से चिन्तामे रहा जब तुम मेरे पास आये तो मुझे तुम्हारे देखने से अतिप्रसन्नता हुई यद्यपि मुझे तुम्हारे रहने की जगह मालूम न थी तथापि मैंने उसके पूंछने में तुमसे हठ न किया परन्तु अब मुझे यह भेद मालूम हुआ कि तुमने महाऐश्वर्य और अतिरूपवान् परी के साथ अपना विवाह किया इससे मैं अधिक प्रसन्न हुआ परन्तु यह कहो जो मैं तुमसे कोई वस्तु मांगूं तो तुम परी से वह लासक्तेहो और उसको तुम्हारा इतना पक्षहै कि जो वस्तु मैं तुम से मांगूं उसको निःशंक देदेगी तुम्हें खूब मालूमहै कि बहुधा मैं अहेर को जाया करताहूं मुझे डेरोकी आवश्यकता हुआ करतीहै जिसके उठाने के लिये बहुतसे ऊंट दरकार होतेहैं मैं चाहताहूं कि ऐसा डेरा मुझको मिले जिसमें मेरा सम्पूर्ण कटक समाजावे और वह इतना हलका हो जिसको तुम अथवा कोई और एक मनुष्य उठालवे तुम उस परीसे मुझे लादो अहमद ने कहा बहुत अच्छा मैं अपनी भार्यासे जाकर कहताहूं परन्तु मै नहीं जानता कि ऐसा उत्तम डेरा उसके पासहै वा नहीं यदि है तो वह देगी नहीं तो नहीं इस हेतु उसके लानेकी प्रतिज्ञा आपसे नहीं करता बादशाहने कहा जो तू वैसा डेरा न लावेगा तो मै तेरा मुख न देखूंगा और तुम कैसे उसके पतिहो और वह कैसी तुम्हारी पत्नीहै कि ऐसी तुच्छ वस्तुभी तुम्हारे कहने से न देगी जान प-

न्धकरचुका तो अपनी वहिन को भी वहां ले आया तिसके उपरान्त शव्वर बिदाहो अपने भवन को गया अहमद ने अलीनूरुल्निहार को वहुत कुछ दे नगर का अधिपति करके बिदा किया और एक प्रधान को हुसेन के पास भेजकर कहलाभेजा जिस देश को तुम चाहो उसका वादशाह तुमको बनादें परन्तु हुसेन उस दशा में प्रसन्नथा उसने राज पाट स्वीकार न किया और उसी प्रधान के द्वारा अहमद की कृतज्ञता कहला भेजी और अपना जन्म ईश्वर के आराधन व तपस्या में बिताया शहरज़ाद इस कहानी को सम्पूर्ण करके दूसरे दिन तीन वहिनों के परस्पर इर्षा की दूसरी कहानी कहने लगी ऐसेही बिचित्र कहानी कहकर अपने प्राण को बचाती ॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिन्यांपूर्वार्द्धेदशम प्रदीप ॥ १० ॥

अथ एकादशः प्रदीपः ॥

यादृशीभावनायस्यसिद्धिर्भवतितादृशी । यथे ष्टोद्वाहमापन्नायथासन्भगिनीत्रयाः ॥ ११ ॥

अर्थ–जैसी जिसकी भावना हो वैसीही उसको सिद्धि होती है जैसे तीन वहिन निज २ इच्छाके अनुसार विवाह को प्राप्त भईं ॥

इसपर दृष्टान्त तीन वहिनों की कहानी ।

पूर्व्वकाल में फ़ारश देशका शाहज़ादा खुसरोशाहनाम बहुधा रात्रिको वेषवदल एक सेवक को अपने साथ ले नगर की सैर किया करता और संसार के अद्भुत विषय जिनका वर्णन विस्तार से है देखता निदान जब शाहज़ादे के पिताकी वृद्धावस्था के प्राप्तहोने से देहान्त होगया तो शाहज़ादा तख्तपर बैठा और उस

ने अपना नाम केखुसरो जारी किया और उसी भांति सन्ध्यासे वजीर को साथले और बेपबदल नगरके बाजारों और गलियों मे फिरने लगा अकस्मात् एक गली में जापड़ा वहां उसने एक घरमे दोतीन स्त्रियों को बातें करते हुये सुना बादशाहने पासजाकर दरवाजे की दरार से झांककर देखा कि तीन बहिनें एक दालान मे बैठी हुई आपसमें बाते करती हैं वह कान लगाकर उनकी बाते सुनने लगा तथा बड़ी बहिन ने अपना इसभांति मनोरथ प्रकट किया मैं चाहतीहू कि मेरा विवाह बादशाह के रोटी पकाने वाले से हो कि अति उत्तम और स्वादिष्ठ रोटियां खाकर तुमदोनों को तरसाया करू मॅझली बहिन ने कहा कि मेरी इच्छा यह है कि मेरा विवाह बादशाह के बावर्ची से हो कि उत्तम उत्तम भोजन कि जिनके आगे बादशाह की रोटियां तुच्छहैं मेरेखाने मे आया करे तीसरी बहिन ने जो सबसे छोटी और चतुर और वाचाल थी अपनी पारी मे कहा कि मेरी तुम दोनों कीसी छोटी इच्छा नही है किन्तु मेरी बड़ी इच्छा है मै चाहतीहूं कि इस देश के बादशाह से मेरा व्याह हो और उस बादशाह से एक पुत्र उत्पन्न हो जिसके एक ओर के बालस्वर्ण के हों और दूसरे तरफ के रूपे के और जब वह बालक रोवे तो उसकी आंखो से मोती झड़ें और हॅसती समय उसके लाल ओष्ठ कली के सदृश खिले हुये मालूम होवें बादशाह उनतीनो बहिनों के विशेष उस छोटी बहिन का मनोरथ सुन अति आश्चर्य्य मे हुआ और इच्छाकी कि उन तीनों बहिनो की इच्छा पूर्ण करें इसबात को अपने मन में ठान मंत्री से कहा कि तू इसघर को खूब पहिचान रख और सुबह को इन तीनो बहिनोको मेरेपास लाइयो निदान दूसरे दिन

पहिले भेंटहोगी इन तीनों चीजोंका ठिकाना बतायेगा यह कह-
कर वृद्धाने शाहजादी से विदा होकर अपनी रहली परीज़ाद ने,
वे बातें जो उस वृद्धा से सुनीथीं खूबयादरक्खीं वृद्धा ये समझती
थी कि शाहजादी ने साधारण इन चीज़ों का पता पूंछा है न यह
कि आपही वहां जानेका इरादा करेगी इसलिये उसने साफ पता
बतादिया और परीज़ाद उसको खूब यादरख इनचीज़ों की प्राप्ति
का उपाय विचारने लगी इसी चिन्ता में थी कि उसके भाई शि-
कारसे लौटआये परीज़ाद को इस दशा में देखकर अति विस्मित
हुये निदान वहमन ने उससे पूंछा कि बहिन आज तुम क्यों
शोचितहो ईश्वर न करे क्या तुम कुछ बीमार होगई अथवा
कोई बात तुम्हारी मरज़ी के प्रतिकूल हुई हो तो हमसे कहो कि हम
उसका कोई उपाय करें शाहजादी ने थोड़ी देर तक कुछ उत्तर न
दिया फिर अपना शिर उठा दोनों भाइयों की ओर देखा और
फिर नीचे आंखें करके कहा कि कुछ नहीं वहमन ने कहा कोई
तो बात अवश्य है जो हमको नहीं बताती हो अब हम तबतक
तुम्हारे पास से न जावेंगे जबतक तुम अपने रञ्जका हाल प्रकट
न करोगी जबपरीज़ादने देखा कि दोनों भाई बड़े अधीर्य हैं तो
लाचार होकर कहा यद्यपि इस चिन्ताका हाल प्रकट करना तुम
को भी रञ्जदेना है परन्तु बेकहे नहीं बनता इसलिये वर्णन करती
हूं कि यह घर हमारे पिताने निर्म्माण कियाथा और बहुत सजा
हुआ है पर आज मुझे मालूम हुआ कि जो तीन चीजें इस महल
में और बाग़ में होतीं तो यह अपूर्व्वथा और संसार में इस
के सदृश कोई मकान न पाया जाता वह तीन चीजें यहहैं एक
चिड़िया बोलने वाली और दूसरा गाने वाला वृक्ष तीसरे सोनेके

औरको मंत्री उनतीनो बहिनों को उनके घरसे लेजा के बादशाह के सम्मुख लेगया बादशाह ने उनसे कहा कि कल रात्रिको तुम क्या कहती थी उन सब बातों को मुझसे वर्णन करो पर चैतन्य रहो उसबात में अन्तर न पड़े क्योंकि वे बाते मुझ को मालूम हैं और अपने कानोंसे सुनचुकाहूं इसबात को सुनकर वे तीनों बहिनें मारे लज्जा के कुछ उत्तर न देसकी और अपने २ शिर नीचे करके चुपहोरही बादशाह छोटी बहिन को जो महा सुन्दर और नखशिख से बहुत अच्छी थी देखकर मोहित होगया जब बहुत पूंछा तो उन्होंने इन्कार किया बादशाहने उनको दिलासा देकर कहा कि तुम कुछ भयमत करो और लाज छोंड़ जैसा कि रात्रि को वार्त्ता करती थी मुझ से वर्णन करो कि मैं तुम्हारे मनोरथो को सिद्धकरूं निदान उन्होंने अपने अपने मनोरथों को प्रकट किया बादशाह ने सुनकर बड़ी बहिन का विवाह अपने रोटी पकानेवाले के साथ और मॅझली का विवाह बवर्ची के साथ उसी दिन करदिया और अपने विवाह की तय्यारी की आज्ञादी तय्यारी होनेके उपरात बादशाहों के समान बड़े धूम धामसे विवाह किया और बादशाह ने उसको मलका बनाया और बड़ी दोनो बहिनो का विवाह उन रसोईदारो के प्रतिज्ञा के अनुसार अर्थात् बिना धूम धाम के किया था उन सबको उचित था कि अपनी अपनी अभिलाषा को पाकर प्रसन्न होती पर अपनी छोटी बहिन के विवाह की धूमधाम और प्रताप देखकर ईर्षाहुई और रात्रिदिन जलाकरती एक दिन बड़ी और मॅझली बहिन हम्माम में नहाने के लिये आई तहां बड़ी ने मॅझली से कहा छोटी बहिन हमसे ऐसी सुन्दर न थी कि मलका होती मुझको यह बात बुरी मालूम हुई मॅझली

रंगका पानी जब से मैंने इनतीनों चीजों का हाल सुना तब से मुझको इनकी अतिलालसा हुई कि जिस तरह से होसके इन चीजों को पैदा करके अपने घरमें रक्खूं, जो तुम से होसके तो तुम इन चीजो के ढूंढ़ने से मेरी सहायता करो बहमन ने कहा तुम उस जगहका जहां ये तीनों चीजे पाई जाती हैं नाम और निशान मुझको बतादो कि मैं कल सुबहको उधरको जाऊं परवेजने जब देखा कि बड़ाभाई सफ़रकरनेको तय्यार है तो कहा भाई तुम हम सब से बड़ेहो तुम्हारा घरमें रहना उचित है मुझे आज्ञादो तो मैंही सफ़रकरूं और तीनों चीजों को ढूंढ़कर अपनी प्यारी बहिन के लिये लाऊं बहमनने कहा भाई मुझे तुम्हारे साहस और हिम्मत पर निश्चय है कि जो काम मुझसे न होसकेगा उस को तुम्हीं सिद्धकर लोगे पर जो मैं जाऊं तो अच्छी बात है तुम अपनी बहिन के पासरहो दूसरे दिन शाहजादा बहमन ने उसजगह का नाम और निशान जहां ये तीनो बातु थी परीजादसे पूछकर बिदामांगी और शस्त्र बांधकर घोड़ेपर सवार हुआ उस वक्त परीजादको अपने भाई के वियोगसे बड़ा दुःख हुआ और रोकर कहने लगी भाई मुझे तुम्हारा वियोग असह्यहै मैं नहीं चाहती कि तुम मुझसे और अपने भाई परवेजसे अलग हो मुझे इनतीनों चीजों के न पाने से इतना दुःख न होगा जितना तुम्हारे वियोग से है कदाचित् हररोज का हाल तुम्हारा मालूम होता तौ भी कुछ न कुछ हम दोनोंको धैर्य होता शाहजादे से बहमन ने कहा मैं इस सफ़र का पक्का इरादा करचुका हूं और बहुत जल्दी इसकाम को करके आन मिलताहूं कुछ चिन्ता मत करो कदाचित् मेरेजाने के उपरान्त तुमको मेरेहाल के मालूम

ने उत्तर दिया बहिन में भी इस बात से बहुत अप्रसन्नहूं में नही जानती कि बादशाह ने उसे क्या देखकर पसन्द किया वह तो मलका के होने योग्य न थी मेरे बिचारते तूही बादशाहके बिवाह के योग्य थी बादशाह को उचित था कि तुझेही मलका बनाता बड़ी बहिन ने उत्तर दिया कि मैं अति आश्चर्य में हू जिसका वर्णन नही करसक्ती यदि बादशाह तेरा सौन्दर्य पसन्दकर तुझसे बिवाह करता तो उस छोकड़ी से हजार हिस्से अच्छा था निदान बादशाह की अनीति से हम बड़े खेदमे रहती है अब कोई ऐसा यत्नकिया चाहिये कि जिससे वह छोकड़ी बादशाह की दृष्टि से गिरजावे सो वह दोनों बहिने इसी चिन्तामें रहकर भेंट होनेपर यही बातें किया करती और उसके मारडालने और कष्टका उपाय सोचती पर कुछ न बनपड़ता और छोटी बहिन उन दोनों का अति सत्कार करती और जिस भांति उसको उन दोनो से पहिले प्रीतिथी अब भी वही प्यार रखती संयोगसे कितने महीनोंके उपरान्त उसके गर्भरहा और बादशाह इस खबरको सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और अपने सम्बन्धित सम्पूर्ण नगरो मे खुशी करने के वास्ते आज्ञादी वह दोनों बहिनें अवसर पाके बादशाह के महल मे गईं और मलका से कहा कि हमको ईश्वरने यह दिन दिखाया हम चाहती हैं कि जब प्रसूतिका समय हो तो हमहीं जनवावें और चालीस दिन तक कामकाजके लिये उपस्थित रहें मलका ने कहा कि बीबियो बहुत अच्छा तुमसे और कौन अधिक बिश्वासित होगा कि जिनका हम ऐसे काम मे बिश्वास करें पर मै बादशाह की आज्ञा पालकहू उनकी आज्ञाके बिना कोई काम नहीं करसक्ती इससे उत्तमहै कि तुम्हारे पति बादशाह से इस आज्ञाको लेले नि-

करने की इच्छाहो तो मैं तुमको अपना निशान दिये जाता हूं उस से मेरा बुरा भला हाल मालूम होजावेगा यह कहकर वह-मनने अपनी कमरसे एक करौली निकालकर परीजाद को दी और कहा तुम इसको अपने पास रक्खो जिस दिन वा जिस वक्त तुमको मेरी कुशलका हाल मालूम करनाहो तो तुम इसको निकाल कर देखना जो उसको साफ़ और चमकता हुआ पाना तो समझना कि मैं कुशलपूर्वकहूं जो उसमें लोहू टपकताहुआ देखना तो मुझे जीता न समझना सो शाहज़ादा इस तरह से परीजाद को धीर्य देकर सिधारा और सीधी राहली कहीं रस्ता न भूला जब बीसदिन की राहा फ़ारसदेश से लांघ चुका तो उसने एक वृद्धको जिसका स्वरूप अतिभयानक और विकराल था देखा कि एक वृक्ष के नीचे बैठाहै और उस दरख़्त के पास एक झोपड़ा पड़ाहुआ देखा कि उसके सबब वह उष्णता और शीतसे बचा रहता वह इतना बूढ़ा था कि भौंहें मूछें और डाढ़ीके बाल बरफ के समान सफ़ेद थे और इतने लंबे और गुंजानथे कि उसके सारे मुंहको छिपालिया था और डाढ़ी उसकी पैरोंतक पहुंची थी और हाथ पांवके नाख़ून बहुत बढ़ गयेथे वह बूढ़ा अपने शिरपर एक टोपी लम्बीसी पहिने और सारे शरीर में एक चटाई लपेटे हुयेथा वह कोई सिद्धथा जो बहुत दिनोंसे संसार का मायामोह छोड़कर ईश्वरकी वन्दना में प्रवृत्त हुआ था इसलिये उसका ऐसा स्वरूप बनगया था बहमन उसी दिन प्रभातसे ढूंढताथा कि किसी मनुष्य को देखूं कि जिससे उनतीनों चीजों का ठिकाना पूंछूं उस सिद्ध को कि पहिले यही बीसदिनके पीछे मिलाथा देखकर उसके पास आ खड़ाहुआ और समझा यह वही मनुष्यहै जिसको उस बुढ़िया

श्रयहै कि बादशाह रिश्तेदारी के सबब से रहने की आज्ञा देदे
फिर उनदोनों के पतियों ने अपनी स्त्रियों का कहना मानकर ब
दशाहसे अपनी स्त्रियोंके रहनेकी प्रार्थना की बादशाहने कहा वि
मैं पूंछकर उत्तर दूंगा फिर बादशाहने अपनी स्त्री से पूंछा तुम्हा
इच्छा हो तो तुम्हारी बहिनें प्रसूति के समय तुम्हारे पास उपस्थि
रहें मेरे विचारसे बेगानोंसे उनका रहना ऐसे समयपर उत्तम होग
मलका ने कहा कि यह बात मेरे विचारसेभी बहुत अच्छी है तथ
चमलका की दोनो बहिनों के रहने की आज्ञादी और वे दोन
उसी समय से बादशाह के महल में रहने लगी अब उनको अ
पने मनोरथ के अनुसार अवसर मिलगया जब मलका के प्रसू
तिका समय पहुंचा तो उसके अतिसुन्दर पुत्र उत्पन्नहुआ जिसवे
देखने से उनदोनो के मनमें इर्षा बढगई और मलका की दृष्टिबच
कर उस पुत्रको एक कम्मल के टुकड़े में सावधानी से लपेट औ
एक पिटारीमें बन्दकर नहरके बहावमें जो मलकाके महलके नीचे
जारीथी डालदिया और उसकी जगह एक कुत्तेका मुवाहुआ पि
ल्लालेकर लोगों को दिखाया कि मलका यह जनी है यह खब
बादशाह को पहुंची इससे अतिक्रोधित हुआ और मलकाके मा
डालनेका इरादाकिया परन्तु मन्त्रीनेजो संयोगसे उपस्थितथा बा
दशाह को कहसुनकर रोका और मलकाकी निर्दोषता बहुत से
प्रमाण देकर प्रतीतकराई अकस्मात् वह पिटारी बहते बहते बागों
की नहरमें गई और बागके दारोगाकी दृष्टिजो नहरके किनारेपर
टहलरहा था उस पिटारीपर पड़ी उसने तुरन्तही एक बागवान को
पुकारा और उस पिटारी को दिखाकर कहा कि शीघ्रजाके उस

ने बताया था फिर शाहजादे ने घोड़े से उतरके उस सिद्ध को दण्डवत् कर आशीर्व्वाद दिया कि हे पिता ! ईश्वर तेरी आयु अधिक करे और सब तेरेमनोरथ सिद्धि करै सिद्धने उस शाहजादे को दण्डवत्का उत्तर दिया परकुछ शाहजादेके समझमें न आया शाहजादे ने मालूम किया कि मूछों ने इस सिद्धका मुंह ऐसा बन्दकर रक्खाहै जिससे कुछ समझ में नहीं आता फिर शाहजादे ने घोड़ा दरख्त में बांधकर मिकराज निकाली और कहा हे सिद्ध ! तुम्हारी मूछें इतनी बढ़गई हैं कि सारे मुंहको बन्दकर रक्खाहै जो मरजीहो तो मैं तुम्हारी मूछें और भौंहें कतरडालूं कि उनके बढ़ने से तुम्हारा स्वरूप रीछके समान बनगयाहै कि मनुष्य नहीं मालूम होते उस सिद्धने इशारेसे कहा बहुत अच्छा शाहजादेने कैंचीसे उसकी मूछें और भौंहें कतरडाली सो उस वृद्ध की चेहरा जवानोंके मुखकी सदृश मालूमहोने लगा शाहजादेने कहा यदि मेरे पास शीशाहोता तो मैं तुमको तुम्हारा स्वरूप दिखाता कि तुम जवान मालूम होतेहो ऐसी स्वार्थकी बातोंसे वह सिद्ध मुसकराया और कहा मैं तुम्हारी सेवासे प्रसन्नहुआ जो सेवा मुझसे होसके मैं करूं तुम्हारा क्या अर्थहै मुझसे कहो तो मैं अपनी सामर्थ्य भर उसमें परिश्रम करूं शाहजादेने कहा हे सिद्ध मैं बहुत दूरसे बोलती चिड़िया और गानेवाले वृक्ष और सुनहले पानी के लिये यहां आयाहूं और मुझे मालूम है कि यह तीनों चीज़ें निकटहैं परन्तु उसस्थान को नहीं जानता जो तुम जानते होतो दयाकर के मुझेबताओ

नहर किनारेगया और किसीलकड़ीसे खींचकर पिटारी को बाहर निकालकर दारोगा के पासलाया दारोगा उसीसमयका पैदाहुआ अति सुन्दर लड़का कम्मलमें लिपटाहुआ उस पिटारी मे देखकर अति आश्चर्य्य में हुआ वह दारोगा निज पुत्रथा और सन्तान के लिये सदैव ईश्वरसे प्रार्थना करताथा उस बालकको देखतेही पिटारी समेत घरको लेगया और अपनी स्त्रीसे कहा कि ईश्वरने मुझको यह लड़कादिया है अभी एक दाई बुलवाकर दूध पिलवा और इसको अपने उदरका पुत्रजान बड़ी सावधानी से पालन पोषण कर उसकी पत्नी अति प्रसन्नहोकर उसका पालनकरने लगी दारोगाने इसबातकी कुछ तलाश न की कि वह बालक कहां से आया और मनमें समझा कि वह लड़का निश्चय करके मलका के महल मे आया है दूसरे वर्ष मलका के एक और पुत्र उत्पन्न हुआ और उसकी दुष्ट बहिनों ने ईर्षा से उस बच्चे के साथ वही बर्त्ताव किया अर्थात् उसको भी कपड़े में लपेट और पिटारी में बन्दकर उसी नहर में डालदिया और यह बात प्रसिद्धकी कि अबकी बेर मलका के बिल्लीका बच्चा पैदाहुआ संयोग से वह लड़का भी दारोगा के हाथ लगा उसने वह लड़का भी लेजाकर अपनी भार्य्या को दिया औ कहा इसको पाल बादशाह इस हाल को सुनकर आगे से अधिक अप्रसन्न हुआ और मलका को मार डालने की इच्छा की परन्तु मन्त्रीने कह सुनके इस बेरभी मलका को बचाया और बादशाहके क्रोध को समझाय बुझाके निवृत्त किया तीसरी बेर मलका के लड़की पैदाहुई और वहभी अपने भाइयों के सदृश पिटारी में बन्द करके नहर में डालीगई और वह लड़की भी उसी दारोगा को मिली और उसने उसको भी

नहीं जो तुम इसहालको नहीं जानते तो वैसाही मुझसे कहो कि मै किसी और मनुष्यसे जाकर पूंछूं सिद्धने बहुत देरके पीछे उत्तरदिया जिस जगहको तुम ढूंढते हो उसे मैं जानताहूं पर तुमने मेरी बहुत सेवाकी है इसवास्ते तुमसे प्रीति होगई है इसलिये नहीं चाहता कि इस राह और स्थान को तुम्हें बताऊं शाहजादेने कहा क्या कारण है कि तुम मुझसे उस स्थानको छिपातेहो सिद्धने कहा उस मार्ग मे बहुत से भयहैं सिवाय तुम्हारे और बहुत से मनुष्य इस जगह आये और मुझसे उस मकान की राह पूंछी मैंने उस राहके बताने में बहुत ढीलकी पर उन्हों ने मेरी बात न मानी निदान मैंने लाचारहोके उस रस्ते को बताया अब तुम निश्चय मानो कि वह सब के सब उसी राह में मारेगये कोई मनुष्य जीता बचकर इधर न आया जो तुमको अपनी जान प्यारी है तो मेरा उपदेशमानो और आगे मतजाओ यहीं से अपने घर फिरजावो शाहजादेने कि अपने इरादे पर दृढ़था उस सिद्ध से कहा तुमने अति प्रीति से जो ये हितकारक उपदेश किये मैंने उनको सुना इसका मैं अति गुण मानताहूं चाहे इस मार्ग मे कितनेही भयहों पर मैं अपने इरादे से हटनहींसक्ता यदि मुझपर कोई चढभी आवेगा तो अपने शस्त्रों से जो मेरे पासहैं अपनी रक्षाकरूंगा औ मुझे निश्चयहै कि कोई मुझसे अधिक साहसी और पुरुषारथी न होगा सिद्धने कहा तुम्हारे सामने होके उस मकान में जाने के बाधक न होंगे किन्तु वह दिखाई न देंगे फिर तुम क्योंकर उनसे बचसकोगे शाहजादेने कहा मुझे उनका कुछ भय नहीं तुम मुझे राहबतावो सिद्धने जब उस शाहजादे को इस इरादे में दृढपाया तो उसने अपनी थैली में हाथ डालकर एक गेंद निकाला और कहा खेद है कि तुमने

अपनी स्त्री को देकर कहा उनदोनों लड़कों के साथ पाल उन
दोनों बहिनों ने प्रकट किया कि अबकी बेर मलका के छछूंदर
पैदाहुई बादशाह को इस बेरका क्रोध न थँभा और इसके सुन
तेही कहा कि ऐसी स्त्री को जो जीता छोडूंगा तो मेरे महलको
ऐसे ऐसे जन्तु पैदा करके भरदेवेगी अब उचित है कि उसको मैं
मारडालूं राजमंत्री और सभासद जो उपस्थित थे बादशाह के
चरण कमलों पर गिरपड़े और क्षमामांगी और मन्त्रीने हाथबांध
के बिनय की कि हे बादशाह! ऐसे मनुष्यका मारडालना जो
निर्दोषहो उचित नहीं विधाता की रचनामें कोई उपाय नहीं च
लता जो आप उससे ऐसेही अप्रसन्नहैं तो उसके पास न जाया
कीजिये और कुछ दान पुण्य कीजिये फ़ारस का बादशाह ऐसी
ऐसी बातें सुनकर समझा कि वास्तव में मलकाका मारना अनु
चित है तब मंत्री से कहा कि मैं उसको न मारूंगापर एक दण्ड
उसके लिये मैंने विचारा है वह मारडालने से भी बुराहै एक क़ैद
ख़ाना जामअमसजिद के दरवाज़े के पास बनवायाजावे और म
लका काठ के पिंजरे में क़ैद होकरके उसमें रक्खीजावे जो मुसल्मान
निमाज़ पढने को आवे तो पहिले मलका के मुखपर थूककर
अपना पग मसजिद के भीतर रक्खा करे कदाचित कोई मनुष्य
ऐसा न करे तो वह भी ऐसा दण्डपावे बादशाह से यह बात मंत्री
सुनकर चुप होरहा और यह आज्ञामानी कदाचित यह दण्ड
जो बादशाहने निर्दोष मलका के लिये विचाराथा उन दोनों दुष्ट
बहिनों को दियाजाता तो उचितथा निदान क़ैदख़ाना तय्यार
होगया और वह बेचारी मलका उसमें क़ैदकीगई और नगरवासी
जो मसजिद में निमाज़ पढ़ने को आवे तो पहिले उस मलका

मेरेउपदेशको न माना अब मैं लाचारहूं इस गेंदकोलो और जब तुम सवार हो तो इस गेंदको अपने आगे डालदो वह लुढ़कता हुआ आगे को जावेगा तुमभी उसके पीछे जाना जब गेंद एक पहाड़केनीचे ठहरजावे तो तुम घोड़े से उतरना और घोड़े कीगरदन पर बागडालकर छोड़देना वह घोड़ा वहां से जबतक कि तुम फिर न आवोगे कहीं न जावेगा फिर जब तुम उस पहाड़पर च- ढ़ोगे तो अपने दाहिने बायें बड़े२काले पत्थर देखोगे अपने चारों ओर बुरे२ शब्द सुनोगे जो तुमको कोप और भ्रम दिलावेंगे और तुम्हें पहाड़के शिखरपर जाने न देंगे पर चैतन्यरहो तुम आवाजों से मतडरना और मुंहफेर के पीछे न देखना जो तुम डरोगे अथवा मुंह फेरके पीछे देखोगे तो उसी समय काले पत्थर बनजावोगे जो तुम को मार्ग में पहाड़ मिलेंगे वो सब मनुष्य थे वह तुम्हारी तरह उन्हीं तीन चीजों के लेने के लिये गये और राह में उन आवाज़ों से डरके काले पत्थर होगये जब तुम कुशलपूर्वक पहाड़ के शि- खरपर पहुँचोगे तो वहांपर एक पिंजड़ा पाओगे जिसमें बोलती चिड़िया उसके भीतर बोलतीहोगी तुम उस चिड़िया से पूंछना कि गानेवाला वृक्ष और सुनहले रंगका पानी कहां है वह चिड़ि- या दोनो चीजें तुमको बतावेगी फिर जब तुम उन तीनों चीजों को पाओगे तो फिर कुछ भय न रहेगा फिरभी तुमसे कहताहूं कि अभी कुछ नहीं भया मेरा कहना मानके तुम इस उद्योगको छो-

के मुँहपर थूंकते वह बिचारी संतोष करके इस दुःखको सहती और जो कोई उसके अपराध को जिसके सबबसे बादशाह ने यह दण्ड नियत कियाथा सुनता तो उसको निर्दोष समझ दया करता और उसके इस दुःख से छूटने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता दारोगा और उसकी स्त्री उनदोनों शाहजादों और शाहजादीको बड़े प्यार से पालते और ज्यों ज्यों वह बढ़ते त्यों त्यों उन दोनों प्राणियों को हर्षहोता जब वह तीनों सयाने हुये तो दारोगाने उन के लिखाने पढ़ाने के लिये बड़े २ विद्वान् नियत किये और शाहजादी की भी जब लिखने की इच्छा पाई तो तिन्हीं की भांति लिख पढ़के निपुण होगई और विद्वानोंसे कविता विद्या इतिहास बहुत से उन तीनोंने सीखे थोड़े दिनों में वे ऐसे होशियारहुये कि उनके अध्यापक भी आश्चर्य्य से कहने लगे कि ये तो हमसे भी निपुण भये फिर उनतीनों ने घोड़ेकी सवारी सीखी इन गुणों के विशेष परीज़ादने गाना बजाना हरएक साजकाभी सीखा दारोगा इन तीनों संतानको सब विद्या और गुणों से सम्पन्न पाकर अति प्रसन्नहुआ और जो कि उसका घर उनके रहने के योग्य न था इससे नगरके बाहरजाकर उसने थोड़ी दूरपर जङ्गलमें हरियालीके निकट जगह मोललेकर वहां बहुत बड़ा महल बनवाना प्रारम्भ किया और आप उसके बनवाने में दिनरात प्रवृत्त रहता जब वह मकान बन चुका तो तिस में बड़े २ चित्रकारों से अनेक प्रकारकी चित्रकारियां बनवायीं और अच्छी २ वस्तुओं से उसे सजाया और उसके पास एक अति सुन्दर पुष्पवाटिका बनायी जिस में सब प्रकार के फल फूल और मेवे आदि के वृक्षलगाये और सिवाय इसके एक बड़ा रमना तय्यार किया जिसकी चारोंओर ऊंची दी-

आगे को चला शाहजादा उसके पीछे उसी गेंदकी तरफ़ देखता हुआ जाताथा जब वह गेंद उस पर्वतके नीचे जिसका उस सिद्धने वर्णन किया था पहुँचा तो ठहर गया शाहजादा भी उसी जगह पर जाकर उतरा और घोड़े की लगाम गरदन पर डालकर वहीं छोड़ दिया आप पहाड़ पर चढ़ने लगा जहां तक उस की दृष्टि उस पर्वतपर पड़तीथी काले पत्थर पड़ेहुये उसको दिखाई देतेथे अभी चार पांच क़दम न ऊपर चढ़ाथा कि वहां चहुँओर से शोर जैसा कि सिद्धने कहाथा सुना पर शाहज़ादेने किसीको वहां न देखा कभी सुनताथा कि कौन ये अहमक है किधर को जाता है इसको न जानेदो और कभी वहांसे यह आवाज़ आतीथी कि इसको पकड़कर ठहरावो और बधकरडालो और तीसरी ऐसे ज़ोर से आवाज़ आई कि जैसे बादल गरजताहै और उसमें कोई कहता है हे चोर-हे खूनी-हे कातिल-और कभी यह आवाज़ धीरे से उसके कानों में पहुँचती इसे कुछ न कहो इस मनुष्य कि अच्छा शिकारहै जानेदो यह वही मनुष्य जो पिंजड़े और चिड़िया को लेआवेगा बहमन इन बातोंको सुनकर कुछ न डरा और पूर्ववत बड़े साहस और दिलावरी से पहाड़ पर चढ़तागया परन्तु जब पास और चहुँओर से आवाजें उसको पहुँचने लगीं तो वह ऐसा भयभीत हुआ कि उसके पांव कांपने और थर्राने लगे और ठहर न सका सिद्धकी सब बातें मारेभयके भूलगया और मुखफेरके देखने लगा उसके मुखफेरतेही काला पत्थर बनगया जब से परीज़ादसे बहमन शाहज़ादा विदाहुआ था तबसे वह उस छुरीको गिलाफ़ समेत अपनी कमरमें रखती जब चाहती उसको निकाल के शाह-ज़ादेका हाल मालूम करती और उस दिन के पहिले जिसमें कि

घरि खिंचाकर उस में सर्व प्रकारके शिकारी जानवर छुड़वाये कि वे दोनों शाहजादी शाहजादे उस में अहेर खेलाकरें जब वह मकान सब तरह से तय्यार हुआ तो दरियाने बादशाहसे जाकर महल में रहने की आज्ञा मांगी तो वह, जो उस से अति प्रसन्न रहता था उसे प्रसन्नता से आज्ञादी सो दरोगा बादशाह से विदा होकर उन तीनों समेत उस महल में रहने लगा उसकी स्त्री कई वर्ष पहिले मरगई थी और वह महल मे आने को पांच छः महीने के उपरांत अकस्मात बीमार होकर मरगया और इतना अवकाश न पाया कि उन तीनों संतानों के उत्पन्न होनेका हाल बतलाये पर केवल इतनाही कहने पाया कि बाबा तुम प्रीतिपूर्वक बहिन भाई मिले रहना उसके देहांत के उपरांत बहमन और परवेज परीजाद ने यथोचित उसका कर्म किया और परस्पर प्रीति पूर्वक रहने लगे वे शाहजादे जो कि वह बड़े हौसलेदार थे इससे बहुत बड़े दरजे को पहुंचे एक दिन दोनों शाहजादे शिकार खेलने गये और परीजाद शाहजादी अपने घरमें अकेली ही रही, संयोगसे एक धर्मिष्ठ वृद्धा उसके दरवाजेपर आई और उसने शाहजादी से इच्छा की कि जो आज्ञाहो तो मैं मकानके भीतर आकर निवाज पढूं क्योंकि मेरा निवाज का समय जाता है तो शाहजादी ने उसे भीतर आने की आज्ञादी जब वह वृद्धा अपने नियमित बन्दना आराधना से निश्चिन्त हुई तो शाहजादी की दासियां सैनके अनुसार उसे सारे महल और बाग में फिराती थी और उसने अच्छी तरह वह महल और बाग असबाव सामानको देखा तो मनमें प्रसन्न हो शोचा कि जिस मनुष्य ने इस मकान को बनाया है वह इस काम में अति निपुण था फिर लौंडियां उस

शाहज़ादा पत्थर होगया था कई बेर छुरी को देखा तो उसे साफ़ और उज्ज्वल पाया पर उस दिन परवेज़ने परीज़ादसे कहा बहिन मुझे छुरीदो तो मैं उसमें अपने भाई का हाल देखूं परीज़ादने छुरी निकालकर परवेज़ के हाथ में दी जब परवेज़ने उसको मियान से खींचकर देखा तो उस छुरी से रक्त की बूंदें टपकने लगीं यह देखतेही उसने छुरी हाथ से फेंकदी और रोने लगा जब परीज़ाद को भी यह हाल मालूम हुआ तो रोके कहने लगी बड़ा खेदहै कि भय्या मेरेलिये तुमने प्राण दिया मुझ अभागिनने बोलती चिड़िया गाते दरख़्त और सुनहले रंगका पानीका तुमसे क्यों वर्णन किया और क्यों मैंने उस वृद्धासे इस घरका अच्छे बुरेहोने का हाल पूंछा जिस के उत्तर में उसने इन वस्तुओं का वर्णन किया कदाचित् वह बुढ़िया न आती वह बड़ी मक्कार और दुष्ट थी मैंने उसका बड़ा सन्मान किया और उसने मेरे साथ यह अपकार किया और तूने क्यों उन वस्तुओंका रस्ता उससे पूंछा था जो वह चीज़ें अब मेरे हाथभी लगें तो मेरे भाई के मरनेके पीछे किसकाम की हैं और उन्हें लेकर क्याकरूंगी निदान शाहज़ादी उसकेगुण वर्णन कर बहुत रोई परवेज़भी अपनी बहिन के सदृश अति खेद को प्राप्तहुआ फिर शाहज़ादी से कहा अब मुझे अवश्य है कि मैं भी सफ़रकरूं मालूम हो कि मेरा भाई अपने कालसे मुआ या किसी ने उसको मारा मैं उसके मारनेवाले से जाकर बदलालूंगा। परीज़ादने उसे बहुत समझाया कि तुम वहां का इरादा मतकरो और समझो कि इसराह में बड़े भयहैं ऐसा न हो कि दूसरा भाई भी मेरे हाथसे जावे परन्तु परवेज़ने उसका कहना न सुना और दूसरे दिन तय्यार होके अपनी बहिन से बिदाहोकर चाहा कि सिधारूं

वृद्धा को परीज़ाद के पास कि वह वारहदरी में बैठी थी लाई शाहज़ादी ने उसको देखकर कहा कि हे माता! आवो और मेरे पास बैठो ऐसी धर्म्मिष्ठ और आचारवान् जैसी कि तुमहो संगति करके अपने को कृतार्थ समझती हूं तुम ने ईश्वर के आराधन का ऐसा आचार स्वीकार किया है कि सब कोई उसीमार्गकी इच्छा करते हैं वृद्धा ने चाहा कि उस मकान के नीचे बैठे परन्तु शाहज़ादीने सुशीलता से उठकर उसकी हाथ पकड़ अपने साथ बैठा लिया उस वृद्धाने कहा बीबी तुमसी शीलवान् मैंने किसी स्त्रीको नहीं पाया यद्यपि मेरी ऐसी पदवी नहीं कि मैं तुम्हारे पास बैठूं पर आपकी आज्ञा प्रतिपालन की फिर वह वृद्धा परीजाद से बात चीत करने लगी इतनेमें लौंडियों ने बरतन बिछाकर उसमे नाना भांति के भोजन कुलचे रोटियां और सूखे हरे मीठे मेवे तश्तरियों मे रक्खे और कईप्रकार की मिठाई लाकर चुनी शाहज़ादीने एक रोटी उठाकर उस बुढ़ियाको दी और कहा हे माता इसको भोजन कर और जो मेवे तुमको अच्छे लगें उनको खावो क्योंकि तुम बड़ीदेरकी घरसे निकली राहमें भोजन करने का संयोग न हुआ होगा उस तपस्विनी वृद्धा ने कहा मुझे ऐसे स्वादिष्ट भोजनों के भोजन करने का अभ्यास नहीं है पर जो अब खाऊं तो हानि नहीं क्योंकि ईश्वर ऐसी उदारस्त्री के हाथ से भोजन खिलवाता है जब उस वृद्धा और शाहज़ादीने थोड़ासा भोजन खाया तो शाहज़ादीने ईश्वर की वन्दना का प्रकार उससे पूछा उसने अपनी बुद्धि के अनुसार उसे बताया फिर उस बुढ़िया से पूछा कि यह महल कैसा बनाहै सब मकान और असबाब रीति के अनुसार रक्खा है कोई वस्तु इसमकान और बागमें दरकारहै या नहीं वृद्धाने कहा

परीजादने कहा मुझे छुरी के देखने से वहमनका बुरा भला हाल मालूम होता था तुम्हारा हाल क्योंकर मालूम होगा परवेजने एक मरवारीदकी माला उसे देकर कहा जब इस माला के दाने अलग अलग देखना और देखना कि चलते हैं तो जानना कि मैं जीता हूं और जब इसके दाने एक दूसरे से चिपट जावे तो मालूम करना कि मैं जीता नही परीजाद ने उस मालाको लेकर अपनेगले में डाल लिया और हररोज उसे देखकर परवेज़ की कुशलका हाल मालूम करने लगी निदान दूसरे दिन शाहज़ादापरवेज उस तरफको सिधारा और बीसमंजिलें लांघकर उसी सिद्ध से जहांपर वहमन ने भेटकीथी मिला और उसको प्रणाम करके पूछा जो तुम्हें मालूमहो जिस जगहपर बोलती चिड़िया और गाता दरख्त और सुवर्ण के रंगका जलहै वो क्योंकर मिलेंगे तो मुझको बताओ सिद्धने वहांके सब खतरे उसे बताकर कहा एक मनुष्य तुम्हारी ही शकल और आयुका थोड़े दिन हुयेहैं कि उसने मुझसे इसी बातका प्रश्न कियाथा मैंने उसे बहुत समझाया पर उसने न माना अन्तको मेरे बतानेसे वह उन्हीं तीनों चीजों के तलाश करने को गया फिर वहां से न लौटा मालूम हुआ कि वहभी औरों के सदृश जो इन्हीं चीजों के ढूंढने के लियेगये थे मरगया परवेजने कहा मैं उस मनुष्य को जिसका तुमने वर्णन किया खूबजानताहूं वह मेरा भाईथा मुझे निश्चय यह हुआ कि वह मारागया पर यह मालूम नहीं कि क्योंकर मारागया सिद्धने कहा इस हालको मैं तुमसे खूब वर्णन कर सक्ताहूं वह औरों के सदृश पत्थर बन गया जो तुम मेरा उपदेश न सुनोगे तो तुम भी वैसेही बन जावोगे अब उत्तमहै कि तुम इस इरादे को छोड़दो परवेज ने कहा

हे सुन्दरी! इसबात को मुझ से मत पूंछ यद्यपि यह बाग और मकान खूब बनाहै और हरतरह से अलंकृत है परन्तु मेरे विचार से तीन वस्तुकी इस में जरूरत है अगर वह भी इस बाग में हो तो सब तरह से यह उत्तम होजावे परीजादने सौगन्द देकर उससे पूंछा कि वे तीन चीजें कौनहैं मैं उनके इकट्ठे करने में अति परिश्रम करूंगी निदान शाहजादी के बहुत तकरार करने से वृद्धा ने लाचार होके कहा हे सुन्दरी! पहिले एक पक्षी है जिसको बुलबुल हजारदास्तां बोलतेहैं और वह नायाबहै कहीं नहीं मिलता जब वह प्रियवाणी से बोलताहै तो हजारों जानवर उसकी सुन्दर बाणी सुनने के वास्ते आते हैं और उसकी आवाज के साथ अपनी आवाज मिलाते हैं दूसरे एक वृक्षहै जिसके पत्ते बहुत चिकनेहैं और पवन के लगने से जब एकपत्ता दूसरे पत्ते के साथ रगड़ताहै तो अच्छी आवाज और भांति भांति के गान सुनाई देते हैं जिसके सुनने से मनुष्य विह्वल होजाताहै तीसरे सुनहले रंगका पानी कि जो एकबूंद उसकी किसी ठिलिया में डालकर बाग में रक्खे तो थोड़ी देर में वह बरतन भरजावेगा और फिर फव्वारे के समान उछलता और छूटतारहेगा कभी भी बन्द न होगा और पानी उठकर फिर उसी बरतन में पड़ताहै शाहजादी ने कहा निश्चयहै कि तुमको ऐसी विचित्र वस्तुओं का हाल मालूम होगा कि कहां हैं मुझको उसजगह का पता बतला वृद्धाने कहा ये तीनों चीजें हिन्दुस्तान से पृथक् देशों अर्थात् और विलायतों में मिलेंगी और इस जगहसे अमुक ओर को बीस दिनकी राहपर हैं बीसवें दिन जाके पूंछना कि गानेवाली चिड़िया और गानेवाला वृक्ष और सोने के रंगका पानी कहां है वह मनुष्य जिससे तुमको

जो कुछ तुम मेरी भलाई के वास्ते कहते हो उसे मैं गुण मानताहूं पर आशा रखताहूं कि मुझे उसका रस्ता बताओ मेरा इस विषय में ऐसा इरादा नहीं कि इससे हटजाऊं सिद्धने कहा जो तुम मेरी बात नहीं मानते तो मैं लाचारहूं और बृद्धावस्था के व्यापनेसे मैं तुम्हारे साथ रह बताने को नहीं जा सक्ता इस लिये मैं तुमको एक गेंद देताहूं वह तुमको रास्ता बतावेगा जब परवेज़ सवारहुआ तो सिद्धने अपनी झोली से गेंद निकाल कर उसको दिया और उससे कहा तुम उन शब्दोंसे जो पहाड़ पर सुनोगे और आवाज़ करनेवाले न देखोगे तो डरना नहीं और पहाड़ पर चढ़े चले जाना बोलनेवाली चिड़िया और गानेवाला बृक्ष और सोने के रंगका जल ते हाथ लगेंगे इतना कह उस सिद्धने शाहज़ादे को विदा किया शाहज़ादे ने घोड़े पर सवारहो गेंद को अपने आगे डालदिया और घोड़े को ऐंड़ मार उस गेंदके पीछे चलाथा जब वह पहाड़के नीचे पहुंचा और गेंद भी ठहर गया तो वह भी घोड़े से उतर कर ठहरगया उन बातों को जो सिद्धसे सुनी थीं एकएक अपने दिलमें जमाई फिर बड़े साहससे पर्वत के शिखरपर जाने का इरादा किया और उस पर चढ़ने लगा पांच छः पग न गया होगा कि अकस्मात् मनुष्य का शब्द पास से सुना जो उसको डराता और दुर्वाद देताहै कि हे भाग्यहीन! आपत्तिके मारे खड़ाहोजा कि मैं तुझे इस ढिठाई का दंडदूं जब परवेज़ने बुरी गाली सुनी तो मारे लज्जाके क्रोधमें आगाया और सिद्ध की सब बातें भूलकर एकहीबेर मियानसे तलवार निकाल पीछे फिरा कि उस मनुष्य को जो गाली देताहै मारे पर उसने वहां किसी को नहीं देखा और साथही शाहज़ादा और उसका घोड़ा काले पत्थर

चलगये परीजाद परवेज़ के जाने के उपरान्त हरवक़ मोतियों की माला को देखा करतीथी और उसके मोती गिनाकरती और रात्रि को वह माला गले में डालकर सोजाती निदान उस बुरे दिन को जिसमें परवेज़ अपने भाई के सदृश पत्थर बनगया था माला को देखा तो उसके मोती एक दूसरे से ऐसे मिले चिपटे पाये कि किसी तरह एक दूसरे से अलग न हुये इससे परीज़ादको निश्चय हुआ कि परवेज शाहज़ादे का भी प्राण गया उसने अपने मनमें कहा कि ऐसे दोनों प्यारे भाइयों के मरजाने के उपरान्त मेरा जीना बृथाहै अब जो हो सो हो अब तू भी यहां से चलदे फिर दूसरे दिन मरदाने कपड़े पहिनकर नौकरों चाकरों से कहा मैं थोड़े दिनों के लिये किसी ओरको जातीहूं तुम मकान और असबाबकी खबरदारी करना फिर शस्त्र बांध घोड़े पर सवारहो के अकेली उसी ओर को चली शाहज़ादी घोड़े पर खूब सवार होतीथी और शिकार भी खूब करसक्ती थी इसलिये मार्गके कष्ट उसे कुछ मालूम न हुये जब शाहज़ादी उस रस्ते को लांघकर उस सिद्ध के पास पहुंची तो घोड़े से उतर उसके पास जा बैठी और उससे पूंछा कि यहां इधर उधर कौन ऐसी जगहहै जिसमें बोलती चिड़िया और गाने वाला बृक्ष और सुवर्ण के रंग का जल है दया करके मुझे बतादीजिये सिद्धने कहा तुम्हारे शब्द से मालूम होताहै कि तुम स्त्रीहो मैं उस जगह को जहां यह तीनों चीजें हैं खूब जानताहूं तुम क्यों पूंछतीहो परीज़ादने कहा मैंने तीनों चीज़ों का बृत्तान्त विचित्र सुनाहै मैं चाहतीहूं कि उनको अपने घरमें लेजाकर रक्खूं सिद्धने कहा वास्तवमें वह ऐसीही विचित्र और अपूर्व वस्तु हैं और तुम्हारे पास रहने लायकहैं परन्तु तुम्हें मालूम नहीं कि उन

फिर के और तरफ को जावें पर राह तंग होने से न फिरे और बादशाह के सामने होगये लाचार हो घोड़ों से उतर बादशाहको दण्डवत की और देरतक पृथ्वीपर झुके रहे बादशाह उनके घोड़े और वस्त्र सब अच्छे देख समझा शायद मेरे नौकर होंगे और उनकी सूरत देखने की लालसा की और वहां ठहरगया और उनको उठने की आज्ञादी वह दोनों शाहजादे उठकर बादशाहके आगेदृष्टि नीचेकिये खड़े होगये बादशाह भी उनकेरूप अनूपको देख आश्चर्य में हुआ और देरतक उनको देखा किया फिर उन का नाम पूछा और कहा तुम कहां रहते हो बहमन शाहज़ादे ने उत्तर दिया कि हुज़ूर हम दोनों आपके बागों का रक्षक जो स्वर्ग वासी हुआ उसके पुत्रहैं उसने जीतेजी शहर के बाहर एक नया मकान तय्यार किया था कि हम उसमें रहें और बड़े होकर हुज़ूर की सेवा के योग्यहों बादशाह ने कहा कि तुम शिकार खेलने के वास्ते क्यों आया करते हो शिकार खेलना तो बादशाहोंका धर्म है मज़ा और नौकरोंका नहीं बहमन ने कहा कि हे बादशाह हम कम उमर के होने से राजनीति नहीं जानते बादशाह इस उत्तर से अति प्रसन्न हुआ और कहा कि मैं तुम्हारा शिकार खेलना देखा चाहताहूं तुमचाहो जिसतरह शिकार खेलो फिर वह दोनों शाहज़ादे अपने अपने घोड़ोंपर सवार होके बादशाह के साथ हुये जब जङ्गल में गये तो बहमन ने शेरको और परवेज़ने रीछ को अति वीरता और चालाकी के साथ बरछी से मारा और बादशाह के सम्मुख रक्खा थोड़ीदेर उपरान्त फिर बनमें जाकर बहमन ने रीछ और परवेज़ ने शेरको अहेर किया और उनको बादशाह के सामने लाये फिर उन्होंने शिकार का इरादा किया

चीजोंके प्राप्त करने में कैसे कैसे भयहैं तुम्हारे वास्ते यही उत्तमहै कि तुम उनका विचार मत करो और यहीं से अपने घर लौटजाओ परीजादने कहा हे पिता मैं बहुत दूरसे आईहूं मैं अपने मनोरथ के सिद्ध करे बिना नहीं जासक्ती अब तुम वहांके डर मुझे बतावो कि कहां से वो आरम्भ होते हैं और वो किसतरह के हैं उनको सुनकर शोचूं कि मैं उनको सहसकूंगी वा नहीं उस सिद्ध ने वहांके डरावने हाल जैसे कि वहमन और परवेज़ से कहेथे इस से भी कहे और कहा कि वह सब खतरे पर्व्वतके आरम्भसे शिखर तक रहेंगे पहिले बोलनेवाली चिड़िया मिलेगी और चिड़िया के बताने से गानेवाला वृक्ष और सोने के रंगका पानी भी प्राप्तहोगा उस पर्व्वत के चढ़ने में बड़े बड़े भयानक शब्द सुनपड़ेंगे और चारों ओर जितने काले पत्थर देखोगी वो सब मनुष्य थे बड़े साहस से इसी मतलबके लिये वहां गये और मार्ग्ग में भय खाकर पत्थर बनगये हाल उसका यह है जब उन भयानक और दुर्वादोको सुनकर क्रोधमें आया और डरकर मुखफेर अपने पीछे देखनेलगा तो मुँह फेरने के साथही वह और उसका घोड़ा पत्थर बनजाता है जब वह सिद्ध इस हालको विस्तारपूर्वक वर्णन करचुका तो परीजादने कहा मुझे खूब मालूम हुआ कि वह आवाज़ें केवल डराने और धमकाने के वास्ते हैं इनके विशेष और कोई भय नहीं कि कोई मनुष्य सामने होकर उस पर्व्वत पर चढ़ने से रोके हे सिद्ध यद्यपि मैं स्त्री हूं परन्तु मैं ऐसी दिलेर और बेखटक हूं कि सब बातों को सहूंगी न तो आवाजों को सुनकर क्रोध करूंगी और न मुझको भय होगा इसके सिवाय मैं ऐसा उपाय करूंगी कि वह आवाजें मुझे कुछ भी सुनाई न देंगी मैं अपने कानों में खूबसी

चिड़ियां जैसे कि बुलबुल हजारदास्तां अगन पिद्दा तोता आदि मनोहर वाणी बोलनेवाले उसकी आवाज सुननेको दूर दूरसे आकर इकट्ठेहुये इसके उपरान्त उसने गाने वाले वृक्षकी डाली उसी बाग में एकजगह पर बारहदरी के पास लगादी वह डाली तुरन्तही जड़पकड़के हरी होगई और जल्दी से बढ़के एक बहुत ऊँचा दरख़्त होगई और उसके पत्तों से गानेकी आवाज़ उस बड़े वृक्षकी सदृश जिसकी यह डाली थी आनेलगी फिर शाहज़ादी ने संगमर्मरका एक अति उत्तम हौज़ बनवाकर चमन में रक्खा और उसमें सोने के रङ्गका पानी भरा वह तुरन्त बढ़ने लगा यहां तक कि वह बरतन भरगया और एक फ़व्वारा उबलकर बीस फुट तक ऊंचे होकर छूटनेलगा और वह पानी ऊपर से उसी बर्तन में गिरता और किसी तरफ़ को न बहता उन विचित्र वस्तुओं का वृत्तान्त तीनही दिन में मशहूर होगया उसे शहरके रहनेवाले उस बाग़ में और घरमें आते जिनका दरवाजा सदाखुलारहताथा उनके तमाशे और सैर देखते और अति प्रसन्न और आश्चर्य में होते कितने दिनों के उपरान्त जब उन तीनों भाई बहिनों की सफ़र की मांदगी गई तो बहमन और परवेज़ पूर्ववत् शिकार खेलने को जानेलगे तथाच एक दिन दोनों शाहज़ादे शिकार खेलने को कोसभर के फ़ासले से गये इतने में फ़ारसका बादशाह भी संयोग से उसी जगहपर शिकार खेलने को आया शाहज़ादों ने सवारों की भीड़ देखकर चाहा कि अपने को बादशाह की दृष्टि से बचा घरको फिरजावें इस इरादेसे उन्होंने शिकार को छोड़कर घरकी राहली संयोग से वे उस मार्ग से चले जिधर से बादशाह की सवारी आती थी उन्होंने कितनाही चाहा कि इस राह से

रुई भरलूंगी सिद्धने कहा कि बीबी मुझे मालूम होताहै वो चीजें तेरेही भाग्यमें हैं क्योंकि किसी को आजतक यह उपाय न सूझा पर ध्यान रख उन भयानक आवाजों से न डरना परीजादने कहा ऐसाही होगा मेरा मन साक्षी देताहै कि मेरा मनोरथ अवश्य सिद्ध होगा तुम दयाकरके उस मार्ग को बताओ सिद्धने फिर उसे समझाया कि अपने घरको लौटजावो पर परीजादने कुछ न माना जब सिद्ध समझा कि शाहजादी अपने उद्योगपर दृढ़है तब उसे एक गेंद अपनी झोली मेंसे निकालकर दिया और कहा इसको अपने आगे लुढ़का देना और उसके पीछे चलेजाना जब वह गेंद पहाड़के नीचे पहुँचकर ठहरजावे तुम घोड़े से उतर पहाड़पर चढ़ना शाहज़ादी गेंद लेकर घोड़े पर सवार हुई और जिस तरह सिद्धने कहा था अपने आगे गेंदको फेंककर उसके पीछे घोड़ेको तेज़ किया निदान वह गेंद पर्व्वतके नीचे पहुँचकर ठहर गया शाहज़ादी क्षणमात्र वहां ठहर अपने कानोंको रुईसे खूब बन्दकर पहाड़ पर चढ़ने लगी जब कई पग ऊपरगई तो चारों तरफ से आवाज़े आने लगीं परन्तु रुईके सबबसे जो कानोंमें भरी हुई थी आवाज़ें न सुनाई दीं फिर भयानक शब्द हुये इससे भी उसे ख़बर न हुई फिर वो गाली जो स्त्रियोंके लिये हैं उसको सुनाई देने लगीं शाहज़ादी ने उन्हें थोड़ासा सुनकर हँसदिया और कुछ बुरा न माना और मनमें कहा इन दुर्वादों और बुरी बातों से क्या मैं अपने मतलब से न हटूंगी इस बकने से क्या होताहै निदान शाहज़ादी ऐसे भयानक स्थानसे जहां रुस्तम आदि योद्धाओंका जहर पानी होता था बड़े साहस से लांघकर शिखर पर चालाकी से पहुँची वहां उसने एक पिंजड़ा रक्खा हुआ देखा जहां एक

फिर के और तरफ़ को जावे पर राह तंग होने से न फिरे और बादशाह के सामने होगये लाचार हो घोड़ों से उतर बादशाहको दण्डवत् की और देरतक पृथ्वीपर झुके रहे बादशाह उनके घोड़े और वस्त्र सब अच्छे देख समझा शायद मेरे नौकर होंगे और उनकी सूरत देखने की लालसा की और वहां ठहरगया और उनको उठने की आज्ञादी वह दोनों शाहज़ादे उठकर बादशाहके आगे दृष्टि नीचेकिये खड़े होगये बादशाह भी उनकेरूप अनूपको देख आश्चर्य मे हुआ और देरतक उनको देखा किया फिर उन का नाम पूछा और कहा तुम कहां रहते हो बहमन शाहज़ादे ने उत्तर दिया कि हुज़ूर हम दोनों आपके बागों का रक्षक जो स्वर्ग वासी हुआ उसके पुत्रहैं उसने जीतेजी शहर के बाहर एक नया मकान तय्यार किया था कि हम उसमें रहे और बड़े होकर हुज़ूर की सेवा के योग्यहों बादशाह ने कहा कि तुम शिकार खेलने के वास्ते क्यों आया करते हो शिकार खेलना तो बादशाहोंका धर्म है प्रजा और नौकरोंका नहीं बहमन ने कहा कि हे बादशाह हम कम उमर के होने से राजनीति नहीं जानते बादशाह इस उत्तर से अति प्रसन्न हुआ और कहा कि मैं तुम्हारा शिकार खेलना देखा चाहता हूं तुमचाहो जिसतरह शिकार खेलो फिर वह दोनों शाहज़ादे अपने अपने घोड़ोंपर सवार होके बादशाह के साथ हुये जब जङ्गल में गये तो बहमन ने शेरको और परवेज़ने रीछ को अति वीरता और चालाकी के साथ बरछी से मारा और बादशाह के सम्मुख रक्खा थोड़ीदेर उपरान्त फिर बनमें जाकर बहमन ने रीछ और परवेज़ ने शेरको अहेर किया और उनको बादशाह के सामने लाये फिर उन्होंने शिकार का इरादा किया

चिड़िया अति मनोहर वाणी से बोलरही थी पर शाहज़ादी को देखकर अपने छोटे डील के होनेपर भी बादलके समान गरजने लगी और कहने लगी पीछे को फिर जा मेरे पास न आ शाहज़ादी उसकी यह बात सुन हिम्मत बांध वहांसे दौड़ शिखर पर चढगई वहां पृथ्वी बराबर पाई और जल्दी जाकर उस पिंजड़े पर अपना हाथ रखदिया औरकहा अब मैं तुझकोपाया कभी तू मेरेहाथ से न छूटेगी फिर शाहज़ादीने अपने कानोंसे रुई निकालली और उस चिड़िया से उत्तर सुना हे अतिसाहसवान् बीबी धैर्य रख अब मुझ से तुझे कुछ कष्ट न होगा जैसा कि और लोगोंको पहुँचा यद्यपि मैं इस पिंजड़े मे बन्द हूं पर मुझे बहुत से छिपेहुये अहवाल मालूम हैं अबसे मैं तुम्हारी लौंडीहुई और तुम मेरी स्वामिनी हो मुझे तुम्हाराहाल खूब मालूम है तुम नहीं जानती एकदिन मैं तुम्हारे काम आऊंगी अब जो कुछ आज्ञादो तो मैं उसे करूं इन बातों को चिड़िया से सुनकर शाहजादी अति प्रसन्न हुई परन्तु साथही अपने भाई को यादकरके बहुत रंज किया और उस चिड़िया से कहा मै बहुतसी बातों की इच्छा रखती हूं सबके पहिले मेरा यह प्रश्नहै कि यहां कहीं सोनेके रङ्गका पानी है जिसके अति विचित्रगुण मैंने सुनेहैं यदि तुझे मालूम हो तो मुझेबता वह कहां है उस चिड़ियाने वह जगह जिसमें वह पानीथा बताया तथा वह वहां जाकर एक चांदीकी ठिलिया जो अपने साथ लेगई थी उस जलसे भरलाई फिर उस चिड़िया से कहा मैं उस गानेवाले वृक्ष को भी ढूढ़तीहूं मुझेबता वह कहां है चिड़ियाने कहा तुम्हारी पीठ के पीछे एक जंगल है जिस में तुम उस वृक्षको पावोगी और वह जंगल बहुत दूर नहीं है परीजाद उस जंगलमें गई वहां जाकर उस

पर बादशाह ने उनको मना किया और बुलवा के कहा तुम अब क्या मेरे सब शिकारी जानवरों को मारडालोगेमुझे केवल तुम्हारी दिलावरी की परीक्षा लेनीथी बादशाह उनकी वीरता और साहस से अति प्रसन्न हुआ और कहा कि तुम दोनों मेरे साथ चलके भोजनकरो बहमनने कहा कि हुज़ूरने हमारा अति सत्कार किया आज हम नही चल सके और दिन जो आज्ञा होगी प्रतिपालन की जावेगी बादशाहने इन्कार करने से अति आश्चर्य में होकर पूंछा इसका क्या कारणहै बहमन ने विनयकी हमारी एक छोटी बहिनहै हम तीनों बहिन भाइयों से अति प्रीति है इससे सलाह के बिना कहीं नहीं जाते और वह भी हम से बे पूंछे कोई काम नही करती बादशाह ने कहा हम तुम्हारी प्रीति को सुनकर अति प्रसन्न हुये अच्छा आज तुम अपने घरजाओ और अपनी बहिन से सलाह करके कलतुम इसी जगहपर शिकार खेलने को आवो और मुझ से इस बातका उत्तर कहना वे दोनो शाहज़ादे बादशाह से बिदाहोकर अपने घर आये पर बहिन से पूंछना और बादशाह से भेंट होने का हाल कहना भूलगये दूसरे दिन जब शिकार मे गये तो शिकार से लौटने केवक्त बादशाहने पूंछा क्यों तुमने अपनी बहिन से मेरे साथ जानेका सम्मत पूंछा था और उसने तुम्हारे जानेको कहा वा नहीं वे दोनों शाहज़ादे डर गये और उनके मुखका रंग बदलगया और एक दूसरे के मुख की ओर देखने [illegible] ने कहा कि स्वामी हम दोनों भूलगये [illegible] बादशाहने कहा [illegible] दिन भी [illegible] दिनभी बाद-

दरख्त बहुत अच्छा गाना सुना वह दरख्त बहुत ऊंचाथा फिर उस चिड़िया से कहा मैंने उस दरख्तको तो पाया पर उसको उखाड़कर नहीं लासकी चिड़ियाने कहा तुम एक छोटीसी टहनी उसकी तोड़कर लेआवो और अपने बागमें लेजाकर लगादो वह शाख तुम्हारे लगातेही तुरन्तही जड़ पकड़ के लगजावेगी और अतिसुन्दर वृक्ष जैसा कि तुम इस जङ्गल में देखती हो होजावेगा सो शाहजादी एक टहनी तोड़लाई इन तीनों वस्तुओं के प्राप्त होने से अति प्रसन्नहुई फिर उस चिड़िया से कहा यह मतलब तो पूरा होगया परन्तु दो भाई मेरे यहां इसी अर्थ के लिये आये और अब वह काले पत्थर होके यहां पड़े हैं मैं चाहतीहूं वह भी जो जीजावे तो अपने साथ घरलेजाऊं अब कोई ऐसा उपाय बता कि जिससे मेरी यह इच्छा भी सिद्धहो चिड़ियाने कहा तू ठिलियासे थोड़ासा सोने का पानी लेकर उन सबकाले पत्थरों पर जो इधर उधर पर्वतपर पड़ेहैं छिड़क वो सब इसजल के प्रभावसे जी उठेंगे उन सबके साथ तुम्हारे दोनों भाई भी जीउठेंगे फिर वह शाहजादी चिड़िया से इस बातको सुनकर प्रसन्नहुई और वहां से उनतीनों चीजोंको लेकर पत्थरों के निकट आई उसने उस चांदीकी ठिलिया से थोड़ासा पानीलेकर जराजरा सब पत्थरोंपर छिड़का छिड़कतेही वो सब पत्थर जिनमें उसके दोनोभाई भीथे घोड़ोसमेत जीकर उठ खड़े हुये शाहजादीने अपने भाइयों को पहिचान कर उनके गले लगी और आश्चर्य में होके उनसे कहा तुम यहां क्या करते थे उन्होंने कहा हम यहां सोतेथे परीजाद ने कहा तुमको मेरेबिना सोना अच्छा मालूम हुआ और तुम्हें याद नहीं कि तुम बोलती चिड़िया और गानेवाले वृक्ष और सुनहले पानी के लानेको यहां

शाह उनके भूलजाने पर कुछ अप्रसन्न न हुआ और सोने के तीन गेंद बादशाह ने अपनी जेब से निकाल एक कपड़ामे बाँध बहमन को दिये और कहा कि तुम इनको अपनी कमर में रखना इनसे अब तुम मेरी बात न भूलोगे कदाचित् जो तुम्हे याद भी न रहेगी तो जब तुम अपनी कमर खोलोगे तो यह तीनों गेंद तुम्हारी कमर से पृथ्वी पर गिर पड़ेंगे उनकी आवाज से तुमकोयह बात याद पड़जावेगी इसताकीद के करने पर भी उसदिन भी वह दोनों शाहज़ादे अपने घरमें जाकर उसबातको भूलगयेथे पर शाहज़ादा बहमन जब कपड़े उतार के आराम के लिये जानेलगा तब वहतीनों गेंद उसकी कमर से धरती पर गिर पड़े उनकी आवाज से उसको बादशाहकी बात याद आगई सो वह दोनों शाहज़ादे परीज़ादके मकान मे गये अभी उसने आराम न किया था उससे सम्मत पूंछा परीज़ाद ने भाइयों की भूलपर कि तीन दिनतक बादशाह की बात भूलगये थे अति पश्चात्ताप किया और कहा यह तुम्हारा बड़ा भाग्यथा कि तुमको बादशाह से भेंट होगई इस बात से तुमको बड़ा लाभ होगा पर मुझे बड़ा खेद हुआ कि तुमने बादशाह की आज्ञा को माना किन्तु तुम शोचो तो तुमको मुझ से अधिक रंजहुआ होगा तुमने बड़ी ढिठाई की बादशाह की आज्ञा न मानकर उसके घर तक न गये अब मैं इसबात को बोलती चिड़िया से पूंछतीहूं देखू यह क्या कहतीहै जो कुछ भी वह कहे उसको करना परीजाद बोलती चिड़िया से पूंछनेलगी हे चिड़िया तुझको गुप्तभेद मालूमहै और तेरी अति तीव्र बुद्धिहै एक बात मैं तुझसे पूंछतीहूं कि संयोग से मेरे दोनों भाइयोंकी बादशाह से भेंट होगई बादशाह उनपर अति

आये थे और तुमने इसजगहपर काले पत्थर देखेथे अब तो देखो कोई उनमें से यहां बाक़ी है यह आदमी जो तुम्हारे चहूंओर खड़े हैं तुम्हारे घोड़ों समेत पत्थर बनगये थे अब वो जीके तुम्हारी राह देखतेहैं जो तुम पूंछाचाहो कि किस करामातसे तुमजीगये तो मैं तुमसे कहती हूं मैंने इस ठिलिया से पानी लेकर सबपर छिड़का उसके प्रभाव से सब जीगये इस पिंजड़े बोलती चिड़िया और गानेवाले वृक्षको जिसकी टहनी मेरे हाथमें है और सुनहले रंगके पानीको प्राप्त करके यह चाहा कि वे तुम्हारे यह तीनों चीजलेकर घरमें न जावें इसलिये मैंने इस चिड़िया से पूंछा कि क्योंकर मेरे भाई जीवेंगे कि मैं उनको घर में लेजाऊं उसने कहा इस पानीके छिड़कने से जीजावेंगे मैंने थोड़ा थोड़ा पानी सबपर छिड़काइस बातके करतेही वो सब जीगये यह सुनकर बहमन और परवेज़ अपनी बहिनकी अति प्रशंसा और गुण वर्णन करने लगे और इसी भांति सबलोग शाहज़ादी को आशीर्वाद देने लगे और हरएक कहता बीबी हम तुम्हारे दासहैं जन्मभर तुम्हारे अहसान-मन्दरहेंगे अब जो आज्ञा हो उसीको प्रतिपालकरें परीज़ादने कहा मुझको अपने भाई के जिलाने का प्रयोजन था इसमें तुमको भी लाभहुआ मैं तुम्हारी कृतज्ञता से अति प्रसन्न हुई अब तुम अपने घोड़ोपर सवार होके जिधरसे आयेथे उधरको चलेजावो परीज़ाद ने उन सबको बिदाकरके अपने घोड़ेपर सवार होने का इरादा किया बहमनने उसके पहिले सवारहोके कहा जो आज्ञा हो तो मैं इस पिंजड़े को उठाके तुम्हारे से आगे आगे चलूं परीज़ादनें कहा यह चिड़िया मेरी लौंडी है मैं इसको आपही लेचलूंगी जो तुम्हारी खुशी होतो तुम गानेवाले वृक्षकी शाखलेचलो और जब तक मैं

दयावान्है किन्तु उसकी इच्छाहै किइनको अपना मेहमान वनाये निदान सव बीताहुआ हाल शाहज़ादी ने वर्णनकिया और कहा अव तेरी क्या सलाहहै चिड़ियानेकहा हे स्वामिनी शाहज़ादोंको वादशाहकी आज्ञा अवश्य माननी चाहिये क्यो कि वह इससमय का अधिपतिहै उनके मेहमान वननेमें कुछ हानि नहीं रुचिपूर्वक बादशाह के महल में पधारें किन्तु शाहज़ादोंको उचितहै कि वा-दशाहके निमन्त्रणके लिये वड़ी धूमधाम के साथ सामान तय्यार करें और अपने घर बुलावें जिससे कि परस्पर प्रीतिहो परीज़ादने कहा हे चिड़िया मैं प्रीतिसे नही चाहती कि शाहजादे एक घड़ी भर भी मेरी दृष्टिकी ओटहों उस चिड़ियाने कहा यहवात सच है पर उनको वहां जानेमें कुछ डर नहीं परीज़ादने कहा वहुतअच्छा पर यह वात जब वादशाह इसवरमें आवें तो मुझको अवश्य वा-दशाहके सामने निकलनापड़ेगा कदाचित् में सामने न आऊं तो नाहकको वादशाह अप्रसन्नहोगा क्यों कि वादशाह अपनी प्रजा को सन्तानके समान समझता है और प्रजा उसको अपने पिताके समान जानती है जव प्रभातहुआ तो दोनों शाहज़ादे शिकार में पहुँचे इतने में वादशाह भी वहां आनपहुँचे और वहमन से पूंछा तुम्हारी वहिन ने हमारे प्रश्नका क्या उत्तर दिया आज भी कलकी तरह भूलगये वह्मनने आगे वढकर विनयकी हे शाहन्शाह हम आपके आज्ञापालकहैं हमारी छोटी वहिनने भी हमको आज्ञादेदी है किन्तु उसने वहुत से दुर्वादकहे कि क्यों तुमने वादशाह की आज्ञा न मानी वादशाहने यह वचन सुनकर कहा मैं तुमसे किसी-तरह से अप्रसन्न नहीं किन्तु मनसे प्रसन्नहूं निदान वह दोनों शा-हज़ादे अपने ऊपर वादशाह की ऐसी प्रसन्नतापाकर लज्जित हो-

घोड़े की पीठपर सवारहूं तुम इस पिंजड़ेको थांभो फिर जब वे सवा-रहुई पिंजड़े को अपने आगे जीनपर रखलिया और परवेजसे कहा कि तुम उस ठिलियाको कि जिसमें सोने के रंगका पानी है सावधानी से उठालेचलो परवेजने उसको उठालिया फिर जब और लोग भी परीजादके पानी छिड़कने से जिन्दाहोगयेथे घोड़ों पर सवारहोकर तय्यार हुये तब परीज़ादने ठहरके कहा कि भाइयो जो मनुष्य तुममें से श्रेष्ठहो वह आगे चले सबोंने कहा हे सुन्दरी हमारेमें से कोई इसयोग्य नहीं जो तुम्हारे आगे चले जब परीज़ाद ने देखा कि कोई मनुष्य उनमेंसे आगे चलनेका इरादानहीं रखता और चाहते हैं कि मैं ही सबके आगे चलूं तब उसने इनकारकरके कहा भाइयो मेरी किसीतरहसे आगे चलने की पदवी नहीं पर जो तुम सब आज्ञा देते हो इससे लाचारहूं यह कहके वह आगे चली और उसके पीछे दोनो शाहज़ादे और उनके पीछे सम्पूर्ण मनुष्य होलिये फिर उन सब लोगों ने कहा कि उस सिद्धको देखते और उसके राहबताने का गुण मानते पर उन्होने उस सिद्धको उस जगहपर जीता न पाया और न मालूम हुआ कि वह कितनी बड़ी आयुके प्राप्त होनेसे मुवा या इसबास्ते कि इन चीजोंके राहबताने वाला था और अब शाहज़ादी ने उनको पाया इसलिये मरगया सो वह समूह वहां से सिधारा मार्गान्तर में जिस मनुष्यके देश और देशके मार्ग पर ठहरते वह परीज़ाद और शाहज़ादों से बिदा होकर उधरको चलाजाता यहां तक वह तीनोंबहिन भाई अकेले रहगये और मंजिलें लांघकर अपने घर पहुंचे परीज़ादने वहां जाकर उस चिड़िया का पिंजड़ा बाग में उस तरफ़ जो बारहदरी के पास था लटका दिया उस चिड़िया के बोलते ही बहुत सी

गये इधर बादशाह शिकार खेलनेलगा जब थोड़ी देरके उपरान्त बादशाह ने उन शाहजादों को अपने साथ अहेर खेलते न देखा तो पास बुलवाकर बहुतसा धैर्य्यदिया और तुरन्तही अपने महल को सिधारा वहदोनो शाहजादेभी बादशाहके साथथे निदान बादशाह उनको अतिप्रीतिसे अपने साथ महलमें लेचला और उन की अतिप्रतिष्ठा की बादशाहके सब नौकर यह दशादेख डाहकी अग्निसे भस्महोगये और नगर के रहनेवाले भी उनकी इतनी प्रतिष्ठा देखकर आश्चर्य में थे और आपस मे कहतेथे ये दोनों मनुष्य कौनहैं कि जिनकी बादशाह इतनी प्रतिष्ठा करताहै हमलोग इन को नहीं जानते किन्तु इनकी प्यारी २ सूरत देखकर कहते हैं कि ऐसे सुन्दर शाहजादे उसी मलका के उदर से जो बादशाहके कोप में है उत्पन्नहोते तो इतनेही बड़े होते जब बादशाह शाहजादो सहित अपने महल मे आया तो भोजन का समयहोगया दासों ने दिव्य थालियां आदि पात्र बिछाय अनेक प्रकार के भोजन परसे जब बादशाह भोजनपर बैठा तो उन शाहजादों को भी बैठने का इशारह किया बहमन और परवेज़ कि बादशाह से बर्त्तावकी रीति को न जानतेथे प्रणाम करके भोजनपर बैठगये और बादशाह के साथ भोजन किया बादशाह की इच्छाहुई कि इनकी बुद्धि और वाचालताकी परीक्षाले सो बादशाह ने हरएक बातो को उनसे छेड़कर पूंछा वह दोनो शाहजादे कि सम्पूर्ण विद्या और हुनरों को खूबसीखेहुयेथे उन्हों ने सबके यथार्थ उत्तरदिये जिससे बादशाह अतिप्रसन्नहुआ और अपने मनमें शोचनेलगा कदाचित् ऐसे दो पुत्र ईश्वर मुझको देता तो बहुत अच्छाहोता और उनकी अति प्रीतिहोगई और देरतक भोजनपर बैठकर उनकी बातें सुनतारहा

चिड़ियां जैसे कि बुलबुल हजारदास्तां अगन पिद्दा तोता आदि मनोहर वाणी बोलनेवाले उसकी आवाज़ सुननेको दूर दूरसे आकर इकट्ठेहुये इसके उपरान्त उसने गाने वाले वृक्षकी डाली उसी बाग में एकजगह पर बारहदरी के पास लगादी वह डाली तुरन्तही जड़पकड़के हरी होगई और जल्दी से बढ़के एक बहुत ऊँचा दरख़्त होगई और उसके पत्तों से गानेकी आवाज़ उस बड़े वृक्षकी सदृश जिसकी यह डाली थी आनेलगी फिर शाहजादी ने संगमर्मरका एक अति उत्तम हौज़ बनवाकर चमन में रक्खा और उसमें सोने के रङ्गका पानी भरा वह तुरन्त बढ़ने लगा यहां तक कि वह बरतन भरगया और एक फ़व्वारा उबलकर बीस फुट तक ऊंचे होकर छूटनेलगा और वह पानी ऊपर से उसी बर्तन में गिरता और किसी तरफ़ को न बहता उन विचित्र वस्तुओं का वृत्तान्त तीनही दिन में मशहूर होगया उसे शहरके रहनेवाले उस बाग में और घरमें आते जिनका दरवाजा सदाखुलारहताथा उनके तमाशे और सैर देखते और अति प्रसन्न और आश्चर्य भी होते कितने दिनों के उपरान्त जब उन तीनों भाई बहिनों की सफ़र की मांदगी गई तो बहमन और परवेज़ पूर्ववत् शिकार खेलने को जानेलगे तथाच एक दिन दोनों शाहज़ादे शिकार खेलने को कोसभर के फ़ासले से गये इतने में फ़ारसका बादशाह भी संयोग से उसी जगहपर शिकार खेलने को आया शाहज़ादोंने सवारों की भीड़ देखकर चाहा कि अपने को बादशाह की दृष्टि से बचा घरको फिरजावें इस इरादेसे उन्होंने शिकार को छोड़कर घरकी राहली संयोग से वे उस मार्ग से चले जिधर से बादशाह की सवारी आती थी उन्होंने कितनाही चाहा कि इस राह से

जब सुचित्त हुआ तो बादशाह उनदोनों भाइयों को अपने साथ लियेहुये अपने केलिगृह में लेगया और उसका जी उनके मीठे बचनों से न भरा देरतक बोलतारहा अन्तको अतिप्रशंसा करने लगा फिर बादशाह ने गानेबजाने की आज्ञादी सो गानेबजाने वाले अपना अपना साज और सामान लेकरआये और नाचरंग होनेलगा तहां अतिसुन्दर चन्दमुखी स्त्रियों ने ताल और स्वर के साथ खूबगाया और नक़ालों ने नकलेंकी जिससे दोनों शाहजादे अतिप्रसन्न होगये निदान सारा दिन बड़े आनन्दमंगल में बीता इतने में संध्याहोगई बहमन और परवेज दोनोंशाहजादे बादशाह से विदाहोकर अपने घरको सिधारे परन्तु बादशाहने उनको विदा होते वक्त कहा कि कलतुम नियमित समयपर शिकार को आना मैं तुमको फिर अपने महल में लाऊंगा किन्तु मेरी इच्छाहै कि तुम बहुधा हमारे सम्मुख रहाकरो शाहजादों ने कहा हमारे मनकी यह इच्छाहै कि जबहज़ूर शिकारके लिये मैदान में सुशोभितहों और जब शिकार खेलकर सुचित्तहोजावें तब हमारी कुटी में विराजमान हों यहबात हमारी प्रतिष्ठाका हेतु है बादशाहने जो उनसे प्रसन्नथा उत्तर दिया कि मुझे तुम्हारी इच्छा हरहालतमें स्वीकारहै हम अवश्य तुम्हारे घर में चलेंगे और तुम्हारी बहिन के जिसकी वाचालता और बुद्धि तुम्हारे बोलने से प्रकट है मेहमान बनेंगे प्रभातको हम तुम्हें मिलेंगे जहां आज मिलेथे जब दोनों शाहजादे घर पहुंचे तो साराहाल शाही महलका अपनी बहिन से वर्णनकर कहा हे परिजाद बादशाह ने कल शिकार से लौटकर हमारे घरमें आनेकी प्रति- [illegible] हमारी बड़ी प्रतिष्ठा की इसलिये हमारी इच्छाहै [illegible] प्रतिज्ञा के अनुसार सा-

फिर के और तरफ को जावे पर शाह तंग होने से न फिरे और बादशाह के सामने होगये लाचार हो घोड़ों से उतर बादशाहको दण्डवत् की और देरतक पृथ्वीपर झुके रहे बादशाह उनके घोड़े और वस्त्र सब अच्छे देख समझा शायद मेरे नौकर होंगे और उनकी सूरत देखने की लालसा की और वहां ठहरगया और उनको उठने की आज्ञादी वह दोनों शाहज़ादे उठकर बादशाहके आगेदृष्टि नीचेकिये खड़े होगये बादशाह भी उनकेरूप अनूपको देख आश्चर्य में हुआ और देरतक उनको देखा किया फिर उन का नाम पूछा, और कहा तुम कहां रहते हो बहमन शाहज़ादे ने उत्तर दिया कि हुज़ूर हम दोनों आपके बागों का रक्षक जो स्वर्ग बासी हुआ उसके पुत्रहैं उसने जीतेजी शहर के बाहर एक नया मकान तय्यार किया था कि हम उसमें रहें और बड़े होकर हुज़ूर की सेवा के योग्यहों बादशाह ने कहा कि तुम शिकार खेलने के वास्ते क्यों आया करते हो शिकार खेलना तो बादशाहोंका धर्म है मना और नौकरोंका नहीं बहमन ने कहा कि हे बादशाह हम कम उमर के होने से राजनीति नहीं जानते बादशाह इस उत्तर से अति प्रसन्न हुआ और कहा कि मैं तुम्हारा शिकार खेलना देखा चाहताहूं तुमचाहो जिसतरह शिकार खेलो फिर वह शाहज़ादे अपने अपने घोड़ोंपर सवार होके बादशाह हुये जब जङ्गल में गये तो बहमन ने शेरको और को अति वीरता और चालाकी के साथ बर्छी से दशाह के सम्मुख रक्खा थोड़ीदेर उपरान्त फिर हमन ने रीछ और परवेज ने शेरको अहेर किया बादशाह के सामने लाये फिर उन्होंने शिकार का

मान तय्यारकरें परीजाद ने कहा भाइयो वास्तव में तुम बड़ेहौस-लेवर हो जरा ठहरजावो मैं इस विषयमें बोलती चिड़िया से सम्मत पूछूं उसकी सलाह के अनुसार काम करूंगी सो परीजादने उस चिड़िया का पिंजड़ा उठाकर अपने सामने रक्खा और पिछला साराहाल वर्णन किया कि बादशाह हमारे घर में सुशोभित होंगे इसमें क्या सलाहहै और कौन कौन खाने बनवायेजावें चाहो वह छोटीसी चिड़िया थी परन्तु बुद्धि उसकी अपूर्व थी कहनेलगी हे स्वामिनी बड़े भाग्यकी बातहै कि बादशाह तुम्हारे घरमें आवें हर तरह से भोजन आदि तय्यारियां अच्छीरीतिसे हों कुछ चिन्ताकी बात नहीं परन्तु सब भोजन के पहिले एक थाली खीरे के आश की जिसपर आबदार मोती चुने हों तय्यार करके बादशाह के सामने रक्खीजावे यह बात सुनकर परीजाद आश्चर्य्य में होकर कहने लगी अय चिड़िया मैंने आजतक खीरेकी आश मोतियों के साथ नहीं सुनी निश्चय है कि बादशाह भी ऐसा भोजन देखकर आश्चर्य्य में होकर हमारी निर्बुद्धिता पर हँसेंगे सिवाय इसके आबदार मोती हमारे पास कहां हैं उस चिड़ियाने कहा कि मोतियों का इकट्ठा करना कुछ कठिन नहीं है स्वामिनी जो कुछ मैं कहतीहूं जरूर करो और मोतियों के मिलने का उपाय बताती हूं कल प्रभातको तुम अपने रमने में जाकर दाहिनी ओर असुकवृक्ष के नीचे खुदवाना वहां बहुतसे मोती मिलेंगे जब यह बात बोलती चिड़िया कहचुकी तो चुपहोरही दूसरे दिन भोरको परीजाद रमने में गई और उस वृक्षके नीचे पहुँची फिर एक बागवान को बुला-कर कहा कि इस जगह पर खोद सो बागवान वहांकी धरती खोदने लगा अकस्मात् एक बहुत सख्त चीज मट्टी में मालूम हुई तब

चिड़ियां जैसे कि बुलबुल हजारदास्तां अगन पिद्दा तोती आदि मनोहर वाणी बोलनेवाले उसकी आवाज़ सुननेको दूर दूरसे आकर इकट्ठेहुये इसके उपरान्त उसने गाने वाले वृक्षकी डाली उसीबाग़ में एकजगह पर बारहदरी के पास लगादी वह डाली तुरन्तही जड़पकड़के हरी होगई और जल्दी से बढ़के एक बहुत ऊँचा दरख़्त होगई और उसके पत्तों से गानेकी आवाज़ उस बड़े वृक्षकी सदृश जिसकी यह डाली थी आनेलगी फिर शाहज़ादी ने संगमर्मरका एक अति उत्तम हौज़ बनवाकर चमन में रक्खा और उसमें सोने के रङ्गका पानी भरा वह तुरन्त बढ़ने लगा यहां तक कि वह बरतन भरगया और एक फ़व्वारा उबलकर बीस फ़ुट तक ऊंचे होकर छूटनेलगा और वह पानी ऊपर से उसी बर्तन में गिरता और किसी तरफ़ को न बहता उन विचित्र वस्तुओं का वृत्तान्त तीनही दिन में मशहूर होगया उसे शहरके रहनेवाले उस बाग़ में और घरमें आते जिनका दरवाज़ा सदाखुलारहताथा उनके तमाशे और सैर देखते और अति प्रसन्न और आश्चर्य भे होते कितने दिनों के उपरान्त जब उन तीनों भाई बहिनों की सफ़र की मांदगीगई तो बहमन और परवेज़ पूर्ववत् शिकार खेलने को जानेलगे तथाच एक दिन दोनों शाहज़ादे शिकार खेलने को कोसभर के फ़ासले से गये इतने में फ़ारसका बादशाह भी संयोग से उसी जगहपर शिकार खेलने को आया शाहज़ादोंने सवारों की भीड़ देखकर चाहा कि अपने को बादशाह की दृष्टि से बचा घरको फिरजावें इस इरादेसे उन्होंने शिकार को छोड़कर घरकी राहली संयोग से वे उस मार्ग से चले जिधर से बादशाह की सवारी आती थी उन्होंने कितनाही चाहा कि इस राह से

माली ने मट्टीको हटाकर एक सुनहरा सन्दूकचा देखा जो अति सुन्दर साफ़ चौकोण था मालीने यह सब हाल परीज़ाद से कहा उसने प्रसन्न होकर उत्तर दिया मैं तुझे इसी कामके वास्ते लाईथी बड़ी सावधानी से निकालकर मेरे पास ला माली ने उसको निकालकर शाहज़ादी के हवाले किया परीज़ादने जब उसको खोलकर देखा कि वह मुँहतक आबदार मोतियों से भराहै शाहज़ादी उनको देखकर अति प्रसन्नहुई और उसको लेकर अपने मुख्य मकान में जाती थी बहमन और परवेज़ सुबह के वक्त माली के साथ परीज़ाद को बाग़की तरफ़जाते देख अति आश्चर्य में थे कि आज नियम के प्रतिकूल यह क्या व्यवहार है सो बड़ीजल्दी कपड़े पहिन बाग़की ओर चले कि दूरसे क्या देखा कि परीज़ाद अपने हाथों में कोई वस्तु लिये चलीआती है जब पास पहुँचे तो क्या देखा कि एक सोनेका बक्स उसके बग़लमें दबाहै पूंछा बहिन जब तुम मालीको लेकर बाग़की ओर जातीथी तो उस वक्त तुम्हारे हाथ ख़ाली थे अब सोनेका सन्दूकचा तुम्हारे पास देखते हैं बताओ कि यह कहांसे हाथ आया परीज़ादने कहा कि मैं चिड़िया के बताने से सुबहको बाग़बान को लेकर अपने रमने में फ़लाने दरख़्त के नीचे गईथी ईश्वर की पूर्ण कृपा से और भाग्य से यह संदूकचा मुझको मिला इस बातको सुनकर वह अति प्रसन्न हुये फ़िर परीज़ाद ने बहमन से कहा कि मेरे साथ आवो कुछ कहूंगी एक बड़ी कठिनता है परवेज़ने कहा बहिन ऐसा कौन गुप्तभेद है जो हमारे सुनने के लायक नहीं आजतक तुमने कोई बात हमसे नहीं छिपाई परीज़ाद ने कहा अपने प्यारे दो नयनों की सौगन्द है कोई बात ऐसी नहीं जिसका तुमसे पर्दा हो फिर परीज़ाद ने

दोनों भाइयों को अलग लेजाकर सारा हाल उस सम्मत का जो चिड़ियाने दियाथा बताया इसबातको सुनकर वह तीनों देरतक सोचते रहे कि इस बोलती चिड़ियाने खीरे की आशको मोतियों के साथ भोजनके समय रखना क्यों सोचा है जब कुछ न समझ सके तो परस्पर कहने लगे बोलती चिड़िया अतिचतुर है कोई लाभकी बात उसने बिचारी होगी फिर परीजाद ने अपने कमरे में जाकर रसोइये को बुलाकर आज्ञादी कि कल दशबजेतक सब प्रकारके भोजन बादशाह के भोजन के योग्य तय्यारहो उनके ब्योरे की मुझको कुछ आवश्यकता नहीं पर यह भोजन अति उत्तम रीतिसे बनाइयो रसोइये ने पूछा वह कौनसी वस्तुहै परीजाद ने कहा कि खीरे की आशका थाल तय्यार करना और उसपर बहुत आबदार मोती चुने हो ऐसा सजा हो कि उसपर मोती ही मोती दीखें रसोइयें ने खीरे की आश मोतियों के साथ सुनकर अति आश्चर्य किया और मनमे कहने लगा कि आजतक ऐसा खाना किसी ने पृथ्वीभर में न खायाहो हंसों को सुना है कि वह मोती चुगते हैं निदान परीजाद ने वह संदूक़चा रसोइये को दे दिया और आज्ञादी कि जितने मोती उसथाल मे लगें उतने खर्च करना जो बाक़ी रहजावें वे बक्स मे रहने देना नष्ट न होवे रसोइया परीजाद के बचन सुनकर चित्रवत् चुपहोरहा और मोतियोंका बक्स लेकर बिदाहुआ और रसोई में जाकर तय्यारी करनेलगा परीज़ाद ने अपना महल और बाग झड़वाय साफ कराये अति उत्तम बिछौने आदि झाड़ फानूससे अलंकृतकिया फिर जबदोनों शाहजादे उत्तम वस्त्र पहिनकर घोड़े पर सवारहुये तो मैदान में पहुँचकर बादशाह से भेंट हुई और बहुत देरतक शिकार खेलते

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागके उत्तरार्द्धका सूचीपत्र ॥

रहे उसदिन बहुत धूप से गरमीथी इससे बादशाहने अहेरखेलना छोड़ दिया और उन शाहज़ादों के साथ चला जब उनके महल के निकट पहुँचा तो शाहज़ादे बहमनने आगे बढ़कर अपनी बहिन परीज़ाद को बादशाह के आने का हाल कहा कि बादशाह की सवारी घरतक आपहुँची वह यह सुनतेही उठखड़ी हुई और अगवानी के लिये आगे बढ़ी और दरवाजे की देहली में जाकर खड़ी हुई बादशाह उस दिन घोड़े पर सवारथे जब घोड़ेसे उतरकर भीतर आये तो परीज़ादने दौड़कर अपना शिर बादशाह के चरणोंपर धरा बहमन और परवेज दोनों बादशाहके साथसे उन्होने परीज़ाद को पहिचनवाया बादशाह ने अतिप्रीति से अपने हाथों से परीज़ाद का शिर अपने चरणोंसे उठाया और उसके रूप अनूप को साफ़ दृष्टि से देख अति प्रसन्न हुआ और मनमें सोचने लगा कि ईश्वरकी कृपा से ये तीनों बहिन भाई एक सूरत के हैं फिर परीज़ाद बादशाह को अपने साथलिये महलमें पहुँची और अच्छे स्थानपर बैठाया बादशाह उस विचित्र महलको देख अति-प्रसन्न होकर परीज़ाद से कहनेलगा हे सुन्दरी ! तुम्हारा महल अति उत्तम है अब मैं बाग़को देखा चाहताहूं परीज़ादने प्रसन्नहो कमरे का एक दरवाजा जिससे वह सारा बाग़ दिखाई देताथा खोलदिया पहिले बादशाह की दृष्टि फव्वारेपर पड़ी जो बहुत साफ़था और उसके आगे सोनेका पानी कुछ वस्तु नहीं बादशाह यह रंग देख कर अति आश्चर्य्य में हुआ और परीज़ाद से पूंछा कि यह कैसा अच्छा फव्वारा है मैंने कभी ऐसा फव्वारा नहींदेखा सुनहरा जल कहां रहता है और किसके ज़ोरसे इतना ऊंचा होकर छूटता है मैं इसके पास से देखूंगा परीज़ाद ने कहा बहुतअच्छा आप पास

चलकर अवलोकन कीजिये यह कहकर वह बादशाह को अपने साथ फव्वारे के पास लेगई बादशाह अतिरुचि से ध्यान धरके फव्वारे को देखरहाथा कि इतने मे गाने की अतिललित वाणी कानमें सुनाईदी और तानोंसे वह गाना बहुतठीकथा बादशाहका मन अतिमोहित होगया और चारोंतरफ मुख फेरके नजर दौड़ाई और बहुतेरा इधर उधर दूरतक देखा पर गवैया नजर न आया इस से अतिविस्मित हुआ कि हे ईश्वर यहक्या भेदहे परीजादसे पूंछा कि यह आवाज गानेकी कहांसे आती हे क्या तानसेनहे जो धरतीमें फिर अवतार धारणकर अलाप रहे हें परीजादने मुसकरा के कहा कि कोई अच्छा गानेवाला नही यह आवाज अमुक वृक्षसे आतीहै आपदो चार पग आगे बढ़कर उस वृक्षको देखें बादशाह तो उस वृक्षकी लालसाही रखताथा आगे बढ़कर गानेवाले दरख्त के पास जा पहुंचा उस वृक्षसे विचित्र तान और राग सुनकर मूर्च्छा खागया जब कुछ चैतन्य हुआ तो अतिआश्चर्य से कभी तो फव्वारेको देखता कभी कान लगाकर गानेवाले वृक्षका राग सुनता निदान चुप न रहसका लाचार होकर परीज़ाद से पूंछा हमने ऐसा दरख्त आजतक नहीं देखा तुम्हारे हाथ कहां से लगा यह वृक्ष तो बड़ी बहारकाहे जीने की बहार यही है कि मनुष्य की आयु चैन और आराम में बीते परीजाद ने कहा इसका नाम गानेवाला वृक्षहे इस देशमे इसका नाम निशान नहीं इसको मैं बहुत दूरसे लाईहूं जिस फव्वारे के पानी का सोनेकासा रंग है इसका वर्णन में अवकाश पाकर करूंगी अब आप बोलती चिड़िया को अवलोकन कीजिये बादशाह ने प्रसन्न होकर कहा उसको मुझे दिखावो कि वह कहांहे और किस रंगकी है वह भी

अपूर्व होगी। परीज़ाद बादशाहको अपने साथ लिये वहां से फिरी कि बोलती चिड़िया का तमाशा दिखावें निदान फिरते वक्त फिर बादशाह फव्वारेके पासआया और उस फव्वारेको खूब ध्यानसे देख कहनेलगा कि यह फव्वारह जो सोनेका पानी लुटारहा है इसका खजाना कहीं नहीं दिखाईदेता कि कहांसे पानी फव्वारे तक पहुँचताहै न कोई ऐसा बड़ा बरतन दिखाई देताहै परीज़ाद ने कहा हजूर इस फव्वारेका खजाना नहीहै ईश्वरने इस जलमें यह सामर्थ्यदी है कि आपही आप हौजमें आगिरता है वहां न आगहै न कुछ जलताहै यह दिनरात एकही तरहपर जारी रहता है और संगमरमर के बर्तनसे पानी बाहर नहीजाता और कभी घटताभी नहीं बादशाह यह साराहाल सुनकर और भी आश्चर्य मे हुआ परीज़ाद ऐसी ऐसी विचित्र बातें सुनाती हुई बादशाह को बारहदरी तक लाई यहां और भी तमाशा दिखाया कि हजारों सुन्दर बाणीवाले जानवर प्रिय शब्द से फलदार वृक्षोंपर बैठेहुये चहचहारहेहैं बादशाह अतिआश्चर्य मे होकर कहने लगा हे परीज़ाद ! यह कौनसा जादूका जाल बिछाहै कि रंगबरंगे जानवर इतने वृक्षोंपर बैठे हैं मानो संसार के सब जानवर यहीं हैं परीज़ाद ने कहा हजूर यह सब पक्षी इसी बोलती चिड़िया के सबबसे हैं जिसका पिंजड़ा बारहदरी के छतमें लटकरहाहै अब आगे बढ़कर और अच्छे २ राग सुनाई देंगे जब बादशाह बारहदरी के भीतर गया तो क्या देखा कि बोलती चिड़िया एक सुनहरे रत्न जटित पिंजड़े मे प्रियवाणी से चहचहारही है जब बादशाह उसके सामने पहुँचा तो परीज़ादने कहा हे मेरी बोलती चिड़िया ! तू क्या देखती नहीं है कि हजूर बारहदरी मे सुशोभित हुये हैं यह सुन-

कर वह चिड़िया चुपहोरही उसके साथही सब चिड़िया चुप होगई पहिले चिड़ियाने बादशाह की कुशलप्रश्नकी बादशाहने भी यथोचित उत्तरदिया फिर चिड़ियाने बादशाहको आशीर्वाददिया फिर उस बारहदरी में अतिउत्तम और स्वादिष्ठ भोजन दिव्य सोने चांदी के पात्रोंपर परसेहुये थे जब बादशाह भोजन पर बैठा तो संयोग से उसकी दृष्टि उसी थालपर पड़ी बादशाह ने हाथ बढ़ाकर उस थालको अपने सामने खींचकर चाहाकि उसमें से उठाकर भोजन करें पर क्या देखता है कि हजारों मोती खीरे की आशपर चुनेहुये हैं इस बातको देखकर वह अति आश्चर्य मे हुआ और मनमें सोचा कि यह भोजन नये प्रकार का बना है उससे हाथ हटाकर परीजाद और दोनो भाइयो से पूंछा कि यह वस्तु भोजन के योग्य नहीं क्या कारणहै कि हमारे भोजन के लिये परसीगई परीजाद और उसके भाई तो इसका कारण न जानते थे चुपहोगये परबोलती चिड़िया कहने लगी कि ईश्वर की क्या माया है कि हजूर खीरे की आशपर आबदार मोतीचुने हुये देखकर इतने आश्चर्य्य मे हुये बड़े आश्चर्य्य की बातहै कि जब मलका लड़के के बदले कुत्ता बिल्ली अपने पेटसे जनी तब अचम्भा न आया क्या मनुष्य के पेटसे जीवजन्तु भी पैदा होतेहैं अभी तो बादशाह चिड़िया के मुख्य आशय को न समझता था कहने लगा कि हे चिड़िया! तेरा कहना सत्यहै और मैं भी जानताहूं कि यह बातें बुद्धिसे दूरहैं पर उन दोनो स्त्रियोंने जो मलका के प्रसूति के समय उपस्थित थी आकर मुझसे कहा मैंने उनकी बात निश्चय की और यह नहीं समझा कि उनका छलहै वे दोनों औरतें गैर न थीं वरन मलकाकीसगी बहिनेंथीं फिर मैं क्योंकर

हिले स्नानकिया और अतिउत्तम वस्त्र पहिन सुन्दर आभूषणादि से अलंकृतहुई और वहां पहुँचकर अपनी सन्तानसे मिली ईश्वर ने दिन फेरे भाग्य उदयहुई कि इकबारगी ऐश्वर्य्य धन धान्यादि सन्तान सुख प्राप्त हुआ यह खबर सारे राज्य मे फैलगई और पर वेज्र और परीज़ाद तीनों बहिनभाई राज्य के वारिसहुये और उन को निश्चयहुआ कि हम शाहज़ादेहैं फिर बादशाह और मलका और उनतीनों बैठकर भोजन किया जब सुचित्त हुये तब बादशाह मलकाको उस बाग़ की सैर कराने के वास्ते लेगया और गानेवाले वृक्ष का गाना सुनाया और फ़व्वारह दिखाया फिर बारहदरी में आकर उस बोलती चिड़िया का तमाशा दिखाया इसके उपरान्त बादशाह घोड़े पर सवारहुआ और दोनो शाहजादे अपने अपने घोड़ो पर एक दाहिनी दूसरावाई ओर साथ थे और मलका सुख पालपर सवारहुई उसदिन बाज़ार बहुतअच्छा सजाथा और शहर के सब छोटे बड़े इस सवारी के देखने को इकट्ठे थे उस दिन बादशाह ने इतना कञ्चन बरसाया कि धरती सोने की बनगई और याचक मङ्गन और ग़रीब धनवान् बनगये इस तरह से बाद-शाही महल मे पहुँचे और सम्पूर्ण सभासद और छोटे बड़ों ने बड़े २ पारितोषिक पाये बादशाहने बहमन को जो बड़ा पुत्र था युवराज नियत किया और देश के प्रबन्ध आदि को उसी के सम्मतपर छोड़ा और परवेज़ को जनरेली पदपर नियतकर और पृथ्वी जलकी सेना का देखभाल उसके आधीन की परीज़ादको बड़े शाहजादे से व्याह दिया॥

इति श्रीमच्छुक्लोपाध्यायदेवीसहायसंगृहीतायांदृष्टान्तप्रदीपिन्यां पूर्वभागेएकादश प्रदीप ११ समाप्तंचपूर्वार्द्ध मिति॥

इति ॥

श्रीगणेशाय नमः

दृष्टान्तप्रदीपिनी

चतुर्थभाग उत्तरार्द्ध

जिसमें

सार्वोपयोगिक निबन्ध सम्बन्धी अत्यन्त रोचक चमत्कृत अपूर्व अद्भुत बृहत् विस्तृत दृष्टान्त वर्णित हैं॥

जिसको

श्रीयुत सद्गुणग्राहक आर्य्यहितैषी कुलरवंशावतंस श्रीचिरायुष्मान् प्रयागनारायणजी के व्यय से॥

श्रीमच्छुक्लोपाध्याय (देवीसहाय) शर्मानारनौलीवाले निर्मित कर निज भाषा विभूषित करके समस्त लोक के उपकारार्थ प्रकाशित किया॥

दूसरीबार

लखनऊ

सुपरिण्टेण्डेण्ट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए. के प्रबन्ध से

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापा।

सन् १९०८ ई०॥



दृष्टान्तप्रदीपिनी सटीक ॥

चतुर्थभाग ॥

अपूर्वकथानिबन्ध ॥

उत्तरार्द्ध ॥

गुप्तवार्तां न रक्षन्ति ह्यज्ञानिन्यः स्त्रियो यथा ।
विद्याधरापूर्वकथां शिवाग्रेऽकथयज्जया ॥ १ ॥

(अर्थ) अज्ञानवती स्त्रियां गुप्तवार्ताको पेटमें नहीं रखतीं अर्थात् शीघ्रही दूसरे से कहदेती हैं जैसे (जया) नामवाली पुष्पदन्त गन्धर्व की स्त्री ने निज पति से सात विद्याधरों की अपूर्व कथासुन शिवाजीसे जायकही इसीसे शापपाकर उनको मृत्युलोकमें आना पड़ा १ इसपर दृष्टान्त अपूर्व कथा सरित्सागरकी प्रथम तरंग जैसे कि सम्पूर्ण पर्व्वतोंका राजा हिमालय नाम पर्व्वत जिसपर किन्नर गन्धर्व और विद्याधरादिक सुखपूर्व्वक निवास करते हैं जिसका माहात्म्य सम्पूर्ण पर्व्वतों की अपेक्षा से इसकारण अधिक प्रसिद्ध है कि तीन लोकों की माता साक्षात् पार्व्वतीजी जिसकी कन्या हैं

जिसके उत्तरमें उसीका शिखररूप हज़ारों योजनके विस्तारवाला कैलास नाम पर्व्वत स्थितहै यह कैलास पर्व्वत अपनी कान्ति से मन्दराचल को इस कारण हँसता है कि यह समुद्रके मथने से निकलेहुये अमृत से भी उज्ज्वल नहीं हुआ और मैं विनाही यत्नके ऐसा उज्ज्वलहुआहूं कि मेरे ऊपर सम्पूर्ण चराचर संसारके स्वामी श्री महादेव जी विद्याधर और सिद्धगणों से सेवित कियेहुए पार्वती जी समेत निवास करके विहार करते हैं जिनकी पीली २ जटाओं के समूहों में प्राप्त चन्द्रमा सन्ध्याकाल की अरुणता से पीतवर्ण होकर उदयाचल के शृङ्गो के संगके सुखको अनुभव करताहै और जिन शिवजीने अन्धकासुरके हृदयमें त्रिशूलगाड़कर तीनोंलोकों के हृदयका शूल निकालडाला और मुकुटों पर जड़ी हुई मणियों में जिनके चरणो के नखों के प्रतिविम्ब पड़ने से देवता तथा दैत्य लोग चन्द्रशेखर से मालूम होते हैं ऐसे महादेव जी को पार्व्वती जीने एकान्त में किसी समय प्रसन्न किया तब स्तुतिसे प्रसन्नहुए महादेव जी पार्वती को गोद में बैठाकर बोले कि हे प्रिये ! तुम क्या चाहतीहो वह हम करें ऐसे वचन सुनकर पार्व्वतीजी बोली कि हे स्वामी ! यदि आप प्रसन्न हैं तो कोई अत्यन्त रमणीय नवीन कथा कहिये २ २ यह सुनकर श्री महादेवजीबोले कि हे प्रिये ! भूत भविष्य और वर्तमान ऐसी कौनसी वस्तुहै जिसको तुम नहीं जानतीहौ तब पार्वती जीके अत्यन्त हठकरने पर श्री महादेवजी एक छोटीसी कथा कहनेलगे कि एक समय नारायण और ब्रह्मा जी मेरे देखने के लिये पृथ्वी में भ्रमण करते हुए हिमाचल के नीचे आये वहां उन दोनों ने एक ज्वाला रूप महामारी लिङ्गदेखा उसके अन्त के देखने के लिये ब्रह्मा ऊपरको गये और नारायण

भूमिका

इस संसारसागर में दृष्टांतरूप अमूल्यरत्नों को चुनते २ इस समुद्रका एकदेश ऐसा महान् प्राप्तहुआ जिसमें महाही भारी अनर्घ्य रत्न वर्तमान इनमे से किन २ का संग्रहकरे किनको छोड़े यह कह २ अत्यन्त अद्‌भुत चमत्कृत रोचकों को संग्रहकरते थोड़े ही संख्या के महद्वृत्तान्त गर्भित दृष्टान्तों से भाग प्रमाण समाप्त प्रायहुआ तो तिसे पूर्वार्द्ध संज्ञासे समापन किया शेष बहुतसे सामान्य विस्तृत अपूर्व कथा संबंधी सैकड़ों दृष्टान्त इसके उत्तरार्द्ध में प्रकाशित हैं वे समस्त अपूर्व नवीन हैं उनका आनंद देखनेही से प्राप्त होसकता है मैंने निज तुच्छ बुद्धि से यह शोचके कि इस पूर्वोक्त विस्तृत सागरके विभाग से परे और ऐसा देश न होगा यह समझकर मनमे संतोप करलिया तथा इसमें कुछ अधिक विशेषता न समझ इस साहस को यहांही समाप्त करना चाहा था परन्तु दैववश में उन्ही रत्नों की खोजमें अपूर्व बृहत्कथा सागर में जा पहुँचा तब तो अतीवानन्द से मग्न हो इन रत्नों को चुनने में परायण हुआ तथाच उस समुद्र के भी सार २ रत्नो को एकत्र किये इस शुभचिन्तक की पूर्ण अभिलापा है कि श्रेष्ठ सुजन हंस सम इसके अवगुण मल जल को तजकर इसका सार २ रूप पय पानकरके प्रसन्न हुये ऐहिक पारमार्थिक अलभ्य लाभ को प्राप्तहो यंत्रालयेश मैनेजर अवध अखबार श्रीयुत मुंशी प्रयागनारायणजी को धन्यवाद दे मुझको कृतार्थ करेंगे किमधिकं विज्ञेपु स्वरूपमेव वहयथा ॥

नीचेकोगये २८ जब दोनों ने उसका अन्त न पाया तब मेरी प्रसन्नता के लिये तप करनेलगे उससमय मैंने प्रगटहोकर दोनों से कहा कि तुम कोई बरदान मांगो यह सुनतेही ब्रह्मा ने तो यह बरमांगा कि आप हमारे पुत्र होयँ इसी निन्दित वचन कहने से ब्रह्मा संसार में अपूज्य होगये और नारायण ने यह बरमांगा कि हे भगवन्! मैं सदैव आप का सेवक बनारहूं इसी से वह नारायण तुम्हारे स्वरूप में होकर मेरे अर्द्धाङ्गीहुए और इसी से तुम्हीं मेरी शक्ति रूप नारायण हो और तुम्हीं मेरी पूर्व्वजन्म में भी स्त्री थीं शिवजी के इस वचन को सुनकर पार्वतीजी बोली कि मैं पूर्वजन्म में किसप्रकारसे आपकी स्त्री थी ३२ शिवजी बोले हे पार्वती! पूर्व समय में दक्षप्रजापति के तुम और तुम्हारे सिवाय अनेक कन्या थी दक्षप्रजापति ने तुह्मारा विवाह मेरे साथकिया और अन्य कन्याओं का धर्मादिक देवताओ के साथ कर दिया एक समय दक्षने यज्ञ में सब जामाताओं को बुलाया परन्तु केवल मुझे नहीं बुलाया तब तुमने दक्षसे पूछा कि मेरे पतिको क्यों नही बुलाया दक्षने यह उत्तरदिया कि तुम्हारा पति मनुष्यो के कपाल आदिक अशुभवेष को धारण करताहै उसको मैं यज्ञमे कैसे बुलाऊं उसके ऐसे कठोर वचनों को सुनकर हे पार्व्वतीजी! तुमने यह शोचा कि यह बड़ा पापी है और मेरा शरीर भी इसी से उत्पन्न हुआ है इसलिये तुमने उस अपने शरीर को योग से त्याग दिया और मैंने क्रोधसे दक्ष के यज्ञ का नाश करदिया इसके उपरान्त जैसे समुद्रसे चन्द्रमा की कला उत्पन्नहुई है उसीप्रकार हिमालय के घर में तुम्हारा जन्महुआ ३६ इसके उपरान्त तुम्हें तो यादही होगा कि जब मैं तप करने के लिये हिमालय पर गया तब तुम्हारे पिताने

दोषत्यागोगुणग्राहो महतांलक्षणंमतम् ॥
यथाहंसःप्रकुरुते जलत्यागंपयोग्रहम् ॥ १ ॥

आप जनोंका कृपापात्र देशका पूर्ण हितैषी याजकेश शुक्लोपाध्याय (देवीसहाय) शर्मा नारनौलीयः शुक्लजी गंगासहायजी को मकान महेश्वरी मुहाल कानपुर शुक्लजी श्री ईश्वरीसहायजी को मकान रावकामहोला नारनौल शमिति मार्गशीर्षशुक्ले प्रतिपदि रवौ संवत् १९५६ ॥

इसप्रकार कहकर श्री महादेवजी गणोंको शापदेने से पश्चात्ताप वाली पार्व्वती को कैलास पर्व्वत पर कल्पवृक्ष की लताओं में क्रीड़ा करके प्रसन्न करते भये ६६ ॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिन्यामुष्पदन्त.दृष्टान्त प्रथमःप्रदीप. ॥ १ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्वितीयप्रदीपः ॥

श्मशानेष्वाक्रीडास्मरहरपिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपःस्रगपिनृकरोटीपरिकरः ॥ अमंगल्यं शीलंकथमितिमहेशस्यविषये प्रमाणंदृष्टान्तंस्मरतगिरिजाशम्भुगदितम् २॥

(अर्थ) श्मशानमें क्रीड़ा और पिशाच सहचारीहै तथा चिता कीभस्मका लेपन और माला भी नरमुण्डन की ऐसा शिवजी का अमंगलरूप कैसेहे इसविषयमें दृष्टान्त शिव गौरी सम्बाद कहाहै सो स्मरणकरो जैसे कि एक समय महादेवजी से गिरिजाजी ने पूँछा कि हे देवदेव आपकी प्रीति कपाल और श्मशान में क्यों है तब शिवजी बोले कि पहिलेही कल्पके अन्तमें सब संसार के जलमय होनेपर मैंने निज जांघ चीरकर एक रुधिरकी बूँद टपकादीथी,वह जल में गिरकर अंडे के आकार होगई तो तिस अंडेको फाड़ने से एक पुरुष उत्पन्नहुआ उसीसे मैंने संसारके बनानेके लिये 'प्रकृति' उत्पन्नकी; तब तिन दोनों ने मिलकरके 'प्रजापति' उपजाया उसने प्रजाको उत्पन्न कियाहै इसीसे जन उसको पितामह कहते हैं ऐसे सब संसार को उत्पन्न अभिमानयुक्त भये उस पुरुषका शिर मैंने काटडाला उसी यह महाव्रत ग्रहण कियाहै इसीसे मैं कपाल हा मुझे बहुतही

प्याराहै और हे गिरिजाजी ! यह कपालरूप संसार मेरे हाथ में स्थित है क्योंकि उसी अण्डके दोनों टुकड़े धरती आकाश कहलातेहैं॥

इति द्वितीयप्रदीप. २॥

अथ श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेतृतीयप्रदीपः॥

अन्वेषितंनलभ्येत स्वयंलभ्येतदैवत॥
भूमौगवेषितश्चापिप्राप्तोविप्रोयदृच्छया ३॥

(अर्थ) कोई भी वस्तु ढूंढनेपर तो नहीं मिलती और फिर संतोष करनेपर दैवयोगसे वह आपही मिलजातीहै जैसे एक ब्राह्मण सकृत श्रुतिधर-एकबार सुन याद रखनेवाला सारीभूमिमें ढूंढनेपर भी सहजही उसके घर उतरनेपर मिलगया इसपर दृष्टान्त (काणभूत) और (वररुचि) का संवाद प्रमाणहै वररुचि कहताहै हे काणभूत! कौशाम्बी नाम नगरी में सोमदत्त नाम ब्राह्मण रहताथा जिसका कि दूसरा नाम अग्निशिखभीथा उसब्राह्मणकी स्त्रीका नाम वसुदत्ताथा वह किसी मुनिकी कन्या थी और किसी शाप से ब्राह्मण की स्त्री हुई उन्हीं दोनों में से मेरा जन्म हुआ है जब कि मैं बहुत छोटा बालकथा तब मेरा पिता मरगया मेरी माताबड़े दुःखसे मेरा पालन करनेलगी ३२ एकसमय बहुत दूरसे चलेहुए दो ब्राह्मण रात्रिभर रहनेके लिये मेरे घरपर ठहरे वहदोनों मेरे घरपर टिकेही थे कि उसीसमय मृदंगकी आवाज सुनाईपड़ी उसको सुनकर मेरी माता मेरे पिताकी यादकरके गद्गद वचनसे बोली कि हे पुत्र! यह तुम्हारे पिताका मित्र नन्दराम नट नाच रहाहै मैंने भी माता से कहा कि मैं इसे देखने को जाताहूं और देखकर तुझे भी सम्पूर्ण दिखाऊंगा मेरे यह वचन सुनकर उन ब्राह्मणों को बड़ा आश्चर्य

उपरान्त गङ्गाजी के तट पर आकाश से उतरकर थकी हुई प्रिया को उसी पात्रके द्वारा उत्पन्नहुए भोजनों के प्रकारो से प्रसन्नकिया इसप्रकार के अद्भुत प्रभावको देखकर पाटली ने प्रार्थना की तब पुत्रकने उसदण्ड से चतुरंगिणी सेनासमेत एक नगर लिखा उस नगर के सत्य होजाने पर पुत्रकने उसमें राज्य किया और अपने श्वशुर से मिलकर धीरे २ वह सम्पूर्ण पृथ्वी भरे का राजा होगया इसी से यह नगर लक्ष्मी सरस्वती का क्षेत्र विख्यात होकर अत्यन्त धनवान् तथा विद्यावान् पुरवासियों समेत माया से रचाहुआ है और पाटलीरानी के कारण से इसका नाम पाटलिपुत्र (पटना) रक्खागयाहै इसप्रकार उपाध्यायके मुखसे इसअपूर्व कथाको सुनकर हमारे चित्तमें बहुत काल तक आश्चर्य और आनन्द बढ़तारहा॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुर्थप्रदीपः ४॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागपञ्चमप्रदीपः ॥ ५॥

हिंस्राःस्वपापेनहिहिंसितास्तथासाध्वीसमत्वेन भयात्प्रमोचिता। स्त्रीणांचरित्रंतदतीवदुर्घटंदेवो नजानातिकुतोमनुष्यः॥ ५॥

(अर्थ) हिंसक कामी तो तीनो पाप से नष्टहुए और पतिव्रता भयसे छोड़ाई गई इससे स्त्रियों का चरित्र अत्यन्तही दुर्घटहै तिसे देवता भी नहीं जानते मनुष्य तो कैसे जानसकताहै इस पर भी वही सम्वाद—जैसे॥

इसप्रकार काणभूत से बीच में इस कथा को कहकर वररुचि फिर अपनी कथा कहनेलगा इस रीति से व्याडि और इन्द्रदत्तके साथ धीरे २ सम्पूर्ण विद्याओं को पढकर मैं तरुणअवस्था को

हुआ ३९ तब मेरी माता ने उन दोनोंसे कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है यह बालक एकबार की सुनी हुई सब बातोंको हृदयमें धर लेताहै तब मेरी परीक्षा के लिये उन्होंने प्रीतिसांख्यका पाठकिया मैंने वह सुनकर उसीप्रकार सुनादिया इसप्रकार मुझे सुकृत श्रुतिधर (एकबार सुनकर याद रखनेवाला) जानकर उन दोनों मेंसे एक व्याडि नामक ब्राह्मण ने मेरी माताको प्रणामकरके यह कथा कही ४० हे माता! वेतसनामपुरमें देवस्वामी और करम्भक नाम दो ब्राह्मण अत्यन्त परस्पर प्रेम करनेवाले भाई थे उनमें से देवस्वामी का पुत्र यह इन्द्रदत्त नाम है और करम्भकका पुत्र व्याडि नाम मैं हूं उनमें से प्रथम मेरा पिता मरा उसीके शोक से इन्द्रदत्त का भी पिता मरगया और उन्हीं दोनोंके शोकसे हमारी मातभी मरगई ४३ इसीकारण से धन होनेपर भी अनाथ होकर विद्याकी अभिलाषा से हम दोनों स्वामिकुमार की तपस्या करनेलगे ४४ तप करते २ एक दिन स्वप्न में स्वामिकुमारने यह कहा कि नन्द नाम राजाके पाटलिपुत्रनाम नगरमें वर्षनाम एक ब्राह्मणहै उससे तुमको सम्पूर्ण विद्या मिलैगी तुम वहीं जाओ इसके उपरान्त पाटलिपुत्र नाम नगर में जाकर हम लोगोंने पूछा तो लोगोंने कहा कि हां वर्ष नाम एक मूर्ख ब्राह्मणहै ४७ तब सन्देहयुक्तहोकर हम दोनों वर्षके घरमें गये और जाकर मूसा के बिलोंसे युक्त गिरीहुई दीवारवाले छाया तथा छप्पर से रहित आपत्तियों के स्थान के समान घरमें ध्यान लगाये बैठेहुए उसनप ब्राह्मणको देखा हमलोगों को आया देखकर वर्षकी स्त्री जिसका कि शरीर अत्यन्त मलिन केवल बालखुले [illegible] थे वह स्त्री क्या थी मानो वर्षके गुणों को देखकर [illegible] आई थी

प्राप्तहुआ एक समय हम सब लोग इन्द्रोत्सव नाम मेले को देखने गये थे वहां काम के शस्त्र के समान एक कन्या को देखकर मैंने इन्द्रदत्तसे पूछा कि यह कौनहै उसनेकहा कि यह उपवर्षकी लड़की उपकोशानामहै इतनेही में उसकन्याने भी अपनी सखियों से मेरा वृत्तान्तपूंछा और मेरे मनको खैंचेहुए अपने घरको चली गई उस का मुखारविंद पूर्ण चन्द्रमा के समान नेत्र नीलकमल के समान भुजा कमलकी डंडी के समान स्तन वड़े ग्रीवा शंखके समान और ओष्ठ मूंगे के समान थे उसका कहांतक वर्णन किया जाय मानों वह कामरूपी राजा की सौन्दर्य्यरूपी मन्दिर की दूसरी लक्ष्मीही थी ७ इसके उपरान्त काम के वाणों से मेरा हृदय छिदने लगा और उस रात्रिको उसके ध्यान में मुझे अच्छेप्रकार निद्रा भी न आई जव वड़े कष्ट से कुछ निद्राआई तो यह स्वप्न दिखाई पड़ा कि श्वेत वस्त्र धारण कियेहुए कोई स्त्री मुझसे यह कहरही है कि हे पुत्र! यह उपकोशा तेरी पूर्व्वजन्म की स्त्री है तेरे सिवाय और किसी की उसको कामना नहीं है इससे चिन्ता मतकरो और मैं तेरे शरीर के भीतर रहनेवाली सरस्वती हूं मुझसे तेरा दुःख देखा नहींजाता यह कहकर वह अन्तर्द्धान होगई ११ तव मेरी निद्राखुलगई और मैं विश्वासयुक्त होकर अपनी प्रिया के घरके समीप एक छोटे से आमके वृक्ष के नीचे वैठा १२ इसके उपरान्त एक सखी ने मुझसे यह कहा कि उपकोशा भी तुम्हारे निमित्त काम से पीड़ितहोरही है तव मैंने उससे कहा कि उसके पिता की आज्ञा विना मैं उपकोशा को कैसे स्वीकार करसक्ताहूं क्योंकि इससंसार में अपयश से मौत अच्छी है जो इसवातको उपकोशा के घरवाले जानजायें तो वहुत अच्छाहै इसलिये तुम ऐसाहीकरो

उसने बड़ा सत्कार किया तब हमने प्रणाम करके अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा और यह भी कहा कि हमने सुनाहै कि वर्ष बड़े मूर्ख हैं यह सुनकर वह बोली कि तुम हमारे पुत्रके समानहो तुम से क्या लज्जा है सुनो मैं तुमसे यह कथा कहती हूं ५२ इस नगर में शंकर स्वामी नाम एक ब्राह्मण रहते थे उनके दो पुत्र थे एक तो मेरा पति और दूसरा उपवर्ष मेरा पति तो अत्यन्त मूर्ख तथा दरिद्री हुआ और इसका भाई अत्यन्त धनवान् तथा विद्वान् हुआ उसने अपनी स्त्रीको हमारे घरके भी पालन करने की आज्ञादेदी थी पर यहांकी यह बड़ी बुरी रीति है कि वर्षाऋतु में गुड़ और पीठी को मिलाकर स्त्रियां गुप्तरूप से कोई बुरी चीज बनाकर मूर्ख ब्राह्मण को देती हैं ऐसा करने से जाड़ों के दिनों में स्नानका क्लेश और गर्मियों में स्वेदका दुःख नहीं होता इसलिये मेरी देवरानी ने भी दक्षिणा सहित वह पदार्थ मेरे पतिको दिया उसे लेकर जब वह घरमें आया तब मैंने इसे बहुत डाटा और यह भी अपनी मूर्खताके कारण अत्यन्त दुःखीहोकर स्वामिकुमारकी सेवा करनेकोचलेगये इनके तपसे प्रसन्नहुए स्वामिकुमारने इनके हृदयमें सम्पूर्ण विद्याओंका प्रकाश करदिया और कहा कि जब सुकृत श्रुतिधारीब्राह्मण तुमको मिलै तब तुम इन विद्याओं का प्रकाश करना इसप्रकार स्वामिकुमार की आज्ञापाकर बहुत प्रसन्नतापूर्व्वक घर में आकर इन्हों ने सम्पूर्ण वृत्तान्त मुझसे कहा तबसे यह बराबर रात्रि दिन जप और ध्यानमें लगे रहते हैं इससे कोई सकृत् श्रुति धारी (एक बार सुनकर याद रखनेवाला) ब्राह्मणलाओ तो तुम्हारा कार्य्य सिद्धहोय वर्षकी स्त्री से ऐसे वचन सुनकर और उसे १०० अशर्फी देकर सुकृत श्रुतिधर के ढूंढनेको हम सब पृथ्वीपर घूमे परन्तु वह

जिससे मेरे और तुम्हारी सखी के प्राणबचें यह सुनकर उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त उपकोशा की माता से कहा उसने अपने पति उपवर्ष से कहा कि उपवर्ष ने अपने भाई वर्ष से कहा और वर्षने उसबातको स्वीकारकिया विवाहके ठहरजानेपर वर्ष उपाध्याय की आज्ञासे व्याड़ि मेरी माताको कौशाम्बी नगरी से बुलालाया इसके उपरान्त उपवर्ष ने विधिपूर्व्वक उपकोशा नाम कन्यादान करके मुझे देदी तब मैं सुखचैन से अपनी माता और स्त्री समेत वहीं निवास करनेलगा १६ इसके पीछे समयपाकर वर्ष उपाध्याय के बहुतसे शिष्य वढ़गये उनमें से एक पाणिनिनाम शिष्य बड़ा मूर्खथा वह सेवा करनेसे बहुत घबराकर वर्षकी स्त्री का भेजाहुआ विद्याकी कामनासे तप करने को हिमालय पर्व्वतपर चलागया वहां बड़े तपसे प्रसन्नहुये महादेवजी ने सम्पूर्ण विद्याओं का मुखरूप नवीन व्याकरण उसे दिया उस विद्याको पाकर लौटेहुए पाणिनिने शास्त्रार्थ करने के लिये मुझे बुलाया तब हम लोगों के शास्त्रार्थ करते २ सातदिन व्यतीत होगये आठवें दिन मैंने पाणिनिको जीत लिया तब आकाशमें स्थितहुए शिवजीने बड़ा घोर हुंकार किया उससे हम लोग सम्पूर्ण ऐन्द्र व्याकरण भूलगये और पाणिनिने हमलोगोंको जीतलिया २५ तदनन्तर मैंने बहुत लज्जित होकर अपना सम्पूर्ण धन हिरण्यगुप्त नाम बनिये के यहां घरके खर्चके निर्वाहके लिये रखदिया और यहबात उपकोशा को बताकर मैं तपसे श्रीशिवजी के आराधन करनेको हिमालय पर गया और उपकोशा भी मेरे कल्याणकी इच्छा से नित्य नियमपूर्व्वक श्रीगङ्गाजी का स्नान करके अपने घरमें रहा करती थी एक समय वसन्तऋतु में अत्यन्त दुर्बल शरीरवाली पांडुवर्ण

कहीं नहीं मिला आज थककर तुम्हारे यहां आये तौ यह तुम्हारा वालक सुकृत श्रुतिधारी मिला सो तुम इसे विद्या पढ़ने के लिये हमको सुपुर्द करदो ६६ व्याड़िके ऐसे वचन सुनकर हमारी माता वड़े आदरपूर्व्वक बोली कि तुम्हारा कहना बहुत ठीकहै क्योंकि जिस समय यह बालक उत्पन्नहुआथा तब यह आकाशवाणीहुई थी कि यह बालक सुकृत श्रुतिधारी होगा और वर्षउपाध्यायसेविद्याको पढ़कर संसार मे व्याकरणशास्त्रकी प्रतिष्ठा बढ़ावेगा और इसका वररुचि नाम इसकारण से होगा कि संसारमें वर अर्थात् उत्तमपदार्थही इसको अच्छे लगेंगे इसी से इस बालकके बढ़नेपर मैं रात्रि दिन शोचतीथी कि वर्षउपाध्याय कैसे मिलेंगे आज तुम्हारे मुखसे यह बात सुनकर मुझे बड़ा सन्तोष हुआ तुम इसे लेजाओ कोई शोचकी बात नहीं है यह तो तुम्हारे भाई के समानहै मेरी माताके ऐसे वचन सुनकर वह दोनों बड़े प्रसन्न हुए और क्षणके समान वह रात्रि व्यतीत की ७२ इसके उपरान्त उन दोनों ने मेरी माता के प्रसन्न होनेके लिये अपना सम्पूर्ण धन देकर मेरायज्ञोपवीत किया फिर मेरे लेजाने के लिये आज्ञामांगी तब मेरी माताने भी बड़ेदुःख से किसी प्रकार अपने आंसुओंको रोककर मुझे जानेकी आज्ञादी वह मुझे साथमें लेकर वहां से बड़ी प्रसन्नतापूर्व्वक चले और वर्ष के घर मे पहुँचे वर्षने भी मुझे स्वामिकुमार के वरदान के समान मानकर दूसरे दिन हम लोगोको सन्मुख बैठालकर अपनी दिव्य वाणी से ओंकार उच्चारण किया उसीसमय सम्पूर्ण वेद अपने २ अंगोंसमेत उनको स्मरण हो आये और वह हम लोगोको पढ़ाने लगे एकवार सुनकर मैंने दोवार सुनकर व्याड़िने और तीनवार सुनकर इन्द्रदत्त ने गुरुका पढ़ायाहुआ यादकर लिया उस अपूर्व्व

युक्त चन्द्रमाकी कलाके समान मनुष्योंके नेत्रोंको आनन्द देने- वाली उपकोशा गङ्गाजी के स्नान करनेको चली जारहीथी बीच में राजाके पुरोहितने कोतवालने और मन्त्रीके पुत्रने इसको देखा तो उसी समयसे वह तीनो कामके वशीभूत होगये और उसने भी उसदिन स्नान करने में अधिक देर लगाई ४१ जब वह लौटी तो सायंकाल के समय मन्त्री के बेटेने हठकरके उसको रोका उस ने भी अपनी हिकमतअमली से यह कहा कि मेरी भी पहिलेही से यह इच्छाथी परन्तु मैं अच्छे कुलमें उत्पन्नहुईहूं और मेरापति पर- देश गयाहै इससे मैं डरतीहूं कि जो कोई देखले तो मेरी और तेरी दोनो की बुराई होगी इससे जब वसन्तका उत्सव देखने को लोग चलेजायँ तब पहर रात्रिगये तुम मेरे घर आना यह कहकर जैसे कि वह आगे को चली वैसेही पुरोहितने पकड़ा पुरोहित से भी उसने वही बात कहकर रात्रिके दूसरे पहरका संकेत करदिया उससे भी जब किसीप्रकार छूटकर चली तो कोतवालने रोका उससे भी उसने वही बात कहकर रात्रिके तीसरे पहरका वादाकर दिया इसप्रकार भाग्यवश से उसके हाथ से भी छूटकर घरमें आई और अपनी सखीसे सलाह करनेलगी कि रूपके लोभ से मतवाले पुरुषोंके घूरनेके बनिस्बत पतिके परदेश जानेपर कुलीन स्त्री को मरजानाही बेहतरहै ४२ इसप्रकार से शोचती और प्रेमस्मरण करतीहुई उपकोशाने उसदिन न भोजन किया न रात्रिको सोई प्रातःकाल ब्राह्मणोंके पूजनके निमित्त धन लेनेके लिये हिरण्य गुप्त बनियेके यहां अपनी दासी भेजी तब उस बनिये ने उसके घरपर आकर उपकोशासे एकान्त में यह कहा कि तुम मेरे साथ संगकरो तो मैं तुम्हारे पतिका धराहुआ धन तुमकोदूं उसके बचन

दिव्यध्वनिको सुनकर सम्पूर्ण नगरनिवासी ब्राह्मणलोग देखनेको आये और प्रशंसा करके वर्ष उपाध्यायको प्रणाम करने लगे ऐसे आश्चर्य को देखकर पाटलिपुत्र नगरनिवासी सम्पूर्ण लोग उत्सव करनेलगे परन्तु उसके भाई उपवर्ष ने अभिमान के कारण नहीं किया और नन्द नाम राजा ने भी स्वामि कुमारके प्रभावको देख कर और वर्षके ऊपर प्रसन्न होकरउनके घर धनसे भरवादिया ३ ॥

इतिदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेतृतीयःप्रदीपः ॥ ३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे चतुर्थःप्रदीपः ॥ ४ ॥

पाटलीराजपुत्र्यासीत्पुत्रस्तुनृपतिस्तदा ॥
तयोर्नाम्नैवजातापूः पाटलीपुत्रउच्यते ४ ॥

पाटली नामसे राजपुत्री थी और पुत्रनाम राजा इन दोनों से बनाया पाटलीपुत्र नामसे नगर भया इसपर दृष्टांत वररुचि काणभूतका संवाद जैसे—

वररुचि एकाग्रमन से सुननेवाले काणभूत से फिर बोला कि एक समय अपनें नित्यकार्य्यों को करके हमने वर्षनाम उपाध्याय से पूछा कि हे उपाध्याय किस कारणसे इस पाटलिपुत्र नामनगर के निवासी अत्यन्त धनवान् और विद्वान् होते हैं सो आप कृपा करके वर्णन कीजिये यह सुनकर उपाध्याय बोले कि हरद्वारमें जो कनखल नाम अत्यन्त पवित्र तीर्थहै जिस तीर्थमें काञ्चनपात नाम दिग्गज उसीनरगिरिको तोड़कर उसपर से श्रीगङ्गाजी को उतार लायाहै उसमें एक दक्षिणी ब्राह्मण अपनी स्त्रीसमेत तप करता था उस ब्राह्मण के तीन पुत्र थे समय पाकर जब वह ब्राह्मण स्त्री-समेत मृत्युको प्राप्त हुआ तब उसके पुत्र विद्या पढनेकी इच्छा से राजगृह नाम स्थान मे जाकर विद्या पढने लगे और पढ़कर किसी

सुनकर और अपने पतिके रक्खेहुये धनका कोई गवाह न जान कर खेद तथा क्रोधसे भरीहुई उपकोशाने उस पापी बनिये से भी वही बात कहकर रात्रिके चौथे पहरका संकेत करदिया यह सुनकर वह बनिया चलागया ४६ इसके उपरान्त उपकोशाने अपनी दासियो से कस्तूरी आदि अनेक सुगन्धियो से युक्त तेल मिलाहुआ काजल बनवाया और चार वस्त्रके टुकड़ोपर वहकाजल लिसवाया और एकबड़ी मजबूत सन्दूक बाहरी कुण्डी लगवाकर बनवाई ४८ इसके उपरान्त रात्रिके पहिले पहर मे बड़ी उत्तम पोशाक पहनकर मन्त्री का पुत्र आया छिपकर आये हुए उसे देखकर उपकोशाने कहा कि मैं तुझे विना न्हाये को नहीं छुऊंगी इससे भीतर जाकर स्नान करआ उसकी बातको मानकर वह मूर्ख दासियों के साथ बहुत गुप्त अँधेरे घरमें गया वहां दासियों ने उसके वस्त्र तथा आभूषण लेकर उन वस्त्रों के टुकड़ों मे से एक टुकड़ा लँगोटा बांधने को उसे दे दिया और उबटन के बहाने से शिरसे पैरोंतक वहकाजल उसके शरीर मे मल दिया क्योंकि उसे वहां कुछ सूझता न था उसके अंगोंको दासियां मलहीं रहीथीं कि दूसरे पहरमे पुरोहितजी आगये तब दासियोंने मन्त्री के बेटेसे कहा कि यह वररुचिका मित्र कोई पुरोहित आयाहै इसलिये तुम इस सन्दूक में चलेजाओ ऐसा कहकर दासियोने सन्दूकके भीतर उस नंगे मन्त्री के बेटेको बैठाकर कुण्डी बन्द करदी ५६ फिर उस पुरोहितको भी स्नान के बहानेसे भीतर लेकर सब वस्त्रादिक ले लिये और वही वस्त्रका टुकड़ा पहनाकर तेलका काजल उतनी देरतक मलती रहीं कि तीसरे पहरमें कोतवाल भी आगये उसके आने के भयसे दासियोंने उसे भी सन्दूकमें बैठाकर बाहरसे कुण्डी लगादी

स्वामी के न होनेसे दुःखित होकर स्वामिकुमार के दर्शन करनेको दक्षिणकी ओर गये ८ वहां समुद्रके तटपर किञ्चिनी नाम नगरी में भोजक नाम ब्राह्मण के घर में रहने लगे उस ब्राह्मण के तीन कन्याथीं उसने अपनी तीनों कन्याओं का विवाह इन तीनों से करके और अपना सब धन देके तप करनेके निमित्त गङ्गाजीकी यात्राकी इसके उपरान्त सुसरके घरमें रहते २ उस देश में अवृष्टि के कारण बड़ाभारी दुर्भिक्ष पड़ा इनसे वह तीनों ब्राह्मण अपनी २ स्त्रियोंको छोड़कर देशान्तरको चलेगये (क्योंकि दुष्टोंके हृदयमें सम्बन्धका स्नेह नहीं होता) १२ और वह तीनों कन्या अपनेपिता के मित्र किसी यज्ञदत्त नाम ब्राह्मण के घरमें रहीं उनमें से बीच वाली कन्या के गर्भ भी था समय पाकर उसके पुत्र उत्पन्न हुआ उस बालक पर उन तीनों का बड़ा स्नेह था एक समय आकाश मार्गमें विहार करते हुए महादेवजी की जङ्घापर बैठीहुई पार्वती जी उस बालकको देखकर, दयापूर्वक बोलीं कि हे स्वामी! देखो इस बालकपर, यह तीनों स्त्रियां कैसा स्नेह करती हैं और इनको यह आशाहै कि यह हमारा पालन करेगा सो हे स्वामी! ऐसाकरो जिससे यह बालक इनकी पालना करे पार्वती जी के ऐसे दयायुक्त वचनों को सुनकर वरदाता भगवान् महादेवजी बोले कि इस पर मैं अवश्य अनुग्रह करूंगा क्यों कि पूर्वजन्ममें इसने अपनी स्त्री समेत मेरी बड़ी आराधना की है इसीलिये इसको यह जन्म भी दियाहै इसकी स्त्री महेन्द्रनाम राजा की पुत्री पाटली नामसे उत्पन्नहुई है उसीसे इसका विवाह भी होगा २० यह कहकर शिवजी ने उन पतिव्रता स्त्रियोंको यह स्वप्न दिखाया कि तुम्हारे इस बालक का पुत्रकनामहै यह जब शयन करके उठेगा तब इसके शिरहानेमें

शुक्ल चन्द्रमाकी कलाके समान मनुष्योंके नेत्रोंको आनन्द देने वाली उपकोशा गङ्गाजी के स्नान करनेको चली जा रहीथी बीच में राजाके पुरोहितने कोतवालने और मन्त्रीके पुत्रने इसको देखा तो उसी समयसे वह तीनों कामके वशीभूत होगये और उसने भी उसदिन स्नान करने में अधिक देर लगाई ३१ जब वह लौटी तो सायंकाल के समय मन्त्री के बेटेने हठकरके उसको रोका उस ने भी अपनी हिकमतअमली से यह कहा कि मेरी भी पहिलेही से यह इच्छाथी परन्तु मैं अच्छे कुलमें उत्पन्नहुईहूं और मेरापति पर- देश गयाहै इससे मैं डरतीहूं कि जो कोई देखले तो मेरी और तेरी दोनों की बुराई होगी इससे जब वसन्तका उत्सव देखने को लोग चलेजायँ तब पहर रात्रिगये तुम मेरे घर आना यह कहकर जैसे कि वह आगे को चली वैसेही पुरोहितने पकड़ा पुरोहित से भी उसने वही बात कहकर रात्रिके दूसरे पहरका संकेत करदिया उससे भी जब किसीप्रकार छूटकर चली तो कोतवालने रोका उससे भी उसने वही बात कहकर रात्रिके तीसरे पहरका वादाकर दिया इसप्रकार भाग्यवश से उसके हाथ से भी छूटकर घरमें आई और अपनी सखीसे सलाह करनेलगी कि रूपके लोभ से मतवाले पुरुषोंके घूरनेके बनिस्बत पतिके परदेश जानेपर कुलीन स्त्री का मरजानाही बेहतरहै ४१ इस प्रकार से शोचती और मेरास्मरण करतीहुई उपकोशाने उसदिन न भोजन किया न रात्रिको सोई प्रातःकाल ब्राह्मणोंके पूजनके निमित्त धन लेनेके लिये हिरण्य गुप्त बनियेके यहां अपनी दासी भेजी तब उस बनिये ने उसके घरपर आकर उपकोशासे एकान्त में यह कहा कि तुम मेरे साथ संगकरो तो मैं तुम्हारे पतिका धरहुआ धन तुमको दूं उसके वचन

एक लाख अशर्फी प्रतिदिन मिलैंगी और इसीसे यह राजाहोगा इसके उपरान्त जब बालक सोते से उठा तब वह स्त्रियां उस अशर्फियों के ढेरको पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुई इसप्रकार उन अशर्फियों से बड़ाभारी खज़ाना इकट्ठा होगया इसीसे वह पुत्रकनाम लड़का राजाभी होगया किसीसमय उसके नानाका मित्र यज्ञदत्त एकांत में उस बालक से बोला कि हेराजन्! आपके पिता दुर्भिक्षके कारण से देशान्तरको चलेगयेहैं आप ब्राह्मणोंको सदैव कुछ दान दिया कीजिये जिसे सुनकर आपके पिताभी आवैं और मैं आपसे इसी विषय में राजा यज्ञदत्त की कथाको कहताहूं उसको सुनिये२६ पूर्व काल में काशीजी में ब्रह्मदत्त नाम एक राजाहुआ उस राजा ने रात्रिके समय आकाश में उड़तेहुए सैकड़ों राजहंसों से घिरेहुये दो सुवर्ण के हंसों को देखा उनकी ऐसी शोभाथी कि मानों बिजली के समूहको श्वेत मेघों के समूह घेरे चलेजाते हैं राजाको उनके देखने की उत्कण्ठा ऐसीहुई कि राज्यके सब सुखोको भूल गया और मन्त्रियों की सम्मति से एक बड़ा उत्तम तड़ाग बनवाकर उनमे सब जीवोंके आनेकी बेरोक आज्ञा देदी फिर समय पाकर वह दोनों हंसभी आये राजाने उनको आया हुआ देखकर विश्वास देके उनसे पूंछा कि तुम्हारा शरीर सुवर्णका क्योंहै यह सुनकर वह हंस प्रकट वाणी से बोले कि हेराजन्! पूर्व्वजन्ममे हम दोनों काक थे एकसमय किसी निर्जन पवित्र शिवालयमें भोजन के निमित्त लड़ते २ शिवालय की जलाधारी में गिरकर मरगये और अब पूर्व्वजन्म के जाननेवाले सुवर्ण के हंसहैं उनके यह वचन सुन और उन्हें अच्छे प्रकार से देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ २७ इसीसे मैं कहताहूं कि जो आप कोई अपूर्व दान किया

सुनकर और अपने पतिके रक्खेहुये धनका कोई गवाह न जान कर खेद तथा क्रोधमें भरीहुई उपकोशाने उस पापी बनिये से भी वही बात कहकर रात्रिके चौथे पहरका संकेत करदिया यह सुनकर वह बनिया चलागया ४६ इसके उपरान्त उपकोशाने अपनी दासियों से कस्तूरी आदि अनेक सुगन्धियों से युक्त तेल मिलाहुआ काजल बनवाया और चार वस्त्रके टुकड़ोंपर वहकाजल लिसवाया और एकबड़ी मजबूत सन्दूक बाहरी कुण्डी लगवाकर बनवाई ४८ इसके उपरान्त रात्रिके पहिले पहर में बड़ी उत्तम पोशाक पहनकर मन्त्री का पुत्र आया छिपकर आये हुए उसे देखकर उपकोशाने कहा कि मैं तुझे बिना न्हाये को नहीं छुऊंगी इससे भीतर जाकर स्नान करआ उसकी बातको मानकर वह मूर्ख दासियों के साथ बहुत गुप्त अँधेरे घरमें गया वहां दासियों ने उसके वस्त्र तथा आभूषण लेकर उन वस्त्रों के टुकड़ों में से एक टुकड़ा लँगोटा बांधने को उसे दे दिया और उबटन के बहाने से शिरसे पैरोंतक वहकाजल उसके शरीर में मल दिया क्योंकि उसे वहां कुछ सूझता न था उसके अंगोंको दासियां मलहीं रहीथीं कि दूसरे पहरमें पुरोहितजी आगये तब दासियोंने मन्त्री के बेटेसे कहा कि यह वररुचिका मित्र कोई पुरोहित आयाहै इसलिये तुम इस सन्दूक में चलेजाओ ऐसा कहकर दासियोंने सन्दूकके भीतर उस नंगे मन्त्री के बेटेको बैठाकर कुण्डी बन्द करदी ५६ फिर उस पुरोहितको भी स्नान के बहानेसे भीतर लेजाकर सब वस्त्रादिक ले लिये और वही वस्त्रका टुकड़ा पहनाकर तेलका काजल उतनी देरतक मलती रहीं कि तीसरे पहरमें कोतवाल भी आगये उसके आने के भयसे दासियोंने उसे भी सन्दूकमें बैठाकर बाहरसे कुण्डी लगादी

करोगे तो आपके भी पिता उसके प्रभावसे आपको मिलैंगे इस प्रकार यज्ञदत्त से सुनकर पुत्रकके उसीप्रकार दान देनेसे दानकी प्रसिद्धी को सुनकर उसके पिताभी वहांआये और पहिचान लिये गये तब पुत्रने उनको बड़े आदरपूर्वक धन देकर रक्खा (भाग्य से आपत्तियों का नाश होजाने परभी अविवेक से अन्धबुद्धि वाले दुष्टोंका स्वभाव नहीं जाताहै यह आश्चर्य है) एक समय उसके पितादिक राज्य पाने की इच्छा से उस पुत्रकनाम अपने पुत्रको मारनेकी इच्छाकरके उसे विन्ध्यवासिनी के दर्शनके बहाने वहां लेगये और बधिकोंको देवी के मन्दिर में स्थापित करके पुत्रसे बोले कि पहले तुम अकेलेही देवीके मन्दिरमें दर्शन करने जाओ उसने उनके विश्वाससे भीतर जाकर मारनेको उद्युक्तहुए पुरुषों से पूछा कि तुमलोग मुझे क्यों मारते हो बधिक बोले कि तुम्हारे पिता और चाचाओं ने सुवर्ण देकर हमको तुम्हारे मारने को यहां रक्खाहै इसके उपरान्त देवीकी कृपासे मोहितहुये बधिकों से पुत्रक ने कहा कि यह सम्पूर्ण रत्नजटित मेरे आभूषण लेकर मुझे छोड़दो मैं इसबातको किसी से न कहूंगा और कहींदूर चला जाऊंगा तब बधिक लोगों ने उसके सब भूषण लेलिये और उसके पितासे कहदिया कि हम पुत्रक को मारआये फिर वहांसे लौटकर गये हुये राज्यके चाहने वाले उसके पितादिकों को मन्त्रियों ने द्रोही जानकर मारडाला (क्योंकि कृतघ्नियोंका कल्याण कैसेहो सक्ताहै) ४४ इसी बीचमें वह सत्यवक्ता राजा पुत्रक भी अपने बन्धुओं से विरक्त होकर विन्ध्याचल के वन में चलागया और वहां जाकर घूमते २ पुत्रक ने मल्लयुद्ध करतेहुए दो पुरुषों को देखकर उनसे पूछा कि तु : उन दोनोंने कहाकि हमदोनों मयासुर

फिर स्नानके बहाने से कोतवालकोभी भीतर लेजाकर उसके वस्त्रादिक उतार लिये और उसीप्रकारसे काले वस्त्रका टुकड़ा पहराकर इतनी देरतक उबटना करतीरहीं कि पिछले पहरमें बनियांभी आगया तब दासियों ने उसके आने का भय दिखाकर कोतवालको भी सन्दूकमें बन्द करके कुण्डी बन्द करदी सन्दूक के भीतर वह तीनों परस्पर स्पर्श होनेपरभी मारे डरके नहीं बोले ६३ इसके उपरान्त उपकोशाने घरमें दीपक बालकर उस बनियेको बुलाया और बोली कि वह मेरे स्वामी का धन जो तुम्हारे यहां रक्खाहै मुझे देदो यह सुनकर बनियेने घरको सूना देखकर कहा कि मैं तो कही चुकाहूं कि जो तेरे स्वामीका धन रक्खाहै वह देदूंगा तब उपकोशा सन्दूक को सुनाकर बोली कि हे देवतालोगो! हिरण्यगुप्त के यह वचन सुनो यह कहकर और दीपक बुझाकर उसेभी औरों केही समान स्नानके बहानेसे भीतर भेजा दासियोंने उसकेभी वस्त्रादिक लेकर और वही काले वस्त्रका टुकड़ा पहनाकर काजलके उबटन लगाने में इतनी देरलगाई कि प्रातःकाल होगया तब दासियोंने कहा चलेजाओ रात्रि व्यतीत होगई यह कहकर जबरदस्ती उसे गर्दना देकर निकालदिया ६८ इसके उपरान्त काजलसे लिपेहुए वस्त्रके टुकड़े को पहनेहुए वह बनिया लज्जित होकर अपने घर पहुँचा घरमें जाकर काजलकी स्याही को धोतेहुए सेवकों के सामनेभी वह नहीं खड़ा होसक्ताथा (क्योंकि ठीकहै अनीति में बड़ा कष्ट होताहै) ७० प्रातःकाल उपकोशा अपनी दासीको साथ लेकर अपने घरवालों के बिना पूछे राजा नन्द के महल में पहुँची और जाकर यह कहा कि हिरण्यगुप्त नाम बनियां मेरे पतिके धरेहुए धनको नहीं देताहै, राजाने इस बातकी जांच करने के लिये

पुत्रहैं और एक पात्र एकदण्ड तथा दोपादका यही हमारे पिता
का धनहै इसी धनके लिये हम दोनों लडते हैं जो अधिक बल-
वान् होगा वह छीन लेगा उनके यह वचन सुनकर पुत्रकने हँस-
कर कहा कि यह कितना धनहै जिसके लिये तुम लड़ते हो तब
वह बोले कि इन खड़ाओ के पहरने से आकाश में उड़जाने की
सामर्थ्य होती है इस दण्डसे जो लिख दियाजाताहै वह सत्य होता
है और इस पात्रमे जिस भोजनकी इच्छा करो वही प्राप्त होजाता
है यह वचन सुनकर पुत्रकने कहा कि युद्ध से क्या प्रयोजन है
यह प्रतिज्ञा करो कि दौड़नेसे जो आगे निकलजाय वही इसधन
को पावे इस वातको मानकर वह दोनो मूर्ख दौड़े और पुत्रक भी
खड़ाओपर चढकर दण्ड और पात्रको लेकर आकाशको उड़गया
॥२॥ इसके उपरान्त क्षणभर मे बहुत दूर जाकर आकर्पिका नाम
सुन्दर नगरीको देखकर आकाशसे पुत्रक उतरा और यह विचारने
लगा कि वेश्या वंचक होतीहै ब्राह्मण हमारे पिताके समानहोते हैं
और वैश्य धनके लोभी होते हैं तो मुझे कहां रहना चाहिये ऐसा
विचार करते २ किसी निर्जन टूटेफूटे घरमे एकवृद्धास्त्रीकोउसनेदेखा
तब उसे कुछ देकरप्रसन्नकरके उसीटूटेफूटे घरमें गुप्तहोकर रहने लगा
एकसमय उस वृद्धा ने पुत्रक के स्वरूपको देख प्रसन्नहोकर उससे
कहा हे पुत्र मुझे यह बड़ी चिन्ताहै कि तुम्हारेयोग्यस्त्री कहीं नहीं है
यहांके राजाकी कन्याका नाम पाटली है वह तुम्हारे योग्यहै परंतु
महलों में रत्नके समान उसकी चौकसी कीजाती है ॥३॥ वृद्धा के
ऐसे वचन सुनकर उसके चित्तमे कामदेवकी बाधा हुई तो विचार
किया कि आज उसको अवश्य देखूंगा यह निश्चय करके रात्रि
के समय खड़ाऊं पहर कर आकाश मार्ग से वह चला और पर्वत

उसे बुलाकर जो पूंछा तो उसने कहा कि मेरे पास कुछभी इसके पतिका धन नहीं है तब उपकोशाने कहा कि हे राजा ! मेरा पति सन्दूक में घरके देवताओंको बन्द करगयाहै वह मेरे गवाहहैं उन के आगे इसने धन देना मंजूर किया है उस सन्दूक को मँगाकर आप पूछ लीजिये यह वचन सुनकर राजाने बड़े आश्चर्यपूर्वक बहुतसे आदमियो को भेजकर वह सन्दूक मँगाली ७६ इसके पीछे उपकोशा ने कहा कि हे देवतालोगो ! जो कुछ इस बनियेने कहाहै उसे सत्य २ कहकर अपने २ घरों को जाओ नहीं तो मैं तुम्हें राजाको सौंपूंगी या सभामें खोलदूंगी यह सुनकर सन्दूकमें बैठेहुए वह सब डरकर बोले कि ठीकहै इसने हम लोगोंके सन्मुख धन देने को कबूल कियाहै, तब तो उस बनिये ने निरुत्तर होकर उसका सब धन देदिया ७९ इसके उपरान्त राजाने उपकोशा से पूछकर बड़े आश्चर्य्य के साथ वह सन्दूक खुलवाया तो उसमें से काजल केसे पुतले तीन पुरुष निकले और राजा तथा मन्त्रियों ने उनको बड़ी कठिनता से पहिचाना तब हँसकर सब लोग आश्चर्य्य से पूछने लगे कि यह क्या बात है तब उपकोशा ने सारा वृत्तान्त साफ २ कह सुनाया यह सुनकर सभासद्लोगों ने कहा कि शीलवती कुलवती स्त्रियोंका अद्भुतचरित्र है और उपकोशा की बड़ी प्रशंसाकी इसके अनन्तर राजाने पराई स्त्री के चाहनेवाले उन लोगोंका सर्वधन छीनलिया और अपने देशसे निकाल दिया (क्योंकि बुरेस्वभावसे किसीका कल्याण नहीं होता) ८४ तू मेरी बहिनहै यह कहकर राजाने उपकोशाको उसके घर भेज दिया वर्ष तथा उपवर्ष भी इस हालको सुनकर बड़े खुशहुए और उस नगर के सम्पूर्ण निवासी बड़े अचम्भे में होगये, इसी बीच में हिमालय

के शिखरके समान ऊंचे झरोखे में से प्रवेश करके महल में सोती हुई उस पाटलीको देखा उसकी ऐसी शोभाथी कि वह स्त्री नहीं है मानो सम्पूर्ण संसार को जीतकर थकी हुई कामदेवकी शक्ति शरीर में लगी हुई चन्द्रिका से सेवन कीजाती है उसे सोती हुई देखकर पुत्रकने शोचा कि इसे कैसे जगाऊं उसीसमय अकस्मात् किसी पहरुएने यह दोहा पढा ॥

दोहा । अलस दृष्टियुत कामिनी आलिंगन करिजोन ।
रहसिजगावे तरुण जन जन्मकेरि फलतौन ॥

इसको सुनकर कांपते हुए अंगों से उस परमसुन्दरी राजपुत्री को उसने आलिंगन किया और वह जग पड़ी तब उस राजपुत्र को देखकर लज्जा तथा आश्चर्य से उस राजपुत्री की दृष्टि चकित होगई इसके उपरान्त वार्त्तालाप करनेपर इनका गन्धर्व विवाह होगया और उन दोनो की प्रीति परस्पर अत्यन्त बढ़ी फिर रात्रि के व्यतीत होजानेपर राजपुत्री से पूछकर पुत्रक उस वृद्धा के घर मे फिर लौटआया इस प्रकार वह हर रात्रिमें वहां जाने आनेलगा एक समय रक्षकों ने पाटलि के संभोगचिह्नों को देखकर उसके पितासे कहा तब राजाने भी एक स्त्रीको छिपाकर उसके पहचानने के लिये महल मे रक्खा ७० उस स्त्री ने जब पुत्रक सोगया तब पहचानने के लिये उसके वस्त्र में महावरलगादी प्रातःकाल उसके कहने से राजा ने दूत भेजे और उसी पहचान से दूत उसे पकड़ कर राजाके निकट ले आये राजाको क्रोधित देखकर पुत्रक खड़ाऊं पहरकर आकाश मे उड़ा और पाटली के महल मे आकर बोला कि हमको राजाने जानलिया है तो चलो हमदोनों खड़ाऊं के बल से उड़चलें यह कहकर पाटली को गोद में लेकर उड़गया इसके

कर शकटाल ने विचारकर कहा कि उत्सव से सम्पूर्ण लोगों का चित्त अभी सावधान नहीं है क्षणभर यह ब्राह्मण ठहरे मैं अशर्फ़ी दिवाये देताहूं इसके उपरान्त व्याड़िने योगसे बनेहुए राजानन्द के आगे चिल्लाकर कहा कि बड़ा अन्धेर है कि नहीं मरेहुए योग में स्थित ब्राह्मण का शरीर अनाथ मुर्दा कहकर आपके राज्य में जलादिया यह सुनकर योगसे बनेहुए राजानन्द के शोकसेबुरी दशा होगई देहके जलजानेसे उसनन्दको स्थिर जानकर मंत्रीने बाहर आकर मुझे सब अशर्फ़ी देदी ११३ ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषष्ठप्रदीपःसमाप्तः ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तमप्रदीपः ॥

नकार्य्योमंत्रिसार्द्धंवैविरोधःकेनचिद्यथा ॥
शकटालोमत्सुतोपिराजानंचह्यमारयत ७ ॥

(अर्थ) - मंत्रियों के साथ विरोध कभी किसीकोभी नहीं करना चाहिये जैसे शकटाल मन्त्री राजाकरके कुएँ में उतारागया और उसी पलमें उसके सौ पुत्र भी मरगये पर उसने समयपाय बदला लेकर राजाको मारही दिया - जैसे—

इसके अनन्तर योग से बने हुए नन्द ने एकान्त में शोक युक्तहोकर व्याड़िसे कहा कि मैं ब्राह्मण से शूद्र होगया इस धनसे क्या लाभहोगा यह सुनकर व्याड़ि ने उसी समय के माफ़िक़ समझाकर कहा कि शकटाल तुझे जानगया तो अब शोचो कि यह तुम्हारा मुख्य मंत्रीहै थोड़ेदिनोंमें तुम्हें मरवाकर नन्दके पुत्र चन्द्रगुप्तको यहां का राजा बनावेगा इसलिये वररुचिको अपना मुख्य मन्त्री बनाओ उसकी बड़ी प्रभाववाली बुद्धिसे तुम्हारा राज्य स्थिर

होजायगा यह कहकर व्याड़ि तो गुरुदक्षिणा देने को चलागया और उसने मुझे बुलाकर अपना मंत्रीबनाया तब मैंने उससे कहा कि तुम्हारा ब्राह्मणत्व तो चलाही गयाहै परन्तु शकटाल जबतक जीता है तबतक राज्यको भी स्थिर न समझो इसलिये इसका युक्तिपूर्वक नाश करनाचाहिये मेरे इसमंत्रको सुनकर योगसे बनेहुए नन्दने शकटालको उसके सौपुत्रो समेत अन्धे कुए में गिरवादिया और जीतेहुए ब्राह्मणको इसने मरवाडाला इस बदनामी के डरसे एकप्यालेभरसत्तू और प्यालेभर पानी इन सबके लिये प्रतिदिन बँधवादिया तब शकटालने अपने पुत्रों से कहा कि इतने में एक का भी पेट नहीं भरेगा बहुता की कौनकहे इसलिये एक ही हममें से वह मनुष्य इसको रोज खायाकरे जो कि योग से बने हुए इस राजा नन्दसे अपना बदलालेसके १२४ तब उसके पुत्रों ने कहा कि आपही इस कामको करसकेगे इससे आपही इसेखाइये क्योंकि धीर पुरुषोको शत्रुओं से बदलालेना प्राणो से भी बढ़करहै १२५ तब शकटाल उससत्तू और जलसे अपने प्राणों की रक्षाकरनेलगा क्योंकि जीतनेकी इच्छा करनेवाले बड़े क्रूरहोते हैं अन्धेकुएंमें पड़ेहुए शकटाल ने अपने पुत्रोंको मरताहुआ देखकर यहशोचा कि कल्याण चाहनेवाला मनुष्यस्वामियोंके चित्तको बिनाजाने और विश्वासहोने बिना उनके साथ कभी अपनी इच्छाके अनुसार व्यवहार न करे इसके उपरान्त शकटाल के देखतेही देखते उसके सब पुत्र मरगये और वह उनके हाड़ो के पांजरों से घिराहुआ अकेला जीतारहा इतने मे योग से होनेवाले राजा नन्दकाभी राज्य जमगया और गुरुको दक्षिणा देकर लौटे हुए व्याड़िने आकर उससे कहा कि हे मित्र! तुमको राज्यमें सुख

कहा कि हे मनुष्य! इस रीछको नीचे डालदे यह सुनकर अपने डरसे और सिंहको प्रसन्न करनेके लिये राजपुत्र उसे ढकेलनेलगा भाग्य-वश से रीछ गिरा तो नहीं किंतु जगपड़ा और जगकर यह शाप दिया कि हे मित्रद्रोही ! तू सिड़ी होजायगा और शापकी यह अवधि करदी कि जबतक तू इस वृत्तान्त को नहीं सुनेगा तबतक सिड़ी रहेगा इसके उपरान्त प्रातःकाल राजाका पुत्र अपने घरमें आकर सिड़ी होगया और राजा नन्दको यह देखकर बड़ा दुःख होगया ८८ राजा ने कहा कि इससमय जो वररुचि जीता होता तो इसके सिड़ी होनेका सम्पूर्ण कारण मालूम होजाता धिक्कारहै मेरी चतुरता पर मैंने नाहक उसे मरवाया ८९ राजा के यह वचन सुनकर शकटाल ने यह विचारा कि यह वररुचि कि वररुचिके प्रकट करनेका यहमौकाहै क्योंकि वररुचि तो अब यहां रहैगानहीं और राजाका मेरे ऊपर विश्वास बढजायगा ऐसा शोचकर राजा से अभय मांगकर शकटाल बोला कि हे राजा ! खेद मतकरो वर-रुचि अभी जीताहै यह सुनकर राजाने कहा कि जल्दी उसेलाओ तब शकटाल मुझे बड़े हठसे राजा के पास लेगया वहां जाकर राजा के पुत्रके सिड़ी होनेका सब वृत्तान्त सरस्वतीजी की कृपासे मैंने जान लिया और इसने मित्रके साथ द्रोह कियाहै यह कहकर वह सब वृत्तान्त राजासे भी कहदिया इसके अनन्तर शापके छूट जाने पर राजा के पुत्रने मेरी बड़ी स्तुतिकी और राजाने मुझसे पूछा कि तुमने यह वृत्तान्त कैसे जाना ९५ तब मैंने कहा कि हे राजा! लक्षण अनुमान और सूझबूझसे बुद्धिमान् लोग सब बातों को जान लेते हैं जैसे कि मैंने तुम्हारी रानीकी कमरका तिल जान लिया था मेरे इस वचन से राजा बहुत लज्जित होकर पछताने

कर शकटाल ने विचारकर कहा कि उत्सव से सम्पूर्ण लोगों का चित्त अभी सावधान नहीं है क्षणभर यह ब्राह्मण ठहरे मैं अशर्फ़ी दिवाये देताहूं इसके उपरान्त व्याड़िने योगसे बनेहुए राजानन्द के आगे चिल्लाकर कहा कि बड़ा अन्धेर है कि नहीं मरेहुए योग में स्थित ब्राह्मण का शरीर अनाथ मुर्दा कहकर आपके राज्य में जलादिया यह सुनकर योगसे बनेहुए राजानन्द के शोकसे बुरी दशा होगई देहके जलजानेसे उसनन्दको स्थिर जानकर मंत्रीने बाहर आकर मुझे सब अशर्फ़ी देदी ११३ ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषष्ठप्रदीपःसमाप्तः ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तमप्रदीपः ॥

नकार्य्योमंत्रिसार्द्धंवैविरोधःकेनचिद्यथा ॥
शकटालोमत्सुतोपिराजानंचह्यमारयत ७ ॥

(अर्थ)-मंत्रियों के साथ विरोध कभी किसीकोभी नहीं करना चाहिये जैसे शकटाल मन्त्री राजाकरके कुएँ में उतारागया और उसी पलमें उसके सौ पुत्र भी मरगये पर उसने समयपाय बदला लेकर राजाको मारही दिया—जैसे—

इसके अनन्तर योग से बने हुए नन्द ने एकान्त में शोक युक्तहोकर व्याड़िसे कहा कि मैं ब्राह्मण से शूद्र होगया इस धनसे क्या लाभहोगा यह सुनकर व्याड़ि ने उसी समय के माफिक समझाकर कहा कि शकटाल तुम्हें जानगया तो अब शोचो कि यह तुम्हारा मुख्य मंत्रीहै थोड़ेदिनोंमें तुम्हें मरवाकर नन्दके पुत्र चन्द्रगुप्तको यहां का राजा बनावेगा इसलिये वररुचिको अपना मुख्य मन्त्री बनाओ उसकी बड़ी प्रभाववाली बुद्धिसे तुम्हारा राज्य स्थिर

लगा इसके उपरान्त राजा के आदर को छोड़कर और कलङ्क के छूटजानेसे अपनेको कृतकृत्य मानकर अपने स्थानपर चला आया क्योंकि शुद्धचरित्रही विद्वान् लोगों का धन है मेरे वहां आजाने पर सब लोग रोने लगे और उपवर्ष मेरे सुसरने मुझसे कहा तुझे राजा से मारागया सुनकर उपकोशा अग्नि (आग) में जलगई और तुम्हारी और तुम्हारी माताका हृदय शोकसे फटगया १०० यह सुनकर एकाएकी हुए शोकके वेगसे मुझे मूर्च्छा आगई और वायुसे टूटेहुए वृक्षके समान मैं पृथ्वीपर गिरपड़ा क्षणभर में उठकर बड़ा विलाप करने लगा क्योंकि प्यारे बन्धुओ के शोकसे उत्पन्न हुआ शोक किसको सन्तप्त नहीं करता तब वर्ष उपाध्यायने आकर मुझे समझाया कि इस जगत् में आवागमनपर्य्यन्त एक अनित्यता जो है वही नित्यहै तो तुम ईश्वरकी इसमायाको जानकरभी क्यों मोहित होते हो तत्त्व के बोध करानेवाले वर्षउपाध्यायके इन वचनोंसे मुझे कुछ धैर्य हुआ १०४ इसके उपरान्त वैराग्यसे सम्पूर्ण संसारी बन्धनों को छोड़कर मैं तपोवन को चलागया कुछ दिनों के व्यतीत होने पर उस तपोवनमें अयोध्यासे एक ब्राह्मण आया उससे मैंने योगसे बनेहुए राजा नन्दका वृत्तान्त पूछा उसने मुझे पहचानकर बड़े शोक से कहा कि राजा नन्दका वृत्तान्त सुनिये तुम्हारे वहांसे चलेआने पर शकटाल को बहुत दिनके बाद मौका मिला तब वह राजा के मारने का उपाय शोचने लगा एक दिन मन्त्री ने रास्ते मे पृथ्वी को खोदतेहुए किसी चाणक्य नाम ब्राह्मणको देखकर उससे पूछा कि क्यों पृथ्वीको खोदरहेहो तब उस ने कहा कि यह कुश मेरे पैरों में लगगया है इससे इसको खोद रहाहूं यह सुनकर मन्त्रीने उसक्रोधी और क्रूर ब्राह्मण कोही राजा

होजायगा यह कहकर व्याड़ि तो गुरुदक्षिणा देने को चलागया और उसने मुझे बुलाकर अपना मंत्रीबनाया तब मैंने उससे कहा कि तुम्हारा ब्राह्मणत्व तो चलाही गयाहै परन्तु शकटाल जबतक जीता है तबतक राज्यको भी स्थिर न समझो इसलिये इसका युक्ति पूर्व्वक नाश करनाचाहिये मेरे इसमंत्रको सुनकर योगसे बनेहुए नन्दने शकटालको उसके सौपुत्रो समेत अन्धे कुएं मे गिरवा-दिया और जीतेहुए ब्राह्मणको इसने मरवाडाला इस बदनामी के डरसे एकप्यालेभरसत्तू और प्यालेभर पानी इन सबके लिये प्रति-दिन बँधवादिया तब शकटालने अपने पुत्रों से कहा कि इतने में एक का भी पेट नही भरेगा बहुता की कौनकहे इसलिये एक ही हममें से वह मनुष्य इसको रोज खायाकरे जो कि योग से बने हुए इस राजा नन्दसे अपना बदलालेसके १२४ तब उसके पुत्रों ने कहा कि आपही इस कामको करसकेगे इससे आपही इसेखा-इये क्योंकि धीर पुरुषोको शत्रुओं से बदलालेना प्राणों से भी बढ़करहै १२५ तब शकटाल उससत्तू और जलसे अपने प्राणो की रक्षाकरनेलगा क्योकि जीतनेकी इच्छा करनेवाले बड़े क्रूरहोते हैं अन्धेकुएंमें पड़ेहुए शकटाल ने अपने पुत्रोंको मरताहुआ देख-कर यहशोचा कि कल्याण चाहनेवाला मनुष्यस्वामियोंके चित्त को बिनाजाने और विश्वासहोने बिना उनके साथ कभी अपनी इच्छाके अनुसार व्यवहार न करे इसके उपरान्त शकटाल के देख-तेही देखते उसके सब पुत्र मरगये और वह उनके हाड़ो के पां-जरों से घिराहुआ अकेला जीतारहा इतने में योग से होनेवाले राजा नन्दकाभी राज्य जमगया और गुरुको दक्षिणा देकर लौटे हुए व्याड़िने आकर उससे कहा कि हे मित्र! तुमको राज्यमें सुख

के मारनेका उपाय समझा ११ १ उसका नाम पूंछकर मन्त्रीनेकहा कि हे ब्राह्मण! राजा नन्दके यहां मैं तुझे त्रयोदशी को श्राद्ध भोजन करवाऊंगा वहां तुझको एक लाख अशर्फी दक्षिणा में दिलवाऊंगा और सब ब्राह्मणोंमें मुख्य तुमको करूंगा आओ तबतक हमारे घरमे रहो यह कहकर शकटाल उस चाणक्यको अपने घर लिवालाया और श्राद्धवाले दिन राजासे उसकी मुलाकात करवाई इसके उपरान्त चाणक्य श्राद्धमें जाकर सबके आगे बैठा और सुबन्ध नाम ब्राह्मण ने भी चाहा कि मैं सबका अग्रगण्य होऊं तब शकटालने जाकर यह हाल राजा से कहा राजाने हुक्म दिया कि और कोई ब्राह्मण योग्य नहीं है सुबन्धु ब्राह्मण आगे बैठे फिर शकटालने लौटकर बहुत भयपूर्वक चाणक्यसे कहा कि हे महाराज! चाणक्यजी मेरा कोई अपराध नहीं है राजाकी ऐसी इच्छाहै यह सुनकर चाणक्य मारे क्रोधके जलनेलगा और उसने अपनी शिखा खोलकर यह प्रतिज्ञा करी कि मैं निस्सन्देह सात दिनके भीतर इस राजाको मारडालूंगा और तभी क्रोध शान्त होजानेपर शिखा बांधूंगा ११९ यह सुनकर राजानन्दके कुपित होनेपर भागे हुए चाणक्यको शकटाल ने अपने घरमे छिपारक्खा २० इसके पीछे शकटाल से सम्पूर्ण सामग्रीको लेकर चाणक्य कहीं जाकर कृत्य (मारणप्रयोग) करने लगा उसके प्रभाव से राजाको ज्वर आया और सातवें दिन मरगया इसके उपरान्त शकटाल ने योग से बने हुए राजानन्द के हिरण्यगर्भ नाम पुत्रको मारकर पहले राजा नन्द के पुत्र चन्द्रगुप्त को राज्यपर बैठा दिया और बृहस्पति के समान बुद्धिवाले चाणक्य को चन्द्रगुप्त का मन्त्री बनाया फिर योगसे बने हुए राजा नन्द से वैरका बदला लेकर

होय अब मैं तुमसे पूछकर कहीं तप करने जाताहूं यह सुनकर राजा गद्गद वचन करके बोला कि तुम भी राज्य में सुखका भोग करो और मुझे छोड़कर कहीं न जाओ तब व्याड़ि ने कहा कि हे राजा! इस क्षणभंगुर शरीर में और इसीप्रकार की अन्य असार वस्तुओं में कौनबुद्धिमान् अपने को डुबावें लक्ष्मीरूपी मृगतृष्णा बुद्धिमान् मनुष्यको नहीं मोहित करती है यह कहकर व्याड़ि नि-श्चयकरके तप करने को चलागया १३४ इसके उपरान्त वह राजा सम्पूर्ण सेना को लेकर मुझ समेत पाटलिपुत्रनाम अपने नगर में आनन्दपूर्वक सुख भोगने के लिये चलाआया वहां राजा के मंत्रियों मे मुख्यहोकर और बहुतसी लक्ष्मी पाकर अपनी माता तथा गुरुओं के साथ उपकोशा से सेवन कियाहुआ मैं बहुत दिन तकरहा फिर तपसे प्रसन्नहुई गंगाजी ने प्रतिदिन मुझे बहुतसा सुवर्ण दिया और शरीरधारण कियेहुये श्री सरस्वतीजी ने मुझे साक्षात् दर्शनदेकर मेरे कार्य्यों मे उत्तम उपदेश दिया १३७॥

इसप्रकार से कहकर वररुचिने फिर यह वर्णन किया कि समय पाकर योग से बनाहुआ राजा नन्द कामादि के वशीभूतहोकर मतवाले हाथी के समान किसी की अपेक्षा न करनेलगा एका एकी आईहुई लक्ष्मी किसको नहीं मोहित करती है इसके उप-रान्त मैंने विचार किया कि राजा तो उद्दंडहोगया और उसके कार्यों को विचारते २ मेरा धर्म्म भी नहीं सधता इसलिये सहाय-ताकेलिये शकटाल को निकलवाऊं तो अच्छाहोय जो वह वि-रुद्ध करनाचाहैगा तो मेरे होतेहुए वह कुछ नहीं करसक्ताहै ऐसा निश्चय करके मैंने राजा से प्रार्थना करके शकटालको कुएं में से निकलवाया क्योंकि ब्राह्मणलोग बड़े कोमल होते हैं ५ कुएं से

पुत्र के शोक से उदासीन होके शकटाल वनको चला गया॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तमः प्रदीपः ७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टमःप्रदीपः ॥ ८ ॥

दैवेऽनुकूलेतुद्रव्यं किंचित्तो बहुजायते ॥
मूसासाहोबहुद्रव्यमलभन्मृतमूषकात् ॥ ८ ॥

(अर्थ) दैव सुलटाहो तब थोड़े तुच्छ पदार्थसे भी भारी द्रव्य उत्पन्न होताहै—जैसे (मूसासाह) एक वणिक्ने मरेभये मूससेही बहुतसा धन प्राप्त किया तिसका दृष्टान्त—

कहीं बनिये लोग अपने २ रोज़गारोंकी तारीफ़ कररहेथे उनमें से एक बनियां बोला कि धनसे तो धन सबही पैदा करते हैं इसमें कौन बड़ी बात है मैंने पहले विनाही धनके लक्ष्मी उत्पन्न की थी जब कि मैं गर्भमेंही था तब मेरा पिता मरगया और पापी भाइयों ने मेरी माता से सब धन छीन लिया २६ तब मेरी माता भय से गर्भके बचानेकी इच्छा करतीभई मेरे पिताके मित्र कुमारदत्तनाम बनिये के यहां रही वहां जाकर मेरा जन्म हुआ और मेरी माता बड़े २ कठिन कार्य्यों को करके मेरा पालन करनेलगी ३१ इसके उपरान्त उपाध्याय से प्रार्थना करके मेरी माताने मुझे हिसाब किताब लिखना पढना आदि सिखवाया फिर मेरी माताने मुझ से कहा कि बेटा तुम बनियें के पुत्रहो अब कुछ रोजगारकरो इसदेश में विशाखिल एक बड़ा धनवान् बनियां रहताहै वह कुलीन दरिद्रियोंको रोजगार करनेको अपना धन देताहै जाओ उससे जाकर धन मांगो तब मैं उसके यहां गया उससमय वह किसी बनियें के पुत्र से क्रोधपूर्व्वक कहरहाथा कि यह जो मराहुआ चूहा पड़ा

निकलेहुए शकटाल ने यह विचारा कि जबतक वररुचिहै तबतक इस राजाको कोई नहीं जीतसक्ता इससे समय का इन्तिज़ार करने के लिये बेत के समान नम्र वृत्ती को अख्तियारकरूं ऐसाशोच कर बुद्धिमान् शकटाल फिर मंत्री होकर मेरी इच्छा के अनुसार राज्यके कार्य्य करनेलगा एकसमय राजा नगर से बाहर सैरकरने को गया था वहां उसने गंगाजी के भीतर से निकलाहुआ एक ऐसा हाथ देखा जिसकी पांचो अँगुली मिलीहुई थीं उसे देखकर उसने मुझे बुलाकर पूछा कि यह क्या है मैंने उसहाथ की तरफ़ अपनी दो अँगुली उठाई उन अँगुलियो को देखकर वह हाथ अन्तर्द्धान होगया फिर राजा ने मुझ से आश्चर्य्यपूर्व्वक पूछा कि बताओ यह क्या था तब मैंने कहा कि इस हाथका यह अभिप्राय था कि इस संसार में पांच आदमी मिलकर कौनसी बात नहीं सिद्धकरसक्ते हैं तब मैंने दो अँगुली इस अभिप्राय से दिखलाई कि दोही के एक चित्तहोजाने ??? कोई बात असाध्य नहीं है इस छिपेहुए विज्ञान को सुनकर राजा बहुत प्रसन्नहुआ और शकटाल मेरी दुर्जय बुद्धिको देखकर अप्रसन्न हुआ १२ एक समय राजाने देखा कि मेरी रानी झरोखे से किसी ऊपर शिरउठानेवाले अतिथि ब्राह्मणको देखरही है इतनीही बातसे क्रोधितहोकर राजा ने उस ब्राह्मणके मारडालने का हुक्मदिया क्योंकि ईर्षा से विचार नहीं रहताहै उस ब्राह्मण को मारने के लिये जाते देखकर बाज़ार में रक्खीहुई मरी मछली भी हँसनेलगी राजा ने यह देखकर उस ब्राह्मण का मारना उस दिन बन्दकरवादिया और मुझे बुलाकर उस मछली के हँसने का कारण पूछा १७ मैंने कहा कि शोचकर इसका उत्तर दूंगा यह कहकर एकान्त में ध्यान करतेहुये सरस्वती

है इससे भी चतुर मनुष्य धन पैदा करसक्ते हैं तुझे तो मैंने बहुत सी अशर्फी दी हैं उनका बढ़ाना तो अलग रहा तू उनको भी न रखसका ३७ यह सुनकर मैंने मूसा लेलिया और उसकी वही में लिखवाकर चला तब वह बनियां हँसनेलगा इसके उपरान्त वह मूसा दो मुट्ठी चने लेकर किसी बानियेंके हाथ बिल्ली के लिये बेच डाला फिर उन चनोंको भुनवाकर और पानीके घड़ेको लेकरशहर के बाहर किसी चबूतरे पर छाया में जाबैठा वहां थकेहुए काष्ठके बोझेवाले आतेथे उनको मैं शीतल जल और चने बड़ी नम्रतासे देनेलगा तब हरएक बोझेवालेने मुझसे प्रसन्न होकर दो २ लकड़ियां दी वह लकड़ियां मैंने लाकर बाज़ारमें बेचीं उससे जो धन मिला उससे फिर चने खरीदे और उसीप्रकार फिर बोझेवालों को दिये इसप्रकार थोड़े दिनकरके जब कुछ धन इकट्ठा होगया तब मैंने तीन दिनतक सब लकड़ी आप खरीदलीं४५एकसमय बहुत पानी के बरसने से वह लकड़ी बिकनेको नहीं आई तब मैंने वही लकड़ी कई सौ रुपयेकी बेचीं फिर उस धनसे दुकान करली इसी प्रकार धीरे २ रोज़गार करते २ मैं बड़ा धनवान् होगया तब मैंने सोनेका मूसा बनवाकर विशाखिलको जाकरदिया और उसने भी अपनी कन्या मुझे ब्याहदी इसीसे लोक में मुझे मूसासाह करके बोलते हैं इसप्रकार मैंने निर्धन होकर भी लक्ष्मी पाई है यह सुनकर उन सब बनियोंको बड़ा आश्चर्यहुआ चित्र अर्थात् विलक्षण कामोंसे बुद्धिही बिना दीवारके चित्र बताई जाती है ५० ॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टम प्रदीप ॥ ८ ॥

जी ने मुझ से कहा कि रात्रिके समय तुम इस ताड़ के वृक्षके ऊपर छिपकर बैठो तो यहां तुम्हें निस्सन्देह इस मछली के हँसने का कारण सुनाई पड़ेगा यह सुनकर मैं रात्रिके समय उसताड़ के वृक्षके ऊपर बैठा तो वहां अपने छोटे २ बालकों को साथलिये एक बड़ी घोर राक्षसी आई भोजन मांगते हुए अपने बालकों से उस ने कहा कि ठहरजाओ मैं प्रातःकाल तुम्हें ब्राह्मण का मांस दूंगी क्योंकि आज वह मारा नहीगयाहै बालकों ने पूछा वह क्यों नही मारागया तो उसने कहा कि उसे देखकर मरीहुई मछली हँसी थी लड़कों ने पूँछा कि वह मछली क्यों हँसी थी तब उस राक्षसी ने कहा कि राजा की सब रानियां बिगड़गई सब महलों में स्त्रियों का भेष किये पुरुषरहते हैं और निरपराधब्राह्मण मारा जाताहै इस लिये मछली हँसी थी राजाके अत्यन्त विचार रहित होने से जब जीव हँसते हैं तब सब महलों के रहनेवालों की यहीदशा होती है उसके यह वचनसुनकर वहांसे मैं चलाआया और प्रातःकाल राजाके पास आकर उस मछली के हँसनेका कारण बतलाया २६ तब राजा महलों में गया और स्त्रीरूपधारी पुरुषों को पाकर मेरे ऊपर बहुत प्रसन्न हुआ और ब्राह्मण को बधसे छुड़वादिया राजाकी ऐसी २ करतूत देखकर मैं बहुत खिन्नरहता था एक समय वहां कोई नवीन तसवीर बनानेवाला आया उसने राजा और राजा की पटरानी इन दोनों की एक तसवीर बनाई वह तसवीर ऐसी उत्तम बनी कि वाणी और चेष्टा के न होनेपर भी जीवतीहुई सी मालूमहोती थी राजाने प्रसन्नहोकर उस तसवीरवाले को बहुतसा धनदिया और वह तसवीर अपने घर में दीवार पर लगवाली ३० एक समय राजा के घर में जाकर मैंने तसवीर में लिखी हुई सब

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेनवमःप्रदीपः ॥ ६ ॥

नाऽप्रसक्तंप्रयुञ्जीयादप्रसंगेयथाद्विजः ॥
प्रयुज्यमानोवेश्याग्रेसामश्रासीत्प्रधर्षितः ६

(अर्थ)-किसी भी प्रसंगरहित अर्थात् विन मौके के कामव न करे। जैसे एक वेदपात्र ब्राह्मण ने वेश्याके आगे सामवेद व पाठ किया तो तिसने तहां से अप्रतिष्ठापाई अर्थात् निकाल गया-दृष्टान्त-

कही किसी वैदिक ब्राह्मणने दानमें एक अशर्फीपाईथी उस किसी छली दिल्लगीबाजने कहा कि ब्राह्मणपनेसे तुम्हारा भोजन चलता है तो तुम इस अशर्फी को खर्चकरके चतुर होने के लि दुनियांदारी की बातें सीखो उसने कहा कि मुझे कौन सिखावेग तव वह दिल्लगीवाज बोला कि यह जो चतुरकानामवेश्याहै इसवे यहां तुम जाओ ब्राह्मणने कहा कि मैं वहां जाकर क्या करूं त वह बोला कि अशर्फी देकर उसके प्रसन्न करनेको साम (सामवेव अथवा मिलाप) का वर्त्तावकरना यह सुनकर वेदपाठी ब्राह्मण च तुरका के मकानमें जाकर बैठगया और चतुरकाने उनका आद किया फिर ब्राह्मणने चतुरकाको अशर्फी देकरकहा कि मुझे दुनि यांदारी सिखाओ यह सुनकर जब वहांके लोग हँसनेलगे तब व ब्राह्मण कुछ शोचकर हस्तस्वरसमेत सामवेदका गान इतने जो से करनेलगा कि वहां बहुत से दिल्लगीबाज देखनेके लिये इकट्ठे होगये और बोले कि यह स्यार यहां कहां से घुसआया है जल्दी से इसके गले में अर्द्धचन्द्र (गर्दना) देकर इसे निकाल दो ब्राह्मण अर्द्धचन्द्रका अर्थ एक प्रकारका बाण समझकर शिर कटने

लक्षणों से भरीहुई राजाकी रानी देखी और उसके दूसरे लक्षणों के सम्बन्ध से और अपनी समझ से उसकी कमरमे एक तिल बना दिया इससे उसके लक्षणों को पूरा करके मै वहां से चलाआया इस के उपरान्त राजा ने वहां जाकर वह तिलदेखा और सेवकों से पूछा कि यह किस ने बनायाहै उन लोगों ने तिलका बनानेवाला मुझे बतलाया राजाने शोचा कि रानी के गुप्तस्थानके इस तिलको मेरे सिवाय और कौन जानसकताहे इसको वररुचि कैसे जानगया मालूम होता है कि इसने छिपकर महलों को बिगाड़ाहै इसी से वहां उसने स्त्रीरूपधारी पुरुष देखे यह शोचकर राजाको बड़ा क्रोध हुआ (ठीकहै मूर्खों के विचार भी मूर्खता के ही होते हैं) ३७ इसके उपरान्त राजा ने एकान्त में बुलाकर शकटाल से कहा कि तुम वररुचि को मरवाडालो क्योंकि इसने महलों को बिगाड़ाहै शकटाल ने कहा कि जैसा आपका हुक्महै वैसाही करूंगा यह कहकर बाहर चलाआया और शोचनेलगा कि मैं वररुचिको नहीं मारसकताहूं क्योंकि वह बड़ा बुद्धिमान्है और उसीने मुझेआपत्तियों से छुड़ायाहै और वह ब्राह्मणभी है तो यह अच्छाहोगा कि मैं उसे छिपाकर अपने यहां रक्खूं ऐसा विचारकर शकटाल राजा के कोपका कारण और वधका हुक्म वररुचि से कहा और फिर बोला कि मैं कहने सुनने के लिये और किसीको मारडालताहूं तुम छिपकर मेरे यहां रहो नहीं तो राजा मेरे ऊपर भी खफ़ाहोगा इसके यह वचन सुनकर मैं छिपकर उसके घरमें रहनेलगा और उसने मेरे नाम से रात्रि के समय किसी और को मारडाला ४३ तब इसप्रकार नीति करनेवाले शकटाल से मैंने कहा कि तुम बड़े योग्य मन्त्री हो क्यों कि तुमने मेरे मारनेकी तदबीर नहीं की

के भयसे मैंने सब दुनियांदारी सीखली यह कहताहुआ भागा ६० और उसके पास जाकर जिसने कि इसे भेजाथा सब वृत्तान्त सुनाया तब उसने कहा कि मैंने तो तुमसे साम अर्थात् मेल की बात कहीथी वहां वेद पढनेका कौन मौक़ाथा क्या वेद पढनेवालों में सदैव लड़ताही बनी रहती है इसप्रकार हँसकर वह वेश्या के यहां गया और बोला कि इस दो पैरके पशुका तुम सुवर्णरूपी चारा देदो यह सुनकर उसने भी हँसकर उसकी अशर्फ़ी फ़ेर दी अशर्फ़ी को पाकर ब्राह्मण अपना नया जन्मसा मानकर घर लौट आया ॥

इतिदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेनवमः प्रदीपः ॥ ९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे दशमः प्रदीपः ॥ १० ॥

सातवाहनराज्ञोपि प्रसिद्धिर्नामतः कथम् ।
अस्योत्तरंगुणाढ्येनकाणभूत्यग्रतःप्राकथि ॥ १ ॥

(अर्थ) राजा (सातवाहन के नामकी प्रसिद्धि के विषय में गुणाढ्य) ब्राह्मणने प्रमाणपूर्व उत्तर काणभूति के आगेकहा १ ॥

तब गुणाढ्य बोला कि सुनो मैं कहता हूं कि पहले दीपकर्णि नाम एक बड़ा बलवान् राजाथा उसके शक्तिमती नाम बड़ी प्यारी रानीथी एक समय भोग करने के पीछे बगीचे में सोतीहुई रानी को सर्पने काटा और वह मरगई यद्यपि राजा के कोई पुत्र नहीं था तथापि राजाने उसके प्रेम से दूसरा कोई विवाह नहीं किया ६० एक समय राज्यके योग्य पुत्र के न होने से दुःखितहुये राजा को स्वप्न में श्रीशिवजी ने यह आज्ञा दी कि वनमें सिंहपर चढे हुये किसी बालकको तुम देखोगे उसको घरलेआना वही तुम्हारा पुत्र

एक राक्षस मेरा परममित्र है इससे कोई मुझे मार नहीं सक्ता जो मैं ध्यानकरके उसे बुलाऊं और चाहूं तो वह सब संसार का नाश करदेवे और राजाको मैं इसलिये नहीं मरवाताहूं कि वह मेरा मित्रहै और ब्राह्मणहै यह सुनकर शकटाल ने कहा कि मुझे उस राक्षस को दिखाओ तब मैंने ध्यान से उसे बुलाया और वह शकटाल उस राक्षसको देखकर डरा और आश्चर्ययुक्त हुआ राक्षस के चले जानेपर शकटाल ने फिर मुझ से पूँछा कि तुम्हारी मित्रता राक्षस के साथ कैसेहुई तब मैंने कहा कि एक समय नगरकी रक्षा के लिये घूमताहुआ एक पुरुष हररात्रि में मर जाता था यह बात सुनकर राजा ने मुझको नगरकी रक्षाकेलिये भेजा मैंने घूमते २ रात्रिके समय एक राक्षसको देखा और उसने मुझसे पूँछा कि बताओ इस नगर में कौनसी बड़ी रूपवती है तब मैंने हँसकरकहा कि हे मूर्ख ! जो जिसको अच्छीलगे वही उस को रूपवती है तब यह सुनकर राक्षस बोला कि केवल तुमनेमुझे जीतलिया प्रश्नका उत्तर देने के कारण वधसे बचेहुए मुझ से फिर राक्षसबोला कि मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहूं तुम मेरेमित्र होगये जब तुम मुझे याद करोगे तभी मैं आऊंगा ५२ यह कहकर राक्षसके अन्तर्द्धान होजानेपर मैं व्याकात्यों अपने घरको लौटआया इसप्रकार से वह राक्षस मेरा मित्रहुआहै इसके उपरान्त शकटाल की प्रार्थना से ध्यान से आई हुई श्री गङ्गाजी का दर्शन मैंने शकटाल को कराया और फिर स्तुतियों से गङ्गाजी को प्रसन्नकर के विदाकिया मेरी इनबातों को देखकर शकटाल भी मेराबड़ा सहायक होगया ५६ एक समय एकान्तमें उदासीन बैठेहुए मुझ से शकटाल बोला कि ...

होगा इसके उपरान्त जगकर उस स्वप्नको स्मरण करके वह राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और एक समय शिकार खेलने के लिये वन में वहुत दूर चलागया वहां राजाको मध्याह्नके समय किसी तालावके किनारे सूर्य्य के समान तेजवाला सिंहपर चढ़ाहुआ एक वालक दिखाई दिया वह सिंह वालक को उतारकर जल पीने के लिये तालाव पर चला तव राजाने स्वप्नको स्मरण करके उस सिंह के एक वाण मारा वाणके लगने से वह सिंह पुरुष होगया तव राजाने उससे पूछा कि वताओ यह क्या वातहै वह बोला हे राजा! मैं कुवेरका मित्र सातनाम यक्ष हूं मैंने एक समय गंगा में स्नान करतीहुई एक ऋषिकी कन्या देखी और उस कन्या ने मुझे देखा परस्पर देखने से हम दोनों को कामका वेग उत्पन्न हुआ तो मैंने उसके साथ गान्धर्व विवाह कर लिया ६८ उसके भाइयों ने यह वात सुनकर क्रोध से शाप दिया कि तुम दोनों वड़े स्वेच्छाचारी हौ इससे सिंह होजाओ मुनियों ने पुत्रजन्मपर्य्यन्त मेरी स्त्री के शापकी अवधि करदी और तुम्हारे वाण लगने तक मेरे शापकी अवधि करदी इसके उपरान्त हम दोनों इसवनमें आकर सिंह और सिंहनी होगये समयपाकर सिंहनी गर्भिणी हुई और इस पुरुष वालक को उत्पन्न करके मरगई मैंने अन्य सिंहिनियों के दूध से इस वालककी पालना की आज तुम्हारे वाणके लगने से मैं भी शापसे छूटगया इस वड़े वलवान् वालकको मैं तुम्हें देताहूं इसे ले जाओ और मुनिलोगो ने भी हम से यह वात पहलेही कहदी थी यह कहकर उस सिंहसे मनुष्यरूप होनेवाले यक्षके अन्तर्द्धान हो जानेपर राजा उस वालकको लेकर अपनेघर चलाआया सातनाम यक्ष उसका वाहन हुआथा इस हेतु से उसका सातवाहन नाम

करते हो क्या तुम नहीं जानते हो कि राजा लोगोंकी बुद्धि में विचार नहीं होता थोड़े दिनो मे तुम्हारा यह कलंक छूटजायगा इस बात पर मैं तुम्हें एक कथा सुनाताहूं पहले इस नगर में आदित्यवर्म्मा नाम राजाथा और शिववर्म्मा नाम बड़ा बुद्धिमान् उसका मंत्री था एक समय उस राजाकी एक रानी गर्भवती हुई यह सुनकर राजाने अपने महल के रक्षकों से पूछा कि दो वर्ष से मै महलो में नहीं गयाहूं यहगर्भ कहांसे आया तब वहलोग बोले कि हे राजा! शिववर्मानाम मन्त्री के सिवाय यहां और कोई पुरुष नहीं आता यह सुनकर राजाने विचारा कि निस्सन्देह यह मंत्री ही मेरा वैरी है परन्तु जो मैं इसे जाहिर में मरवाडालूंगा तो दुनियां मे मेरी बदनामी होगी यह विचारकर उस राजा ने शिववर्मा को भोगवर्म्मानाम एक अपने मित्र राजाके यहां भेजदिया और पीछे से एक हलकारे के हाथ एक चिट्ठी भेजी जिसमे कि शिववर्मा के मारडालने का सँदेशा लिखाथा मन्त्री के चलेजाने के सात दिन पीछे वह रानी स्त्री वेषधारी किसी पुरुषके साथ भागी चली जा रहीथी वह राजाके आदमियों को मिली और वह उसे पकड़लाये राजाने यह देख सुनकर बड़ापश्चात्ताप किया और कहा कि देखो मैने निष्कारण ऐसा बड़ा बुद्धिमान् मंत्री नाहक मरवाडाला इसी बीच में शिववर्मा और राजाका हलकारा राजा भोगवर्म्मा के यहां पहुँचे राजाने उस चिट्ठीको पढ़कर शिववर्मा से कहा कि तुम्हारे मारने का हुक्म आया है यह सुनकर शिववर्मा बोला कि आप मुझे मरवाडालिये नही तो मैं खुद मरजाऊंगा तब राजा बड़े आश्चर्य्यपूर्व्वक शिववर्म्मा से बोला कि तुम्हें हमारी कसम है तुम सत्य २ बताओ कि इसका क्या कारणहै मन्त्री ने कहा कि हे

रक्खा और उसे अपना राज्य देकर, राजदीपकर्णि वनको चला गया. तब सातवाहन चक्रवर्ती राजाहुआ १०६ ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेदशम प्रदीप ॥ १० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकादशः प्रदीपः ॥ ११ ॥

लज्जितस्यभवेद्विद्या प्राप्तिर्झटितिरुत्तमा ॥
सद्योविद्यांसमापन्नोलज्जितःसातवाहनः ॥ ११ ॥

(अर्थ) लज्जितहुए को विद्याकी उत्तम प्राप्ति शीघ्रही होजाती है जैसे स्त्री करके (मोदकैस्ताडय) ऐसे कहे राजा (सातवाहन ने) उसपर लड्डू फेंके तो तिस स्त्री ने (माउदकैस्ताडय) ऐसी संधि कहके राजाको लज्जितकिया तो तिसनें शीघ्र सब व्याकरण विद्या पढ़ी ॥ ११ ॥

इसप्रकार काणभूति के पूछने से बीच में इस कथाको कहकर वह गुणाढ्य फिर अपनी कथाको कहनेलगा एक समय राजा सातवाहन वसन्त के उत्सव मे देवीजी के उस बग़ीचे मे नन्दन वनमें इन्द्रके समान गया नन्दनवन मे इन्द्रके समान उसबग़ीचेमे विचरताहुआ राजा जलक्रीड़ा करने के लिये स्त्रियोंसमेत बावड़ी में उतरा और वखेड़ी मे स्त्रियों पर छीटें डालनेलगा हाथीपर हथिनियों के समान वह स्त्रियाँ भी उसपर जलडालनेलगीं स्त्रियों के नेत्रों का अंजन छुटगया और जलके पड़ने से वस्त्र अंगोंमें ऐसे चिपटगये कि सब उनके अङ्ग साफ २ दिखाई देनेलगे इससे वह स्त्रियां राजाके मनको हरनेलगीं वायुके समान उसराजाने तिलकरूपी पत्रोंसे रहित और गिरेहुए आभूषणरूप पुष्पोंवाली लताओं के समान सब रानियां करदीं ११२ इसके उपरान्त एक उनमें से

राजा ! जिस राज्यमें मैं माराजाऊंगा उसराज्य में बारह वर्षतक पानी नही वरसेगा यह सुनकर भोगवर्म्मा ने अपने मन्त्रियों के साथ सलाह की कि वह दुष्ट राजा हमारा राज्य नष्ट किया चाहता है क्या उसके राज्य में छिपकर मारनेवाले न थे इससे इस मन्त्री को मारना न चाहिये यह सलाह करके भोगवर्म्मा ने शिववर्म्मा को रक्षकों के साथ अपने देशसे उसी समय भेज दिया इसप्रकार वह मन्त्री अपनी बुद्धिके वल से लौट आया और उसका कलंक भी छूटगया (क्योंकि धर्म्म मिथ्या नहीं होता) ७६ इस से हे वररुचि इसीप्रकार से तुम्हारा भी कलंक छूट जायगा तुम हमारे घरमें रहाकरो कुछ दिनमें तुम्हारे बिना भी इस राजाको पश्चात्ताप होगा शकटाल के ऐसे वचन सुनकर मैं उसके यहां रहकर समयकी बाट देखताहुआ दिन बितानेलगा ७८ इसके उपरान्त ?े काणभूत!योगसे वनेहुए राजानन्दका हिरण्यगुप्त नाम पुत्र शिकार खेलने को गया घोड़ेके वेग से बहुत दूर निकलजाने पर उस अकेले राजपुत्रको वनहीमें सायंकाल होगया तव रात्रि के व्यतीत करने को वह राजा का पुत्र किसी वृक्षपर चढ़गया उसी समयउसवृक्षपर किसी सिंहका भगायाहुआ एक रीछभी चढआया उस रीछने अपने से डरेहुए राजपुत्र से मनुष्यभाषा में कहा कि तुम मतडरो तुम हमारे मित्रहो रीछके ऐसे वचनोंको सुनकर विश्वाससे जब राजाका पुत्र सोगया और रीछ जागतारहा तब नीचे खड़ेहुए सिंहनेकहा कि हे रीछ तू इसमनुष्यको नीचे डालदे मैं इसे लेकर चलाजाऊं यह सुनकर रीछनेकहा कि मैं मित्रके साथ विश्वासघात नहीं करूंगा ८४ इसके उपरान्त जब रीछके सोनेकी और राजाके पुत्रके जागनेकी बारीआई तब फिर सिंहने राजाके पुत्रसे

वड़े कोमल शरीरवाली रानी राजा से बोली कि हे नाथ! मोदकै रताडय (अर्थात् मेरे ऊपर जल मतडालो) यह सुनकर राजा ने वहुतसे लड्डू मँगवाये तव फिर वह रानी हँसकरबोली हे राजा! यहां जलक्रीड़ा में मोदकों का क्याकामहै मैंने तुमसे यह कहा था कि मेरे ऊपर जलमतडालो तुम मा शब्द और उदक शब्द की संधि भी नहीं जानतेहो और मौके को भी नहीं समझते तुम बड़े ही मूर्ख हो व्याकरण की जाननेवाली रानीनें जब इस प्रकारसे कहा और सब स्त्रियां हँसनेलगी तो राजा को बड़ी लज्जा हुई तब जलक्रीड़ा छोड़कर और अभिमानरहित होके राजा अपने अपमानसे दुःखितहोकर अपने मकानको चलागया ११६ फिर भोजनको भी परित्याग करके चिन्ता से महाव्याकुल राजा चित्र में लिखीहुई तसवीर के समान पूछने से भी कुछ नही बोला तव वह राजा या तो पण्डित हूंगा या मरजाऊंगा ऐसा निश्चय करके पलँग पर पड़े २ महाक्लेशयुक्त होने लगा एकाएकी राजा की ऐसी हालत देखकर लोगों को वड़ा सन्देह हुआ यह खवर धीरे २ मुझे और शर्वशर्म्मा को भी मिली उससमय दिन थोड़ा रहाथा और राजा भी सावधान न था यह विचारकर हम लोगोंने राजहंसनाम राजाके सेवकको बुलाकर राजाका हाल पूछा तब वह बोला कि मैंने ऐसा व्याकुल राजाको कभीनही देखा जैसा कि इससमय होरहाहै और सम्पूर्ण रानी यह कहतीहै कि विष्णुशक्तिकी कन्या ने राजा को कुछ कहकर व्याकुल कियाहै उसके यह वचन सुनकर हम दोनो सन्देह से शोचनेलगे कि जो कोई शारीरिक रोग होता तो वैद्यों को भेजते और मानसी रोग राजाको हो नही सक्ता क्योंकि इस राजा का कोई शत्रु नहीं है और इसकी सब प्रजा इससे अत्यन्त

स्नेह करतीहै तो किस सबबसे एकाएकी इसको ऐसा खेद उत्पन्न हुआहै इसप्रकार शोचनेसे बुद्धिमान् शर्वशर्म्मा बोला कि मैं राजा के दुःखकाकारण समझगया वह अपनी मूर्खताके दुःखसे व्याकुल होरहा है मैं पहिलेही से उसके चित्तको जानता हूं कि वह सदैव अपने को मूर्ख समझकर पण्डित होने की इच्छा किया करता है और मूर्खताहीके कारण रानीने भी इसे डाटाहै यह मैंने सुनाहै इस प्रकार विचार करके उसरात्रि के व्यतीत होजाने पर प्रातःकाल हम दोनों राजाके पास पहुंचे वहां यद्यपि कोई नही जानेपाताथा तथापि मैं चलागया और मेरे पीछे २ शर्वशर्म्मा भी चलागया १३४ वहां राजा के निकट बैठकर मैंने कहा कि आज आप विना कारण के उदासीन क्यों हैं यह सुनकर भी राजा कुछ नही बोला तब शर्वशर्म्मा ने यह अद्भुत वाक्यकहा कि हे स्वामी! मैं आपसे पहले कहचुकाहूं कि मैंने स्वप्नमाणवक नाम एक प्रयोग कहीं से पायाहै आजरात्रिको मैंने वह प्रयोग किया था उससे मुझे स्वप्न में यह दिखाई पड़ा कि एक कमल का फूल आकाश से गिरा उसे किसी दिव्य बालक ने प्रकाशित किया तब उसमें से एक श्वेत वस्त्रधारण किये स्त्री निकली वह स्त्री आप के मुख में चलीगई इतना देखकर मेरी निद्राखुलगई मुझे मालूमहोता है कि वह स्त्री साक्षात् सरस्वतीथी जो आप के मुखमें चलीगई १४० इस प्रकार स्वप्नको सुनकर राजा मुझसे बोला कि यह यत्नपूर्व्वक सिखानें से मनुष्य कितने दिनों में पंडित होसक्ताहै मुझे पाण्डित्यके विना यह राज्यलक्ष्मी अच्छी नहीं मालूमहोती जैसे काठको आभूषण वैसेही मूर्ख को ऐश्वर्य्य है तब मैंने कहा हे राजा! सम्पूर्ण विद्याओं का मुखरूपी व्याकरण सब मनुष्यों को बारहवर्षमें आताहै आपको

से डरेहुए राजाने अपनी कन्याका विवाह देवदत्तसे करदिया देव-देत्त भी उस अपनी प्रियाको पाकर अपने श्वशुर के राज्यका अधिकारी हुआ क्योंकि उसके और कोई सन्तान न थी समयपाकर राजा सुशर्मा देवदत्त के पुत्र महीधर नाम अपने दौहितेको राज्य देकर वनको चलागया पुत्र के ऐश्वर्य को देखकर कृतार्थ होने वाला देवदत्त भी राज्यकन्या समेत वनको चलागया और वनमे शिवजी का आराधन करके इस शरीर को त्याग कर श्रीशिवजी की कृपा से उन्हींका गण होगया १०५ प्रियाके दांतों से फेंकेगये पुष्पोंके इशारे को वह नही समझाथा इसीसे इसका नाम पुष्पदंत हुआ और इसकी स्त्री जया नाम पार्वतीजीकी दासीहुई इसप्रकार मैंने पुष्पदन्त के नाम का कारण कहा अब मैं अपने नाम का कारण कहता हूं उसको सुनो वह गोविन्ददत्त नाम ब्राह्मण जिसका कि पुत्र देवदत्त था उसी के पुत्रों में से एक सोमदत्त नाम मैं भी था और जिस कारण से देवदत्त चलागया था उसी कारण से मैं भी घर मे से निकल करहिमालय पर्वत पर बहुतसी मालाओं को पहिनाकर शिवजी महाराज का पूजन करके तप करने लगा तब प्रसन्नहोकर प्रकट हुए महादेव जी मुझ से बोले कि वरमागो तब मैंने अन्य सब भोगों को छोड़कर आपका गण होजाऊं यही वर मांगा यही सुनकर श्री शिवजी बोले कि बड़ी कठिन पृथ्वी के उत्पन्नहुए पुष्पों की माला से जो तुमने मेरा पूजन किया है इसलिये तुम माल्यवान् नाम हमारे गण होगे इसके उपरान्त मनुष्यके शरीरको छोड़कर मैं शीघ्रही शिवजीका गण होगया इस प्रकार यह श्रीमहादेवजी ने मेरा माल्यवान् नाम रक्खाहै हे काणभूति वही मैं पार्व्वती जी के शापसे फिर मनुष्य हुआहूं तो अब

छः वर्ष में ही सिखादूंगा यह सुनकर शर्वशर्मा ने ईर्षा से कहा कि सुखकरनेवाला मनुष्य इतना श्रम कैसे करसक्ताहै हे राजा! मैं आप को छैही महीने में व्याकरण सिखासक्ताहूं यह असम्भव वचन सुनकर मैंने क्रोधसे कहा कि जो तुम छःमहीने में राजाको व्याकरण सिखादो तो मैं संस्कृत प्राकृत और अपने देशकी बोली यह तीनों भाषा जिनको कि मनुष्य बोलसक्ते हैं बोलना छोड़दूं तब शर्वशर्माने कहा कि जो छःमहीने में इसे व्याकरण न पढ़ादूं तो बारहवर्षतक तुम्हारी खड़ाऊं अपने शिरपर रक्खूं १४६ यह कहकर उसके चले आने पर मैं भी अपने घरको चलाआया और राजा भी अपना दोनों तरफ़से मतलब समझकर सावधानहोगया शर्वशर्मा ने उस अपनी प्रतिज्ञा को दुस्तर समझकर पश्चात्ताप युक्तहो के अपनी स्त्री से सब वृत्तान्तकहा तब वह बोली कि हे स्वामी! ऐसे संकटके समय मे स्वामिकुमार के सिवाय और कोई उपाय नहीं है उसके वचनको ठीक समझकर शर्वशर्म्मा प्रातःकाल भोजन किये विनाही घर से चलागया फिर दूत के मुखसे शर्वशर्म्मा के जाने के वृत्तान्त को सुनकर मैंने राजा से भी जाकर उसके स्वामिकुमारके यहां जानेका वृत्तान्त कहा कि देखो क्या होताहै १५४ इसके उपरान्त सिंहगुप्त नाम किसी राजपुत्रने राजासे कहा कि हे राजा! उस समय आपको दुःखी देखकर मुझे अत्यन्त खेदहुआथा तब मैंने आपके कल्याण के लिये नगरके बाहरजाकर चंडिका भगवती के आगे अपना शिरकाटकर चढ़ाना चाहा उससमय यह आकाशवाणी हुई कि शिरमतकाटो तुम्हारे राजाकी इच्छा पूर्णहोगी इस से मैं जानताहूं कि आपका मनोरथ सिद्धहोगा यह कहकर राजा

पुष्पदन्त की कही हुई कथा मुझ से कहो जिससे कि हमारा और तुम्हारा दोनों का शाप छूटे ॥ ११३ ॥

इति श्री दृष्टान्त प्र० च० भा० ११ प्रदीप. ॥

अथ दृष्टान्त प्र० च० भागे द्वादशप्रदीपः ॥

स्वेच्छाऽगतस्यापरीक्षाऽस्वीकारेस्यान्महतक्षतिः ॥ पिशाचीयकथांत्यक्त्वा राजासीदुःखितो यथा ॥ १२ ॥

(अर्थ)-निज इश्वरेच्छासे जो पदार्थ आप प्राप्तहो फिर उसके बिना विचार त्यागने अर्थात् लौटाने से महाभारी हानि तथा दुःख होता है जैसे पिशाचभाषा से बनी रुधिर से लिखी कथा को बिन विचारकर ही राजा ने उलटी भेजदी तो तिसे पश्चात्ताप हुआ इस पर दृष्टान्त—जैसे ॥

इस प्रकार गुणाढ्य के कहने से काणभूति ने वह कथा अपनी भाषा में कही और गुणाढ्य भी उसी पिशाचीभाषा में उसी कथा को सात लाख श्लोकों में सात वर्षों में पूर्ण किया इस कथा को विद्याधरों के लेजाने के डरसे वनमें स्याही न मिलने के कारण गुणाढ्य ने अपने रुधिर से यह कथा लिखी उस दिव्य कथा के सुनने के लिये आयेहुए सिद्ध और विद्याधरोकी ऐसी भीड़ इकट्ठी होगई मानों आकाश मे शामयाना ही होगया है गुणाढ्य की बनाई हुई उसकथा को देखकर काणभूति अपने शाप से छूटकर अपनी सद्गति को प्राप्त होगया और जो २ पिशाच वहां उस दिव्य कथा को सुनरहे थे वह भी स्वर्ग को प्राप्तहुआ ६ इसके उपरान्त भगवती ने मुझ से यह बातभी कहीथी कि इस कथाको जब तुम पृथ्वी मे प्रकाशित करोगे तब तुम्हारे शाप का अन्त होगा सो मैं

निराहार और मौनव्रतसाधकर स्वामिकुमार के निकट पहुँचा वहां उसने अपने शरीरको न समझकर ऐसा तपकिया कि जिस से प्रसन्नहोकर भगवान् स्वामिकुमारने उसका मनोरथ पूर्णकिया १६० यह बात सिंहगुप्त के भेजेहुए दूतोंने आकर कही उनदूतों के वचन सुनकर मुझे खेदहुआ राजाको आनन्दहुआ और शर्वशर्म्मा ने आकर स्वामिकुमार की कृपा से केवल ध्यान करने ही से प्राप्तहुई सम्पूर्ण विद्या राजा को देदीं और उसी समय राजाको सम्पूर्ण विद्याओं का ज्ञान होगया (ईश्वरकी कृपा से क्या नहीं होताहै) इसके उपरान्त राजाके पंडितहोने की खबरको सुनकर राज्य भरमें बड़ा उत्सव होनेलगा उसीसमय नवीन लगाईगई और वायु से हिलतीहुई पताका मानों नगर भरे में नृत्यकररहीथी राजाने शर्व-शर्म्मा को अपना गुरु समझकर बड़े२ रत्नों से उनका पूजन किया और नर्मदानदी के तीर पर बसेहुए भरुकच्छ नाम देश का राज्य उसे देदिया जिससिंहगुप्त नाम राजपुत्र ने दूतों के मुख से पहले स्वामिकुमार के वर देनेकी खबर सुनाई थी उसे धनदेकर अपने समान करलिया और विष्णुशक्ति नाम राजा की कन्या जिसरानी ने विद्या के लिये उसे उत्साह दिलाया था उसे सब रानियों में पटरानी बनाया॥

इसके उपरान्त मौनहोकर राजा के निकट गया वहां किसी ब्राह्मण ने अपना बनाया हुआ एक श्लोक पढा और राजा ने आपही उस श्लोक की व्याख्या संस्कृत में की यह देखकर वहां के सम्पूर्ण लोग बहुत प्रसन्नहुए फिर राजा ने शर्वशर्मा से पूछा कि कहो तुम्हारे ऊपर स्वामिकुमारने किस प्रकार से कृपाकी यह सुनकर शर्वशर्म्मा बोला कि हे राजा मैं यहां से

इस कथा को किसके पासभेजूं यह शोचकर गुणाढ्य ने अपने साथ आयेहुए गुणदेव और नन्दिदेव नाम शिष्यों से कहा कि इस काव्य के देने योग्य केवल राजा सातवाहनहै वह बड़ा रसिक है जैसे वायु पुष्पों की सुगन्धि को इधर उधर लेजाती है उसी प्रकार वह राजा भी इस काव्यको पृथ्वी में प्रकाशित करेगा ऐसा विचार करके गुणाढ्य तो वहां से आकर देवजी के बगीचेमें ठहरे और अपने शिष्यों को पुस्तक लेकर राजाके पास भेजा वह शिष्य इस कथा को लेकर राजाके यहां गये और बोले कि हे राजा ! यह गुणाढ्य का बनाया हुआ काव्यहै इसको आप लीजिये राजा उस पिशाची भाषा को सुनकर और उन शिष्यों की आकृति पिशाचों की सी देखकर विद्या के अभिमान से तिरस्कारपूर्वक बोला कि सातलाख श्लोकों की यह पिशाची भाषा का नीरस ग्रन्थ है और रुधिर से अक्षर लिखेहुए हैं इस पिशाचो की कथा को धिक्कार है १५ तब वह दोनों शिष्य उस पुस्तक को लेकर गुणाढ्य के पास चलेगये और राजा का सब वृत्तान्त वर्णन करते भये यह सुनकर गुणाढ्य को भी बड़ा खेदहुआ क्योंकि समझ-दारके अनादर से किसको खेद नहीं होता इसके उपरान्त गुणाढ्य ने अपने शिष्यों को लेकर और वहां से कुछ दूरजाकर किसी पहाड़ी के बड़े उत्तम स्थान पर एक अग्नि का कुंड बनाया और उस कुंड में अग्नि जलाकर गुणाढ्य पशु और पक्षियों को सुना २ कर उस पुस्तक का एक २ पत्रा अग्निमें हवन करनेलगा सम्पूर्ण ग्रन्थ को हवन करदिया परन्तु अपने शिष्यों के लिये एकलाख श्लोकों का ग्रन्थ नरवाहनदत्त का चरित्र बचा रक्खा क्योंकि वह शिष्यों को बहुत प्यारा था जिस समय गुणाढ्य उस कथा को

निराहार और मौन होकर चला तो कुछ थोड़ाही मार्ग बाकी रहाथा कि मैं मारे क्लेश के मूर्च्छा खाकर पृथ्वीपर गिरपड़ा तब शक्ति को लियेहुए किसी पुरुष ने मुझसे आकरकहा, कि हे पुत्र! उठ तेरा सब मनोरथ पूराहोगा उसके अमृतरूपी वचनों से सींचा हुआ मैं उसीसमय उठबैठा और मेरी भूख प्यास सब चलीगई इसके उपरान्त स्वामिकुमार के मन्दिर में पहुँचकर स्नान करके मैं मन्दिर के भीतर गया तब साक्षात् स्वामिकुमार ने मुझे दर्शन दिये और मेरे मुख में साक्षात् सरस्वती का प्रवेशहुआ इसके उपरान्त भगवान् स्वामिकुमारजी छहों मुखों से सिद्धोवर्ण समाम्नायः यह सूत्र बोले, १०, यह सुनकर मैंने भी चपलतासे इसके आगेका सूत्रबोल दिया यह सुनकर स्वामिकुमारने कहा कि जो तुम बीचमें न बोलते तो यह शास्त्र पाणिनीय शास्त्र से भी बढ़कर होता अब छोटा होने के कारण कातंत्र नाम होगा और कलाप नाम मेरे वाहनके नाम से इसका कालापक भी नाम होगा इसप्रकार छोटेसे व्याकरणको कहकर फिर बोले कि तुहारा राजा पूर्व्वजन्म में भरद्वाज मुनिका शिष्य कृष्णनाम मुनिथा एकसमय किसी मुनिकी कन्याको देख कर इसे और उसे दोनों को कामकी बाधाहुई तब ऋषियों ने इन दोनों को शाप देदिया वह ऋषि तो तुम्हारा राजा हुआहै और ऋषिकी कन्या राजाकी रानीहुई है इसप्रकारसे तुम्हारा राजा मुनि का अवतारहै तुम्हारे देखनेहीसे उसे सम्पूर्ण विद्या प्राप्तहोजायँगी (महात्मा लोगोंके मनोरथ जन्मान्तर में इकट्ठे कियेहुए उत्तम संस्कारों के द्वारा विना परिश्रमही सिद्ध होजाते हैं) यह कहकर भगवान् स्वामिकुमारके अन्तर्द्धान होजानेपर मैं बाहर चलाआया तब वहांके पंडोंने मुझे थोड़ेसे चावलदिये रास्तेमें रोज खानेपर भी

पढ़ २ कर हवनकरते थे उस समय अपने २ चारा घासआदि को छोड़ २ कर भैंसा शूकर तथा सारंग आदिक पशु पक्षी उनके निकट आकर उनको घेर कर निश्चल बैठते थे और उस कथाको सुन २ कर आंसू बहाते थे २२ इसी बीच में राजा सातवाहन कुछ बीमारहुआ वैद्यों ने देखकर कहा कि राजा को सूखे मांसखाने से यह रोग हुआ है तब रसोईदार बुलाये गये तब वह बोले कि महाराज हमको बहेलिये ऐसाही मांस रोज देते हैं इसके उपरान्त जब बहेलियों से पूछागया तो उन्हो ने कहा कि यहां से थोड़ीदूर एकपर्वत पर कोई ब्राह्मण पढ़ २ कर एक २ पुस्तक का पत्रा अग्नि में हवन करताहै उसके सुनने के लिये सब जङ्गल के पशु पक्षी अपने २ चारो को भी छोड़कर वहां जाते हैं और वहां से हटतेनहीं हैं इसी से भूखके मारे उनके मांस सूखरहे हैं बहेलियों के ऐसे वचन सुनकर उन्हीं के साथ राजा बड़े आश्चर्य्य में भराहुआ गुणाढ्य के पास पहुंचा और वनके वासकरनेसे बड़ी२ जटावाले गुणाढ्य के दर्शन किये वह जटायें नहीं थी मानो बुझने से कुछ बची हुई उसके शापरूपी अग्नि का यह धुआं सब ओर से फैला था २८ इसके उपरान्त रोतेहुए पशु पक्षियो के मध्य में बैठेहुए गुणाढ्य को पहिंचानकर उनको राजा ने प्रणाम किया और सब वृत्तान्त पूंछा २९ तब गुणाढ्य ने अपने और पुष्पदन्त के शाप की सम्पूर्ण कथा जो कि इस कथा के उत्पन्नहोने की कारण थी वर्णन की फिर गुणाढ्य को महादेवजी के गणका अवतार समझ कर राजा पैरोंपर गिरपड़ा और महादेव जी के मुखसे निकलीहुई इस दिव्यकथा को मांगनेलगा उस समय गुणाढ्य बोले कि छः लाख श्लोकों की छः कथा तो हमने हवन करदीं अब एक लाख

वह चावल ज्योंके त्यों बनेरहे २१ इसप्रकार अपने वृत्तान्तको कह कर शर्वशर्म्मा के निवृत्त होजाने पर राजा प्रसन्न होकर स्नान के लिये उठा तब मौन होने के कारण सम्पूर्ण व्यवहारोंसे रहित होकर मैंने नहीं इच्छा करतेहुए भी राजासे केवल प्रणाममात्रकेही द्वारा पूंछकर दो शिष्यों समेत नगरके बाहर गमन किया और तप करने का निश्चय करके विन्ध्यवासिनी के दर्शनोंको आया स्वप्नमें भगवती की आज्ञासे तुम्हारे देखने के लिये इस विन्ध्याचल के वन में आया तब किसी भीलके कहने से यात्रियों के समूहके साथ यहां आकर मैंने बहुत से यह पिशाच देखे दूरसे इन लोगों की परस्पर बातोंको सुनकर मैंने भी पिशाच भाषाको जानकर सुना कि तुम उज्जयिनीको गयेहो इससे अबतक तुम्हारे आने की बाट देखता रहा तुम्हें देखकर और पिशाची भाषा में तुम्हारा शिष्टाचार करके मुझे अपने पूर्वजन्म का स्मरण आगया यह मेरा इस जन्म का वृत्तान्तहै गुणाढ्यके ऐसे वचन सुनकर काणभूत बोला कि आज रात्रिको मैंने जिस प्रकार तुम्हारे आने का वृत्तान्त जाना वह सुनो ३० भूतिवर्म्मा नाम दिव्यदृष्टिवाला एकराक्षस मेरा मित्र है उससे मिलने को मैं उज्जयनी गया था वहां मैंने इससे पूँछा कि मेरे शापका कब अन्त होगा तब उसने कहा कि दिनको हमारी सामर्थ्य नहीं है रात्रिको हम तुम्हें बतावेंगे रात्रि होनेपर भूतों को प्रसन्न देखकर मैंने उससे पूँछा कि रात्रिमे भूतों के अधिक पराक्रमी और आनन्द होनेका क्या कारणहै तब भूतिवर्म्मा राक्षसबोला कि पहले ब्रह्माजी से जैसा शिवजी ने कहाहै वह मैं तुमसे कहता हूं दिन में सूर्य्य के तेजसे ध्वस्तहुए यक्ष-राक्षस और पिशाचों का प्रभाव नहीं होता इससे यह रात्रिमें प्रसन्न रहते हैं और बली होते

श्लोक की एक कथा बाकी है इसे लेलो और यह दोनों हमारे शिष्य इस कथा को तुम्हें समझावेंगे इस प्रकार राजासे सब वृत्तान्त कहकर और योग से अपने शरीर को त्यागकर वह शाप से छूटे हुए गुणाढ्य अपनी पदवी पर पहुंचे इसके उपरान्त गुणाढ्य की दीहुई बृहत्कथा नाम नरवाहनदत्त की एक लाख श्लोकों की कथाको लेकर राजा अपने नगरको चलाआया और गुणदेव तथा नन्दिदेव नाम गुणाढ्य के शिष्यों को पृथ्वी सुवर्ण वाहन वस्त्र आदि अनेक पदार्थ देताभया फिर उन्हीं दोनो शिष्यों के साथ राजा सातवाहन उस कथा को प्रकाशित करने के लिये इसकथा का कथापीठ भी पिशाचीभाषा में बनाता भया देवताओं की भी कथाओं की भुलाने वाली विचित्र रसों से भरीहुई यह दिव्य कथा सम्पूर्ण सुप्रतिष्ठितनाम नगर में प्रसिद्ध होकर तीनों लोको में फैलगई ॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रयोदश प्रदीप ॥ १३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुर्दशःप्रदीप ॥ १४ ॥

अभिलाषोरभिलापाऽश्रवणाद्दुःखस्प्रजायतेपुंसाम् । कामुकिवेश्या शापाद्वियोगमाप्तो नृपो राज्ञ्याः ॥ १४ ॥

(अर्थ) अभिलापवाले की अभिलाषा न सुनने से जनों को अत्यन्त दुःख होजाता है। जैसे—कामवती तिलोत्तमा अप्सराकर के शाप होने से राजा (सहस्रानीक) निज रानीसे चौदह वर्ष के महाभारी वियोग को प्राप्त हुआ ॥ १४ ॥

वत्सनाम एक बड़ा सुन्दर देश है जिसे कि ब्रह्मा ने स्वर्ग की नकलही करके मानों इस पृथ्वी पर बनाया है उस देश

हैं जहां देवता और ब्राह्मणोंका पूजन होता है और जहां विधिपूर्व्वक भोजन नही होताहै वहां इनका जोर होताहै–जहां मांस भक्षण नही किया जाता है और साधूलोग रहते हैं वहां यह नही जाते पवित्र शूर और जागतेहुए मनुष्योंको यह कभी पीड़ा नहीं देते यह कहकर भूतिवर्म्मा फिर बोला कि जाओ तुम्हारे शापके छूटने का कारण गुणाढ्य आगया यह सुनकर मैं यहां आया और तुम्हारे दर्शन मुझे मिले अब मैं तुमसे पुष्पदन्तकी कथा कहताहूं परन्तु एकबात सुनने की मुझे और इच्छा है कि—

इतिश्री दृष्टांतप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकादश प्रदीप ॥ ११ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्वादशप्रदीपः ॥ १२ ॥

पुष्पदन्तोदन्तपुष्पत्रोटनंज्ञातवान्नहि ॥ पुष्पदन्तइतिख्यातोमाल्यमान्सुस्रजर्चनात् ११ ॥

(अर्थ) पुष्पदंत गन्धर्व ने पूर्व्वजन्म में अपने पर आसक्तभई राजकन्या के दांतों से पुष्प तोड़ने के संकेत को नहीं समझा इससे वह (पुष्पदंत) ऐसे विख्यातहुआ और माल्यवान् ने श्रेष्ठ मालाओं से शिवजी की पूजा की इस से वह (माल्यवान्) गण भया इनकी कथा काणभूति ने इनसे पूछी तब माल्यवान् ने कही है ११॥ जैसे काणभूति पूछताहै कि, किस कारण से तुम्हारा और पुष्पदन्त का माल्यवान् और पुष्पदन्त नाम हुआ सो कहो ४० काणभूति के यह वचन सुनकर गुणाढ्य बोला कि गंगाजी के तटपर बहु सुवर्णक नाम गांवहै उसमे गोविन्ददत्त नाम एक बहुश्रुत ब्राह्मण रहताथा उसकी बड़ी पतिव्रता अग्निदत्ता नाम स्त्री थी समय पाकर उस ब्राह्मण के पांच पुत्रहुये वह पांचो महा मूर्ख बड़े स्वरूपवान् और महाअभिमानी थे एक समय गोविन्ददत्त

के मध्य में कौशाम्बी नाम बड़ी उत्तम नगरी है वह नगरी नहीं है मानो पृथ्वी रूपी कमल की कर्णिका (भूमका) है उस नगरी में पाण्डवों के वंश में शतानीक नाम एक राजा हुआ जिसका कि पिता जनमेजय पितामह परीक्षित प्रपितामह अभिमन्यु और आदिपुरुष श्रीशिवजी के साथमें भी युद्ध करनेवाला अर्जुन था उस राजा शतानीक की रानीका नाम विष्णुमती था यद्यपि पृथ्वी से राजा को अनेक २ प्रकार के रत्न प्राप्त होते थे तथापि वह अपनी रानीके किसी पुत्रके न होनेसे अप्रसन्न रहताथा एक समय राजा शिकार खेलने गया था वहां उसे शांडिल्यमुनि ने राजा के साथ आकर मन्त्रसे पवित्र की हुई खीर रानी को खिलाई तब राजा के सहस्रानीक नाम पुत्र उत्पन्न हुआ जैसे विनयसे गुण की शोभा होतीहै उसी प्रकार उस पुत्रसे राजा की बहुत शोभा हुई थोड़ेही दिनों में राजाने सहस्रानीक को युवराज बनाकर उसे सम्पूर्ण पृथ्वीका भार सौंप दिया और आप राज्यके सुख भोगने लगा १२ इस के उपरान्त किसी समय देवता और दैत्यों के युद्ध में इन्द्रने सहायता के लिये राजाके बुलाने को मातलि सारथी को रथ लेकर भेजा तब राजा शतानीक युगन्धर नाम मंत्री और सुप्रतीक नाम मुख्य सेनापति को अपना राज्य तथा पुत्र सौंपकर मातलि के साथ दैत्योंके मारने को स्वर्ग को चलागया वहां जाकर राजा ने इन्द्रके देखतेही देखते यमदंष्ट्रा आदिक अनेक दैत्यों को मारा और आपभी युद्धमें मारागया इस मरेहुए राजा के शरीर को मातलि उसके पुत्रके पास लेआया तब राजा की रानी उसके साथ सती होगई और उसका पुत्र सहस्रानीक राजा हुआ सहस्रानीक के सिंहासन पर बैठतेही सब उसके शत्रु राजालोग दबगये इसके

के यहां एक वैश्वानर नाम ब्राह्मण अतिथि होकर आया उस समय गोविन्ददत्त घर मे नहीं था इस लिये उस ब्राह्मणने उसके पुत्रों को नमस्कार किया परन्तु उन मूर्खों ने उसको प्रणाम तो नही किया किन्तु हास्य करने लगे इससे वह अप्रसन्न और क्रोधित होकर जैसे कि जानेलगा वैसेही गोविन्ददत्त ने आकर उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त पूंछकर उसकी बड़ी विनती करी इतने पर भी वह ब्राह्मण क्रोध से बोला कि तेरे पुत्र बड़े मूर्ख और पतितहैं और इनके संपर्क से तू भी ऐसाही होगया है इस्से मैं तुम्हारे यहां भोजन नही करूंगा चाहै मुझे प्रायश्चित्त भी होजाय ४८ इसके उपरान्त गोविन्ददत्त ने शपथ खाकर कहा कि मैं इन दुष्टोंका कभी स्पर्शभी नहीं करताहूं और उसकी स्त्रीनेभी आकर इसी प्रकार से कहा तब वैश्वानर ने उसके घर में बड़ी कठिनता से भोजन किया यह देखकर उसका देवदत्त नाम एक पुत्र अपने पिता की अपने ऊपर ऐसी घृणा देखकर बड़ा दुःखी हुआ माता पिता से त्याग किये हुए का जीना ही व्यर्थ है ऐसा सोचकर वह तप करने को बदरिकाश्रम में चलागया ५२ फिर वहां देवदत्त बहुत दिनतक पत्ते खाकर बहुत कालतक धूम्रपान करके महादेवजीके प्रसन्न करने को तप करता रहा उसके बड़े कठिनतप से प्रसन्न होकर महादेवजीने दर्शन देकर कहा कि वर मांगो उसने यह वर मांगा कि मैं आपका दासहूं तब शिवजी बोले कि पहले विद्याओंको पढो और पृथ्वीमें सब आनन्दो को भोगो तब तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा ५५ इसके उपरान्त वह देवदत्त विद्या के निमित्त पाटलिपुत्र नगर मे जाकर वेदकुम्भनाम उपाध्यायका विधिपूर्वक सेवन करने लगा एकदिन उपाध्यायकी स्त्री काम से

उपरान्त इन्द्रने दैत्यों के जीतनेके लिये मातलि को रथसमेत भेज कर सहस्रानीकको बुलवाया स्वर्गमें जाकर नन्दनवनमें अपनी २ स्त्रियों के साथ विहार करते हुए देवताओं को देखकर राजा सहस्रानीक को अपने योग्य स्त्री के मिलने के लिये बड़ी चिन्ता हुई राजाके इस अभिप्राय को जानकर इन्द्र बोले कि हे राजा ! सन्देह मत करो तुम्हारा मनोरथ पूर्णहोगा २१ तुम्हारे समान स्त्री पृथ्वी में उत्पन्न होचुकी है उसका वृत्तान्त भी मैं तुम्हारे आगे वर्णन करताहू २२ एक समय ब्रह्मा से मिलने के लिये मैं ब्रह्मलोक को गयाथा वहां विधूमनाम एक वसुभी मेरे पीछे २ चलागयाथा हम लोग वहां बैठेही थे कि ब्रह्मा से मिलने को एक अलम्बुषा नाम अप्सरा आई वायु से हिलते हुए वस्त्रवाली उस अप्सराको देखकर ब्रह्माने मेरी ओर देखा तब मैंने ब्रह्मा का अभिप्राय समझकर उन दोनों को यह शाप दिया कि तुम दोनों मृत्युलोक मे उत्पन्न हो जाओ और वहां तुम दोनों स्त्री पुरुषहोगे सो हे राजा ! वह वसु तो चन्द्रवंश में तुम उत्पन्न हुएहो और वह अप्सरा अयोध्या में कृतवर्मानाम राजा की कन्या मृगावती नाम से उत्पन्नहुई है वही तुम्हारी स्त्री होगी इस प्रकार इन्द्रके वचनरूपी वायुसे स्नेहयुक्त राजा के हृदयमें कामरूपी अग्नि जलनेलगी इसके उपरान्त इन्द्रने राजा को आदरपूर्व्वक अपने रथपर बैठाल कर मातलि के साथ उसकी पुरी को भेजा चलते समय राजा से तिलोत्तमानाम वेश्या बोली कि हे राजा ! ज़रा ठहरजाओ मैं तुमसे कुछ कहूंगी राजा मृगावती के ध्यान में तू मेरे वचन को सुनकर चलागया तब तिलोत्तमाने लज्जित होकर उसे शापदिया कि जिसके ध्यानसे तू मेरे वचनको नहीं सुनताहै उसके साथ तेरा चौदह वर्षतक वियोग होगा २४

पीडित होकर देवदत्त से सम्भोग करने के लिये हठ करने लगी क्योंकि (स्त्रियोंकी चित्त की वृति बड़ी चंचल होती है इसकारण से उसदेशको छोड़कर कामदेवके विकारसे युक्त वह देवदत्त प्रतिष्ठान देशको चलाआया ५८ उस देशमें वृद्धस्त्रीवाले मन्त्रस्वामी नाम वृद्ध उपाध्याय से अच्छेप्रकार विद्या पढ़ने लगा और बड़ा पण्डित होगया विद्या पढ़ने के उपरान्त सुशर्म्मा नाम राजा की श्रीनाम कन्याने उसे देखा और उसने भी उस झरोखों में खड़ीहुई देखा वह कन्या न थी मानों विमानपर चढीहुई चन्द्रलोक की देवता थी कामदेवकी जंजीररूपीदृष्टि से परस्पर बँधेहुए वह दोनों वहां से हटने को नही समर्थ हुए तब राजाकी कन्याने अपनी एक उँगलीसे इशारा किया कि यहां आओ वह उँगली नही मानों मूर्ति धारण किये हुए कामदेवकी आज्ञाथी तब देवदत्त महलके भीतर होकर उसके निकटगया तब उस कन्याने दांतसे फूल उठाकर उस की तरफ़ फेंका राजकन्या के इस छिपे हुए इशारे को न जानकर देवदत्त उपाध्याय के घर में आकर पृथ्वी में लोटनेलगा और ताप से व्याकुलहोकर कुछ भी न कहसका ६६ बुद्धिमान् उपाध्यायने काम से हुए चिह्नोंको देखकर उससे युक्तिपूर्व्वक पूछा तो उस ने सब हाल कहदिया यह सुनकर उपाध्याय तो चतुरथा और वह उस इशारेको समझकर इससे बोला कि दांत से फूलको फेंककर उसने यह इशारा किया है कि पुष्पदन्तनाम देवमन्दिर में जाकर हमारी बाट देखना अभी तुम यहां से जाओ इसप्रकार इशारेका मतलब समझकर उसने शोचको त्याग दिया और वह देवमन्दिर में जाबैठा ७० फिर अष्टमीके बहानेसे राजकन्या भी अकेली देवमन्दिर के भीतर आई और देखा कि द्वारके पीछे अपना प्रिय खड़ा

मातलिने यह शाप सुनलियाथा प्रियाके ध्यानमें लगाहुआ राजा रथके द्वारा कौशाम्बी नगरी में पहुंचा ३५ इसके उपरान्त राजा ने इन्द्र से सुनाहुआ मृगावती का वृत्तान्त अपने युगन्धरादि मन्त्रियों को सुनाया और कृतवर्म्मा राजा से उस कलावती कन्या के मांगने को दूत भेजा कृतवर्म्मा ने दूत के मुख से यह वृत्तान्त सुनकर अपनी कलावती नाम रानी से सब हाल कहा तब कला: वती बोली कि हे राजा! सहस्रानीक को मृगावती अवश्य देनी चाहिये यही बात मुझसे किसी ब्राह्मण ने स्वप्न में कही है रानी के वचन सुनकर राजा ने प्रसन्न होकर मृगावती का अत्यन्त सुन्दर स्वरूप और नृत्यगीत आदि की चतुरता दूत को दिखाई ४० इस के उपरान्त सहस्रानीकके साथ अत्यन्त सुन्दर चन्द्रमा की किरण के समान रूपवान् अपनी मृगावती का विवाह करदिया परस्पर समान गुणवाले सहस्रानीक और मृगावती इन दोनों का समा- गमहुआ इसके उपरान्त थोड़ेही दिनों में राजा के मंत्रियों के पुत्र हुए युगन्धर के यौगन्धरायणनाम पुत्रहुआ सुप्रतीकके रुमण्वान् नाम पुत्रहुआ और राजा के मित्र के वसन्तक नाम पुत्र उत्पन्न हुआ फिर थोड़े दिनो के उपरान्त राजा की रानी मृगावती भी गर्भवतीहुई फिर गर्भवती रानी का इस बातपर मन चला कि रु धिरसे भरीहुई बावड़ी में स्नानकरूं रानी की इच्छा को पूर्ण करने के लिये धार्मिक राजाने लाख आदि के रससे बावड़ी भरवादी उस बावड़ी में स्नान करती हुई रानी को मांस के धोखे से गरुड़ के वंश में उत्पन्नहुआ कोई पक्षी उठालेगया पक्षी से हरीगई रानी को मानों ढूंढ़ने के लिये उसीसमय सहस्रानीकका धैर्य्य भी जाता रहा अर्थात् राजा को धीरज नहीं रहा प्रिया मे लगेहुए राजा के

है देवदत्तनेभी उसे देखकर जल्दीसे कण्ठमें लगालिया राजकन्या ने देवदत्त से पूछा कि उस गुप्त इशारेको तुमने कैसे जाना तब उस ने कहा कि मैं नहीं समझा था परन्तु हमारे उपाध्याय ने उसे समझलिया तब मुझे छोड़ दे तू मूर्ख है यह कहकर मन्त्र भेदके डर से वह कन्या वहांसे चलीआई और देवदत्त से एकान्तमें मिलकर चलीगई उस प्रियाका स्मरण करताहुआ वियोग की अग्नि से मरगया महादेवजी ने उसे मरा देखकर पंचशिख नाम गण को आज्ञादी कि तू जाकर इसका मनोरथ पूर्णकर ७९ तब पंचशिख ने उसे जिलाकर उससे कहा कि तुम स्त्रीकासा वेप बनाओ और पंचशिख ने अपना वृद्धब्राह्मणकासा वेप बनाया तब देवदत्त को अपने साथ मे लेकर सुशर्मा नाम राजा के यहां जाकर बोला कि हे राजा ! मेरा पुत्र कहीं चलागयाहै उसे ढूंढनेको मैं जाताहूं तुम मेरी वहूको अपने यहां रखलो यह सुनकर शापके डर से सुशर्म्मा ने स्त्री वेपधारी पुरुपको अपनी कन्या के महल में रक्खा ८० इसके उपरान्त पंचशिख नाम गण के चलेजानेपर देवदत्त स्त्री के वेपमें अपनी प्रियाके यहां रहते२ उसका बड़ा विश्वासपात्र होगया एक समय राजकन्या को बहुत उत्कण्ठित देखकर देवदत्त ने अपना स्वरूप प्रकट किया और उससे गान्धर्वविवाह करलिया फिर कुछ दिनके बाद राजकन्याके गर्भवती होनेपर स्मरणमात्रसे आयाहुआ शिवजीका गण इसे गुप्तरीति से लेगया और देवदत्त को अपने साथ में लेकर सुशर्मा राजाके घरगया और बोला कि हे राजा ! आज मेरा पुत्र आगया मेरी बहू मुझे देदो तब राजाने यह सुन कर कि वह रात्रिको कहीं भाग गई और ब्राह्मणके शापसे डरकर मन्त्रियों से यह कहा कि यह ब्राह्मण नहीं है मेरे ठगने के लिये

चित्तको भी मानों पक्षी हरलेगया जिससे कि रानी के जातेही राजा मूर्च्छित होकर गिरपड़ा ५० क्षणभरमें राजाकी मूर्च्छा जगने पर राजाके वृत्तान्त को अपने प्रभाव से जानकर मातलि स्वर्ग से इसके पास आया और उसने राजाको समझा कर तिलोत्तमा का चौदहवर्षका शाप सुनाया और यह कहकर स्वर्ग को चलागया हे प्रिये! आज उस पापिनी तिलोत्तमा का मनोरथ पूर्णहुआ यह कहकर राजा वारम्वार विलाप करनेलगा फिर शाप के वृत्तान्त को सुनकर मंत्रियोंने समझाया तब राजा फिर मिलने की आशा से किसीप्रकार सावधानहुआ इतने अन्तरमें वह पक्षी रानी मृगावती को लेकर उदयाचल पर गया और उसे जीती हुई जानकर वहीं छोड़कर उड़गया उस पक्षी के चलेजानेपर और पर्व्वत पर अकेली अपने को देखकर शोक और भयसे वह रानी अत्यन्त व्याकुलहुई फिर एक वस्त्र पहनेहुए रोतीहुई अकेली रानी को कोई बड़ाभारी अजगर सर्प निगलनेलगा तब उस अजगर को मारकर और उस रानी को उससे छुड़ाकर कोई दिव्य पुरुष चला गया ५८ इसके उपरान्त रानी मरने की इच्छासे किसी मतवाले हाथी के सामने आप चलीगई उसने भी दया से उसे छोड़ दिया यह बड़े आश्चर्य की बातहै कि पशु भी अपने संमुख आईहुई रानी को छोड़कर चलागया अथवा कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि (ईश्वर की इच्छा से क्या नहीं होसक्ता) इसके उपरान्त गर्भ के भारसे व्याकुल पर्व्वतपर से गिरतीहुई रानी अपने पतिका स्मरण करके चिल्लाकर रोनेलगी यह सुनकर कोई मुनिका बालक जोकि वहां फल मूल लेने के लिये आयाथा रानी के निकट आया वह रानी को देखकर और समझाकर दयासे जमदग्निजी के आश्रम

ोई देवता आयाहै क्योंकि ऐसी बातें बहुधा हुआ करती हैं देखो
ूर्वसमय में बड़ा तपस्वी दयालु दाता और धीर राजा शिवि संपूर्ण
ाणियों का रक्षा करनेवाला हुआ था उसको ठगने के लिये इन्द्र
ाज के स्वरूप को धारणकरके कबूतर के रूप को धारण किये
र्म के पीछे दौड़ा वह कबूतर मारे डरके राजा शिविकी गोदी में
ापड़ा तब उस बाजने मनुष्यों कीसी वाणी में राजा शिवि से
कहा कि हे राजा ! मैं बहुत भूखाहूं तुम इस मेरे भक्ष्य कबूतर को
छोड़दो नहीं तो मैं मरजाऊंगा तो तुम्हें क्या धर्म होगा ६१ तब
ाजा शिवि ने कहा कि यह हमारी शरण मे आयाहै हम इस को
नहीं त्यागेंगे इसके समान अन्य किसी जीव का मांस तुम लेलो
बाज ने कहा अगर ऐसाही आप कहते है तो अपनाही मांस
मुझे दो राजाने प्रसन्न होकर यह बात स्वीकार करली फिर जैसे २
राजा अपने मांस को तराजू में उसके बराबर करने को काट काट
बढातानाताथा वैसेही वैसे वह कबूतर अधिक भारी होता चला
जाताथा तब राजाने अपना सम्पूर्ण शरीर तराजूपर रखदिया उस
समय राजा धन्य है २ यह आकाशवाणी हुई फिर इन्द्र और धर्म
ने अपना २ स्वरूप धारण करके राजाकी बड़ी स्तुतिपूर्वक उसका
शरीर ज्योंका त्यों करदिया ६६ इसके उपरान्त और भी बहुत से
राजाको वरदानदेकर इन्द्र और धर्म दोनो अन्तर्द्धान होगये इसी
प्रकार मेरीभी परीक्षा करनेको यह कोई देवता आयाहै मन्त्रियों से
यह बात कहकर डरताहुआ राजा ब्राह्मण से बोला कि क्षमा की-
जिये आज रात्रिको आपकी बहू रात्रि दिन रक्षा करनेपर भी कहीं
चलीगई तब वह ब्राह्मण दया करके बोला कि जो मेरी बहू कहीं
चलीगई है तो अपनी कन्या मेरे पुत्रको देदे यह सुनकर शाप

को ले आया ६३ वहां रानी ने अपने तेज से सूर्य्यके समान वि-
राजमान् जमदग्निजी के दर्शन किये और प्रणाम किया तव पैरों
पर गिरीहुई रानीको देखकर दिव्यदृष्टिवाले जमदग्निजी वियोग
से महाव्याकुल होनेवाली रानी से वोले कि हे पुत्री! यहां तेरे
वंशका चलानेवाला पुत्र उत्पन्न होगा और तेरापति भी तुझे मि-
लेगा शोक मतकरो मुनिजीके यह वचन सुनकर पति के मिलने
की आशा से रानी वहीं रहनेलगी इसके पीछे कुछ दिनोंमें रानी
के एक वड़ा सुन्दर पुत्र उत्पन्नहुआ उस समय आकाश से मृगा-
वती के चित्तकी प्रसन्न करनेवाली यह आकाशवाणी हुई कि यह
उदयननाम वड़ा यशस्वी राजा होगा और इसका पुत्र सम्पूर्ण
विद्याधरों का राजा होगा ७० धीरे २ यह उदयननाम वालक
जमदग्निजी के आश्रम में अपने गुणो समेत वढ़नेलगा जमद-
ग्निजी ने उसको क्षत्रियोंके योग्य सम्पूर्ण संस्कार करके सम्पूर्ण
विद्याओं समेत धनुर्वेद सिखाया कभी प्रसन्नता से मृगावती ने
उस वालक के स्नेह से राजा सहस्रानीक के नाम से युक्त कड़ा
अपने हाथ से उतारकर उस के हाथ में पहरा दियाथा एक समय
उदयन शिकार के खेलने को गयाथा तो वहां देखा कि कोई
मदारी एक वड़े सुन्दर सर्प को जवरदस्ती पकड़े लिये जाता
है उदयन ने दयापूर्वक उससे कहा कि हमारे कहने से इस सर्पको
छोड़दो ७५ तव मदारी वोला कि हे स्वामी! यह तो मेरी जीविका
हैमैं वड़ा गरीव हूं सदैव सर्पों का तमाशा दिखा २ अपने पेटको
भरता हूं पुराने सर्पके मरजाने पर वहुत ढूंढते २ इस वनमें मन्त्र
और औषधियों के वलसे यह सर्प मैंने पायाहै उसके यह वचन
सुनकर उदयन ने माता का दियाहुआ कड़ा उसे देकर सर्प छुड़वा

दिया तब प्रणाम करके कड़ेको लेके मदारी के चलेजाने पर वह सर्प उदयन पर प्रसन्न हो वीणाधारी मनुष्य होकर बोला, कि मैं वासुकि का बड़ा भाई वसुनेमि नाम हूं तुमने मेरी रक्षाकी है इसलिये तारों से बड़े सुन्दर शब्दवाली और सुन्दरियों से जड़ाऊ बड़ी उत्तम यह वीणालो और ताम्बूल तथा कभी न मुरझाने वाली पुष्पों की माला लो यह देकर उस सर्प ने कभी मैले न होनेवाले तिलक की युक्तिभी बताई इसके उपरान्त वह उदयन उन सब पदार्थों को लेकर जमदग्नि के आश्रम में अपनी माता के निकट आया इस बीच में वह मदारी उदयन के दियेहुए उस कड़े को लेकर राजा सहस्रानीक के राज्यमें बेचने को आया राजा के मनुष्य राजा के नाम से युक्त उस कड़े को देख कड़े समेत उस मदारी को राजा के समीप ले आये—८४ शोक से विकल राजा सहस्रानीक ने उस मदारी से अपने आप पूंछा कि तुम यह कड़ा कहां से लाये तब उस मदारी ने उदयन से कड़ा पानेका सम्पूर्ण वृत्तान्त राजा को कह सुनाया मदारी के वचन को सुनके और अपनी स्त्री के कड़े को पहचान के राजा के चित्तमें बड़ा सन्देह हुआ उसीसमय यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा! तुम्हाराशाप अब जाता रहा पुत्र समेत तुम्हारी मृगावती रानी उदयाचल पर्व्वत पर जमदग्नि के आश्रम में है जैसे गरमी से व्याकुल मोर को जल की वृष्टि से प्रसन्नता होती है उसी प्रकार वियोग से व्याकुल राजा आकाशवाणी से प्रसन्न हुआ इसके अनन्तर उस दिवस के किसी प्रकार व्यतीत होने पर उस मदारी को साथ में लेकर राजा सहस्रानीक अपनी प्रियासे मिलने के लिये सेनाओं समेत उदयाचल को चला ६० इस के उपरान्त राजा बहुत दूर

उपरान्त क्षणभर सुख देनेवाली और क्षणभर में ही दुख देनेवाली दैवकी गति के समान अपनी प्रियाको शोचने लगा एक दिन मोचनिका नाम कोई दासी वहां आकर उससे बोली कि यहां तुम अपने प्राण देनेके लिये क्यों आयेहो लुटेरोका राजा अभी किसी काम के लिये कहीं गया है लौटकर तुम्हे भगवती को बलिदेगा इसीलिये तुमको यहां युक्तिपूर्व्वक भेजा है और इसी से तुम्हारे पैरों में बेड़ी भी डालीगई हैं उसने तुमको भगवती के बलिदान के लिये भेजा है इसीसे यह लोग तुम्हारी खाने पीने की बड़ी खातिर करते हैं १४२ तुम्हारे छूटनेका एक उपाय है जो तुम मानो तो इस लुटेरों के राजाकी लड़की सुन्दरी नामहै वह तुम्हें देखकर अत्यन्त कामातुर हुई है अगर तुम उसके साथसंभोग करोगे तो तुम्हारे प्राण बचजायँगे उसके यह वचन सुनकर श्रीदत्तने छुपकर उस सुन्दरी के साथ अपना गान्धर्व विवाह करलिया रोज रात्रि के समय उस की बेड़ी को खोलकर वह सुन्दरी उस के साथ अपना भोग किया करतीथी और फिर बेड़ी डाल देती थी इसके उपरान्त थोड़े ही दिनों मे सुन्दरी गर्भवती हुई और यह सम्पूर्ण वृत्तान्त उस की माता मोचनिका नाम दासी के मुखसे सुनकर दामाद के प्रेम से एकान्त में श्रीदत्तके पासगई और बोली कि हे पुत्र! श्रीचण्डनाम इस सुन्दरी का पिता जो इस वृत्तान्त को जानेगा तो तुम्हें मारे विना न छोड़ेगा इसलिये तुम यहां से चले जाओ और सुन्दरीको न भूलना १४८ यह कहकर उस की सासने उसे वहांसे छुड़वा दिया तब श्रीदत्त सुन्दरी से यह कहकर कि मेराखड्ग तेरे पिताके पासहै वहांसे चलाआयाहै फिर मृगाङ्कवतीके ढूंढनेके लिये चिन्ता से व्याकुल उसी वन में घुमा और वन में घुसने के समय इस को

जाकर उस दिन किसी जंगली तालाव के पास टिका वहां शयन के समय सेवा करने के लिये आये हुए संगतक नाम किसी कथक अर्थात् किस्सेवाज़ से राजा बोला कि मृगावती के मुख रूपी कमल के दर्शन करने की इच्छा करनेवाले मुझसे कोई मनोहर कथा कहो तब संगतक बोला कि हे राजा! आप वृथा सन्ताप करते हो क्योंकि शापका अन्त होचुका है अब आप से रानी का समागम हुआही चाहता है और संयोग वियोग तो मनुष्यों को हुआही करते हैं इसी विषयमें आप से एक कथा कहताहूं उसे आप सुनिये ॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे १४ प्रदीपः ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभाग १५ पञ्चदशप्रदीपः ॥

वियोगेसंप्यथसंयोगोजायतेकालतोयथा ॥ श्रीदत्तःस्वीयपत्न्याहिवियुक्तोऽथयुतोऽभवत् ॥ १५ ॥

(अर्थ) वियोग होजाने पर संयोग भी काल पाकर होही जाता है जैसे श्रीधर निज स्त्रीसे वियुक्त हो फिर उसी से संयोग को प्राप्त हुआ—जैसे—मालव देश में यज्ञसोम नाम ब्राह्मण के कालनेमि और विगतभय नाम दो पुत्र थे उन पुत्रों पर वहां के निवासी वहुत प्रेम करते थे पिताके मरजाने पर युवावस्थाको प्राप्त वह दोनो पुत्र विद्या पढ़ने के लिये पाटलिपुत्र नाम नगर में गये वहां देवशर्म्मा नाम उपाध्याय से वहुत सी विद्या पढ़ी तब उपाध्यायने प्रसन्न होकर अपनी दोनों कन्या उन दोनों को व्याहदीं इसके उपरान्त कालनेमि अन्य गृहस्थी लोगों को वहुत धनाढ्य देखकर ईर्षा से लक्ष्मी मिलने के लिये अग्नि में हवन करनेलगा

अच्छे २ शकुन हुए उन उत्तम शकुनों को देखकर जहां इस का घोड़ा मराथा और मृगाङ्कवतीखोईथी वहां आया और उस जगह सामने आतेहुए एक वहेलिये से भी उसी मृगाङ्कवतीको पूछा तब उसने कहा कि क्या तुम्हारा श्रीदत्त नाम है फिरवह बोला कि सु-भागा श्रीदत्त मैंहीहूं तब वह बोला कि सुनो मैंने यहां रो२कर तुम्हें ढूंढ़तीहुई तुम्हारीस्त्रीको देखकर और सम्पूर्ण वृत्तान्तभी उससे पूछ कर उसेसावधान किया और फिर दयापूर्वक इसवनसे उसको अपने गांव मे लेगया फिर गांव में जवान २ वधिको को देखकर मथुराके निकट नागस्थल नाम गांव में विश्वदत्तनाम एक वृद्ध ब्राह्मणके यहां मैंने उसे सुपुर्द करदिया फिर तुम्हारी स्त्री से तुम्हारे नाम को पूछकर मैं तुमको तलाश करने यहां आयाहूं अब तुम शीघ्र नाग-स्थल में जाकर अपनी स्त्री को लेलो १.४६ उसके यह वचन सुन कर श्रीदत्त वहांसे चला और दूसरे दिन नागस्थलमें पहुँचा और विश्वदत्त ब्राह्मणके घर में जाकर श्रीदत्त यहवचन बोला कि व-हेलियेकी सुपुर्द कराई हुई हमारी स्त्रीको तुम देदो यह सुनकर वि-श्वदत्त ने कहा कि मथुरा मे राजा सूरसेनका उपाध्याय तथा मंत्री एक ब्राह्मण मेरा मित्र है उसी के यहां मैंने तुम्हारी स्त्री को भेज दियाहै क्योंकि इस निर्जन गांव मे उसकी रक्षा नही होसकतीथी तो प्रातःकाल तुम वही जाना आज यहां ही रहो विश्वदत्त के कहनेसे श्रीदत्त रात्रिभर वहांरहा और प्रातःकाल मथुराको चला फिर दूसरे दिन मथुरा के निकट पहुँचकर बहुत मार्ग चलने से चेष्टा मैली होगई थी इसलिये निर्मल जलवाली एक वावड़ी में स्नान करनेलगा वहां जल के भीतर चोरो का रक्खाहुआ एक वस्त्र मिला जिसके कि किनारो मे रत्नो का हार बँधाहुआ था तब

हवन से प्रसन्न होके साक्षात् लक्ष्मीजी प्रकट होकर बोलीं कि तुझे बहुतसा धन मिलेगा और तेरा पुत्र राजा होगा परन्तु अन्त मे तू चोर के समान मारा जायगा क्योंकि तैंने ईर्षा से हवन कियाहै यह कह कर लक्ष्मी जी तो अन्तर्द्धान होगई और कालनेमि धीरे २ बड़ा धनवान् होगया और कुछ दिन मे उस के एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ १३ उसका नाम उसने श्रीदत्त रक्खा क्योंकि वह लक्ष्मी जी की कृपा से हुआ था धीरे २ वह श्रीदत्त बड़ा होकर ब्राह्मण होनेपर भी अस्त्र विद्या और बाहुयुद्ध में बड़ा प्रवीण हुआ इसके उपरान्त कालनेमिके भाई विगतभयकी स्त्रीको सर्प ने काट खाया इसी से वह तीर्थयात्रा के लिये परदेश चलागया फिर वहांके गुणग्राही वल्लभशक्ति नाम राजाने श्रीदत्त को विक्रमशक्ति नाम अपने पुत्र का मित्र बनाया इसके उपरान्त अवन्ती देश के दो क्षत्री बाहुशाली और वज्रमुष्टि नाम उस श्रीदत्त के मित्रहुए फिर श्रीदत्त से बाहुयुद्ध के द्वारा जीतेगये अन्य गुणज्ञ दक्षिणी लोग और महाबल व्याघ्र भट उपेन्द्र बल तथा निष्ठुरकनाम मंत्रियों के पुत्र इसके मित्रहुए एक समय वर्षाऋतु मे श्रीदत्त सब अपने मित्रों को साथ लेकर राजपुत्र समेत गङ्गातटपर खेलने को गया वहां जाकर खेल में राजा के सेवको ने राजा के पुत्र को अपनी ओरका राजा बनाया और श्रीदत्त के मित्रोंने श्रीदत्त को अपनी ओरका राजा बनाया २२ यह देखकर क्रोधित हुए राजाके पुत्रने श्रीदत्तको लड़नेकेलिये बुलाया तब श्रीदत्तने मल्लयुद्ध करके राजाके लड़के को पछाड़ दिया इस कारण राजाके पुत्र ने अपने चित्तमें यह विचार किया कि मैं इसे मरवाडालूं राजाके पुत्रका अभिप्राय समझकर श्रीदत्त अपने मित्रों समेत वहां से

रहे उसवस्त्रको लेकर हारको बिना देखे श्रीदत्त मथुरा में घुमा वहां उसवस्त्रको पहचानकर और उसमें रत्नोंका हार बंधा देखकर राजाके सिपाही उसे चोर कहकर बांधके कोतवाल के पास लेआये कोतवाल ने राजासे कहा और राजाने उसके मारनेका हुक्म दे दिया १७० तब मारने के लिये वध करने के स्थान में राजाके सिपाही ढिंढोरापीटतेहुए श्रीदत्तको लेचले इसप्रकारसे जातेहुए श्रीदत्तको मृगाङ्कवतीने देखा और जिसके घरमे रहतीथी उस मन्त्रीसे बोली कि यही मेरा पतिहै जिसको मारने के लिये राजाके सिपाही लिये जाते हैं यह सुनकर मंत्री ने उन वध करनेवालों को रोक दिया और राजा से जाकर कहा बधसे उसे छुड़वादिया और अपने घरमे ले आया इसके उपरान्त श्रीदत्त मंत्री को देखकर अपने चित्तमें शोचनेलगा कि यह वही मेरा विगतभय नाम चचाहै जो कि परदेशको चलागयाथा और भाग्यवश से यहां आकर मंत्री हुआ इसप्रकार उसे पहचानके और पूछकर उसके पैरों में गिरपड़ा १७५ विगतभयभी अपने भाईके पुत्रको पहचानकर और उसेकंठमे लगाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त पूंछनेलगा तब श्रीदत्तने अपने पिताकी मृत्यु सेलेकर अपना सब वृत्तान्त अपने चचाको सुना दिया उस श्रीदत्तका सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनकर विगतभयके आंसू निकल आये और एकान्तमें अपने भतीजेसे बोला कि हे पुत्र! मेरीरजधरो सुभेयक्षिणी सिद्धहै उसने मुझे पांचहजार घोड़े और सात करोड़ अशर्फी दी हैं वह सबधन तुम्हाराही है क्योंकि मेरे कोई पुत्र नहीं है यह कहकर उसने श्रीदत्तकी स्त्री श्रीदत्तके सुपुर्द करदी और श्रीदत्तनेभी बहुतसा ऐश्वर्य्य पाकर उसके साथ अपना विवाह करलिया जैसे कि रात्रिसे चन्द्रमा की शोभा होती है उसी प्रकार वहां रहते हुए

भाग आया तब भागते २ मार्ग में यह देखा कि समुद्र में वहतीहुई लक्ष्मी जी के समान गङ्गाजी में वहतीहुई स्त्री जारही है यह देखके उसके निकालने के लिये अपने मित्रोंको गङ्गाके किनारेपर छोड़ कर श्रीदत्त ने भी गोतामारा पानी में गोता मारकर क्षणभरमें ही श्रीदत्त ने देखा कि न कहीं पानी है और न वह स्त्री है केवल एक सुन्दर शिवजीका दिव्य मंदिर बना हुआहै यह देखकर बड़े आश्चर्य्य से युक्त थकाहुआ श्रीदत्त श्रीशिवजी को नमस्कार करके उसी मंदिर में रात्रि भर रहा २१ प्रातःकाल सम्पूर्ण गुणों से युक्त मूर्ति को धारण किये लक्ष्मी के समान वह स्त्री शिवजी का पूजन करने को वहां आई श्री शिवजी का पूजन करके वह स्त्री अपने घर को चली गई और भीतर जाके अपने कमरे में पलँग पर लेटगई वहां सैकड़ों स्त्रियां उसकी सेवा करने को मौजूद थीं श्रीदत्त वहीं जाकर उसके निकट बैठगया इसके उपरान्त वह स्त्री एकाएकी रोदन कर २ आंसू वहाने लगी उससमय श्रीदत्त के चित्त में बड़ी दयाहुई और बोला कि तुम कौन हो और क्यों रोती हो मुझ से कहो मैं तुम्हारे दुःख को दूर करूंगा २८ तब वह बोली कि हम सब एक हजार दैत्यों के स्वामी बलि की पोती हैं इन सब मे मैं बड़ी हूं और मेरा विद्युत्प्रभा नाम है हमारे बाबा बलिको तो विष्णुजी ने बहुत दिन से बांध रक्खाहै और पिताको भी विष्णुही ने बाहुयुद्ध में मारकर हमें हमारे पुर से निकाल दिया है और हमारे रोकने के लिये एक सिंह वहां बैठाल दिया है इस से हम अपने पुर में नहीं जा सक्ती हैं यही हमको बड़ा दुःख है जब हमने विष्णुसे अपने पुर में जानेका उपाय पूछा तब उन्हों ने यह कहा था कि कुबेर के शापसे यक्ष सिंह होगया है जब कोई मनुष्य

श्रीदत्तकी शोभामृगाङ्कवतीसे हुई यद्यपि श्रीदत्तको ऐसा ऐश्वर्य प्राप्त भी हुआथा तथापि उसके चित्त में बाहुशाली आदिक मित्रों की चिन्तावनीही रहती थी एक समय विगतभय ने श्रीदत्त को एकान्तमें बुलाकर कहा कि पुत्र यहांके राजा शूरसेनकी कन्याको राजाकी आज्ञासे किसीके देनेकेलिये उसे लेकर मैं अवन्तीदेश को जाऊंगा तो इसी बहाने से उस कन्याको मैं तुम्हें देदूंगा तब उस कन्याके साथ जो फ़ौजहोगी वह और मेरी सब फ़ौजको लेकर जो राज्यलक्ष्मीजी की कृपासे तुम्हें मिलनेवाला है वह शीघ्रही तुम्हें मिलजायगा १८५ यह निश्चय करके सेना और अपनी मृगांकवती आदि घरके लोगों के समेत वह दोनों चचा भतीजे उस कन्याको लेकर वहांको चले इसके उपरान्त जब विन्ध्याचल पर यह दोनों पहुँचे तब बहुतसी डाकुओंकी सेना वहां आई और इन्हें रोककर बाणों से मारनेलगी तब श्रीदत्तकी सम्पूर्ण सेना के भाग जानेपर प्रहारसे मूर्च्छितहुये श्रीदत्तको बांधकर और उसका सम्पूर्णधन लेकर डाकू अपने गांवोंको चलेगये फिर सम्पूर्ण डाकू श्रीदत्तको बलिदान देनेके लिये भगवती के मन्दिरमें चलेगये और घंटा बजानेलगे फिर वहां अपने लड़केसमेत आईहुई सुन्दरीनाम भीलों के राजाकी कन्याने श्रीदत्तको देखा और सब डाकुओंको हटाकर श्रीदत्तको लेकर बड़े आनन्दपूर्वक देवी के मन्दिर में गई इसके उपरान्त भीलों का राजा जो मरतेसमय अपना सब राज्य अपनी कन्या को देगयाथा वह श्रीदत्त को मिला क्योंकि उसके कोई पुत्र न था और वह सम्पूर्ण डाकुओं का लियाहुआ धनभी चचा तथा मृगांकवती समेत श्रीदत्तको मिलगया फिर उस कन्या से मृगांकनाम अपने खड्गको पाकर और शूरसेन नाम राजाकी

इसे मारेगा तब इसका शाप छूटेगा इससे तुम हमारे शत्रुरूप उस सिंह को मारो क्योंकि इसीलिये मैं तुमको यहां लाई हूं उस सिंह के मारने से तुमको मृगाङ्कनाम खड्ग मिलैगा जिसके प्रभाव से तुम सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतकर राजा होजाओगे ४५ यह सुन कर श्रीदत्तने वह दिनतो वहीं व्यतीत किया और दूसरेदिन दैत्य की सब कन्याओं को साथ लेकर उस पुरको चला ४६ वहांजाकर श्रीदत्त ने बाहुयुद्ध से सिंह को जीत लिया तब उस सिंह का रूप पुरुष का सा होगया और वह प्रसन्न होकर शाप के छुटाने वाले श्रीदत्त को अपना खड्ग देकर अन्तर्द्धान होगया और दैत्य की सब कन्याओं का दुःख दूर होगया इसके उपरान्त श्रीदत्त सब कन्याओं समेत उस पुर के भीतर गया और वहां उस विद्युत्प्रभा कन्यापर मोहितहुआ तब वहकन्या युक्तिपूर्व्वक श्रीदत्तसे बोली कि मगरकेभयके दूर करनेवाले इस खड्गको लेकर तुम बावड़ीमें गोता मारो उसके कहने से जब श्रीदत्त ने गोता मारा तो गङ्गा जी के उसी तटपर जा निकला जहां से कि यह कूदा था ५२ इस प्रकार दैत्य की कन्या से छला गया श्रीदत्त खड्ग और अँगूठी समेत पाताल से निकलकर आश्चर्य्य और खेद दोनों से युक्त हो गया फिर अपने मित्रों के ढूंढ़ने के निमित्त अपने घरकी तरफ चला रास्ते में कुछ दूर चलकर निष्ठुरकनाम मित्र उसको मिला निष्ठुरक उसको प्रणाम करके और एकान्त में जाकर उससे बोला कि गङ्गा में डूबे हुए तुमको बहुत दिनों तक ढूंढकर हम लोग अपना शिर काटने को तैयार हुएथे कि यह आकाशवाणी हुई कि हे पुत्र! अपनाशिर मतकाटो तुम्हारा मित्र तुम्हें मिलजायगा उस आकाशवाणी को सुनकर हम लोग तुम्हारे पिता से यह वृत्तान्त

कन्यासे विवाह करके श्रीदत्त वहांका वड़ाभारी राजाहोगया तब श्रीदत्तने अपने दोनों सुसर बिम्बक और शूरसेनके पास दूतभेजे तब वह दोनो यहसुनकर अपनी २ सेनालेकर अपनी२कन्याओं के स्नेह से वहां आये फिर बाहुशाली आदिक मित्र भी घावों के अच्छे होजानेपर श्रीदत्तके सब वृत्तान्तको सुनकर वहांआये इसके उपरान्त ससुरोंसमेत श्रीदत्तने पिताके मारनेवाले राजाविक्रमशक्तिको जाकर मारा और मृगांकवती समेत सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्य पाकर विरहके उपरान्त श्रीदत्त अत्यन्त प्रसन्न हुआ इसप्रकार से राजा वड़ेवियोग और नाना आपत्तिरूपी समुद्रको पारहोकर धीर पुरुष आनन्द कोपाते हैं संगतककथक से इस कथा को सुनकर राजा सहस्रानीकने वह रात्रि मार्ग में व्यतीतकी फिर प्रातःकाल पहले तो मनोरथोपर चढकर राजाका चित्तचला फिर पीछे राजा सहस्रानीक चला थोड़े दिनों मे राजा महर्षि जमदग्निजी के आश्रममें पहुँचा वह ऐसा उत्तम आश्रमथा कि जिसमें पशु पक्षी भी अपनी चपलताको छोड़कर शान्तवृत्ती में रहते थे वहां अतिथियों के सम्पूर्ण सत्कार करनेवाले जमदग्निजी को देखकर राजाने प्रणामकिया तबअपने दर्शन सेमनुष्योको पवित्र करनेवाले तपके समूह महर्षि जमदग्नि जीने वहुत दिनसे छूटीहुई पुत्रसमेत रानी मृगावती राजाको देदी २०५ शापके अन्तमें परस्पर देखने से उन दोनों के जो आंसू आगये थे वह आंसू न थे मानो अमृतकी वृष्टि थी राजाने अपने उदयननाम पुत्रको प्रथमही देखकर आलिङ्गन करके बहुत देरमें छोड़ा इसके अनन्तर जमदग्निजी से पूछकर उदयन समेत अपनी रानी मृगावतीको लेकर राजा आश्रमसे चला उससमय राजाके भेजनेको आंसूभरेहुये मृगभी तपोवनतक चले

कहने को चले थे कि मार्ग में किसी पुरुषने जल्दी से आकर यह कहा कि तुमलोग अभी इसनगर में मत जाओ क्योंकि यहां का राजा वल्लभशक्ति मरगया और मन्त्रियों ने उसके पुत्र विक्रमशक्ति को राज्य देदिया राज्य मिलने के दूसरे दिन, विक्रमशक्ति ने यह कहकर कि इसने अपने पुत्रको छिपा रक्खा है उस तुम्हारे पिता को शूलीपर चढ़ादिया ६२ यह देखकर तुम्हारी माता का हृदय आपही फटगया ठीकहै कि दुष्टों के पाप बहुत अन्य २ पापों से और भी भारी होजाते हैं ६३ अब वह विक्रमशक्ति श्रीदत्त और श्रीदत्त के मित्रों को भी मारने को ढूंढ़ताहै उस पुरुषके ऐसे वचन सुनकर बाहुशालि आदिक तुम्हारे पांच मित्र तो उज्जयिनी को चलेगये और मुझे तुम्हारे लिये यहां छिपाकर छोड़ गये हैं तो चलो जहां वह हमारे पांचों मित्र हैं वहीं चलें निष्ठुरक के पास ऐसे वचन सुनकर अपने माता पिताका बड़ा शोक करके बदला लेने के लिये श्रीदत्त अपने खड्ग को देखने लगा फिर समय को विचारकर निष्ठुरक के साथ अपने मित्रों से मिलने के लिये श्रीदत्त उज्जयिनी को चला ६८ फिर अपने सम्पूर्ण वृत्तान्त को मित्र से कहतेहुए श्रीदत्त ने मार्ग में रोतीहुई एक स्त्री देखी तब पूंछने से वह बोली कि मैं मालव देशको जाती थी सो मार्ग्ग भूलगई हूं उसके यह वचन सुनकर दया से उन दोनों ने उसे भी अपने साथ मे लेकर उस दिन सायङ्काल के समय किसी उजड़ेहुए गाँव में निवास किया वहां एकाएकी रात्रिमें जगेहुए श्रीदत्त ने देखा कि वह स्त्री निष्ठुरक को मारकर उसका मांस बड़ी प्रसन्नता से खा रही है तब श्रीदत्त अपने मृगाङ्कक को लेकर उठा और स्त्री भी राक्षसी होगई जब श्रीदत्तने उसको मारने के लिये उसके

आये २०८ रानी के विरहकी वातोंको सुनता हुआ और अपने विरहकी वातोंको कहताहुआ राजा सहस्रानीक अपनी कौशाम्बी नगरी में पहुँचा रानी और पुत्रसमेत राजाको आयाहुआ देखकर प्रजाके सम्पूर्ण लोग अत्यन्त प्रसन्नहुये राजाने अपने पुत्रके गुणोंको देखकर उसे युवराजपदवी देदी और अपने मन्त्रियों के पुत्र जिनका कि वसन्तक रुमण्वान् और यौगन्धरायण नामथा उन तीनोंका उसको मन्त्री बनादिया उससमय पुष्पवृष्टि संयुक्त आकाश से वाणीहुई कि इन मन्त्रियों के साथ उदयन सम्पूर्ण पृथ्वी का राजाहोगा इसके उपरान्त अपने पुत्रको राज्यका भार सौंपकर राजा मृगावती समेत संसारका सुख भोगनेलगा कुछ दिनके उपरान्त राजा कानकेपासके बालोंको श्वेत देखकर शान्त होगया और विषय भोगकरने की सब इच्छा जातीरही तब उदयन नाम अपने पुत्रको राज्यदेकर अपने मन्त्री और मृगावती समेत राजा सहस्रानीक तप करने के लिये हिमालयको चलागया २१७॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभाग १५ प्रदीप ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षोडश प्रदीपः ॥

विचार्याचरतिप्राज्ञ अविचार्ययथोदयन् ॥
वीणासक्तोयथावद्धो नरहस्तिछलाद्द्रुतम् ॥

(अर्थ) बुद्धिमान् जन विचार करके काम करें जैसे विन विचार कर करता (उदयन राजपुत्र) मनुष्य मय हस्ती के छलसे शीघ्र बांधागया १६ ॥

इसके उपरान्त राजा उदयने वत्सदेशके राज्यको पाकर अच्छे प्रकारसे प्रजाओंका पालन करने लगा फिर धीरे २ यौगन्धरायण

शिरके बाल पकड़े तब उसका दिव्य स्वरूप होगया और बोली कि हे महाभाग! मुझे मत मारो मैं राक्षसी नहींहूं मुझको विश्वामित्र का यह शाप था ७५ एकसमय कुबेर के अधिकार के लेने के लिये तप करतेहुए विश्वामित्रके तप में विघ्न करनेके निमित्त कुबेर ने मुझे भेजा वहां सुन्दर रूपसे जब मैं विश्वामित्रको अपने वशमें न करसकी तब भयङ्कर रूप करके मैं उनको डराने लगी यह देखकर विश्वामित्रने मुझे शापदिया कि हे पापिन! तू मनुष्यों की मारनेवाली राक्षसी होजाय फिर मेरे प्रार्थना करनेपर विश्वामित्र ने यह भी कहा कि जब श्रीदत्त तेरे बाल पकड़ेगा तब तेरा शाप छूटेगा तभी से मैं राक्षसी होगई हूं और मैंनेही बहुत दिनों से इस नगर को ग्रस रक्खा था अब तुम्हारी कृपा से मेरा वह शाप छूटगया तुम जो चाहो मुझसे वरमांगो श्रीदत्त ने यही वरमांगा कि मेरा मित्र जीजावे उसने कहा ऐसाही होगा यह कहकर चली गई और निष्ठुरक जीउठा ८२ इसके उपरान्त निष्ठुरक को साथ लेकर श्रीदत्त धीरे २ उज्जयिनी को पहुंचा जैसे कि मेघको देख कर नीलकंठ प्रसन्न होते हैं उसीप्रकार श्रीदत्त और निष्ठुरक को देखकर उसके मित्र प्रसन्नहुए फिर बाहुशाली नाम मित्र श्रीदत्त को सत्कारपूर्व्वक अपने घर लेगया और श्रीदत्त ने उस से अपना-सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा बाहुशाली के घरमें उसके माता और पिता से सेवन कियाहुआ श्रीदत्त अपने सम्पूर्ण मित्रो समेत प्रसन्नता पूर्व्वक रहनेलगा ८६ एक समय वसन्त के उत्सव में श्रीदत्त आपने मित्रों समेत किसी बगीचे की सैर को गया वहां बिम्बकनाम राजा की मृगांकवतीनाम कन्याको साक्षात् वसन्तऋतुकी लक्ष्मी के समान देखकर श्रीदत्त काम के वशीभूत होगया और श्रीदत्त

आदिक मन्त्रियों पर राज्य के भारको छोड़कर केवल सुख का भोग करने लगा सदैव शिकार करता था और वासुकि की दी हुई वीणाको रात्रि दिन बजाया करता था वीणाके मधुर शब्दको सुनकर वशीभूत हुए मतवाले वनके हाथियोंको बँधवाकर लेआता था और मन्त्रियों के सन्मुख वेश्याओं के साथ मद्य पीताथा राजाको केवल यह चिन्ता लगी रहती थी कि मेरे कुल और स्वरूपके अनुरूप स्त्री कहीं नहीं है एक वासवदत्ता नाम कन्या सुनाई देती है सो वह कैसे मिलसक्ती है और उज्जयिनीमें उसकन्या का पिता राजा चण्डमहासेनभी यह विचार करताथा कि मेरीकन्या के अनुरूप पति संसार भरमे कोई नही है एक उदयन नाम है सो वह सदैवका हमारा शत्रुहै तो किसप्रकार से उदयन हमारे वशीभूत होकर इस कन्याको ग्रहण करे एक उपायहै कि उदयन वनमें अकेला शिकारके शौक से सदैव हाथियों को पकड़ा करताहै वहीं से युक्ति पूर्वक उसको बँधवा मँगवाऊं और उससे अपनी कन्याको गान सिखवाऊं तब वह आप आपही मेरी कन्याको देखकर मोहित होगा इसप्रकार से वशीभूत होकर मेरा दामाद होजायगा इस के सिवाय उसके वश करनेका कोई दूसरा उपाय नहीं है १२ यह शोचकर राजा भगवती के मन्दिरको गया और भगवतीकी पूजा तथा स्तुतिकरके अपनी कन्याके लिये वही राजा उदयन वरमांगा तब उस मन्दिर से यह आवाज आई कि राजा तुम्हारा यह मनोरथ थोड़ेही दिनों में पूरा होजायगा यह सुनकर प्रसन्न हुआ राजा बुद्धिदत्तनाम अपने मन्त्री से भी यही विचार करने लगा कि उदयन बड़ा मानी निर्लज्ज तथा महाबलवान् है और उस के मन्त्री आदि सेवकभी उससे बड़ा अनुराग करते हैं इससे यद्यपि उसके

को देखकर वह कन्या भी उसपर आसक्त होगई, उस कन्या को वृक्षों की आड़में चलीगई देखकर श्रीदत्त बहुत विकल होगया श्रीदत्त की यह दशा देखकर बाहुशाली बोला कि हे मित्र! मैं तुम्हारे चित्तका हाल जानगया मुझसे मत छिपाओ चलो वहीं चलैं जहां वह राजकन्या गईहै बाहुशाली के यह वचन सुनकर श्रीदत्त बाहुशाली के साथ जहां वह राजकन्या गईथी वहीं गया उससमय यह चिल्लाहट सुनाई पड़ी कि हाय २ राजकन्या को सर्प ने काट खाया ६४ तब बाहुशाली ने उसके कंचुकी अर्थात् ख्वाजेसराय से कहा कि हमारे मित्र के पास विषनाशक अँगूठी और विद्याहै यह सुनकर वह कंचुकी श्रीदत्त के पैरोंपर गिरकर उसको राजकन्या के पास लेगया श्रीदत्त ने वहां जाकर अपनी अँगूठी राजकन्याकी अँगुली में पहरादी और मन्त्र पढ़नेलगा इससे वह राजकन्या जी उठी और सब लोग श्रीदत्त की प्रशंसा करनेलगे इस वृत्तान्त को सुनकर उस कन्याका पिता राजाबिम्बक भी वहां आया इससे श्रीदत्त अपने मित्रों समेत अँगूठी को विना लिये वहां से चला आया राजा ने प्रसन्न होकर जो कुछ सुवर्णादिक पदार्थ श्रीदत्त को भेजे वह सब अपने बाहुशाली के पिता को दे दिये १०० इसके उपरान्त उस राजकन्या की याद करके श्रीदत्त को इतना खेद हुआ कि जिसके देखने से उसके मित्र लोग भी बहुत व्याकुल हुए तब भावनिका नाम राजकन्याकी एक प्यारी सखी अँगूठी देनेके बहाने से आई और बोली कि हे श्रीदत्त हमारी राजकन्या का यह निश्चय विचार है कि यातो तुमसे विवाह करेगी या शरीर को त्यागदेगी भावनिका के यह वचन सुनकर श्रीदत्त

आये २०८ रानी के विरहकी वातोंको सुनता हुआ और अपने विरहकी वातोंको कहताहुआ राजा सहस्रानीक अपनी कौशाम्बी नगरी मे पहुँचा रानी और पुत्रसमेत राजाको आयाहुआ देखकर प्रजाके सम्पूर्ण लोग अत्यन्त प्रसन्नहुये राजाने अपने पुत्रके गुणोंको देखकर उसे युवराजपदवी देदी और अपने मन्त्रियो के पुत्र जिनका कि बसन्तक रुमण्वान् और यौगन्धरायण नामथा उन तीनोका उसको मन्त्री बनादिया उससमय पुष्पवृष्टि संयुक्त आकाश से वाणीहुई कि इन मन्त्रियों के साथ उदयन सम्पूर्ण पृथ्वी का राजाहोगा इसके उपरान्त अपने पुत्रको राज्यका भार सौंपकर राजा मृगावती समेत संसारका सुख भोगनेलगा कुछ दिनके उपरान्त राजा कानकेपासके वालोंको श्वेत देखकर शान्त होगया और विषय भोगकरने की सब इच्छा जातीरही तब उदयन नाम अपने पुत्रको राज्यदेकर अपने मन्त्री और मृगावती समेत राजा सहस्रानीक तप करने के लिये हिमालयको चलागया २१७॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभाग १५ प्रदीप॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षोडश प्रदीपः ॥

विचार्याचरतिप्राज्ञ अविचार्ययथोदयन् ॥
वीणासक्तोयथाबद्धो नरहस्तिछलाद्द्रुतम् ॥

(अर्थ) बुद्धिमान् जन विचार करके काम करें जैसे विन विचार कर करता (उदयन राजपुत्र) मनुष्य मय हस्ती के छलसे शीघ्र बांधागया १६ ॥

इसके उपरान्त राजा उदयन वत्सदेशके राज्यको पाकर अच्छे प्रकारसे प्रजाओंका पालन करने लगा फिर धीरे२ यौगन्धरायण

करनेलगे कि राजकन्या को हम सबलोग यहां से हरलेचलें और मथुरा में जाकर रहें १०५ ऐसी सलाह होजाने पर भावनिका वहां से चलीगई दूसरे दिन बाहुशाली अपने तीन मित्रों समेत रोजगार के बहाने से मथुरा को चलागया यहां श्रीदत्तने कन्यासमेत किसी स्त्री को मद्य पिलवाकर राजकन्या के घरमें रखदिया तब दीपक बालने के बहाने से उस घरमे आग लगाकर राजकन्या भावनिका समेत बाहर निकल आई ११० उसी समय बाहर खड़े हुए श्रीदत्त ने अपने दो मित्रोंसमेत राजकन्या को आगे करके गये हुए बाहुशाली के पास भेजदिया और राजकन्या के मकान में वह कन्या समेत स्त्री जलगई लोग यह समझे कि राजकन्या अपनी सखी समेत जलगई श्रीदत्त उसी प्रकार प्रातःकाल तक वहां रहा और दूसरे दिन अपने मृगाङ्क नाम खड्ग को लेकर अपनी प्रियाके पास चला रात्रिभर में बहुत से मार्ग को उल्लंघन करके श्रीदत्त प्रहरभर दिन चढ़े विन्ध्याचल के वनमे पहुँचा वहां उसे बहुत से दुरशकुन हुए और पीछे से उसने देखा कि भावनिका समेत उसके सम्पूर्ण मित्र वहां घायल पड़े हैं वह सब श्रीदत्त को देखकर बोले कि आज बहुतसे घुड़सवारोंने हमको लूटलिया और हम लोगों के घायल होजानेपर एक घुड़सवार राजकन्याको अपने घोड़ेपर सवार कराके लेगया जबतक वह उसे दूर न लेजाय तबतक दौड़कर उसे पकड़लाओ और हमारेपास मतठहरो क्योंकि वही उन सबमें मुख्य है ११८ उनमित्रोंके ऐसे बचन सुनकर श्रीदत्त वेग पूर्व्वक वहां से चला और बहुतदूर जाकर उसने देखा कि एक घुड़सवारों की फौज चलीजाती है और उस सेना के बीच मे कोई तरुण क्षत्री अपने घोड़े पर राजकन्या को बैठाये हुए चला

आदिक मन्त्रियों पर राज्य के भारको छोड़कर केवल सुख का भोग करने लगा-सदैव शिकार करता था और वासुकि की दी हुई वीणाको रात्रि-दिन बजाया करता था वीणाके मधुर शब्दको सुनकर वशीभूत हुए मतवाले वनके हाथियोंको बँधवाकर लेआ-ताथा और मन्त्रियों के सन्मुख वेश्याओं के साथ मद्य पीताथा राजाको केवल यह चिन्ता लगी रहती थी कि मेरे कुल और स्वरूपके अनुरूप स्त्री कहीं नहीं है एक वासवदत्ता नाम कन्या सुनाई देती है सो वह कैसे मिलसक्ती है और उज्जयिनीमें उसकन्या का पिता राजा चण्डमहासेनभी यह विचार करताथा कि मेरीकन्या के अनुरूप पति संसार भरमें कोई नहीं है एक उदयन नाम है सो वह सदैवका हमारा शत्रुहै तो किसप्रकार से उदयन हमारे वशीभूत होकर इस कन्याको ग्रहण करे एक उपायहै कि उदयन वनमें अकेला शिकारके शौक से सदैव हाथियों को पकड़ा करताहै वहीं से युक्ति पूर्वक उसको बँधवा मँगवाऊं और उससे अपनी कन्याको गान सिखवाऊं तब वह आप आपही मेरी कन्याको देखकर मोहित होगा इसप्रकार से वशीभूत होकर मेरा दामाद होजायगा इस के सिवाय उसके वश करनेका कोई दूसरा उपाय नहीं है १२ यह सोचकर राजा भगवती के मन्दिरको गया और भगवतीकी पूजा तथा स्तुतिकरके अपनी कन्याके लिये वही राजा उदयन वरमांगा तब उस मन्दिर से यह आवाज आई कि राजा तुम्हारा यह मनोरथ थोड़ेही दिनों मे पूरा होजायगा यह सुनकर प्रसन्न हुआ राजा बुद्धिदत्तनाम अपने मन्त्री से भी यही विचार करने लगा कि उदयन बड़ा मानी निर्लोभ तथा महाबलवान् है और उस के मन्त्री आदि सेवकभी उससे बड़ा अनुराग करते हैं इससे यद्यपि उसके

जाताहै यह देखकर वह उसक्षत्री के पासगया और समझाकर रा
कन्याको मांगनेलगा जब वहसमझाने से भी न माना तब श्रीद
ने उसका पैर पकड़कर घोड़ेपर से खींचलिया और उसे मारडाल
और उसी घोड़ेपर चढ़कर अन्य आनेवाले बहुत से घुड़सवारोंव
मारनेलगा फिर जो कुछ कि मारनेसे बचे वह उसके दिव्यबलव
देखकर भयखाकर भाग गये १२५ फिर श्रीदत्त राजकन्या समे
घोड़ेपर सवार होकर अपने मित्रों के पास चला थोड़ीदूर चलक
लड़ाई में बहुत घायल होनेवाला वह घोड़ा श्रीदत्त के उतर आ
पर गिरकर मरगया उस समय मृगाङ्कवती डर और कामसे बहु
थकीहुई होके प्यासीहुई तब राजकन्या को वहीं बैठालकर श्रीद
पानी लेनेके लिये बहुतदूर चलागया पानी ढूंढतेही ढूंढते उ
शाम होगई फिर जलके मिलने पर भी मार्ग भूल जानेके कारण
श्रीदत्त रात्रिभर उसी जङ्गलमें चिल्लाया किया प्रातःकाल जहां व
घोड़ा मरा पड़ाथा वहां आया और राजकन्याको वहां न पाया तब
वह अपने मृगाङ्क नाम खड्गको वृक्षके नीचे रखकर राजकन्य
को देखने के लिये वृक्षपर चढ़गया १२२ उसी समय उस रास्ते से
कोई लुटेरों का राजा आया और आकर उसने वृक्षके नीचे उत
कर उससे यह बात पूछनेलगा कि तुमको कोई स्त्री तो नहीं मिली
है तब वह बोला कि मेरे गांव को जाओ वहीं वह भी गई है और
वहीं आकर मैं तुझे यह खड्ग भी दूंगा यह कहकर उसने श्रीदत्त
को अपने आदमियों के साथ अपने गांवको भेजदिया १२६ उस
गांव में जाकर उन मनुष्यों ने उससे कहा कि थोड़ी देर सुस्तालो
तब श्रीदत्त थका तो थाही लुटेरों के राजा के घरमें क्षणभर सोगया
फिर उसकर क्या देखता है कि उसके पैरों में बेड़ी पड़ीहुई हैं और

साथ कोई उपाय नहीं चलसक्ता है परन्तु पहिले साम करना चाहिये यह सलाह करके राजाने एक दूत से कहा कि तुम वत्सदेश के राजासे जाकर यह कहो कि हमारी कन्या तुमसे गान विद्या सीखना चाहती है जो तुम्हें हम लोगोंपर स्नेह होय तो उसे यहां आनकर सिखाओ राजाके यह वचन सुनकर वहांसे चला हुआ दूत कौशाम्बी में आया और सम्पूर्ण अपने राजाका सँदेशा उदयन राजासे कह सुनाया दूत से यह अनुचित वचन सुनकर उदयन एकान्त मे अपने मन्त्री यौगन्धरायणसे बोला कि उस राजा ने अभिमान पूर्वक हमारे पास यह क्या सँदेशा भेजाहै और इस से उसका क्या अभिप्रायहै २१ उदयनके यह वचन सुनकर अपने स्वामी के हितका चाहनेवाला महामन्त्री यौगन्धरायण बोला कि हे महाराज ! संसार में लताके समान जो आपके शौककी शोहरत फैलरही है उसीका यह बुरा फलहै वह तुम्हें शौकीन समझ कर कन्याके लोभसे बुलाकर पकड़ना चाहताहै इसलिये तुम शौकों को छोड़दो क्योंकि गड्ढे में पड़ेहुए वनके हाथियो के समान शौकों मे डूबेहुए राजाओं को शत्रुलोग पकड़ लेतेहैं मन्त्री के यह वचन सुनकर उदयनने राजा चण्डमहासेन के पास अपने दूतके द्वारा यह सँदेश भेजाहै कि जो तुम्हारी कन्या हमसे गान विद्या सीखना चाहतीहै तो उसे यहांही भेजदो इसके उपरान्त उदयनने अपने मन्त्रियोंसे यह कहा कि अब हम जाकर राजा चण्डमहासेन को यहां बांधलाते हैं यह सुनकर महामन्त्री यौगन्धरायण बोला कि यह [illegible] और योग्यभी नहीं है क्योंकि उस

कानोंसे मानों स्वर्गको भी हँसतीहुई उज्जयिनी नाम नगरी है जिसमें श्रीशिवजी कैलास के निवासको छोड़कर महाकाल के स्वरूपको धारण करके निवास करते हैं उस नगरी में महेन्द्रवर्म्मा नाम बड़ा श्रेष्ठ राजाहुआ था उसके जयसेन नाम पुत्रहुआ और उसके बड़ा बलवान् महासेननाम राजा हुआ उस राजा ने अपने राज्य करते २ एक समय यह शोचा कि मेरे पास न मेरे लायक कोई खड्गहै और न कोई मेरे योग्य कुलीन स्त्रीहै यह शोचकर राजा भगवती चण्डिकाजी के मन्दिरमे गया और निराहार होकर बहुत दिन भगवती का भजन करता रहा और पीछे से अपने मांस को काट काट कर हवन करनेलगा तब प्रसन्न होकर साक्षात् भगवती ने उससे कहा कि हे पुत्र! तेरे ऊपर मैं प्रसन्नहूं तू इस मेरे खड्गकोले इसके प्रभावसे कोई शत्रु तुझको जीत न सकेगा और अंगारकासुर की अत्यन्त सुन्दर अंगारवती नाम कन्या तुझे शीघ्र ही मिलेगी तूने यह बड़ा प्रचण्ड अर्थात् घोर कर्म्म कियाहै इससे तेरा नाम चण्डमहासेन होगा ४० यह कहकर और खड्ग देकर भगवती अन्तर्द्धान होगई तब वह राजा अत्यन्त प्रसन्न होगया जैसे इन्द्रके पास वज्र और ऐरावत हाथी है उसीप्रकार उस राजाके पास भगवतीका दियाहुआ खड्ग और नडागिरिनाम हाथी है इन दोनों के प्रभाव से सुख पूर्व्वक राज्य करताहुआ वह राजा किसी समय शिकार खेलने को वनमे गया वहां जाकर दिनके प्रभावसे इकट्ठेहुए अन्धकारके समान श्यामरंगवाला एक बडाभारी सूअर दिखाईपड़ा तब राजाने उसके बहुतसे बाणमारे तिसपर भी उसकी देह में कोई घाव नहीं हुआ और राजाके रथ में टक्करमारकर वह अपने भिटे मे चलागया तब राजा भी रथको छोड़कर धनुषबाण

ध्नहै मे और धन लेकर क्याकरूंगी इससे हे माता! अब ऐसे वचन कभी मुझसे मत कहना यह सुनकर वह मकरदंष्ट्रा उस लोहजंघ के निकालने की तदवीर शोचनेलगी एकसमय मकरदंष्ट्राने किसी ऐसे राजपुत्र को देखा जिसका कि खजाना खाली होगया है और शस्त्रधारीपुरुष उसके साथमेंहैं उसको एकान्तमें लेजाकर मकरदंष्ट्रा ने कहा कि कोई निर्धन कामी पुरुष मेरे घरमें रहता है आज तुम आकर उसे निकालदो और मेरी लड़की को लो यह सुनकर वह राजपुत्र उसके यहां गया उस समय रूपणिका किसी देवमंदिर मे गई थी और लोहजंघ बाहर कहीं बैठाथा क्षणभर में बेखटके लोहजंघ वहां आया तब राजा के नौकरो ने उसे पकड़कर खूब लातों से पीटकर किसी विष्ठाके गढे मे ढकेलदिया तब लोहजघ किसी रीति से उसमें से निकलकर भागा इसके उपरान्त वहां आई हुई रूपणिका यह दशा देखकर बहुत व्याकुल होगई और राजपुत्र भी वहांसे चलागया लोहजंघ भी उस कुट्टनीसे ऐसा दुःखीहोकर किसी तीर्थपर प्राण देनेको चला चलते २ किसी वनमें धूप से बहुत व्याकुल होकर कहीं छाया ढूंढ़ने लगा वहां उसको कोई वृक्षतो नहीं मिला परंतु किसी हाथीका मृतक शरीर पड़ाथा जिसको कि स्यारोंने नोच २ मांसखाकर भीतरसे खाली करदियाथा उसमें वह घुसकर बहुत थकाहुआ लोहजघ सो गया क्योंकि उसमें बड़ी शीतल वायु आरहीथी इसके उपरान्त क्षणभरमें वहां बड़ा जल बरसनेलगा उससे उस चमड़ेका मुख सुकड़कर बंदहोगया और क्षणभरही में वहां इतना पानी बढ़ा कि वह सब चमड़ा बहकर गंगाजी में चलागया और गंगा में बहताहुआ समुद्र मे पहुंचगया वहां उस चमड़े को मांस समझकर गरुड़के वंशका

लेकर उसके पीछेही उस भिटेमेंघुसा बहुत दूर जाकर वहां एक वड़ उत्तम पुर दिखाई पड़ा राजा वहां जाकर आश्चर्य्यकरके किसी वावड़ी के किनारेपर वैठगया—वहां राजाने सैकड़ों स्त्रियों सेघिरीहु और धीरोंके भी धीर के छुटानेवाली एक कन्यादेखी ४८ यह कन्य भी राजाको वड़े प्रेम पूर्व्वक देखकर धीरे से वोली कि हे सुन्दर!तु कौनहो और किसलिये यहां आयेहो तव राजाने अपना सम्पूर्ण हाल कहदिया यह सुनकर वह कन्या अधीर होकर रोनेलगी तव राजाने उससे पूँछा कि तुम कौनहो और किसलिये रोतीहो यह सुनकर उसने कामके वशीभूत होकरकहा कि यह जो सूअर तुमने देखाथा वह अंगारक नाम दैत्यहै और मैं उसकी अंगारवती नाम कन्याहूं मेरे पिताका शरीर वज्रकाहै राजाओंके घरसे सौराजकन्या लाकर उसने मेरी दासी वनाई शापके दोषसे राक्षस होनेवाले मेरे पिताने तृषा और परिश्रम से व्याकुल होकर तुम्हें पाकर भी छोड़ दियाहै इससमय वह शूकरके रूपको त्यागकर सोरहाहै जव सोकर उठेगा तो अवश्य तुम्हे मारेगा इसीसे तुमको देख २ कर मेरे वार २ आंसूआरहे हैं ५७ अंगारवती के यह वचन सुनकर राजा वोला कि जो हमारे ऊपर तुम्हारा स्नेहहै तो तुम यह हमारा कहनाकरो कि जव तुम्हारा पिता सोकर उठे तव तुम उसके आगे रोनेलगना तव वह जरूर तुमसे दुःखका कारण पूँछेगा उससमय तुम उससे कहना कि अगर तुमको कोई मारडाले तो मेरी कौन गतिहोगी यही मुझे दुःखहै ऐसा करने से हमारा और तुम्हारा दोनों का कल्याणहोगा राजाके इनवचनोंको मानकर और राजाको छिपाकर अंगारवती जहां उसका पिता सोताथा वहां चलीगई जव वहदैत्य उठा तव वह रोनेलगी उसे रोते देखकर उसने पूँछा कि हे कन्या! तू

कोई पक्षी उसे उठाकर समुद्रके पारलेगया वहां जाकर उस पक्षीने उसे अपनी चोंचों से फाड़ा और उसके भीतर मनुष्य बैठाहुआ देखकर वहांसे उड़ गया तब लोहजंघने अपने को समुद्रके पार देखकर वह सब दशा उसने जागते हुए स्वप्नकी समान जानी इसके उपरान्त वहां दो बड़े भयंकर राक्षसों को देखकर लोहजंघ बहुत डरा और उसे देखकर वह राक्षसभी बहुत चकितहुए फिर रामचन्द्रजी की कथाका स्मरणकरके और समुद्र के पार आया हुआ मनुष्य देखकर उन दोनों राक्षसों के हृदयमें बड़ा डर उत्पन्न हुआ उन दोनों में से सलाहकरके एकने जाकर विभीषणसे यह हाल कहा विभीषणने भी भयखाकर उस राक्षससे कहा कि जाकर उस मनुष्य से कहो कि कृपाकरके हमारे पासआवे तब उस राक्षसने अपने स्वामीकी प्रार्थना लोहजंघ को सुनाई उसकी बात को मानकर लोहजंघ उसके साथ लंका को चला वहां अनेक २ प्रकार के सुवर्ण के स्थानों को देखता हुआ विभीषण के समीप पहुँचा और विभीषण को देखा विभीषण ने उसका अच्छेप्रकारसे अतिथिसत्कार करके पूछा कि हे ब्राह्मण ! तुम यहां किसरीति से आगये हो तब उस छली ने कहा कि मैं लोहजंघ नाम ब्राह्मण मथुरा में रहता हूं एक समय दरिद्र से व्याकुल होकर मैंने किसी मंदिरमें जाकर नारायण के सम्मुख निराहार होकर तप किया तब स्वप्न में मुझसे भगवान् ने कहा कि तुम विभीषणके पास जाओ वह मेरा बड़ा भक्तहै वह तुम्हें बहुत सा धन देगा तब मैंने कहा कि कहांतो विभीषण और कहां मैं वहां कैसे जाऊं यह सुनकर भगवान्ने कहा कि जाओ तुम आजही विभीषणको देखोगे भगवान् के यह कहनेपर शीघ्र मेरी नींद खुलगई और मैंने समुद्रपार अपने

क्यों रोरही है उसनेकहा कि अगर तुमको कोई मारडाले तो मेरी क्या गतिहोगी इसी दुःखसे मैं रोरहीहूं तब वह हँसकर बोला कि मुझे कौन मारसक्ताहै मेरा शरीर वज्रकाहै मेरे बायेंहाथमें एक छिद्र है उसे मैं धनुष से छिपाये रहता हूं इसप्रकार उस दैत्यने अपनी कन्याको समझाया और यह सब बातें इस छिपेहुए राजाने सब सुन लीं इसके उपरान्त वह दैत्य स्नानकरके मौनहोकर श्रीमहादेवजी का पूजन करनेलगा उससमय प्रगट होकर धनुष चढ़ायेहुए राजा ने उसे युद्ध करनेके लिये बुलाया तब उस दैत्यने बायें हाथको हटाकर यह इशाराकिया कि क्षणभर ठहरजाओ राजाने उसीसमय उस दैत्यके उसी छिद्रमे बाणमारा तब मर्म्मस्थान में चोटलगने से बड़ा घोर शब्दकरके वह दैत्य पृथ्वी मे गिरपड़ा और यह कहकर मरगया कि जिसने मुझ प्यासेको माराहै वह जो हरसाल मुझको जलसे तृप्त न करेगा तो उसके पांच मंत्री मरजायँगे तब राजा उस कन्याको लेकर उज्जयिनी अपनी नगरीको चलाआया और वहां आकर उसके साथ विवाहकिया तब उसके दो पुत्र उत्पन्नहुए एक गोपालक और दूसरा पालक उनके उत्पन्न होने में राजाने बड़ा इन्द्रोत्सव किया यह स्वप्न में राजासे इन्द्रने कहा कि हमारी कृपासे तुम्हारे एक बड़ी अपूर्व कन्या उत्पन्नहुई और उससमय यह आकाशवाणी हुई कि कामदेवका अवतार इस कन्याका पुत्र होगा और वह सम्पूर्ण विद्याधरोंका राजा होगा फिर राजाने यह कन्या इन्द्रकी दीहुई इसकारण उसका नाम वासवदत्ता रक्खा अब समुद्र में लक्ष्मी के समान उस राजाके यहां वह कन्या उसीके देनेही के लिये है हे राजा! इसप्रकार के प्रभाववाला वह चण्डमहासेन राजा जीतने के योग्य नहीं है परन्तु वह राजा अपनी कन्या तुम्हीको

को देखा उसके यह वचन सुनकर लंका में आना कठिन समझ कर विभीषण ने जाना कि यह बड़ा सिद्धहै और उससे कहा कि ठहरो हम तुमको धन देंगे तब विभीषणने यह शोचा कि मनुष्यों के मारनेवाले राक्षसों के साथ इसको नहीं भेजना चाहिये ऐसा विचारकर राक्षसों को भेजकर गरुड़ के वंश में उत्पन्नहुए किसी पक्षी के बच्चे को मँगवाया और वह पक्षी लोहजंघ को बुलाकर इसलिये दिया कि वह अपने मथुरा जाने के लिये अपने वश में करके उसे वाहन बनाके साथले तब लोहजंघ भी उसपर चढता हुआ कुछ काल तक लंकामे रहा एक दिन लोहजंघने विभीषण से पूछा कि मथुराकी सम्पूर्ण पृथ्वी काष्ठमय क्यों है यह सुनकर विभीषण ने कहा कि सुनो पहले एकसमय कश्यप के पुत्र गरुड जी प्रतिज्ञा से नागोंकी सेवा करती हुई अपनी माताको सेवकाई से छुड़ाने के लिये सेवकाई के मूलरूप अमृत को देवताओं से लाने को तैयार हुए और इसीलिये अपने पिता के समीप कुछ बलकारि भोजन मांगने को गये तब कश्यपजीने गरुड़के वचन सुनकर कहा कि समुद्र में एक बहुत बड़ा हाथी और कछुआ है वह दोनों अपने शाप से छूटचुके हैं उनको तुम लाकर खाजाओ पिता के यह वचन सुनकर गरुड़ जी उन दोनों जीवों को लेकर कल्पवृक्ष की शाखा पर बैठे तब गरुड़जी के भार से वह शाखा टूटगई तब नीचे बैठेहुए तपस्वी बालखिल्यों के बचाने के लिये गरुड़ जीने वह शाखाभी अपनी चोंच में दबाली और पिता की आज्ञा से जिससे कि लोग न मरने पावें इसलिये वह शाखा यहां निर्जनस्थान में डाली इसीकारण से मथुरा की सम्पूर्ण पृथ्वी काष्ठमयहै विभीषणसे इस कथाको सुनकर लोहजंघ बहुत खुशहुआ

देना चाहता है और वह अभिमानी है इसलिये अपने पक्षकी श्रेष्ठता भी चाहता है मुझे मालूम होता है कि, वासवदत्ता का विवाह अवश्य तुम्हारेही साथ होगा मन्त्री के यह वचन सुनकर राजा उदयन का चित्त वासवदत्ता में लगगया—

इस बीचमें उदयन के दूत ने चण्डमहासेन से सम्पूर्ण वृत्तान्त जाकरकहा यह सुनकर उसनेसोचा कि उदयनतो यहां आतानहीं है और कन्या वहां भेजनी नहीं है तो युक्तिसे उसे बँधवाकर यहां लाना चाहिये ऐसा विचारकर और मन्त्रियोंसे सलाहकरके अपने हाथी के समान एक बड़ा भारी यन्त्र का हाथी बनवाया और उस हाथी के भीतर बहुतसे वीर पुरुष बैठालकर वह हाथी विन्ध्याचल के वन में रखवादिया फिर उस हाथीको हाथी पकड़ने के बड़े शौक़ीन राजा उदयन के गोयन्दे लोगोंने देखा और राजा से आकर कहा कि हे राजा विन्ध्याचल के वनमें एकहाथी हम लोगों ने ऐसादेखा है कि जैसा इस संसार भरमें और कहीं नहीं है वह इतना बड़ा है और ऐसा मालूम होता है कि मानो चलने वाला दूसरा विन्ध्याचलही है उन गोयन्दों के ऐसे बचन सुनकर राजाने प्रसन्नहोकर उन्हें एकलाख अशर्फी दी फिर राजा यह शोचनेलगा कि अगर नड़ागिरिके समान हाथी मुझे मिलजा- यगा तो राजा चण्डमहासेन मेरे वशहोजायगा और वासवदत्ता को अपने आप मुझे देदेगा ऐसा विचार करते २ वह रात्रि व्यतीत होगई प्रातःकाल मंत्रियोंके वचनोंको न मानकर हाथी के लोभसे राजा गोयन्दों को साथ लेकर विन्ध्याचल के वनको चला और ज्योतिषियों ने प्रस्थान की लग्नका फल यह कहा था कि बन्धन होगा और कन्या मिलेगी इसका भी राजा ने कुछ विचार न

इसके उपरान्त जब लोहजंघ मथुरा को जानेलगा तब विभीषणने उसे बहुत से बहुमूल्य रत्न दिये और भक्ति से मथुरा में विष्णु भगवान् के आयुध बनाने के निमित्त सुवर्ण के शंख-चक्र-गदा-और पद्म दिये तब वह इन सब पदार्थों को लेकर और लाख योजन चलनेवाले उस पक्षीपर चढ़कर लोहजंघ लंकासे उड़ा और समुद्र के पार आकर बिना परिश्रम मथुरा में आगया फिर मथुरा के बाहर किसी शून्य स्थानमें उतरकर उसने सम्पूर्ण रत्न रखदिये और वह पक्षी बांधदिया फिर उसने एक रत्न लेजाकर बाजार में बेचा और उसी धनसे वस्त्र अलंकार और भोजनकी सब सामग्री खरीदी फिर उन पदार्थों को लेकर जहां टिकाथा वहां आया और उस पक्षी को भोजन खिलाकर आप भी भोजन किया सायंकाल के समय लोहजंघ वस्त्र आभूषणादिको धारणकरके और शंख-चक्र गदा और पद्मको लेकरके उसी पक्षीपर चढ़कर रूपणिकाके घर गया वहां जाकर आकाश में ही उसके घरके ऊपर खड़ाहोकर गंभीर वचनसे रूपणिकाको बुलाताभया उसके वचन सुनकर बाहर आईहुई रूपणिकाने आकाश में खड़ेहुए लोहजंघको नारायणके समान देखा तब लोहजंघने कहा कि मैं विष्णुहूं तेरे लिये आयाहूं यह सुनकर उसने कहा कि आइये कृपाकीजिये तब लोहजंघ उस पक्षीको बांधकर उसके घर में आया और भोग करने के उपरान्त उसी पक्षीपर चढ़कर चलागया प्रातःकाल रूपणिका यह विचारकर मौन होकर बैठी कि मैं विष्णुकी स्त्री देवता होगईहूं अब किसी मनुष्यसे नहीं बोलूंगी ; तब मकरदंष्ट्रा ने उससे पूछा कि हे पुत्री ! आज तू मौन क्यों है इसप्रकार माताके बहुत हठ करनेपर उसने बीचमें पर्दा डलवाकर रात्रिका सब वृ-

किया विन्ध्याचल के वनमे पंहुचकर हाथी के भागजाने के डरसे राजाने अपनी सेना दूर पर छोड़दी और गोयन्दों को साथ ले वीणा लिये राजा विन्ध्याचल के वन में घुसा वहां विन्ध्याचल के दक्षिण की ओर गोयन्दोंके द्वारा दिखायेहुए उस नकली हाथी को राजाने सच्चे हाथी के समान देखा अकेला राजा वीणा को बजाकर मधुर २ शब्द गाताहुआ और उसके पकड़ने का उपाय शोचताहुआ उसके पासतक चलागया गाने के ध्यान से और सन्ध्या के अन्धकार से राजाने उस नक़ली हाथीको नहीं पहचाना वह हाथी भी मानों गीत के रस से अपने कानों को उठाताहुआ राजाके पास आन २ कर बिचकताहुआ बहुत दूरतक राजाको लेगया इसके उपरान्त उस हाथी में से एकाएकी बहुत से हथियारबन्द पुरुषों ने राजा को घेरलिया उनको देखकर राजा क्रोध से चक्कू निकालकर जैसे कि अपने आगेवालोंसे लड़नेलगा वैसेही पीछेसे और लोगो ने आकर उसे पकड़लिया फिर इशारेसे आयेहुए अन्य लोगो के साथ उदयन को पकड़कर चण्डमहासेन के पास लेगये राजा चण्डमहासेन बड़े आदर पूर्वक पुरके बाहर आकर उदयन को अपने साथ उज्जयिनी पुरीमें लेगया फिर अपमान से कलंकित नवीन चन्द्रमा के समान उदयन को पुरवासियो ने भी बड़े आनन्द से देखा उसके गुणसे प्रसन्नहुए पुरवासियो ने उसके मारेजाने के सन्देह से सबने मिलकर यह कहा कि जो यह माराजायगा तो हम सब भी अपना प्राण देदेंगे तब राजा चण्डमहासेन ने उनको यह कहकर समझाया कि हम इन्हें मारेंगे नहीं किन्तु इनसे सन्धिकरेंगे इसके उपरान्त राजा चण्डमहासेन ने गान्धर्व विद्या सीखने के लिये वासवदत्ता नाम कन्या उस

त्तान्त कहा, यह सुनकर उसे बड़ा सन्देह हुआ, और रात्रिको उस ने अपने, आपही पक्षीपर चढ़कर आयेहुये विष्णुरूपी लोहजंघको देखा प्रातःकाल परदेमे बैठीहुई रूपणिकासे कुट्टनी मकरदंष्ट्राने प्रणाम करके कहा कि विष्णुभगवान् की कृपा से तुम देवी हो-गईहो मैं तुम्हारी माता हूं इसलिये मुझे कन्या होनेका कुछ फल देदे तुम विष्णुभगवान् की कृपा से दयाकरके यह कहो कि मेरी बुड्ढी माता इसी देह से स्वर्ग को चली जाय रूपणिका ने उसका कहना मानकर रात्रिको जब लोहजंघ आया उससे सब बातें कहीं तब उसने कहा कि तेरी माता बड़ी पापिनीहै वह प्रकट होकर स्वर्ग मे नहीं जासक्ती परन्तु एकादशी के दिन प्रातःकाल स्वर्ग का द्वार खुलता है वहां पहले महादेव जी के गण घुसकर भीतर जाते हैं उनके बीच मे तुम्हारी माता का भी उन्ही का सा वेष करके उसको भी मैं स्वर्ग के भीतर भेजदूंगा इसलिये तुम इस का सब शिर मुँड़वाकर पांच चोटी रखवादो इसके गले में मुण्डों की माला पहरादो एक तरफ इसका मुख काजल से रँगदो और एकतरफ सिन्दूर से रंगदो और इसके सब कपड़े उतारकर इसे नंगी करदो तब मैं इसको सुखसे स्वर्गको लेजाऊंगा यह कहकर लोह-जंघ तो चलागया और प्रातःकालही रूपणिकाने अपनी माताका वैसाही स्वरूप बनादिया जैसा कि लोहजंघ कहगया था तब वहभी स्वर्गजाने की तैयारीकरके बैठी रात्रिके समय फिर लोहजंघ वहां आया और रूपणिकाने अपनी माता उसे सौंप दीनी तब उस नङ्गी कुटनी को लेकर लोहजंघ उस पक्षीपर सवार होकर बहुत जोर से उड़ा आकाशमें जाकर लोहजंघने किसी देवमन्दिरके आगे एक बहुत ऊंचा पत्थरका खम्भा देखा उस खम्भे में एक चक्र लगाथा

वत्सराज राजा उदयनको सुपुर्द करदी और यहबातभी कहदी किहे उदयन ! तुम इसको गान्धर्व विद्या सिखलाओ तो तुम्हारा कल्याण होगा, और खेद मतकरो वासवदत्ताको देखकर उदयन के चित्तमें ऐसा स्नेह उत्पन्न हुआ कि उसका सम्पूर्ण क्रोध जातारहा उदयन को देखकर वासवदत्ता के नेत्र और मन दोनों उदयनमें लगगये नेत्र तो लज्जा से हटगये परन्तु मन न हटसकी इसके उपरान्त वासवदत्ता को गान सिखाता हुआ वह वत्सराज गान्धर्वशाला में रहनेलगा उस चित्तकी प्रसन्न करनेवाली वासवदत्ता के सन्मुख वीणा बजा २ कर वत्सराज गाया करताथा और वासवदत्ता भी बन्धन में पड़ेहुए वत्सराज की बड़ी सेवा किया करती थी इसबीच में जो उदयनके साथी लोग लौटकर कौशाम्बी पुरी में आये तो वहां की प्रजा उदयन के प्रेमसे क्रोधितहोगई और उज्जयिनी पर चढ़ाई करने की इच्छा करनेलगी यह देखकर रूमरवान् मंत्री ने सबको समझाया कि चण्डमहासेन बलसे जीतने के लायक नहीं है और वहां पर चढ़ाई करने से उदयन के भी शरीर की कुशल नहीं इसलिये वहां चढ़ाई न करनी चाहिये इस काम को बुद्धिसे ही करना चाहिये तब सम्पूर्ण प्रजाका राजा पर ऐसा अनुराग देखकर यौगन्धरायण ने रूमरवान् आदिक मंत्रियों से कहा कि तुम लोग यहांही रहो और इस राज्यकी रक्षाकरो समय पाकर अपना पराक्रम करना मैं वसन्तक को साथ में लेकर यहांसे जाकर अपनी बुद्धिसे उदयनको छुड़ालाऊंगा जैसे जलके लगनेसे बिजली की आग ज्यादह चमकती है उसीप्रकार आपत्ति मे जिसकी बुद्धि अधिक तेजी दिखाती है वही धीर पुरुष है और परकोटे का तोड़ना बेड़ियों का खोलना और अदृष्टि होजाना इन

उसी खम्भे पर उस लोहजंघने उस कुटनीको वह चक्र पकड़ाकर बैठाल दिया और कहा कि तुम थोड़ी देर यहां ठहरो जबतक मैं पृथ्वीपर होआऊं यहकहकर लोहजंघ वहांसे चलाआया उससमय वह कुटनी ऐसी शोभित होती थी कि मानो लोहजंघको क्लेश देनेका बदला लेनेकी पताका है इसके उपरान्त रात्रि के समय उसी देवमन्दिर में जागरण करने को आयेहुये लोगों को देख कर लोहजंघ आकाशसे बोला कि हे लोगो! आज तुम्हारे ऊपर सबका संहार करनेवाली महामारी गिरेगी इसलिये तुम भगवान् विष्णुकी शरण में जाओ यह आकाशवाणी सुनकर डरेहुए सब मथुरावासी भगवान् के आगे स्वस्त्ययन पढनेलगे और लोहजंघ भी आकाश से उतरकर अपने उस सम्पूर्ण वेषको खोलकर सब लोगोंके बीचमें छिपकरठहरा और वह कुटनी यह शोचनेलगी कि अभीतक विष्णुभगवान् नहीं आये और मैं अभीतक स्वर्ग को नहींगई यह शोचते २ जब ऊपर न ठहरसकी तब डरकर हाय२ मैं गिरी यह कहकर चिल्लानेलगी यह सुनकर उस महामारी के गिरने के डरसे व्याकुलहुए विष्णुभगवान् के आगे खड़ेहुए लोगबोले कि हे देवि! न गिरो २ इसके उपरान्त महामारी के गिरने के डरेहुए सम्पूर्ण मथुरानिवासी बाल वृद्धोंने वह रात्रि बड़ी दिक्कतसे व्यतीतकी प्रातःकाल उस खम्भेमें लटकीहुई कुटनी को देखकर राजा समेत सब पुरवासियोंने उसे पहचाना तब सबका भय दूरहोगया और हँसनेलगे यह वृत्तान्त सुनकर रूपणिकाभी वहां आई और आश्चर्य्यपूर्वक अपनी माताकी यह दुर्दशा देखकर उसने उसे खंभे परसे उतरवाया तब सब लोगोंने यह हाल पूछा और उसने सब वर्णन किया इसके उपरान्त किसी सिद्धका यह काम समझकर

सब बातों की सब रीति मुझे मालूम है यह कहकर और सम्पूर्ण राज्य का कार्य्य रुमण्वान् को सौंपकर यौगन्धरायण दूसरे वसन्तकनाम मंत्री को साथ लेकर कौशाम्बी से चला और बड़े भयंकर प्राणियों से युक्त अत्यन्त दुर्गम विन्ध्याचलके वनमें घुसा वहां विन्ध्याचल के पूर्व्वदिशामे रहनेवालेउदयन के मित्र पुलिन्दकनाम किसी म्लेच्छों के राजा के यहां गया और उससे कहा कि तुम बहुतसी सेनाको अपने यहां तैयार रक्खो क्योंकि हम इसी मार्ग होकर उदयन को लेकर आवेंगे फिर वहां से चलकर वसन्तक समेत यौगन्धरायण उज्जयिनी में पहुंचा और वहां जाकर मुर्दोंकी गन्धिसे युक्त वेताल भूतादिकों से व्याप्त महाकालके श्मशान में गया वहां के वेतालादि भूत ऐसे काले थे कि दूरसे देखने में चिता के धुएं के ढेरसे मालूम होते थे उस श्मशान में यौगन्धरायण को देखकर प्रसन्न हुए योगेश्वरनाम ब्रह्मराक्षस ने आकर यौगन्धरायणसे मित्रताकरली उस ब्रह्मराक्षस की बताईहुई युक्तिसे यौगन्धरायण ने अपना स्वरूप बदलकर कुबड़ा बुड्ढा मतवाला तथा गंजा धारण करलिया जिससे कि सबलोग उसे देखकर हँसनेलगे और उसी युक्तिसे वसन्तक का भी रूप बदल दिया और उसका पेट ऐसा फूलाहुआ बनाया कि उसके पेटकी सब नसें दिखाईदेने लगीं और उसका मुख बिगाड़कर बड़े२ दांत बनादिये इसके उपरान्त खाली वसन्तकको राजाका महलके पास भेजकर नाचता गाताहुआ और लड़कों से घिराहुआ यौगन्धरायण उज्जयिनी में घूमता २ राजा के महल के पास पहुंचा वहां उसने अपने खेल तमाशों से रानियों को बहुत खुश किया यह बात वासवदत्ताने भी सुनी और दासी भेजकर उसे अपने पास बुलवाया क्योंकि लड़-

राजा ब्राह्मण और वनियें सब बोले कि जिसने अनेक पुरुषों की चाहनेवाली इस कुटनी को छलाहै वह प्रकट होवे उसका फैसला कर दियाजावे यह सुनकर लोहजंघ वहां आया और पूँछनेपर सब हाल पिछला कहकर विभीषण के भेजेहुए बड़े मनोहर शंख चक्र गदा पद्म देदिये इसके पीछे सम्पूर्ण मथुरानिवासियों ने उसका फैसलाकरके राजाकी आज्ञा से रूपणिकाको खुद मुख्तार करदिया तब बहुतसे धन तथा रत्नोंको लेकर अपनी प्रियाके साथ लोहजंघ उस कुटनी से अपना बदला लेकर सुखपूर्व्वक रहनेलगा इस प्रकार उस विगड़े हुए स्वरूपवाले वसन्तक से इस कथाको सुनकर वासवदत्ता बन्धनमें पड़ेहुए राजा उदयनके समीप आनन्दपूर्व्वक रहने लगी—

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तदश प्रदीप. १७॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टादशप्रदीपः १८॥

दुष्करंकुर्वतेकार्य्यंमन्त्रिणोबुद्धिमत्तराः॥
बद्धंविमोचयामास रुदयन्तंसुबन्धनात १८॥

(अर्थ) अत्यन्त बुद्धिमान् मन्त्री लोग महाकठिन कामको भी करलेते हैं जैसे सुसरेके गृह बंधनमें पड़े राजा उदयनको मंत्रियोंने रानीसहित छुटाया—१८॥

इसके उपरान्त वासवदत्ता अपने पिताके पक्षको छोड़कर उदयनसे बड़ा प्रेम करनेलगी यह बात जानकर यौगन्धरायण मन्त्री अन्य सब लोगोंसे छिपकर उदयनके पास आया और वसन्तकके संन्मुख एकान्तमे जाकरबोला कि हे राजा चंडमहासेनने आपको मायासे पकड़रक्खाहै अब अपनी कन्या देकर तुमको आदरपूर्वक छोड़ा चाहताहै तो इसकी कन्याहीको हमलोग अपने आपहरले-

कपन में खेल वहुत अच्छा मालूम होताहै वहां जाकर वँधेहुये उदयन को देखकर यौगन्धरायणके आंसू निकल आये और उसने राजा से कुछ इशारा किया और राजाभी उसे छिपेहुए वेपमें पहचान गया इसके उपरान्त यौगन्धरायणने एक ऐसी युक्ति की कि वासवदत्ता और वासवदत्ताकी सब सखियां उसे न देखनेलगी केवल राजाही उसको देखताथा तब वह सम्पूर्ण बोलीं कि वह मतवाला एकाएकी कहीं चलागया उनके यह वचन सुनकर और उसे आगे देखकर राजाने जाना कि इसने यह बात योगवल से की है यह जानकर उसने वासवदत्तासे कहा कि जायके सरस्वती के पूजन की सामग्री ले आओ यह सुनकर वह अपनी सखियोंसमेत वहांसे चलीगई तब राजाको अकेला पाकर यौगन्धरायणने वेड़ी काटने की युक्ति और वीणा के द्वारा वासवदत्ता के वशीकरणकी युक्ति राजाको वताई और कहा कि हे राजा ! द्वारेपर वसन्तक वेप वदले हुए खड़ाहै उसे भी आप भीतर बुलवालीजिये जब वासवदत्ता आप पर विश्वास करनेलगेगी तब मैं जैसा कहूंगा वैसाकरना कुछ दिन ठहरजाओ यह कहकर यौगन्धरायण तो चलागया और वासवदत्ता सरस्वती के पूजन की सब सामग्री लाई तब राजा उदयनने उससे कहा कि दरवाजे पर कोई ब्राह्मण खड़ाहै उसे सरस्वती के पूजन की दक्षिणा के लिये बुलवाओ उसके कहने से वासवदत्ता ने उसे द्वारपालसे बुलवाया तब बसन्तक वहां आकर राजाको देखकर शोक से रोनेलगा तब राजाने भेदको छुपाने के लिये उससे कहा कि हे ब्राह्मण! मैं तुम्हारे रोग से विगड़ेहुए सब शरीर को अच्छा करदूंगा मतरोओ तुम हमारेपास यहांही रहाकरो यह सुनकर वसन्तकने कहा कि यह आपकी बड़ी कृपाहै उसके वि-

चलैं इसप्रकार से इस अभिमानी का बदला भी हो होजायगा और संसारमें भी हमलोगोंका अपयश न होगाइसराजाने अपनी वासवदत्ता कन्याको एक भद्रवतीनाम हथिनीदी है उसहथिनीकी चालके समान नड़ागिरि हाथीके सिवाय और किसीहाथीकी चाल नही है और उसे देखकर नड़ागिरि भी नही लड़ता है उस हथिनी का आपाढक नाम महावत है उसे मैंने बहुतसा धन देकर मिला लिया है तो तुम उसी हथिनी पर वासवदत्तासमेत चढकर अपने हथियारोंको लेकर यहां से भागजाओ और यहां का जो प्रधानहै वह हाथियों की चेष्टाओंको जानताहै उसे मद्यपिलाकर ऐसामत-वाला करदेना जिससे कि वह कुछभी न जाने और मैं मार्गकी रक्षा केलिये तुम्हारे मित्र म्लेच्छोंके राजा पुलिन्दक के पास पहलेही से जाताहूं यह कहकर योगन्धरायण चलागया उदयनने भी यह सब बातें मानली और जब वासवदत्ता उसकेपासआई तब अनेकप्रकार की सब बातों को मानकर चलने का निश्चय करके आपाढ़क को बुलाकर हथिनी के तैयार करने को कहा और देवताओं की पूजा के बहाने से वहां के प्रधान को उसके साथियोंसमेत मद्य पिला-कर मतवाला करदिया तब सायंकाल के समय जब कि मेघ खूब गरज रहे थे उससमय आपाढ़क उस हथिनी को तय्यार करके ले आया तैयार हुई हथिनी ने जो शब्द किया उसे सुनकर हाथियों के शब्दका जाननेवाला प्रधान मद्यके कारण गड़बड़ाते वचनों को बोला कि यह हथिनी कहती है कि आज में तिरसठयोजन जाऊंगी परंतु मतवाले महावतों ने उसके यह वचन नही सुने और उस मतवाले के यह वचन भी विश्वास के योग्य न थे इस के उपरान्त उदयन योगन्धरायण की बताई हुई युक्ति से अपने

गड़ेहुए स्वरूपको देखकर राजाको हँसीआगई तब राजाको हँसता हुआ देखकर और उसके मतलबको समझकर वसन्तक भी अपने स्वरूपको बहुत बिगाड़कर हँसनेलगा उसे हँसते देखकर और अपने एक खिलौने के समान समझकर वासवदत्ता भी हँसी और बहुत खुशहुई वासवदत्ताने खेलही में उस वसन्तकसे पूँछा कि तू क्या काम जानताहै उसनेकहा कि मैं कथा कहना जानताहूं तब वासवदत्ता बोली कि अच्छा कोई कथा कहो तब वासवदत्ता को प्रसन्न करने के लिये हँसी और आश्चर्य से युक्त एक रसीली कथा वसन्तक कहनेलगा ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषोडश प्रदीप १६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तदशःप्रदीपः ॥ १७ ॥

शठंप्रतिचरेत्शाठ्ययथामकरदंष्ट्रया ॥
विष्ठाकूपेपातितोसौलोहजंघस्तथाकरोत १७ ॥

(अर्थ) शठ के साथ शठता ही करनी जैसे मकरदंष्ट्रा–रूपणिका नाम वेश्याकी माताने (लोहजंघ) नामी किसी निर्धन को विष्ठाके कूप में गिराया तो तिसने भी फिर तैसाही किया अर्थात् उसका मूंड़ मुड़ाया कालाकरवाय उसे डाकिनी बनाय ऊँचे चक्रपर चढाय गिराय करके मरवाई १७ ॥ जैसे—

मथुरामें रूपणिका नाम एक बड़ी सुन्दर वेश्या रहतीथी और यमदंष्ट्रा नाम एक बुढ़िया उसकी माताथी जो तरुण लोग उस वेश्याके पास आते थे उनको उसकी मातासे बड़ी तकलीफ मिलती थी एक समय रूपणिका पूजन करनेके लिये किसी मन्दिर को जारही थी वहां उसने दूरसे एक पुरुष देखा उसे देखकर उस का चित्त उसपर चलायमान होगया और अपने माताके सम्पूर्ण

बन्धन को खोल के और अपनी वीणा तथा शस्त्रोंको लेके वासव-दत्ता की सखी कांचनमाला और वसन्तकसमेत उस हथिनीपर चढ़ा इसके उपरान्त महावतसमेत वह चारों रात्रिके समय मत-वाले हाथी से परकोटे को तुड़वाकर उज्जयिनी से बाहर निकले उसस्थान के रक्षा करनेवाले वीरबाहु तथा तालभटनाम दो वीर राजपुत्रों को उदयन ने मारडाला फिर वहां से राजा उस हथिनी पर चढकर अपने सब साथियोंसमेत वेगपूर्वक चला उस समय उज्जयिनी में उनदोनों रक्षकोंको मरा देखकर अन्य रक्षकोंसे राजा चंड महासेनको मालूमहुआ कि उदयन वासवदत्ता को हरलेगया इस बात के शहरमें फैल जानेपर चंड महासेनका पालकनामपुत्र नड़ागिरिपर चढ़कर उदयनके पीछे दौड़ा पीछे आयेहुए पालक को देखकर उदयनने वाहुओं के द्वारा उससे बड़ा युद्धकिया और नड़ागिरि ने उस हथिनी को देखकर प्रहार नहीं किया उसीसमय पालकका भाई गोपालक अपने पिताकी आज्ञा से पीछे से आ-कर पालक को लौटा लेगया तब उदयन भी वहांसे धीरे २ साव-धानहोकर चला उस रात्रि के व्यतीत होजानेपर दोपहरके समय विन्ध्याचल के वनमें पहुँचकर तिरसठयोजन आईहुई वह हथिनी प्यासीहुई तब अपने साथियोंसमेत राजा के उतर आनेपर उसह-थिनी ने पानी पिया और पानीकेही दोषसे उसीसमय मरगई ह-थिनी को मरा देखकर राजा और वासवदत्ता दोनों को बड़ा खेद हुआ तब यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा ! मैं मायावतीनाम विद्याधरी की स्त्री हूं इतने समयतक मैं शापके दोषसे हथिनी रही आज मैंने तुम्हारे साथ इतना उपकार कियाहै अब आगे होनेवाले तुम्हारे पुत्रका भी उपकार करूंगी यह तुम्हारी स्त्री वासवदत्ता भी

उपदेश भूलगई तब उसने अपनी दासी से कहा कि इस पुरुष से जाकर कहदो कि तुम हमारे मकान पर आना दासी ने उससे उसीप्रकार से कहा तब वह पुरुष थोड़ा शोचकर बोला कि मैं लोहजंघ नाम निर्धन ब्राह्मणहूं रूपणिका के यहां तो धनवानो को आना चाहिये मैं आकर क्या करूंगा यह सुनकर दासीने कहा कि वह तुमसे धन नहीं लेना चाहती है तब उसने कहा कि बहुतअच्छा मैं आऊंगा दासी के मुखसे इस बातको सुनकर रूपणिका अपने घरमें जाकर उसका इन्तिज़ार करने लगी क्षणभर में लोहजंघ भी वहां आ पहुँचा तब उसकी माताने देखा कि यह आज निर्धन पुरुष कहां से आया है उसे आया देखकर रूपणिकाने बड़ी प्रसन्नतासे उसे अपने गले में लगा लिया और बड़े आदरसे उसे भीतर लेगई लोहजंघके पुरुषार्थसे वशीभूत हुई रूपणिका ने अपने जन्मको धन्य जाना इसके उपरान्त रूपणिका ने और २ लोगों का संग छोड़दिया और सुखपूर्वक उसी तरुण पुरुष के साथ संभोग करने लगी यह देखकर सब वेश्याओं को शिक्षा देनेवाली मकरदंष्ट्री नाम उसकी माताने उससे एकान्त में कहा कि हे पुत्री ! तुम इस निर्धन पुरुष की सेवा क्यों करतीहो सज्जन लोग चाहें मुर्दे को तो छूभी लेते हैं परन्तु वेश्या निर्धन को कभी नहीं छूती क्या तुम इस बातको भूलगई हो कि कहां तो प्रेम और कहां वेश्यापन प्रेमयुक्त वेश्याका बहुतकाल तक उरूज नहीं रहता वेश्याको चाहिये कि नटनी के समान ऊपरी प्रेम दिखावे इससे तुम इस कङ्गाल को छोड़दो और अपने को खराब मतकरो माता के यह वचन सुनकर रूपणिका बड़े क्रोधसे बोली कि खबरदार ऐसा कभी मत कहो यह मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारा है मेरे पास बहुतसा

चलैं इसप्रकार से इस अभिमानी का बदला भी हो होजायगा और संसारमें भी हमलोगोंका अपयश न होगाइसराजाने अपनी वासवदत्ता कन्याको एक भद्रवतीनाम हथिनीदी है उसहथिनीकी चालके समान नड़ागिरि हाथीके सिवाय और किसीहाथीकी चाल नही है और उसे देखकर नड़ागिरि भी नही लड़ता है उस हथिनी का आपाढ़क नाम महावत है उसे मैंने बहुतसा धन देकर मिला लिया है तो तुम उसी हथिनी पर वासवदत्तासमेत चढ़कर अपने हथियारोंको लेकर यहां से भागजाओ और यहां का जो प्रधानहै वह हाथियों की चेष्टाओंको जानताहै उसे मद्यपिलाकर ऐसामत- वाला करदेना जिससे कि वह कुछभी न जाने और मैं मार्गकी रक्षा केलिये तुम्हारे मित्र म्लेच्छोंकेराजा पुलिन्दक के पास पहलेही से जाताहूं यह कहकर योगन्धरायण चलागया उदयनने भी यह सब बातें मानली और जब वासवदत्ता उसकेपासआई तब अनेकप्रकार की सब बातों को मानकर चलने का निश्चय करके आपाढ़क को बुलाकर हथिनी के तैयार करने को कहा और देवताओं की पूजा के बहाने से वहां के प्रधान को उसके साथियोंसमेत मद्य पिला- कर मतवाला करदिया तब सायंकाल के समय जब कि मेघ खूब गरज रहे थे उससमय आपाढ़क उस हथिनी को तय्यार करके ले आया तैयार हुई हथिनी ने जो शब्द किया उसे सुनकर हाथियों के शब्दका जाननेवाला प्रधान मद्यके कारण गड़बड़ाते वचनों को बोला कि यह हथिनी कहती है कि आज मैं तिरसठयोजन जाऊंगी परंतु मतवाले महावतों ने उसके यह वचन नहीं सुने और उस मतवाले के यह वचन भी विश्वास के योग्य न थे इस के उपरान्त उदयन योगन्धरायण की बताई हुई युक्ति से अपने

बन्धन को खोल के और अपनी वीणा तथा शस्त्रोंको लेके वासवदत्ता की सखी कांचनमाला और वसन्तकसमेत उस हथिनीपर चढ़ा इसके उपरान्त महावतसमेत वह चारों रात्रिके समय मतवाले हाथी से परकोटे को तुड़वाकर उज्जयिनी से बाहर निकले उसस्थान के रक्षा करनेवाले वीरबाहु तथा तालभटनाम दो वीर राजपुत्रों को उदयन ने मारडाला फिर वहां से राजा उस हथिनी पर चढ़कर अपने सब साथियोंसमेत वेगपूर्वक चला उस समय उज्जयिनी में उनदोनों रक्षकोंको मरा देखकर अन्य रक्षकोंसे राजा चंड महासेनको मालूमहुआ कि उदयन वासवदत्ता को हरलेगया इस बात के शहरमें फैल जानेपर चंड महासेनका पालकनामपुत्र नड़ागिरिपर चढ़कर उदयनके पीछे दौड़ा पीछे आयेहुए पालक को देखकर उदयनने बाहुओं के द्वारा उससे बड़ा युद्धकिया और नड़ागिरि ने उस हथिनी को देखकर प्रहार नहीं किया उसीसमय पालकका भाई गोपालक अपने पिताकी आज्ञा से पीछे से आकर पालक को लौटा लेगया तब उदयन भी वहांसे धीरे २ सावधानहोकर चला उस रात्रि के व्यतीत होजानेपर दोपहरके समय विन्ध्याचल के वनमें पहुँचकर तिरसठयोजन आईहुई वह हथिनी प्यासीहुई तब अपने साथियोसमेत राजा के उतर आनेपर उसहथिनी ने पानी पिया और पानीकेही दोषसे उसीसमय मरगई हथिनी को मरा देखकर राजा और वासवदत्ता दोनों को बड़ा खेद हुआ तब यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा! मैं मायावतीनाम विद्याधरों की स्त्री हूं इतने समयतक मैं शापके दोषसे हथिनी रही आज मैंने तुम्हारे साथ इतना उपकार कियाहै अब आगे होनेवाले तुम्हारे पुत्रका भी उपकार करूंगी यह तुम्हारी स्त्री वासवदत्ता

ओरसे राजाको जुरमाना भी दिया उसधनको और अपने पतिको लेकर सम्पूर्ण सज्जनों से प्रशंसा कीगई देवस्मिता अपनी पुरीमें चलीआई और उसे फिर कभी अपने पतिका वियोग नहीं हुआ इसीप्रकार बड़े उत्तम कुलों में उत्पन्न होनेवाली स्त्रियां बड़े उत्तम आचरणों से सदैव अपने पतिका सेवन करती हैं क्योंकि पतिही उनका परमदेव है बसन्तक के मुखसे इस मनोहर कथाको सुनकर पिताके घरको त्याग करने से लज्जित वासवदत्ताके मनमें उदयन् पर और भी अधिक भक्ति बढी ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे ऊनविंश प्रदीपः १९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे विंशः प्रदीपः २० ॥

अपकारंनकस्यापि प्रकुर्य्याद्बुद्धिमान्नरः ॥
बालोप्यपकृतोदुःखप्रदोनार्यायथाभवत ॥ १ ॥

(अर्थ) बुद्धिमान् जन किसी का भी अपकार न करे जैसे उप माता करके अपकार किया लड़काभी उसका क्लेशकारक हुआ अर्थात् पिताको उसपर क्रुद्ध किया २० ॥

रुद्रशर्म्मा नाम किसी ब्राह्मणकी दो स्त्रियां थी उनमें से एक स्त्रीके पुत्र उत्पन्न हुआ और वह मरगई तब उस ब्राह्मण ने वह लड़का अपनी दूसरी स्त्रीको सौंप दिया वह स्त्री उस लड़के को बहुत रूखा भोजन देती थी इससे उस बालकका शरीर बहुत खुरखुरा और पेट बहुत बड़ा होगया बालककी यह दशा देखकररुद्र शर्म्मा ने अपनी स्त्री से कहा कि मातासे रहित मेरे बालक की तुमने क्या दशा करडाली तब स्त्रीने कहा कि मैं तो इसे बहुतघी खिलाती हूं परन्तु यह इसी प्रकार बना रहता है मैं क्या करूं यह

मानुषी नहीं है किन्तु देवी है किसी कारण से पृथ्वी में उत्पन्नहु है यह सुनकर प्रसन्न होनेवाले उदयन ने वसन्तकको पुलिन्दव नाम अपने मित्रसे अपने आगमन का वृत्तान्त कहने के लिये आगे भेजा और आप स्त्रीसमेत धीरे २ चला उससमय बहुत लुटेरों ने उसे आकर घेरलिया तबराजाने धनुषवाण लेकर लुटेरे को वासवदत्ताके आगे मारडाला उसीसमय राजा का मित्र पु लिन्दक यौगन्धरायण और वसन्तक समेत वहां आगया औ उन लुटेरों को रोककर प्रणाम करके वासवदत्तासमेत राजा उद यन को अपने गांव में लेगया उस गांवमें बनमें कुशाओं से फ हुए पैरवाली वासवदत्ता और राजा रात्रिभर रहे प्रातःकाल यौ गन्धरायणसे बुलायागया रुमण्वान्नाम सेनापति सेनाको लेकर राजाके लेने को आया उसके संग इतनी सेना आई कि सम्पूर्ण विन्ध्याचलका बन भरगया इसके उपरान्त अपनी सेना के डेरों में जाकर उसीबनमें उज्जयिनी की वार्त्ता जाननेकेलिये राजा ठहरा रहा वहां ठहरेहुये राजासे यौगन्धरायण के एक मित्र बनियें ने उज्जयिनी से आकरकहा कि हे राजा! आपपर राजा चंड महासेन

सुनकर ब्राह्मणने भी जाना कि इस बालकका ऐसा स्व
होगा क्योंकि स्त्रियों के भूंठे भोले वचनोंको कौनसत्यनहीं
ताहै तब वह बालक छोटीही अवस्था में कुरूप होगया इस
उसका नाम बालविनष्टक होगया वह बालविनष्टक पां
कीही अवस्था में बड़ा बुद्धिमान् था इससे उसने अपने
शोचा कि यह सौतेली माता मुझे बड़ा कष्ट देती है इस
बदला लेना चाहिये यह विचार कर जब उसका पिता
दरबार से लौटा तब उसने एकान्तमें अपने पितासे तुतला
कि हे पिता मेरे दो पिताहैं इसी तरह वह रोज अपने पि
कहने लगा तब उस ब्राह्मण ने अपनी स्त्रीको व्यभिचारि
मझकर उसका स्पर्श करनाभी छोड़ दिया तब उस स्त्रीने
कि विना अपराध के मेरा पति मुझसे क्यों खफ़ाहै शाय
बालविनष्टकने कुछ उपद्रव किया होगा यह शोचकर उसने
विनष्टक को आदर पूर्वक स्नान कराके और उत्तम भोजन
वाके गोदी में बैठाल कर उससे पूछा कि हे पुत्र तुमने अपने
को मेरे ऊपर क्यों खफ़ा करवा दियाहै यह सुनकर बालवि
ने कहा कि जो तुम इतने पर भी न मानोगी तो मैं कुछ अ
अधिक खफा करवादूंगा तू सदैव अपने बालक को अच्छी
रखती है और मुझे कष्ट दिया करती यह सुनकर उस स्त्रीने
खाकर कहा कि अब मैं तुझे कभी दुःख न दूंगी तो अब तू
पिताको मेरे ऊपर प्रसन्न करवादे तब उस बालकने कहा कि
तब कोई दासी उसे शीशा दिखावे तब मैं
उसके वचन मानकर उसने एक दासी

वसन्तक पतियों में बड़ीभक्ति की बढ़ाने वाली यह कथा वासवदत्ता से कहनेलगा ॥

इतिश्रीदृष्टांतप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टादशः प्रदीपः ॥ १८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकोनविंशः प्रदीपः ॥ १९ ॥

पुत्रेष्ट्यापुत्रलब्धिर्हिहोकृतोमहती भवेत् ॥
धनदत्तस्यैकपुत्रो होमेन बहवोऽभवन् ॥ १९ ॥

(अर्थ) पुत्रेष्टि यज्ञ करने से एक पुत्रसे भी कई पुत्र होसक्तेहैं जैसे धनदत्त बनियें ने एक पुत्रको काटके हवन किया तो तिसके गन्धको सूंघने से उसकी सब स्त्रियें गर्भवतीभईं और उनसे सैकड़ों पुत्र उत्पन्न भये १९ ताम्रलिप्ती नाम नगरी में धनदत्त नाम एक बड़ा धनवान् बनियां रहताथा उसके कोई पुत्र न था इसलिये बहुतसे ब्राह्मणोंको बुलाकर नम्रतापूर्वक उसने कहा कि आपलोग ऐसा यत्नकीजिये जिससे मेरे पुत्रहों तब ब्राह्मणबोले कि यहबात कुछ कठिन नहीं है क्योंकि ब्राह्मणलोग वैदिककर्मों से सब कार्यों को सिद्धकरसक्ते हैं पूर्व समयमें किसी राजा के पुत्र नहींथा और एकसौ पांच उसकी रानी थीं तब पुत्रेष्टि नाम यज्ञ करने से उस राजाके जन्तुनाम एक पुत्र उत्पन्न हुआ उससे सब रानियोंको बड़ी प्रसन्नताहुई एक समय घुटनों से चलतेहुये उस बालक की जांघ में चींटी ने काटखाया तब वह बालक बहुत चिल्लाकर रोनेलगा बालकके रोने से सम्पूर्ण रानियां बहुत घबराईं और राजा भी हे पुत्र हे पुत्र कहकर साधारण पुरुष के समान चिल्लानेलगा क्षणभर में पीछे बालक के सावधान होजानेपर राजाने बड़े दुःखके कारणरूप एक पुत्रके होनेकी बड़ी निन्दाकी और ब्राह्मणों से बुलाकर पूछा कि ऐसा कोई उपाय है जिससे मेरे बहुतसे पुत्रहोजायँ तब

समय बालविनष्टक ने अपने पिताको उसी का प्रतिबिम्बदिखाकर कहा कि हे पिता यहही मेरा दूसरा पिताहै यह सुनकर रुद्रशर्माका सन्देह दूर होगया और बिना कारणके दूषित हुई अपनी स्त्री पर प्रसन्न होगया ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे विंश प्रदीप २० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे एकविंश प्रदीपः

औषधैरसाध्यरोगेतु विचिकित्सेतबुद्धितः ॥
राज्ञःस्फोटोयथावैद्यैः स्फोटितःकथनान्मृते २१ ॥

(अर्थ) जब रोग औषधियो से साधने में न आवे तब बुद्धि बलसेही उसकी चिकित्सा करनी—जैसे—राजाका फोड़ा वैद्यों ने रानी का मरण कहकर फुड़वादिया २१ ॥

पूर्वसमयमें एक महासेननाम राजा था उसपर किसी बलवान् शत्रुने चढ़ाई की तब मंत्रियो ने राज्य बचाने की इच्छा से उस अत्यन्त बलवान् शत्रुको राजासे कर दिलवादिया तब कर देकर राजा महासेन को यह समभकर कि मैंने शत्रुको करदियाहै बड़ा शोचहुआ और इसी शोच से राजाके हृदय के भीतर एक फोड़ा होगया तब राजा उसकी पीड़ासे मरनेलगा राजा की यह दशा देखकर किसी बुद्धिमान् वैद्यने इस फोड़े को औषधियो से साध्य न समभकर राजासे कहा कि हे राजा तुम्हारी रानी मरगई यह सुनकर राजा एकाएकी पृथ्वी मे गिर पडा और बड़े शोकसे वह फोड़ा आपही फूट गया तब रोग से छूटे हुए राजाने अपनी रानी पाई और शत्रुओको भी जीता ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकविंश प्रदीप २१ ॥

ब्राह्मणों ने कहा कि यहांपर यह उपाय है कि तुम्हारे इस लड़के को मारकर इसके सब मांसका अग्नि में हवन कियाजाय उसके सूंघने से तुम्हारी सब रानियों के पुत्रहोगें यहसुनकर राजाने वह सब उसीप्रकार से करवाया तब राजाके जितनी रानियां थीं इसी प्रकार हवन करने से उतनेही पुत्रहुये ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेएकोनविंश प्रदीप ॥ १९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेविंशः प्रदीपः २० ॥

भूषणन्दूषणं स्त्रीणां चातुर्य्यम्भूषणम्परम् ।
चातुर्य्येणयुतासाध्वी स्वीयधर्ममरक्षयत् २० ॥

(अर्थ) साधारण आभूषण तो स्त्रियों के दूषण दोषकारक अर्थात् दुःखदायक भी हैं पर यह चतुराई स्त्री का श्रेष्ठ आभूषणहै जैसे चातुर्य्ययुक्त वैश्यपुत्रकी स्त्री ने चारों व्यभिचारियो के माथे में कुत्ते के पंजे का दाग लगवाया ॥ २० ॥

किसी वनियेंके गुहसेन नाम एक पुत्रहुआ थी रे २ उस पुत्रके वढनेपर धनदत्त उसके विवाहकी फिक्र करनेलगा इसके उपरान्त धनदत्त अपने पुत्र को लेकर रोजगार के बहाने से किसी अन्य-द्वीपमें चलागया और वहां जाकर अपने पुत्रके लिये धर्मगुप्त नाम वनियें से देवस्मिता नाम उसकी कन्याको मांगा परंतु धर्म-गुप्त को कन्या वहुत प्यारी थी और ताम्रलिप्ती वहां से वहुत दूर थी इसलिये उसने वह सम्बन्ध नहीं मंजूर किया परंतु गुहसेन को देखकर देवस्मिताने उसके गुणों से वशीभूत होकर अपने बन्धुओं के त्याग करने का निश्चय करलिया और सखी के द्वारा संकेत वदकर रात्रि के समय अपने श्वशुरसमेत उस द्वीप से अपने प्रियके साथ निकलगई फिर ताम्रलिप्ती में आकर उन दोनों का

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे द्वाविंशप्रदीपः ॥

आत्मानन्दविचारेण परतश्छद्मयश्चरेत् ॥
सएवदुःखंलभते यथासंन्यासिनाकृतम् २२ ॥

(अर्थ) जो जन निज सुखको विचार करके दूसरेसे छलकरता है तो वहही दुःख पाता है—जैसे—संन्यासी ने छल करके आपही दुःख पाया २२ ॥

गंगाजी के किनारे पर माकन्दिका नामपुरी में एक मौनी संन्यासी बहुतसे संन्यासियों समेत किसी देवमन्दिर के मठमें रहता था और भीख मांगकर अपना पेट पालताथा एक समय वह मौनी किसी बनिये के घर भिक्षा लेने को गयाथा वहां उसने भिक्षा देने को निकली हुई एक बहुत सुन्दर स्वरूपवाली कन्या देखी उसके अद्भुत स्वरूप को देखकर वह संन्यासी उस बनिये को सुनाकर हाय २ यह बड़ा ग़ज़बहै ऐसा कहने लगा—फिर वहां से भिक्षा लेकर अपने घर को चलाआया तब एकान्तमें उस बनिये ने जाकर उससे पूंछा कि आज आप अपने मौन व्रत को छोड़कर किस कारण से बोले यह सुनकर उस संन्यासी ने कहा कि तुम्हारी कन्याके लक्षण बहुत बुरे हैं जब इसका विवाह होगा तो निस्सन्देह तुम्हारे सब कुटुम्बका नाश होजायगा इसी से इस कन्या को देखकर मुझको बड़ा दुःख हुआ और तुम मेरे बड़े भक्त हो इस लिये मैंने अपना मौनव्रत छोड़कर वह बचन कहेथे सो तुम अब ऐसा उपाय करो कि उस कन्याको किसी सन्दूक में बन्द करके रात्रि के समय उसपर एक दीपक जलाकर गंगामें बहादो तब उस बनिये ने उसके वचन मानकर भयसे अपनी कन्या उसी प्रकार गंगा में बहादी ठीकहै क्योंकि लोगों को विचार नहीं होता

विवाहहोजाने पर परस्पर बड़ा स्नेह होगया इसके उपरान्तधनदत्त के मरजाने पर गुहसेन के मित्रों ने उसको कटाह द्वीप जाने के लिये कहा और देवस्मिता ने यह शोचा कि यह वहांजाकर अन्य स्त्रियों से संग करेगा ऐसा जानकर वहां जाने से रोका तब स्त्री के रोकने से और भाइयों के भेजने से गुहसेन बहुतघबराया कि मैं क्या करूं और घबराकर अपनी स्त्रीसमेत किसी देवमंदिर में जाकर इसलिये व्रतकिया कि परमेश्वर हमको उपाय बतावें तबरात्रि के समय शिवजी ने उन दोनों को दर्शन दिया और दोनों के हाथ में एक २ लालकमल देकर कहा कि तुम दोनों यह कमल अपने २ हाथ मे लिये रहो दूर होने पर भी तुम दोनो में से जो कोई एक भी अपना धर्म्म बिगाड़ेगा तो दूसरे के हाथ का कमल मैला होजायगा और नही तो ज्योंका त्यों बना रहेगा यह सुनकर वह दोनो जगपड़े और दोनो ने अपने २ हाथो मे एक २ लालकमल देखा तब गुहसेन लालकमल को लेकर कटाहद्वीप को चलागया और देवस्मिता कमल को देखती हुई अपने घरमे रही. वहां गुहसेन भी शीघ्रही कटाह द्वीप में पहुँच कर रत्न खरीदने और बेचने लगा उसके हाथमे सदैव बिना कुँभलाये कमल को देखकर कोई चार बनियां के पुत्र बड़ा आश्चर्य करनेलगे और उन्हो ने युक्तिपूर्वक उसे अपने घरमें लाके मद्य पिलाकर उससे कमल का सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछलिया तब बहुत कालतक गुहसेन रत्न खरीदेगा और बेचेगा यह जानकर वह चारों बनियो के पुत्र उसकी स्त्री के धर्म के बिगाड़ने के लिये छिपकर शीघ्रही ताम्रलिप्ती नगरी को चले आये वहां आकर किसी बुधके मंदिर में बैठीहुई योगकरंडिका नाम सन्यासिनी के पासगये और उससे बोले कि जो तुम

उससमय उस संन्यासी ने अपने सेवकों से कहा कि तुम गंगाजी जाओ और वहां बहती हुई एक संदूक आवेगी जिसपर कि एक दीपक जलता होगा वहां उसे छुपाकर लेआओ और उसमें से जो कोई शब्द भी सुनाई पड़े तो भी उसे मत खोलना जबतक यह लोग वहां पहुँचे भी नहीं तबतक किसी राजा के लड़के ने उस संदूकको देखकर अपनेनौकरो को भेजकर मँगवालिया फिर उस संदूक को खोलके उसमें से निकली हुई उस परमसुन्दर कन्या के साथ अपना गान्धर्व विवाह करलिया और उस संदूक में बड़ा भयंकर बन्दर बैठालकर और उसके ऊपर दीपक रखवाकर फिर वही संदूक गंगाजी में बहादिया उस कन्या को लेकर वह राजा का पुत्र तो चलागया और उस संन्यासी के चेले उस संदूक को संन्यासी के पास लेगये तब उस संन्यासी ने चेलों से कहा कि आज मैं अकेला इस संदूक को लेकर इस मठके ऊपर कोई मंत्र सिद्धकरूंगा और तुमलोग चुपचाप नीचे रहना यह कहकर और उस संदूक को ऊपर लेजाकर उसने वह संदूक खोला तब उस में से एक बड़ाभयंकर बन्दर निकला और उसने दौड़कर उसके कान और नाक काटलिये इसप्रकार बन्दरके काटनेपर वह संन्यासी डर कर नीचे उतर आया और उसे देखकर उसके चेलों ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी को रोका प्रातःकाल इस वृत्तान्त को जान कर सम्पूर्ण लोग हँसने लगे और बनियां तथा बनिये की कन्या ऐसे वरको पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांचतुर्थभागेद्वाविंशःप्रदीप २२॥

हमारे मनोरथको सिद्ध करदोगी तो हम तुमको बहुतसा धन देंगे यह सुनकर उसने कहा कि युवापुरुषों को अवश्य किसी स्त्री की इच्छा होती है सो तुम अपने कार्य्य को कहो मैं उसे सिद्ध करदूंगी और मुझे धनकी कांक्षा नहीं है क्योंकि सिद्धकरी नाम एक बड़ी बुद्धिमती मेरी चेली है उसके सम्बन्ध से मुझे बहुतसा धन मिल गयाहै यह सुनकर उन्हों ने पूंछा कि तुमको चेली के प्रभाव से कैसे धन मिलाहै तब उसने कहा कि सुनो मैं वर्णन करती हूं इस नगरी में उत्तर की ओर से आकर कोई बनियां रहाथा उसके यहां हमारी चेली ने रूप बदलकर नौकरी करी थी और उस बनियें को मातबरी उत्पन्न करके उसके घरमें से सब सुवर्ण चुराकर प्रातःकाल निकलभागी तब भयसे उसे नगर के बाहर जल्दी २ जातेहुए देखकर ढोल लियेहुए कोई डोम उसका धन लेने के लिये उसके पीछे चला उससमय किसी बर्गद के पेड़ के नीचे जाकर और उस डोम को अपने पास आता देखकर बहुत गरीब बनकर कहा कि आज मैं अपने पति से लड़कर मरने के लिये घर से निकल आई हूं तो तुम हमारे लिये इस वृक्षमे फांसी लगादो तब उस डोम ने यह शोचा कि जो यह फांसी लगाकर आपही मरजाय तो मैं इसे क्यों मारूं यह समझकर उसने वृक्ष में फांसी लगादी इस के उपरान्त यह सिद्धकरी बड़ी भोली बनकर बोली कि फांसी गले मे कैसे लगाई जाती है तुम मुझे दिखादो यह सुनकर उस डोमने पैरों के नीचे ढोल रखकर गलेमें फांसी लगाली और कहा कि इस तौरपर फांसी लगाई जाती है तब सिद्धकरी ने लात मारकर वह ढोल फोड़डाला और डोम फांसीमें लटककर मरगया उसीसमय वह बनियांभी सिद्धकरी के लिये ढूंढने के लिये आताथा उसने दूरहीसे

अथ दृष्टान्तप्रदीपे चतुर्थभागे त्रिविंशः प्रदीपः ॥

अभीष्टनाय्यलाभेपि मरणंजायतेयथा ।
राज्ञोऽलब्धावणिक्भार्य्या मरणंतस्यवैअभूत २३

(अर्थ) चाही हुई स्त्री के न मिलने से भी मरणही होजाताहै जैसे-राजाको वैश्यकी स्त्री न मिलने से मरनाही हुआ इति २३

श्रावस्ती नाम पुरी में देवसेन नाम बड़ा बुद्धिमान एक राजा था और उसी पुरी में एक बड़ा धनवान् कोई बनियां रहता था उस बनिये के एक बड़ी सुन्दर कन्या थी उसने आकर राजासे कहा कि मेरे एक कन्या है जो आपकी इच्छाहोय तो आप लेलीजिये यह सुनकर राजाने ब्राह्मणोंको उसके घर इसलिये भेजा कि वह जाकर कन्याके लक्षण देख आवें कि अच्छे हैं या नहीं तब राजाके भेजे हुये ब्राह्मण वहां गये और उस उन्मादनीको देखकर कामके वशीभूत होगये फिर सावधान होकर उन ब्राह्मणों ने यह विचारा कि जो राजा इसके साथ विवाह करेगा तो इसके वशीभूत होकर सब राज्य कार्योंको छोड़देगा और ऐसा करने से राज्य नष्ट होजायगा इसलिये ऐसा करना चाहिये कि इस राजा का इसके साथ विवाह न होय यह शोचकर ब्राह्मणों ने राजासे जाकर कहदिया कि उस कन्या के लक्षण बहुत बुरे हैं इसके उपरान्त राजा से त्यागी हुई उस कन्या का उस बनिये ने राजा के सेनापति के साथ विवाह करदिया एक समय अपने पति के घरमें उस उन्मादनी कन्या ने राजाको उसी मार्ग से जाता हुआ जानकर महल के ऊपर खड़ी होकर राजाको अपना रूप दिखाया उसके परम सुन्दर रूप को देखकर काम से व्याकुल हुआ राजा अपनेमहल मे आकर और यह जानकर कि मैंने पहिले इसीका त्यागकिया बहुत ज्वर सहित

वृक्षके नीचे सिद्धकरीको देखा और सिद्धकरी भी उसे दूरसे देखकर उस वृक्षपर चढकर पत्तोंमें छिपकर बैठरही उस वनियेंने वहां आकर फांसीमें लटकेहुए डोमको देखा परंतु सिद्धकरी को न देखा तब यह ख़यालकरके कि सिद्धकरी कहीं वृक्षपर न चढगई हो इसलिये उस वनिये का कोई नौकर उस पेड़ पर चढगया तब उससे सिद्धकरी बोली कि तुम मुझे बड़े प्यारे हो और तुम्हीं इस वृक्षपर भी चढ़ेहो सो हे सुन्दर! यह सब धन तुम्हाराही है आओ मेरे साथ भोग करो यह कहकर सिद्धकरी ने उससे लिपटकर और मुख चूमकर दांतों से उसकी जिह्वा काटली तब पीड़ा से व्याकुल होकर वह नीचे गिरपड़ा और उसके मुखसे रुधिर वहने लगा और अस्तव्यस्त वचन कहने लगा यह देखकर उस वनिये ने जाना कि इसके ॱत लगाहै और डरकर अपने नौकरोंसमेत भागगया तब सिद्धकरी उस वृक्षसे उतर सब धन लेकर अपने घर चलीआई इसप्रकार से वह हमारी चेली बहुत सी छलविद्या जानती है और इसीकारण उसके सम्बन्ध से मैंने वहुतसा धन पायाहै यह कहकर उन वनियों को भी उसीसमय आईहुई अपनीचेली दिखादी और उनसे बोली कि तुमलोग किस स्त्री को चाहते हो मुझसे कहो मैं शीघ्रही उस से तुम्हें मिलादूंगी यह सुनकर वह बोले कि गुहसेन नाम वनिये की देवस्मिता नाम स्त्री से तुम हमको मिलादो यह सुनकर उसने उनके काम करदेने की प्रतिज्ञा करी और सबको अपने घर रक्खा इसके उपरान्त भोजनादिक पदार्थों के बांटनेसे वहां के लोगोंको प्रसन्नकरके वह संन्यासिनी अपनी चेलीसमेत गुहसेनके मकान-को गई जब वह दरवाजे पर पहुँची तब बाहर बँधीहुई कुतिया ने उसे गैर जानकररोका फिर देवस्मिताने उसे देखकर दासी भेज-

सन्ताप से युक्त होगया राजाकी यह दशा देखकर सेनापति ने कहा कि हे राजा वह पराई स्त्री नहीं है आपकी दासी है आप उसे लेलीजिये और नहीं तो मैं उसे किसी देवमन्दिर में त्याग करदूं तो वहां से आप उसे लेलीजिये अपने सेनापति के ऐसे वचन सुनकर राजा बोला कि मैं परस्त्री को न लूंगा और जो तुम उस का त्याग कर दोगे तो तुम्हारा धर्म नष्ट होगा मैंभी तुमको दण्ड दूंगा यह सुनकर सम्पूर्ण मन्त्री चुप होगये और राजा उसी काम ज्वर से सन्तप्त होकर कुछ कालमें मरगया॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिविंश प्रदीप २३॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुर्विंश प्रदीपः॥

तथाप्रियवियोगेपिमृतिःसद्योभिजायते। यस्य मरनेयथावैश्येमृतातस्यथसोमृतः २४॥

(अर्थ) तैसेही प्रियके वियोग होते भी शीघ्रही मरण होजाताहै जैसे वैश्यके परदेश जाते उसकी स्त्रीमरी फिर वहभी मरगया २४॥

मथुरा नाम नगरी में एक यइलकनाम बनियां रहता था उसके एक बड़ी प्यारी स्त्री थी और वह स्त्रीभी उससे बड़ा स्नेह करती थी एक समय वह बनियां किसी बड़े काम से किसी दूसरे द्वीप को जाने लगा तब उसकी स्त्री भी उसके साथ चलने को तैयार हुई
४ क्योंकि बहुत स्नेह करनेवाली स्त्रियां विरह को नहीं सहसक्ती हैं परन्तु वह बनियां उस स्त्रीको बिना लियेही अपने घरसे चला तब उसको वियोग न सहकर उस स्त्री के प्राण निकलगये यह खबर सुनकर उसीवक्त लौटेहुये उस बनिये ने पृथ्वीपर मरी पड़ी हुई अपनी स्त्री देखी उससमय उसकी ऐसी शोभा होरही थी कि मानो आकाश से सोतीहुई कोई चन्द्रलोक की देवता पृथ्वी पर गिरपड़ी

कर यह समझ के बुलवाली कि न जानें यह किस कामको आई है भीतर गईहुई वह पापिन संन्यासिनी ऊपर का आदर करने वाली देवस्मिता से आशीर्व्वाद देकर बोली कि तेरे देखने को मेरा चित्त रोज़ चाहता था और आज मैंने तुझे स्वप्न में देखा था इसी से मैं तेरे देखने को चली आई हूं तुझे पति से रहित देखकर मेरे चित्त में बड़ा खेद होताहै क्योंकि प्रिय के भोग के विना रूप और यौवन दोनो वृथाहैं इत्यादिक वचनों से देवस्मिता को सावधानकरके वह संन्यासिनी उससे पूंछकर अपने घर को चलीआई फिर दूसरे दिन बहुत मिर्च पड़े हुए मांस के टुकड़े को लेकर देवस्मिता के घरगई और वहां द्वारपर बँधीहुई कुतिया को वह मांस का टुकड़ा खिलादिया उसके खाने से बहुत चरपराहटसे उस कुतिया की आंखों से आंसू बहनेलगे और नाकसे पानी टपकनेलगा और वह संन्यासिनी घरके भीतर जाकर देवस्मिता के समीप बैठकर रोनेलगी जब देवस्मिताने बहुत पूंछा तबवह बोली कि देखो बाहर कुतिया रोरही है यह कुतिया मुझे दूसरे जन्म के पीछे मिलीहुई जान के रोनेलगी इसी से मेरे भी आंसू निकल आये यह सुनकर और बाहर रोतीहुई सी उस कुतिया को देखकर देवस्मिता शोचनेलगी कि यह क्या बातहै तब संन्यासिनी बोली कि, पूर्व जन्ममें यह कुतिया और मैं किसी ब्राह्मणकी दो स्त्री थी वह ब्राह्मण राजा की आज्ञासे बहुत दूर परदेश को जाया करताथा उसके परदेश चले जानेपर मैं अन्य पुरुषों के साथ संभोगकरके अपनी इंद्रियों को क्लेश नहीं देती थी क्योंकि इंद्रियों को क्लेश न देना परमधर्म्म है उसी धर्म से मुझे उस जन्म की भी इसजन्ममें याद बनी है और इस कुतियाने तो अज्ञानता से इंद्रियों को दुःखदेकर

है सुन्दर पीतवर्ण वाली और विखरेहुए बालवाली अपनी स्त्री को गोदीमें रखकर रोतेहुये उस बनिये के भी प्राण निकल गये इस प्रकार परस्पर के विरह से वह दोनों मरगये ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुर्विंश.प्रदीप २४ ॥

॥ अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपंचविंशःप्रदीपः ॥

परीक्ष्यसाधवःश्रेष्ठफलंलोकेददतिवै । यथापृथव्यथंनावत्सद्धृक्तातपृष्ठधृताग्न्यपि २५ ॥

(अर्थ) साधुजन लोककी परीक्षा करकरकेही श्रेष्ठ फल देते हैं जैसे दुर्वासाने कुंती की परीक्षाकरी उसकी पीठपर जलती कढ़ाई धरी और उसेकुछभी व्यथायुक्त नदेखकरप्रसन्नहोवरदानदिया-२५॥

एकसमय कुन्तिभोजनाम राजा के यहां दुर्वासा मुनि उसकी परीक्षा के लिये आके रहे राजाने मुनिकी सेवा के लिये अपनी कन्या कुंती को आज्ञा देदी और वह कुंती भी यत्न पूर्वक मुनिकी सेवा करनेलगी एकसमय कुंती की परीक्षा करने के लिये दुर्वासा ऋषिने उससे कहा कि जल्दी से खीर बनाओ मैं अभी स्नान करके आताहूं यह कहकर जल्दी से स्नान करकेदुर्वासा भोजन के लिये आगये तब कुंती ने खीरसे भराहुआ पात्र दुर्वासाके आगे रखदिया बहुत गरम खीर से उस पात्र को जलताहुआ जानकर और हाथसे छूने के योग्य न जानके दुर्वासाने कुन्ती की पीठकी ओर दृष्टिकी दुर्वासा के आशय को समझकर कुन्ती ने उस पात्र को अपनी पीठपर रखलिया और दुर्वासाने यथेष्ट भोजन किया पीठ के जल जानेपर भी कुन्ती की चेष्टा में कोई विकार न देखके दुर्वासा ने प्रसन्न होकर कुन्ती को वरदान दिया ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे पञ्चविंश प्रदीप, २५ ॥

केवल अपने शील की रक्षा की इसीसे यह कुतिया हुई परन्तु अपने जन्मका स्मरण इसे भी वनाहै यह सुनकर देवस्मितानेशोचा कि यह कौनसा धर्म है मालूम होताहै कि इसने कोई धूर्त्तता (छल) की रचना की है यह समझकर वह वोली कि अवतक मैं इस धर्म को नही जानती थी तो अव तुम किसी सुन्दर पुरुषके संग मेरा समागम कराओ तव उस संन्यासिनी ने कहा कि किसी अन्य-द्वीपसे आयेहुए चार वनिये के पुत्र यहां ठहरे हैं उनको मैं तेरेपास लाऊंगी यह कहकर वह वहांसे वहुत प्रसन्नतापूर्व्वक चलीगई तव देवस्मिता ने अपनी दासियों से बुलाकर कहा कि मेरे पति के हाथमे उस म्लानता रहित कमलके फूलको देखकर और मद्य पिलाकर उससे इसका सव वृत्तान्त पूछकर मेरे विगाड़ने के लिये उसी द्वीपसे कोई वनियें के लड़के आये हैं और उन्होंनेही यह दुष्ट तपस्विनी भेजी है सो तुमलोग जाकर धतूरा मिलीहुई शराव ले आओ और लोहे का एक कुत्ते का पंजा वनवालाओ उस के यह वचन सुन दासी मद्य भी लाई और कुत्ते का पंजा भी वनवा-लाई और उसी के कहने से एकदासी ने उसका वेप भी वनालिया फिर वह संन्यासिनी सायंकाल के समय उनचारों में से एक को अपनी चेली के वेपमें छिपाकर देवस्मिता के घर लिवालाई और उसे भेजकर आप चलीगई तव उस वनियेंके लड़केको देवस्मिता रूप दासी ने आदरपूर्व्वक धतूरा मिलीहुई शराव पिलाई उस के पीने से वह वेहोश होगया तव दासियों ने उसके सव वस्त्र उतार लिये और माथे मे कुत्ते का पंजा दागकर उसे किसी मल से भरेहुए गड्ढे मे ढकेलदिया पिछली रात्रिको जव उसे होश आया तो उसने अपने को गढेमें पड़ाहुआ देखा तव वहासे उठके स्नान

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपड्विंशः प्रदीपः ॥

मंत्रेणाकिमसाध्यंस्याद्यथाब्राह्मणमंत्रिणा ।
सुमंत्रितमुखाभार्य्यानुरक्तैवकृतायतेः २६ ॥

(अर्थ)–मंत्रविद्या से क्या २ नहीं साध्यहै अर्थात् सब सिद्ध होसक्ताहै–जैसे मंत्रशास्त्री ब्राह्मणीने वेश्यकी स्त्री को मंत्रके प्रभाव से निजपति से स्नेहवती बनादी—२६ ॥

पाटलिपुत्रनाम नगर में धर्म्मगुप्त नाम एक बड़ा धनवान् बनियां रहताथा उसके चन्द्रप्रभानाम एक स्त्री थी एकसमय उस चन्द्रप्रभाके सर्वाङ्ग सुन्दरी एक कन्या उत्पन्न होतेही उठके बैठगई और स्पष्ट (साफ़ २) बोलनेलगी यह देखकर सम्पूर्ण स्त्रियां बहुत घबराईं और धर्मगुप्त भी डरकर वहां आगया और प्रणामकरके उस कन्या से बोला कि हे भगवती ! तुम कौनहो मेरे यहां अवतार लेकर आई हो तब वह कन्या बोली कि हे पिता ! तुम मेरा किसी के साथ विवाह न करना मुझे अपने घरमेही रखने से तुम्हारी भलाईहोगी और अन्य वृत्तान्त पूछने से तुमको क्या प्रयोजनहै उसके यह वचन सुनकर डरेहुए धर्मगुप्त ने उस कन्या को छिपाकर अपने घरमें रक्खा और बाहर यह ख़बर उड़ादी कि कन्या मरगई इसके उपरान्त दिव्य स्वरूपवाली वह सोमप्रभानाम कन्या उसके घर में बढ़नेलगी एकसमय वह कन्या अपने महल के ऊपर चढ़ी हुई बसन्त के उत्सवको देखरही थी वहां कामदेव के भाले के समान उस कन्याको देखकर गुहचन्द्रनाम कोई बनिये का लड़का काम से मूर्च्छित होकर बड़े दुःखसे अपने घरको आया उसके माता पिता ने बहुत हठसे जब उसके व्याकुलहोनेका कारण पूछा तब अपने मित्रों के मुखसे यह हाल कहलवादिया यह बात सुनकर गुहसे–

कीथी और भी इसीप्रकारसे जाकर अपने पतिकी युक्तिपूर्वक रक्षा करूंगी इसप्रकार एकान्त में अपनी सासमे कहकर देवस्मिता ने अपनी दासियों समेत बनियोंकासा रूप बनाया और जहाजपर चढ़कर रोज़गारके बहाने से कटाहद्वीपको गई कटाहद्वीप में जहां उसका पति रहताथा वहां जाकर सम्पूर्ण बनियों में बैठेहुए गुहसेन नाम अपने पति को देखा और उसे देखकर गुहसेनने भी अपने मनमें विचारा कि यह कौनसा पुरुष मेरी स्त्रीके समान यहां आया है इसके उपरान्त देवस्मिताने राजाके यहां जाकर कहा कि आप सब प्रजाके लोगोंको इकट्ठा कीजिये मैं कुछ प्रार्थना करूँगी तब राजाने सम्पूर्ण पुरबासियोंको बुलवाकर उससे पूंछा कि तेरी क्या प्रार्थनाहै तब वह बोली कि मेरे चारदास यहां भागकर चले आये हैं उनको मुझे देदीजिये तब राजा बोला कि यह सब पुरवासी बैठे हैं इनमें से तुम अपने दासोंको छाँटलो तब शिरमें कपड़ा लपेटे हुए वह चारों बनियोंके पुत्र जिनको कि उसने अपने घरपर माथे में दागाथा पकड़लिया तब सम्पूर्ण बनिये क्रोधसे कहनेलगे कि यह तो बनियो के पुत्रहैं तेरे दास कैसे होसक्ते हैं यह सुनकर वह बोली कि आप लोगों को मेरा यकीन नहीं है तो इनके माथे देख लीजिये मैंने कुत्ते के पंजेसे दागदिये हैं उसके कहनेसे जब उनके कपड़े खोलकर माथे देखेगये तो उनमें कुत्तेके पंजेका दागदिखाई दिया—इसके उपरान्त सम्पूर्ण बनियों के लज्जित होजानेपर राजाने बड़े आश्चर्यपूर्व्वक देवस्मितासे पूँछा कि यह क्या बातहै तब उसने उनका सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा यह सुनकर लोग हँसनेलगे और राजा ने भी कहा कि यह तेरे दास ठीक २ हैं तब और बनियोंने उनचारों को उससे छुटाने के लिये उसे बहुतसा धन दिया और उन चारोंकी

नाम उस लड़के का पिता पुत्र के स्नेह से धर्मगुप्त के यहां कन्या मांगने को गया और वहां जाकर उसने कन्या मांगी तब धर्मगुप्त ने उससे कहा कि हे मूर्ख ! मेरे यहां कन्या कहां है धर्म्मगुप्तके यह वचन सुनकर गुहसेनने जाना कि इसने अपनी कन्या छिपारक्खी है और अपने घरमें जाकर अपने पुत्रको व्याकुल देखके उसने शोचा कि मैं राजा से कहकर उससे वह कन्या लेलूं क्योंकि मैंने पहले राजाकी बड़ी सेवाकी है इससे राजा मेरे पुत्रको व्याकुल देखकर उस कन्या को दिवादेगा—ऐसा निश्चयकरके गुहसेन ने राजा के पास जाकर रत्नों की भेंट देकर राजा से अपना मनोरथ कहदिया राजा तो उससे प्रसन्नही था इससे उसने सहायता के लिये कोतवालको उसके साथकरदिया तब कोतवालने वहां जाकर धर्म-गुप्तका घर चारोंओरसे घेरलिया यहदेखकर धर्मगुप्तको इसलिये बड़ा खेदहुआ कि आज मेरा सब धन नाश होजायगा तब सोमप्रभाने उससे कहा कि हे पिता ! मुझे तुम इसेदेदो इसमें मेरे लिये तुम्हारे यहां कोई उपद्रव न होय परन्तु अपने समधीसे यह नियमकरलो कि मेरापति मुझे अपनी शय्यापर न बुलावे कन्या के यह वचन सुनकर धर्म्मगुप्तने शय्यापर न बुलानेका नियम करके कन्या देना स्वीकार करलिया और गुहसेन भी अपने चित्तमें हँसकर किसी तरहसे पुत्रका विवाह तो होजाय इसलिये यहबात स्वीकार कर-लीनी इसके उपरान्त गुहसेनका पुत्र गुहचन्द्र सोमप्रभा को विवाह करके अपने घर लेगया सायङ्कालके समय गुहसेन ने अपने पुत्र गुहचन्द्र से कहा कि हे पुत्र ! इसे अपनी शय्यापर सुलाओ क्योंकि अपनी स्त्रीको कौन अपनी शय्यापर नहीं सुलाताहै यह वचन सुनकर सोमप्रभा ने अपने श्वशुर को बड़े क्रोधसे देखकर

यमराजकी आज्ञाके समान अपनी तर्जनी उँगली घुमाई उस अँगुलीको देखतेही गुहसेनके तो प्राण निकलगये और अन्य वनिये डर गये. फिर गुहचन्द भी अपने पिता को मरा देखकर यह जाना कि यह स्त्री महामारी रूप मेरे घरमें आईहै इसके उपरान्त गुहचन्दने उसके साथ भोग नहीं किया और असिधाराव्रत साधारण करलिया फिर इस दुःख से बहुत व्याकुल होकर सब भोगों को त्यागकर गुहचन्द नियमपूर्वक रोज ब्राह्मणो को भोजन करानेलगा उसकी स्त्री भी मौन धारणकरके सम्पूर्णब्राह्मणों को रोज दक्षिणा देती थी एकसमय किसी वृद्ध ब्राह्मण ने सोमप्रभा के बड़े विलक्षणरूपको देखकर एकान्तमे गुहचन्द्र से कहा कि यह स्त्री तुम्हारी कौनहै हमसे बताओ तब बहुत पूछने से गुहचन्द्र ने सब वृत्तान्त उसका ब्राह्मणसे कहदिया यह बात सुनकर उस ब्राह्मणने दयापूर्वक गुहचन्द्र का मनोरथ सिद्ध होनेके लिये उसे एक अग्निका मन्त्र बतादिया उसमन्त्रको एकान्तमे जपते २ गुहचन्द्र के आगे एक पुरुष अग्निमें से निकला उसे देखकर गुहचन्द्र उस के चरणों पर गिरपडा तब ब्राह्मणरूपधारी अग्निने उससे कहा कि आज हम तुम्हारे घरमें भोजन करके रात्रिको तुम्हारेही यहां रहेंगे और तुम्हें सम्पूर्ण तत्त्व दिखाकर तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करदेंगे यह कहकर वह ब्राह्मण गुहचन्द्र के घरको चलागया और वहां जाके साधारण ब्राह्मणों के समान भोजन करके रात्रिके समय गुहचन्द्र के साथ सोगया पहरभर रात्रि व्यतीत होने पर जब गुहचन्द्रके यहां सब लोग सोगये तब गुहचन्द्रकी स्त्री घरसे वाहर निकली उससमय उस ब्राह्मण ने गुहचन्द्र को जगाकर कहा कि आओ अपनी स्त्रीका चरित्र देखो फिर उस ब्राह्मणने अपने योग

राजा के द्वारपर अपना फलभूति नाम कह कर यह वचन कहने लगा यह वचन सुनकर लोगोको बड़ा आश्चर्य हुआ और बार बार वही वचन कहते हुए फलभूति को जानकर राजा आदित्यप्रभनें बड़े आश्चर्य से बुलाया वहां जाकरभी वह बारंबार राजा के सामने वही वचन कहनेलगा यह सुनकर राजा अपनी समाजसमेत हँसने लगा और राजा ने प्रसन्न होकर उसे वस्त्र आभूषणों समेत कुछ गांव दिये ठीक है बड़ेलोगों की प्रसन्नता व्यर्थ नहीं होती है-इसप्रकार से उससमय यक्षके अनुग्रहसे दुर्बल फलभूति को राजाका दियाहुआ बहुतसा धनमिला सदैव वही वचन कहता फलभूति राजाका बड़ा प्रिय होगया क्योंकि राजालोगो का चित्त ऐसी २ आनन्दकी बातोंका अत्यन्त रसिक होताहै क्रमसे राजा के यहां महलो में और सम्पूर्ण राज्यभर मे उस फलभूतिका बड़ा आदर इसलिये होनेलगा कि यह राजाका परमप्रिय है एक समय बनसे शिकार खेलकर आयाहुआ राजा आदित्यप्रभ अपने महल में गया और द्वारपालो को घबराने से सन्देहयुक्त राजा ने भीतरजाकर देखा कि रानी कुवलयावती नग्न बालखोलेहुए नेत्रों को बन्दकियेहुए सिन्दूरका बड़ा तिलक लगायेहुए जप करती हुई विचित्र रंगो से बनीहुई चौक मे बैठी हुई और रुधिर मद्य तथा मांससे उग्र बलिदान करती हुई किसी देवता का पूजन कररही थी राजाके आने पर घबराके रानी ने वस्त्र पहन लिये और राजा के पूंछने पर अभय मांगकर रानी बोली कि आपही के उदय के वास्ते यह पूजन कररही थी इस विषयमें शास्त्रका वृत्तान्त और अपनी सिद्धि आपको सुनाती हूं पहले मैं अपने पिताके यहां जब कन्याथी तब वसन्तके उत्सवमें मेरी सखियों ने बगीचे में मु-

के बलसे गुहचन्द्रका और अपना रूप भौंरेकासा करलिया और वह दोनों गुहचन्द्र की स्त्रीके पीछे २ चले वह सोमप्रभा नगरसे बाहर निकलकर बहुत दूरतक चलीगई वहां जाकर गुहचन्द्र और ब्राह्मण ने यह देखा कि वहांपर बड़ी सघन छायावाला एक बड़का वृक्ष है उसकेनीचे उसे बड़ी सुन्दर वीणाकी ध्वनि और अत्यन्त मधुर गीत सुनाईदिये उस वृक्षकी एक शाखापर बड़े उत्तम सिंहासन पर सोमप्रभाके समान एक बड़ी उत्तम कन्या बैठी दिखाई दी उस कन्याकी कान्ति चांदनीसे भी निर्म्मल थी और सखियां उसके ऊपर श्वेत चमर दुलारही थीं वह कन्या क्याथी मानों चन्द्रमाकी सुन्दरता के खज़ानेकी देवताथी वहां सोमप्रभा भी उस वृक्षपर चढ़के उस कन्याके आधे सिंहासन पर बैठगई समान कान्तिवाली उन दोनों को देखकर गुहचन्द्र को यह मालूम होताथा कि आजकी रात्रि को तीन चन्द्रमा निकले हैं यह देखकर बहुत आश्चर्य्यपूर्वक गुहचन्द्र शोचनेलगा कि क्या वह स्वप्न है अथवा भ्रांतिहै या यह दोनो बातें नहीं हैं सन्मार्गरूपी वृक्ष की सत्संगतिरूपी मञ्जरी का यह फूल फूलाहै अब इसमें उचित फल मुझको मिलेगा गुहचन्द्रके इस विचारके करनेके उपरान्त उनदोनों कन्याओंने दिव्य भोजन और दिव्य मद्यका पानकिया तदनन्तर सोमप्रभा बोली कि आज हमारे यहां एक बड़ा तेजस्वी ब्राह्मण आया है उससे मेरा चित्त डररहा है इसीसे मैं जातीहूं यहकहकर और उसकी आज्ञालेकर सोमप्रभा उसवृक्षसे उतरी यह देखकर वह दोनो अपने घरमें आन कर पहलेसे सोगये और फिर गुहचन्द्रकी स्त्री भी छिपकर आकर सोरही इसके उपरान्त उस ब्राह्मण ने एकान्त में गुहचन्द से कहा कि तुमने देखा कि यह सोमप्रभा दिव्य स्त्री है ... नी

झसे कहा कि इस वगीचे में वृक्षोंके मण्डलके वीचमें देवताओं के भी देवता वरदायक गणेशजी रहते हैं उनका प्रभाव हमलोगों ने देखाहै उन वरदायक गणेशजी का जो तुम भक्तिपूर्वक पूजन करो तो तुम्हें शीघ्रही निर्विघ्नतासे योग्य पति मिलजाय यह सुन कर मैंने भोलेपन से अपनी सखियों से पूछा क्या गणेशजी के पूजनसे कन्याओंको पतिमिलते हैं तव वह वोली कि तुम इतनी ही वात क्या कहतीहो इससंसारमें गणेशजी के पूजनकेविना मनुष्य को कोईभी सिद्धि नही मिलसक्ती है सुनो हम तुम्हारे आगे गणेश जीका प्रभाव वर्णन करती हैं यहकहकर वह सखियां यह कथाकहने लगी पूर्व्वकालमें जिससमय तारकासुरसे हारेहुए इन्द्र श्रीशिवजी के पुत्रको अपना सेनापति वनायाचाहतेथे और शिवजीकीदृष्टिसे कामदेव भस्म होगया था उससमय वड़ा तप करनेवाले ऊर्ध्वरेता महादेवजीको पार्वतीजीने वड़ा घोर तपकरके प्रसन्नकियाथा और प्रसन्नकरके उन्हीके साथ अपना विवाह कियाथा विवाहके उपरान्त पार्वतीजीने श्रीमहादेवजीसे यह चाहा कि मेरे एक पुत्रहोय और कामदेव फिर जीआवे परन्तु पार्व्वतीजीने अपने कार्य्य के सिद्ध होने के लिये विघ्नराज गणेशजी का स्मरण नहीं कियाथा इसके उपरान्त इस मनोरथ के मांगनेवाली पार्वती से श्रीशिवजीने कहा कि हे प्रिये! पहले ब्रह्माके मनसे कामदेव उत्पन्न हुआ और उसने उत्पन्न होतेही अहंकार से यह वात कही कि किसको दलनकरूं

और इसकी बहिन को भी तुमने देखा तो अब बताओ कि दिव्य स्त्री मनुष्य से कैसे समागम चाहैगी अब तुम्हारे मनोरथ के सिद्ध करनेके लिये मैं तुम्हें एक मंत्र बताताहूं उसे दरवाजेपर लिखदेना और उसके सिद्ध करनेकी युक्तिभी तुम्हें बताताहूं जैसे केवल अग्नि भी जलासक्ती है तो वायुके संयोगमें तो अवश्यही जलावेगी इसमें क्या कहनाहै इसीप्रकार केवल मंत्रही मनोरथको सिद्ध करसक्ता है और उसमें श्रेष्ठ युक्तिभी होय तो क्या कहनाहै यह कहकर और गुहचन्द्र को युक्तिसमेत मंत्र बताकर प्रातःकाल वह ब्राह्मण की बताईहुई युक्ति करदी फिर इसके उपरान्त गुहचन्द्र बड़े उत्तम वस्त्र पहनकर अपनी स्त्री के सम्मुख किसी अन्य स्त्रीसे कुछ बात करनेलगा यह देखकर मंत्रसे खुलीहुई जिह्वावाली सोमप्रभाने उससे बुलाकर पूंछा कि यह स्त्री कौन है तब गुहचन्द्र यह मिथ्यावचन बोला कि यह स्त्री मुझसे बड़ा स्नेह करती है इससे आज मैं इस के यहां जाता हूं यह सुनकर तिरछीनजर से देखकर और बाये हाथ से उसे रोककर सोमप्रभा बोली कि क्या तुमने इसीलिये यह ठाठ किये हैं इसके यहां तुम मत जाओ उससे तुम्हें क्या प्रयोजन है मेरे पास आओ क्योंकि मैं तुम्हारी स्त्री हूं तब पुलकावली तथा कम्पसेयुक्त और मंत्र के प्रभावसे वशीभूतहुई सोमप्रभा के ऐसे वचन सुनकर गुहचन्द्र उसे शयनस्थान में लेजाकर उस दिव्य सुखको भोगनेलगा जिसका कि वह मनोरथ भी नहीं करसक्ता था इसप्रकार मंत्रके प्रतापसे अत्यन्त स्नेहयुक्त सोमप्रभाको पाकर गुहचन्द्र सुखपूर्व्वक रहनेलगा इसरीति से यज्ञादिक बड़े२ पुण्य करनेवालोंके यहां शाप से आईहुई दिव्य स्त्रियांभी उनकी स्त्री होती हैं देवता तथा ब्राह्मणोंकी सेवा सज्जनो के लिये काम-

तुम्हारे अपनी शक्तिसे पुत्र उत्पन्न करूंगा क्योंकि संसारी जीवोंके समान मेरे कामके उत्साहसे पुत्र नही होता पार्वती से महादेवजी के इसवचनको कहतेही इन्द्रसमेत ब्रह्मा वहां आकर प्रकटहुए और स्तुतिकरके तारकासुरके मारनेकी प्रार्थनाकी तब शिवजीने पार्वती जी में अपना औरसपुत्र उत्पन्न करना स्वीकार किया और ब्रह्मा के कहने से सृष्टिके नाशहोने की रक्षा के लिये लोगो के चित्तमे कामदेवका उत्पन्नहोना स्वीकारकिया और अपने भी चित्तमें महादेवजी ने कामको अवकाशदिया इसबात से प्रसन्नहोकर ब्रह्मा जी चलेगये और पार्वतीजीभी प्रसन्न होगई इसकेपीछे बहुतकाल व्यतीत होजानेपर एकसमय एकान्त में श्रीशिवजी पार्वतीजीसे रति करनेलगे जब सैकड़ों वर्षके व्यतीत होजानेपर भी उनकी रति नहीं समाप्त हुई तब भयसे तीनोंलोक कांपनेलगे उससमय संसार के नाश होजाने के भयसे सम्पूर्ण देवतालोग ब्रह्माकी आज्ञा से श्रीशिवजीकी रतिमें विघ्न करनेकेलिये अग्निका स्मरण करनेलगे स्मरण करतेही अग्नि श्रीशिवजीको अधृष्य (दबानेके अयोग्य) समझकर देवतालोगों से भागकर जलमें छिपगये तब ढूंढते हुए देवतालोगां को मेढ़कों ने जलमें छिपेहुए अग्निदेवता को बता दिया क्योंकि वह उनके तेजसे जलेजातेथे तब मेढकोंको यह शाप देकर कि तुम लोगो के वचन प्रकट नही होंगे अग्निदेवता मन्दराचलपर्व्वत पर चलेगये वहां वृक्षके खोखले मे घोंघे का स्वरूप रखकर बैठेहुए अग्निदेवको हाथी और तोतोने देवतालोगोंको बतादिया तब अग्निदेवतालोगो को दर्शनदिये और शापसे हाथी तथा तोतों की जिह्वा विपरीत करदी फिर देवतालोगों के स्तुति करनेपर उनके कार्य्य को स्वीकार करके अग्निदेव ने कैलासपर

धेनुके समान होती है उससे कौन २ पदार्थ नहीं पासक्ता है और सामआदिक उपाय तो ऊपरके दिखावे हैं पातक वड़े २ उच्चपद वाले दिव्यपुरुषों को भी अपने पदसे नीचे ऐसे गिरादेते हैं जैसे कि वायु पुष्पोंको गिरादेती है ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षड्विंशः प्रदीपः २६॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे सप्तविंशः प्रदीपः ॥

योयादकुरुतेकर्मफलम्भवतितादृशम् ।
अहिल्याहिशिलाजातासहस्त्रंभगवान्हरिः२७।

(अर्थ) जो जैसा कर्मकरे उसे फिर तैसेही फल मिलता है जैसे कुकर्म करनेपर मुनि गौतमजीके शापसे अहिल्या तो शिलाभई और इन्द्रके शरीर में सौभगभई-इति २७ ॥

पूर्वसमय में त्रिकालज्ञ महर्षि गौतमनाम मुनि की बड़ी रूपवती अहिल्या नाम स्त्री थी एकसमय उसके रूपसे मोहित होकर इन्द्रने एकान्त में उससे प्रार्थनाकी ठीक हैं कि स्वामीलोग धन ऐश्वर्यसे मदान्ध होकर अनुचित कार्यभी करने लगते हैं अहिल्यानेभी कामातुर होकर इन्द्रकी प्रार्थना स्वीकार करली इस बात को अपने प्रभावसे जानकर गौतममुनि वहां आये मुनिको आया जानकर इन्द्रने अपना बिल्लीकास्वरूप धारणकरलिया तब गौतमने अहिल्यासेपूछा कि यहां अभीकौनथा उसने यह सत्यवचन कहा कि यह मेरायार और बिल्लीथा यहसुनकर गौतमने हँसकर कहा कि ठीक है तेरा जार यहां अभीथा और यह शापदिया कि हे पापिन् तू बहुत कालतक पत्थरकी शिला बनी रहेगी फिर उसके सत्यवचनों को समझकर यहभी कहदिया कि जब वन में श्रीरामचन्द्रजी आवेंगे तब उनके दर्शनसे तुम्हारा शाप छूटजायगा इसके उपरान्त गौ-

जाके अपनी गरमी से श्रीशिवजी को रति से बन्दकरदिया और शापके भयसे प्रणाम करके देवतालोगों का कार्य्य श्रीशिवजी से कहदिया तब महादेवजी नें अपना वीर्य्य अग्निमें छोड़दिया उस वीर्य्यको अग्नि न धारण करसके न पार्वतीजी धारण करसकी तब पार्वतीजीने खेदसे व्याकुल होकर महादेवजी से कहा कि आपसे मुझको पुत्रकी प्राप्ति नहीं हुई यह सुनकर श्रीशिवजी बोले कि तुमने विघ्नराज गणेशजी का पूजन नहीं कियाथा इसीसे तुम्हारे गर्भ मे विघ्न होगया अब तुम गणेशजीका पूजनकरो तो अग्निमें पड़ेहुए वीर्य से पुत्र होजाय महादेवजी के यह कहने से पार्वतीजी ने गणेशजी का पूजन किया तब महादेवजी के वीर्य्य से अग्निके भी गर्भरहा शिवजीके तेजको धारण करतेहुए अग्निदेवकी दिन में भी ऐसी शोभा होतीथी कि मानो इससमयमें भी सूर्यने अग्नि में प्रवेश कियाहै अग्निने शिवजी के महाडुस्सह तेजको गंगाजी में वमन कर दिया और गंगाजीने शिवजीकी आज्ञा से सुमेरुपर्वत पर अग्निकुण्ड में उसे छोड़दिया वहां महादेवजी के गणों से रक्षा कियाहुआ वह गर्भ हज़ार वर्ष के उपरान्त छःमुखका कुमार होकर उस कुण्ड में से निकला इसके उपरान्त पार्व्वती जी की भेजीहुई छः कृत्तिकाओ के स्तनों के दुग्धको अपने छओमुख से पानकरके थोड़ेही दिनों में वह बालक बड़ा होगया इसी बीच में तारकासुर से हारेहुए इन्द्र युद्ध छोड़कर दुर्गम सुमेरुपर्व्वत के शिखरों पर आकर रहनेलगे और ऋषियोंसमेत सम्पूर्णदेवता लोग इन्हीं स्वामिकार्त्तिकजी की शरण में आये जब स्वामिकार्त्तिकने उनकी रक्षाकी तब सब उन्हींके पास उन्हें घेरकर रहनेलगे यहबात जानकर इन्द्र समझा कि अब तो यह हमारा राज्यही

तमने इन्द्रको भी यह शापदिया कि तुमको भगका बड़ा लोभ है इससे तुम्हारे शरीर मे हजार भगहोजायँगी और जब विश्वकर्मा तिलोत्तमानाम अप्सराको बनावेंगे तब उसे देखकर यहसब तुम्हारे शरीरकी भग नेत्र होजायँगी इसप्रकारसे शापदेके मुनि तप करने को चलेगये अहिल्या शिलाहोगई और इन्द्रका सम्पूर्ण शरीर भगोसे व्याप्तहोगया इसप्रकारसे जो कुकर्म कोई करता है उसका फल उसको अवश्य मिलता है क्योंकि जो जैसा बीज बोता है उसको वैसाही फल मिलता है इसीसे महात्मालोग पराया विरोध कभी नहीकरते हैं और यही अच्छेलोगोंकाभी सदैव नियम रहताहै॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे सप्तविंश प्रदीप २७॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे अष्टाविंशःप्रदीपः॥

निधिस्थमपिज्ञातंस्वंज्ञापयेज्जारएवसा।
स्वैरिणीवप्रियस्याग्रेऽवदत्पत्याश्रुतेऽपितत् २८॥

(अर्थ) व्यभिचारिणी स्त्री गड़ा भयाभी निज अपना द्रव्य यार को बता देती है—जैसे कुलटा देवदासकी स्त्रीने निज यारको अपना गड़ाद्रव्य बताया और पति छिपा सुनताथा— २८॥

पाटलिपुत्रनाम नगर मे किसी महाधनवान् बनिये का एक देवदासनामपुत्रथा वह पौण्ड्रवर्द्धननाम नगरसे किसी बड़े धनवान् बनियेकी कन्या बिवाह लायाथा पिताके मरजानेपर देवदास धीरे२ जुयेमें सब धन हारगया तब उसका श्वशुर अपनी कन्याको दरिद्र से बहुत दुखी देखकर वहांसे पौण्ड्रवर्द्धनमे अपने घरलेगया धीरे२ विपत्ति से व्याकुल देवदासभी रोजगार करनेकी इच्छा से अपने श्वशुर से धन मांगनेको चला सायङ्कालके समय पौण्ड्रवर्द्धननगर में पहुँचकर अपनेको धूलमेंलिप्त बुरेवस्त्रधारण कियेहुये देख कर देव-

छीन लेंगे यह समझकर क्रोध से इन्द्र स्वामिकार्त्तिक के पास जाकर उनसे लड़ने लगे इन्द्रके वज्रके लगने से स्वामिकार्त्तिक के शरीर से शाख और विशाख नाम महातेजस्वी दो पुत्र उत्पन्न हुए तब पुत्रोंसमेत स्वामिकार्त्तिकने इन्द्रको जीतलिया यह वात जानकर श्रीशिवजी ने वहां आके स्वामिकार्त्तिक को युद्धसे निवृत्तकरके यह शिक्षाकी कि तुम ताड़कासुरके मारने को और इन्द्र के राज्यकी रक्षा करने को उत्पन्नहुएहो इससे अपने कार्य्य को करो इसके उपरान्त प्रसन्नहुए इन्द्रने उससमय स्वामिकार्त्तिक को अपनी सेनाका सेनापति वनाने के लिये अभिषेक करने का प्रारम्भ किया जिससमय इन्द्रने अपने हाथ से अभिषेक करने के निमित्त जलका कलश उठाया उससमय उनकी भुजा स्तब्ध (जकड़गई) होगई इससे इन्द्रको बड़ा क्लेशहुआ तब श्रीशिवजी ने इन्द्रसे कहा कि तुमने सेनापति वनाने के समय गणेशजीका पूजन नहीं किया इसी से यह विघ्न हुआहै अब तुम गणेशजीका पूजन करो यह सुनकर इन्द्रने गणेशजीका पूजन किया और पूजन करतेही इन्द्रकी भुजा अच्छी होगई और उन्हों ने अच्छे प्रकारसे अपने सेनापतिका अभिषेक किया इसके उपरान्त शीघ्रही ताड़कासुरको युद्ध करके मारडाला तब सम्पूर्ण देवता बड़े प्रसन्न हुए और श्रीपार्वतीजी को भी ऐसा वीरपुत्र प्राप्त होनेसे वड़ी प्रसन्नताहुई इसप्रकार से हे राजकन्या! देवतालोगों को भी गणेशजी के पूजन विना कोई सिद्धि नहीं होती इससे तुम योग्यपति के मिलने के अर्थ गणेशजी का पूजनकरो सखियों के यह वचन सुनकर मैंने वगीचे के एकान्त स्थानमें रहनेवाले विघ्नहर्त्ता श्री गणेशजीका पूजनकिया पूजनके उपरान्त मैंने देखा कि अक-

दासने शोचा कि इसप्रकारसे में अपने श्वशुरके यहां कैसे जाऊं क्योंकि कहाभी है कि अर्थात् मानीपुरुषका मरजाना अच्छा है परंतु अपने संबंधियों के आगे दीनता करना अच्छा नही यही शोचकर बाजार में जाके किसी दूकानके बाहर रात्रिके समय कमलके समान मुरझाकर वह बैठरहा क्षणभरकेही पीछे उसने देखा कि कोई जवान बनियां उस दूकानके किवाड़ खोलकर भीतर चलागया और क्षणभरकेही पीछे उसी दूकानमें एक स्त्री बहुत धीरे २ पैर रखती हुई जल्दी से उसी दूकान मे चलीगई जब दीपक के उजियाले में देवदासने दूकानके भीतर देखा तो उसे मालूम हुआ कि यह तो मेरीही स्त्री है तब किवाड़े बन्दकरके अन्यपुरुष के साथ संभोग करनेके लिये गईहुई अपनी स्त्रीको देखकर उसकी छाती मे दुःखरूपी वज्रसा लगा और वह शोचनेलगा कि धनहीन पुरुषके शरीरको भी लोग हरलेते हैं तो स्त्रियोंका क्या कहना है क्योंकि स्त्रियां तो स्वभावही से बिजली के समान चंचल होती हैं व्यसनरूपी समुद्रमे डूबेहुये मनुष्योंको यह विपत्ति होती है और पिताके घरमें रहनेसे स्वतंत्र स्त्रियो की यह गति होती है ऐसा विचार करते २ उसने बाहर से रतिके उपरान्त जारके साथमें लेटी हुई अपनी स्त्रीका वार्त्तालाप करना सा सुना तब वह द्वारे में कान लगाकर सुननेलगा उससमय उसकी स्त्री अपने यार बनिये से बोली कि सुनो आज मैं तुमसे स्नेहके वशहोकर अपने घरकी गुप्तबात कहतीहूं कि मेरे पतिके वीरवर्मा नाम प्रपितामह ने अपनेघरके आंगनके चारों कोनोंमें सुवर्णसे भरेहुये चारकलसे गाड़े थे और उसने अपनी बहू अर्थात् मेरी सास से व मेरी सासने मुझसे कहदिया इसप्रकार मेरे पतिके यहां यहबात सासों के मुख

स्मात् मेरी सखियां अपनी सिद्धिसे उड़कर आकाश में विहारकर रही हैं यह देखकर मैंने उनको आकाशसे बुलाकर पूंछा कि तुम को यह सिद्धि कैसेहुई तब वह बोली कि मनुष्य के मांसको खाने से डाकिनी के मंत्र को जपकर यह सिद्धियां होती हैं इस मंत्रकी उपदेश करनेवाली एक कालरात्रिनाम ब्राह्मणी हमारी गुरुहै सखियों के यह वचन सुनकर आकाश में चलनेकी सिद्धिके लोभ से और मनुष्य के मांस के खाने के भयसे मैं क्षण भर बहुत सन्देह युक्तरही फिर सिद्धिके लोभसे मैंने अपनी सखियों से कहा कि उस मंत्रका उपदेश मुझे भी दिलवादो मेरे यह कहनेसे सखियां उसी समय बड़े भयङ्कर रूपवाली कालरात्रिको वहीं बुलालाईं मिली हुई भृकुटी ढीड़युक्त नेत्रवाली टेढ़ी और चपटी नाकवाली स्थूल कपोलवाली भयंकर ओष्ठवाली बड़े दांतवाली बड़ी लम्बी गर्दन वाली लम्बे स्तनवाली बड़े उदरवाली और फटेहुए तथा फूलेहुए पैरवाली उसकालरात्रि को देखकर यह मालूम होताथा कि मानों ब्रह्माने बुरी चेष्टा बनानेकी सम्पूर्ण चतुरता इसी में खतमकरदीनी है उसे आई देखकर मैं उसके पैरों में गिरी तब उसने स्नान कर- वाके मुझसे प्रथम तो गणेशजी का पूजन करवाया और वस्त्र उतरवाके मंडल के भीतर मुझे ले जाकर भैरवजी का पूजन कर- वाया इसके उपरान्त मेरा अभिषेककरके उसने अपने मंत्रों का उप- देश मुझे करदिया और पूजनमें बलिदान कियाहुआ मनुष्यका मांस मुझे खाने को दिया मंत्रों को लेकर और मनुष्यके मांस को खाकर उसीसमय में नग्नही अपनी सखियों समेत आकाश में उड़- गई फिर वहां थोड़ी देरतक विहारकरके अपनी गुरानी की आज्ञा से उतरकर मैं अपने महल में चलीगई हे राजा ! इसप्रकार से मैं

से क्रमपूर्व्वक सुनी जाती है मैंने अपने पतिके दरिद्री होजानेपर भी यह वृत्तान्त उससे नहीं कहा क्योंकि उस ज्वारी से मुझे द्वेषथा और तुम मेरे परमप्रियहो इससे यह मैंने तुमसे कहदिया तो तुम मेरे पतिके पास जाकर उसे कुछ धन देकर वह घर खरीदलो और वह सोना निकालकर यहां आकर मेरे साथ आनन्दकरो उसके यह वचन सुनकर उसका यार उसपर बिना परिश्रमके ही इतना धन मिलजानेकी आशासे बहुत प्रसन्नहुआ फिर देवदास भी उस दुष्ट स्त्री के वचनरूपी बाणों से अत्यन्त खेदितहुआ और धन मिलने की आशा उससमय उसके हृदय में कीलितसी होगई इसके उपरान्त वह शीघ्रही अपने पाटलिपुत्रनगर में चलाआया और घरमें आकर उसने सब धन खोदलिया इसके उपरान्त उसकी स्त्रीका यार वही बनियां धनके लोभसे रोजगारके बहाने वहां आया और देवदास किसी और घरमें अपना कारखाना जमाकर शीघ्रही अपनी स्त्री को युक्तिपूर्व्वक अपने श्वशुर के घर से अपने घर ले आया ऐसा करने के उपरान्त उसकी स्त्री के यार बनियें ने वहां धन न पाकर देवदास से आकर कहा कि यह तुम्हारा घर बहुत पुराना है इससे मुझे नहीं अच्छा मालूम होता तो तुम हमारा धन हमें देदो और अपना मकान लेलो जब देवदास ने उसके कहने को मंजूर न किया तब वह दोनों लड़ते हुए राजा के यहां गये वहां जाकर देवदासने हृदय में स्थित विषके समान दुस्सह अपनी स्त्री का सम्पूर्णवृत्तान्त राजाके आगे कहदिया तब राजाने उसकी स्त्री को बुलाके और सब बातोंका निश्चय करके पराई स्त्रीके चाहनेवाले उस दुष्ट बनियें का सब धन छीनलिया और देवदासभी उस दुष्ट अपनी स्त्रीकी नाक काटके और किसी अन्य स्त्रीसे विवाह करके

बाल्यावस्था में भी डाकिनियों के साथ रहा करती थी उससमय हमने मिलमिलकर बहुत से मनुष्य खायें थे हे महाराज! इसी कथा के बीच में मैं आपको एक दूसरी कथा सुनाती हूं कि उस कालरात्रिनामब्राह्मणी का विष्णुस्वामी नाम पतिथा वह उस देश भर में वेदविद्या का बड़ा जाननेवाला था इससे अनेक देशों से आये हुए विद्यार्थियों को पढ़ाया करता था सम्पूर्ण शिष्यों मे से एक सुन्दरक नाम तरुण शिष्य बड़ा रूपवान् तथा शीलवान् था एक समय विष्णुस्वामी के कहीं चले जानेपर कालरात्रि ने काम से व्याकुल होकर एकान्त में सुन्दरक से अपने साथ भोग करने को कहा कामदेव मानों कुरूप वालोंको हँसी का खिलौना बनाकर उनके साथ खेलता था क्योंकि कालरात्रि ने अपने स्वरूप को बिनादेखे सुन्दरकके साथ भोगकरनेकी इच्छाकी सुन्दरकने कालरात्रिके बहुत हठ करनेपर भी ऐसे बुरेकाम करनेकी इच्छा नहींकी ठीकहै स्त्रियां चाहैं जैसी बुरी चेष्टाकरैं परन्तु सज्जन पुरुषों का चित्त कभी नहीं डुलता इसके उपरान्त सुन्दरक के चले जानेपर कालरात्रिने क्रोधित होकर दांतों से और नखो से अपना सम्पूर्ण अङ्ग घायल करडाला और बालोंको तथा वस्त्रोंको फैलायेहुए रोती हुई तबतक बैठीरही जबतक कि विष्णुस्वामी घरको आये जब वह घर में आये तो उनसे बोली कि हे स्वामी! आज सुन्दरक ने जबरदस्ती से मेरी क्या दशाकी है यह सुनकर उस समय उपाध्याय को बड़ा क्रोधहुआ ठीक है (स्त्रियोंपर विश्वास करने से विद्वान् लोगोंका भी विचार नष्ट होजाता है) सायङ्कालके समय जब सुन्दरक आया तब विष्णुस्वामी ने अपने शिष्यो समेत दौड़कर घूसोंसे लातोंसे और लाठियों से उसे खूबपीटा जब मारते २ वह बेहोश होगया तब

सुखपूर्वक भोग करनेलगा इसप्रकार धर्म से उपार्जन कीहुई लक्ष्मी अनेक पुश्तोंतक नष्ट नहीं होती और अधर्म्म से उपार्जन कीहुई लक्ष्मी पालेके जलके कणों की समान शीघ्रनष्ट होनेवाली होती है इससे मनुष्यको धर्म से धनका उपार्जन करना चाहिये ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टविंशःप्रदीपः ॥ २८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनत्रिंशःप्रदीपः ॥ २९ ॥

भद्रकृत्प्राप्नुयाद्भद्रमभद्रंचाप्यभद्रकृत ॥
फलभूतिंहन्यमानः स्वसुतंत्ववधीन्नृपः २९ ॥

(अर्त्थ) नेकी करनेवाला नेकी को पाता और बदी करे वह बदी पाता है जैसे फलभूतिको मारने के विचार से राजा ने निज पुत्रका घात किया २९ ॥

पद्मनाम देश में अग्निदत्तनाम एक बड़ा प्रसिद्ध ब्राह्मण रह- ताथा राजाने उसे गांव दिये थे उसीसे उसका निर्वाहहोताथा उस ब्राह्मणके दो पुत्रथे वड़ेका नाम सोमदत्त था और छोटे का नाम वैश्वानरदत्तथा वड़ा भाई वहुत मूर्ख तथा महादुष्टथा और छोटाभाई विद्वान् नम्र तथा सदैव विद्या पढ़नेवालाथा अग्निदत्त के मरजाने पर उन दोनों ने विवाह करके अपने पिताका गांव आदिक धन आधा २ बांट लिया उनमें से छोटे भाईका तो राजाने बड़ा आदर किया और वड़ा भाई सोमदत्त चञ्चलता से क्षत्रियों के से कर्म्म करनेलगा एक समय शूद्रों के साथ बैठेहुए सोमदत्त को देखकर उसके पिता के मित्र किसीब्राह्मणने कहा कि हे मूर्ख! तू अग्नि- दत्त का पुत्र होकर शूद्रोंके से कर्म्म करताहै और राजाके यहां अपने छोटेभाई की ऐसी प्रतिष्ठादेखकर तुझे लज्जाभी नहीं आती यह सुनकर सोमदत्तने क्रोधसे उस ब्राह्मणका कुछ गौरव न मा-

रात्रिके समय उसको बेपरवाही से अपने शिष्यों के हाथोंसे पकड़वा के बाहर सड़कपर डलवादिया इसके उपरान्त उस समय की वायु के लगने से सुन्दरक धीरे २ होशमें आया और अपनी यह दशा देखकर विचारने लगा कि अरे जैसे बहुत तेजवायु बालूयुक्त तड़ागों को गँदला करदेती है उसीप्रकार स्त्रियोंकी प्रेरणा अधिक रजोगुण वाले पुरुषोंके चित्तको बिगाड़देती है क्योंकि वृद्ध तथा विद्वान् भी उपाध्याय नें बिना विचारे अत्यन्त क्रोधपूर्वक इतना विरोध मुझसे किया अथवा सृष्टिकी आदिसेही विद्वान् ब्राह्मणों के भी काम और मोक्षके द्वारके स्वाभाविक रोकनेवाले बेलन हैं देखो पहले भी देवदारु वनमें अपनी स्त्रियोंके बिगड़ने के सन्देह से मुनि लोग क्या शिवजी पर क्रुद्ध नहीहुए और उन ऋषिलोगों ने क्षपणक(यती) का रूप धरके पार्वती जीको ऋषियों का भी शान्त न होना दिखाते हुए महादेवजी को नही जाना फिर शाप देनेपर तीनों लोकों के नाश करनेवाले महादेवजीको पहचान कर उन्हीकी शरणमें गये तो इसप्रकार से काम क्रोधादि छः शत्रुओंके द्वारा मुनि लोग भी मोहित होजाते हैं तो वेदपाठी ब्राह्मणों का क्या कहना है रात्रिके समय इसप्रकार ध्यान करताहुआ वह सुन्दरक चोरों के भयसे शून्य गोवाट नाम महल में चढ़कर बैठरहा जबतक कि वह उसमहलमें छिपकर कहीं बैठने कोही था तबतक उसी महल मे वह कालरात्रि चक्कूको हाथमें लिये हुए भयङ्कर फूत्कारों को छोड़ती हुई नेत्र तथा मुखसे अग्निकी लपटें निकालती हुई और बहुतसी डाकिनियोंको अपने साथमें लियेहुए आई उस प्रकार से आई हुई कालरात्रि को देखकर सुन्दरक ने भयसे राक्षसोंके नाश करनेवाले मंत्रोंका स्मरणकिया उन मन्त्रों से मोहित हुई कालरात्रि ने एकान्त में भयसे

नेकर एक लात उसके मारी तब लात मारने से क्रोधित हुआ ब्राह्मण अन्य दो तीन ब्राह्मणो को गवाह करके राजा से जाकर पुकारा राजाने ब्राह्मण के वचन सुनकर सोमदत्तके पकड़ने को अपने सिपाही भेजे उन सिपाहियोंको सोमदत्तके शस्त्रधारी मित्रों ने मारा तब राजा ने बहुतसी सेना भेजकर सोमदत्त को बँधवा मँगवाया और क्रोधसे सोमदत्तको शूली देने का हुक्म दे दिया शूली पर चढाया गया सोमदत्त शूलीपरसे पृथ्वी पर ऐसे गिर-पड़ा कि मानों किसीने उसे वहांसे उठाकर पटक दिया और उसे फिर शूली पर चढाने के लिये उद्यत हुए बधिक लोग आंखों से अन्धे होगये ठीकहै जिसके लिये कुछ अच्छा होनेवाला होता है उसका भाग्यही उसकी रक्षा करता है उससमय इस वृत्तान्त को सुनकर प्रसन्नहुए राजा ने सोमदत्त के छोटेभाई के कहने से उसे शूली से छुड़वा दिया इसके उपरान्त मृत्युसे बचाहुआ सोमदत्त राजाके अनादरसे अपने घरके लोगोंको लेकर अन्यदेश मे जाने की इच्छाकरनेलगा यह बात सुनकर उसके भाईबन्धोने उसे परदेश जानेसे रोका तब सोमदत्त राजाके दियेहुए गांवोंका हिस्सा छोड़ के वहीं रहनेलगा—इसके उपरान्त किसी अन्य रोजगारके न होने से वह खेती के करनेके विचारसे खेतीके योग्य पृथ्वी ढूंढनेके लिये किसी अच्छेदिन वनको गया वनमे जाकर उसे फल होनेके योग्य बड़ी सुन्दर पृथ्वी मिली और उस पृथ्वी के बीचमें एक बड़ाभारी पीपलका वृक्ष उसको दिखाईपड़ा उस वृक्षकी ऐसी शीतल सघन छायाथी कि उसके नीचे सदैव वर्षाऋतुसी बनीरहतीथी उस वृक्षको देखकर बहुतप्रसन्नहुए सोमदत्तने कहा कि जो कोई देवता इसवृक्ष का मालिकहै उसीका मैं भक्तहूं और प्रदक्षिणा करके उस वृक्षको

अंगों को सकोड़े हुए बैठेहुए सुन्दरकको नहीं देखा इसके उपरान्त कालरात्रि उड़ने के मन्त्रको जपकर महल समेत आकाश में उड़ गई सुन्दरकने वह मंत्र सुनकर याद करलिया और कालरात्रि उस महल समेत शीघ्रही उज्जयिनीको चलीगई उज्जयिनी में जाकर शाकवाट (शाककी मंडी) मे उस महलको मंत्रके द्वारा उतार कर कालरात्रि डाकिनियों समेत श्मशान भूमि मे क्रीड़ा करने चली गई और उससमय क्षुधासे व्याकुल सुन्दरकने महलसे शाकवाटमें जाकर उखाड़ी हुई मूली खाई और मूलियो के द्वारा अपनी क्षुधाको निवृत्तकरके वह गोवाटमें जाके उसीप्रकारसे बैठरहा इसके उपरान्त कालरात्रि श्मशान से लौटी और उसी गोवाट पर चढके मंत्रों के द्वारा आकाश मार्ग में उड़ी और अपने यहां आकर गोवाट को जहां से लिया था वही रखकर और उन डाकिनियो को विदाकरके शयन के स्थान में चलीगई सुन्दरक भी आश्चर्य्य पूर्व्वक उस रात्रिको व्यतीत करके प्रातःकाल गोवाट से उठकर अपने मित्रों के पास चलागया वहां अपने मित्रों से सम्पूर्ण वृत्तान्त कहकर विदेश जाने की इच्छा करनेलगा तब मित्रो ने समझाकर उसे अपने ही पास रक्खा उपाध्यायके घरको छोड़कर यज्ञगृह में भोजन करताहुआ सुन्दरक अपने मित्रों के साथ विहार करताहुआ स्वच्छन्द रहनेलगा एक समय घरकेलिये किसी चीज़के खरीदने के लिये बाज़ार मे गईहुई कालरात्रि ने सुन्दरकको देखा उससमयभी वह कामसे पीड़ित होकर उससे बोली कि हे सुन्दरक तू अबभी मेरे साथ भोगकर क्योंकि मेरे प्राण तेरेही आधीन हैं उसके यह वचन सुनकर उस साधु सुन्दरकने कहा कि तुम ऐसा मत कहो मेरा यह धर्म नहीं है क्योंकि तुम गुरुपत्नी होनेसे मेरी माता

प्रणाम किया इसके उपरान्त मङ्गलाचार करके, और उस वृक्ष के नीचे बलिदान करके सोमदत्त दो बैलों को जोड़कर वहीं खेती करने लगा। सोमदत्त उसी वृक्षके नीचे रहा करताथा और उसकी स्त्री वहीं उसको भोजन लेआया करती थी समय पाकर जब उस का सब नाज पक गया तब किसी अन्यदेश के राजा ने आकर उस पृथ्वी को उजाड़ दिया फिर राजा की सेना के चले जाने पर और नाजके नष्ट होजाने पर रोती हुई अपनी स्त्री को वीर सोमदत्त ने समझाकर जो कुछ नाज बचा था सो सब दे दिया और पहले के समान बलिदान करके उसीवृक्ष के नीचे रहा, ठीक है ऐसाही कहाहै आपत्तियोंमें अधिक दृढ़ होना धीरों का स्वभावहै— इसके उपरान्त रात्रिके समय उसीवृक्षके नीचे अकेले बैठेहुए और चिन्तासे जागते हुए सोमदत्तको उसी वृक्षपरसे वह वचन सुनाई पड़े कि हे सोमदत्त! तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्नहूं तो तुम श्रीकण्ठदेशमें आदित्यप्रभनाम राजाके राज्यमें जाओ वहां जाकर राजाके द्वार पर सन्ध्या और अग्निहोत्रके मन्त्रों को पढ़कर यह वचन कहना कि मैं फलभूति नाम ब्राह्मण हूं जो कुछ मैं कहता हूं वह सुनो— नेकी करनेवालोंको नेकी और बदी करनेवालोंको बदी मिलती है ऐसा कहने से वहां तुमको बड़ा ऐश्वर्य्य मिलेगा सन्ध्या तथा अग्निहोत्रके मन्त्र तुम मुझीसे अभी पढलो मैं एक यक्षहूं यह कह कर अपने प्रभावसे सोमदत्त को वह मन्त्र पढ़ाकर उस वृक्षसे वह वाणी निवृत्त होगई प्रातःकाल सोमदत्त यक्षके कहने से, अपना फलभूतिनाम रखकर स्त्रीसमेत वहां से चला मार्ग में विषम और टेढ़े वेढ़े वनोंको दुर्दशाओं के समान उल्लङ्घन करके वह श्रीकण्ठ देशमें पहुँचा वहां जाकर सन्ध्या तथा अग्निहोत्रके मन्त्र पढ़कर

के समानहो तब कालरात्रि बोली कि जो तुम धर्मको जानते हो तो मेरे प्राण रक्खो क्योंकि प्राणदान से बढ़कर कोई धर्म नहीं है यह सुनकर सुन्दरक ने कहा हे माता ! ऐसा विचार अपने हृदयमें कभी मत करो भला गुरुकी स्त्रीके साथ भोग करनाभी कहीं धर्म होसक्ताहै इसप्रकार सुन्दरकसे निषेध कीहुई क्रोधसे सुन्दरक को डराती हुई कालरात्रि अपने ही हाथसे अपने वस्त्र फाड़कर घरमें आई और घर में अपने पति को अपना वस्त्र दिखाकर बोली कि देखो आज सुन्दरक ने दौड़कर मेरा वस्त्र फाड़डाला यह सुनकर उसके पतिने यज्ञशाला में जाकर यह कहकर कि यह सुन्दरक भोजनके देनें योग्य नही है बल्कि मारनें के योग्य है उसका भोजन बन्द करवादिया इसके उपरान्त सुन्दरक बड़े खेदसे परदेश जाने के लिये फिर उद्यत हुआ और गोबाट नाम महल में सीखाहुआ आकाश में उड़ने का मन्त्र तो उसे यादही था परन्तु उतरने का मन्त्र कुछ भूलगया था उसी को सीखने के लिये वह उसी शून्य गोबाटमें फिर जाकर पहलेही के समान बैठा तब कालरात्रि वहां आकर महलसमेत उड़कर उज्जयिनी को चली गई उज्जयिनी में गोबाटको मन्त्रद्वारा शाकवाट में उतारकर क्रीड़ा करने के लिये श्मशान को चलीगई सुन्दरक ने उस मन्त्रको दूसरी बार भी सुन कर नही याद किया क्योंकि गुरुकी आज्ञाके बिना सम्पूर्ण सिद्धि नहीं होसक्ती इसके उपरान्त सुन्दरक ने कुछ मूली खाई और कुछ मूली घर लाने के लिये गोबाट में उठाकर रखलीं और वही छिप कर बैठरहा तब कालरात्रि वहां आकर गोबा[illegible]समेत उड़ी और गो-

इसलिये वेंचने को चला कि इनको वेंचकर जो कुछ धन मिले उससे भोजन को लाऊं उसे मूली वेंचते हुए देखकर मालव देश के राजसेवकों ने विना मूल्य दियेही अपने देश की उत्पन्न हुई मूलियां उससे छीनलीनी, जब वह उन से लड़ने लगा तो वह उसे बांधकर राजा के यहां लेगये और उसके मित्र भी उसके पीछे २ उसके साथ चलेगये वहां जाकर उन मालव देशवालों ने राजासे कहा कि हे राजा हम लोग इससे पूछते हैं कि तू मालव देशसे मूली लाकर कान्यकुब्जदेशमें सदैव कैसे वेचा करता है इसका उत्तर तो यह कुछ नहीं देताहै परन्तु ढेले मारताहै—यह अद्भुत बात सुनकर राजाने उससे पूछा कि यह कैसी बातहै तब उसके मित्र बोले कि हे राजा जो हम लोगों समेत इसे महल पर चढ़ाइये तो यह सब बात कहेगा नहीं तो नही कहेगा—राजा ने उसी समय उसको मित्रों समेत महलपर चढा दिया तब सुन्दरक महल समेत राजाके देखतेही देखते आकाश में उड़गया सुन्दरक अपने मित्रों समेत धीरे २ प्रयाग पहुँचा और वहां थककर उसने किसी राजाको गंगास्नान करतेहुए देखा वहां मकान को आकाशमेंही रोककर वह गंगाजीमें कूदपड़ा लोगोंको उसके देखनेसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह उसी स्नान करनेवाले राजाके पास चलागया राजाने प्रणाम करके उससे पूछा कि तुम कौनहो और किसलिये आकाश से उतरेहो तब उसने कहा कि मैं सुन्दरकनाम महादेवजीका गणहूं मनुष्योंकेसे भोग करनेको मैं महादेवजी की आज्ञासे तुम्हारे पास आयाहूं यह सुनकर उसके वचन सत्य जानकर राजाने सम्पूर्ण अन्नोंसेयुक्त रत्नोंसे पूर्ण एक पुरस्त्री तथा राज्यके सब अंगोंसमेत उसे देदिया वह उसपुर में जाकर पुरसमेत आकाश में

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेएकत्रिंशःप्रदीपः ॥

आपद्गतापिसाध्वीनत्यजतिस्वीयसम्यगाचरणम् । श्रेयस्ततोपिभवतेयथाद्विजस्त्रीसुखंलेभे ३१ ॥

(अर्थ)-पतिव्रता स्त्री महाभारी आपत्ति में भी निज श्रेष्ठ आचरणको त्यागती नहीं इसीसे फिर उसे सुखभी मिलजाता है जैसे-द्विजवधू निजधर्म की रक्षाकी थी तो फिर सुखको प्राप्तहुई ३१ ॥

मालवदेश में बड़ा विद्वान् और धनवान् अग्निदत्त नाम एक ब्राह्मण था वह सदैव याचकों को धनदिया करता था उसके अपने ही समान दोपुत्र उत्पन्न हुए ज्येष्ठका नाम शङ्करदत्त और कनिष्ठ का नाम शान्तिकर था उनमें से शान्तिकर विद्या पढ़ने के लिये बाल्यावस्थाहीमें पिताके घरसे निकलकर कहीं चलागया और बड़े भाई ने यज्ञ करने के लिये धनके इकट्ठे करनेवाले यज्ञदत्त नाम ब्राह्मण की कन्याके साथ विवाह किया वह मैंहूं समय पाकर मेरा श्वशुर स्वर्गवासी हुआ और मेरी सासभी उसी के साथ सती होगई इसके उपरान्त मुझ गर्भवती को छोड़कर मेरे पतिने तीर्थयात्राके बहाने जाकर सरस्वती नदीके प्रवाहमें शोकसे अन्धहोकर अपना शरीर त्याग करदिया जब उसके साथियों ने आकर उसका वृत्तान्त कहा तब मैं गर्भवती होनेके कारण उसके दुःख में अपना शरीर नहीं त्यागसकी इसके उपरान्त अकस्मात् बहुतसे चोरों ने आकर जिस गांव में रहती थी वह सब गांव लूट लिया उस समय तीन ब्राह्मणियों के साथ होकर मैं अपने आचरणकी रक्षाकरने के लिये थोड़ेसे वस्त्रोंको लेकर वहां से भागी देश भंग होनेसे बहुतदूर आकर एक देश में महीने भरतक बहुत कठिन कर्म्मोंकी जीविका करके

उड़गया और अपने साथियोंसमेत अपनीइच्छासे विहारकरनेलगा सुवर्ण के पलंगपर सोताहुआ चामरोंसे मोरछल कियाहुआ और श्रेष्ठस्त्रियों से भोगकियाहुआ सुन्दरक आकाशहीमें इन्द्रकेसे सुख भोगनेलगा एक समय कोई सिद्ध आकाशमार्ग से चला जाता था उसकी इस सुन्दरक ने वड़ी स्तुतिकी तब उसने प्रसन्न होकर इसको आकाश से उतरने का मंत्र दिया आकाश से उतरने का मंत्र पाकर वह पुर समेत अपने कान्यकुब्ज देश में आकाश से उतरा वड़े धनाढ्य पुर समेत आकाश से उतरे हुए उसे जानकर राजा वड़े आश्चर्य्य से आपही उसके पास आया राजाने उसे प- हिंचानकर जब उससे पूछा तो उसने अपना और कालरात्रि का सब वृत्तान्त ठीक २ राजासे कहदिया यह सुनकर राजाने काल- रात्रिको बुलाकर पूछा तो उसने निर्भय होकर अपना सम्पूर्ण दोप स्वीकार करलिया यह सुनकर जब राजा कुपितहोकर उसके कान काटने को उद्यत हुआ तो पकड़ने पर भी सब के देखते २ अन्त- र्द्धानहोगई राजाने तबसे कालरात्रिका अपने देशमें रहना निषेध करदिया और राजाके पूजनको ग्रहणकरके सुन्दरकभी आकाश को चलागया रानी कुवलयावली इसप्रकार राजा आदित्यप्रभ से कहकर फिर कहनेलगी कि हेस्वामी डाकिनियोंके मंत्रकीसिद्धियां इसीप्रकार की होती है और यह वृत्तान्त मेरे पिता के देशभर में प्रसिद्धहै मैंने यह तो आपसे कहा कि मैं कालरात्रि की शिष्यहूं परंतु पतिव्रता होने के कारण मेरी सिद्धि कालरात्रिसे भी वढ़ीहुई है आज आपने मुझे देखलिया मैं आपही के लिये यह पूजनकर रहीथी और बलिदानदेने के निमित्त मंत्र से किसी पुरुप को खैंचने को उद्यतथी हे राजा अब आपभी इस हमारे मार्ग में आजाइये तो

उसे लेकर कान्यकुब्ज देशको चलागया वहां उसने वह आभूषण एकलाख अशर्फी में गिरवी रखकर हाथी और घोड़े आदि सब परिकर इकट्ठे किये और उस सब परिकरको लेकर चक्रवर्तीके पास जाके अपना वृत्तान्त वर्णन किया और चक्रवर्ती की दीहुई बहुत सी सेना अपने साथ में लेकर शत्रुओंको मार अपने पिताके राज्य को लेलिया देवदत्त को फिर अपने राज्यपर बैठा देखकर उसकी माता बहुत प्रसन्नहुई इसके उपरान्त देवदत्त ने उस आभूषण को छुड़ाकर अपनी स्त्री का सब वृत्तान्त प्रकट करने के लिये अपने श्वशुरके पास भेजदिया उसने भी अपनी कन्या के कान के आभूषणको देखकर घबराके अपनी कन्याको जाकर दिखाया पहले भ्रष्टहुए आचारके समान उस आभूषणको देखकर और उसे अपने पतिका भेजा जानकर बनिये की पुत्री ने व्याकुल होकर अपने चित्त में स्मरण किया कि यह आभूषण उस रात्रि को यज्ञशाला में गिराथा जिसमें कि मैंने वहां एक पथिक देखाथा इससे यह ज्ञात होता है कि वह मेरा पति मेरे आचरण की परीक्षा करनेको आया था परन्तु मैं उसे नहीं पहिचानसकी कदाचित् वही इसे लेगया होगा इस प्रकार शोचती हुई उस बनिये की पुत्री का हृदय अपने दुराचारके प्रकट होजाने से व्याकुल होकर कातरता से फटगया इसके मरजाने पर इसके पिता ने पुत्री के वृत्तान्त के जाननेवाली दासी से पूछके और सम्पूर्ण तत्त्व समझकर अपने शोकको त्याग करदिया और वह राजपुत्र राज्य को पाकर अपने गुणों से प्रसन्न हुई चक्रवर्ती की कन्या को दूसरी राजलक्ष्मी के समान प्राप्त होकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिंश प्रदीपः ३० ॥

अपनी सिद्धि से सम्पूर्ण राजालोगों को जीतकर उनके शिरोमणि होजाइये यह सुनकर राजाने कहा कि कहां तो डाकिनियों के मार्ग में मनुष्य के मांसका भोजन करना और कहां राज्यकरना इस में बड़ा अन्तर है और यहबात कहके राजाने अपने संयुक्तहोने का निषेध करदिया परंतु जब रानी प्राणदेने को तय्यारहुई तब राजा ने उसका कहना अंगीकारकरलिया ठीकहै (विषयों के वशीभूत मनुष्य अच्छेमार्ग में कैसे रहसक्ते हैं) इसके उपरान्त रानीने पहले से पूजन कियेहुए उस मंडल में राजा को बुलालिया और उससे सम्पूर्ण बातों का नियम करने का कौल करार कहा कि यह जो फलभूति नाम ब्राह्मण आपके पास रहताहै उसीको आज मैंने भेंट देनेके लिये खेंचने का विचार किया था परन्तु मंत्रके द्वारा खेंचने में बड़ा परिश्रम है इससे किसी रसोइये को भी इसमार्ग में लेना चाहिये जिससे कि वह रसोइया उसे आपही मारे और पकावे हे राजा! उस बलिदान के मांस के खाने में घृणा न करना चाहिये क्योंकि पूजन के समाप्त होजानेपर सिद्धि पूर्ण होजाती है इससे वह मांस बड़ा उत्तम है प्रियाके यह वचन सुनकर पापसे डरेहुए भी राजाने ब्राह्मणका बलिदान देना स्वीकार करलिया (बड़ेकष्ट देनेवाली स्त्रियोंकी आज्ञाके पालन करने को धिक्कारहै) इसके उपरान्त साहसिक नाम रसोइये को बुलाकर और उसेभी विश्वास पूर्वक अपना शिष्यकरके राजा और रानी दोनों उससे बोले कि राजा और रानी आज साथही भोजनकरेंगे इससे शीघ्रही भोजन बनाओ यह बात तुमसे जो कोई आकर कहे उसे मारकर उसी के मांस से प्रातःकाल एकान्त में तुम स्वादिष्ट भोजन हमारे वास्ते बनाना राजाकी इस आज्ञाको स्वीकार करके वह रसोइया अपने

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेएकत्रिंशःप्रदीपः॥

आपद्गतापिसाध्वीनत्यजतिस्वीयसम्यगाचरणम्। श्रेयस्ततोपिभवतेयथाद्विजस्त्रीसुखंलेभे ३१॥

(अर्थ)-पतिव्रता स्त्री महाभारी आपत्ति में भी निज श्रेष्ठ आचरणको त्यागती नहीं इसीसे फिर उसे सुखभी मिलजाता है जैसे-द्विजवधू निजधर्म की रक्षाकी थी तो फिर सुखको प्राप्तहुई ३१॥

मालवदेश में बड़ा विद्वान् और धनवान् अग्निदत्त नाम एक ब्राह्मण था वह सदैव याचकों को धनदिया करता था उसके अपने ही समान दोपुत्र उत्पन्न हुए ज्येष्ठका नाम शङ्करदत्त और कनिष्ठ का नाम शान्तिकर था उनमें से शान्तिकर विद्या पढ़ने के लिये बाल्यावस्थाहीमें पिताके घरसे निकलकर कहीं चलागया और बड़े भाई ने यज्ञ करने के लिये धनके इकट्ठे करनेवाले यज्ञदत्त नाम ब्राह्मण की कन्याके साथ विवाह किया वह मैंहूं समय पाकर मेरा श्वशुर स्वर्गवासी हुआ और मेरी सासभी उसी के साथ सती होगई इसके उपरान्त मुझ गर्भवती को छोड़कर मेरे पतिने तीर्थयात्राके बहाने जाकर सरस्वती नदीके प्रवाहमें शोकसे अन्धहोकर अपना शरीर त्याग करदिया जब उसके साथियों ने आकर उसका वृत्तान्त कहा तब मैं गर्भवती होनेके कारण उसके दुःख में अपना शरीर नहीं त्यागसकी इसके उपरान्त अकस्मात् बहुतसे चोरों ने आकर जिस गांव में रहती थी वह सब गांव लूट लिया उस समय तीन ब्राह्मणियों के साथ होकर मैं अपने आचरणकी रक्षाकरने के लिये थोड़ेसे वस्त्रोंको लेकर वहां से भागी देश भंग होनेसे बहुतदूर आकर एक देश में महीने भरतक बहुत कठिन कर्म्मोंकी जीविका करके

घर को चलागया प्रातःकाल राजाने फलभूति से कहा कि तुम साहसिकनाम रसोइये से जायकर कहो कि रानीसमेत राजा आज स्वादिष्ट भोजन करेंगे इससे तुम शीघ्रही उत्तम भोजन बनाओ राजाकी आज्ञा को लेकर बाहर गये हुए फलभूति से चन्द्रप्रभनाम राजाके पुत्रने कहा कि यह सोना लेकर आज शीघ्रही तुम हमारे लिये वैसे कुण्डल बनवाओ जैसे कि पहले तुमने हमारे पिता के लिये बनवाये थे जब राजपुत्रने फलभूति से बहुत हठपूर्व्वक शीघ्र जाने को कहा तो वह राजाका संदेशा उस राजपुत्र से कहकर कुंडल बनवाने को चलागया और राजपुत्र भी फलभूति की बताई हुई राजाकी आज्ञाको कहने के लिये अकेलाही रसोईदारके पास गया वहांजाकर जब राजपुत्र ने रसोइये से राजा की आज्ञाकही तब उस साहसिक ने शीघ्रही राजपुत्र को छुरी से मारडाला और उसी के मांस से बनाये हुए भोजन को पूजन के उपरान्त राजा रानीने बिना उस तत्त्वके जाने खाया राजाने पश्चात्ताप सहित वह रात्रि व्यतीतकरके प्रातःकाल कुंडलोंके बहानेसे राजाने उस समय उससे पूछा कि तुम यह कैसे कुंडल लेकर यहां आये हो तब फल-भूति ने कुंडलोंका सब वृत्तान्त कहदिया उस वृत्तान्त को सुनतेही राजा पृथ्वी में गिरकर हा पुत्र २ कहकर चिल्लानेलगा और अपनी तथा रानीकी निन्दा करनेलगा जब मंत्रियोंने पूछा कि यह क्या वृत्तान्तहै तब राजाने सब वृत्तान्त सत्य २ कहदिया और बोला कि फलभूति तो नित्य कहताही था कि (नेकी करनेवालेको नेकी और बदी करनेवालेको बदी) जैसे दीवार पर फेंकीहुई गेंद फेंकनेवाले ही की ओर लौटकर आजाती है उसीप्रकार दूसरे के लिये विचारा हुआ दोष अपनेही ऊपर आताहै देखो हम दोनों पापियों ने ब्रह्म-

निवास किया वहां लोगों से राजा उदयन को अनाथों की रक्षा करनेवाले सुनकर ब्राह्मणियों के साथ केवल सदा चाररूपी पाथेय (सफ़रख़र्च) को लेकर वहां आई इस देश में आतेही उन तीनों ब्राह्मणियों के समीपही में एक साथही यह दोनों पुत्र उत्पन्न हुए शोक विदेश दरिद्रता और एक साथही दोनों पुत्रोंका उत्पन्नहोना वाह ब्रह्माने मानों मेरे लिये आपत्तियों का द्वारही खोलदिया तब इन बालकों के पालन करने के लिये कोई गति न समझकर मैंने स्त्रियों के लज्जारूपी आभूषण को छोड़कर सभामें आकर महाराज उदयनसे प्रार्थनाकी और उनकी आज्ञासे तुम्हारे सन्निकट प्राप्तहुई ठीक कहा है कि आपत्ति में पड़ेहुए बालकों के दुःख को कौन देख सक्ता है तुम्हारे द्वारपर आतेही मेरी सम्पूर्ण विपत्तियां मानों किसी ने मारकर भगादीं हे रानी ! यह मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्तहै और बालकपनसेही अग्निहोत्र के धुएंसे मेरे नेत्र पिंगलवर्णके होगये इसलिये मेरा पिङ्गलिकानाम है और मेरा शान्तिकरनाम देवर जो परदेश चलागया था सो कहां है यह अबतक नहीं मालूम हुआ इसप्रकार अपने वृत्तान्त को कहनेवाली उस ब्राह्मणी को कुलीन जानकर रानी विचारकर बोली कि यहां शान्तिकर नाम विदेशी ब्राह्मण रहताहै वह मेरा पुरोहित है मैं जानती हूं कि वही तेरा देवर होगा इसप्रकार उसब्राह्मणी से कहकर और उस उत्कंठित ब्राह्मणी को रात्रिभर अपने समीप रखकर प्रातःकाल रानी ने शान्तिकरको बुलाके उसका वृत्तान्त पूंछा उस वृत्तान्त को सुनकर रानीको निश्चय होगया कि यह पिंगलिकाका देवरहै फिर शान्तिकरसे कहा कि यह तुम्हारे बड़े भाईकी स्त्री तुम्हारी भावी है तब जानपहिचान होजाने पर उसकेद्वारा अपने माता पिता तथा भाई की मृत्युजान

हत्या करने का विचार कियाथा इससे अपनेही पुत्र को मरवाकर उसीका मांस खानापड़ा यह कहकर और नीचे को मुख कियेहुए अपने मंत्रियों को समझा कर राजाने अपने सब राज्य में उसी फलभूति का राज्याभिषेक करदिया पुत्ररहित राजा इसप्रकार अपनेपापसे छूटने के लिये सम्पूर्ण राज्यकादान करके और पश्चात्ताप से बहुत संतप्त होके रानीसमेत अग्नि में जलगया फलभूति उस राज्यको पाकर सब पृथ्वी का पालनकरनेलगा इसीप्रकार भलाई या बुराई जो दूसरे पर कियाचाहै वह अपनेही ऊपर आजाती है॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकोनत्रिंश प्रदीप ॥ २९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेत्रिंशःप्रदीपः॥

ताडिताप्यनुरक्तैव जारेजारेणजायते।
यथाराजसुतस्त्रीसा ताडिताप्यनुरक्तिका ३०॥

(अर्थ) व्यभिचारिणी स्त्री यारसे ताड़ना करने में भी स्नेहवती ही होती है जैसे देवदत्त नाम राजपुत्रकी वधू निज जारसे पीटीजाने परभी न हटी और स्नेह से तिसके साथ भोगकिया ३०॥

पूर्व्वसमय में जयदत्त नाम किसी सामान्य राजा के देवदत्त नाम पुत्र हुआ समय पाकर देवदत्तके तरुण होने पर उसके विवाह करनेकी इच्छा से उस बुद्धिमान् राजाने यह शोचा कि अत्यन्त चंचल राजलक्ष्मी वेश्या के समान बलवानही से भोग की जासक्ती है और बनियों की लक्ष्मी कुल स्त्री के समान अन्य गामिनी नहीं होती इससे मैं अपने पुत्रका विवाह बनिये की पुत्रीसे करूंगा इसकारणसे अनेक उपाधियुक्त इस राज्यमें इसको क्लेश न होगा ऐसा निश्चय करके राजा जयदत्त ने अपने पुत्रके लिये पटने के रहनेवाले वसुदत्तनाम बनिये से अपने पुत्रके लिये कन्या

शान्तिकर उसको अपने घर लेगया और वहां जाकर अपने
पिता और भाई का शोककरके अपनी उसभावीको सावधान
रानी वासवदत्ताने भी पिंगलिका के दोनों पुत्र होनेवाले
ने पुत्रके पुरोहित बनाये और बहुतसा धन देकर ज्येष्ठकानाम
न्तसोम और कनिष्ठ का नाम वैश्वानर रक्खा॥ अथ के स-
यह लोक आगे चलतेहुए अपने कर्मोंकरके फलरूपी पृथ्वी
पहुंचाया जाता है उसमें अपना पुरुषार्थ हेतुमात्र है क्योंकि
लिका शान्तिकर और वह दोनों बालक सब अनायास एक
न में आकर मिलगये॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकत्रिंशःप्रदीपः ३१॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्वात्रिंशःप्रदीपः ३२॥

स्नेहोवापिविरोधोवाजायतेपूर्वजन्मतः।
संस्कारादेवसर्वत्रयथाजीमूतवाहने ३२॥

(अर्थ) स्नेह वा विरोध किसीसे अकस्मात्ही हो वह पूर्वजन्मसं-
स्कार से ही होताहै जैसे जीमूतवाहनमें पुलिन्दकर स्वाभा-
वही स्नेह उत्पन्न होगयाथा ३२॥

श्रीपार्वती जी का पिता हिमालयनाम पर्व्वत जो कि केवल
तोंही का नहीं किन्तु श्री शिवजी का भी गुरुहै उस पर्व्वत
विद्याधरों का राजा जीमूतकेतु रहताथा उसके घरमें एक कल्प-
पुरुषार्थों के समयसे था उसकेहीद्वारा राजाके सम्पूर्ण मनोरथ
होते थे एकसमय राजा जीमूतकेतु ने बगीचे में जाकर कल्प-
से यह प्रार्थनाकरी कि हे देव! सदैव आप हमारे सम्पूर्ण मनोरथों
पूर्ण करते हो इससे मुझ अपुत्र को एक गुणवान् पुत्र दीजिये
सुनकर कल्पवृक्षने कहा कि तुम्हारे अत्यन्तदानी पूर्वजन्म का

मांगी वसुदत्तने भी उत्तम सम्बन्धकी इच्छा से दूरदेशमें भी राज-
पुत्रके लिये अपनी कन्या देना स्वीकार करलिया और विवाह के
समय जामाता को इतने रत्न दिये कि उसको अपने पिताके स-
म्पूर्ण ऐश्वर्य का अभिमान दूर होगया उस धनवान् वनिये की
कन्याके साथ अपने पुत्रका विवाह करके वह जयदत्त राजा सुख
पूर्वक रहनेलगा एक समय वसुदत्त बहुत उत्कण्ठित होकर अपने
जमाई के घर आकर अपनी पुत्रीको लिवा लेगया इसके उपरान्त
अकस्मात् राजा जयदत्त तो स्वर्गवासी हुआ और उसके भाइयों ने
देवदत्तसे सम्पूर्ण राज्य छीनलिया तब उनके डरसे उसकी माता
छिपकर उसे किसी दूरदेश में लेगई वहां जाकर देवदत्तसे उसकी
माता ने कहा कि पूर्वदिशा का राजा चक्रवर्ती है और वही हमारा
स्वामी है उसके पास तुम जाओ वह तुमको तुम्हारा राज्य दिलवा
देगा माताके यह वचन सुनकर राजपुत्र ने कहा कि परिकरके
बिना वहां मुझको कौन राजपुत्र समझेगा यह सुनकर फिर माता
बोली कि पहले तुम अपने श्वशुरके घर जाकर वहांसे धन लेकर
परिकर बनाके उस चक्रवर्ती के पास जाओ माता से इस प्रकार
प्रेरणा कियाहुआ वह राजपुत्र लज्जित होकर वहां से धीरे २ चला
और सायङ्काल के समय अपने श्वशुर के घर में न जासका श्व-
शुरके घरके निकट किसी यज्ञशाला के बाहर ठहरा वहां रात्रि के
समय उसने देखा कि श्वशुर के कोठे से एक स्त्री रस्सी के सहारे
नीचे उतररही है क्षणभर में आकाश से गिरी हुई ज्वालाके समान
रत्नजटित आभूषणों से देदीप्यमान उस स्त्री को उसने पहिंचाना
कि यह तो मेरीही स्त्री है और पहिचान कर उसके

खेद हुआ उस स्त्रीने तो उसे देखकर भी

स्मरण करनेवाला सम्पूर्ण प्राणियों का हितकारी पुत्र होगा यह सुनकर प्रसन्नहुए राजा जीमूतकेतु ने कल्पवृक्ष को प्रणाम किया और महल में जाकर रानी से भी यह वृत्तान्त कहकर उसे अत्यन्त प्रसन्नकिया इसके उपरान्त थोड़ेही दिनों में राजाकेपुत्र हुआ उसने उसका नाम जीमूतवाहन रक्खा जैसे २ वह जीमूतवाहन बढ़ता था वैसेही उसके हृदयमें सम्पूर्ण प्राणियों पर दया भी बढ़ती जाती थी समय पाकर जब वह युवराज हुआ तब उसने अपनी सेवा से प्रसन्नकरके पितासे एकान्तमें कहा कि हे महाराज! संसारमें जितने भर पदार्थ हैं वह सब क्षणभंगुरहैं परन्तु महात्माओं का निर्मलयश कल्पपर्य्यन्त रहता है यदि पराये उपकार से ऐसा सुन्दर यश प्राप्त होताहै तो धन प्राणों से भी अधिकप्यारा क्यों होनाचाहिये जिस सम्पत्ति से पराया उपकार नहीं होताहै वह बिजलीके समान लोगों के नेत्रों को देखकर चंचलतासे नाशको प्राप्त होजाती है इससे यह जो कल्पवृक्ष सम्पूर्ण मनोरथों का पूर्ण करनेवाला हमारे यहां है यह जो पराये उपकार के अर्थ रखदिया जाय तो उसका होना सफल होजाय तो अब मैं ऐसा करताहूं कि जिससे कल्पवृक्ष की सम्पत्तियों से सम्पूर्ण याचकलोग दरिद्र रहित होजायँ पिता से यह कहकर और उनकी आज्ञा पाके जीमूतवाहन कल्पवृक्ष के पास जाकर बोला कि हे देव! आप सदैव हमारे मनोरथों को पूर्ण करते रहेहो इससे अब हमारे इस मनोरथको भी पूर्णकरो सम्पूर्ण

के कारण नहीं पहिंचाना और उससे पूछा कि तू कौनहै उसनेकहा कि मैं एक पथिकहूं इसके उपरान्त वह यज्ञशालाके भीतरगई और राजपुत्र भी छिपकर देखनेके लिये उसके पीछे चलागया वहां वह स्त्री एक पुरुष के पासगई उसने उसे देखकर कहा कि तू आज बहुत देर करके आई और लातों से उसे बहुत पीटा पीटने से और भी अधिक अनुराग युक्त होकर उसने उसे प्रसन्नकिया और इच्छाके अनुसार उसके साथ रमणकिया यह सम्पूर्ण चरित्र देखकर राजपुत्र ने अपने चित्त में विचार किया कि यह क्रोधका समय नहींहै अभी मुझे अन्य कार्य्य करनेहैं मेरा यह शत्रुओं के योग्य शस्त्र इस दीन स्त्रीपर और इस जड़पुरुष पर चलाने के योग्य नहींहै इस दुष्ट स्त्रीसे मुझे क्या प्रयोजन है यह सब कार्य मेरेही दुर्भाग्य का है जोकि मेरे धैर्यकी परीक्षा न करनेका फलहै ठीक कहाहै कि कौएकी स्त्री कौएको छोड़कर कोकिलके साथ कैसे रमणकरे यह सोचकर उसने अपनी स्त्री और जार दोनोंको उपेक्षाकरके न मारा बहुतजीने की इच्छा करनेवाले सज्जन लोगों के चित्त में स्त्री रूपी तृण क्या है उससमय रति के आनन्द में मोतियों से जड़ाहुआ आभूषण उस स्त्रीके कानमें से गिरपड़ा वह उसने रतिके अन्त में भी नहीं सँभाला और जारसे पूछकर जिसमार्ग से आईथी उसीमार्ग होकर चलीगई और उसके जानेकेबाद वह जार पुरुष भी चलागया इन दोनों के चलेजाने के उपरान्त राजपुत्रने वह जड़ाऊ आभूषण उठालिया रत्नोंके प्रकाश से देदीप्यमान वह आभूषण क्याथा मानों ब्रह्माने खोई हुई राजलक्ष्मी के ढूंढने के लिये मोहरूपी अन्धकार का दूर करनेवाला दीपक उसके हाथ में दिया उस आभूषण को बहुमूल्य जानकर राजपुत्रने जाना कि मेरा कार्य्य सिद्धहुआ और

जीमूतवाहन से अधिक और कौन बौद्धावतार के समान दयालु होगा जो कल्पवृक्ष को भी याचकों के निमित्त दे सके इस प्रकार जीमूतवाहन का यश सम्पूर्ण दिशाओं में फैलगया इसके उपरान्त जीमूतकेतुके राज्यको पुत्रके यशसे दृढहोते जानकर उसके गोत्री भाई द्वेष करनेलगे और कल्पवृक्ष के देदेने से उसे प्रभाव रहित जानके उन्हों ने यह जानलिया कि इसको हम शीघ्रही जीतलेंगे ऐसे समझकर वह सम्पूर्ण जब युद्धके लिये तैयार हुए तब जीमूतवाहन अपने पितासे कहा कि जो यह शरीरही पानी के बुलबुले के समान है तो वायुमें रक्खेहुए दीपक के समान चञ्चल लक्ष्मी से क्या प्रयोजन है और उसे भी दूसरोंको क्लेश देकर कौन बुद्धिमान् लेनाचाहे इससे हे पिता! मैं इन गोत्री भाइयों के साथ युद्ध नहीं करूंगा और राज्य छोड़कर यहां से किसी वनमें चलाजाऊंगा यह लोभी राज्यको भोगकरें मैं अपने वंश का नाश नहीं करूंगा जीमूतवाहन के यह बचन सुनकर जीमूतकेतु निश्चय करके बोला कि हे पुत्र! जब तुम्हींने युवाहोकर भी इस राज्यको तृणके समान त्यागदिया तो मैं वृद्धहोकर इस राज्यको क्याकरूंगा और मैं भी तुम्हारेही साथ वनको चलूंगा पिताके यह बचन सुनकर जीमूतवाहन पिता और माता दोनों को लेकर मलयाचल पर चलागया मलयाचल में जहां अनेक चन्दनके वृक्ष लगेहुए हैं झरने झररहे हैं और अनेक सिद्धलोग निवास करते हैं वहां एक आश्रम में रह कर अपने पिता और माताकी सेवा करनेलगा वहां रहते २ सम्पूर्ण सिद्धोंके राजा विश्वावसुके पुत्र मित्रावसु के साथ उसकी मित्रता होगई किसीसमय जीमूतवाहन ने मित्रावसु की बहिनको एकान्त में देखा और ज्ञानसे जानलिया कि यह मेरी पूर्वजन्म की स्त्री

उसे लेकर कान्यकुब्ज देशको चलागया वहां उसने वह आभूषण एकलाख अशर्फ़ी में गिरवी रखकर हाथी और घोड़े आदि सब परिकर इकट्ठे किये और उस सब परिकरको लेकर चक्रवर्तीके पास जाके अपना वृत्तान्त वर्णन किया और चक्रवर्ती की दीहुई बहुत सी सेना अपने साथ में लेकर शत्रुओंको मार अपने पिताके राज्य को लेलिया देवदत्त को फिर अपने राज्यपर बैठा देखकर उसकी माता बहुत प्रसन्नहुई इसके उपरान्त देवदत्त ने उस आभूषण को छुड़ाकर अपनी स्त्री का सब वृत्तान्त प्रकट करने के लिये अपने श्वशुरके पास भेजदिया उसने भी अपनी कन्या के कान के आभूषणको देखकर घबराके अपनी कन्याको जाकर दिखाया पहले भ्रष्टहुए आचारके समान उस आभूषणको देखकर और उसे अपने पतिका भेजा जानकर वनिये की पुत्री ने व्याकुल होकर अपने चित्त में स्मरण किया कि यह आभूषण उस रात्रि को यज्ञशाला में गिराथा जिसमें कि मैंने वहां एक पथिक देखाथा इससे यह ज्ञात होता है कि वह मेरा पति मेरे आचरण की परीक्षा करनेको आया था परन्तु मैं उसे नहीं पहिचानसकी कदाचित् वही इसे लेगया होगा इस प्रकार शोचती हुई उस वनिये की पुत्री का हृदय अपने दुराचार के प्रकट होजाने से व्याकुल होकर कातरता से फटगया इसके मरजाने पर इसके पिता ने पुत्री के वृत्तान्त के जाननेवाली दासी से पूछके और सम्पूर्ण तत्त्व समझकर अपने शोकको त्याग करदिया और वह राजपुत्र राज्य को पाकर अपने गुणों से प्रसन्न हुई चक्रवर्ती की कन्या को दूसरी राजलक्ष्मी के समान प्राप्त होकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थमाहात्म्य प्रदीप ३१ ॥

है उस समय उन दोनों का एकान्त में परस्पर देखनाही मनरूपी मृगों के बांधने की दृढ़ डोरी के समान होगया इसके उपरान्त एक दिन मित्रावसु ने आकर एकाएकी जीमूतवाहन से कहा कि मलयवतीनाम मेरी एक छोटी बहिन है उसे मैं तुमको दिया चाहता हूं तुम मेरी इच्छाको भंग न करना यह सुनकर जीमूतवाहन बोला कि हे युवराज ! यह तो पूर्वजन्ममें भी मेरी स्त्री थी और तुम दूसरे हृदय के समान मेरे परममित्र थे मैं जातिस्मरहूं इससे मुझे पूर्व-जन्मका स्मरण बनाहै उसके यह वचन सुनकर मित्रावसु बोला कि पूर्वजन्मकी सम्पूर्ण कथा कहो मुझे उसके सुनने की परमइच्छा है मित्रावसुके ऐसे कहनेपर पुण्यात्मा जीमूतवाहन अपने पूर्व-जन्मकी कथा कहनेलगा कि मैं पूर्व्वजन्म में आकाश मार्ग से चलनेवाला विद्याधरथा एकसमय हिमालय के ऊपर के शिखरपर होकर मैं जारहाथा और नीचे श्री शिवजी पार्वती के साथ क्रीड़ा कर रहे थे मुझे ऊपर जाते देखकर उल्लंघन से क्रोधित होकर महा-देवजीने शापदिया कि तू मनुष्य होजायगा वहां विद्याधरी स्त्रीको पाकर अपने मनुष्यपुत्र को अपना अधिकार देकर फिर विद्याधरों के यहां उत्पन्न होगा और तुझे अपने पूर्व्वजन्मों का स्मरण बना रहैगा इसप्रकार शाप देकर और शापका अन्तभी कहकर महादेव जीके अन्तर्द्धान होजाने पर थोड़ेही समयके उपरान्त मैं पृथ्वीपर बनियोंके कुलमें उत्पन्न हुआ वलभी नाम नगरी में महाधन नाम वैश्यके घरमें मेरा जन्म हुआ और वसुदत्त मेरा नामहुआ धीरे २ जब मेरी युवावस्था हुई तब मेरे पिताने द्वीपान्तर जाने के लिये मेरी तय्यारी करदी और मैं भी उनकी आज्ञा लेकर रोज़गार करने को चलागया इसके उपरान्त जब मैं वहां से लौटा तो बनमें बहुत

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेएकत्रिंशःप्रदीपः॥

आपद्गतापिसाध्वीनत्यजतिस्वीयसम्यगाचरणम्। श्रेयस्ततोपिभवतेयथाद्विजस्त्रीसुखंलेभे ३१॥

(अर्थ)-पतिव्रता स्त्री महाभारी आपत्ति में भी निज श्रेष्ठ आचरणको त्यागती नही इसीसे फिर उसे सुखभी मिलजाताहै जैसे-द्विजवधू निजधर्म की रक्षाकी थी तो फिर सुखको प्राप्तहुई ३१॥

मालवदेश में बड़ा विद्वान् और धनवान् अग्निदत्त नाम एक ब्राह्मण था वह सदैव याचको को धनदिया करता था उसके अपने ही समान दोपुत्र उत्पन्न हुए ज्येष्ठका नाम शङ्करदत्त और कनिष्ठ का नाम शान्तिकर था उनमे से शान्तिकर विद्या पढ़ने के लिये बाल्यावस्थाहीमें पिताके घरसे निकलकर कहीं चलागया और बड़े भाई ने यज्ञ करने के लिये धनके इकट्ठे करनेवाले यज्ञदत्त नाम ब्राह्मण की कन्याके साथ विवाह किया वह मैंहूं समय पाकर मेरा श्वशुर स्वर्गवासी हुआ और मेरी सासभी उसी के साथ सती होगई इसके उपरान्त मुझ गर्भवती को छोड़कर मेरे पतिने तीर्थयात्राके बहाने जाकर सरस्वती नदीके प्रवाहमें शोकसे अन्धहोकर अपना शरीर त्याग करदिया जब उसके साथियो ने आकर उसका वृत्तान्त कहा तब मैं गर्भवती होनेके कारण उसके दुःख में अपना शरीर नहीं त्यागसकी इसके उपरान्त अकस्मात् बहुतसे चोरों ने आकर जिस गांव में रहती थी वह सब गांव लूट लिया उस समय तीन ब्राह्मणियों के साथ होकर मैं अपने आचरणकी रक्षाकरने के लिये थोड़ेसे वस्त्रोंको लेकर वहां से भागी देश भंग होनेसे बहुतदूर आकर एक देश में महीने भरतक बहुत कठिन कर्म्मोंकी जीविका करके

से चोरों ने आकर मेरा सब धन छीनलिया और वह मुझे बांधकर अपने गांवकी चण्डिका के मन्दिर में लेगये उस मन्दिर में लाल वस्त्र की लम्बी पताका ऐसी शोभित होती थी कि मानों पशुओं के मारनेकी इच्छासे यमराजने अपनी जिह्वा निकाली वहां देवी का पूजन करते हुए पुलिन्दकनाम अपने स्वामी के निकट बलिदान के निमित्त मुझे लेगये वह पुलिन्दक मुझे देखतेही मुझपर अत्यन्त दयालु होगया कारण के विनाही मनमें स्नेह उत्पन्न होने से जन्मान्तरकी प्रीति सूचित होती है तब पुलिन्दक ने मुझे छुड़वाकर अपने आपकोही बलिदान करके पूजनको समाप्त करना चाहा उसका यह साहस देखकर यह आकाशवाणी हुई कि ऐसा मतकर मैं तेरे ऊपर प्रसन्नहूं तू वरमांग इस आकाशवाणी को सुन कर पुलिन्दक प्रसन्न होकर बोला कि हे भगवती ! यदि तुम प्रसन्न हो तो मुझे अन्य वरदान से क्या प्रयोजन है तथापि मैं यह वर मांगताहूं कि जन्मान्तरमें भी इस बनिये के साथ मेरी मित्रता होवे तब एवमस्तु यह कहकर वाणी के निवृत्त होजाने पर पुलिन्दक ने बहुतसा धन देकर मुझे मेरे घर भेज दिया परदेश से और मृत्युके मुखसे बचकर मेरे लौटनेपर मेरे पिताने सब वृत्तान्त जानकर बड़ा उत्सव किया इसके उपरान्त कुछ समय के व्यतीत होने पर मैंने देखा कि उसी पुलिन्दक को पथिकों के लूटने के अपराध से राजा ने बँधवा मँगायाहै उसीसमय उसके पितासे कहकर मैंने एकलाख रुपया खर्च करके उस पुलिन्दक को राजाके यहां से फांसी से बचाया इसप्रकार प्राणोंके बचानेका प्रत्युपकार करके अपने घर में लाकर बहुत प्रीतिपूर्वक उसे रक्खा और कुछ दिनके उपरान्त उस को बहुत सत्कारपूर्वक विदाकिया वहभी अपना प्रेमयुक्त हृदय मेरे

उसे लेकर कान्यकुब्ज देशको चलागया वहां उसने वह आभूपण एकलाख अशर्फी में गिरवी रखकर हाथी और घोड़े आदि सब परिकर इकट्ठे किये और उस सब परिकरको लेकर चक्रवर्तीके पास जाके अपना वृत्तान्त वर्णन किया और चक्रवर्ती की दीहुई बहुत सी सेना अपने साथ में लेकर शत्रुओंको मार अपने पिताके राज्य को लेलिया देवदत्त को फिर अपने राज्यपर बैठा देखकर उसकी माता बहुत प्रसन्नहुई इसके उपरान्त देवदत्त ने उस आभूषण को छुड़ाकर अपनी स्त्री का सब वृत्तान्त प्रकट करने के लिये अपने श्वशुरके पास भेजदिया उसने भी अपनी कन्या के कान के आभूपणको देखकर घबराके अपनी कन्याको जाकर दिखाया पहले भ्रष्टहुए आचारके समान उस आभूपणको देखकर और उसे अपने पतिका भेजा जानकर बनिये की पुत्री ने व्याकुल होकर अपने चित्त में स्मरण किया कि यह आभूषण उस रात्रि को यज्ञशाला में गिराथा जिसमें कि मैंने वहां एक पथिक देखाथा इससे यह ज्ञात होता है कि वह मेरा पति मेरे आचरण की परीक्षा करनेको आया था परन्तु मैं उसे नहीं पहिंचानसकी कदाचित् वही इसे लेगया होगा इस प्रकार शोचती हुई उस बनिये की पुत्री का हृदय अपने दुराचारके प्रकट होजाने से व्याकुल होकर कातरता से फटगया इसके मरजाने पर इसके पिता ने पुत्री के वृत्तान्त के जाननेवाली दासी से पूछके और सम्पूर्ण तत्त्व समझकर अपने शोकको त्याग करदिया और वह राजपुत्र राज्य को पाकर अपने गुणों से प्रसन्न हुई चक्रवर्ती की कन्या को दूसरी राजलक्ष्मी के समान प्राप्त होकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिंशःप्रदीपः ३० ॥

पास रखकर अपने गांवको गया वहां मेरे प्रत्युपकार के निमित्त अपने पासकी कस्तूरी तथा मोती आदिकको न्यून समझकर बहुतसे गजमुक्ता लेनेके निमित्त हाथियों के मारने को हिमाचल पर्वतपर धनुषबाण लेकर गया हिमाचल पर घूमते २ उसे एक बड़ा सुन्दर तालाब मिला उसमें बहुत से अनेक २ प्रकार के कमल फूलरहे थे और किनारेपर एक महासुन्दर मन्दिर बनाहुआथा वहां यह शोच कर कि यहां हाथी पानी पीने आवेंगे पुलिन्दक छिपकर एकान्तमें बैठगया उस समय वहां एक बड़ी सुन्दर कन्या सिंहपर चढ़ीहुई श्रीशिवजीका पूजन करने को आई श्रीशिवजीका पूजन करनेवाली कन्याका भावमें वर्तमान दूसरी पार्वतीजी के समान उसकन्याको देखकर पुलिन्दक को बड़ा आश्चर्यहुआ और उसने शोचा कि यदि यह मनुष्यकी स्त्री होती तो सिंहपर कैसे सवार होती और जो दिव्य स्त्री होती तो मुझ सरीखों को दृष्टिगोचर कैसे होती इससे यह निश्चय होताहै कि मेरे नेत्रों के प्राक्तन पुण्यों की परिणति (फल) मूर्ति धारण करके आई है यदि इसके साथ में मैं अपने उस मित्रका बिवाह कराऊं तो बड़ाही उत्तम प्रत्युपकार उसके साथ में होजाय इससे इसके पास जाकर इसके मनोभिलषित वर के जानने को उद्योग करूं यह शोचकर पुलिन्दक उसके पास गया और वह कन्या भी छाया में बैठेहुए सिंहपर से उतरकर तालाब में से कमल तोड़नेलगी पुलिन्दक भी उसके पास जाकर प्रणाम करके खड़ा होगया तब कन्याने उसे अपूर्व अतिथि के स्नेह से स्वागत पूछकर प्रसन्न किया और पूछा कि तुम कौनहो और किस निमित्त इस दुर्गम भूमि में आयेहो उसके यह मधुर

सेवक शवरों का राजाहूं यहां गजमुक्ता लेने के निमित्त आया हूं इससमय तुम्हें देखकर अपने प्राणदायक मित्र साहूकार के पुत्र वसुदत्त की याद आगई हे सुन्दरी ! वह भी तुम्हारेही समान रूप और यौवन से इस संसारके नेत्रोंका आनन्द देनेवाला अद्वितीय सुंदरहै इस संसारमें वह कन्या धन्यहै जो मित्रता दान दया तथा धैर्यादि गुणों के निधिरूप उसके पाणि को ग्रहण करेगी जो यह तुम्हारी सुंदर आकृति उस सुंदर पुरुष के साथ संयोग को न पावे तो कामका धनुष धारण करनाही व्यर्थ है इसप्रकार कामदेव के मोहन मंत्रों के समान पुलिन्दक के वचनों को सुनकर उसका चित्त हरगया और कामदेव से प्रेरित होकर पुलिन्दक से बोली कि तुम्हारा वह मित्र कहां है मुझे लाकर दिखलाओ उसके यह वचन सुनकर और उससे आज्ञालेकर पुलिन्दक वहां से अपने घर को आया और वहां से बहुत से मोती तथा कस्तूरी आदिक पदार्थों को भारोंपर लदवाकर मेरे स्थान को आया मेरे यहां सब लोगों ने उसका बड़ा सत्कार किया और जो २ पदार्थ लायाथा वह सब उसने मेरे पिता की भेंट करदिया इसप्रकार उत्सव से उस दिन के व्यतीत होजानेपर रात्रिके समय एकान्त में पुलिन्दकने कन्याके देखनेका सम्पूर्ण वृत्तान्त मुझे सुनाकर मुझसे कहा कि हे मित्र !! चलो वहीं चलें यह सुनकर मैं उत्कंठित होकर उसी रात्रिको उसके संग चला प्रातःकाल मेरे पिता ने मुझे पुलिन्दक के साथ गया हुआ सुनकर पुलिन्दक के प्रेमके विश्वास से धैर्य धारण करलिया और पुलिन्दक ने मार्ग में मेरे सम्पूर्ण कार्य्य करके क्रमसे मुझे हिमालयपर पहुँचाया वहां सायंकालके समय उस तालावपर पहुँच कर हम दोनोंने स्नानकिये और सुन्दर मधुर फल खाकर वहीं एक

बहुत आश्चर्य युक्तहोकर कहा कि साधो तुम सर्प्प तो नहीं हो बताओ कौनहो यह सुनकर जीमूतवाहनने कहा कि सर्प्पहीहूं तुम अपने कामको करो क्या धीरलोग कार्य्य को प्रारम्भ करके बिना समाप्त किये ही छोड़ देते हैं जिससमय जीमूतवाहन यह कहरहा था उसीसमय शङ्खचूड़ने दूरसे पुकारकर कहा कि हेगरुड़! यह सर्प नहीं है तुम्हारा भक्ष्य सर्प्प मैंहूं तुम इसे छोड़दो यह तुमको कैसा अयोग्य भ्रमहुआ है यह सुनकर गरुड़को तो बड़ा भ्रमहुआ और जीमूतवाहन को अपने मनोरथ के न होने से खेदहुआ तब परस्पर की बातों से जीमूतवाहन को विद्याधरों का स्वामी जानकर गरुड़ जी को अज्ञानता से उसके खानेका बड़ा सन्ताप हुआ कि अरे मुझ पापी ने यह बड़ाही अधम कार्य्य किया अथवा कुमार्ग्ग में चलने वालों को पाप सुलभही होते हैं एक यही महात्मा प्रशंसा करने के योग्य है जिसने पराये निमित्त प्राणदेकर ममताके मोह में पड़ेहुये सम्पूर्ण को तुच्छ करदिया इसप्रकार विचार करके पाप से छूटने के लिये अग्नि में प्रवेश करनेकी इच्छा करतेहुये गरुड़ से जीमूतवाहनने कहा कि हे पक्षीन्द्र! क्यो दुःखी होतेहो जो तुम सत्य २ ही पाप से डरतेहो तो अब कभी सर्पों को न खाना और जिनको खाचुकेहो उनकेलिये पश्चात्ताप करो यही इसका उपायहै और अन्य तुम्हारा शोचना व्यर्थ है इसप्रकार उस दयालुके वचनों को सुनकर गरुड़ ने प्रसन्नहोकर गुरुके समान उसके वचन स्वीकार करलिये और जीमूतवाहन के घायल अङ्गोको पुष्ट करने के लिये तथा अन्य मरेहुये सर्पों के जिलाने के लिये स्वर्ग में अमृत लेने को गरुड़जी चलेगये इसके उपरान्त मलयवती की भक्ति से प्रसन्नहुई भगवती ने साक्षात् वहां आकर जीमूतवाहन पर अमृत

रात्रि व्यतीत की लताओं के पुष्प जिसमें बिछेहुए हैं और जहां सुन्दर गुंजार कररहे हैं शीतल मन्द सुगन्ध वायु जिसमें आरही है और ओषधिरूपी दीपक जिसमें बलरहे हैं ऐसा वह वन हम लोगोंको रात्रिके समय विश्राम करनेको रतिके निवासके समान मालूम हुआ इसके उपरान्त दूसरे दिन उसके देखने की इच्छा से मानो बारम्बार फड़कते हुए दक्षिणनेत्र से सूचित आगमनवाली और बारम्बार उत्कंठित होके उसीके मार्गमें जानेवाले मनसे मानो आगे चलकर लीगई वह कन्या वहां आई बड़ी२ जटावाले सिंहकी पीठपर बैठीहुई उस कन्या को शरदकाल के मेघों पर बिराजमान चन्द्रमाकी कलाके समान मैंने देखा उससमय आश्चर्य उत्कंठा और भयसे उसे देखकर मेराचित्त कैसाहुआ वह मैं नहीं जानता इसके उपरान्त वह सिंहपरसे उतरकर फूलोंकोतोड़ तड़ागमें स्नानकरके तड़ाग के किनारे पर वर्त्तमान श्रीशिवजी का पूजन करनेलगी पूजन के अन्त में पुलिन्दक उसके पास गया और प्रणाम करके बोला कि हे सुंदरी! तुम्हारे योग्य उसवरको मैं यहां लिवालायाहूं यदि आज्ञा होय तो अभी बुलाकर दिखाऊं यह सुनकर उसने कहा कि दिखाओ तब पुलिन्दक मुझे वहांसे बुलाकर उसकेपासलेगया वह तिरछी दृष्टि से प्रेमपूर्वक मुझे देखकर कामा के बशीभूत होकर पुलिन्दक से बोली कि तुम्हारा यह मित्र मनुष्य नहीं है मेरे ठगने के लिये कोई देवता आयाहै क्योंकि मनुष्य की ऐसी आकृति नहीं होसक्ती उसके यह बचन सुनकर उसे बिश्वास दिलाने के लिये मैंने कहा कि हे सुन्दरी! मैं मनुष्यही हूं सीधेजनके साथ छल करने से क्या प्रयोजनहै मैं बलभीनगर में रहनेवाले महाधननाम वैश्यका श्री शिवजी के बरसे प्राप्तहुआ पुत्र हूं पुत्रके निमित्त श्री

सींचा इससे उसके अंग पहलेसे भी अधिक सुन्दर होगये तब देवता लोगों ने आनन्द से आकाश में दुन्दुभी बजाई इसप्रकार जीमूतवाहन के स्वस्थ होजाने पर गरुड़ने स्वर्ग से अमृत लाकर सम्पूर्ण समुद्रके तटपर बरसाया उससे जिन सर्प्पोंका हाड़ आदिक कोईभी अंग पड़ाथा वहसब जीउठे उससमय अनेक सर्प्पोंसे व्याप्त समुद्रका तट ऐसा शोभित हुआ कि मानों गरुड़ के भयसे रहित होकर सम्पूर्ण पाताल जीमूतवाहनके देखने को आयाहैं इसके उपरान्त अक्षय शरीर तथा यशसे विराजमान जीमूतवाहनको जानकर उस के बन्धुजन अत्यन्त प्रसन्न हुये और उस की स्त्री तथा माता पिताभी अत्यन्त आनन्दित हुए ठीक है सुखरूपसे अन्तमें परणित होनेवाले दुःखसे कौन नहीं प्रसन्न होता है इसके उपरान्त जीमूतवाहन से आज्ञा लेकर शङ्खचूड़ पातालको चलागया और जीमूतवाहनका यश तीनों लोको में छागया उससमय श्रीभगवती जी की कृपासे जीमूतवाहनके मतंगादिक बान्धव जो कि प्रथम विरुद्ध होगयेथे वह सब भयभीत होकर आप आकर उससे मिले और बहुतसी प्रार्थना करके जीमूतवाहन को मलयाचल से हिमालय पर लेगये वहां मित्रावसु मलयवती तथा अपने माता पिता समेत जीमूतवाहन विद्याधरों का चक्रवर्ती होकर बहुत कालतक राज्यका भोग करतारहा इति ॥

यथा ॥

काशीजी में विक्रमचण्डनाम एकराजाथा उसके अत्यन्त प्रिय सिंहपराक्रम नाम एक सेवकथा वह रणके सिवाय द्यूतमें भी अद्वैत जीतनेवाला था उस सिंहपराक्रम के कलहकारी यह यथार्थ नाम की स्त्री थी वह जैसी कुरूपथी वैसीही चित्तसेभी कुटिलथी सिंह-

शिवजी के प्रसन्न करने को तपकरतेहुए मेरे पिता से महादेवजी ने प्रसन्न होकर स्वप्नमें कहा कि उठो तुम्हारे कोई महात्मा पुत्रहोगा और इसका वड़ा वृत्तान्त है उसके कहने से कोई प्रयोजन नहीं यह सुनकर मेरे पिताकी निद्राखुली तो समय पाकर मेरा जन्महुआ और उन्हों ने वसुदत्त मेरानाम रक्खा और शबरों का स्वामी यह पुलिन्दक विपत्ति में रक्षा करनेवाला परम मित्र मुझे विदेश में प्राप्तहुआ था यह मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्तहै इस प्रकार कहकर जब मैं निवृत्तहुआ तब वह कन्या लज्जा से नीचे मुख करके बोली कि तुम्हारा कहना बहुत ठीकहै गतरात्रि में मैंने स्वप्न में देखा कि मैं श्रीशिवजीका पूजन करचुकी थी कि उस समय श्रीशिवजीने कहा कि तुझे प्रातःकाल पति मिलेगा इस से यही मेरे पतिहो और तुम्हारा मित्र मेरा भाईहै इसप्रकार अमृतरूपी वचनों से मुझे प्रसन्न करके वह चुप होगई इसके उपरान्त विधिपूर्वक विवाह करने के लिये उससे सलाह करके मैंने अपने घर जाने की मित्रसमेत इच्छाकी तब उसने सिंहको इशारेसे बुलाकर मुझ से कहा कि हे आर्य्यपुत्र! तुम इसपर सवार होजाओ मैंने भी सिंह पर चढ़के उस स्त्री को गोदी में उठालिया और मित्रसमेत वहां से प्रसन्नता पूर्वक चला पुलिन्दक के बाणों से मारेगये हिरणोंके मांसको खाते हुए हम सब लोग क्रमसे वलभीपुरी में पहुँचे वहां मुझे उस कन्या समेत सिंहपर सवार देखकर लोगों ने बड़े आश्चर्य्यपूर्वक मेरे पिता से जाकर कहा और मेरे पिता भी हर्ष से आगेआकर सिंह से उतरकर प्रणाम करतेहुए मुझे देखकर आश्चर्य समेत अत्यन्त प्रसन्नहुए और अत्यन्त सुन्दरी उस कन्याको प्रणाम करते देखकर मेरे योग्य स्त्री जानकर आनन्द में मग्नहोगये इसके उपरान्त हम

पराक्रम राजा से और द्यूतसे वहुतसा धन लाय लाय कर उसको देता परंतु वहदुष्टास्त्री अपने तीन पुत्रोंसमेत क्षणभरभी विनाकलह किये नहीं रहती थी सिंहपराक्रम से यह कहकर कि तू नित्यवाहर ही मद्यपान और भोजन करताहै और मुझे कुछ नहीं देता अपने पुत्रोंसमेत उससे यह कहकर अत्यन्त सतायाकरतीथी यद्यपि वह भोजन तथा वस्त्रो से उसे नित्य प्रसन्न करताथा तथापि वह दुरन्त भोग वृष्णके समान सदैव जाज्वल्यमान वनी रहतीथी इसके उपरान्त धीरे २ उसके क्रोधसे वहुत खिन्नहोकर सिंहपराक्रम विन्ध्यवासिनी के दर्शन को चलागया और वहां निराहार होकर पड़ा रहा रात्रि के समय उससे भगवती ने स्वप्नमें कहा कि हे पुत्र! उठो उसी काशीपुरी को जाओ वहां जो सवसे वड़ा वरगदका वृक्षहै उसकी जड़में खोदने से तुमको वहुतसा धन मिलेगा और उसीमे खड्गके समान निर्मल वड़ाभारी गरुड़ माणिक्यका एकपात्र मिलेगा और उसको देखने से उसके भीतर सम्पूर्ण प्राणियोंकी पूर्व जन्मकी जाति को जानकर खेद रहित होकर सुखपूर्वक रहोगे इस प्रकार भगवती से कहागया वह सिंहपराक्रम जगपड़ा और प्रातःकालही पारणकरके काशीपुरी को चलागया वहां आकर वरगद की जड़से वहुतसी निधि और माणिक्यपात्र उसको मिला और उसपात्रमें जो उसने देखा तो उसकी स्त्री पूर्वजन्मकी रीछनी थी और वह सिंहथा इसप्रकार पूर्वजन्मके महावैरकी वासनासे अपने वैरको निश्चल जानकर उसने शोक और मोह छोड़दिया फिरउस पात्रके प्रभावसे वहुतसी भिन्न जातिवाली कन्याओं को छोड़कर पूर्वजन्मकी सिंहनी सिंह श्रीनामवाली दूसरी स्त्री के साथ विवाह किया और उस कलहकारिणी को केवल भोजन देकर अलग कर

सब लोगों को घर में लेजाकर और सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछकर मे पिताने पुलिन्दक की मित्रताकी बड़ी प्रशंसाकी और महाउत्सव किया फिर ज्योतिषी की आज्ञा से दूसरेदिन सम्पूर्ण बन्धुओं को बुलाकर उस कन्या के साथ मेरा विवाह किया मेरे विवाहके हो जानेपर वह सिंह सब के देखते२ दिव्य वस्त्राभरणधारी दिव्य पुरुष होगया यह देखकर लोगों के अत्यन्त आश्चर्य्य युक्त होजानेपर उसने प्रणाम करके मुझसे कहा कि मैं चित्राङ्गदनाम विद्याधरहूं और यह प्राणों से भी अधिक प्यारी मनोवती नाम मेरी कन्या है इसको सदैव गोदी में लेकर वनमें घूमताहुआ मैं एक समय श्री गङ्गाजी के तटपर पहुँचा वहां तपस्वियों के बहुतसे आश्रमों को देखकर तपस्वियों के उल्लंघन के भयसे गङ्गाजी के बीचमें होकर मैं चला भाग्यवश से मेरी पुष्पों की माला गङ्गाजी के जल में गिर पड़ी उसके गिरतेही जल के भीतर बैठेहुए नारदजी ने एकाएकी उठकर उस माला को पीठपर गिरने के अपराधसे क्रोधकरके मुझे यह शाप दिया कि हे पापी! तू इस उद्दंडता के कारण हिमालयप र्व्वत में जाकर सिंहहोगा और इस कन्याको पीठपर लिये २ घूमेगा फिर जिससमय मनुष्य के साथ तेरी कन्याका बिवाहहोगा तब तू उसे देखकर शाप से छूटजायगा इसप्रकार नारदमुनिसे शापदिया गया मैं हिमाचलमें सिंह होकर सदैव श्रीशिवजी की पूजा करने वाली इस कन्याको पीठपर धारण करतारहा इसके उपरान्त जिस प्रकार पुलिन्दक के यत्न से यह सम्पूर्ण कार्य्य सिद्धहुआ सो तो आप सब लोगोंको विदितही है अब मैं जाताहूं मेराशाप छूटगया सब लोगों का कल्याणहोय यह कहकर वह विद्याधर आकाश को उड़गया तब इस आश्चर्य्य को देखकर सम्पूर्ण, बांधव लोग बड़े

दिया और निधिको पाके नवीन स्त्री समेत सुखपूर्वक रहनेलगा-

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्वात्रिंशःप्रदीपः ३२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे त्रयस्त्रिंशःप्रदीपः ३३ ॥

धूर्ताश्छलेन जीवंति यथास्तांशिवमाधवौ।
लक्ष्मीगृहादिरहितंचक्रतुस्तौपुरोधसम् ३३ ॥

(अर्थ)–धूर्त लोग छलसेही निज आजीविका करलेते हैं–जैसे शिवमाधव इन दोनों धूर्तों ने राजाके पुरोहितको धन गृहादि से हीन करदिया ३३ ॥

रत्नपुरनाम यथार्थ नामवाले नगरमें शिव और माधव दो धूर्त रहते थे उन दोनों ने बहुत से धूर्तों को अपने साथ में लेकर अपनी माया के प्रयोग से नगरके सम्पूर्ण धनी लोग ठग लिये एक समय उन दोनों ने आपसमें यह सलाह करी कि यह नगर तो हमने सब ठग लिया इससे अब उज्जयिनी पुरी में चलकर रहैं वहां राजाका शंकरस्वामी नाम पुरोहित बड़ा धनवान् सुनाई देता है युक्ति पूर्वक उससे धन लेकर मालवदेशकी स्त्रियों के रसको भोग करेंगे उज्जयिनी के ब्राह्मणलोग उसे यमराज के समान कठिन कहते हैं क्योंकि वह उनसे आधी दक्षिणा लेलेता है और एक कन्या भी उसके है वह भी इसी प्रसंगसे हमें अवश्य मिलेगी इस प्रकार निश्चयकरके और अपने २ कर्तव्य का विचार करके वह दोनों धूर्त उसपुरी से चले धीरे २ उज्जयिनी के निकट पहुँचकर माधवने राजपुत्रका भेष बनाकर सब सामान सहित नगरके बाहर डेराकिया और शिव पहलेही ब्रह्मचारी का भेष बनाकर अकेला उस नगरी में चलागया और वहां क्षिप्रानदी के किनारे पर एक मठ बनाकर उसमें मृत्तिका कुश भिक्षाके पात्र तथा मृगचर्म्म को

प्रसन्नहुए और इस श्रेष्ठ सम्बन्धसे प्रसन्नहोकर मेरे पिताने बड़ा महोत्सवकिया निर्व्याज मित्रों के चरित्रों को कौन जानसक्ताहै जो मित्रों के साथ प्राणों से भी उपकारकरके नहीं तृप्तहोते हैं यहबात किसने पुलिन्दक के चरित्र को ध्यानकरके आश्चर्य पूर्वक नहीं कही वहांका राजाभी पुलिन्दकके उस वृत्तान्त को जानकर हमारे स्नेहसे उसपर अत्यन्त प्रसन्नहुआ और मेरे पिताने राजाको प्रसन्न जानकर बहुतसे रत्नोंकी भेंटदेकर पुलिन्दकको सम्पूर्ण वनका राज्य दिलवादिया इसके उपरान्त अपनी प्रिया मनोवती और प्रियमित्र पुलिन्दक के साथमें कृतार्थ होकर सुखपूर्वक रहनेलगा और पुलिन्दकभी अपने देश स्नेहको छोड़कर बहुधा मेरेही घरमें रहनेलगा परस्पर उपकार करने से नहीं तृप्त होतेहुए हम दोनों मित्रों का समय व्यतीतहोताथा थोड़ेदिनों के उपरान्त मनोवती में मेरे पुत्र उत्पन्नहुआ वह पुत्र क्या था मानों सम्पूर्ण कुलके हृदय का उत्सव रूप धारण करके बाहर आगया हिरण्यदत्त नाम वह पुत्र धीरे २ बढ़ा और सम्पूर्ण विद्याओंको पढ़कर योग्य होगया तब मेरे पिता ने उसका विधिपूर्वक व्याह करवादिया यह सम्पूर्ण उत्सव करके और जीवन के फलको परिपूर्ण जानके मेरे पिता मेरी मातासमेत श्रीभागीरथी गंगाजीके तटपर शरीर त्याग करनेको चलेगये तब पिताके शोकसे अत्यन्त व्याकुल मुझे जानकर बन्धुओंने बहुत समझाकर मुझे गृहस्थी का भार धारण करवाया उससमय मनोवतीके मुग्ध (भोले) मुखचन्द्रको देखकर और प्रियमित्र पुलिन्दक से मिलकर मेरा चित्त सावधान हुआ इसके उपरान्त सत्पुत्र से आनन्दयुक्त सुन्दर स्त्री से मनोहर और प्रियमित्र के समागम से मेरे वह उत्तम दिन व्यतीतहुए समय पाकर जब मैं वृद्धहुआ तो

सबके देखने के योग्य स्थानमें रखकर रहनेलगा और प्रातःकाल बहुतसी मृत्तिका अपने शरीर में लपेटकर नदी के जलमें बहुत कालतक अधोमुखहोकर रहताथा मानों कुकर्म से होनेवालीअपनी अधोगतिका पहलेही से अभ्यास करताथा और स्नानकरके बहुत कालतक सूर्य्य के सन्मुख जाकर कुशोंको हाथमें लेके पद्मासन से बैठाहुआ दम्भमे अत्यन्त चतुरहोकर जप करताथा इसके अनन्तर साधु लोगोंके हृदयों के समान स्वच्छ पुष्पोंको लेकर श्रीशिवजी का पूजन करताथा और पूजनकरके फिर भी झूठमूठ ध्यान देकर जप करताथा मानों आगे होनेवाले नरकोंका ध्यान करताथा और अपराह्न के समय मृगचर्मको पहिनकर भिक्षाके निमित्त मायारूपी स्त्री के कटाक्षके समान वह पुरमें घूमताथा ब्राह्मणों के घरों से तीन भिक्षाओंको लेकर उसभिक्षाके तीनभाग करताथा एकभाग काकों को देताथा एक भाग अभ्यागतों को देताथा और एक भाग से अपना पेट भरताथा भोजन के उपरान्त मालाको लेकर फिर झूठ मूठ जप किया करताथा मानो अपने सम्पूर्ण पापोंको गिनता था और रात्रिके समय लोगोंकी सूक्ष्मतर्क करनेकी बातोंको विचारताहुआ अकेला उसी मठमे रहताथा इसप्रकार प्रतिदिन अत्यन्त कठिन कपटमें भरेहुए तपकोकरके उसने नगरनिवासियो का चित्त अपने वशीभूत करलिया नगरभरमें उसकी यह प्रसिद्धि होगई कि वहबड़ा शांत तथा तपस्वी है और सम्पूर्ण लोग उसके भक्तहोगये इसके उपरान्त उसका मित्र माधव भी दूतके मुख से यह वृत्तान्त सुनकर नगरी में आया और वहां थोड़ी दूरपर किसी देवमन्दिर में रहकर राजपुत्र के भेषसे क्षिप्रानदी मे स्नान करने को गया और स्नान करने के उपरान्त देवता के आगे अपने मित्र शिव को

वृद्धावस्थाने प्रीतिपूर्वक मानों मुझसे यह कहकर कि हे पुत्र ! क्या अब भी घरमें रहोगे मेरी ठोढ़ी पकड़ली तब मुझे शीघ्रही वैराग्य उत्पन्नहुआ और वन जानेकी इच्छासे मैंने कुटुम्बका सम्पूर्ण भार अपने पुत्र पर रखदिया और स्त्री समेत मैं कालिंजर पर्वतपर चला गया मेरे स्नेह से राज्य को त्यागकर मेरा प्रियमित्र पुलिन्दक भी मेरे पास चलाआया वहां जाकर मुझे अपने पूर्व्वजन्म की और समासहुए श्रीशिवजी के शापकी याद आगई वह सब मैंने पुलिन्दक और मनोवती से कहदिया इसके उपरान्त मनुष्य शरीर के त्याग करने की इच्छा से मैंने यही स्त्री और मित्र मुझको पूर्वजन्म में भी मिलें और स्मरण भी बनारहे यह कहकर और हृदय में श्रीशिवजीका ध्यानकरके उस पर्व्वतसे स्त्री तथा मित्र समेत गिरकर शरीर का त्यागकिया वही मैं इस विद्याधरके कुल में अपने पूर्व्व जन्मको स्मरण करताहुआ जीमूतवाहन नामसे उत्पन्नहुआहूं और वह पुलिन्दक श्रीशिवजी की कृपासे सिद्धोंके राजा विश्वावसु के पुत्र मित्रावसुनाम तुमहो और वह मनोवतीनाम मेरी स्त्री तुम्हारी बहन मलयवती नामसे उत्पन्नहुई इसप्रकार तुम हमारे पूर्व्वजन्म के मित्रहो और तुम्हारी बहिन हमारी पूर्व्वजन्मकी स्त्री है इसके साथ में निर्वाह करना योग्यही है परन्तु पहिले जाकर हमारेमाता पितासे कहो जब वह स्वीकारकरलेंगे तब यह कार्य्य सिद्धहोगा इस प्रकार जीमूतवाहनसे सुनकर मित्रावसुने उसके माता पितासे सब वृत्तान्त कहा वह भी जब उसके मनोरथको सुनकर प्रसन्नहुए तब उसने जाकर अपनी बहिनके विवाहकी तय्यारी करी और मलयवती का विवाह जीमूतवाहन के साथ विधिपूर्व्वक करादिया उस समय विद्याधर सिद्ध और अनेक आकाशचारी देवयोनियों का

देखकर नम्रता पूर्व्वक उसके पैरों पर गिरपड़ा और सब लोगों को सुनाकर बोला कि ऐसा और कोई तपस्वी नहीं है मैंने इसे बहुधा तीर्थों पर घूमताहुआ देखा है और शिव इसको देखकर भी उसी प्रकार से खड़ारहा फिर माधव अपने डेरोंको चलागया रात्रि के समय दोनों ने एक स्थान में मिलकर भोजन तथा पानकरके आगे जो कुछ कर्तव्यथा उसकी सलाहकी पिछले पहर शिव तो अपनी मठी में चलाआया और माधव ने प्रातःकाल उठकर एक धूर्तसेकहा कि दो वस्त्रोंकी भेंटलेकर राजाके पुरोहित शंकरस्वामी के यहां जाओ और उनसे जाकर विनयपूर्वक यह कहो कि माधव नाम राजपुत्र अपने गोती भाइयों के द्वारा राज्यसे निकाल दिया गया है वह कईएक अन्य राजपुत्रों को भी अपने साथ मे लेकर और अपने पिता का बहुतसा धन लेकर दक्षिण दिशा से यहां आयाहै और आपके राजाका सेवन करना चाहताहै उसीने आपके दर्शन करने के लिये मुझको भेजा है इसप्रकार कहकर माधवका भेजाहुआ वह दूत भेंट लेकर पुरोहितजी के यहां पहुंचा और एकान्त में भेंट देकर उसने माधव का सब संदेशा उससे कहदिया उसने भी भेंटके लोभसे और आगेको भी बहुतसा लाभ समझकर उनबातोंपर विश्वास करलिया ठीक है कुछ देनाही लोभियों के आकर्षण करनेकी परम औषधि है इसके उपरान्त उस धूर्तके लौट आनेपर दूसरे दिन माधव अवकाश पाकर उस पुरोहित के पास आपही गया राजपुत्रों के भेषको धारण कियेहुए बहुतसे धूर्तोंको साथमें लेकर पुरोहित के यहां पहुँचा पुरोहितने भी पहलेही से उसका आगमन सुनकर आगे आकर उसेलिया और स्वागत पूँछ कर उसे बहुत प्रसन्न किया वहां थोड़ीदेर उसकेसाथ बैठकर माधव

बड़ा उत्सव हुआ इसप्रकार विवाह करके उस मलयाचल पर्वतपर जीमूतवाहन अपनी मलयवती स्त्री समेत बड़े ऐश्वर्य्य को भोग करताहुआ रहनेलगा एकसमय जीमूतवाहन अपने साले मित्रावसुको साथ लेकर समुद्र के किनारों की सैर करने को गया वहां जाकर देखा कि एक युवापुरुष उदासीन होकर आया है और हा पुत्र २ कहकर रोतीहुई अपनी माताको लौटारहाहै उसीके साथमें एक दूसरा पुरुष और है जिसने कि उसे एक बड़ी ऊँची शिलाके पास जाकर छोड़दियाहै यह देखकर जीमूतवाहनने उस उदासीन पुरुषसे पूँछा कि तुम कौनहो क्या चाहतेहो और तुम्हारी माता क्यों शोक कररही है यह सुनकर उसने कहा कि पूर्व्वसमय में कश्यप मुनिकी स्त्री कद्रू और विनताने आपसमें कथा प्रसंगसे परस्पर यह विवाद किया कि सूर्य्य के घोड़े काले हैं अथवा श्वेत तब कद्रूने कहा काले हैं और विनताने कहा श्वेत और यह प्रण किया कि जो हारे वह दासीहोय तब कद्रूने एकान्तमें अपने पुत्र सर्पोंसे कह कर विषके फूत्कारों से सूर्य्य के घोड़े काले करवादिये और विनता को उसीप्रकार के काले दिखलाकर छल से उसे जीतकर अपनी दासी बनालिया ठीक कहाहै स्त्रियोंका दाह बड़ाही कठिन होताहै यहसब वृत्तान्त जानकर विनताके पुत्र गरुड़ने कद्रूको समझाकर अपनी माताको दासीपने से छुटानेकी प्रार्थना की तब कद्रूके पुत्र सर्पोंने शोचकर गरुड़ से कहा कि हे वैनतेय! देवतालोगों ने समुद्र के मथनेका आरम्भ किया है वहांसे अमृत लाकर जो हमको दोतो अपनी माताको लेजाओ क्योंकि तुम बड़े बलवान् हो सर्प्पों के यह वचन सुनकर गरुड़ने क्षीर समुद्र में जाकर अमृत के लिये बड़ाही पुरुषार्थ दिखाया गरुड़के पराक्रम को देखकर प्रसन्न हुए भग-

अपने डेरेपर चलाआया दूसरे दिन फिर दोवस्त्र भेजकर उसकेपास गया और बोला कि कुटुम्ब के अवरोध से मैं सेवा करनेकी इच्छा करताहूं इसीसे मैंने आपका आश्रय लिया है और धनतो मेरेपास बहुत है उसके यह वचन सुनकर पुरोहित ने अधिक धन पानेकी इच्छासे कहा कि मैं तुम्हारा अभीष्ट सिद्धकरदूंगा और क्षणभर में राजाके पास जाकर माधवकी जीविका के लिये पुरोहितजीने विज्ञापनाकरी और राजाने भी उसके गौरवसे वह बात स्वीकारकरली दूसरे दिन पुरोहित अन्य धूर्तोंसमेत माधव को राजाके निकट ले गया राजाने भी माधव की आकृति राजपुत्रों के समान देखकर आदर पूर्व्वक उसकी जीविका अपने यहां करदी इसके उपरान्त माधव सेवा करनेलगा रात्रिके समय वह अपने मित्र शिवके पास आकर सलाह करजाया करताथा माधवसे उस पुरोहितने लोभ से कहा कि तुम मेरेही घरमें आकर रहो तब वह अपने सम्पूर्ण साथियों समेत उसके घरमें जाकररहा और कृत्रिम माणिक्यों के बने हुए भूषणों से भराहुआ पात्र उसीके यहां रखवाकर और अनेक बहानों से उसे बीच २ में भी खोलकर उन आभूषणोंसे उसने उस पुरोहितका चित्त हरलिया घासको देखकर पशुके समान लोभित हुए उस पुरोहितके विश्वासित होजानेपर माधवने भोजन घटाकर अपना शरीर दुर्बल करके मिथ्यारोग प्रगट किया कुछ दिनों के व्यतीत होनेपर शय्या के पास बैठेहुए पुरोहित से धूर्तराज माधव धीमे स्वरसे बोला कि मेरे शरीरकी दशा अब अच्छी नहीं है इससे आप किसी उत्तम ब्राह्मण को बुलालाओ जिसे मैं संकल्प करके अपना सर्व धनदेदूं इससे मेरे इसलोक और परलोक दोनों में उपकारहोगा धीरलोग प्राणोंको स्थिर न जानकर धनपर ममता नहीं

वान् विष्णुने कहा कि तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्नहूं तुम कोई वर मांगो भगवान् के वचन सुनकर माताके दासीभाव से क्रुद्धहुए गरुड़ने यह वर मांगा कि सर्प हमारे भक्ष्य होजाँय भगवान् ने कहा ऐसा ही होगा इसप्रकार भगवान् से वर पाकर और अपने पराक्रम से अमृत लेकर जब गरुड़ चलने लगे तब इन्द्रने सब वृत्तान्त जान कर उनसे कहा कि हे पक्षीन्द्र! ऐसा उपाय करना जिससे मूर्ख सर्प अमृत न खासकें और मैं उनसे लेआऊं इन्द्र के वचनको स्वीकार करके विष्णु भगवान् के वरदान से बड़े प्रचण्ड गरुड़जी अमृतके कलशको लेकर सर्प्पों के पास आये और वरके प्रभाव से डरे हुए मूर्ख सर्प्पोंसे बोले कि यह अमृत हम लेआये हैं तुम हमारी माता को छोड़कर इसको लो और जो तुम्हें सन्देहहोवे तो मैं इसे कुशों पर रक्खे देताहूं और अपनी माताको छुड़ाकर लिये जाताहूं तुम इसे लेलेना सर्पोंने गरुड़की बात स्वीकार करलीनी तब गरुड़ ने पवित्र कुशासन पर अमृतका कलश रखदिया और सर्पोंने उनकी माता को छोड़दिया इसप्रकार अपनी माता को दासीभावसे छु-ड़ाकर गरुड़जी के चलेजाने पर जैसेही सर्प्प निस्सन्देह होकर अमृतको लेनेलगे वैसेही इन्द्र वहां आकर अपनी शक्तिसे सर्पोंको मोहित करके कुशासन परसे अमृत के कलश को हरलेगया तब सर्प अत्यन्त दुःखित होके उन कुशों को इस लोभ से चाटने लगे कि कदाचित् कुछ अमृत इन में लगगया होगा इससे जिह्वा के कट जाने से वह नाहककी द्विजिह्वता को प्राप्त होगये ठीक है अ-त्यन्त लोभियों को हँसी के सिवाय और क्या फल होना चाहिये इसके उपरान्त सर्प्पों को अमृत तो नहीं मिला परन्तु गरुड़ने वैर मानकर विष्णु भगवान् के वरसे वहां आन २ कर उनका खाना

करते हैं उसके यह वचन सुनकर दानकी जीविका करनेवाला पु
रोहित बोला कि मैं ऐसाही करूंगा यह सुनकर माधव उसके पै
पर गिरपड़ा इसके उपरान्त पुरोहित जिन जिन ब्राह्मणोंको बुला
कर लाया उन सबपर माधवने उत्तम न समझकर श्रद्धा न की य
देखकर उसके पास बैठाहुआ एक धूर्त बोला कि इसे प्रायःसामान
ब्राह्मण अच्छो नहीं मालूम होतो इससे यह जो क्षिप्रानदीके त
पर शिवनाम बड़ातपस्वी ब्राह्मण रहताहै यह इसे अच्छा मालू
होता है कि नही यह सुनकर माधव ने उस पुरोहित से कहा कि
आप मेरे ऊपर कृपाकरके उस ब्राह्मणको लेआइये क्योंकि उस
समान और कोई ब्राह्मण नहीं है उसके यह वचन सुनकर पुरो
हित शिव के पासगया उस समय वह निश्चल ध्यान लगायेहु
बैठा था पुरोहित प्रदक्षिणा करके उसके सम्मुख बैठगया और उ
समय शिवने धीरे से नेत्र खोलकर देखा तब पुरोहित प्रणाम क
के बोला कि हे प्रभो! जो आप क्रोप न करें तो मैं एक प्रार्थन
करूं यह सुनकर उसने इशारा किया कि कहो तब यह बोला वि
माधव नाम बड़ा धनवान् एक दक्षिण का राजपुत्र मेरे यहां र
हता है वह अपना सम्पूर्ण आभूषण आपको देवे यह सुनकर शिव
ने धीरे से कहा कि हे ब्राह्मण! मुझ भिक्षुक ब्रह्मचारी को धनसे
क्या प्रयोजन है तब पुरोहित ने कहा कि आप ऐसा मतकहो क्या
आश्रम के क्रमको आप नहीं जानतेहो विवाह करके घर में देव
पितृ और अतिथियों का पूजन करते हुए गृहस्थ लोग धन से
धर्म अर्थ काम इनतीनोंको प्राप्तहोते हैं क्योंकि गृहस्थाश्रम सम्पूर्ण
आश्रमों से श्रेष्ठ है यह सुनकर शिवने कहा कि मेरा विवाहही
कहां हुआ है और विवाह में कठिनता यह है कि मैं ऐसे वैसेसाधा

प्रारम्भ करदिया गरुड़के आने से पाताल में द्विमुंह विष रहित तो निर्जीव होजाते थे और गर्भिणी नागिनियों के गर्भ गिर पड़तेथे इसप्रकार सर्पोंको नष्ट होते देखकर वासुकी ने विचार करके वड़े बलवान् गरुड़से प्रार्थनाकरके यह नियमकरके कहा कि हे पक्षीन्द्र! एक सर्प हम तुम्हारे लिये समुद्र के तटके पर्वतपर रोज भेजा करेंगे आप पाताल में न आया करिये क्योंकि आपके यहां पर आनेसे बहुत से सर्प नाश हुये हैं मैं शङ्खचूड़ नाम सर्प हूं और आज मेरी वारी है इसी से मैं सर्पराज की आज्ञा से गरुड़ के भोजन के लिये इस वध्यशिलापर आयाहूं और यही कारणहै कि मेरी माता अत्यन्त शोक कररहीहै उसके यह वचन सुनकर जीमूतवाहनने बहुत दुःखित होकर कहा कि सब परमेश्वर कुशल करेंगे और यह भी कहा कि सर्पों के राजावासुकी वड़ेही निस्सत्त्वहैं कि जो अपने ही हाथ से अपनी प्रजाको शत्रु की भेंट करते हैं उस नपुंसक ने पहले अपने आप को ही गरुड़ को न देकर अपने वंशका क्षय देखना स्वीकार किया कश्यपजी से उत्पन्न होकर गरुड़भी कैसा पाप करते हैं ठीकहै महात्मालोगों को भी केवल शरीरही के निमित्त कैसा मोह होताहै तो आज मैं गरुड़को अपना शरीर देकर तुम्हें बचाऊंगा हे मित्र! शोक मतकरो जीमूतवाहन के यह वचन सुनकर शखचूड़ने धैर्य धारण करके यह बचन कहा कि ईश्वर न करे ऐसा होय हे वीर! अब ऐसा मत कहना कांचके निमित्त मोती की हानि करना उचित नहीं मैं ऐसा करके कुलका कलंकी नहीं होऊंगा इसप्रकार जीमूतवाहन से कहकर और क्षणभरमें गरुड़ के आनेका समय जानकरके शंखचूड़ समुद्रके तटपर वर्तमान श्रीगोकर्णनाम शिवजीको अन्तसमय में नमस्कार करनेको गया उसके

रण कुल से कन्या नहीं लूंगा उसके यह वचन सुनतेही पुरोहित ने अपने मन में शोचा कि जो इसका विवाह मेरी कन्या से होजाय तो धन सुखपूर्वक भोग करने को मिलै यह शोचकर उसने कहा कि मेरे विनयस्वामिनी नाम एक अति सुन्दर कन्या है वह मैं आपको देदूंगा इससे आप गृहस्थाश्रम को स्वीकार करिये और जो कुछ धन आपको माधवसे मिलेगा उसकी रक्षा मैं करूंगा तब शिव अपने मनोरथको सिद्धजानकर यह वचन बोला कि हे ब्राह्मण! यदि आपको ऐसाही आग्रहहै तो मैं ऐसाहीकरूंगा परंतु मैं तपस्वी होने के कारण सुवर्ण और रत्नको नहीं जानता और तुम्हारे ही वचन से इसकार्य्य में प्रवृत्तहोताहूं इससे तुम्हें जैसा योग्य समझपड़े वैसाकरो शिवके यह वचन सुनकर प्रसन्न हुआ पुरोहित उसे अपने घरको लेगया वहां उसे लेजाके माधव से सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया और वह भी सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ उस समय पुरोहित ने मूर्खता से हारीहुई सम्पत्ति के समान अपनी कन्या अशिवरूप शिवको देदीनी फिर विवाह करने के उपरान्त तीसरेदिन पुरोहित शिवको दान दिलाने के लिये माधवके पास लेगया उसे देखतेही तुझ महातपस्वी को मैं वन्दना करताहूं यह मिथ्यावचन सुनाकर माधव उसके पैरोंपर गिरपड़ा और पुरोहितके यहां से वह कृत्रिममाणिक्यों के बनेहुए आभूषण उसे देदिये शिवने भी मैं इनके मूल्यको नहीं जानताहूं तुम्हींजानो यह कहकर पुरोहित को वह सब देदिये पुरोहित ने भी मैं तो पहलेही स्वीकार करचुकाहूं आपको क्या चिन्ता है यह कहकर सब आभूषण लेलिये इसके उपरान्त शिव तो आशीर्वाद देकर अपनी स्त्री के पासचलागया और पुरोहितने वह सब अपने भंडार में रखदिये माधव भी

चलेजानेपर अत्यन्त दयालु जीमूतवाहनने जाना कि उसके बचाने का अवसर मुझेमिला और शीघ्रही उस बातको विस्मृतसी करके युक्तिपूर्वक किसीकार्य्य के बहाने से मित्रावसु को अपने घर भेज दिया उससमय निकट आये हुये गरुड़ के पंखों की वायुके वेगसे वहां की पृथ्वी जीमूतवाहन के सत्त्वके देखने के आश्चर्य से मानो कांपउठी उस भूकम्प से गरुड़ को आतेहुये जानके परमदयालु जीमूतवाहन उस वध्यशिला पर चढ़गया उसी क्षण में अपनी छाया से आकाश को आच्छादित करतेहुये गरुड़जी चोंचमारके जीमूतवाहन को उठालेगये और जिसके शरीर से रुधिर टपकरहा है जिसकी चूड़ामणि उखड़कर पृथ्वीपर गिरपड़ी है ऐसे जीमूतवाहनको पर्वतके शिखरपर लेजाकर खानेलगे उससमय आकाश से पृथ्वीपर पुष्पोंकी वर्षाहुई और उसे देखकर गरुड़को आश्चर्यहुआ कि यह क्या बातहै यहां तो गरुड़जी जीमूतवाहनको खारहेथे और वहां गोकर्ण नाम शिवजी को नमस्कार करके लौटेहुये शङ्खचूड़ ने वध्यशिलापर पड़ाहुआ रुधिर देखा यह देखकर कहा कि हाय मुझे धिक्कार है मेरे लिये उस महात्माने शरीर देदिया तो इससमय गरुड़ उसे कहां लेगये होंगे जल्दी से ढूंढूं कदाचित् मिलजाय यह शोचकर वह उस रुधिर को देखताहुआ चला इसी बीच में गरुड़ जीमूतवाहन को प्रसन्न देखकर भक्षण करना त्यागकर आश्चर्यपूर्वक शोचा कि क्या यह कोई औरही है जो मुझसे भक्षण किया जाता भी दुःखके सिवाय प्रसन्न होरहा है इसप्रकार शोचते हुये गरुड़ से जीमूतवाहन अपने अभीष्ट को सिद्ध करने के लिये बोला कि हे पक्षिराज! मेरे शरीर में रुधिर और मांस है तुम क्यों बिना तृप्तहुए भोजन से निवृत्त होगये हो यह सुनकर गरुड़ ने

करते हैं उसके यह वचन सुनकर दानकी जीविका कर
रोहित बोला कि मैं ऐसाही करूंगा यह सुनकर माधव
पर गिरपड़ा इसके उपरान्त पुरोहित जिन जिन ब्राह्मण
कर लाया उन सबपर माधवने उत्तम न समझकर श्रद्धा
देखकर उसके पास बैठाहुआ एक धूर्त्त बोला कि इसे आ
ब्राह्मण अच्छो नही मालूम होतो इससे यह जो क्षिप्रा
पर शिवनाम बड़ातपस्वी ब्राह्मण रहताहै वह इसे अ
होता है कि नहीं यह सुनकर माधव ने उस पुरोहित
आप मेरे ऊपर कृपाकरके उस ब्राह्मणको लेआइये क्यों
समान और कोई ब्राह्मण नहीं है उसके यह वचन सुन
हित शिव के पासगया उस समय वह निश्चल ध्यान
बैठा था पुरोहित प्रदक्षिणा करके उसके सम्मुख बैठगया
समय शिवने धीरे से नेत्र खोलकर देखा तब पुरोहित
के बोला कि हे प्रभो! जो आप कोप न करें तो मैं एक
करूं यह सुनकर ... कि कहो तब
माधव नाम बड़ा धन ... का राज
हता है वह अपना स
ने धीरे से कहा कि
क्या प्रयोजन है तब
आश्रम के क्रमको आप
पितृ और अतिथियों का
धर्म अर्थ काम इनतीनों
आश्रमों से श्रेष्ठ है
कहा हुआ है और

यह दोनों राजा के पासगये वहां माधव भी राजाके पास बैठा था पुरोहितजी ने राजासे कहा कि शिवने पीतल में जड़ेहुए अनेक रंगों से रँगेहुए कांच तथा बिल्लौर के टुकड़ों से बनेहुए झूठे आभूषण मुझे देकर मुझ न जाननेवाले का सर्व्वस्व खाडाला तव शिवने कहा कि हे महाराज! मैं तो बाल्यावस्थासेही तपस्वीथा इसी ने बहुत प्रार्थना करके मुझे दान दिलवाया और मैंने उसीसमय इससे कहदियाथा कि मैं रत्नादिक और सुवर्ण नही पहिचानता हूं तुम्हें जैसा समझपड़े वैसाकरो इसने कहाथा कि मैं सब देखलूंगा तुमको इससे कुछ काम नही और मैंने वह सब लेकर इसी को दे भी दियाथा तब इसने अपनी इच्छा के अनुसार मुझे मोल देकर सब लेलिया इस विषय मे हमारी इनकी लिखापढी भी होगई थी वह दोनों के पासहै अब आप जैसा उचित समझिये वैसा कीजिये इसप्रकार कहकर शिवके चुप होजानेपर माधव पुरोहित से बोला कि आप जैसा उचित समझिये वैसा कीजिये इसप्रकार कहकर शिवके चुप होजानेपर माधव पुरोहित से बोला कि आप ऐसा न कहिये इस मे मेरा भी कोई अपराध नही है मैंने आप से और शिवसे कुछ ले नही लिया मैंने अपने पिताका धन किसी के पास रखदियाथा बहुत दिनके पीछे उससे लेकर यहां चलाआया और वही दान करके देदिया यदि सत्य २ उसमें सुवर्ण तथा रत्न नहीं है तो मुझे पीतल बिल्लौर तथा कांचही के देनेका फल होगा और निष्कपट होनेके कारण मुझे तो दानमे विश्वासहै इसी के प्रभाव से मैं अत्यन्त महाकठिन रोगसे निवृत्त होगया यह सब कोई जानताहै इसप्रकार जब माधवने कहा और उसके मुखपर किसीप्रकार का विकार नही मालूमहुआ तब राजा सम्पूर्ण मंत्रियोंसमेत हँसा

हम दोनोको पकड़ मँगवाया और आज आपके पूछने
अपना और अपने मित्रका सम्पूर्ण वृत्तांत वर्णनकिय
स्वामी हैं जेसा उचित समझिये वैसा कीजिये उसके
सुनकर राजाविक्रमसिंह उनदोनो ब्राह्मणोसे बोला कि
पर मैं प्रसन्नहूं डरोमत मैं तुम दोनोंको निर्वाहके योग्य
इसी पुरीमें रहा यह कहकर राजाने उनको यथेष्ट
वह अपनी स्त्रियों समेत सुखपूर्वक राजाके निकट रहे ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तत्रिंश प्रदीप ३७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टत्रिंशःप्रदीपः ३८ ॥

अनित्येहिशरीरेऽस्मिन्नकुर्य्यान्ममतांजनः
राजकन्याःसप्तयथानचक्रुर्ममतांतनोः ३८ ॥

(अर्थ)-अनित्य नाशमान इस शरीर पर ममता न
जैसे सात राजपुत्रियोंने इस शरीर को असार समझ
विचारा ३८ ॥

पूर्वसमय में कृतनाम किसी राजाके अत्यन्त सुन्दर
क्रमसे हुईं वह सातो बाल्यावस्थाही में वैराग्य से पिता के
छोड़कर श्मशान में चलीगईं जब परिवारके लोगोंने उन
कि तुमने गृह का त्याग क्यों कियाहै तब वह बोलीं कि
म्पूर्ण संसारही असारहै संसार में भी यह शरीर अधिक
और इस शरीरमें भी अभीष्ट की प्राप्ति आदिक सुख स्वप्नके स
अत्यन्तही असारहै परन्तु एक परहितही इस संसारमें सारहै
इस शरीर से हम सब प्राणियों का हित करेंगी इस जीतेहुये
शरीर को श्मशान में राक्षसों के भोजन के निमित्त डालदेंगी
क्योंकि सुन्दर भी इस शरीर से क्या प्रयोजनहै देखो पूर्व

और माधव पर प्रसन्न होगया उससमय सम्पूर्ण सभाके लोगों ने हँसी को रोककर यह कहा कि इसमें माधव और शिव किसी का भी कोई दोष नहीं है यह सुनकर पुरोहित लज्जित होकर वहां से चलागया ठीक कहाहै कि अत्यन्त लोभान्ध होने से मनुष्यों पर कौन २ सी विपत्ति नहीं आती इसप्रकार पुरोहित तो अपना धन गवांकर चलेगये और वह दोनों धूर्त्त प्रसन्नहोकर राजा से बहुत सा धन पाकर सुखपूर्वक वहीं रहनेलगे इसीप्रकार से जालराजी करके जीविका करनेवाले धीवरों के समान धूर्त्त सैकड़ों प्रकार के ढंगोंको रचकर संसार में जाल फैलाते हैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रयस्त्रिंशःप्रदीपः ३३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे चतुस्त्रिंशः प्रदीपः ३४ ॥

तिरस्कुर्यादार्यमपिखलसंवादशृंखला ।
हरस्वामीयथादुष्टैर्बालभक्षीतिज्ञापितः ३४ ॥

(अर्थ) दुष्टलोगों की बातों की परम्परा महात्माजन का भी तिरस्कार करदेवे—जैसे हरस्वामीको लोगो ने बालकों को खाने वाला प्रसिद्धकिया ३४ ॥

कुसुमपुरनाम नगरहै वहां तीर्थोंका सेवन करनेवाला हरस्वामी नाम एक ब्राह्मण रहता था वह गंगाजी के किनारे कुटी बनाके भिक्षावृत्ति से अपना पालन करता था और तपके प्रभाव से वहां के निवासियों पर उसका बड़ा दबाव होगया था एक समय उस ब्राह्मण को भिक्षा मांगनेको जातेदेखकर उसके गुणो में ईर्षाकरने वाले एकदुष्टने लोगों से कहा कि क्या तुम जानतेहो कि यह कैसा कपटी तपस्वी है इसीने इस नगर में सब बालकखाये हैं यह सुनकर उसीका साथी एकदुष्ट बोला कि तुम ठीक कहतेहो मैंने भी लोगों

[illegible] में [illegible] को [illegible] में [illegible]
[illegible] दिन वह [illegible]
[illegible] वह [illegible] लिया [illegible] से [illegible]
[illegible] दोनों [illegible]
[illegible] जानते हैं तब [illegible] बिना [illegible]
[illegible] एकान्त में [illegible] कि [illegible]
[illegible] तुम [illegible] उनका [illegible] है [illegible]
[illegible] में [illegible] है [illegible]
[illegible] और [illegible]
[illegible] की [illegible] है [illegible] की
[illegible] इस [illegible] की
[illegible] दिन [illegible]
[illegible] में [illegible] की [illegible]
[illegible] ने [illegible]
[illegible] में [illegible]
[illegible] में [illegible] और [illegible]
[illegible] के [illegible]
[illegible] नव [illegible] से [illegible]
[illegible] लिया [illegible]
[illegible] है [illegible]
[illegible] में [illegible]
[illegible] नहीं [illegible]
[illegible]
[illegible]

से ऐसाही सुना है तब एक तीसरा दुष्ट और बोला कि हा यहबात बहुत ठीकहै सत्यकहाहै कि दुष्ट लोगोंकी बातोंकी परम्परा सज्जन लोगों के अपयश को करतीहै इसी क्रमसे एकसे दूसरे के कान में जाता हुआ यह चवाव सम्पूर्ण नगर में फैलगया तब सम्पूर्ण पुरवासी अपने बालकों को घरसे बाहर नही निकलने देते थे इस कारण कि हरस्वामी लड़को को लेजाकर खाडालताहै इसके उपरान्त वहां के सम्पूर्ण ब्राह्मणो ने बालकों के नाशके भयसे उसको नगर से निकाल देनेकी सलाह की और सब लोग इस भय से कि यह क्रोध करके हमी लोगों को न खाडाले उसके पास नही जासके तब उन्होंने उसके पास दूत भेजे दूतों ने दूरही से जाकर उससे कहा कि ब्राह्मण लोग कहते हैं कि तुम इस नगरसे चले जाओ उसने आश्चर्ययुक्त होकर उनसे पूछा कि क्यों ऐसा कहते हैं तब दूतोंने उत्तर दिया कि तुम जिस बालक को देख पाते हो उसे खाडालते हो यह सुनकर हर स्वामी ब्राह्मणों को समझाने के लिये आपही उनके पास चला उसेआते देखकर लोग भागने लगे और ब्राह्मण लोग भयसे अपने अपने मठों पर चढ़गये ठीक है प्रायः मिथ्या अपवाद से मोहित हुये लोग विचार नहीं करसक्ते हैं इसके उपरान्त हर स्वामी ने नीचे खड़े होकर मठोंपर खड़े हुये ब्राह्मणों से एक एक का नाम लेकर कहाकि हे ब्राह्मण लोगो ! तुम्हें आज यह क्या अज्ञान हुआ है अपने आपस में क्यों नहीं देखते हो कि मैंने किसके कितने बालक कब कहां खाये हैं यह सुनकर सब ब्राह्मण लोगों ने आपस में विचार किया तो मालूम हुआ कि सब के बालक जीते हैं क्रम से सब पुरवासियों ने विचार किया तो सबको मालूम हुआ कि किसीका भी बालक उसने नहीं

हम दोनोंको पकड़ मँगवाया और आज आपके पूछने पर मैंने अपना और अपने मित्रका सम्पूर्ण वृत्तांत वर्णनकिया अब आप स्वामी हैं जैसा उचित समझिये वैसा कीजिये उसके यह वचन सुनकर राजाविक्रमसिंह उनदोनो ब्राह्मणोंसे बोला कि, तुम दोनों पर मैं प्रसन्नहू डरोमत मैं तुम दोनोंको निर्वाहके योग्य धनदूंगा इसी पुरीमें रहो यह कहकर राजाने उनको यथेष्ट जीविकादी और वह अपनी स्त्रियो समेत सुखपूर्वक राजाके निकट रहे॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपनीचतुर्थभागेसप्तत्रिंश प्रदीप ३७॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेअष्टत्रिंशःप्रदीपः ३८॥

अनित्येहिशरीरेऽस्मिन्नकुर्य्यान्ममतांजनः। राजकन्याःसप्तयथानचक्रुर्ममतांतनोः ३८॥

(अर्थ)–अनित्य नाशमान इस शरीर पर ममता न करनी जैसे सात राजपुत्रियोंने इस शरीर को असार समझ त्यागनाही विचारा ३८॥

पूर्वसमय में कृतनाम किसी राजाके अत्यन्त सुन्दर सातकन्या क्रमसे हुईं वह सातों बाल्यावस्थाही में वैराग्य से पिता के घरको छोड़कर श्मशान में चलीगईं जब परिवारके लोगोंने उनसे पूछा कि तुमने गृह का त्याग क्यों कियाहै तब वह बोलीं कि यह सम्पूर्ण संसारही असारहै संसार में भी यह शरीर अधिक असार है और इस शरीरमें भी अभीष्ट की प्राप्ति आदिक सुख स्वप्नके समान अत्यन्तही असारहैं परन्तु एक परहितही इस संसारमें सारहै इससे इस शरीर से हम सब प्राणियों का हित करेंगी इस जीतेहुये ही शरीर को श्मशान में राक्षसों के भोजन के निमित्त डालदेंगी क्योंकि सुन्दर भी इस शरीर से क्या प्रयोजनहै देखो पूर्व स

खाया यह देखकर सम्पूर्ण ब्राह्मण तथा बनियों ने कहा कि हम सब मूर्ख लोगों ने इस साधूको मिथ्याही दोष लगाया स बालक तो जीते हैं इसने किसके बालक खाये इसप्रकार सबलों के कहने पर हर स्वामी अपनी शुद्धताको प्रगट करके नग जानेको तय्यार हुआ ठीक कहाहै कि दुर्जनोंके द्वारा लगाये दोष से विरक्त चित्तवाले धीर लोगोंको विवेक रहित दुर्देश मे नहीं होताहै इसके उपरान्त ब्राह्मण व बनियोंने चरणों पर गिर हरस्वामी को बहुत समझाया तब उसने बड़े आग्रहसे वहां रह स्वीकार किया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुस्त्रिंश प्रदीपः ३४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चत्रिंशःप्रदीपः ३५ ॥

सत्यवक्ताप्रमुच्येत्प्राणार्थंगोवधादपि ॥
यथापुत्राद्विजस्यासन्निष्पापागोवधादपि ३५

(अर्थ) सत्यवादी जो निज प्राण बचानेको कभी गोहत्या करलेवे तो भी शुद्ध होजाताहै जैसे सात द्विजपुत्रोंने भूखमरते ग वधकिया फिर गुरुसे आय कहा तो वे सत्य कहनेसे शुद्धहुये ३५

कुण्डनपुर मे किसी ब्राह्मण उपाध्यायके ब्राह्मणोंके सात प शिष्यथे एकसमय दुर्भिक्षके दोषसे उपाध्यायने अपने सातों शिष्य को अपने श्वशुरके यहां गौ मांगने को भेजा दुर्भिक्षसे दुर्बल व सातों शिष्य अन्यदेशमें रहनेवाले उपाध्यायके श्वशुरके यहां ग और जाकर बोले कि उपाध्यायने गौ मांगीहै उस कृपण ने अप जामाता की जीविकाके निमित्त एक गौ देदी परन्तु उन भूखे ब्र ह्मणों को भोजन नहीं दिया तब उस गौको लेकर जब आधी वह सातों पहुँचे तो क्षुधा से अत्यंत व्याकुल हो मर्म्मा

एक सुन्दर राजपुत्र तरुणअवस्थाही में विरक्त होकर संन्यासी हो-गया एकसमय वह किसी वैश्यके यहां भिक्षाके निमित्त गया वहां उस वैश्यकी स्त्री का चित्त कमलके पत्रो के समान बड़े २ उसके सुन्दर नेत्रोंकी शोभासे चलायमान हुआ तो वह बोली कि तुमने इस अवस्था में इस कष्टदायी संन्यास का ग्रहण क्यों किया वह स्त्री धन्यहै जिसको तुम अपनेनेत्र कमलसे देखतेहो उसके यह वचन सुनकर राजपुत्र ने अपना एक नेत्र फाड़कर हाथ में लेकर कहा कि हे माता ! देखो यह ऐसा निन्दक मांस रुधिर से भराहुआ नेत्र है जो आपको प्रिय लगताहोय तो लेलो और दूसरा नेत्रभी इसी प्रकार का है बताओ इनमें रमणीयता क्याहै उसके यह वचन सु-नकर और उसे देखकर वह स्त्री वहुत दुःखित होके बोली हाय २ मैं महा दुष्टाहूं मुझ पापिनी ने यह बड़ा पापकिया क्योंकि तुम्हारे नेत्र के निकालनेका हेतु मैंहीं हूं यह सुनकर राजपुत्र बोला कि हे माता ! खेद मतकरो तुमने मेरे साथ उपकार कियाहै—इस वातपर मैं तुम्हें एकदृष्टान्त सुनाताहूं पूर्वसमय में गंगाजीके तटपर किसी उपवन में एक यती वैराग्य के अधिक बढ़ने की इच्छा से तप करता था वहां भाग्यवश से कोई राजा अपनी रानियों समेत वि-हार करने को आया विहार करने के उपरान्त जब मद्यपान करके राजा सोगया तब सम्पूर्ण रानी उसके पास से उठकर अपनी च-पलता से उस उपवन में घूमनेलगीं और उस मुनिको एक स्थान में समाधि लगाये हुये बैठा देखकर आश्चर्य्य से सम्पूर्ण रानी उसे घेरकर बैठगई जब वह वहुत कालतक वहां बैठीरहीं तब राजाने जगकर रानियोंको अपने पास न देखकर उन्हे ढूंढने के लिये स-वनमें भ्रमण किया और देखा कि मुनिको घेरे हुये सम्पूर्ण

पृथ्वी में गिरपड़े उससमयमें उन सबोंने मिलकर यह विचारकिया कि उपाध्याय का घर यहां से वहुत दूरहै और हम लोगों को बड़ा भारी क्लेश होरहाहै यहां अन्न मिलनाभी सर्वथा दुर्लभहै इससे हम लोगों के अब प्राणही जाते हैं और हम लोगोंके विना यह गौभी जल तृण तथा मनुष्यरहित इस वनमें अवश्य नष्ट होजायगी तब गुरुका कुछभी प्रयोजन सिद्ध न होगा इससे इस गौके मांस को खाके अपने प्राण बचावें और जो मांस बचे वह गुरुको जाकर देवैं क्योंकि यह आपत्तिका समयहै इसप्रकार सलाह करके उन सातों ने शास्त्रोक्त विधि से गौको मारकर उसके मांस से देव पितरों का पूजन करके आप भोजन किया और जो मांस बचा वह लेकर अपने उपाध्यायके पास चले उपाध्यायके पास आके प्रणामपूर्वक उन सबने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया उपाध्याय भी उन अपराधी शिष्यो पर सत्य बोलने के कारण अत्यन्त प्रसन्नहुआ सात दिन के उपरान्त दुर्भिक्ष के दोष से वह सातो मृत्यु को प्राप्त होगये और सत्यके प्रभावसे दूसरेजन्म में भी जातिस्मर हुए॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चत्रिंश प्रदीप ३५॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षट्त्रिंशः प्रदीपः ३६॥

नियमेशुद्धभावोहि भवेतसत्फलदायकः॥
अशुद्धभावसंयुक्तो विप्रश्चाण्डालतांययौ ३६॥

(अर्थ) नियममें श्रेष्ठभावना विचारनाही श्रेष्ठफलदाता होता है और अशुद्धभावना करने से खोटाफल होता है—जैसे—ब्राह्मण ने खोटी भावनाकरी तौ तिसे निषादके घर जन्म लेनापड़ा३६॥

पूर्व समय में गंगाजी के तटपर एक ब्राह्मण और एक चांडाल दोनों अनशन व्रतकरके बैठे उनमें से क्षुधा से व्याकुल ब्राह्मणने

रानी बैठी है उन्हें देखकर ईर्षा से कुपित होकर राजाने मुनिपर ख-
ड्ग का प्रहार किया ठीकहै-ऐश्वर्य्य-ईर्षा-निर्दयता-उन्मत्तता
और विवेक का न होना इसमें से एक एकही कौनसे कुकर्म्म को
नहीं करसक्ता और जहां यह अग्नि के समान पांचों इकट्ठे होयँ
वहां क्या कहना है इसके उपरान्त जब वह राजा चलागया और
शरीर के कटजाने पर भी मुनिको क्रोध नहीं हुआ तब एक देवी
प्रकट होकर मुनि से बोली कि हे महात्मन्! जिस पापी ने क्रोधसे
तुम्हारे ऊपर प्रहार किया है उसे जो तुम्हारी आज्ञा होय तो मैं मा-
रडालूं देवी के बचन सुनकर मुनि बोला कि हे देवी! ऐसा मतकहो
वह मेरे धर्म्म का सहायक है अपकारी नहीं है उसकी कृपा से
मेरा क्षमारूपी धर्म्म बढ़ा यदि वह ऐसा न करता तो मैं किसपर
क्षमा करता और जानसक्ता कि मैं अपने को वशीभूत करचुका
इस नश्वर शरीर के लिये बुद्धिमान् क्रोध नहीं करते हैं प्रिय और
अप्रिय में समता होने से जो क्षमा होती है वह ब्रह्म का पद है
मुनिके यह बचन सुनकर उसके तपसे प्रसन्न हुई देवी उसके अंगों
को घावोंसे रहितकरके अन्तर्द्धानहुई इससे हे माता! जैसे वह राजा
मुनिका उपकारी हुआ उसी प्रकार तुमभी मेरा नेत्र निकलवाकर
उपकारिणी हुईहो इस प्रकार उस वैश्यकी स्त्री से कहकर जितेन्द्री
वह राजपुत्र अपने सुन्दर शरीरमें भी विश्वास न करके सिद्धके
लिये चलागया इससे बालभी और रम्य भी इस नश्वर शरीर में
क्या विश्वासहै बुद्धिमान्को इस शरीर से केवल परोपकारही क-
रना उचितहै इससे हम सातों इस स्वाभाविक सुखदायी श्मशान
में प्राणियों के निमित्त इस शरीरको रक्खेंगी अपने परिवारवालों
से इसप्रकार कहकर उन राजकन्याओं ने वैसाही किया और परम

वहां आकर मछलियां खातेहुए निपादों को देखकर चित्तमें शोच कि संसार में ये निपादही धन्यहैं क्योंकि यह अपनी इच्छा के अनुसार नित्य मछलियों का मांसखाते हैं और उस चांडाल ने उन निपादों को देखकर यह शोचा कि जीवों के मारनेवाले मांसाशी इन निपादों को धिकार है यहां इनका मुख भी मुझे नहीं देखना चाहिये इसप्रकार शोचकर अपने २ नेत्र बन्दकरलिये और अपने आत्मा का ध्यान करनेलगा क्रमसे थोड़ेही दिनों में अनशन से वह दोनों ब्राह्मण और चांडाल मृत्युको प्राप्तहुए तब ब्राह्मणके शरीरको तो कुत्तोंने खाडाला और चांडालका शरीर गंगाजी में गलगया इसके उपरान्त वह ब्राह्मण तो निपादों के यहां उत्पन्नहुआ और तीर्थ के प्रभाव से पूर्व जन्म का स्मरण बना रहा और वह धीर चांडाल गंगाजी के तटपर राजाके यहां उत्पन्नहुआ और उसे भी अपने पूर्वजन्मका स्मरण बनारहा इस प्रकार उत्पन्न होकर अपने २ पूर्वजन्म का स्मरण करते हुए उनदोनों में से ब्राह्मण तो निपाद होकर पश्चात्तापको प्राप्तहुआ और चांडाल राजाहोकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ इससे धर्मरूपी वृक्ष का मूल मन जिसका शुद्धहोता है उसको वैसाही फल निस्सन्देह मिलता है और अशुद्धको अशुद्ध फल मिलता है ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षट्त्रिंशः प्रदीपः ३६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे सप्तत्रिंशःप्रदीपः ३७ ॥

एकान्तेहिकृतःश्रेष्ठ आलापोपिफलप्रदः ।
एकान्तालापितौदृष्ट्वा राजातुष्टोधनंददौ ३७ ॥

(अर्थ) एकान्तमें किया विचारभी श्रेष्ठ फलदायक होजाता

सिद्धियोंको प्राप्तहुई इसप्रकार बुद्धिमान् लोगों को अपने शरीर में भी ममता नहीं होती और पुत्र तथा स्त्री आदि परिवार रूपी तृणोंकी कौन गणना है ॥

इति श्रीदृष्टांतप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टत्रिंश प्रदीप ३८॥

अथ दृष्टांतप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनचत्वारिंशः प्रदीपः ३६॥

कन्याप्रभाव मतुलं जायते पुत्रतोपिहि।
कन्याप्रभावतोजातः सुषेणःकृतकृत्यताम् ३९॥

(अर्थ) इस संसारमें कन्याका भी प्रभाव बड़ाभारी होताहै-जैसे कन्या के होनेसेही सुषेणराजा कृतार्थ हुआ ३६ ॥

चित्रकूट पर्वतपर सुषेणनाम राजा था जिसे ब्रह्माने शिवजी की ईर्षा से मानों द्वितीय कामके समान बनायाथा उसने चित्रकूट के तटमें एक दिव्य उपवन बनवाया वह ऐसा सुन्दर बनाथा जिसे देखकर देवतालोगों को नन्दनवनके विहारसे अनिच्छा होजाती थी और उसी उपवन के बीचमें प्रफुल्लित कमलों से युत एक बावड़ी बनवाई थी वह बावड़ी क्याथी मानो लक्ष्मीजीके क्रीड़ा के कमलों की नवीनखानि थी उस बावड़ीकी रत्नजटित सीढियों पर अपने योग्य स्त्रियोंके न होनेसे अकेलाही राजा सुषेण विहार करताथा एक समय उसी मार्गसे आकाश में भ्रमण करतीहुई रम्भा नाम अप्सरा इन्द्रके भवनसे आई उसने उस उपवनमें प्रफुल्लितपुष्पों के बनमें साक्षात् वसन्त के समान विहार करते हुए राजा को देखा बावड़ीके कमलोंमें ... ये क्या यह चन्द्रमा स्वर्गसे

है जैसे दो पुरुषों का एकान्त में वार्ता करते देख राजाने प्रसन्न हो तिनको धन दिया ३७॥

दृष्टान्त—एक राजा सम्पूर्ण परिकर लेकर शिकार खेलने को चला उससमय सम्पूर्ण पृथ्वी घोड़े पदाति तथा कुत्तों से भरगई पशुओं की बांधनेवाली डोरियों से सम्पूर्ण दिशा व्याप्त होगई और प्रसन्न व्याधों के शब्दों से आकाश छागया जब हाथीपर सवार होकर राजा चला तब उस समय उसने पुरके बाहर किसी शून्य देवमंदिर में परस्पर कुछ सलाह करतेहुये दो पुरुष एकान्त में खड़ेहुये दूर से देखे और उनको देखताहुआ राजा वन में शिकार खेलने को चलागया वहां खड्गों से न डरनेवाले वृद्धव्याघ्रों को देखकर सिंहों के शब्दो को सुनकर और पर्वत तथा पृथ्वी के विचित्र स्थानोंको देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्नहुआ हाथियोंके मारनेवाले सिंहोंको मारकर उनके नखों से गिरेहुये पराक्रम के बीज के समान गजमोती सम्पूर्ण पृथ्वी में राजाने बखेरदिये तिरछे चलनेवाले पक्षी तथा मृग वक्र होकर राजाके निकट होकर भागे उनको विना वक्र हुएही मारकर वह अत्यन्तही प्रसन्नहुआ इसप्रकार शिकार खेलकर सेवको के थकजाने और धनुषों के शिथिल होजाने पर राजा अपनी उज्जयिनी नगरी को लौटा फिर लौटते समय भी राजाने जातेसमय जिन दो पुरुषों को शून्य देवमंदिर में सलाह करते देखाथा उन्हें उसीप्रकार से उतने समय तक खड़ेहुये देखा उनको देखकर राजाने शोचा कि यह कौनहैं और इतनी देरतक क्या विचार कररहे हैं निस्सन्देह यह दोनों किसी बड़ी गुप्तबातके विचार करनेवाले चोर हैं यह शोचकर राजाने प्रतीहार को भेजकर उन दोनों को बुलवाया और दोनोंको बँधवालिया दूसरेदिन

शरीर धारण करके राजाके पासगई उसे अपने पास आई हुई देख कर राजाने आश्चर्य पूर्वक शोचा कि यह अपूर्व्व सुन्दररूपवाली कौनहै यहमानुषी तो नही है क्योंकि इसके पैरों मे धूल नहीलगी और इसके नेत्रों मे पलके भी नहीं लगती हैं इससे यह कोईदिव्य स्त्री मालूम होती है परंतु इसे पूछना नही चाहिये पूछने से कदाचित चली न जाय क्योंकि किसी कारण से मिलीहुई दिव्य स्त्री प्रायः अपने भेदको नही प्रकट करसक्ती हैं इसप्रकार विचारतेहुए राजासे उसने आकर सम्भाषण किया और क्रमसे दोनों का उस समय समागम भी हुआ राजा उस अप्सराके साथ बहुत कालतक क्रीड़ा करतारहा और उसने भी स्वर्गका स्मरण नही किया ठीक है प्रेम रमणीय होता है जन्मभूमि नहीं रम्यहोती रम्भाकी सखी यक्षणियों से वर्षायेगये सुवर्ण के समूहसे, राजाके राज्यकी पृथ्वी ऐसी व्याप्तहोगई जैसे कि सुमेरु के शिखरोसे स्वर्ग होताहै इसके उपरान्त समयपाकर राजा सुषेणकी वह श्रेष्ठ अप्सरा रम्भा गर्भवती हुई और गर्भ के पूरेहोजाने पर एक अत्यन्त सुन्दर कन्याके उत्पन्न होतेही रम्भा राजासे बोली कि हे राजा मुझे इतने दिनका शापथा वह इससमय छूटगया मैं रम्भानाम स्वर्ग की अप्सरा हूं तुम्हें देखतेही मेरे चित्त में अनुराग उत्पन्नहुआ अब मैं इस कन्या को यहां छोड़कर जाती हूं क्योंकि मेरा ऐसाही नियमहै आप इस कन्याकी रक्षाकीजिये और इसके विवाहसे स्वर्ग मे हमारा तुम्हारा फिर समागमहोगा इसप्रकार कहकर पराधीन वहअप्सरा अंतर्द्धान होगई और राजा उसके दुःख से प्राण देनेको उद्यतहुआ राजाकी यह दशादेखकर मंत्रियों ने उससे कहा क्या शकुन्तलाको उत्पन्न करके मेनकाके चलेजाने पर विश्वामित्रने निराश होकर शरीर

सभामें उनदोनों को बुलाकर राजाने पूछा कि तुम कौनहो श्
बहुत कालतक तुम क्या विचार कररहे थे राजाके यह वचन सु
कर उनमें से एकपुरुष अभय मांगकर बोला कि हेमहाराज! सुनि
मैं सम्पूर्ण यथार्थ वृत्तान्त वर्णन करताहूं आपकी इस पुरी में
विद्या का जाननेवाला कर्मक नाम एक ब्राह्मण था उसने
पुत्र होने की इच्छा से अग्नि का आराधन किया तब मेरा ज
हुआ समय पाकर जब मेरे पिता मरगये और मेरी माता उन्हीं
साथ सती होगई तब मैं बाल्यावस्थाही में विद्याओंको पढ़कर
अनाथ होनेके कारण द्यूत खेलनेलगा और शस्त्रविद्या में अभ्या
करनेलगा ठीकहै बड़े लोगोंकी शिक्षाके बिना बाल्यावस्थामें कौ
पुरुष कुमार्गीनहीं होजाताहै इसप्रकार से बाल्यावस्था के व्यती
होजानेपर एकसमय मैं अपने भुजबलके अभिमान से बनमें बा
फेंकने को गया उससमय उसीमार्ग से नगरी के बाहर एक ब
बहुत से बरातियों समेत गाड़ीपर चढ़ीहुई वहांआई और अकस्मा
जंजीर तोड़कर कहीं से भागाहुआ एक मतवाला हाथी उसी ब
पर दौड़ा उसके भयसे उसका पति तथा अन्य सब लोग इध
उधर भागगये यह देखकर मैंने घबराके एकाएकी शोचा कि हाय
इन कातरोंने कैसे इस बिचारी को अकेला छोड़दिया तो इस
हाथी से मैं इस अनाथ को बचाऊंगा क्योंकि विपत्ति में पड़ेहुये
को न बचानेवाले व्यर्थ प्राण और पुरुषार्थ से क्या प्रयोजनहै यह
शोचकर मैं गर्जकर उस हाथी की ओर दौड़ा और वह हाथी भी
उस स्त्रीको छोड़कर मेरी ओरदौड़ा तब डरीहुई उस स्त्री से वारंवार
देखागया मैं भगाकर उसहाथीको बहुत दूरतक लेगया बीचमें घने
पत्रों से युक्त किसी वृक्षकी टूटीहुई शाखाको लेकर उससे अपनेको

त्याग दियाथा मंत्रियों के इत्यादि अनेक वचनों को सुनकर रा
को धीरे २ धैर्यहुआ और उस कन्या को देखकर उसके विवाह
रम्भाके फिर मिलने की आशाहुई राजाने सर्वांगसुंदरी उस कन
का नाम लोचनों के अत्यन्त सुन्दरहोने के कारण सुलोचनारक्ख
समयपाकर जब सुलोचना युवती हुई तब उसे उपवन में कश्य
जीके पुत्र वत्सनाम युवामुनि ने देखा तपके समूहरूपभी वत्समु
राजकन्याको देखकर अनुरागवश होगये और शोचनेलगे कि इ
कन्याकारूप परमअद्भुतहै यदि यह मेरी स्त्री न होय तो इसके वि
वाय तपका क्या फल होगा इसप्रकार शोचतेहुए धूमरहित अग्नि
के समान जाज्वल्य तेजवाले वत्समुनि को सुलोचनाने भी देख
माला यज्ञोपवीत तथा कमंडलधारी मुनिको देखकर उसके वि
में भी प्रेम उत्पन्न हुआ और शोचनेलगी कि, यह कौनहै इसक
आकृति कैसी शान्त और मनोहरहै इसप्रकार शोचकर मानों स्व
यम्बर के लिये नेत्रकमलों की माला उसपर फेंकतीहुई सुलोचन
ने निकट जाकर उसे प्रणाम किया तब देवता और दैत्यों से भी
नहीं उल्लंघन करने के योग्य कामकी आज्ञा के वशीभूत मुनिने
तुझे पति प्राप्तहोय यह आशीर्वाद दिया उससमय मुनिके अपूर्व
रूपके लोभसे निर्लज्ज होकर सुलोचना मुखको झुकाकर बोली
कि जो आपकी ऐसी इच्छा है और यह केवल हास्य नहीं है तो
मेरे पितासे जाकर याचना कीजिये वही मुझे देसक्ताहै तब मुनि
ने उसकी सखियों से उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछकर उसके पिता
राजासुषेण के पास जाकर उसकी याचना की राजाने भी उसे
तप और शरीर दोनों से अत्यन्त उत्कृष्ट जानकर अतिथि सत्कार
करकेकहा कि हेभगवन्! यह मेरीकन्या रम्भा अप्सरासे उत्पन्न हुई है

आच्छादित करके में वृक्षो के बीच मे चलागया और शीघ्रता से वृक्षोंके बीचमें उस शाखाको धरकर में तो भागगया और हाथी ने वह शाखा तोड़डाली तब मैंने वहांसे उस स्त्रीके पास आकर उससे शरीर की कुशल पूछी वहभी मुझे देखकर दुःख तथा हर्ष से युक्त होकर बोली कि मुझे कुशलही क्याहै जिसका ऐसाकुत्सित पुरुष के साथ विवाह हुआहै जो ऐसे संकट में भी मुझे छोड़कर कही भागगयाहै परंतु यह कुशलहै जो तुम उस हाथी से बचकर फिर दिखाई दिये हो इससे वह अब मेरा कौन है तुम्ही मेरे पति हो जिसने शरीर की आशा छोड़कर निरपेक्ष होकर मृत्यु के मुख से मेरी रक्षाकी अब वह मेरा पति अपने सेवको समेत देखो आरहा है इससे तुम पीछे २ छिपकर मेरे साथ चलेआओ अवसर मिल-नेपर तुमसे मिलकर जहां चाहोगे वहां चलूंगी उसके यह वचन सुनकर मैंने स्वीकार करलिये—यद्यपि स्वरूपवती भी है और स्वयं अपने को अर्पण भी करती है तथापि यह परस्त्री होने के कारण ग्रहण करने के योग्य नही है इसधैर्यके मार्गपर युवा पुरुष नही चल सक्ते क्षणभर मे उसके पतिने आकर उसे सावधान किया और अपने भृत्यों समेत उसे लेकर वहां से चला और मैभी गुप्ततापूर्वक उसके दियेहुये पाथेय (राहखर्च) को भोजन करताहुआ उस के साथ बहुत दूरतक अन्य मार्गसे छिपकर पीछे २ चला और उस स्त्रीने हाथीके भयसे गिरपड़ने के कारण मिथ्या पीड़ाका बहाना करके अपने प्रति को अपना स्पर्श भी नही करने दिया ठीक है विकारयुक्त कीगई रक्तोन्मुखी और अन्तःकरण में उत्पन्नहुये घने विकाररूपी विषसे दुस्सह सर्पिणी के समान किस की स्त्री बिना अपकार किये रहती है क्रमसे चलते २ हम उन्हींके साथ पीछे २

जब रम्भा स्वर्गको जानेलगी थी तब उसने कहाथा कि इस कन्या के विवाहमें हमारा तुम्हारा फिर समागमहोगा यहबात कैसे सिद्ध होगी इसको आप विचार लीजिये राजाके यहवचन सुनकर वत्स-मुनि ने क्षणभर यह विचार किया कि पूर्वसमय मे मेनकाकी कन्या प्रमद्वरा को जब सर्पने काटाथा तब रुरुनाम मुनि ने अपनी आ-युका अर्द्धभाग देकर क्या उसके साथ विवाह नहीं कियाथा क्या विश्वामित्र भयभीत त्रिशंकु को स्वर्ग नही लेगये थे इससे मैं भी अपने तपके कुछ अंशको व्यय करके इसके मनोरथ को क्यों न सिद्धकरूं यह शोचकर और यह कुछ कठिन बात नही है ऐसा कहकर वह मुनिबोले कि हे देवतालोगो! मेरे तपके अंशसे शरीर सहित यह राजा रम्भासे सम्भोग करने के निमित्त स्वर्ग को जाय मुनि के ऐसा कहने पर एवमस्तु यह आकाशवाणी राजसभा में सुनाईदी तब राजासुषेण वत्समुनि के साथ सुलोचनाका विवाह करके स्वर्गको चलागया और स्वर्ग मे जाकर दिव्य शरीर होकेइन्द्र की आज्ञा से दिव्य प्रभाववाली रम्भाके साथ आनन्दपूर्वक रमण करनेलगा इसप्रकार कन्याके प्रभावसे राजासुषेण कृतार्थ हुआ ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनचत्वारिंश प्रदीप ३९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचत्वारिंश प्रदीपः ॥ ४० ॥

असमाख्यकथांनैव आश्रमंददतेबुधाः ।
कथांकथन्प्रसुप्तोहि दुःखंराजसुतोऽलभत् ४० ॥

(अर्थ)–कोई कथाकहते बिन प्रसंग पूर्णकिये विश्राम न देना–जैसे राजपुत्र कथा कहते सोगया तो तिसने दुःखपाया ४० ॥

पुष्करावतीनाम नगरी में गूढ़सेननाम राजाथा उसके एकही पुत्रथा वह राजपुत्र अभिमान से जो कुछ शुभाशुभ कार्य्य करता

लोहनगर में पहुंचे वहीं रोजगार से जीविका करनेवाली उसस्त्री के पतिका घरथा पहले दिन वह लोग बाहर एक देवमंदिर में रहे वहीं यह ब्राह्मण हमको मिला नवीन दर्शन मेंभी हम दोनों को परस्पर बड़ा हर्षहुआ ठीकहै प्राणियों का चित्त जन्मांतरके संचित प्रेमको जानताहै तब मैंने अपना सम्पूर्ण रहस्य इससे कह दिया उसे जानकर इसने मुझसे एकान्त में कहा कि तुम चुप रहो जिस लिये तुम यहां आये हो उसका उपाय मेरे पास है इस बनिये की बहिन मेरे साथ यहांसे निकल चलनेको उद्यतहै और इस बातका सब ठीकभी होचुकाहै इससे उसी की सहायता से मैं तुम्हारा भी अभीष्ट सिद्ध करूंगा मुझसे यह कहकर इस ब्राह्मणने उसस्त्री की नन्दसे सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया दूसरे दिन सलाह करके वह अपने भाई की स्त्रीको लेकर उसी देवमन्दिरके गुप्त स्थानमें आई वहां हम दोनों में से मेरेमित्र इस ब्राह्मणका भेष उसने अपने भाई की स्त्री कासा बनालिया और इसेलेकर अपने भाईके साथ नगरमें अपने घरको आई और मैं पुरुषभेष धारिणी उस बनियेकी स्त्रीको साथले कर धीरे २ उज्जयिनी में आया और उसकी नन्द रात्रि के समय उत्सवसे उन्मत्तहोकर जबसम्पूर्णलोग सोगये तब मेरे इस मित्रको लेकर वहां से निकली तब यह उसे लेकर छिपकर इस उज्जयिनी नगरी में आया और यहां आकर मुझसे मिला इसप्रकार हम दोनों नन्द और भावज अपने २ अनुरागसे मिली इससे हे महाराज! हमलोगों को यहां सब कहीं निवास करने में सन्देह होताहै क्योंकि साहसी चित्त किसीपर विश्वास नहीं करते इसीसे उनस्त्रियोंके निवासके लिये और धनकेलिये हमदोनो कल एकान्तमें विचारकर रहेथे उससमय आपने दूरसे देखकर चोर (गोयंदा) के सन्देहसे

था वह सब उसका पिता सह लेताथा एकसमय उस वनमे भ्रमण करतेहुए राजपुत्रने ब्रह्मदत्तनाम वैश्यका अपने समान रूप और ऐश्वर्य्यवान् पुत्र देखा देखतेही राजपुत्र ने जाकर उससे मित्रता करली उन दोनो में ऐसी मित्रता बढ़ी कि वह दोनो एकरूप से होगये परस्पर विना देखे क्षणभर भी नही ठहरसक्के थे ठीकहै–पूर्व जन्मका संस्कार शीघ्रही प्रेमको दृढ करदेताहै राजपुत्र उस सुख को कभी नहीं भोग करता था जो उस वणिक्पुत्र के लिये पहले ही से नही कल्पिताकिया जाताथा एकसमय राजपुत्र अपने मित्र वणिक्पुत्र के लिये विवाह का पहिलेही से निश्चय करके अपने विवाहके लिये अहिच्छत्र देशको जाने के लिये अपने मित्रसमेत हाथीपर चढ़कर सब सेनासहित चला और सायंकाल के समय इक्षुमती नदी के तीर पर रहा वहां रात्रि के समय चांदनी में मद्यपान करके पलँग पर लेटा और अपनी उपमाता के कहने से कोई कथा कहनेलगी कथाके बीचही में श्रमसे और मदसे राजपुत्र को तो निद्रा आगई और उसकी उपमाता भी सोगई परन्तु वह वणिक्पुत्र स्नेह से जागता रहा उस समय आकाश मे स्त्रियोंकी सी यह बातचीत उस वणिक्पुत्रको सुनाईदी कि यह पापी कथा को विना कहे सोगया इससे मैं इसे यहशाप देतीहूं कि प्रातःकाल इसे एक हार दिखाई देगा यदि यह उसे लेलेगा तो उसके पहरतेही इसकी मृत्यु होजायगी यह कहकर जब एक चुपहुई तब दूसरी बोली कि जो इससे यह बच जायगा तो मार्ग में एक आम्र का वृक्ष इसे दिखाई देगा जो उसके फल यह खायगा तो इसकी मृत्यु होजायगी यह कहकर जब वह चुप हुई तब तीसरी बोली कि जो यह इससे भी बच जायगा तो विवाह के लिये यह जिस

घरमें जायगा तो वही घर इसके ऊपर गिरेगा और उसीसे इसकी मृत्यु हो जायगी यह कहकर जब वहभी चुप होगई तब चौथी बोली कि जो इससे भी यह बचजायगा तो रात्रिके समय जब यह शयन के स्थानमें जायगा तब जातेही इसे सौवार सौ छींक आवैंगी जो हर छींक में कोई मनुष्य इसे जीव २ नहीं कहेगा तो इसकी मृत्यु होजायगी और जिसने हम लोगोंकी यह बात चीत सुनीहोगी वह जो कदाचित् इसके बचाने के लिये इस से कहेगा तो उसकी भी मृत्यु होजायगी—यह कहकर वहभी चुपहोगई इस सम्पूर्ण दुःखदाई वार्त्तालापको सुनकर वणिक्पुत्र राजपुत्रके स्नेह से व्याकुल होकर शोचनेलगा कि बड़े खेदका विषयहै कि प्रारंभ कीहुई कथाको अलक्षित होकर देवतालोग भी सुनते हैं जो उसे पूरी न करो तो वह शाप देजाते हैं अच्छा होय सो होय इस से क्या लाभ है अब इस राजपुत्र के मरजानेपर मेरा जीना भी व्यर्थ होजायगा इससे प्राणोंके समान प्रिय इस मित्रकी युक्तिपूर्वक रक्षा करनीचाहिये और यह वृत्तान्तभी उससे नही कहनाचाहिये क्योंकि कहने से मुझे दोषहोगा इस प्रकार शोचकर बड़े खेदसे उसने वह रात्रि व्यतीत की प्रातःकाल वहांसे चलकर राजपुत्र ने एक हार मार्ग मे पड़ाहुआ देखा और उसके लेनेकी इच्छाकी तब वनिये के पुत्रनेकहा कि हे मित्र ! यह हार मतलो यह हार नहीं है मायाहै नही तो सैनिकलोग इसेक्यो नहीं देखते अपने मित्रके यह वचन सुनकर उसे छोड़कर राजपुत्र ने आगे चलकर एक आम्रका वृक्ष देखा और उसके फलखानेकी इच्छाकरी तब फिर वैश्यपुत्रने उसी प्रकार से वहां भी निषेध करदिया इसके उपरान्त धीरे २ राजपुत्र अपने श्वशुर के यहां पहुंचा वहां जब विवाहके निमित्त घरमें जाने

से उनकी रक्षा करताहै एकसमय वह राजा बनमें शिकार खेलने के लिये आया और शिकार खेलकर थकके कहीं सोगया उससमय एक खनखजूरा उसके कानमे चलागया परन्तु उसे नहीं मालूम हुआ और कानके भीतर जाकर उस खनखजूरेने बहुतसे बच्चेदिये हैं इसरोग से राजा वसुदत्त अत्यन्त दुर्बल होगया है वैद्यलोग उसके इसरोगको नहीं जानसक्ते हैं जो दूसरा भी कोई न जानेगा तो कुछकाल मे राजाकी मृत्यु होजायगी राजाके मरजानेपर उसका मांस तुम अपनी माया से हरकर खाना उसके खाने से छः महीने तक तुम्हारी तृप्तिहोगी इसप्रकार से भैरवजी ने मुझसे यह संदिग्ध वचनकहे हैं इससे हे बालको! मैं क्या करूं उस राक्षसीके यहवचन सुनकर वह बोले कि हे माता! जो इसरोगको जानकर कोई दूसरा पुरुष अच्छाकरदे तो वह राजा जीसक्ताहै और जो जीसक्ताहै तो यहरोग किसप्रकार से जासक्ताहै अपने पुत्रों के यह वचन सुनकर वह राक्षसी बोली कि इसरोग के दूर होजाने पर वह राजा अवश्य जी सक्ताहै मैं तुम्हें इसरोगके दूरहोनेका उपायबतातीहूं पहले राजा के शिरमें गर्म्म घृत लगाकर उसे मध्याह्नकी अत्यन्त कड़ी धूपमें बैठावे फिर उसके कान में एकबांसकी नली जिसमें बराबर छिद्र होय लगादे और उस नली को दूसरी ओरसे शीतल जलसे भरे हुए घड़ेपर छेददार सकोरा बन्द करके उस छिद्रमें लगादे इस उपाय से स्वेद तथा धूपसे व्याकुल होकर सम्पूर्ण खनखजूरे शिरसे निकलकर कान के द्वारा नली में होकर शीतलता के लोभसे घड़े में गिरपड़ेंगे इस उपाय से राजा बड़े रोगसे छूटजायगा इसप्रकार अपने पुत्रों से कहती हुई उस राक्षसी से इस सम्पूर्ण वृत्तान्त को सुनकर खोखले में खड़ी हुई कीर्त्तिसेना सोचने लगी कि जो मैं

दियाहै इससे हे मित्र! तुमभी पिशाच सिद्धी करो वह तुम्हारे इस घाव और नासूरको अच्छा करदेगा यह कहकर और मन्त्र बताकर उसने यह विधिभी बताई कि रात्रिके पिछले पहर उठकर बालोंको खोलकर नग्न होके आचमन बिना किये दो मुट्ठियों में जितने चावल आसकें उतने चांवल लेकर मन्त्रको जपते हुए तुम चौराहेपर जाना वहां दोनों मुट्ठी चांवल रखकर मौन होकर चलेआना और पीछे फिरकर न देखना जबतक पिशाच प्रकट होकर यह न कहे कि मैं तुम्हारे व्रणोंको खोदूंगा तबतक प्रतिदिन इसी रीतिको करे चले जाना इसप्रकार से पिशाच सिद्ध होकर तुम्हारे रोग को दूर करदेगा अपने मित्रके यह वचन सुनकर उस ब्राह्मणने उसी रीति पर किया तब पिशाच ने सिद्ध होकर हिमालय से औषधी लाकर उसका नासूर खोदिया नासूरके अच्छे होजाने से प्रसन्न हुए उस ब्राह्मण से वह पिशाच बोला कि हे ब्राह्मण! मुझे कोई दूसरा घाव और बताओ जिसको मैं पूरा करूं नहीं तो मैं तुम्हारे लिये कोई अनर्थ करदूंगा या तुम्हारे शरीरकोही नष्ट करदूंगा यह सुनकर ब्राह्मण भयभीत होके अपने को बचाने के लिये बोला कि सात दिनके उपरान्त मैं तुमको दूसरा घाव बतलाऊंगा तब पिशाच चलागया और वह ब्राह्मण अपने जीवनसे निराश होगया इतनी कथा कहकर कलिंगसेना असभ्य वचनों के कहनेकी लज्जासे निवृत्त होकर सोमप्रभा के कहने से फिर बोली कि इसके उपरान्त उस ब्राह्मण की एक चतुर विधवा पुत्री अपने पिताको खिन्न देखकर बोली कि आप क्यों उदासीन हो तब उसने उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया तब कन्याने व्रणके न मिलने से अपने पिताको खिन्न जानकर कहा कि मैं उस पिशाचको छललूंगी तुम

यहांसे वचजाऊंगी तो इसी युक्ति से राजा वसुदत्तको नीरोग करूंगी यही राजा थोड़ासा करलेकर इस वनकी रक्षा करताहै इसी लोभसे सम्पूर्ण बनिये इस मार्ग से जातेहैं यहबात समुद्रदत्तने भी मुझ से कहीथी इससे मेरापति इसीमार्ग से आवेगा तो मैं इसबन से वसुदत्त पुरमें जाकर राजाको नीरोग करके वहीं अपने पतिके आने की प्रतीक्षा करूंगी इसप्रकार विचारती हुई कीर्त्तिसेना बड़े खेद से उस रात्रि को व्यतीत करके प्रातःकाल राक्षसों के चले जानेपर उस खोखले में से निकली और धीरे धीरे वहांसे चली कुछ दूर चलकर मध्याह्न के समय एक साधू गोपाल उसे मिला उसके पास जाकर कीर्त्तिसेना ने पूछा कि यह कौनसा प्रदेश है यह सुनकर उसकी सुकुमारता और मार्गगमन के क्लेश को देख कर वह गोपाल दयापूर्वक बोला कि देखो यह सन्मुख वसुदत्तनाम राजाका वसुदत्तपुर नाम नगरहै यह महात्मा राजा रोगसे दो एक दिनमें मरने चाहताहै यह सुनकर कीर्त्तिसेना उससे बोली कि जो मुझे उसके पास कोई लेचले तो मैं उसके रोगको दूरकरदूंगा तब वह गोपाल बोला कि मैं इसी पुरमें जाताहूं तुम मेरेसाथ चलो मैं तुम्हें राजाके पास पहुँचाने का उद्योग करूंगा उसके वचनों को स्वीकार करके कीर्त्तिसेना उसीके साथ वसुदत्तपुरको गई वहां जाकर उस गोपालने राजाके रोगको देखकर किसी दुखी प्रतीहार से कहाकि यह वैद्य राजाके रोगको दूरकरने को कहताहै यह सुनकर प्रतीहार राजासे विज्ञापना करके और आज्ञा लेकर कीर्त्तिसेनाको उसके पास लेगया रोगसे पीड़ित राजाभी उसके अद्भुत स्वरूपको देखतेही सावधान होगया ठीकहै—आत्माही हिताहित को पहिचानता है और बोला कि हे सुलक्षण ! जो तुम मेरे रोग को दूर

उससे जाकर कहो कि मेरी पुत्रीके नासूरहै उसे पूरा करो पुत्री के वचन सुनकर ब्राह्मण प्रसन्न होकर पिशाच के पासगया और उस को अपनी पुत्रीके पास लेगया तब लड़की ने पिशाचको एकान्त में अपनी योनि दिखाकर कहा कि इस मेरे घावको तुम पूरा करो उसके वचन सुनकर वह मूर्ख पिशाच अनेक प्रकारके लेप और बत्ती आदि उसकी योनि में लगाने लगा परन्तु उसे पूर्ण न कर सका कुछ दिनो के पीछे खिन्न होकर पिशाच उस ब्राह्मणकी पुत्री की जङ्घा अपने कन्धों पर रखकर उसकी योनि को देखने लगा कि यह व्रण क्यों नहीं पूर्ण होताहै उससमय कुछ नीचे दृष्टि प- ड़नेसे उसे गुदाका छिद्र दिखाई दिया उसे देखकर वह घबरा कर शोचने लगा कि एक व्रण को तो पूराही नहीं करचुकाहूं दूसरा और उत्पन्न होगया यह कहावत ठीकहै कि छिद्रों मे अनर्थ बहुत होते है जिससे सम्पूर्ण उत्पन्न होतेहैं और जिसके द्वारा नाशको प्राप्त होतेहैं उस खुले हुये संसार के मार्गको कौन ढकसक्ताहै यह शोचकर उसे यह भयहुआ कि घाव तो नहीं अच्छा हुआ अब मुझको यही बन्धन में पड़ना होगा इस भयसे वह मूर्ख पिशाच वहांसे भागगया॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकचत्वारिंश प्रदीप ॥ ४१ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विचत्वारिंश प्रदीपः ४२॥

श्रेष्ठाशीलवतीनारी मुच्यतेमहतोभयात्॥
महत्सौख्यमवाप्नोति वैश्यपत्नीयथाऽभवत्४२॥

(अर्थ) श्रेष्ठ स्वभाववती स्त्री सब भयों से छूटती फिर भारी सुखभी पाती है जैसे वैश्यकी स्त्री निज साससे दुःखीहो निकलगई तो तिसने फिर राजासे सन्मानपाया और निज पतिसेमिली ४२॥

करोगे तो मैं तुम्हें अपना आधा राज्यदेदूंगा मैंने स्वप्न में देखाथा कि किसी स्त्री ने मेरी पीठपरसे काला कम्बल उतारलिया है इस से मुझे निश्चयहोताहै कि आप मेरे इसरोगको अवश्य दूरकरियेगा राजाके यह वचन सुनकर कीर्तिसेना बोली कि हे महाराज! आज तो दिन व्यतीत होगया है कल में आप के रोगको दूरकरदूंगा आप अपने धैर्यको न छोड़ियेगा यह कहकर उसने राजाके शिर पर गौकाघृत मलवाया उससे राजा की पीड़ा कमहोगई और निद्रा आगई तब सम्पूर्ण लोग कीर्तिसेना की बड़ाई करके बोले कि यह कोई देवता हमलोगों के पुण्य से वैद्यका रूपधारण करके रात्रिके समय आया है रानी ने भी राजा के योग्य सम्पूर्ण उत्तम२ सामग्रियों से उसका सेवनकरके रात्रिके समय दासियोंसमेत एक बड़ा सुन्दर स्थान उसके शयन करने को दिया इसके उपरान्त दूसरेदिन मध्याह्नके समय सम्पूर्ण मन्त्री और रानियों के सन्मुख कीर्तिसेना ने राक्षसी की बताई उस अपूर्व युक्तिके द्वारा राजा के शिरसे डेढ़सौ खनखजूरे कानके मार्ग से निकाले उन खनखजूरों को घड़े में रखकर दूध और घी आदि पुष्ट पदार्थों से राजाको तृप्त किया क्रमसे रोग के निवृत्त होजाने पर राजा सावधान होगया और घड़े में उन खनखजूरों को देखकर सम्पूर्ण लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ राजाने भी उन कीड़ोंको देखकर भय तथा आनन्द से युक्त होकर अपना पुनर्जन्म माना और स्नान करने के पीछे उत्सव करके कीर्तिसेना को अपना आधा राज्यदेने का प्रस्ताव किया जबकीर्त्तिसेना ने आधाराज्य नहीं स्वीकार किया तब गांव हाथी घोड़े तथा सुवर्ण देकर उसे प्रसन्न किया सम्पूर्ण रानी तथा मंत्रियोंने भी कहा कि इसने हमारे स्वामीके प्राणों की रक्षा की है

दियाहै इससे हे मित्र ! तुमभी पिशाच सिद्धी करो वह तुम्हारे इस घाव और नासूरको अच्छा करदेगा यह कहकर और मन्त्र बताकर उसने यह विधिभी बताई कि रात्रिके पिछले पहर उठकर बालोंको खोलकर नग्न होके आचमन विना किये दो मुट्ठियों में जितने चावल आसकैं उतने चांवल लेकर मन्त्रको जपते हुए तुम चौराहेपर जाना वहां दोनों मुट्ठी चांवल रखकर मौन होकर चलेआना और पीछे फिरकर न देखना जबतक पिशाच प्रकट होकर यह न कहे कि मैं तुम्हारे व्रणोंको खोदूंगा तबतक प्रतिदिन इसी रीतिको करे चले जाना इसप्रकार से पिशाच सिद्ध होकर तुम्हारे रोग को दूर करदेगा अपने मित्रके यह वचन सुनकर उस ब्राह्मणने उसी रीति पर किया तब पिशाच ने सिद्ध होकर हिमालय से औषधी लाकर उसका नासूर खोदिया नासूरके अच्छे होजानें से प्रसन्न हुए उस ब्राह्मण से वह पिशाच बोला कि हे ब्राह्मण ! मुझे कोई दूसरा घाव और बताओ जिसको मै पूरा करूं नहीं तो मैं तुम्हारे लिये कोई अनर्थ करदूंगा या तुम्हारे शरीरकोही नष्ट करदूंगा यह सुनकर ब्राह्मण भयभीत होके अपने को बचाने के लिये बोला कि सात दिनके उपरान्त मैं तुमको दूसरा घाव बतलाऊंगा तब पिशाच चलागया और वह ब्राह्मण अपने जीवनसे निराश होगया इतनी कथा कहकर कलिंगसेना असभ्य वचनों के कहनेकी लज्जासे निवृत्त होकर सोमप्रभा के कहने से फिर बोली कि इसके उपरान्त उस ब्राह्मण की एक चतुर विधवा पुत्री अपने पिताको खिन्न देखकर बोली कि आप क्यों उदासीन हो तब उसनें उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया तब कन्याने व्रणके न मिलने से अपने पिताको खिन्न जानकर कहा कि मैं उस पिशाचको छललूंगी तुम

इससे यह हमारा पूज्यहै और बहुतसे वस्त्र तथा सुवर्ण के आभूषण उसे दिये कीर्त्तिसेना उन सम्पूर्ण पदार्थोंको राजाके हाथमें सौंपकर और मैं यहां कुछदिन रहूंगा यह कहकर अपने पतिकी बाटदेखती हुई वहीं रहनेलगी इसके उपरान्त सम्पूर्ण लोगों से आदर कीगई उस कीर्तिसेनाने पुरुषवेषसे वहां कुछदिन रहकर अपने पति देवसेनको वलभी से वहां आयाहुआ सुना और जिस वैश्यपथिकसमाजमें उसका पतिथा उसे उसनगरी में आयाहुआ जानके नवीन मेघको मयूरीके समान उसनें अपने पतिको वैश्यसमूह में जाकर देखा बहुत काल उत्कंठा से व्याकुल चित्तसे आनन्द के आंसुओं का अर्घदेतीहुई कीर्तिसेनापति के पैरोंपर गिरपड़ी वह भी दिनमें सूर्य्यकी किरणों से अलक्षित चन्द्रमाकी मूर्ति के समान पुरुषवेष में छिपीहुई अपनी प्रियाको पहिचानगया और उसके मुखरूपी चन्द्रमा को देखकर चन्द्रकान्त उसे देवसेन का हृदय जो नहीं गलितहुआ यह बड़ा आश्चर्य्य है तदनन्तर कीर्त्तिसेना को अपने स्वरूप के प्रकट करने पर देवसेन को बड़ा आश्चर्यहुआ कि यह क्या बात है तब उसने अपनी सासके दुराचार से हुए अपने सम्पूर्ण वृत्तान्त का वर्णनकिया यह सब वृत्तान्त सुनकर उसका पति देवसेन अपनी माता से विमुखहोगया और उसे क्रोध क्षमा आश्चर्य तथा हर्ष एक साथही हुए कीर्तिसेना के इस अद्भुत चरित्र को सुनकर सम्पूर्ण लोग आनन्द पूर्व्वक कहते थे कि पति की भक्तिरूपी रथपर चढ़कर शीलरूपी कवच को धारण कर और धर्म्मरूपी सारथी को साथ ले साध्वी पतिव्रता स्त्री बुद्धिरूपी शस्त्रसे विजयको प्राप्त होती हैं राजानेभी कहा कि पति के निमित्त इतना क्लेश सहकर इसने श्री रामचन्द्र के निमित्त क्लेश

उससे जाकर कहो कि मेरी पुत्रीके नासूरहै उसे पूरा करो पुत्री के वचन सुनकर ब्राह्मण प्रसन्न होकर पिशाच के पासगया और उस को अपनी पुत्रीके पास लेगया तब लड़की ने पिशाचको एकान्त में अपनी योनि दिखाकर कहा कि इस मेरे घावको तुम पूरा करो उसके वचन सुनकर वह मूर्ख पिशाच अनेक प्रकारके लेप और बत्ती आदि उसकी योनि में लगाने लगा परन्तु उसे पूर्ण न कर सका कुछ दिनों के पीछे खिन्न होकर पिशाच उस ब्राह्मणकी पुत्री की जङ्घा अपने कन्धों पर रखकर उसकी योनि को देखने लगा कि यह व्रण क्यों नहीं पूर्ण होताहै उससमय कुछ नीचे दृष्टि प- ड़नेसे उसे गुदाका छिद्र दिखाई दिया उसे देखकर वह घबरा कर शोचने लगा कि एक व्रण को तो पूराही नहीं करचुकाहूं दूसरा और उत्पन्न होगया यह कहावत ठीकहै कि छिद्रों में अनर्थ बहुत होते हैं जिससे सम्पूर्ण उत्पन्न होते है और जिसके द्वारा नाशको प्राप्त होते हैं उस खुले हुये संसार के मार्गको कौन ढकसक्ताहै यह शोचकर उसे यह भयहुआ कि घाव तो नहीं अच्छा हुआ अब मुझको यही बन्धन मे पड़ना होगा इस भयसे वह मूर्ख पिशाच वहांसे भागगया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकचत्वारिंश प्रदीप ॥ ४१ ॥

अथ-दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विचत्वारिंश-प्रदीपः ४२॥

श्रेष्ठाशीलवतीनारी मुच्यतेमहतोभयात् ॥
महत्सौख्यमवाप्नोति वैश्यपत्नीयथाऽभवत्४२॥

(अर्थ) श्रेष्ठ स्वभाववती स्त्री सब भयों से छूटती फिर भारी सुखभी पातीहै जैसे वैश्यकी स्त्री निज साससे दुःखीहो निकलगई तो तिसने फिर राजासे सन्मानपाया और निज पतिसेमिली ४२॥

सहनेवाली सीता देवीको भी जीतलिया इससे प्राणोंकी रक्षा करनेवाली यह मेरी धर्मकी बहनहै इसप्रकार प्रशंसा करतेहुए राजा से कीर्तिसेना बोली कि हे महाराज! जो आपके दियेहुए ग्रामहाथी घोड़े तथा रत्नादिक पदार्थ मैंने आपको सौंप दियेथे वह मेरे पति को देदीजिये उसके यह वचन सुनकर राजाने ग्रामादिक सम्पूर्ण पदार्थ देवसेन को देदिये और प्रसन्न होके उसको पक्का लेख लिख दिया इस प्रकार राजाके दिये हुए और वाणिज्य में उत्पन्न किये हुए धनसे देवसेन बड़ा ऐश्वर्यवान् होकर अपनी माताको त्याग करके कीर्त्तिसेनाकी प्रशंसा करता हुआ उसी वसुदत्तपुर में रहने लगा और कीर्त्तिसेनाभी अपने चरित्रके प्रभावसे बड़े यशको पाकर और उस पापिनी सासुको छोड़कर सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य को सुख पूर्व्वक भोगती हुई अपने पतिके पास मूर्त्तिमती पुण्यों के फल की समृद्धि के समान रहने लगी इसप्रकार दुर्दैव के योगसे दुःख को सहकर विपत्ति में भी अपने चरित्रकी रक्षा करती हुई साध्वी स्त्रियां अपने बड़े सत्त्वके प्रभावसे अपनी रक्षा करके अपना और पतिकाभी कल्याण करती हैं हे सखी! बहुओंको प्रायः सासु और नन्दों के द्वारा इसीप्रकारके दुःख भोगने पड़ते हैं इससे मैं तुम्हारे लिये ऐसी सुसराल चाहती हूं जहां दुष्ट सासु और नन्द न होय सोमप्रभा से इस अद्भुत आनन्ददायिनी कथाको सुनकर कलिंगसेना अत्यन्त प्रसन्न हुई और मानों इसी विचित्र कथाको समाप्त जानकर सूर्य भगवान् के अस्ताचल पर जाने के समय सोमप्रभा कलिंगसेनासे मिलकर अपने स्थानको चलीगई॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांचतुर्थभागेद्विचत्वारिंशःप्रदीपः ४२॥

पाटलिपुत्र नाम पुर में धनपालित नाम एक बड़ा धनी ब-
नियां रहता था उसके कीर्त्तिसेना नाम अत्यन्त रूपवती प्राणों से
भी अधिक प्यारी कन्याथी उसने उस कन्याका विवाह मगधदेश
निवासी देवसेन नाम महाधनवान् बनिये के साथ किया उस
सज्जन देवसेन के यहां उसकी दुष्टमाता गृहकी स्वामिनी थी
क्योंकि उसका पिता मरगया था वह अपनी बधू कीर्त्तिसेना को
अपने पुत्रको प्यारी देखकर क्रोधसे अत्यन्त जाज्वल्य होती थी
और पुत्र के परोक्ष में उसे बहुत त्रासदिया करतीथी परन्तु कीर्त्ति-
सेना अपने पति से कुछभी नहीं कहतीथी ठीकहै कुटिलसासों के
आधीन होकर सज्जन बधुओं का रहना बड़ा कष्टदायक है एक
समय देवसेन बाणिज्य के लिये बन्धुओं के कहने से बलभी पुरी
के जानेको उद्युक्तहुआ तब कीर्त्तिसेना उससे बोली कि हे आर्य्य-
पुत्र! अबतक मैंने तुमसे कुछ नहीं कहाथा परन्तु अब कहना पड़ता
है तुम्हारी यह माता मुझे तुम्हारे होनेपर भी अत्यन्त त्रास देती
है और तुम्हारे चले जाने पर न जानिये क्या करेगी सो मैं नहीं
जानतीहूं यह सुनकर उसके स्नेह से घबराकर देवसेन डरताहुआ
अपनी माता से प्रणाम करके बोला कि हे अम्ब! मैं इस कीर्त्ति-
सेनाको तुम्हे सौंपे जाताहूं इससे कठोरता नहीं करनी उचित है
क्योंकि यह सत्कुल में उत्पन्न हुई इससे इसका सरल स्वभाव है
यह सुनकर उसकी माता कीर्त्तिसेना को बुलाकर त्यौरी बदलकर
देवसेन से बोली कि इससे पूछो तो मैंने क्या कियाहै यह घर में
भेदडालने के लिये तुमको बहकातीहै हे पुत्र! मुझे तो तुमदोनों
समानही हो यह सुनकर देवसेन का चित्त सावधान होगया ठीक
है अपनी माता के कपट भरे प्रेमके वचनों में कौन नहीं फँसता

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेत्रिचत्वारिंशःप्रदीपः ४३ ॥

योग्यएवलभेन्नारीं काकतालीयवद्यथा ॥
राजपुत्रोथचागत्य प्राप्तवान्स्त्रियमीप्सिताम् ४३॥

(अर्थ) योग्य पुरुषही श्रेष्ठ स्त्रीको पाता है जैसे काकतालीय न्यायके समान किसी एक राजपुत्रने आकर उस अभीष्ट स्त्री को प्राप्तकरी ४३ ॥

उज्जयिनीपुरी में विक्रमसेन नाम एक राजा पूर्व्व समयमें था उस राजाके तेजस्वती नाम अत्यन्त सुन्दरी कन्याथी उस कन्याको प्रायःकोई भी राजा अपने विवाहके योग्य नहीं मालूम होता था एकसमय उसने अपने महलपरसे किसी पुरुषको देखा उसे अपने समान सुन्दर जानकर उसकेपास संदेशा लेकर अपनी सखीभेजी सखीने जाकर उससे राजपुत्रीका संदेशा कहा परन्तु उसने साहस से डरकर अंगीकार नहीं किया फिर सखीने वहुत प्रार्थना करके उससे यह संकेत किया कि यह जो निर्ज्जन देवमन्दिर तुम देखते हो इसमें रात्रिमे तुम आकर उस राजपुत्री की प्रतीक्षा करना यह कहकर सखीने वहांसे आकर तेजस्वतीसे उसका सब वृत्तान्त कह दिया तव तेजस्वती तो सूर्य्य के अस्त होनेकी प्रतीक्षा करनेलगी और वह पुरुष स्वीकार करके भी भयसे और कहीं चलागया ठीक है मेंढक रक्तकमलिनी के किंजल्क के स्वादको नहीं जानता इस वीचमें कोई कुलीन राजपुत्र अपने पिताके मरजानेपर उसके मित्र इस राजाविक्रमसेनसे मिलनेको उज्जयिनी में आया गोत्रीभाइयों ने उसका राज्य हरलियाथा इससे वह अकेलाही सोमदत्त नाम सुन्दर राजपुत्र सायंकाल के समय उसपुरी में पहुंचकर भाग्यवश

है कीर्त्तिसेना भी उसके भयसे चकितहोकर चुपखड़ीरही उसके दूसरे दिन देवसेन तो वलभीपुरी को चलागया और पति के क्लेश से व्याकुल उस कीर्त्तिसेनाके पास जो दासी नौकर थीं वह सब उसकी सासने धीरे२ छुड़ादीं और एकदिनउसने अपनीदासी से सलाह करके कलिंगसेना को भीतर बुलाकर नंगी करकेलातों से दांतों से और नखों से बड़ी ताड़ना करी और कहा कि हे दुष्टे! तू मेरे पुत्रको भड़काती है फिर एक तहखाने में से सब असबाव निकलवाकर उसखाली तहखाने में उसे बन्दकरके जंजीरलगादी और प्रतिदिन सायंकाल के समय वह पापिनी उसको आधा सकोराभर भातदेनेलगी तदनन्तर उसने शोचा कि इससमय इसका पति तो बहुतदूर है जो यह इसी में पड़े २ मरजाय तो इस को फिंकवाकर लोगों से कहदूंगी कि वह निकलगई इसप्रकार पापिनी साससे तहखाने में डालीगई सुखके योग्य कीर्त्तिसेना रोदनकरके शोचनेलगी कि धनवान्पति सत्कुल में जन्म सौभाग्य और अच्छे आचरण इनसब सुलक्षणों के होनेपर भी सास की कृपा से मुझे यह विपत्ति भोगनी पड़ी है इसी से बांधवलोग कन्या के जन्म की निन्दा करते हैं सास और नन्दों के आधीन होकर कन्याओं को अनेकप्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं इस प्रकार शोचतीहुई कीर्त्तिसेना को अकस्मात् उसी तहखाने में एक कुदाली मिलगई वह कुदाली क्या थी मानों ब्रह्माने उसके चित्त से दुःखरूपी शल्य निकालकर बाहर डालदिया था, उसी कुदाली से उसने सुरंगखोदी वह सुरंग भाग्यवश से उसी के निवास स्थान में जा निकली वहां उसके पूर्वजन्म के पुण्य के समान दीपक का प्रकाश होरहाथा उससमय थोड़ी सी रात्रिबाकीरही थी इस

से जिस देवमन्दिर में तेजस्वती की सखी उस पुरुषको बुलाआई थी उसीमें रात्रि व्यतीत करनेको रहा रात्रि के समय राजपुत्री तेजस्वतीने अनुरागसे विना पहिचाने उसी राजपुत्रको अपना पति बनालिया वह बुद्धिमान् राजपुत्र भी भाग्यवश से मिलीहुई होने वाली राजलक्ष्मी की सूचित करनेवाली उस राजपुत्री के साथ चुपचाप आनन्द को प्राप्त होगया क्षणभरके उपरान्त राजपुत्री ने उसे अपन्य संकेतित वह पुरुष न जानकर और उसकी भव्य आकृती देखकर अपने चित्तमें कहा कि ब्रह्माने मुझे ठगा नहीं है यह उससे भी सुन्दर है तदनन्तर उससे वार्तालाप करके और सलाह करके राजपुत्री अपने मन्दिर में चलीआई और वह उसी मन्दिर में रहा प्रातःकाल राजद्वार मे जाकर और प्रतीहार के द्वारा अपना नाम राजा को निवेदन करके राजा की आज्ञा पाकर भीतरगया वहां उसने राजा से अपना अभिप्राय कहा फिर रानी ने भी सखियों के मुखसे कन्याका वृत्तान्त सुनकर राजा से कहा उस वृत्तान्त को सुनकर अनिष्ट का न सिद्धहोना और इष्ट का सिद्ध होजाना इस काकतालीय न्यायसे विस्मित राजासे उस समय एक मंत्री बोला कि जैसे स्वामियों के सोजाने पर अच्छे भृत्य जागा करते हैं उसीप्रकार भव्य पुरुषों के कार्य्यों में उनको भाग्यही सहायक होताहै इसी विषय में आपको मैं एक कथासुनाताहूं किसी ग्राम में हरिशर्मा नाम एक मूर्ख दरिद्री ब्राह्मण था वह दीन ब्राह्मण जीविका के न होने से बहुत दुःखी रहताथा और पूर्वजन्म के पापों के भोगने के लिये उसके बहुत से पुत्रभी हुएथे इससे वह कुटुम्ब सहित भिक्षा मांगताहुआ किसीनगर में पहुँचा वहां स्थूलदत्त नाम किसी बड़े धनवान् गृहस्थ के यहां उसने

से कीर्त्तिसेना थोड़ेसे वस्त्र और सुवर्ण वहांसे लेकर छिपकर नगर के बाहरचलीगई वहां जाके उसनें शोचा कि इसप्रकार से मुझे अपने पिताके यहां जाना तो उचित नहीं है क्योंकि वहां जाकर मैं क्याकरूंगी और लोग मुझपर कैसे विश्वासकरैंगे इससेअपनी युक्तिपूर्वक मुझको अपने पतिकेही पास जाना उचित है क्योंकि साध्वीस्त्रियोंको इसलोक और परलोक में पतिके सिवाय और कोई गति नहीं यह शोचकर उसने तड़ाग में स्नान करके अपना भेष राजपुत्र का बनाया और बाजार में जाकर कुछ सुवर्ण बेचके उस दिन किसी वनियेके यहां निवास किया दूसरेदिन वलभीपुरी को जानेकी इच्छाकरतेहुए ससुदसेन वनियेके साथ परिचयकरके उसी के साथ राजपुत्रका भेष वनाकर वलभीपुरीको चली और उस वैश्य से उसनें कहा कि मुझे गोत्री भाइयोंने यहां क्लेश दियाहै इससे मैं तुम्हारे साथ वलभीपुरी में अपने सुजनसे मिलनेको चलताहूं यह सुनकर वहवैश्य उसे राजपुत्र जानकर गौरवसे मार्गमें उसकी बड़ी सेवा करनेलगा कुछ दूरचलकर वह वनिया अपने साथियों समेत साधारण मार्गको छोड़कर वनके मार्गको ओरचला क्योंकि साधारण मार्ग से वहुतसा कर पड़ताथा कुछ दिनोंके उपरान्त वनके द्वारपर पहुंचकर जब सम्पूर्ण लोग वहां सायंकालके समय टिके उस समय यमराजकी दूती के समान शृगाली ने भयंकर शब्द किया उस शब्दको सुनकर उसके जाननेवाले वैश्यलोग अपने २ शस्त्रों को लेकर सब ओर से अपने सम्पूर्ण पदार्थों को घेरकर सावधान होकर बैठे उससमय चोरों की आगे चलनेवाली सेनाके समान सब ओरसे अन्धकारके आजानेपर पुरुषवेषधारी कीर्त्तिसेना शोचनेलगी कि पापियों का कर्मवंश के समान बढ़ताही जाता है

चौकरी करली तब अपने पुत्रों को उसके पशुओं की रक्षा के लिये नियुक्त करदिया और आप अपनी स्त्री समेत उसकी सेवकाई करने लगा एकसमय स्थूलदत्तके यहां कन्या के विवाहका उत्सवहुआ उस उत्सव में बहुतसे बराती तथा कुटुम्बियों के आने से स्थूलदत्त का घर भरगया उससमय हरिशर्म्मा ने अपने कुटुम्ब समेत यह आशा लगाई कि घी तथा मांस आदिक उत्तम भोजन हमें गले तक खानेको मिलेगा और इसी से वह भोजनके समयकी आशा देखतारहा परन्तु उससमय उसको किसीने भी स्मरण नहीं किया तब भोजन को न पाकर महादुःखी होकर वह अपनी स्त्री से बोला कि दरिद्रता और मूर्खता से मेरा यहां ऐसा अनादर है इससे मैं युक्तिपूर्वक कोई बनावटका ज्ञान प्रकट करूंगा जिससे यह स्थूलदत्त मेरा सत्कार किया करेगा तुम अवसर पाकर इससे कहदेना कि मेरापति बड़ा ज्ञानी है यह कहकर और विचार करके जब सम्पूर्ण लोग सोगये तब उसने स्थूलदत्त के घरसे दामादका घोड़ा खोलकर बहुत दूर जाकर कहीं छिपादिया प्रातःकाल बरातियों ने जब इधर उधर ढूंढा परंतु घोड़ा नहीं मिला तब स्थूलदत्त के चित्त में बड़ा सन्देह हुआ कि यह बड़ा अशकुनहै उससमय हरिशर्म्मा की स्त्री ने आकर स्थूलदत्तसे कहा कि मेरापति बड़ाज्ञानी है और ज्योतिष आदिक विद्या अच्छेप्रकार जानता है आप उससे क्यों नहीं पूछते उसके पूछने से आपका घोड़ा मिलजायगा यह सुन-कर स्थूलदत्तने हरिशर्म्मा को बुलवाया तब वह कल तुमके भूलगये आज घोड़ा खोने [illegible] है ऐसा कहता हुआ उसके पास आया तब [illegible] उस [illegible] मैं भूलगया मेरे अप-राधको क्षमाकरो [illegible] हाहै उसके वचन

देखो मेरी सासके कर्मोका फल मुझे यहां भी मिला पहले मृत्युके समान सासके कोपने मुझे भक्षण किया तब मैं द्वितीय गर्भवास के समान तहखाने में डालीगई भाग्यवश से उससे भी निकलकर मानों दूसरीबार जन्म लेकर धीरे २ यहां आई अब यहां आकर भी मुझे प्राणोंका सन्देह होरहा है जो चोर मुझे यहां मारडालेंगे तो वह वैरिणी सास मेरे पतिसे कहैगी कि वह किसीकेसाथ भागगई और जो वस्त्रों के खुलजानेसे मुझे कोई पुरुष स्त्री जानजायगा तो मुझे मृत्यु अच्छी है परन्तु अपने आचार का भ्रष्ट करना उचित नहीं है इससे मुझे अपनी रक्षा करनी चाहिये इसमित्र वनिये की अपेक्षा नहीं करनी चाहिये क्योंकि मित्रादिको छोड़कर स्त्रियोंको अपने सतीधर्म्म की रक्षा करनी योग्य है यह निश्चय करके उसने ढूंढकर वृक्षोंके बीचमे एक घरके समान बनाहुआ गढादेखा मानों पृथ्वी ने रहने के लिये उसे स्थान दियाथा उसनें उसके भीतर जाकर और तृण तथा पत्ते आदिको से अपने शरीरको ढककर पति के मिलने की आशासे चित्तको सावधान करके वहीं स्थितिकरी इसके उपरान्त अर्द्धरात्रि के समय शस्त्र धारण कियेहुये बहुत से चोरो की सेनाने आकर सम्पूर्ण साथियों समेत समुद्रदत्त को घेर लिया उस समय चोररूपी मेघ गर्जनेलगे शस्त्रों की ज्वालारूपी बिजली चमकनेलगी और रुधिररूपी जल बरसनेलगा इसप्रकार उस युद्धरूपी वर्षामें साथियो समेत समुद्रसेनको मारकर वह बलवान चोर सम्पूर्ण धनको लेकर चलेगये उससमय चोरोंके कोलाहलको सुनकर भी जो कीर्त्तिसेनाके प्राण नहीं निकले इसमे केवल भाग्यही कारणहै तदनन्तर रात्रिके व्यतीत होजानेपर वह कीर्त्ति सेना उसीगढ़ेसे बाहर निकली निस्सन्देह अपने व्रतको नहीं भंग

सुनकर हरिशर्मा बहुतसी झूंठमूठ की रेखा खेंचकर बोला कि यहां से दक्षिण की ओर कुछ दूरपर चोरों ने तुम्हारा घोड़ा लेजाकर बांधाहै वहां से जाकर शीघ्र लेआओ नहीं तो वह वहां से भी लेजायँगे यह सुनकर बहुत से लोग दौड़कर गये और हरिशर्मा की प्रशंसा करते हुए वहां से घोड़ा लेआये उस समय सब लोगों ने हरिशर्मा की बड़ी प्रशंसाकी और वह सुखपूर्वक स्थूलदत्तके यहां रहने लगा इसके उपरान्त कुछ दिनों के व्यतीत होजानें पर उस नगरके राजाके यहांसे बहुतसे रत्न तथा सुवर्ण कोई हरलेगया जब बहुत खोज करने पर भी राजा को उसका पता नहीं मिला तब राजाने हरिशर्मा की बहुत सी प्रशंसा सुनकर इसे बुलवाया वहां जाकर हरिशर्मा ने कुछ समय टालने के लिये कहा कि मैं प्रातःकाल बताऊंगा और वहीं राजा के यहां रात्रि को निवास किया राजाके यहां जिह्वानाम एक चेरी थी उसी ने अपने भाई से मिलकर वह धन चुराया था वह जिस स्थानमें हरिशर्मा सोरहाथा उसके द्वारपर कान लगाकर खड़ीहुई कि देखूं यह ज्ञानी क्याकर रहाहै उससमय हरिशर्मा ने एकान्त जानकर अपनी मिथ्यावादिनी जिह्वाकी इसप्रकार निन्दाकी कि हे जिह्वे! तूने भोगमें लम्पटहोकर यह क्या दुराचारकिया अब तुझे यहां मृत्युका क्लेश भोगनाहोगा यह सुनकर जिह्वा ने जाना कि यह ज्ञानी मुझे जानगया और भय से व्याकुल होकर किसी युक्ति से भीतर जाके उसके पैरों पर गिरकर कहा कि हे महाराज! धनकी चुरानेवाली जिह्वा मैही हूं आपने ज्ञान से मुझे जानलिया अब आप मेरी रक्षा कीजिये यह थोड़ासा सुवर्ण उसमें का मेरे पास है सो आप लेलीजिये और शेष सम्पूर्ण धन मैंने उपवन में अनार के वृक्षके नीचे गाड़दिया

करनेवाली पतिव्रता स्त्रियों को आपत्ति में देवता लोग आपही आकर बचाते हैं क्योंकि उस निर्जन वनमें सिंहने उसे देखकर भी छोड़दिया और किसी ओर से किसी तपस्वी ने आकर सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछकर अपने कमण्डलु से जल पिलाकर उसे सावधान किया और मार्ग भी बताया फिर तपस्वी के अन्तर्द्धान होजानेपर मानों अमृत से तृप्तहुई क्षुधा और तृषा से रहित वह कीर्त्तिसेना तपस्वी के बतायेहुए मार्ग से चली कुछ दूर चलकर श्री सूर्य भगवान् को अस्तहोते जानकर और किरणरूपी हाथोंको फैलाकर पक्षियों के शब्दोंसे मानों एक रात्रि यहां ठहरजाओ ऐसा कहनेपर कीर्त्ति-सेना किसी बड़े वृक्षकी जड़के गृहके समान खोलमें चलीगई और उसका द्वार किसी दूसरे काष्ठसे बन्दकरलिया सायंकाल के समय उसने छिद्रोंमें से देखा कि एक बड़ी भयंकर राक्षसी अपने बालकों कोलिये चलीआती है उसे देखकर इसको यह भयहुआ कि अन्य विपत्तियों से तो मैं बचगईहूं परन्तु यह राक्षसी आज मुझे खाडा-लेगी उस राक्षसीको तो यह वृत्तान्त विदितही न था इसहेतुसे वह अपने बालकों समेत वृक्षपर चढ़गई उस समय उसके बालको ने अपनी माता राक्षसी से क[illegible] ।त ! कुछ भोजनदो तब वह

है यह सुनकर हरिशर्मा बोला कि मैं भूत भविष्य वर्त्तमान इन तीनों कालों की बात जानता हूं तू मेरी शरण में आई है इससे मैं तेरा नाम नहीं बताऊंगा और यह जो सुवर्ण तेरे पास है सो मुझे फिर देना उसके यह वचन सुनकर वह चेरी वहांसे चली गई और हरिशर्मा आश्चर्य्य पूर्वक शोचने लगा कि अनुकूल भाग्य असाध्य कार्य्योंको भी सहजही में सिद्ध करताहै देखो यहां कैसे अनर्थ में फँसकर मैं अपनी जिह्वा की निन्दा कर रहा था उससे जिह्वा नाम चोट्टी मुझे मिलगई यह मेरा प्रयोजन सिद्ध होगया ठीकहै छिपेहुए पातक शङ्कामात्रसेही प्रकट होजाते हैं इसप्रकार विचारकर उसने वह रात्रि प्रसन्नता पूर्वक व्यतीतकी प्रातःकाल झूठमूठलकीरआदि खैंचकर उसने उपवनमें राजाको लेजाकर सब धन खुदवादिया कि इसमेंसे कुछ धन चोर लेकर भागगया है हरिशर्माके इस अपूर्व विज्ञान को देखकर राजा उसको ग्राम देने को उद्यत हुआ तब मन्त्री ने राजासे कानमें कहा कि शास्त्रके विना ऐसा ज्ञान नहीं होसक्ता है और यह मूर्ख है तो निस्सन्देह इसने चोरोंके साथ मिलकर अपनी यह जीविका निकाली है इससे एक वार किसी युक्ति से इसकी परीक्षा फिर करलीजिये तब राजाने एक नवीन घटमें एक मेंढक बन्द करवाके उसके सम्मुख रक्खा और कहा कि हे ब्राह्मण! इस घटमें जो पदार्थ है उसे जानजाओ तो मैं आपकी बड़ी पूजा करूंगा राजाके यह वचन सुनकर और अपने नाशका समय जानकर हरिशर्मा बाल्यावस्थामें पिताके रक्खेहुए मेंढक इस अपने नामको स्मरण करताहुआ भाग्यवशही दुःखसे कहनेलगा कि हे मेंढक तुझ साधूके विनाशके लिये अकस्मात् यह घट उपस्थितहुआ उसके यह वचन सुनकर सब लोग प्रशंसा

करने लगे, कि यह बड़ा ज्ञानी है इसने इस मेंढक को भी जान लिया और राजाने उसको अत्यन्त ज्ञानी जानकर बहुत प्रसन्न होके उसे सुवर्ण, छत्र तथा वाहन सहित बहुतसे ग्राम दिये, इससे हरिशर्मा सामन्तके समान होगया इसप्रकार पुण्यात्मा मनुष्योंके कार्य भाग्यवशसे सिद्ध होजाते हैं॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे त्रिचत्वारिंश० प्रदीप ४३॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे चतुश्चत्वारिंशः प्रदीपः ४४॥

एकोगुणीरक्षतेहि बहूनपिजडान्नरान्॥
विष्णुदत्तोयथासप्त ब्राह्मणान्रक्षतिस्मह ४४॥

(अर्थ) एकभी गुणीजन बहुतसे मूर्खोंको मृत्युसे बचा लेता है जैसे विष्णुदत्तने सातों ब्राह्मणोंको मरने से बचाये ४४॥

पूर्वही अन्तर्वेद में वसुदत्त नाम एक ब्राह्मण रहताथा उसके विष्णुदत्त नाम पुत्रथा विष्णुदत्त १६ वर्ष की अवस्था मे विद्या पढ़ने के लिये वलभीपुरी में जानेको उपस्थित हुआ उसे ब्राह्मणों के सात पुत्र वहां जानेके लिये साथी मिले यह तो कुछ पढ़ा और कुलीनभी था परन्तु वह सातों मूर्ख थे आपसमें एक दूसरेके लिये परित्याग न करने को शपथ खाकर उनके साथ रात्रिके समय अपने माता पितासे छिपकर विष्णुदत्त चला घरसे चलतेही कुछ अशकुन देखकर उसने अपने साथी मित्रों से कहा कि आज अकस्मात् यह अशकुन हुआहै इससे लौट चलना चाहिये फिर कभी जब अच्छा समय होगा, तब चलेंगे यह सुनकर वह सातों मूर्ख बोले, कि व्यर्थ शङ्का मतकरो, हम इससे नहीं डरते जो तुम डरते हो तो लौट जाओ हम तो अभी जाते हैं क्योंकि प्रातः काल हमारे

मिलजायगा नाई के यह वचन सुनकर उसकपटिनी तपस्विनी ने जाकर पटरानी से सब उपाय कहदिया तब उसने उसकी बताई हुई युक्तिकी इससे राजा ने कदलीगर्भा में वह महा अवगुण देखकर उसे त्याग करदिया तब पटरानी ने प्रसन्नहोकर बहुत सा धन उस तपस्विनी को दिया और उसने उसमें से नाई को भी बहुतसा धन देकर प्रसन्नकिया इसके उपरान्त राजासे त्याग कीहुई कदलीगर्भा मिथ्या दोषों से सन्तप्त होकर राजमन्दिर से निकलकर पूर्व में बोईहुई सरसों के वृक्षोंकी पहिचान से जिसमार्ग से आई थी उसी मार्ग के द्वारा अपने पिता मंकणक ऋषिके पास चलीगई वहां मंकणक ने उसे एकाएकी आईहुई देख के सन्देह से क्षणभर ध्यान किया और ध्यानही से सम्पूर्ण वृत्तान्त को जानकर स्नेह से उसका बड़ा आदर किया और समझाकर सावधान किया फिर उसे अपने साथ में लेकर मुनिने आपही राजाके यहां आकर राजासे सब सपत्नियों का कियाहुआ दोष कहदिया उस समय उस नाई ने भी राजाको वह सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाकर कहा कि हे राजा। मैंने इसभयसे कि ऐसा न होय कि पटरानी इसकदलीगर्भाको मारण करवाके मरवाडाले इस लिये युक्तिपूर्वक आपसे वियोग करवादिया उसके यह वचनसुनकर और मुनिके वचनोंका विश्वास करके राजाने कदलीगर्भा को स्वीकार करलिया फिर मुनिको बिदाकरके उसनाईको अपना शुभचिन्तक जानकर बहुत सा पारितोषिक दिया और अपनी पटरानी से विमुखहोकर उसी कदलीगर्भा के साथ सुखपूर्वक रहनेलगा। हे कलिंगरुचा! इस प्रकार के बहुतसे मिथ्या दोष सौतें शुद्धस्त्रियों में लायदेती हैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चचत्वारिंश प्रदीप ४५॥

बान्धव लोग जो जान जायँगे तो हमें नहीं जाने देंगे उनके यह वचनसुनकर विष्णुदत्त शपथके आधीन होकर उन्हींकेसाथ विष्णु भगवान् को स्मरण करके चलदिया चलते २ रात्रिकेव्यतीत हो-जाने पर फिर कुछ अशकुन देखके विष्णुदत्तने उनसे लौटने को कहा तब वह बोले कि और तो कोई अशकुन नहीं है परन्तु बड़ा अशकुन यही है जो कौएके समान पद पद पर शङ्का करने वाले तुम हमारेसाथमें आयेहो उनके यहवचन सुनकर विष्णुदत्त पराधी-नहोकर उनके साथ चुपचाप चला और शोचने लगा अपनीही इच्छा के अनुसार करनेवाले मूर्खों को उपदेश न करना चाहिये क्योंकि मूर्खों का उपदेश उपस्थ इन्द्री के संस्कारके समान केवल तिरस्कारका हेतु होताहै बहुतसे मूर्खों में पड़कर एकविद्वान्भी जल की लहरों में पड़े हुए कमलके समान नष्ट होताहै इससे मुझे इन मूर्खों से हित अनहित कुछभी नहीं कहना उचितहै और चुपचाप चलना चाहिये परमेश्वरकी कृपासे सब कल्याण होगा इसप्रकार शोच करताहुआ विष्णुदत्त उन्हीं मूर्खों के साथ सायङ्कालके समय निषादों के ग्राम में पहुँचा वहां रात्रिके समय उनको ठहरनेकेलिये किसी युवतीस्त्रीका गृहमिला वहां जाकर वहसातोंमूर्ख तो क्षणभर में सोगये परन्तु विष्णुदत्त उस घरमें किसी अन्य पुरुषकेनहोनेसे जागताहीरहा ठीकहै मूर्खलोग निश्चिन्तहोकर सोते हैं परन्तु विवेकी लोगों को निद्रा नहीं आती उससमय एक युवा पुरुष उस घर में आकर उस युवतीस्त्री के पास चला गया और उसके साथ रमण किया फिर कुछकाल वार्तालाप करके दोनों सोगये उन दोनोंका यह वृत्तान्त विष्णुदत्त ने भीतर दीपक प्रकाशित होने के कारण द्वारके छिद्रसे देखा और विचारा कि इस दुश्चारिणी स्त्री के यहां

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षट्चत्वारिंशःप्रदीपः ४६ ॥

अनुकूलोविधिर्मृत्युस्थानेऽपिप्रापयेद्धनम् ।
पूरयन्नपिवल्मीकलब्धवान्द्रविणंद्विजः ४६ ॥

(अर्थ) सीधा विधाता मृत्यु के भी भय स्थानमें द्रव्य प्राप्ति करादेवे—जैसे मूर्ख संतोषी ब्राह्मण भाइयों से सर्प की बाबी को खोदकर भरदेने में नियुक्त किया तो तिसको तहां द्रव्यमिला४६॥

किसी खेतमें एक खेती करनेवाला खेत जोतरहाथा और कुछ गारहाथा उस खेती करनेवाले से उसी मार्गमे आतेहुए किसी संन्यासीने कहीका मार्ग पूछा वह उसके वचनको न सुनकर गाताही रहा तबवह संन्यासी क्रोधकरके उससे कटुवचन कहनेलगा कटुवचनों को सुनकर वह अपना गीत छोड़कर बोला कि तू संन्यासी होकर भी धर्म के अंशको नहीं जानता मैंने तो मूर्ख होकर भी धर्म का सारांश जानलिया यह सुनकर संन्यासी ने कहा कि तुम ने क्या जानलियाहे तब वह बोला कि यहां छाया में बैठजाओ मैं तुमसे कहताहूं सुनो इस प्रान्तमें ब्रह्मदत्त सोमदत्त और विष्णुदत्त यह तीन सगेभाई ब्राह्मण रहते है उनमें से दोका तो विवाह होगया है और छोटे का नही हुआ है वह विष्णुदत्त नाम छोटा भाई अपने बड़े भाइयों की आज्ञाको पालन करताहुआ मेरे साथ सेवकोंके समान क्रोधरहित होकर रहता था उनके घरका स्थितियरहै ब्रह्मदत्त और सोमदत्त दोनों बड़े भाई साधू सन्मार्गी सीधे तथा निरालसी अपने छोटेभाई विष्णुदत्त को मूर्ख समझते थे एक समय विष्णुदत्त की भाभी लोगों ने कामातुर होके उससे रति करने के लिये कहा परन्तु उसने उनको माता के समान

हम कैसे आगये मुझे मालूम होताहै कि यह इसका जार है पति नहीं है नहीं तो इसकी चाल सन्देह पूर्व्वक ऐसी धीरी न होती और मुझे पहलेही यहचपलचित्त मालूम हुईथी परन्तु कोई स्थान रहने को नही मिला तब इसमें लाचार होकर रहना पड़ा अच्छा कोई डर नही है हम कई आदमी हैं परस्पर साक्षी होसक्ते हैं इस प्रकार विचार करते २ उसे बाहर मनुष्यों कासा शब्द सुनाई पड़ा और फिर एक तरुण पुरुष अनुचरों समेत खड्गको लियेहुए वहां आया अनुचर तो अपने २ स्थानपर जा बैठे और उसने विष्णुदत्तसे पूछा कि तुमलोग कौनहो उसने डरकर कहाकि हम पथिक हैं तब भीतर जाकर और अपनी स्त्री को जारके साथ सोती हुई देखके उसने खड्गसे जारका शिर काटलिया और स्त्रीको न मारा न जगाया और दूसरे पलँग पर खड्गको अपने पासही रख कर शयन किया विष्णुदत्त ने यह वृत्तान्त भी द्वारकी सन्धि से देख कर शोचा कि इसने अपनी भार्याको स्त्री जानकर उसे छोड़ जो जारही को मारा यह अच्छाकिया परन्तु ऐसा घोरकर्म्म करके यह निस्सन्देह होकर निर्भय सोरहा है यह बड़े आश्चर्य्य की बात है विष्णुदत्त के इसप्रकार शोचतेही वह दुष्ट स्त्री उठकर अपने जार को मराहुआ और अपने पतिको सोताहुआ देखकर जारके धड़को कन्धेपर रखकर और उसके शिरको हाथमें लेकर बाहर जाकर कहीं राखके ढेरमें धड़समेत शिरको डालकर चुपचाप लौटआई विष्णुदत्त भी उसी के साथ जाके दूरही से सब वृत्तान्त देखकर लौटकर अपने मित्रों के साथ लेटरहा तब उस स्त्री ने लौटकर उसी खड्ग से अपने पतिका शिर काटडाला और बहुत चिल्लाकर महारोदन करके कहा कि हाय २ इन पथिकोंने मेरे पतिको मारडाला उसके

जानकर निषेध करदिया तब उनदोनोंने अपने२ पतिसे कहा कि यह तुम्हारा छोटाभाई एकान्त में हमारा धर्म भ्रष्टकरना चाहता है स्त्रियों के कहने से वह उसपर कुपित होगये ठीकहै दुष्ट स्त्रियों के वचनों से मोहित पुरुषों को अच्छे बुरे और सत्यासत्य का ज्ञान नहीं होता तब उनदोनों भाइयो ने विष्णुदत्तसे कहा कि तुमखेत में जाकर वहां जो सर्पकी बामी है उसे बराबर कर आओ उनकी आज्ञा पाकर वह कुदाली लेके यहां आकर बामीको खोदने लगा उसे खोदते देखकर मैंने निषेधकिया कि अरे इसमें काला सर्प है इसको मत खोदो मेरे वचनों को सुनकर भी जो होना होगा सो होगा ऐसा कहकर वह अपने पापी बड़े भाई की आज्ञाको उल्लंघन न करके उसे खोदताही रहा खोदते २ एक सुवर्ण से भराहुआ कलश उसमें उसको मिला और सर्प नहीं दिखाईदिया ठीक है धर्म सर्वत्र सज्जन लोगों की सदैव सहायता करताहै तब उसने मेरे निषेध करने पर भी वह धन अपने सबभाइयों को लाकर दे दिया उन दोनो ने उसी धनमें से कुछ धन घातकों को देकर सब धनलेनेकी इच्छासे उसके हाथ पैर कटवाडाले इतनेपर भी उसने अपने भाइयों पर क्रोध नहीं किया इसी धर्म के प्रभावसे उसकेहाथ पैर फिर यथावस्थित होगये इसी वृत्तान्तको देखकर मैंने सम्पूर्ण क्रोध उसी दिनसे त्याग करदिया और तुमने तपस्वी होकरभी अब तक क्रोध नहीं छोड़ा इसी समय देखलो कि मैंने क्रोधके जीतने से स्वर्ग को जीत लिया यह कहकर वह खेती करनेवाला शरीर को त्यागकर स्वर्गको चलागया ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे पञ्चत्वारिंश प्रदीपः ४६ ॥

वचन सुनकर सम्पूर्ण सेवकलोग दौड़े और अपने स्वामीको मरा देखकर शस्त्रलेके उन सातों आठों निरपराध ब्राह्मणों को मारने लगे जब उनपर मार पड़नेलगी तब वह सब घबराकर उठबैठे और उनमेंसे विष्णुदत्त जल्दीसे बोला हे सेवकलोगो! ब्रह्महत्या न करो हमलोगों का कोई अपराध नही है इसी दुश्चारिणीका यह दुष्टकर्म है इसप्रकार उनको मारने से निवृत्त करके उसने रात्रिका सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे कहदिया और उन्हें अपने साथ लेजाकर वह धड़ तथा शिर राख में पड़ाहुआ दिखला दिया तब उस स्त्री का मुख म्लान होगया और उस कुचालिनी की निन्दाकरके सबलोग कहनेलगे कि कामके आधीन होकर जो स्त्री निश्शंक हो साहस करती है वह पराये हाथ में गयेहुए खड्ग के समान किसकोनहीं मारती हैं यह कहकर उनलोगो ने विष्णुदत्त आदिक आठों ब्राह्मणोंको छोड़दिया तब वह सातोंब्राह्मण विष्णुदत्तसे कहनेलगे कि आज रात्रि के समय सोतेहुए हमलोगों के निमित्त रक्षा के लिये स्थापन कियेगये रत्नके दीपकके समान तुम होगये तुम्हारी कृपा से हमलोग इस दुश्शकुन के प्रभावसे होनेवाली मृत्युसे बचे इसप्रकार विष्णुकी प्रशंसाकरके और अपने दुष्टवचनों के अपराध को क्षमा कराके उसी के साथ अपने कार्य्यों को चले ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुश्चत्वारिंशःप्रदीपः ४४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चचत्वारिंशःप्रदीपः ४५ ॥

सपत्नीशंकनीयाहि यत्नतोमानवैर्यथा ।
वियुक्ताकदलीगर्भा सपत्नीसङ्गतोयतः ४५ ॥

(अर्थ) मनुष्योंको सपत्नीका भय मानना चाहिये जैसे—सपत्नी

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे सप्तचत्वारिंशःप्रदीपः ४७॥

शत्रुमध्येनिवासोहि दन्तेष्विवरसज्ञया।
जायतेबुद्धियुक्तानां निकृष्टप्राणिनामपि ४७॥

(अर्थ) शत्रुओं के बीचमें रहना ऐसा जैसे दांतों में जिह्वा है सो वह बुद्धिवाले तुच्छप्राणियों का अर्थात् मूषक आदिकों को भी भया ४७॥

विदिशा नाम नगरीके बाहर एक बड़ा वरगदका वृक्ष था उस में नौला उल्लू विलाव और मूसा यह चारों प्राणी अलग २स्थानों में रहते थे जड़में मूसा और नौला अलग २ विलमें रहते थे विलाव वृक्षके मध्यमें किसी बड़े भारी खोह में रहताथा और उल्लू वृक्षकी चोटी जहां कोई पहुँच नही सकता था उसपर रहता था इनमें से विलाव नौला तथा उल्लू इन तीनों का मूसा भोजन था और विलाव के मूसा नौला तथा उल्लू यह तीनों भोजन थे बिल्ली के भयसे मूसा तथा नौला अपने आहार तथा भोजनके लिये रात्रिमें बाहर निकलते थे और उल्लू स्वभावही से रात्रिको अपने भोजन को निकलता था और विलाव रात्रि दिन निर्भय होकर जब चाहताथा तब निकलताथा उस वृक्षके निकट एक जौका खेतथा उस में जब बिल्ली उल्लू तथा नौला अपने आहारके लिये जातेथे तब वह यहभी चाहा करते थे कि मूसा मिलजाय तो हम उसेभी मार कर खाजायँ एक समय कोई बहेलिया वहां आया उसने बिल्ली के पंजे खेतकी तरफ़ गयेहुए देखकर उसके मारने के लिये खेत के चारों ओर जाल बिछा दिया जब रात्रिके समय विलाव मूसे के मारने की इच्छा से खेतमें गया तो वहां जाल में फँसगया फिर

पटरानी ने कदलीगर्भा मुनिपुत्री का तिसके पति से वियोग करा दिया ४५॥

विश्वामित्रकी बनाईहुई इक्षुमती नाम एकनदी है उसीके तट पर उसीनामकी एकपुरी भी है उसी पुरी के समीप एक बड़ा वन है है उसमें मंकणकनाम मुनि का आश्रमहै वह मुनि अपने आश्रम में ऊपरको पैर कियेहुए तप कररहे थे एकसमय मुनि ने तपकरते२ आकाशमार्ग मे मेनकानाम अप्सरा देखी और वायुके द्वारा वस्त्रों के चलायमान होने से उसके अंगभी साफ २ उन्हें दिखाई दिये उसे देखकर मुनिका चित्त कामसे चलायमान हुआ और एक नवीन केले के पत्ते पर उनका वीर्य्य निकलपड़ा वीर्य्यपात होतेही एक बड़ी सुन्दरकन्या उसीसमय उत्पन्न होगई ठीकहै महर्षिलोगों का अमोघवीर्य्य तत्क्षणही फलदाई होताहै वह कन्या केले में उत्पन्नहुई थी इसहेतु से मुनि ने उसकानाम कदलीगर्भा रक्खा जैसे रम्भाके देखने से गौतमकावीर्य च्युतहोके द्रोणाचार्य की स्त्री कृपी का जन्म हुआ था इसीप्रकार उत्पन्न होनेवाली कदलीगर्भा मुनि के आश्रमों में धीरे२ बड़ी हुई एक समय मध्य देशका स्वामी राजा दृढवर्मा शिकार खेलनेको गयाथा उसका घोड़ा किसी कारणसे भागकर उसको मंकणक मुनिके आश्रममें लेगया वहां जाकर राजाने वल्कलोंको धारण करेहुए मुनि कन्याओं के भेष से अत्यन्त शोभित कदलीगर्भाको देखा उसे देखतेही राजाका चित्त उसके वशीभूत होगया और उसे अपनी सम्पूर्ण रानियो का स्मरणभी नहीं रहा तब जैसे राजा दुष्यन्त ने कण्व मुनिकी कन्या शकुन्तला पाईथी उसी प्रकार क्या यह ऋषिकी कन्या मुझे भी मिलैगी इसप्रकार शोचते हुए राजा दृढवर्म्मा ने कुशा तथा स-

अन्नके निमित्त वहां गया हुआ मूसा विलाव को जाल में फँसा देखकर प्रसन्न होकर उछलने कूदनेलगा और बिल्लीसे दूरके मार्ग से खेतके भीतर चलागया उस समय उल्लू तथा नौला यह दोनों भी वहां गये और विलाव को बँधा देखकर मूसे को पकड़ने की इच्छा करने लगे मूसे ने दूरही से उन दोनों को देखकर चित्त में शोचा कि जो नौला तथा उल्लूको भय देनेवाले विलावकी शरण मे जाऊं तो जालमें बँधा हुआभी अपने पंजे के एकही प्रहार से मुझे मार डालेगा और जो उसकेपास न जाऊं तो यह दोनों मुझे मार डालेंगे तो अब इन शत्रुओं के बीच में पड़कर मैं क्या करूं और कहां जाऊं इस समय इस विलावहीकी शरण में मुझे जाना चाहिये क्योंकि यह इससमय आपत्ति मे पड़ाहै अपने बचाने के लिये मुझे जालके काटनेका उपयोगी समझकर अवश्य बचावेगा यह शोचकर मूसा धीरे २ बिलारके पास जाकर बोला कि तुम्हें बन्धनमें पड़े देखकर मुझे बड़ा खेद होताहै इससे मैं तुम्हारे जाल को काटे देताहूं सीधे जीवों को साथ मे रहने से शत्रुओं पर भी स्नेह होजाताहै परन्तु तुम्हारे ऊपर मुझे विश्वास नहीं है क्योंकि मै तुम्हारे चित्तकी बात नही जानता यह सुनकर बिलार बोला कि तुम मेरे ऊपर विश्वास करो आजसे तुम प्राणोंकी रक्षा करने के कारण मेरे मित्र होगये उसके इसप्रकार कहनेपर मूसा उसके पास जाकर बैठगया यह देखकर नौला और उल्लू निराश होके वहां से चलेगये तदनन्तर बिलारने मूसेसे कहा कि हे मित्र रात्रि बहुत थोड़ी रहगई है इससे बहुत शीघ्र मेरे जाल को काटदो तब मूसा धीरे २ पाशों को काटता हुआ बहेलिये के आनेकी बाट देखता हुआ बहुत काल तक झूंठमूठ दांत कटकटाया किया जब रात्रि

मिधोंको लेकर आतेहुए मङ्कणक मुनिको देखा मुनिको देखतेही घोड़ेको छोड़कर राजाने अपना नाम कहकर प्रणाम किया तब मुनिने कदलीगर्भासे कहा कि हे वत्से इस अतिथि राजाके लिये अर्घ लाओ इसप्रकार मुनिकी आज्ञा पाकर कदलीगर्भा ने राजा का अर्घादिक सम्पूर्ण सत्कारकिया तदनन्तर राजाने मुनिसे पूछा कि यह कन्या आप के कैसे हुई तब मुनि ने उसकी उत्पत्ति का वृत्तान्त और नाम सब राजा से कहदिया मुनिके वचन सुनकर राजाने कदलीगर्भा को मेनकाके स्मरण से उत्पन्न होनेके कारण अप्सरा जानकर मुनिसे कहाकि हेमहाराज ! यह कन्या आप मुझे देदीजिये तब मुनिने राजाको सुन्दर योग्य वर जानकर कदली-गर्भाको उसके साथ विवाह करदिया ठीकहै प्राचीन लोगोंकेदिव्य प्रभाव पुण्यकार्य्यों में विचार नहीं करना चाहिये कदलीगर्भा के विवाहको जानकर बहुतसी अप्सराओं ने मेनकाके स्नेह से उस आश्रममें आकर विवाहके योग्य सम्पूर्ण आभूषणादिक उसे पहरा-दिये और थोड़ीसी सरसों उसके हाथ में देकर कहा कि हे पुत्री ! जाते समय इन सरसोंके दानोंको मार्ग में बोती चली जाना क-दाचित् यह तुम्हारा पति राजा तुम्हें तिरस्कार करे तो तुम इन्हीं सरसों के वृक्षोंकी पहिचान से मार्ग्ग जानकर यहां चली आना उन के इस कहने के उपरान्त राजा दृढवर्म्मा कदलीगर्भा को अपने घोड़ेपर सवार करवाके वहांसे चला और मार्ग में छुटी हुई सेना को फिर पाकर उन्हें साथमें लेके राजधानी को आया और कद-लीगर्भा भी मार्ग में सरसों बोती हुई चली आई राजा राजधानी में आकर अपने [illegible] का सब वृत्तान्त कहकर अन्य रानियों से [illegible] आनन्द पूर्व्वक

व्यतीत होगई और बहेलिया आगया तब बिलार की प्रार्थना से मूसे ने सब जालकी फांसी काटदी पाशोंके कट जाने पर बिलार तो बहेलिये के भयसे भागगया और मूसा मृत्युके मुखसे बचकर भागकर अपने बिलमें घुसगया और फिर जब उसे बिलारने बुलाया तो उसने उसपर विश्वास न करके कहा कि कालके संयोग से शत्रुभी मित्र होजाता है परंतु वह सदैव मित्र नहीं बनारहता इसप्रकार मूसेने भी बहुत से शत्रुओंसे अपनी रक्षा की तो मनुष्यों के लिये क्या कहना चाहिये ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तचत्वारिंशः प्रदीपः ४७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे अष्टचत्वारिंशः प्रदीपः ४८ ॥

यथार्थनिर्णयोभूयाद्बुद्धियुक्तकृतोयथा ।
ओषध्युत्पाटनाद्द्रव्यंगृहीतंनिश्चितंखलु ४८ ॥

(अर्थ) बुद्धिमान् स्वामीका किया यथार्थ निर्णय होता है— जैसे बुद्धिमान् राजाने ओषधि उखाड़नेसे ब्राह्मणका द्रव्य निश्चय करके दिवादिया ४८ ॥

श्रावस्ती नाम नगरी में प्रसेनजित नाम एक राजाथा उसके पुर में कोई अपूर्व ब्राह्मण आया वह शूद्रका अन्न नहीं खाताथा इससे किसी वैश्यने उसे किसी ब्राह्मणके घर में टिकादिया और शुष्क अन्न तथा दक्षिणा उसे रोज देनेलगा कुछ दिन में अन्य वैश्यभी उसे पहिचानकर शुष्क अन्न और दक्षिणा देनेलगे इस प्रकार अधिक प्राप्तहोनेसे उसने धीरे २ हजार अशर्फी इकट्ठी कीं और वन में जाकर वह सब असर्फी कहीं पृथ्वी में गाड़दीं वह अकेला प्रतिदिन वन में जाकर उस स्थानको देख आताथा एक दिन उसने उसस्थान को खुदाहुआ देखा और असर्फी वहां न

विहार करने लगा राजाकी यह दशा देखकर उसकी पटरानी ने मन्त्रीको बुलाकर एकान्त में अपने प्राचीन उपकारों को स्मरण कराके कहा कि राजाने नवीन स्त्री में आसक्त होकर मेरा त्यागकर दिया इससे ऐसा उपाय करो जिससे यह मेरी सपत्नी अलग हो जाय यह सुनकर मन्त्री ने कहा हे रानी! हम लोगों का यह काम नहीं है कि अपने स्वामीका स्त्री से वियोग कराना अथवा स्त्री का नाश करना यह काम संन्यासिनी स्त्रियोंका है वह दम्भ करने में बड़ी चतुर होती हैं और बहुत से दम्भी पुरुषों को वह जानती हैं और उन्हीकी संगतिमें रहती हैं मन्त्री के यह वचन सुनकर रानी लज्जित होकर बोली कि अच्छा मैं इस निन्दित कार्य्य को नहीं कराना चाहती उसके ऐसा कहनेपर जब मन्त्री चलागया तब उसने मन्त्री के वचनो को अपने हृदयमें ध्यान करके सखीके द्वारा एक संन्यासिनी बुलवाई और उससे सब अपना वृत्तान्त कहकर कार्य-सिद्ध होजानेपर उसे बहुतसा धनदेने कहा वह दुष्ट तपस्विनी धन के लोभसे बोली कि हे रानी! यह कौन बड़ी बातहै मैं तुम्हारे कार्य को सिद्ध करदूंगी मुझे अनेक प्रकारके बहुतसे प्रयोग मालूमहैं इस प्रकार रानीको समझाकर वह अपनी मठी में आकर भयभीत होकर शोचनेलगी कि अत्यन्त भोग तृष्णा किसे क्लेश नहीं देती हैं देखो मैंने रानी के आगे सहसा प्रतिज्ञा तो करली है परन्तु मुझे इस विषयमें अन्य स्थानोंके समान छलभी न करना चाहिये क्योंकि कपट खुलने पर राजा लोग सर्व नाश करदेते हैं इस विषयमें एक उपायहै कि वह जो मेरा मित्र नाई इस विषयमें प्रवीण है वह चाहै तो उद्योग करसक्ताहै यह शोचकर उसने उस नाईके पास जाके अपना सम्पूर्ण मनोरथ वर्णन किया तब उस

देखों उस गढ़को शून्यदेखकर केवल उसका चित्तही शून्य नहीं होगया किन्तु उसको सब दिशाभी शून्यही दिखाई देनेलगीं फिर रोताहुआ उस ब्राह्मण के यहां आया जिसके यहां टिकाथा उसेरोते देखकर गृहके स्वामी ने पूछा कि तुम क्यो रोतेहो तब उस ने अपना सब वृत्तान्त कहदिया और तीर्थपर जाके अनशन व्रत करके अपने प्राण देने को उद्यतहुआ इस वृत्तान्तको सुनकर वह अन्नदाता बनियांभी अन्य बनियो को साथ लेकर आया और उससे कहनेलगा कि हेब्राह्मण! तुम धनके निमित्त क्यो प्राण देना चाहतेहो धन तो अकाल मेघके समान आया जाया करता है अन्नदाता वैश्यके यह वचन सुनकरभी उसने शरीर त्यागकरने का हठ नहीं छोड़ा ठीक है— लोभी को प्राणों से भी अधिक धन प्यारा होताहै तब मरनेके लिये तीर्थपर जातेहुए उस ब्राह्मणके वृत्तान्तको जानकर राजा प्रसेनाजित ने आपही वहां आकर उससे पूछा कि हे ब्राह्मण! जहां तुमने वहधन गाड़ाथा उस पृथ्वीकी कुछ पहिचान भी मालूम है उसने कहा कि हां महाराज वनमें एक छोटासा वृक्ष है उसकी जड़मे मैंने अपना धन गाड़ाथा यह सुनकर राजाने कहा तुम प्राण मतदो तुम्हारा धन हम ढुँढवादेंगे या अपने खजाने से देंगे इसप्रकार कहकर और ब्राह्मण को मरनेसे निवारण करके राजा अपने मंदिर को चलागया वहां प्रतीहारको बुलाकर यह आज्ञादी कि मेरे शिर में पीड़ा है इससे ढंढोरा पीटकर नगर भरके वैद्योंको बुलाओ इसप्रकार सब वैद्योंको बुलाकर एक २ वैद्य से राजाने पूछा कि तुम्हारे पास कितने कौन रोगी है और तुमने किसको कौनसी दवादी है सम्पूर्ण वैद्यों ने अपने २ रोगी तथा औषधियां बताई उनमें से एकने कहा कि मातृदत्त रोगी बनिये को

ने शोचा कि भाग्यवश से यह लाभका योग उपस्थित हुआ है इससे राजाकी नवीन स्त्री कदलीगर्भाका नाश तो न करना चाहिये क्योंकि उसका पिता दिव्यदृष्टि है वह सम्पूर्ण वृत्तान्त जान जायगा परन्तु राजाका उससे वियोग कराके इस रानीसे खूब धन लेना चाहिये और कुछ काल के उपरान्त फिर राजाके साथ उस नवीन रानी का संयोग कराके राजाके सन्मुख ऐसी बात करनी चाहिये जिससे राजा और रानी कदलीगर्भा दोनों प्रसन्न होयँ ऐसी करने से बहुत पाप तो होगा नही परन्तु जीविका अच्छी होजायगी यह शोचकर यह नाई उससे बोला कि हे अम्ब! मैं यह सब काम करसक्ताहूं परन्तु योगवलसे रानी कदलीगर्भाका मारना योग्य नहीं है क्योंकि जो राजा जानजायगा तो हम सबका नाश करदेगा दूसरे स्त्रीकी हत्याहोगी औरतीसरे उसकेपिता मुनिशापदेंगे इससे मैं अपनी बुद्धिके बलसे उसके साथ राजाका वियोग करवा दूंगा तो पटरानीको सुख होगा और मुझे धन मिलेगा मेरे लिये यह कोई बड़ीबात नहीं है मैं बुद्धिसे कौन कार्य सिद्ध नही करसक्ता हूं सुनो मैं अपनी चतुरता सुनाताहूं इसदृढ़वर्मा राजाका पिता बड़ा दुराचारी था और मैं उसका सेवकथा एकसमय राजाभ्रमण करता हुआ मेरे घरकी ओर आया और मेरी स्वरूपवती स्त्री का मुख देखकर उसका चित्त चलायमानहुआ तब उसने अपने सेवकों से पूंछा कि यह कौनहै सेवकों ने कहा कि यह आपके नापितकी स्त्री है सेवकों के वचन सुनकर यह जानकर कि नापित मेरा क्या करेगा राजा मेरे घरमें जाकर मेरी स्त्री से यथेष्ट भोग करके चलागया मैं उस दिन भाग्यवशसे कहीं बाहरगया था दूसरे दिन घर में आकर मैंने अपनी स्त्री के कुछ नये ही ढंग देखे जब मैंने

पूछा तब उसने अभिमानपूर्वक सब वृत्तान्त कहदिया तब से मुझ अशक्त की स्त्री के साथ राजा नित्य आकर रमण करने लगा ठीक है दुराचार से उन्मत्त राजा को गम्यागम्य का विचार नहीं रहता वायुसे प्रचंड अग्निको जैसे तृण वैसेही वन यह दशा देख कर राजा के निवारण करने का कोई उपाय न जानकर मैंने अपना भोजन घटाकर शरीर को दुर्बल करादिया और दुर्बलता से बहुत श्वासलेताहुआ राजाके यहां हजामत बनाने को गया राजा ने मुझको दुर्बल देखकर गुप्त अभिप्राय से पूछा कि अरे तू ऐसा क्यों होगयाहै तब मैंने कईबार टालकर राजाके बहुत पूछने पर एकान्तमें अभय मांगकर कहा कि हेमहाराज! मेरी स्त्री डाकिनी है वह नित्य मेरी आंतें मेरी गुदासे निकालकर चूसती है और चूस के उसी में फिर रखदेती है इसी से मैं दुर्बल होगयाहूं और मुझे पुष्ट तथा धातुवर्द्धक भोजन भी नहीं मिलते हैं जिनसे कुछ बल बना रहे मेरे यह वचन सुनकर राजा ने सन्देहपूर्वक विचार किया कि क्या सत्यही वह डाकिनी है इसी से मेरा चित्त उसके आधीन होगया जब मैं सोजाताहूं तब मेरी भी आंतें वह चूसती होगी परंतु मैं बलकारी भोजन करताहूं इससे दुर्बल नहीं हुआहूं तो आज मैं युक्तिपूर्वक रात्रि में उसकी परीक्षा करूंगा इस प्रकार शोचकर राजा ने मुझे बलकारी भोजन दिलवादिया तदनन्तर मैं वहां से अपने घर आकर अपनी स्त्री के पास रोनेलगा जब उसने पूछा कि क्यों रोतेहो तब मैंने कहा कि हे प्रिये! किसी से कहना नहीं मैं तुमसे कहताहूं इसराजा की गुदा में वज्रके समान पुष्टदांत निकले हैं इससे आज बालबनाते में मेरा बड़ा उत्तम छुरा टूटगया इसी प्रकार से जो मेरा रोज छुरा टूटेगा तो मैं नित्य कहां से

पापशोधन नाम तीर्थपर एक बड़ा सुन्दर देवमन्दिर बनवाया राजा बड़ी भक्ति से दर्शन करने को वहां नित्य आता था और सम्पूर्ण वहां के मनुष्य तीर्थस्नान करने के लिये उस स्थान पर आते थे एक समय तीर्थ पर स्नानके निमित्त आई हुई किसी वैश्यकी स्त्री जिसका पति परदेश में था राजाने देखी निर्मल कान्ति रूपी सुधा से सिंचीहुई विचित्र रूप तथा आभूषण वाली वह स्त्री क्या थी मानों कामदेव की मनोहर जंगम राजधानी थी तुम्हारे बलसे हम संसारको जीतेंगे इसलिये मानो कामदेवके तरकसोंकी शोभा उसके पैरो में आलगी थी ऐसी सुन्दर उस स्त्री को देखकर राजा का चित्त उसपर ऐसा आसक्त हुआ कि रात्रि के समय वह उसको ढूंढकर उसके घर पहुँचा और उससे संभोग के लिये प्रार्थना करने लगा तब उसने राजा से कहा कि आप तो धर्म की रक्षा करनेवाले हो आपको परस्त्रियों पर अधर्म करना उचित नहीं है जो आपहठ से मेरा स्पर्श करोगे तो बड़ा अधर्म होगा और मैं इसदोषको न सहकर शीघ्रही मरजाऊंगी उसके यह कहने पर भी राजा के हठ करने की इच्छा करने पर अपने आचरण के भ्रष्टहोने के भयसे उसपतिव्रता स्त्री का हृदय फटगया यह देखकर राजा लज्जित होके अपने घरको चलागया और इसी पश्चात्ताप से कुछ दिन में आप भी मरगया॥

(तथा)

कुबेरका सेवक विरूपाक्ष नाम एकयक्ष था वह लाखों निधानों के रक्षको का प्रधान था उसने मथुरा नगरी के बाहर जो एक निधान था उसकी रक्षाके लिये एक ऐसे यक्षको नियत किया था जो कि रात्रि दिन उन निधान परसे स्तम्भके समान नहीं हटता

लाऊंगा इसकारण रोताहूं हाय मेरी जीविका ही नष्ट हुईजाती है मेरे यह वचन सुनकर मेरी स्त्री ने अपने चित्त में कहा कि आज जब राजा रात्रिको आकर सोजावेगे तब उनकी गुदाके दांत देखूंगी देखो सम्पूर्ण संसार भरमें कहीं भी नहीं देखीगई मेरी इस असम्भव बातको सच जानगई ठीक है चतुर स्त्रियां भी धूर्तों के कहनेमें फँसजाती हैं इसके उपरान्त रात्रि के समय राजा मेरे यहां आकर और मेरी स्त्री के साथ भोगकरके मेरे कहने की परीक्षा करने के लिये झूंठमूठ सोरहा और मेरी स्त्री ने उसे सोयाहुआ जानकर गुदाके दांत देखनेके लिये उसकी गुदाकीओर धीरे२हाथबढ़ाया गुदा में हाथ के लगतेही राजा एकाएकी उठबैठा और डाकिनी२ यह कहकर भयभीत होकर अपने घरको चलागया और फिर उस दिनसे डरकेमारे मेरे घर फिर नहीं आया तब मैं अपनी स्त्रीकेसाथ आनन्दपूर्व्वक स्वाधीन होकर रहनेलगा इसप्रकार मैंने अपनी बुद्धि के बलसे राजासे अपनी स्त्री छुटाई थी उस तपस्विनीसे यह कहकर फिर नाई बोला कि मैं तुम्हारा यह कार्य्य अपनी बुद्धिके बल से सिद्धकरदूंगा और उसका उपाय भी मैं तुमको बतायेदेताहूं कि किसी अन्तःपुर में रहनेवाले बृद्ध पुरुषको अपनी ओर मिलाकर गांठलो वह राजासे एकान्तमें कहदे कि तुम्हारी रानी कदलीगर्भा डाकिनी है और उसरानी का कोई सेवक रात्रिके समय किसीजीव के कटेहुए हाथ पैर आदि मंदिरके ऐसे स्थान मे रखदे जिसे राजा देखसके इसप्रकार यत्न करने से कटेहुए अंगो को देखकर राजा उस वृद्धके कहने को सत्य मानकर भयभीत होकर कदलीगर्भाको छोड़देगा इस उपाय से सौतके अलग होजाने से पटरानी सुख पर्वक रहेगी और तेरा बड़ा सत्कार करेगी तब मुझे भी कछ

था वहां मथुराका निवासी एक पाशुपत ब्राह्मण जो कि पृथ्वी में निधिहोने की परीक्षा करसक्ता था मनुष्य की चरबी के दीपकको हाथमें लियेहुए स्थानोंकी परीक्षा करताहुआ आया वहां आतेही वह दीपक उसके हाथ से गिरपड़ा उसलक्षणसे उसने वहां निधि जानजानकर अपने मित्रों समेत खोदनेका प्रारम्भकिया उससमय वहां का रक्षक जो यक्ष था उसने जाकर विरूपाक्ष से कहदिया यह सुनकर विरूपाक्ष ने क्रोध युक्त होकर कहा कि जाकर शीघ्रही उन खोदनेवालों को मारडालो यह आज्ञा पाकर उस यक्षने वहां जाकर अपनी युक्ति से निधि के खोदनेवाले वह सम्पूर्ण ब्राह्मण मारडाले जब यह वृत्तान्त कुबेरने सुना तब कोप करके विरूपाक्ष से कहा कि हे पापी ! तूने सहसा महाहत्या क्यों करवाई दुर्दशाग्रस्त निर्धनलोग लोभ से क्या नहीं करते उन्हें विघ्नों से डराकर भगादेनाचाहिये मारना न चाहिये यह कहकर उसे शापदिया कि तू इस पाप के प्रभावसे मृत्युलोक मे उत्पन्न होजा शापके प्रभाव से वह यक्ष किसी ज़मींदार ब्राह्मण के यहा उत्पन्नहुआ तब उसयक्ष की स्त्री ने कुबेर से कहा कि हे धनाध्यक्ष! आपने जहां मेरे पति को भेजाहै वहांही कृपाकरके मुझेभी भेजदीजिये मैं उसके वियोग में नही जीसक्ती उस पतिव्रता स्त्री के यह वचन सुनकर कुबेरने कहा कि जिस ब्राह्मण के यहां वह उत्पन्नहुआ है उसकी दासी के यहां तू अयोनिज कन्याहोगी वहां तेरा पति तुझे मिलजायगा और तेरेही प्रभावसे वह अपने शापसे उद्धारहोकर तुझसमेत फिर मेरे पासआजायगा कुबेर के इस वचन से वह पतिव्रता मानुषी कन्या होकर उस ब्राह्मण की दासी के द्वारपर आपड़ी दासी ने अकस्मात् अपने द्वारपर उसकन्याको देखकर लेके अपने स्वामी उस

ब्राह्मणको दिखाया उसे देखकर उस ब्राह्मण ने कहा कि यह निस्सन्देह कोई अयोनिज दिव्य कन्याहै यही मेरा चित्त कहता है इससे तू इसको मेरे ही घर में रख यही मेरे पुत्र की स्त्री होगी अपने स्वामीकी यह आज्ञापाकर दासी ने वह कन्या उसी के घरमें रक्खी क्रमसे वह कन्या और ब्राह्मण का पुत्र दोनो बढ़े और उन दोनों में परस्पर बड़ा स्नेह होगया तब उस ब्राह्मण ने दोनों का विवाह करदिया यद्यपि उनदोनो को अपने पूर्वजन्म का स्मरण नहीं था तथापि उनदोनोंको समागम होने से ऐसा आनन्दहुआ मानों बहुत कालके विरहके उपरान्त मिले हैं कुछकाल में वह यक्ष अपनीस्त्रीके तपसे पापरहितहोके मृत्युके वशहोगया और वहउसके साथ सतीहोगई इसप्रकार वह दोनों अपनेलोकको फिर चलेगये॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनपञ्चाशत्तम प्रदीप ॥ ४९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे पंचाशत्तमःप्रदीपः ५० ॥

प्रायोविपत्तिकालेहिभाग्यमेवसहायकम् ।
निधिर्लब्धोद्वितीयोऽपिसत्त्वशीलस्यसंकटे ५० ॥

(अर्थ) विपत्ति समयमें अवश्य भाग्यही सहायक होता है। जैसे—सत्त्वशील को राजा से संकट होने पर दूसरा खज़ाना और मिल गया है ५० ॥

चित्रकूट नाम पर्वत पर सदैव ब्राह्मणों का पूजन करनेवाला ब्राह्मण वरनाम राजा था उस राजा के यहां सत्त्वशील नाम एक सेवक केवल युद्धकेही लिये नौकरथा उसको राजाके यहां से सौ अशर्फ़ी मासिक मिलती थी परन्तु उतने में उस महादानशील सत्त्वशील का निर्व्वाह नहीं होताथा क्योंकि वह अपुत्र होने के

जीतने के लिये मानो आयेहुए भाग्यके समान एक आश्चर्यकारी पुरुषको देखकर उस मदोन्मत्तने पूछा कि, तुम कौनहो और इस अगम्यस्थान में कैसे आयेहो रानी के यह वचन सुनकर अनेक क्लेशोंको भोगनेवाला वह पुरुषबोला कि में पवनसेन नाम वैश्य हूं मथुरा मे मेरा घर है मेरे गोत्री भाइयों ने पिताके मरनेपर मुझे अनाथ जानकर मेरा सब धन छीन लिया तब मैंने विदेशमें जाकर नौकरी करली वहां कुछ धन इकट्ठा करके रोजगार करने के लिये अन्यदेशको चला मार्गमें चोरोने मेरा सब धन छीनलिया चोरोंके हाथ सब धन गमाकर वहांसे अपने समान अन्य साथियों के साथ कनक क्षेत्र नाम एक स्थानमें जहां रत्नोकी खानि निकाली जातीथी गया वहां राजासे कुछ पृथ्वी लेकर सालभरतक खोदता रहा परन्तु एक भी रत्न नही मिला और मेरे साथियों को अनेक रत्न मिले तब मैं अपनी ऐसी मन्द भाग्यता देखकर समुद्रके तटपर जाकर वहुत से काष्ठ इकट्ठे करके चिता बनाके जलनेका विचार करनेलगा उससमय जीवदत्त नाम एक वैश्य वहां आया उसने मुझे चितासे निवारणकरके अपने पास नौकर करलिया और मुझे अपनेसाथ जहाजपर बैठाकर स्वर्णद्वीप में जाने का प्रस्थान किया पांच दिनतक समुद्रमें चलते २ छठेदिन अकस्मात् मेघ बरसनेलगे और वायु से वह जहाज मतवाले हाथी के शिरके समान घूमने लगा और फटकर पानी में डूबगया उसके डूब जानेपर भाग्यवश से मुझ को गोते खाते २ एक काष्ठका टुकड़ा मिलगया उसीपर चढ़कर मेघोंके शान्त होजाने पर मैं इस द्वीपके तटपर पहुंचगया और उस काष्ठके टुकड़े से उतरकर इस वनमें घूमते यहां तुम्हारा मंदिर मुझे मिला और यहां आकर नेत्रोंमें अमृतकी वृष्टिके समान

कारण केवल दानमें अपना चित्त बहलाया करताथा वह यह शोचा करताथा कि परमेश्वर ने मुझे चित्तके प्रसन्न करने के लिये पुत्र तो नहीं दिया है और दानका व्यसन देदिया है तिसपरभी धन नही दिया संसारमें सूखे हुए जीर्ण वृक्ष तथा पाषाणका भी जन्म अच्छाहै परन्तु दानशीलका दरिद्री होना नहीं अच्छाहै इस प्रकार शोचते २ उसे एक समय उपवन में बहुतसी निधि मिलगई बहुतसे सुवर्ण तथा रत्नमय उस निधिको वह निज सेवकोंके द्वारा अपने घर उठवा लाया और उस धनमें ब्राह्मणों को तथा अपने मित्रों को देता हुआ और यथेच्छ भोग करताहुआ सुखपूर्वक रहने लगा उसके गोत्री भाइयों ने उसे सुखपूर्व्वक रहता जानके यह अनुमानकरके कि इसको निधि मिली है राजासे जाकर कह दिया राजाने उसे प्रतीहारके द्वारा बुलवाभेजा तब वह सत्त्वशील राजाकी आज्ञासे वहां गया और पहले क्षण भर भीतर जाने की आज्ञा न पाकर राजाके आँगन में एकान्त में बैठगया वहां शोक के कारण पृथ्वी खोदते खोदते उसे ताम्रके कलशों में और बहुतसी निधि मिली मानो ईश्वरने उसपर प्रसन्न होके राजाको प्रसन्न करनेके लिये उपाय निकालदिया उसने [illegible] देखकर उसी

सुख देनेवाली तुमको देखा. उसके यह वचन सुनकर रानी तारा-दत्ताने मदसे और कामदेवसे उन्मत्त होकर उसको पलँगपर लेटा कर उसका आलिंगन किया स्त्रीपना-उन्मत्तता-एकान्त-पुरुष का मिलना और स्वतन्त्रता इन पांच अग्नियों के सन्मुख शील-रूपी तृणकी क्या सामर्थ्य है कामसे मोहित स्त्री विचार करने में समर्थ नहीं होती. देखो रानी राजदत्ता ने उस विपत्ति में पड़े हुए अयोग्य पुरुषके साथ भी रमणकी इच्छाकी उससमय राजा रत्ना-धिपति ने उत्कंठित होकर उसी श्वेतरश्मिपर चढ़कर वहां आके मंदिरमें जाकर रानी राजदत्ता उस दीनपुरुषके साथ रमण करती हुई देखी और उस पुरुषको मारनेकी इच्छाकी परन्तु वह पैरों पर गिरकर दीनवचन कहनेलगा इससे छोड़दिया और अपनी रानी तारादत्ताको उन्मत्त तथा भयभीत देखकर विचारकिया कि काम-देवके मुख्य मित्र मद्यमें प्रसक्त स्त्री सती कैसे हो सक्ती है चपलस्त्री रक्षा करने से भी नहीं रुक सक्ती है क्या आंधी की हवाको कोई सु-लाओंसे रोक सक्ताहै मैंने ज्योतिषियोंका कहा नहीं किया उसका यह फल मुझको मिला शिष्ट लोगों के वचनका तिरस्कार करना किसको अन्तमें अनिष्टकारी नहीं होताहै मैंने इसको शीलवतीकी बहिन जानकर अमृत के साथ उत्पन्न हुए विषका स्मरण नहीं रक्खा अथवा अद्भुत कार्य करनेवाले ब्रह्माके अपूर्व कार्योंको कौन पुरुष अपने पुरुषार्थ से जीत सक्ताहै-इसप्रकार शोचकर राजा ने किसीपर क्रोध नहीं किया और उस वैश्यसे सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछ-

... छोड़दिया तब उस वैश्यने भी वहां जीविकाकी कोई गति ... समुद्रके तटपर आकर एक जहाज उस मार्ग से जाता ... और शीघ्रतासे उसी काष्ठके टुकड़ेपर फिर चढ़कर स-

होकर कहा कि हे सत्त्वशील तुम पहले की पाई हुई निधिको यथेच्छ भोगकरो राजाके यह बचन सुनकर सत्त्वशील अपने घरमे आकर दान तथा भोगसे अपने नामको यथार्थ करता हुआ और अपुत्रत्वके दुःखको किसीप्रकार दूर करताहुआ रहा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चाशत्तम प्रदीप ॥ ५० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५१ ॥

सद्योह्यधिकसत्त्वस्य पुंसःसिद्धिर्भवेदिह ॥
मन्दसत्त्वसमेतस्य तथासिद्धिर्विलम्बतः ५१ ॥

(अर्थ) अधिक सत्त्ववाले पराक्रमी पुरुषको शीघ्र सिद्धिप्राप्त होती है और स्वल्प सत्त्ववाले तथा मन्द पराक्रमी को सिद्धि भी बिलम्ब करकेही होती है ५१ ॥

सम्पूर्ण पृथ्वी का आभूषणरूप अनेक प्रकार की मणियोंसे युक्त पाटलपुत्र नाम नगरहै उसमें विक्रम नाम सत्त्ववान् राजाथा जो दान में अर्थियोंसे और युद्धमें शत्रुओंसे कभी नहीं पराङ्मुख हुआ वह राजा एक समय वन में शिकार खेलने को गया वहां एक ब्राह्मण बेलोंका हवन कररहाथा उसे देखकर राजाने पूछने की इच्छासीकी परन्तु शिकारमें तत्पर होने के कारण सेना समेत वहां से आगे चलागया बहुत कालतक उछलतेहुए और गिरतेहुए सिंहादि जीवोंको अपने हाथसे मारकर शिकार खेलके राजा लौटा लौटकर भी राजाने ब्राह्मणको उसी प्रकार हवन करते देखा और उसके पास जाके प्रणाम पूर्वक पूछा कि आप का क्या नाम है और आप यह किस निमित्त कर रहे हैं राजाके पूछनेपर ब्राह्मणने आशीर्वाद देकर कहा कि मैं नागशर्मा नाम ब्राह्मणहूं और इस होमका यह फल है कि बेलों का हवन करते करते जब अग्नि

मुद्रमे जाकर पुकारकर कहा कि मुझे यहां से निकाल लो उसके यह वचन सुनकर कोशवर्म्मा नाम जहाज के स्वामी ने उसे जहाजपर चढ़ा लिया ब्रह्माने जौनसा कर्म जिसके नाश होने के लिये नियत करदियाहै वह उसके साथ सर्वत्र जाताहै देखो वह मूर्ख जहाजपर जाकर एकान्तमें क्रोधवर्म्माकी स्त्रीके साथ रति में आसक्त हुआ और क्रोधवर्म्मा ने उसे देखकर समुद्रमें ढकेल दिया वहां राजा रत्नाधिपति अपने सम्पूर्ण परिकर समेतरानी राजदत्ता को श्वेतरश्मिपर चढ़ाकर रत्नकूट में ले आया और राजदत्ता को शीलवती के सुपुर्द करके शीलवती से और अपने मंत्रियोंसे उस का सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया और वैराग्ययुक्त होकर यह वचन कहे कि मैंने इस असार विरस विषयों में चित्त लगाकर कितना दुःख उठाया इस से अब मैं वनमें जाकर श्रीकृष्ण भगवान्का भजन करूंगा जिससे फिर ऐसे दुःख भोगने न पड़ें राजाकेयहवचन सुनकर मंत्रियों ने तथा शीलवती ने भी समझाया परंतु उसका चित्त वैराग्यसे नहीं हटा तब उसने अपने खजाने में से आधा धन शीलवती को देकर आधा सम्पूर्ण ब्राह्मणों को बांट दिया और सम्पूर्ण राज्य संकल्प करके राजा के स्नेहसे आंसू भरे हुए प्रजा लोगोंके देखतेहुए ही तपोवन जाने के लिये श्वेतरश्मिको बुलवाया श्वेतरश्मि वहां आतेही अपने शरीर को त्यागकर हार आदि दिव्य आभूषणोंसे युक्त दिव्यपुरुष होगया उसकी यहदशा देखकर राजाने कहा कि तुम कौनहो और यह क्याबातहै तब वह बोला कि मलयाचल के रहनेवाले हम दो गन्धर्व परस्पर भाई हैं मेरा सोमप्रभ नामहै और मेरे बड़े भाईका देवप्रभ नामहै मेरे भाई ...जवती नाम परम प्रिय एकही स्त्री है एक समय देवप्रभ

भगवान् प्रसन्न होते हैं तब कुंडसे सुवर्ण के बेल निकलने लगतेहैं और अग्नि भगवान् साक्षात् प्रकट होकर बरदान देते हैं मुझे बहुत काल बेलों का हवन करतेहुए व्यतीत होचुकाहै परंतु अभी तक मुझ मंदभागीपर अग्निदेव प्रसन्न नहीं हुये हैं उस ब्राह्मणके यह वचन सुनकर बड़ा सत्त्ववान्नाम राजा विक्रमतुंग बोला कि हे ब्राह्मण ! मुझको एक बेलदो मैं अभी हवन करके अग्निको प्रसन्न करताहूं तब ब्राह्मण ने कहा कि मैं व्रत में बैठाहुआ महापवित्रहूं जब मेरे हवनसे नहीं प्रसन्नहुए तो तुमतो महाभ्रष्ट होरहेहो तुम्हारे हवनसे कैसे प्रसन्नहोंगे ब्राह्मणके वचन सुनकर राजाने फिर कहाकि ऐसा नहीं है तुम मुझको बेल देदो तो अभी आश्चर्य्य देखलो तब ब्राह्मणने आश्चर्य्य देखने के लिये उसको बेल देदिया और राजाने अपने दृढ़ सत्त्वयुक्त चित्तमें यह संकल्पकरके कि इस बेल के हवन से अग्निदेव नहीं प्रसन्न होंगे तो मैं अपना शिर हवन करदूंगा बेलका हवन करदिया हवन करतेही कुण्डमें से साक्षात् अग्निदेव राजाके सत्त्वरूपी वृक्षके फलके समान सुवर्णके बेलको हाथमें लिये हुए प्रकट हुए और बोले कि हे राजा ! तुम्हारे सत्त्वसे मैं प्रसन्नहूं वरदान मांगो अग्नि के यह वचन सुनकर राजा ने प्रणामकरके कहा कि मुझे और कोई वर न चाहिये आप इस ब्राह्मण के मनोरथ को पूर्ण कीजिये यह सुनकर अग्निदेव ने प्रसन्न होकर कहा कि हे राजा ! यह ब्राह्मण बड़ा धनवान् होगा और हमारी कृपासे तुम्हारा भी खजाना कभी क्षीण न होगा इस प्रकार वरदान देतेहुए अग्निदेवसे उस ब्राह्मण ने कहा कि इस स्वेच्छाचारी राजाके एकहीबार हवन करनेसे तो आप प्रकट होगये परंतु

राजवतीको गोदमें लेकर मेरे साथ सिद्धवास नाम स्थानको गया वहां जाकर श्रीविष्णु भगवान्का पूजनकरके भगवान्के आगेहम सब लोग गानेलगे उससमय वहां कोई सिद्ध आकर अत्यन्त मनोहर गान करतीहुई राजवतीको अनिमेष दृष्टिसे देखनेलगा उसे इस प्रकार देखताहुआ देखकर मेरे भाईने कुपित होकर उससे कहा तुम सिद्ध होकर भी परस्त्री को बुरी अभिलाषसे देखतेहो तब सिद्ध ने कुपितहोकर कहा कि हे मूर्ख ! मैंने इसको अपूर्व नीतिके कारणसे देखाथा मेरी बुरी अभिलाषा न थी तेरे चित्तमें बड़ी ईर्षा है इससे तू मृत्युलोक में उत्पन्न होगा और वहां अपनी स्त्री को परपुरुष से रमण करती हुई देखेगा इस शाप को सुनकर मैंने लड़कपन से कुपित होकर उसको एक मृत्तिकाके श्वेत हाथीसे जिसको कि मैं खेलने को लायाथा मारा तब उसने मुझे भी शाप दिया कि तूने मुझे श्वेत हाथी से माराहै इससे तूभी पृथ्वीमें श्वेत हाथीके रूपसे उत्पन्न होगा सिद्धके इस शापको सुनकर मेरे भाई ने उनसे बड़ी विनय करी तब उसकी अति विनयको सुनकर सिद्धने कृपाकरके इसप्रकार हम दोनोंके शापका अन्त बताया कि तुम मनुष्य योनि मे भी विष्णुभगवान्की कृपासे द्वीपभरके स्वामीहोकर दिव्य हाथी रूप अपने भाई को अपना वाहन पावोगे और अस्सीहज़ार तुम्हारी रानी होंगी उन सबके दुराचार को जानकर मनुष्य योनि में उत्पन्नहोनेवाली इस अपनी स्त्रीसे भी विवाह करके इसे अपनी आंखोंसे परपुरुष के साथ रमण करतीहुई देखोगे इसकी यह दशा देखकर तुम वैराग्ययुक्त होकर ब्राह्मणको अपना सब राज्य देकर जब बन जाने को उद्युक्त होगे तब पहले तुम्हारा यह भाई हाथी पने से छूट जायगा और इसे देखकर तुम भी अपनी स्त्री समे

हुए इसका क्या कारणहै तब अग्निदेव ने कहा कि जो हम इसे वर न देते तो यह शीघ्रही सत्त्ववान् होने के कारण अपना शिर हवन कर देता हे ब्राह्मण! तीव्र सत्त्ववाले लोगोंको शीघ्रही सिद्धि होती है और तुम सरीखे मन्द सत्त्ववालों को देर मे सिद्धि होती है—यह कहकर अग्नि के अन्तर्द्धान होजानेपर नागशर्म्मा राजा से पूछकर अपने घरको गया और क्रमसे बड़ा धनवान् होगया और राजा भी बड़े सत्त्वके कारण सम्पूर्ण लोगोंसे अपनी प्रशंसा सुनता हुआ पाटलिपुत्र नगर को चलागया वहां एक समय अकस्मात् शत्रुञ्जय नाम प्रतीहार ने मन्दिर मे बैठे हुए राजा से विज्ञापन किया कि हे महाराज! दत्तशर्मा नाम एक विद्यार्थी ब्राह्मण द्वारपर खड़ाहै और आपसे एकान्तमें कुछ विज्ञापन कियाचाहता है राजाने कहा अच्छा आनेदो तब राजाकी आज्ञासे वह ब्राह्मण भीतर आकर प्रणाम करके बैठगया और कहने लगा कि हे राजा! मैं किसी चूर्णकी युक्तिसे तांबेका सुवर्ण बनासक्ताहूं यह युक्ति मेरे गुरुने मुझे बताई है और मेरे आगेही गुरुजी ने इस युक्ति से सुवर्ण बनायाथा उसके यह वचन सुनकर राजा ने तांबा मँगवाकर गलवाया और उस ब्राह्मण ने उसमें चूर्ण डाला उस चूर्णको कोई यक्ष अदृश्य होकर डालतेही हर लेगया यह बात केवल राजाही ने अग्निकी कृपासे देखली चूर्णके न पड़ने से तांबा सुवर्ण नहीं हुआ इस प्रकार उसने तीनबार अपना चूर्ण छोड़ा और तीनोंबार यक्षके हर लेजाने से उसका श्रम व्यर्थ होगया तब राजाने उसको खिन्न देखकर तांबा गलवाके उससे चूर्णलेकर अपने हाथसे डाला और यक्ष राजाके तेजके प्रभावसे उसे हर नहीं सका और लज्जित होकर चलागया तब चूर्णके पड़नेसे तांबा सुवर्ण होगया राजाके

शापसे छूट जाओगे इसप्रकार उस सिद्धके वचनके अनुसार पूर्व जन्म के कर्म्म फलसे हम लोगोंका इससमय शापका अन्त हुआ सोमप्रभ के यह वचन सुनकर राजा अपने पूर्व्व जन्मका स्मरण करके बोला कि वह देवप्रभ मैंहीहूं और राजदत्ता मेरीस्त्री राजवती है यह कह कर राजा राजदत्तासमेत शरीर को त्याग करके गंधर्व होगया फिर क्षणभर में सबके देखतेही देखते वह तीनों आकाश में उड़कर अपने स्थान मलयाचलपर चलेगये शीलवती भी अपने शीलके माहात्म्य से बहुतसी सम्पत्ति पाके ताम्रलिप्तीपुरी में जाकर धर्म्म पूर्व्वक रहनेलगी इस प्रकार इस संसार में कोई पुरुष भी स्त्रीकी रक्षा हठ पूर्व्वक नहीं करसक्ताहै कुलीन स्त्रियोंको केवल उनके शुद्ध सत्वरूपी पाशका बन्धन ही उनकी सदैव रक्षाकरता है और ईर्षा तो मनुष्यों को दुखदाई महादोष रूप है और अन्य पुरुषों से द्वेष कराने का कारणहै इससे स्त्रियों की रक्षा तो नहीं होसक्ती है किन्तु इसके विपरीत उनके चित्त में उत्कण्ठा अधिक बढ़जातीहै ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकपंचाशत्तम प्रदीप ५१॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विपंचाशत्तमःप्रदीप ५२ ॥

सतीतुदुर्लभाल्लोके प्रायोनार्य्यस्तुचंचला ।
आस्वासक्तमनादुःखंविविधंलभतेजनः ५२ ॥

(अर्थ) पतिव्रता स्त्री तो संसारमें दुर्लभहै प्रायः स्त्रियें चंचल ही होती हैं इनमें मन फँसानेवाला जन अनेक दुःखभोगताहै ५२ ॥

सम्पूर्ण संसार में विख्यात उज्जयिनी नाम नगरी में निश्चय दत्त नाम एक बनिये का पुत्र अत्यन्त ज्वारी था वह प्रतिदिन जुयेमें धन जीतकर क्षिप्रानदी में स्नान करके श्रीमहाकाल शिव

हाथसे सुवर्ण बनता देखकर उस ब्राह्मणने बड़े आश्चर्यपूर्वक पूछा कि यह क्या बातहै उसके यह वचन सुनकर राजाने यक्षका सब वृत्तान्त कहदिया और उस बालक ब्राह्मणसे चूर्ण बनानेकी युक्ति सीखकर उसे बहुतसा धन देकर कृतार्थ कर दिया धन पाकर वह ब्राह्मण तो विवाह करके सुखपूर्व्वक रहने लगा और राजाभी उस युक्तिसे बनाये हुए सुवर्ण से अपने खजाने को पूर्ण करके इतना दान करने लगा कि कोईभी ब्राह्मण दरिद्री नहीं रहा और सुख-पूर्वक अपनी रानियों समेत रहनेलगा इससे इसप्रकार मानो डरा हुआ अथवा प्रसन्न हुआ ईश्वरही बड़े सत्त्ववालों के मनोरथ को पूर्ण करताहै ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकपञ्चाशत्तमः प्रदीपः ५१॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५२॥

धातापिनप्रभुःप्रायश्चपलानान्तुरक्षणे।
मत्तानदीचनारीच नियन्तुंकेनपार्यते ५२॥

(अर्थ) प्रायः चपल स्त्रियोकी रक्षा करनेमें ब्रह्माभी नहीं समर्थ है मत्त नारी और नदी को कौन रोक सक्ताहै जैसे इस विषय पर में आप को एक कथा सुनाताहूं ५२॥

कि समुद्रके बीचमें रत्नकूट एकबड़ाद्वीपहै उस द्वीप में बड़ा उत्साही परमवैष्णव रत्नाधिपनाम यथार्थ नामवाला राजा था उसने संपूर्ण पृथ्वीकोजीतलिया और पृथ्वीपरके सबराजाओंकीकन्याओं को अपनी स्त्रीबनानेकेलिये विष्णुभगवान्का तपकियातपसेप्रसन्न होकर साक्षात् विष्णुभगवान्ने दर्शनदेकर प्रणामकरते हुए राजासे कहा कि हे राजा! उठो जो मैं कहताहूं उसे सुनो कोई गन्धर्व मुनि के शापसे कलिंगदेश में श्वेतरश्मिनाम श्वेतहाथी होकर उत्पन्न

जीका पूजन करके और ब्राह्मण तथा दीन अनाथों को धन देके भोजनादिक कार्य्य करताथा और वह नित्यही स्नानादि के उपरान्त महाकाल के निकट श्मशान में जाकर अपने शरीर में चन्दनादिक लगाताथा और वहीं एक पत्थरके खम्भमें चन्दन लगाकर अपनी पीठ रगड़ताथा बहुत दिनतक रगड़ने से वह खम्भा एक ओर बहुत चिकना होगया एक समय उसी मार्ग से कोई चित्रकार एक चितेरे समेत वहां आया उसने उस खम्भे को बहुत चिकना देखकर श्रीपार्वती जी का चित्र उसमें बनादिया और उस चितेरेने अपने यन्त्रों से वह चित्र खोददिया फिर उन दोनों के चले जानेपर श्रीमहाकाल शिवजी का पूजन करनेको आई हुई एक विद्याधर की कन्याने खम्भे में पार्वतीजी की मूर्तिदेखी उस मूर्ति के बहुत शुभलक्षण देखकर उसमें भगवती का अंश जानकर भगवती का पूजन करके वह विश्रामके लिये अदृश्य होकर उसी खम्भे में प्रवेश करगई उससमय निश्चयदत्त भी वहां आया खम्भे में श्रीपार्वतीजी की मूर्तिको आश्चर्य पूर्वक देखकर वह अपने सम्पूर्ण शरीर में चन्दन लगाकर उस खम्भे की दूसरी ओर चन्दन लगाकर अपनी पीठ रगड़ने लगा उसे पीठ रगड़ते देख के और उसके रू... ...रीने शोचा

होकर शीलवती को असंख्य रत्नों से पूर्ण करदिया और उसके स्वामी हर्षगुप्तको भी बड़े सत्कारपूर्वक अपने घरके पासही मकान देकर टिकाया और उस दिन से अपनी सम्पूर्ण स्त्रियों का स्पर्श भी त्याग करके उनको केवल भोजन और वस्त्रमात्र देने मिलने की आज्ञा दी इसके उपरान्त राजा ने भोजन करके हर्षगुप्तसमेत शीलवती को एकान्त में बुलाकर कहा कि हे शीलवती ! तुम्हारे पिता के वंश मे कोई और भी कन्या है जो होय तो तुम उसका मेरे साथ विवाह करवादो मैं जानताहूं कि वह भी तुम्हारेही समान होगी राजाके यह वचन सुनकर शीलवती बोली कि हेमहाराज ! ताम्रलिप्तीपुरी में तारादत्त नाम एक मेरी वहिनहै वह बड़ी रूपवती है जो आपकी इच्छाहो तो उसके साथ विवाह करलीजिये राजा ने उसके वचन स्वीकार करलिये और दूसरे दिन ताम्रलिप्ती पुरी के चलने का निश्चय किया और हर्षगुप्त तथा शीलवती को उसी श्वेतरश्मि हाथीपर सवार कराके उस पुरीको गया और हर्षगुप्त के यहां पहुंचकर शीलवती की वहिन के विवाह के निमित्त ज्योतिषियों से लग्न पूछी ज्योतिषियों ने दोनों के जन्मनक्षत्र पूछकर कहा कि आज से तीन महीनेके उपरान्त शुद्ध लग्नहै और एक लग्न आज भी है उसमें जो विवाह होगा तो तारादत्त अवश्य कुलटा होजायगी ज्योतिषियोंके यह वचन सुनकर राजाने सुंदर स्त्री के लिये उत्कंठित होकर और बहुत कालतक स्त्री के विना रहनेको असमर्थ होकर शोचा कि विचारसे क्या प्रयोजनहै आज ही राजदत्ता के साथ विवाह करना चाहिये यह शीलवती की वहिनहै इससे यह निरभिमान होनेके कारण कुलटा न होगी और समुद्र के बीच में मनुष्यरहित एक द्वीपखण्डहै जिसमें कि मेरा

मैंने तुम्हारा क्या अपराध कियाहै मेरा हाथ छोड़दो इस अदृश्य वचनको सुनकर निश्चयदत्तने कहाकि तुम प्रत्यक्ष होकर कहो कि तुम कौनहौ तभी तुम्हाराहाथ छोडूंगा उसनें शपथखाकर कहाकि मैं प्रत्यक्ष आकर आपसे सब वृत्तान्त कहूंगी आप मेराहाथ छोड़ दीजिये उसके इसप्रकार कहने से निश्चयदत्त के हाथ छोड़ने पर वह खम्भे से निकलकर निश्चयदत्तके मुखको देखती हुई बैठकर अपना वृत्तान्त कहनेलगी कि हिमालय के आगे पुष्करावतीनाम एक नगरी है उसमें विद्याधरों का स्वामी विन्ध्यपर नाम विद्याधर रहताहै उसकी मैं अनुरागपरानाम कन्याहूं इससमय श्रीमहाकाल जीके पूजनके निमित्त आकर विश्रामके लिये यहां बैठीथी इतने में कामदेव के मोहनास्त्र के समान तुमभी यहां आकर अपनी पीठ इसमें रगड़नेलगे तब पहले तो आपके अनुरागसे मेरा हृदय राग युक्तहुआ और पीछे पीठके मलने मे अंगराग के लगजाने से हाथ भी रक्त होगया इसके उपरान्त जो हुआ सो आप जानते हैं अब मैं अपने पिताके स्थान को जाती हूं उसके यह वचन सुनकर नि-श्चयदत्त बोला कि हेसुन्दरि! तुमने जो मेराचित्त हरलिया है वह मैंने अभी नहीं पाया सो पराई वस्तु लेकर विना दिये तुम कैसे चलीजाओगी निश्चदत्त के इस कहने पर वह अनुरागसे वशी-भूत होकर बोली कि हे नाथ! जो तुम मेरी पुरी में आओगे तो मैं वहां आपसे मिलूंगी और वह पुरी तुमको कुछ दुर्गम भी नहीं है आपका मनोरथ सिद्ध होगा क्योंकि उत्साही मनुष्यों को इस सं-सारमें कुछ दुर्लभ नहीं है यह कहकर वह अनुरागपरा विद्याधरी आकाश को चलीगई और निश्चयदत्त उसीका ध्यानकरताहुआ अपने घरको चलागया घरमें जाकर वह शोचनेलगा कि खम्भे

यह कहकर राजा खड्गलेकर अपना शिर काटनेको उद्यत होगया राजाको ऐसा साहस करते जानकर उसीसमय आकाशवाणी हुई कि हे राजा! साहस मतकरो कोई सती स्त्री इस हाथीको अपने हाथ से स्पर्श करे तो यह अच्छा होजाय नही-तो नहीं अच्छा होगा इस आकाशवाणी को सुनकर राजाने उसीसमय बहुत प्रसन्न हो-कर अपनी उस अमृतलता नामरानी को जिसकी कि उसने बड़ी रक्षाकी थी बुलवाया उसने आकर हाथीका स्पर्श किया परन्तु हाथी नही उठा तब राजाने अपनी सम्पूर्ण स्त्रियों को बुलवाकर सब से एक २ करके स्पर्श करवाया पर हाथी नही उठा क्योंकि उनमें एक भी सती न थी राजाने उन अस्सीहज़ार रानियों को लज्जित देखकर अपने पुरकी सम्पूर्ण स्त्रियों को बुलवाकर क्रम पूर्व्वक सबसे हाथीका स्पर्श करवाया जब इतनेपर भी वह हाथी न उठा तो राजा के चित्तमें लज्जाहुई कि हाय मेरे पुरमें एक भी सती स्त्री नहीं है उससमय हर्षगुप्त नाम एक वैश्य ताम्रलिप्ती नाम नगरीसे उस द्वीप में आयाथा वहभी इस वृत्तान्त को सुनकर कौतुक देखने के लिये वहांपर गया उस बनिये की शीलवती नाम स्त्री भी उसके पीछे २ चलीगई थी उसने कहा कि जो मैंने चित्तसे भी अपने मन में किसी अन्यपतिका स्मरणभी न कियाहोय तो मेरे हाथके स्पर्श से यह हाथी उठे यह कहकर उसने उस हाथीका स्पर्श किया उस के स्पर्श करतेही हाथी स्वस्थहोकर उठ खड़ा हुआ और चाराखाने लगा हाथीको उठा देखकर सब लोग शीलवती की प्रशंसा करके कहने लगे कि ऐसी साध्वी स्त्रियां कहीं विर-लीही होती हैं जो ईश्वरके समान इस सम्पूर्ण संसार की उत्पत्ति पालन तथा संहार करसक्ती हैं राजा रत्नाधिपति ने भी प्रसन्न

रूपी वृक्षसे निकले हुए उसके पाणिपल्लव को पकड़कर भी मैंने उसका पाणिग्रहण नहीं किया तो अब उसी पुष्करावती पुरी को चलना चाहिये या तो मेरे प्राणही जायँगे या भाग्य सहायता करेगा इसप्रकार शोचकर निश्चयदत्तने कामसे पीड़ित होकर वह दिन व्यतीत किया दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर उत्तरदिशाको प्रस्थानकिया कुछ दूर चलकर उत्तरदिशाकोही जानेवाले तीन वैश्यके लड़के उसको साथी मिलगये उनके साथ अनेक ग्राम तथा नगर वन तथा नदियों को उल्लंघन करताहुआ निश्चयदत्त उत्तरदिशा में म्लेच्छोंकी बस्ती में पहुंचा वहां ताजिकजातिके म्लेच्छों ने इनचारोंको पकड़कर किसी अन्य जाति के हाथ कुछ धन लेकर बेचडाला उस मोललेनेवाले ने उन चारोंको अपने नौकरों के द्वारा मुखारनाम म्लेच्छके यहां भेंटकेलिये भेजदिया वहां जाकर उन सेवकों ने मुखारको मराजानकर उसके पुत्रको वह चारों भेंट करदिये उसने कहा कि मेरे पिता के लिये उसके मित्रने इन चारोंको भेजा है इससे इन चारोंको भी उसी कब्र में अपने पिताके पास डालकर तोपदेना चाहिये यहकहकर उसने उनको जंजीरों में बँधवाकर रक्खा तब बन्धन में पड़कर रात्रि के समय निश्चयदत्तने अपने तीनों मित्रोंको मरनेके भयसे व्याकुल देखकर कहा कि खेद करने से क्या लाभहोगा धैर्य धारणकरो विपत्तियां धीरमनुष्यों के पास से भयभीतसी होकर भागजाती हैं इससमय आपत्तिकी नाशकरनेवाली भगवती दुर्गाका ध्यानकरो इसप्रकार उन्हें धैर्यदेकर वहभगवती की स्तुति करनेलगा कि हे महादेवि ! तुमको नमस्कारहै मारेगये दैत्यों के रुधिरसे मानों भरे हुये महावर से युक्त तुम्हारे चरणों में मैं नमस्कार करता हूं संसार

होकर शीलवती को असंख्य रत्नों से पूर्ण करदिया और उसके स्वामी हर्षगुप्तको भी बड़े सत्कारपूर्वक अपने घरके पासही मकान देकर टिकाया और उस दिन से अपनी सम्पूर्ण स्त्रियों का स्पर्श भी त्याग करके उनको केवल भोजन और वस्त्रमात्र देने मिलने की आज्ञा दी इसके उपरान्त राजा ने भोजन करके हर्षगुप्तसमेत शीलवती को एकान्त में बुलाकर कहा कि हे शीलवती! तुम्हारे पिता के वंश में कोई और भी कन्या है जो होय तो तुम उसका मेरे साथ विवाह करवादो मैं जानताहूं कि वह भी तुम्हारेही समान होगी राजाके यह वचन सुनकर शीलवती बोली कि हेमहाराज! ताम्रलिप्तीपुरी में तारादत्त नाम एक मेरी बहिनहै वह बड़ी रूपवती है जो आपकी इच्छाहो तो उसके साथ विवाह करलीजिये राजा ने उसके वचन स्वीकार करलिये और दूसरे दिन ताम्रलिप्ती पुरी के चलने का निश्चय किया और हर्षगुप्त तथा शीलवती को उसी श्वेतरश्मि हाथीपर सवार कराके उस पुरीको गया और हर्षगुप्त के यहां पहुंचकर शीलवती की बहिन के विवाह के निमित्त ज्योतिषियों से लग्न पूछी ज्योतिषियों ने दोनो के जन्मनक्षत्र पूँछकर कहा कि आज से तीन महीनेके उपरान्त शुद्ध लग्नहै और एक लग्न आज भी है उसमें जो विवाह होगा तो तारादत्त अवश्य कुलटा होजायगी ज्योतिषियोंके यह वचन सुनकर राजाने सुंदर स्त्री के लिये उत्कंठित होकर और बहुत कालतक स्त्री के बिना रहनेको असमर्थ होकर शोचा कि विचारसें क्या प्रयोजनहै आज ही राजदत्ता के साथ विवाह करना चाहिये यह शीलवती की बहिनहै इससे यह निरभिमान होनेके कारण कुलटा न होगी और समुद्र के बीच में मनुष्यरहित एक द्वीपखण्डहै जिसमें कि मेरा

में ऐश्वर्य की देनेवाली अपनी शक्ति से तुमने शिवजी को भी जीतलिया, है हे भगवती तुम्हारी ही शक्ति से यह सम्पूर्ण संसार जीताहै हे महिषासुरमर्दिनि तुमने तीनोंलोकों की रक्षाकरी है हे भक्तवत्सले इस समय मुझ शरणागत की रक्षाकरो, इसप्रकार अपने मित्रोंसमेत भगवती की स्तुतिकरके वह निद्राको प्राप्त होगया उससमय भगवती ने उन चारोंको स्वप्न में दर्शनदेकर कहा कि हे पुत्रो उठो अब जाओ तुम्हारा बन्धन खुलगया यह स्वप्न देखकर चारों की निद्रा खुलगई और अपने अपने बन्धन खुलेहुये देखे और परस्पर अपने २ स्वप्न के वृत्तान्त को कहके अति प्रसन्नहोकर चले कुछ दूर जाकर रात्रि के व्यतीत होजानेपर निश्चयदत्त के वह तीनों मित्र भयभीतहोकर बोले कि हे मित्र ! इस उत्तरदिशा में बहुत म्लेच्छहैं इससे हमलोग इस दिशा को त्यागकर अब दक्षिण को लौटे जाते हैं तुम्हारी जैसी इच्छा होय सो करो उनके यह वचन सुनकर उन्हें लौटने की आज्ञा देकर निश्चयदत्त अनुरागपरा के प्रेमरूपी बन्धनसे बँधाहुआ अकेलाही उत्तरदिशा को चला कुछ दूर चलकर चार महाव्रती उसे साथी मिलगये उनके साथ वितस्तानाम नदी के पार जाकर भोजनकरके श्री सूर्य्य भगवान् के अस्त होते समय मार्ग में मिलेहुए एक वनमें उन्हीं चारों के साथ वह चला वहां कुछ काष्ठ के बोझेवाले मिले वह इन लोगों को वनमें जातेहुए देखकर बोले कि इससमय दिन व्यतीत होगयाहै तुम कहांजाते हो आगे कोई ग्राम निकट नहीं है एकसूना शिवालय इस वनमें है उसमें रात्रिके समय जो कोई मनुष्य भीतर अथवा बाहर रहताहै उसे शृंगोत्पादनीनाम यक्षिणी सींग उत्पन्नकरके पशु बनाकर मोहितकरके खाजाती है यहसुन-

चौखण्डमहल बना है उसमें इसे रक्खूंगा और उस दुर्गमस्थान में केवल स्त्रीही इसकी सेवाके लिये रक्खूंगा इसप्रकार पुरुष के विना देखे भाले यह कैसे पुंश्चली होजायगी यह निश्चय करके राजाने उसीदिन उसीलग्न में शीलवती के कहने से राजदत्ता के साथ अपना विवाह करलिया और विवाह करके हर्षगुप्त शीलवती तथा राजदत्ता को उसी श्वेतरश्मि हाथीपर बैठाकर क्षणभरमें आकाश मार्ग के द्वारा रत्नकूट द्वीप जहां कि उसका मार्ग सब लोग देख रहे थे आया और वहां आकर शीलवती को फिर भी इतना धन दिया कि जिससे वह अपने पतिव्रत पनेका फल पाकर कृतकृत्य होगई तदनन्तर राजाने रत्नदत्ताको श्वेतरश्मिपर बैठालकर पहले-हीसे विचारेहुए समुद्र के बीच मनुष्यों से दुर्गमद्वीप में ले जाकर अपने मन्दिर में रक्खा और केवल स्त्रियांही उसकी सेवाके लिये रक्खीं और जिन २ वस्तुओंकी वहां आवश्यकता थी वह सब वस्तु राजाने किसीपर बिश्वास न करके आपही आकाशमार्ग से वहां पहुँचगई राजा उसके अनुराग से रात्रिभर तो उसीके पास रहता था और दिनको राज्य के कार्य्य करनेको रत्नकूट पर चला आताथा एकसमय राजाने कोई दुस्स्वप्न देखाथा इससे प्रातःकाल मंगला-चारकरके आप भी मद्यपान किया और रानीको भी मद्यपान कर-वाया फिर किसी कार्य्य के लिये रत्नकूट में आनेका विचार किया यद्यपि वह मदसे उन्मत्त होकर राजाको छोड़ना नही चाहती थी तथापि वह कार्य्यवश से रत्नकूट को चलाही आया और चित्तमें शोचतारहा कि वह मदोन्मत्त वहां अकेली क्या करेगी इस बीचमें राजदत्ता उस दुर्गमद्वीपमे दासियों के अपने२ कार्यों में लगजाने पर अकेली द्वारपर चली आई और वहां राजाकी सब रक्षाओं के

कर वह महाव्रती उसबातपर उपेक्षाकरके बोले कि चलो चलें वह विचारी यक्षिणी हमारा क्या करेगी हमलोग बड़े २ कठिन श्मशानों में भी रहे हैं इसप्रकार कहतेहुये उनचारोंके साथ निश्चयदत्त उसी सूने शिवालयमें पहुँचा और रात्रि व्यतीत करनेकेलिये उसी मंदिर के भीतर अग्निजलाके एक बड़ाभारी भस्मका मंडल बनाकर उसीमें बैठकर सबलोग अपनी रक्षाके लिये मंत्र जपने लगे उससमय शृंगोत्पादनीनाम यक्षिणी नाचती हुई और हड्डियोंकी कींगिड़ी बजातीहुई वहां आई और एक महाव्रतीकी ओर दृष्टि लगाकर नाच २ के मंडल के बाहर मंत्र पढनेलगी उस मंत्र के प्रभाव से महाव्रतीके सींग निकलआये और वह मोहितहोकर जलतीहुई अग्नि में गिरपड़ा उसेआधा जलाहुआ देखकर अग्नि में से निकालकर उस यक्षिणी ने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक खा डाला फिर दूसरे महाव्रतीकी ओर दृष्टि लगाकर नाच २ कर मंत्र जपने लगी मंत्र के प्रभावसे उसकेभी सींग निकल आये और नाचकर मोहित होकर अग्नि में गिरपड़ा उसे भी उसने आधा जलाहुआ देखके अग्निसे निकालकर खा डाला इसप्रकार उसने तीन महाव्रती मंत्र के प्रभावसे मोहितकरके खाडाले भाग्यवशासे जब चौथे को खानेलगी तब अपनी कींगिड़ी पृथ्वी में रखदी उस कींगिड़ी को पृथ्वी में धरी देखकर निश्चयदत्तने वह आप उठालीनी और कईबार सुनने से यादहुए मंत्रको पढ़कर उस यक्षिणी के मुख में दृष्टि लगाकर नाच २ कर कींगिडी बजाई उस मंत्रके प्रभाव से विवश यक्षिणी भयभीत होकर बोली कि हे महासत्त्व! तुम मुझ विचारी स्त्रीको मतमारो अब मंत्र पाठ को समाप्तकरो तुम मुझ शरणागत की रक्षाकरो मैं तुम्हारे सम्पूर्ण मनोरथको जानतीहूं और

उसे सिद्ध भी करदूंगी जहां वह अनुरागपराहै वहां तुम्हें पहुँचादूंगी उसके यह विश्वास योग्य वचन सुनकर निश्चयदत्त मंत्र पाठको बंदकरके उसी यक्षिणी के कहने से उसी के कन्धेपर चढ़कर आकाशमार्ग से चला चलते २ जब रात्रि व्यतीत होगई तब उस यक्षिणी ने उसे एकपर्वतके वनमें पहुँचाकर कहा कि सूर्यके उदय होजानेपर मुझे ऊपर जानेकी शक्ति नहीं है इससे आप इसी सुन्दर वनमें इस दिनको व्यतीत करिये और सुन्दर मधुरफल खाकर झिरनों का जल पीजिये मैं अपने स्थान को जाती हूं रात्रिके समय फिर आकर आपको हिमालय के ऊपर पुष्करावतीनगरी में अनुरागपराके पास पहुँचाऊंगी इसप्रकार कहकर और निश्चयदत्तसे आज्ञालेकर सत्य बोलनेवाली वह यक्षिणी फिर आने के लिये कहकर वहां से चलीगई उसके चले जानेपर निश्चयदत्तने एक बड़ा सुन्दर शीतल जल से भराहुआ तड़ाग देखा उसके जल मे विष मिलाहुआथा मानों सूर्य भगवान् अपनी किरणरूपी हाथों को फैलाकर कहते थे कि हे प्रेमी ! स्त्रियोंका चित्त ऐसाही होता है सुगन्धिसे उस जल में विष मिलाहुआ जानकर उसे छोड़कर वह प्याससे व्याकुल होकर उसी दिव्यपर्वतपर घूमनेलगा घूमते२ एक बड़े ऊंचे स्थान में दो पद्मरागमणिसी चमकती हुई देखकर उसने वहांकी मिट्टीहटाई मृत्तिकाके हटाने से एक जीवते हुए बन्दरका शिर उसे दिखाईदिया जिसके कि नेत्र पद्मरागमणिसे चमकरहेथे उसे देखकर जब इसे बड़ा आश्चर्य्य हुआ तब वह बन्दर मनुष्य वाणी से बोला कि मैं ब्राह्मणहूं भाग्यवश से बन्दर होगया हूं जो आप मुझे निकालिये तो मैं अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहूं उसके यह वचन सुनकर निश्चयदत्त ने मृत्तिका हटाके उसे निकाल लिया तब

कि यह योगिनी स्त्रियों की बातें हैं मैं इन विषयों को क्याजानूं परन्तु भद्ररूपा नाम सिद्ध योगिनी मेरी सखी है मैं उससे कहकर तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध करवादूंगी उसके यह वचन सुनकर निश्चयदत्त बहुत प्रसन्न होके बोला कि चलो अपने उस मित्रको तुम्हें दिखलाऊं तब अनुरागपरा उसे गोदी में लेकर आकाश मार्ग से उसको उस वानररूप सोमस्वामी के पास ले आई वहां आकर निश्चयदत्त ने अनुरागपरा समेत अपने मित्र वानर को प्रणामकरके कुशलक्षेम पूंछी सोमस्वामी ने अनुरागपरा को आशीर्वाद देकर निश्चयदत्त से कहा कि अब मुझको कुशलही है जो मैंने तुमको अनुरागपरा के साथदेखा तब वह सब एक मनोहरशिलापर बैठगये और सोमस्वामी को पशुपने से छुटाने का वार्त्तालाप करने लगे कुछकाल वार्त्तालाप करके निश्चयदत्त सोमस्वामी से आज्ञालेकर प्रियाकी गोदी में बैठकर पुष्करावती को गया दूसरे दिन उसने अनुरागपरा से फिर कहा कि हेप्रिये!चलो उसी मित्रके पास फिर चलें तब वह बोली कि आज तुम्हीं जाओ मैं तुम्हें आकाश में उड़नेकी और आकाशसे उतरने की विद्या बताये देतीहूं यह कहकर उसने उसे वह दोनों विद्या सिखादीं तब वह उन विद्याओंको पाकर आकाश मार्ग से अपने मित्रके पास आया निश्चयदत्त तो यहां आकर अपने मित्रसे वार्त्तालाप करनेलगा और अनुरागपरा अपने घरसे निकलकर उपवन में विहार करनेको गई वहां उपवन में बैठीहुई अनुरागपरा को स्वेच्छासे आकाश में भ्रमण करतेहुए किसी विद्याधरके कुमारने देखकर अपनी विद्यासे जानलिया कि यह किसी मनुष्य से प्रेम करती है यह जानकर वह उसके पास गया उसे देखकर वह अपना नीचे मुखकरके बोली कि तुम कौन

वह वहां से निकलके उसके चरणों पर गिरकर बोला कि मुझे इस क्लेश से निकालकर प्राणदान दिया तो आओ थकगये होंगे कुछ फल खाकर जलपानकरो और तुम्हारी मैंभी बहुत दिनों के उपरान्त जलपान करूं यह कहकर वह उसे थोड़ीदूर पर पर्व्वती नदीपर लेगया जहां बड़े २ सुन्दर फलों से युक्त सघनछाया वाले वृक्ष लगेहुए थे वहां स्नान और फलादि भोजन पूर्व्वक जलपान करके निश्चयदत्त निवृत्त हुए उस बन्दर से बोला कि आप मनुष्य से बन्दर होगये सो कहिये तब वह बन्दर बोला कि सुनो काशीपुरीमें स्वामी नाम एक ब्राह्मण रहता है उसकी सुव्रत्तानाम स्त्री में जन्म हुआ है सोमस्वामी मेरा नाम है क्रमसे जब मैं बड़ा तब मदसे निरंकुश कामरूपी मतवाले हाथीपर चढ़कर इधर घूमनेलगा एक समय काशीपुरी के रहनेवाले श्री गर्भनाम की पुत्री और बाराहदत्त नाम वैश्यकी स्त्री बन्धुदत्ता नाम ने मुझे अपने पिताके घरके झरोखे से देखा देखतेही कामसे कुल होकर उसने अपनी सखीको मेरे पास संगमके लिये वह मुझसे उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त कहकर मुझे अपने घर लेगई और मुझको वहां छोड़कर कामकी व्यथा से निर्लज्ज बन्धुदत्ता को वहीं लिवालाई वह आतेही बड़े स्नेह से मेरे हाथ डालकर लिपटगई ठीक है—स्त्रियों का बहुत बढ़ाहुआ देव बड़ावीर होताहै इसप्रकार से बन्धुदत्ता प्रतिदिन आ के घरसे अपनी सखीके घरमें आकर मुझसे रमण समय बहुतकाल से अपने पिताके ही घरमें र० को उसका पति मथुरासे लेनेके लिये आया

हो और यहां किसलिये आयेहो उसने कहा कि मैं सम्पूर्ण विद्याओं का जाननेवाला रागभंजन नाम विद्याधर हूं तुम्हारे देखनेही से कामदेवने मुझे अपने वशीभूत करके तुम्हारे अर्पण करदिया है इससे हे सुन्दरी! पृथ्वीके निवासी मनुष्यको छोड़कर तुम जबतक तुम्हारा पिता नही जानता है तबतक हमारे साथ विवाह करलो उसके यह वचन सुनकर अनुरागपराने उसे तिरछी दृष्टिसे देखकर अपने चित्तमें शोचा कि मेरे योग्यपति यही है तब अनुरागपराके आशय को जानकर उस रागभंजनने अनुरागपरासे विवाह कर-लिया ठीकहै एकान्त में स्त्री पुरुषके चित्त मिलजानेपर कामदेव किसी बातकी अपेक्षा नहीं करताहै तदनन्तर उसविद्याधर के चले जाने पर निश्चयदत्त सोमस्वामी के पास से अनुरागपरा के पास आया उससमय अनुरागपराने विरक्तहोकर शिरकी पीड़ा के बहा-नेसे उसका आलिंगन भी नही किया परन्तु स्नेह से मोहित सरल-चित्त निश्चयदत्त उसबहानेको सचाही जानकर दुःखपूर्वक वह दिन व्यतीतकरके दूसरेदिन प्रातःकाल खेदसे अपने चित्तको बहलाने के लिये उसी की बताईहुई विद्या के बल से फिर अपने मित्र सोमस्वामी के पास आया उसके चलेआनेपर वह रागभंजन वि-द्याधर अनुरागपरा के विना रात्रिभर जागकर उससमय अवकाश पाकर उसके गले मे आकर लिपटगया और यथेच्छ रमणकरके श्रम से सो गया और अनुरागपरा भी गोदी में उस सोतेहुए वि-द्याधरको अपनी विद्याकेबलसे छिपाकर रात्रिभरके जागनेसे सो-गई इस बीचमें निश्चयदत्त अपने मित्रके पास पहुँचा सोमस्वामी ने उसका शिष्टाचारकरके उससे पूंछा कि हे मित्र! आज तुम उदा-सीन से क्यों मालूम होतेहो निश्चयदत्तने कहा कि अनुरागपरा

उसकी बिदाकी तैयारी करदी तब बन्धुदत्ता अपने जानेका निश्चय जानकर अपनी सखी से बोली कि हे सखी! निस्सन्देह मेरा पति मुझे मथुरा लेजायगा और मैं वहां सोमस्वामी के बिना जी नहीं सक्ती हूं इससे कोई उपाय तुम मुझको बताओ उसके यह वचन सुनकर योगकी ज्ञाता वह सखी बोली कि मुझे दोमन्त्र मालूमहैं जिनमें से एक मंत्रको पढकर गलेमें सूत्र बांधने से मनुष्य शीघ्रही बन्दर होजाता है और दूसरे मंत्रको पढ़कर सूत्र खोल लेने से वह फिर मनुष्य होजाताहै और बन्दर होने में उसकी बुद्धि नहीं बदलती इससे जो तुम्हारा प्रिय सोमस्वामी इस बातको अङ्गीकार करे तो मैं उसे शीघ्रही बन्दर का बच्चा बनादूं तब तुम क्रीड़ाके बहाने से इसको मथुरा में लेजाना और मैं तुम्हें दोनो मन्त्र भी बतलाये देतीहूं उन मन्त्रोंके प्रभाव से तुम इसको सदैव बन्दर बना रखना और एकान्तमें पुरुष बनाकर इसके साथ भोगविलास करना अपनी सखी के यह वचन सुनकर उस बन्धुदत्ता ने मुझे एकान्तमें बुलाकर यह सब वृत्तान्त कहा तब मैंने कामके वशहोकर उसका कहना मानलिया और उसकी सखीने मुझे बन्दरका बच्चा बनादिया मुझे उसीरूप से लेजाकर बन्धुदत्ताने अपने पतिको दिखाकर कहा कि मेरी सखीने मुझे खेलनेके लिये यह बन्दर दियाहै वह मुझे देखकर बहुत प्रसन्नहुआ और मैं ज्ञानवान् तथा बोलने को समर्थ होकर भी बन्दर के समान उसकी गोदी में जाकर बैठगया और अपने चित्त में स्त्रियों के विचित्र चरित्र को शोचकर हँसता हुआ भी बन्दर ही के समान बनारहा क्योंकि यह कामदेव किस को नहीं ठगता है दूसरे दिन बन्धुदत्ता अपनी सखी से उन मन्त्रों को सीखकर पति के साथ मथुरा को चली और उस के पतिने उसके स्नेह

आज बहुत पीड़ितहै इससे मैं उदासीन होरहाहूं क्योंकि वह मुझे प्राणों से भी अधिक प्रियहै यह सुनकर ज्ञानी वानररूप सोमस्वामी ने कहा कि जाओ इस समय अनुरागपरा सोरही है उसको उसकी बताईहुई विद्याके बलसे गोदीमे लेकर मेरेपास चले आओ मैं तुम्हें यहां बड़ा आश्चर्य दिखाऊंगा उसके इसप्रकार कहनेसे निश्चयदत्त ने आकाशमार्गसे जाकर अपनी प्रियाको सोतीहुई देखकर गोदी में उठालिया परन्तु उसकी गोदी में सोताहुआ वह विद्याधर उसे नहीं दिखाई दिया क्योंकि उसने उसे पहले ही विद्याके प्रभाव से अदृश्य करदिया था उसे लेकर निश्चयदत्त शीघ्रही सोमस्वामी के पास आगया उस समय दिव्यदृष्टि सोमस्वामी ने उसे योग का उपदेश किया जिसके प्रभाव से उसने अनुरागपरा की गोदी में सोतेहुए विद्याधर को देखलिया उसे देखकर हा धिक्कार यह क्या बात है इसप्रकार कहतेहुए निश्चयदत्त को सोमस्वामी ने उसका संपूर्ण वृत्तान्त अपने ज्ञान के बलसे जानकर बतला दिया यह सुनकर उसके कुपितहोने पर वह रागभंजन विद्याधर जगकर आकाश को चलागया और अनुरागपरा भी जगकर अपने भेद को खुलगया देखकर, लज्जा से अधोमुख होकर बैठी उस समय निश्चयदत्त आंसूभर कर उससे बोला कि हे पापिन तूने मुझ विश्वासी को इसप्रकार से क्यों छला उसके यह कहने पर अनु-रागपरा धीरे २ रोती हुई विना कुछ उत्तरदिये आकाश में उड़कर अपने स्थानको चलीगई तब सोमस्वामी ने निश्चयदत्त से कहा कि तुम ने मेरे निवारण करनेपर भी उसके पास गमनकिया उसी तीव्र अनुराग रूपी अग्निका यह फल है कि तुम इस समय प-श्चात्ताप कररहेहो स्वभावही से चंचल स्त्रियों का और सम्पत्तियों

से मुझे एक नौकर के कन्धेपर चढ़वा दिया इसप्रकार हम सब लोग दोदिन चलकर एक बड़े बन में पहुँचे जिस में बड़े बड़े भयङ्कर बहुत से बन्दर रहते थे वह सब मुझे देखकर किलकारी मार २ कर मुझे बुलाते हुए आकर जिस नौकर के कन्धे पर मैं बैठाथा उसे काटने लगे तब वह भयसे विह्वल होकर मुझे पृथ्वी में छोड़कर भागगया और वह बन्दर मुझे पकड़ लेगये मेरे स्नेहसे बन्धुदत्ता तथा उसका पति और उसकेसब नौकर बन्दरों को पत्थर लाठी आदिके मारने से भी नहीं जीतसके, और लाचार होके वहांसे चलेगये तब वह सम्पूर्ण बन्दर मानों मेरे कुकर्म से कुपित होकर दांतोंसे तथा नखोंसे मेरा रोयां २ नोचने लगे उस समय गलेमें बँधे हुए सूत्रके प्रभावसे और श्रीशिवजीके स्मरणसे मैं बलवान् होकर उनसे अपने बंधनको छुटाकर वहांसे भागा और भागते २ उनकी दृष्टि से अलक्ष्य होकर अनेक बनों में घूमताहुआ इस बनमें आया यहां आकर मानो ब्रह्माने दुःखरूपी अन्धकार से अन्धे मुझ दीन पर इसलिये कुपित होके कि बन्धुदत्तासे भ्रष्टहुए तुझ दुष्टको क्या परस्त्री संगमका यह वानर होनाही फल मिलेगा और भी दुःखदिया कि अकस्मात् एक हाथिनी ने यहां आकर मुझे सूंड़से पकड़कर मेघोंके जलसे बहीहुई सर्पकी बामी के कीचड़में डालदिया मैं जानताहूं कि वह हाथिनी के रूपमें भाग्यसे प्रेरित कोई देवताथी, क्यों कि मैं बहुत यत्न करनेपर भी उस कीचसे निकल नहीं सका उसकीचड़ के सूख जानेपर मेरी मृत्यु नहीं हुई और निरन्तर श्रीशिवजी का ध्यान करनेसे मेरी क्षुधा तथा तृषाभी मिटगई और बहुत कालके पीछे आज तुमने मुझे इस सूखी कीचड़से निकाला हे मित्र ! श्री शिवजीकी कृपासे ज्ञानके प्राप्त होनेपर भी मुझे इतनी शक्ति नहीं

का क्या विश्वास है इससे अब पश्चात्ताप न करो अपने चित्तको शान्तकरो ब्रह्मा भी होनहार को नहीं मेटसक्ते हैं सोमस्वामी के शोक तथा मोहनाशक यह वचन सुनकर निश्चयदत्त वैराग्य युक्तहो के श्रीशिवजी की शरण में गया इस के उपरान्त परम मित्र कपिरूप सोमस्वामी के साथ वनमें रहतेहुए निश्चयदत्त के पास मोक्षदानार्थ तपस्विनी भाग्य वशसे आई उसने प्रणाम करते हुए निश्चयदत्त से पूछा कि तुम तो मनुष्यहो इस बन्दर के साथ तुम्हारी मित्रता कैसेहुई तब निश्चयदत्त ने अपना और अपने मित्रका सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाकर उससे दीनतापूर्वक कहा कि जो तुम कोई प्रयोग अथवा मंत्र जानती हो तो मेरे इस सुहृद सन्मित्र को पशुपने से छुड़ाओ यह सुनकर उसने बहुत अच्छा कहकर मन्त्रकी युक्तिसे सोमस्वामी के गले से वह सूत्र खोललिया सूत्र के खुलतेही वह बन्दरके स्वरूपको छोड़कर जैसा पहले था वैसेही मनुष्य होगया सोमस्वामी को मनुष्य बनाकर उस तपस्विनी के अन्तर्द्धान होजाने पर निश्चयदत्त और सोमस्वामी बहुतकाल तक बड़ा तपकरके परमगतिको प्राप्तहुए इसप्रकार से स्त्रियां प्रायः स्वभावही से चपल होती हैं उनके दुश्चरित प्रबन्धों को देखकर सत्पुरुषों को विवेक और वैराग्य उत्पन्न होता है कोई २ स्त्री पतिव्रताभी होती हैं जो आकाशको चन्द्रमाके समान अपने विशाल कुलको आभूषित करती हैं ॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेद्विपञ्चाशत्तमः प्रदीपः ॥ ५२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिपञ्चाशत्तमः प्रदीपः ॥ ५३ ॥

क्वचित्क्वचिद्विवेश्यापि साध्वीवप्रतिजायते ॥
काकथातुकुलीनाना मनाज्ञोदाहरणेकथा ५३ ॥

है कि मैं वन्दरभावसे छूटकर फिर मनुष्य होसकूं जब कोई योगिनी उसी मंत्रको पढकर मेरे गलेका सूत्र खोलेगी तब मैं फिर मनुष्य होजाऊंगा यह मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्तहै अब हे मित्र! तुमभी बताओ कि इस ऐसे अगम्य स्थानमें कैसे और किस निमित्त आयेहो व-न्दररूप उस सोमस्वामी के इसप्रकार वचन सुनकर निश्चयदत्त ने उज्जयिनी मे विद्याधरी के मिलने से लेकर अपने धैर्य के प्रभावसे जीती हुई यक्षिणी के द्वारा वहां पहुँचने तकका अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया निश्चयदत्त के यहवचन सुनकर वन्दर रूपधारी बुद्धिमान् सोमस्वामी वोला कि हे मित्र! तुमनेभी हमारेही समान स्त्रीके निमित्त बड़ा दुःखउठाया—किसीकी लक्ष्मी और स्त्री कदापि स्थिर नहीं होसक्ती है—स्त्रियां क्षणमात्र रागयुक्त नदी के समान कुटिल चित्त सर्पिणी के समान विश्वास करने के अयोग्य और विजली के समान चपल होती हैं इससे वह अनुरागपरा विद्या-धरी अभी तो तुमसे स्नेह करती है परन्तु अपने किसी सजातीय को पाकर तुमको मनुष्य जानकर छोड़देगी इससे तुम स्त्रीके नि-मित्त अन्त में नीरस किंशुक फल के समान परिश्रम मतकरो हे मित्र! तुम पुष्करावती विद्याधरपुरी को मतजाओ उसी यक्षिणी के कन्धेपर चढकर अपनी उज्जयिनीपुरी को लौटजाओ मेरा कहना मानों देखो मैंने पहले प्रेमके वशीभूतहोकर अपने मित्रका कहना नहीं माना था उससे अब तक दुःखपारहाहूं जब मेरा वन्धुदत्ता से स्नेहहोगया था तब भवशर्मा नाम मेरे मित्र ब्राह्मणने मुझको निषेध करने के लिये यह बातें कही थीं कि हे मित्र! स्त्रीके वशी-भूत मतहो क्योंकि स्त्रियों का चित्त बड़ा कठिन होताहै देखो मैं तुमको अपनाही वृत्तान्त सुनाताहूं यहीं काशीपुरी मे सोमदानाम

(अर्थ) कहीं २ वेश्याभी सुशीलहोती हैं फिर अन्य सत्कुलोत्पन्न स्त्रियों का तो क्याही कहना है जैसे इस विषय में आपको एक कथा सुनाताहूं ५३ ॥

पाटलिपुत्र नाम नगरमें विक्रमादित्य नाम एक राजाथा उसके बहुतसे घोड़े तथा हाथियों से सम्पन्न हयपति और गजपति नाम दो बड़े राजा परममित्रथे और प्रतिष्ठान देशकास्वामी बहुतसी पदाती सेनासे सम्पन्न नृसिंहदत्त नाम राजा उसकाशत्रुथा एक समय राजा विक्रमादित्य ने अपने मित्रो के बलके अभिमान से सहसा यह प्रतिज्ञाकी कि मैं राजा नृसिंहको इसप्रकारसे जीतूंगा कि जब वह द्वारपर आवे तो वन्दी और मागध लोग सेवक के समान उसका निवेदन मेरे सन्मुख करें इस प्रकार प्रतिज्ञा करके अपने मित्र हयपति और गजपति को बुलाकर उनको साथमें लेकर हाथी और घोड़ों से पृथ्वीको व्याकुल करता हुआ राजा विक्रमादित्य अपनी सम्पूर्ण सेना लेकर राजा नृसिंहदत्त से लड़ने को गया जब प्रतिष्ठान के निकट पहुँचा तब राजा नृसिंहदत्त उसे आताहुआ जानकर सब सेनाको तैयार करके युद्ध के लिये बाहर निकला उससमय उन दोनो राजाओं की सेनाओंका ऐसा घोर आश्चर्यकारी युद्धहुआ कि हाथी और घोड़ों के साथ पैदल लड़े युद्धहोते २ राजा नृसिंहदत्त के एक करोड़ पैदलों से विक्रमादित्य की सबसेना हारगई और विक्रमादित्य भागकर पाटलिपुत्र नगरको चलागया और उसके मित्र अपने२ देशको भागगये तब राजा नृसिंहदत्त वन्दीगणों से कीगई अपनी प्रशंसाको सुनता हुआ अपने नगरके भीतरगया तदनन्तर राजा विक्रमादित्य ने अपने कार्य्यको सिद्धहुआ न जानकर शोचा कि पराक्रमसे नहीं

एक बड़ी चपल रूपवती ब्राह्मणी गुप्त योगिनीथी उसके साथ भाग्यवश से मेरा समागम होगया और धीरे २ उसपर मेरा बहुत स्नेह होगया एकदिन मैंने उसको ईर्षा से क्रोधयुक्त होकर पीटा उसदुष्टा ने क्रोध को छिपाकर मेरीमार को सहलिया और दूसरे दिन क्रीड़ा के बहाने से मेरे गले में एक सूत्र बांधदिया सूत्र के बांधते ही में उसी समय बधिया बैल होगया तब उसने मुझे एक ऊंटवाले पुरुष से यथेच्छ धनलेकर बेचडाला वह ऊंटवाला मुझसे बोझा ढुलवाने लगा एक दिन बन्धमोचनिका नाम योगिनी ने मुझे भारसे पीड़ित देखकर और ज्ञान से यह जानकर कि सोमदत्त ने इसे पशुबनाया है मेरेस्वामी के परोक्ष में कृपा करके मेरे गलेका सूत्र खोलदिया मैं उसीसमय मनुष्यहोगया और मेरास्वामी मुझे भागा जानकर इधरउधर ढूंढनेलगा तदनन्तर भाग्यवशासे सोमदा ने मुझको बन्धमोचनी के साथ जाताहुआ देख लिया और क्रोध से जाज्वल्यमान होकर बन्धमोचनी से कहा कि इसपापीको तुमने पशुपने से क्यों छुड़ा दिया है हे पापिन ! तुझे इस कर्म्म का फल मिलेगा देख प्रातःकाल में तुझे और इसे दोनोंको मारडालूंगी उस के यह बचन कहकर चले जाने पर बन्धमोचनी ने उनसे बचनेके लिये मुझसे कहा कि सोमदा कालीघोड़ी का स्वरूप धरकर मुझे मारने के लिये आवेगी और मै लाल घोड़ीका स्वरूप धारण करूंगी जब मेरा और उसका युद्ध होने लगे तब तुम खड्ग लेकर पीछे से उसे मारना इसप्रकार से हम तुम दोनों मिलकर उसे मार लेंगे इससे तुम प्रातःकाल मेरे घरपर आजाना यह कहकर उसने मुझे अपना घर दिखला दिया और अपने घरमें चली गई तब मैं एकही जन्ममें अनेकजन्मो का अनुभवकरके अपने घरको आया

जीतने के योग्य शत्रुको बुद्धि से जीतना चाहिये इसमें चाहे मेरी कोई निन्दाभी करे परन्तु प्रतिज्ञा झूंठी न होय यह शोचकर और योग्य मन्त्रियोंपर राज्यका भार रखकर बुद्धिवरनाम मुख्य मन्त्री सौ राजपुत्र तथा पांच कुलीन शूरोंको साथमें लेकर राजा विक्रमादित्य भिक्षुकोंकासा भेषबनाकर प्रतिष्ठाननाम नगरको गया वहाँ पहुँचकर मदनमाला नाम वेश्या के राजमन्दिर के समान सुन्दर भवन में गया वह भवनशिखरोंपर लगीहुई पताकाओं के वायुसे चंचल वस्त्रों से मानों राजाको बुलारहाथा उस भवन के मुख्य पूर्वदिशाके फाटकपर रात्रि दिन अनेकप्रकार के शस्त्रोंको धारणकिये हुये बीस हजार पैदल रक्षक रहते थे अन्य तीन फाटकोंपर दश २ हजार पैदल शूर रक्षक रहते थे ऐसे बड़ेभारी उस भवनके द्वारपर जाकर विक्रमादित्य अपने भीतर जाने के लिये निवेदन करवाकर और प्रतीहारके द्वारा आज्ञापाकर अपने साथियोंसमेत भीतरचला उस मन्दिर में कहीं बड़े २ सुन्दर सैकड़ों घोड़े बँधे थे कहीं बड़े २ उन्नत हाथी झूमते थे कहींपर अनेक २ प्रकार देदीप्यमान शस्त्ररक्खे थे कहीं अनेक प्रकारकेसुन्दर रत्नोंसे देदीप्यमान धनके समूह के समूह से भरेहुये खज़ाने इकट्ठे थे कहीपर सैकड़ों सेवकलोग अपना २ कार्य्यकररहेथे कहींपर सैकड़ों बन्दियों के समूह उच्चस्वरसे स्तुति कररहे थे और कहींपर मृदंग की ध्वनिके अनुसारमधुरगान होरहाथा इसप्रकार शोभा देखता हुआ सात डेवढ़ियों का उल्लंघन करके अपने सब साथियोंसमेत मदनमाला के रहने के बड़े उन्नत दिव्य सुन्दरस्थान में पहुँचा मदनमाला भी अपने सेवकों के द्वारा यह सुनकर कि यह सम्पूर्ण घोड़े आदि पदार्थों को बड़े ध्यानसे देखताहुआ आयाहै उसे कोई

और प्रातःकाल खड्ग लेकर वन्धमोचनी के मकानपर गया वहां उससमय सोमदा कालीघोड़ी का स्वरूप धारण करके आई और वन्धमोचनी ने लालघोड़ी का स्वरूप धारणकिया जब उन दोनों का लत्तियों और दांतोंसे युद्ध होनेलगा तब मैं पीछेसे सोमदाके खड्ग मारने लगा और वन्धमोचनी ने उस सोमदाको मारडाला उसे मरी हुई देखकर मैं निर्भय होगया और पशुपने का स्मरण करके फिर कभी मैंने परस्त्रीका मनसे भी ध्यान न किया चपलता साहस और डाकिनी होना यह तीनों दोष स्त्रियोंके प्रायः मनुष्यों को भयदायक हैं इससे डाकिनी की सखी वन्धुदत्ता से तुम स्नेह न करो जिसे अपने पतिपरही स्नेह नहीं है उसे तुमपर कैसे स्नेह होसक्ताहै अपने मित्र भवशर्म्मा के ऐसा कहनेपर भी मैंने उसका कहना नहीं किया इसीसे मैं इस गति को प्राप्त हुआ हूं इससे अब मैं तुमको समझाताहूं कि अनुरागपरा से कभी स्नेह न करो यह अपने सजातीय पुरुष को पाकर तुमको अवश्य छोड़ देगी जैसे भौंरी नवीन २ पुष्पों की वाञ्छा करती है वैसेही स्त्री भी नवीन २ पुरुषों की अभिलाष किया करती है इससे हे मित्र ! जो तुम मेरा कहना नहीं मानोगे तो तुमको मेरेही समान पश्चात्ताप करना पड़ेगा कपिरूप सोमस्वामी के यह बचन निश्चयदत्तके अनुरागपरासे पूर्ण हृदय में नहीं भाये और उसने सोमस्वामी से कहा कि विद्याधरों के शुद्ध कुल में उत्पन्न हुई अनुरागपरा मुझे छोड़कर व्यभिचार नहीं करेगी इसप्रकार उन दोनों की वार्त्ता होतेही होते सन्ध्यासे रक्त श्रीसूर्य्य भगवान् मानो निश्चयदत्तकी प्रसन्नता के लिये अस्ताचल को चलेगये—तदनन्तर अग्रदूती के समान रात्रि के आजानेपर वह शृंगोत्पादनी नाम यक्षिणी निश्चयदत्तके पास

छिपाहुआ उत्तम पुरुष जानकर कुछदूर आगे चलकर प्रणाम कर के लेगई और भीतर लेजाकर राजाकेयोग्य आसन पर बैठाकर बड़ा सत्कार किया राजा भी उसके रूप लावण्य तथा विनय से वशीभूत होकर अपनेको नहीं प्रगट करके उसकी बड़ी प्रशंसा करनेलगा उससमय मदनमालाने स्नान पुष्प अनुलेपन वस्त्र तथा बहुमूल्य आभूषणो से राजाका सन्मान करके उसके सम्पूर्ण साथियों को रोजीना दिवाकर मन्त्री समेत राजाको अति उत्तम भोजन करवाये और उसके साथ मद्यपानादि क्रीड़ासे दिन व्यतीत करके रात्रि के समय उसके सुन्दर स्वरूप से वशीभूत होकर अपना शरीर भी उसके अर्पण करदिया इसप्रकार मदनमाला से सेवा कियागया राजा विक्रमादित्य अपने को छिपाकर चक्रवर्तियों के समान ऐश्वर्य्यों को भोग करता हुआ रहनेलगा वह नित्यही याचकोंको जितना धन देता था सो सब मदनमाला अपने पाससे दिलवाती थी और उससे भोग कियेगये अपने शरीर तथा धनको धन्य मानती थी वह राजाके ऐसी वशीभूत होगई थी कि अन्य पुरुषों से पराङ्मुख होकर अत्यन्त अनुरक्त राजा नृसिंहदत्तको भी अपने युक्तिपूर्वक निवृत्त करदिया इसप्रकार उसके सेवनको देखकर राजाने अपने बुद्धिवर मन्त्री से एकान्त में कहा कि धनकी चाहनेवाली वेश्या काम में भी धनके विना नहीं प्रसन्न होती है ब्रह्माने मानो सम्पूर्ण याचकों का लोभ वेश्याओं को ही देदिया है परन्तु यह मदनमाला मुझे अपने धनको भोग करतेहुये देखकर विरक्त तो नहीं होती किन्तु स्नेहसे अधिक प्रसन्न होतीहै तो इससमय इसकेसाथ कैसे प्रत्युपकार करना चाहिये जिससे मेरी प्रतिज्ञा भी पूरी होजाय यह सुनकर बुद्धिवर मंत्रीने

एक बड़ी चपल रूपवती ब्राह्मणी गुप्त योगिनीथी उसके साथ भाग्यवश से मेरा समागम होगया और धीरे २ उसपर मेरा बहुत स्नेह होगया एकदिन मैंने उसको ईर्षा से क्रोधयुक्त होकर पीटा उसदुष्टा ने क्रोध को छिपाकर मेरीमार को सहलिया और दूसरे दिन क्रीड़ा के बहाने से मेरे गले में एक सूत्र बांधदिया सूत्र के बांधते ही मैं उसी समय बधिया बैल होगया तब उसने मुझे एक ऊंटवाले पुरुष से यथेच्छ धनलेकर बेचडाला वह ऊंटवाला मुझसे बोझा ढुलवाने लगा एक दिन बन्धमोचनिका नाम योगिनी ने मुझे भारसे पीड़ित देखकर और ज्ञान से यह जानकर कि सोमदत्त ने इसे पशुबनाया है मेरेस्वामी के परोक्ष में कृपा करके मेरे गलेका सूत्र खोलदिया मैं उसीसमय मनुष्यहोगया और मेरास्वामी मुझे भागा जानकर इधरउधर ढूंढ़नेलगा तदनन्तर भाग्यवशसे सोमदा ने मुझको बन्धमोचनी के साथ जाताहुआ देख लिया और क्रोध से जाज्वल्यमान होकर बन्धमोचनी से कहा कि इसपापीको तुमने पशुपने से क्यों छुड़ा दिया है हे पापिन ! तुझे इस कर्म्म का फल मिलेगा देख प्रातःकाल में तुझे और इसे दोनोंको मारडालूंगी उस के यह बचन कहकर चले जाने पर बन्धमोचनी ने उनसे बचनेके लिये मुझसे कहा कि सोमदा कालीघोड़ी का स्वरूप धरकर मुझे मारने के लिये आवेगी और मैं लाल घोड़ीका स्वरूप धारण करूंगी जब मेरा और उसका युद्ध होने लगे तब तुम खड्ग लेकर पीछे से उसे मारना इसप्रकार से हम तुम दोनो मिलकर उसे मार लेंगे इससे तुम प्रातःकाल मेरे घरपर आजाना यह कहकर उसने मुझे अपना घर दिखला दिया और अपने घरमें चली गई तब मैं एकही जन्ममें अनेकजन्मो का अनुभवकरके अपने घरको आया

जीतने के योग्य शत्रुको बुद्धि से जीतना चाहिये इसमें चाहे मेरी कोई निन्दाभी करे परन्तु प्रतिज्ञा भूंठी न होय यह शोचकर और योग्य मन्त्रियोंपर राज्यका भार रखकर बुद्धिवरनाम मुख्य मन्त्री सौ राजपुत्र तथा पांच कुलीन शूरोंको साथमें लेकर राजा विक्रमादित्य भिक्षुकोंकासा भेषबनाकर प्रतिष्ठाननाम नगरको गया वहाँ पहुँचकर मदनमाला नाम वेश्या के राजमन्दिर के समान सुन्दर भवन में गया वह भवनशिखरोंपर लगीहुई पताकाओं के वायुसे चंचल वस्त्रों से मानों राजाको बुलारहाथा उस भवन के मुख्य पूर्वदिशाके फाटकपर रात्रि दिन अनेकप्रकार के शस्त्रोंको धारणकिये हुये बीस हजार पैदल रक्षक रहते थे अन्य तीन फाटकोंपर दश २ हजार पैदल शूर रक्षक रहते थे ऐसे बड़ेभारी उस भवनके द्वारपर जाकर विक्रमादित्य अपने भीतर जाने के लिये निवेदन करवाकर और प्रतीहारके द्वारा आज्ञापाकर अपने साथियोंसमेत भीतरचला उस मन्दिर में कहीं बड़े २ सुन्दर सैकड़ों घोड़े बँधे थे कही बड़े २ उन्नत हाथी झूमते थे कहींपर अनेक २ प्रकार देदीप्यमान शस्त्ररक्खे थे कही अनेक प्रकारकेसुन्दर रत्नोंसे देदीप्यमान धनके समूह के समूह से भरेहुये खजाने इकट्ठे थे कहींपर सैकड़ों सेवकलोग अपना २ कार्य्यकररहेथे कहीपर सैकड़ों वन्दियो के समूह उच्चस्वरसे स्तुति कररहे थे और कहीपर मृदंग की ध्वनिके अनुसारमधुरगान होरहाथा इसप्रकार शोभा देखता हुआ सात डेवढ़ियों का उल्लंघन करके अपने सब साथियोंसमेत मदनमाला के रहने के बड़े उन्नत दिव्य सुन्दरस्थान में पहुँचा मदनमाला भी अपने सेवकों के द्वारा यह सुनकर कि यह सम्पूर्ण घोड़े आदि पदार्थों को बड़े ध्यानसे देखताहुआ आयाहै उसे कोई

और प्रातःकाल खड्ग लेकर वन्धमोचनी के मकानपर गया वहां उससमय सोमदा कालीघोड़ी का स्वरूप धारण करके आई और वन्धमोचनी ने लालघोड़ी का स्वरूप धारणकिया जब उन दोनों का लत्तियों और दांतोंसे युद्ध होनेलगा तब मैं पीछेसे सोमदाके खड्ग मारने लगा और वन्धमोचनी ने उस सोमदाको मारडाला उसे मरी हुई देखकर मैं निर्भय होगया और पशुपने का स्मरण करके फिर कभी मैंने परस्त्रीका मनसे भी ध्यान न किया चपलता साहस और डाकिनी होना यह तीनों दोष स्त्रियोंके प्रायः मनुष्यों को भयदायक हैं इससे डाकिनी की सखी वन्धुदत्ता से तुम स्नेह न करो जिसे अपने पतिपरही स्नेह नहीं है उसे तुमपर कैसे स्नेह होसक्ताहै अपने मित्र भवशर्म्मा के ऐसा कहनेपर भी मैंने उसका कहना नहीं किया इसीसे मैं इस गति को प्राप्त हुआ हूं इससे अब मैं तुमको समझाताहूं कि अनुरागपरा से कभी स्नेह न करो यह अपने सजातीय पुरुष को पाकर तुमको अवश्य छोड़ देगी जैसे भौंरी नवीन २ पुष्पों की वाञ्छा करती है वैसेही स्त्री भी नवीन २ पुरुषों की अभिलाष किया करती है इससे हे मित्र! जो तुम मेरा कहना नहीं मानोगे तो तुमको मेरेही समान पश्चात्ताप करना पड़ेगा कपिरूप सोमस्वामी के यह बचन निश्चयदत्तके अनुराग-परासे पूर्ण हृदय में नहीं भाये और उसने सोमस्वामी से कहा कि विद्याधरों के शुद्ध कुल में उत्पन्न हुई अनुरागपरा मुझे छोड़कर व्यभिचार नही करेगी इसप्रकार उन दोनों की वार्त्ता होतेही होते सन्ध्यासे रक्त श्रीसूर्य्य भगवान् मानो निश्चयदत्तकी प्रसन्नता के लिये अस्ताचल को चलेगये—तदनन्तर अग्रदूती के समान रात्रि के आजानेपर वह शृंगोत्पादनी नाम यक्षिणी निश्चयदत्तके पास

छिपाहुआ उत्तम पुरुष जानकर कुछदूर आगे चलकर प्रणाम कर के लेगई और भीतर लेजाकर राजाकेयोग्य आसन पर बैठाकर बड़ा सत्कार किया राजा भी उसके रूप लावण्य तथा विनय से वशीभूत होकर अपनेको नहीं प्रगट करके उसकी बड़ी प्रशंसा करनेलगा उससमय मदनमालाने स्नान पुष्प अनुलेपन वस्त्र तथा बहुमूल्य आभूषणों से राजाका सन्मान करके उसके सम्पूर्ण साथियों को रोजीना दिवाकर मन्त्री समेत राजाको अति उत्तम भोजन करवाये और उसके साथ मद्यपानादि क्रीड़ासे दिन व्यतीत करके रात्रि के समय उसके सुन्दर स्वरूप से वशीभूत होकर अपना शरीर भी उसके अर्पण करदिया इसप्रकार मदनमाला से सेवा कियागया राजा विक्रमादित्य अपने को छिपाकर चक्रवर्तियों के समान ऐश्वर्य्यों को भोग करता हुआ रहनेलगा वह नित्यही याचकोंको जितना धन देता था सो सब मदनमाला अपने पाससे दिलवाती थी और उससे भोग कियेगये अपने शरीर तथा धनको धन्य मानती थी वह राजाके ऐसी वशीभूत होगई थी कि अन्य पुरुषों से पराङ्मुख होकर अत्यन्त अनुरक्त राजा नृसिंहदत्तको भी अपने युक्तिपूर्वक निवृत्त करदिया इसप्रकार उसके सेवनको देखकर राजाने अपने बुद्धिवर मन्त्री से एकान्त मे कहा कि धनकी चाहनेवाली वेश्या काम में भी धनके विना नहीं प्रसन्न होती है ब्रह्माने मानो सम्पूर्ण याचकों का लोभ वेश्याओं को ही देदिया है परन्तु यह मदनमाला मुझे अपने धनको भोग करतेहुये देखकर विरक्त तो नहीं होती किन्तु स्नेहसे अधिक प्रसन्न होतीहै तो इससमय इसकेसाथ कैसे प्रत्युपकार करना चाहिये जिससे मेरी प्रतिज्ञा भी पूरी होजाय यह सुनकर बुद्धिवर मंत्रीने

आई उस यक्षिणी को आया देखकर निश्चयदत्त ने सोमस्वामी से जाने के लिये आज्ञामांगी उसने कहा अच्छा जाओ परन्तु मेरा स्मरण रखना इसप्रकार उससे आज्ञा लेकर निश्चयदत्त उस यक्षिणी के कन्धे पर चढ़कर वहांसे चला और अर्द्धरात्रि के समय हिमाचल पर पुष्करावती नगरी मे पहुँचा उससमय अनुरागपरा अपनी विद्याके प्रभावसे उसके आगमन को जानकर उसे लिवा लाने के लिये नगरी के बाहर आई उसे आते देखकर यक्षिणी ने निश्चयदत्त से कहा कि नेत्रों को आनन्द देनेवाली चन्द्रमा की दूसरी मूर्त्ति के समान तुम्हारी कान्ता आरही है तो अब में जाती हूं यह कहकर और उसे अपने कन्धे से उतारकर यक्षिणी प्रणाम करके चलीगई तब अनुरागपराने बहुतकाल से उत्कंठित होने के कारण बहुत गाढ आलिंगन करके उस को प्रसन्न किया और भी बहुत क्लेशों को सहकर प्राप्त होनेवाली अनुरागपरासे यथेच्छ आलिंगन कर के मानो आनन्द के कारण अपने शरीर में न समाकर उसके हृदय मे प्रविष्ट सा होगया तदनन्तर अनुराग-पराके साथ गान्धर्व विवाहकरके विद्याके बल से उसी के बनाये हुए पुर मे रहनेलगा और उसी की विद्याके प्रभाव से माता पिता ने भी उसे नही देखा फिर निश्चयदत्तने उसके पूछने पर अपने मार्ग के सब क्लेशों का वर्णन किया उन क्लेशोंको सुनकर अनु-रागपरा उसपर अत्यन्त प्रसन्नहुई और दिव्य ऐश्वर्य्यों से उसका सेवन करनेलगी निश्चयदत्त ने अपने मार्ग के वृत्तान्त में वान-ररूपी सोमस्वामी की भी कथा अनुरागपरा को सुनाकर कहा कि हे प्रिये ! जो तुम्हारे उपाय से मेरा मित्र पशुयोनि से छूटजाय तो बड़ा उपकार होय उसके यह वचन सुनकर अनुरागपरा ने कहा

कहा कि जो आपके चित्तमें ऐसाही है तो प्रपञ्च बुद्धिनाम भिक्षुक के दियेहुये अमूल्य रत्नोंसे कुछ इस को भी दीजिये मंत्रीके यह वचन सुनकर राजा बोला कि उन सम्पूर्ण रत्नोंके भी देनेसे इसका प्रत्युपकार नहीं होसक्ता परंतु इसी भिक्षुक के सम्बन्ध मे एक और उपाय है जिससे इसका प्रत्युपकार होजायगा---यह सुनकर मंत्री ने कहा कि हे राजा ! उस भिक्षुकने आपकी क्यों सेवाकी थी वह सब वृत्तान्त मुझसे भी कहिये तब राजाने कहा कि सुनो मैं तुमसे उसकी सब कथा कहताहूं पहले पाटलिपुत्र नगर में प्रपञ्च बुद्धि नाम भिक्षुक ने मेरी सभामें आकर एक सम्पुट (एक प्रकार का डिब्बा) मुझे दिया मैंने उसे लेकर विना खोलेही खज़ाञ्ची को देदिया इसीप्रकार से वह वर्ष दिनतक रोज़ एक सम्पुट लातारहा और मैं विना खोलेही अपने खज़ाञ्ची को देतारहा एक दिन भिक्षुक का दियाहुआ डिब्बा मेरे हाथसे गिरकर दैवयोग से खुल गया और उसमे से अग्निके समान प्रज्वलित एक महारत्न निकला मानों उसने अपना हृदय खोलकर मुझे दिखला दिया उस रत्नको देखकर मैने और सब डिब्बे भी मँगवाकर उनमें से सब रत्न निकलवा लिये और उस समय प्रपञ्चबुद्धि से कहा कि तुम इन बहुमूल्य रत्नोंसे मेरा नित्य सेवन क्यों करतेहो तब उसने एकान्त मे मुझसे कहा कि इस आनेवाली कृष्णपक्षकी चतुर्दशी को रात्रिके समय श्मशान में मुझे कोई विद्या सिद्ध करनी है हे वीर ! मैं चाहता हूं कि वहां [illegible] ये आप आइये

और कुछ दिनों के पीछे वह कृष्णपक्ष की चतुर्दशी आई और मुझे उस भिक्षुकके वचनो का स्मरण आगया, तब मैं सम्पूर्ण आह्निक करके सायंकाल तक अपने सम्पूर्ण कार्य्य करता रहा और सन्ध्या वन्दन के उपरान्त कुछ सोगया उस समय गरुड़ पर चढेहुये लक्ष्मीजी समेत भक्तवत्सल भगवान् विष्णु ने स्वप्न में मुझे दर्शन देकर कहा कि यह प्रपंचबुद्धि नाम भिक्षुक अपने नामके अर्थ से युक्त है यह तुमको श्मशान में लेजाकर बलिदान करना चाहता है इससे वह जो कुछ कहै वही न करने लगना तुम उससे कहना कि पहिले तू ऐसाही कर फिर मैं भी उसे सीखकर करूंगा जब वह उसीप्रकार से करने लगे तब उसीक्षण तुम उसको मार डालना इसप्रकार से जो सिद्धि उसको होनेवाली है वह तुम को हो जायगी यह कहकर भगवान्के अन्तर्द्धान होजानेपर मैंने जगकर शोचा कि विष्णु भगवान् की कृपा से मुझे इस मायावी की माया मालूम होगई इस प्रकार शोचकर दूसरे प्रहर में खड्ग लेकर श्मशान को गया वहां वह भिक्षुक पूजनकर रहा था वह मुझे देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर बोला कि हे राजा! नेत्र बन्द करके अंगों को फैलाकर नीचेको मुख करके पृथ्वी में लेटजाओ इस प्रकार से हम तुम दोनों को बड़ी सिद्धि हो जायगी तब मैंने उससे कहा कि तुम प्रथम इस रीतिसे लेटो उसे देखकर मैं भी उसी रीतिसे लेटूंगा यह सुनकर वह मूर्ख उसी प्रकार से पृथ्वी में लेट गया तब मैंने खड्ग से उसका शिर काटडाला उस समय यह आकाशवाणी हुई कि, हे राजा! तुमने जो इस महापापी भिक्षुकको मारा यह बहुत अच्छा किया जो यह आकाश में अपनी गति सिद्ध करना चाहताथा वह तुमको सिद्धहोगई और मैं कुबेरहूं

उससमय अन्य अन्य सब रानी तो आई थीं परन्तु गुणवरा पूजामें थी फिर उस गुणवरा समेत पूजन करके आया और उस रसमें से कुछ भी बचा न देखकर उस वैद्य से बोला कि तुमने गुणवरा के लिये कुछ भी नहीं रक्खा जिसके लिये यह सम्पूर्ण कार्य्य किया था उसीको तुम भूलगये राजा के यह वचन सुनकर वैद्यके उदासीन होजाने पर राजा ने रसोईदारों से कहा क्या उस बकरे के मांस में से अभी कुछ बाकी है उन्होंने कहा कि मांस तो नहीं रहा परन्तु सींग बाकी हैं तब वैद्यने कहा कि यह बहुतही अच्छा है सींगों के भीतर के गूदेका रस अति उत्तम होता है यह कहकर सींगो के गूदे का रस बनवाकर वही चूर्ण उसमें भी मिलाकर गुणवराको पिलादिया तब राजा की वह निन्नानवेरानियां गर्भवती हुईं और समय पाकर सबके पुत्र उत्पन्नहुये और रानी गुणवरा ने सबके पीछे गर्भवती होने के कारण सबके पीछे पुत्र उत्पन्न किया राजावीरभुजने उस पुत्रको सींगोके रससे उत्पन्नहोने के कारण उसका नाम शृंगभुज रक्खा सम्पूर्ण भाइयोंसमेत बढताहुआ शृंगभुज अवस्था में तो सबसे छोटा था परन्तु गुणों में सबसे श्रेष्ठहुआ वह रूपमें काम के समान धनुर्वेद में अर्जुन समान और बलमें भीमसेन के समान था इस प्रकार शृंगभुज को गुणवान् देखकर वीरभुजकी सम्पूर्ण रानियां गुणवरा से ईर्षा करने लगीं उनमें से अयशोलेखा नाम रानी ने सब से सलाह करके जब राजा उसके यहां आया तब उदासीन होकर राजासे कहा कि हेआर्य्यपुत्र! आपतो दूसरों के दोषोंको मिटातेहो फिर अपने घरके दूषणोंको कैसेसहतेहो यह जो सुरक्षितनाम सम्पूर्ण अन्तःपुर का अधिकारी है उसके साथ आपकी गुणवरा रानी आसक्त है और उसके सिवाय अन्य

तुम्हारे धैर्य्यसे तुमपर बड़ा प्रसन्नहूं इस से तुम जो चाहो सो वरमुझ से मांगो यह कहकर प्रकटहुए कुबेरजी को प्रणाम करके मैंने कहा कि जिस समय मे आपसे कोई अपने प्रयोजन का वर चाहूंगा तब आप प्रकटहोकर मुझे वही वर दीजियेगा तब कुबेर एवमस्तु कहकर अन्तर्द्धान होगये और मैं अपने घरको चलाआया यह मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्त है इससे मैं अब कुबेरके वरसे मदनमाला का प्रत्युपकार करूंगा तो हे बुद्धिवर ! तुम इनराजपुत्रों को अपनेसाथ लेकर पाटलिपुत्र को जाओ और मैं भी मदनमाला का प्रत्युपकार करके वहीं चला आऊंगा और अवसरपाकर फिर यहां आऊंगा यह कहकर राजाने अपने मंत्री को परिकर समेत विदाकर दिया और उस के चलेजाने पर उस दिनको व्यतीत करके रात्रि के समय होनेवाले वियोग से उत्कंठित होकर मदनमाला के साथ वह रात्रि व्यतीत की और मदनमाला भी अपनी अन्तरात्मा से मानो राजाको दूरहुआ सा जानकर बारम्बार आलिंगन करके उत्कंठा से रात्रिभर सोई नहीं प्रातःकाल राजा सन्ध्या वन्दनादिक आवश्यक कार्य करके अकेलाही देवमंदिर में जपकरने के बहाने

मदनमाला भी विरहको सहने के लिये समर्थ न होकर अपनेसम्पूर्ण गृहादिक ब्राह्मणों को दान करके राजा के साथ चलने को उद्यतहुई तब राजा विक्रमादित्य मदनमालाके हाथी घोड़े व सब सेनाको साथ में लेकर उस समेत अपने पाटलिपुत्र नगरमें आया और राजा नृसिंह से मित्रता होने के कारण अपने देशमें भी अत्यन्त आनन्दपूर्वक मदनमाला के साथ रहनेलगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे द्विपञ्चाशत्तम प्रदीप. ५२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिपंचाशत्तमःप्रदीपः ५३ ॥

पत्युःपरंनकिमपिस्त्रियःसाध्वीयथासती ।
राज्ञागुणवरागर्तेपिहितापिचिखेदनो ५३ ॥

(अर्थ) पतिव्रता स्त्रियों को पतिसे परे और कुछ प्रिय नहीं है जैसे रानी गुणवरा राजा से तहखाने में बन्द करी भी खेद न पाई अर्थात् अपने को बुरी समझी ५३ ॥

वर्द्धमान नाम पुरमें वीरभुज नाम एक बड़ा धर्मात्मा राजा था उस राजाके सौ रानियां थी उनमें से गुणवरा नाम रानी राजा को अत्यन्त प्यारी थी उन सौ रानियों मे किसी के भी कोई पुत्र न था एक समय राजा ने श्रुतवर्द्धननाम वैद्य से पूछा कि कोई ऐसी भी ओषधिहै जिससे पुत्र होसके यह सुनकर वैद्यने कहा कि हे महाराज ! आप वनका बकरा मँगाइये तो मैं ऐसी ओषधि बना सक्ता हूं वैद्य के इस वचन को सुनकर राजाने उसी समय प्रती-हारको भेजकर वनका बकरा मँगादिया वैद्यने उस बकरे को रसो-ईदारों को देदिया कि इसके मांसका बड़ा सुन्दर रस बनालाओ जब रसबनकर आगया तब उसने सम्पूर्ण रानियों को बुल-वाकर उस रसमें कोई चूर्ण मिलाकर थोड़ा २ सबको पिला दिया

उससमय अन्य अन्य सब रानी तो आई थी परन्तु गुणवरा पूजामें थी फिर उस गुणवरा समेत पूजन करके आया और उस रसमें से कुछ भी बचा न देखकर उस वैद्य से बोला कि तुमने गुणवरा के लिये कुछ भी नहीं रक्खा जिसके लिये यह सम्पूर्ण कार्य्य किया था उसीको तुम भूलगये राजा के यह वचन सुनकर वैद्यके उदासीन होजाने पर राजा ने रसोईदारों से कहा क्या उस बकरे के मांस मेंसे अभी कुछ बाकी है उन्होने कहा कि मांस तो नहीं रहा परन्तु सींग बाकी हैं तब वैद्यने कहा कि यह बहुतही अच्छा है सींगों के भीतर के गूदेका रस अति उत्तम होता है यह कहकर सींगों के गूदे का रस बनवाकर वही चूर्ण उसमें भी मिलाकर गुणवराको पिलादिया तब राजा की वह निन्नानबेरानियां गर्भवती हुई और समय पाकर सबके पुत्र उत्पन्नहुये और रानी गुणवरा ने सबके पीछे गर्भवती होने के कारण सबके पीछे पुत्र उत्पन्न किया राजावीरभुजने उसपुत्रको सींगो के रससे उत्पन्नहोने के कारण उसका नाम शृंगभुज रक्खा सम्पूर्ण भाइयोसमेत बढताहुआ शृंगभुज अवस्था में तो सबसे छोटा था परन्तु गुणो में सबसे श्रेष्ठहुआ वह रूपमें काम के समान धनुर्वेद मे अर्जुन समान और बलमें भीमसेन के समान था इस प्रकार शृंगभुज को गुणवान् देखकर वीरभुजकी सम्पूर्ण रानियां गुणवरा से ईर्षा करने लगीं उनमे से अयशोलेखा नाम रानी ने सब से सलाह करके जब राजा उसके यहां आया तब उदासीन होकर राजासे कहा कि हेआर्य्यपुत्र आपतो दूसरो के दोषोंको मिटातेहो फिर अपने घरके दूषणोंको कैसेसहतेहो यह जो सुरक्षितनाम सम्पूर्ण अन्तःपुरों का अधिकारी है उसके साथ आपकी गुणवरा रानी आसक्त है और उसके सिवाय अन्य

तुम्हारे धैर्य्यसे तुमपर बड़ा प्रसन्नहूं इस से तुम जो चाहौ सो वरमु
से मांगो यह कहकर प्रकटहुए कुवेरजी को प्रणाम करके मैंने कह
कि जिस समय में आपसे कोई अपने प्रयोजन का वर चाहूं
तव आप प्रकटहोकर मुझे वही वर दीजियेगा तव कुवेर एवमस
कहकर अन्तर्द्धान होगये और मैं अपने घरको चलाआया यह मे
सम्पूर्ण वृत्तान्त है इससे मैं अव कुवेरके वरसे मदनमाला का प्रत्युप
कार करूंगा तो हे वुद्धिवर! तुम इनराजपुत्रों को अपनेसाथ लेक
पाटलिपुत्र को जाओ और मैं भी मदनमाला का प्रत्युपकार करक
वहीं चला आऊंगा और अवसरपाकर फिर वहां आऊंगा यह कह
कर राजाने अपने मंत्री को परिकर समेत विदाकर दिया और उ
के चलेजाने पर उस दिनको व्यतीत करके रात्रि के समय होने
वाले वियोग से उत्कंठित होकर मदनमाला के साथ वह रात्रि व्य
तीत की और मदनमाला भी अपनी अन्तरात्मा से मानों राजाक
दूरहुआ सा जानकर वारम्वार आलिंगन करके उत्कंठा से रात्रिभ
सोई नहीं प्रातःकाल राजा सन्ध्या वन्दनादिक आवश्यक का
करके अकेलाही देवमंदिर में जपकरने के वहाने से गया औ
वहां जाकर कुवेर देवता का आवाहन करके प्रकट हुए कुवेर ज
को प्रणाम करके वह वर जो उन्हों ने पहले देने को कहाथा उन
से मांगा कि हे देव! सुवर्ण के पांच अक्षयपुरुष मुझे दीजिये जिन
के अंग निरन्तर काटनेपर भी पूरेही वनजायाकरैं तव कुवेरदेवत
एवमस्तु कह कर अन्तर्द्धान हो गये और राजा को उसी समय
सुवर्ण के पांचपुरुष उसी मंदिर में दिखाई दिये तव राजा देवमंदि
निकलकर अपनी प्रतिज्ञाको स्मरण करताहुआ आकाशमार्ग

पुरुष अन्तःपुरवालों को मिल भी नहीं सक्ताहै क्योंकि अन्य सब रक्षक तो नपुंसकहैं यह बात आपकी सम्पूर्ण रानियों को विदित होगईहै उसके यह बचन सुनकर राजाने बहुत विचारकरके अपनी सम्पूर्ण रानियों से जाकर पूछा उन सबने भी कपट से यही बात राजासे कही तब बुद्धिमान् राजा वीरभुजने क्रोधको रोककर विचारा कि रानी गुणवरा सुरक्षित पर ऐसे दोषका सम्भव नहीं होसक्ताहै परन्तु यह प्रवाद तो इसप्रकारसे फैलाहो है इससे बिना निश्चय किये इस बातका भेद किसी के आगे नहीं खोलना चाहिये और युक्तिपूर्वक इन दोनों को पृथक् २ रखकर देखना चाहिये कि क्या होताहै यह निश्चयकरके राजाने दूसरे दिन सुरक्षितको बुलाकर क्रोधपूर्वक कहा कि हे पापी! मैंने सुनाहै कि तुमने ब्रह्महत्या की है इससे जब तक तुम सम्पूर्ण तीर्थयात्रा न कर आओगे तबतक मैं तुम्हारा स्वरूप नहीं देखूंगा यह सुनकर उसने घबराकर कहा कि हे महाराज! मैंने ब्रह्महत्या कहां की है तब राजाने उससे फिर कहा कि धृष्टता मतकरो पापके नाश करनेवाले उस कश्मीर देशको जाओ जहां विष्णुभगवान् से पवित्र कियागया विजयक्षेत्र नन्दिक्षेत्र तथा वाराहक्षेत्रहै और जहां बहतीहुई भगवती गंगाका वितस्ता ऐसा नामहै ऐसे पवित्र और मंडवक्षेत्र तथा उत्तर मानसरोवरसे युक्त कश्मीरदेश की यात्रा से पवित्रहोकर तुम मेरेपास आओ यह कहकर राजाने उस विचारे सुरक्षितको निरपराधही तीर्थयात्राके बहाने से बहुतदूर भेजदिया तदनन्तर राजा स्नेह क्रोधतथा विचारसे युक्तहोकर रानी गुणवराके मंदिरमें गया उसने राजाको उदासीन देखकर बहुत व्याकुल होकर कहा कि हेआर्य्यपुत्र! आज अकस्मात् आप उदासीन क्यों हैं यह सुनकर राजाने

तथा सब रानियों को प्रसन्न करके राज्यकार्य्य करने लगा परन्तु उसका चित्त प्रतिष्ठान देश में ही लगारहा राजा तो यहां चला आया और यहां वह मदनमाला राजा के आने की बहुत काल तक बाटदेखकर उसे ढूंढ़ने के लिये देवमंदिरमें गई वहां उसे राजा तो नहीं दिखलाई दिया परन्तु सुवर्ण के पांचपुरुष बहुत बड़े दिखाई दिये उनको देखकर और राजा को न पाकर वह दुखित होकर शोचनेलगी कि मेरा प्रियकोई गन्धर्व अथवा विद्याधर था जो मुझे यह पांच पुरुषदेकर आकाश को चलागया तो उसके बिना भार तुल्य इनपुरुषों को मैं क्याकरूं यह शोचकर अपने सेवकों से पूछनेलगी कि तुमने मेरे प्यारे को कहीं देखा तो नहीं है और उस के ढूंढ़ने के लिये इधर उधर फिरनेलगी फिर राजाको कहीं भी न पाकर विलाप करतीहुई मदनमाला को मंदिर उपवन तथा किसीस्थान में चैन न पड़ा और वियोग से अत्यन्त व्याकुलहोकर वह अपना शरीर त्यागने को उद्यत होगई उसकी यह दशा देखकर सम्पूर्ण लोगोंने उसे समझाया कि हे मदनमाले! विषाद न करो तुम्हारा प्रिय कोई कामचारी देवताहै वह तुमको फिर प्राप्त होजायगा इनवचनों को सुनकर उसके चित्तमें कुछ भरोसाहुआ और सावधान चित्त करके उसने यह प्रतिज्ञा की कि छः महीने के भीतर जो मुझे वह दर्शन नहीं देगा तो मैं सर्वस्व दान करके अग्नि में जलजाऊंगी इसप्रकार की प्रतिज्ञा से अपने को सावधान करके वह उसका ध्यान करके नित्यदान करनेलगी एकदिन उसने सुवर्ण के पुरुषों से एक के हाथ काटकर ब्राह्मणों को देदिये दूसरेदिन उसको उस पुरुषके हाथ फिर ज्योंके त्यों दिखाईदिये तब रात्रि भरमें उसके हाथों को उत्पन्नहुआ जानकर उसने सब पुरुषोंके

बात बनाकर उससे कहा कि हे रानी! आज कोई महाज्ञानी आकर मुझसे कहगयाहै कि रानी गुणवरा को कुछ कालतक तहखानेमें बंद रखिये और आप ब्रह्मचारी हूजिये नहीं तो आप के राज्य का नाश होजायगा और गुणवरा मरजायगी उस ज्ञानी के इन वचनों से मुझेबड़ा विषादहोरहा है यह सुनकर पतिव्रता रानी गुणवरा भय-युत तथा अनुराग से व्याकुल होकरबोली हे आर्यपुत्र! तो आजही आप मुझको तहखाने मे क्यों नहीं छोड़देते जो मेरे प्राणो से भी आपका हितहोय तो मैं धन्यहूं मेरी चाहे मृत्यु होजाय परन्तु आप को कोई हानि न होय क्योंकि इसलोक और परलोक में स्त्रियोंको पतिही एक परम गति है यह सुनकर राजाने नेत्रों में आंसू भर-कर अपने चित्त मे शोचा कि इस रानी पर और सुरक्षित पर कोई सन्देह नहीं होता मैंने इसको निस्सन्देह देखाहै और उसके मुख की कान्ति भी नहीं म्लानहुईथी तथापि इसप्रवादका निश्चयक-रना अवश्य उचितहै यह शोचकर रानी से राजाने कहा कि तो यही तहखाना बनवाकर तुमरहो उसने कहा बहुत अच्छा जैसी महाराज की आज्ञाहोय तब राजाने वही तहखाना बनवाकर उसे बंदकरदिया और उसके पुत्र मृगाङ्कभुज को उदासीन देखकर उससे भी वही कारण कह दिया रानी गुणवराने राजाका हित जानकर उस तहखाने को भी स्वर्ग के तुल्य मानलिया ठीकहै (सतीस्त्रियों को अपना सुख दुःख नहीं मालूम होता) उनको तो पतिकाही सुख महासुखहै रानी गुणवराकी यह दशा देखकर रानी अयशो-लेखाने एकान्तमें निर्वासभुज अपने पुत्रसे कहा कि रानीगुणवरा तो मेरे उद्योगसे गढे मे बन्दकरदीगई अब इसका पुत्रभी इसदेश से निकल जाय तो बहुत अच्छा हो इससे हे पुत्र! तुम अपने अन्य

हाथ काटकर दान करदिये फिर उन सब के भी उसी प्रकार सब हाथ निकलआये तब उनपुरुषों को अक्षय जानकर वह वेदपाठी ब्राह्मणों को जो जितने वेद पढाहो उनको उतनीही भुजा देने लगी कुछ दिनों में दिशाओं में फैलीहुई उस चरचाको सुनकर चार वेद का जाननेवाला गुणवान् दरिद्री संग्रामदत्तनाम ब्राह्मण पाटलिपुत्र से दान लेनेको उसके यहांगया तबद्वारपालों केद्वारा उस ब्राह्मणको आया जानकर उस ब्राह्मण को सुवर्ण की चार भुजादान में दीनी उस समय मदनमाला के विरह से कृश तथा पीले अंगों को देखकर और उसके दुखी परिजनों से सम्पूर्ण वृत्तान्त तथा घोर प्रतिज्ञाको सुनकर संग्रामदत्त दुखी तथा प्रसन्न होकर दो ऊंटोंपर उनचारो भुजाओं को लादकर अपने पाटलिपुत्र नगरको चलाआया वहां आकर उसने राजा विक्रमादित्य से यह विज्ञापनाकरीकि हे महाराज ! मैं इसनगरी का रहनेवाला ब्राह्मणहूं दरिद्रसे व्याकुल होकर मैं धन उपार्जन करने को दक्षिण दिशा में गया था राजा नृसिंह के प्रतिष्ठान नामपुर में पहुँचकर अत्यन्त यशस्विनी मदनमालानाम वेश्याके यहां मैं दानलेनेको गया था कोई दिव्य पुरुष उसके पास बहुत कालतक रहकर उसे पांचसुवर्ण के अक्षयपुरुष देकर अन्तर्द्धानहोगया है उसके विरह से महाव्याकुल होकर उस वेश्या ने जीवन को विषकी पीड़ा शरीरको निष्फल भार और भोजनको चोरी के समान मानकर धैर्य रहित होकर अपने परिजनोंके बहुत समझानेसे यह प्रतिज्ञा की है कि छः महीने के भीतर मेरा प्रिय मुझे नहीं मिलेगा तो मैं अपने इस अभागे शरीरको अग्निमें जलादूंगी इसप्रकार प्रतिज्ञा करके शरीर त्याग करने के निश्चयसे युक्त मदनमाला धर्म्म की

भाइयोंसे भी सलाहकरके शीघ्रही इसके देशसे निकालनेकी युक्ति करो माताके यह वचन सुनकर निर्व्वासभुज अपने अन्य भाइयों से सलाहकरके शृंगभुज के निकालने का उपाय शोचनेलगा एक समय सम्पूर्ण राजपुत्र अस्त्रोंका अभ्यास कररहे थे उससमय उनको एकवड़ाभारी वगुला महलपर दिखाई दिया उसे देखकर उनसबोंको बड़ा आश्चर्य हुआ उन सबको आश्चर्यित देखकर उसी मार्ग से आयेहुए किसी ज्ञानी क्षपणक (श्रावकयती) ने कहा कि हेराज पुत्रो! यह वगुला नही है यह अग्निशिख नाम राक्षस वगुले का रूप धरेहुए नगरका विनाश किया करताहै तो इस हेतु से इसको वाण मारकर भगादो क्षपणकके यह वचन सुनकर निन्नानवे राजपुत्रोंने अलग २ वाण मारा और किसी का भी वाण उसके नही लगा तब वह क्षपणक फिर बोला कि तुम्हारा छोटा भाई शृंगभुज इस बगुलेको मारसक्ताहै इससे वह योग्य धनुष लेकर इसको मारे उसके यह वचन सुनकर निर्व्वासभुज अपनी माताके वचनों को स्मरण करके विचारने लगा कि शृंगभुजके निकालने का यह अवसर मुझे मालूम होताहै कि अपने पिता राजाका धनुषवाण लाकर शृंगभुजकोदूं जो यह उस सुवर्ण के वाण से इस वगुलेको मारेगा और वगुला वाण समेत उड़ जायगा तब वाणको ढूंढनेके लिये इसे लेकर हम सब इधर उधर जायँगे तब ढूंढने से बकरूपधारी यह राक्षस तो मिलेगा नही और शृंगभुज वाण विना लिये लौटेगा नहीं इसप्रकार से हमारा कार्य सिद्ध होजायगा यह शोच कर उसने अपने पिता का धनुषवाण शृंगभुज को लादिया उसने

वह [illegible]

मार [illegible]

इच्छा करके नित्य महादान करतीहै हे महाराज ! मैंने उसे देखाहै कि यद्यपि भोजन थोड़ा करने से उसका शरीर कृश होगयाहै परन्तु उसकी शोभा न्यून नहीं हुई है जिस सुन्दर पुरुषके पीछे सुन्दरी मदनमाला धर्मकी इच्छा करके शरीरको त्याग करनेकी इच्छा कर रही और जिसने विरक्त होकर उसका त्याग किया है वह पुरुष मेरे मतसे निन्द्यभी और वन्द्यभी है उसी वेश्याने मुझ को चार सुवर्णकी भुजा इस निमित्त दी हैं कि मैं चारों वेद पढाहूं तो अब मैं अपने घरमें सदाव्रतजारी करके स्वधर्मका सेवनकिया चाहताहूं इसमें आप मेरे सहायक हूजिये उस ब्राह्मण के मुख से इसप्रकार अपनी प्रियाकी वार्ता को सुनकर राजाका चित्त उसी समय मदनमालाकी ओर चलागया तब प्रतीहारको उस ब्राह्मण के मनोरथ को सिद्ध करने की आज्ञा देकर और मदनमाला का प्राणों से भी अधिक अपने ऊपर अनुराग देख कर और अपनी प्रतिज्ञाके सिद्ध होने के लिये उसकी सहायताके लिये उत्कण्ठित होकर और उसके शरीरत्याग करनेकी अवधिमें थोड़ाहीसा समय बाकी जानकर राजा विक्रमादित्य मन्त्रियोंको सम्पूर्ण राज्य सौंप कर आकाश मार्ग से प्रतिष्ठान नगर में अपनी प्रियाके यहां प-हुंचा और वहां उसने चन्द्रिकाके समान उज्ज्वल वस्त्रवाली विबुध (पण्डित और देवता लोग) लोगों को अपने ऐश्वर्य्य की देने वाली अमावास्याके दिनकी चन्द्रमाकी कलाके समान अपनी कृ-शित प्रिया देखी वहभी नेत्रों में अमृत की वृष्टि करनेवाले राजा को अकस्मात् देखकर कुछ भ्रान्तियुक्तहोकर मानों फिर भागजाने के भयसे उसके गले में दोनों हाथ डालकर लिपट गई और बोली कि हे निर्दय ! मुझ निरपराधिनीको छोड़कर तुम क्यों चलेगये थे

लगी और बाण समेत वह वहांसे उड़गया तब शृंगभुज से निर्वासभुज और उसकी प्रेरणासे अन्य सब भाई कहने लगे कि वह सुवर्णमय बाण देदो नहीं तो हम सब तुम्हारेही आगे अपना २ शरीर त्याग देंगे क्योंकि राजा उस बाणके बिना हम लोगों को निकालदेगा और उसके समान न बनवाये से बनसक्ता है और न मोल मिलसक्ताहै यह सुनकर शृंगभुजने अपने कुटिल भाइयों से कहा कि धैर्य्य धरो दीन होकर भय मतकरो मैं जाकर उस राक्षस को मारकर बाण लादूंगा यह कहकर और अपना धनुष बाण लेकर शृंगभुज पृथ्वी में रुधिरकी धारको देखता हुआ जिस दिशा में वह बगुला गयाथा उसी दिशाको चल दिया उस समय अन्य सब भाई तो प्रसन्न होकर अपनी २ माता के पास चलेगये और शृंगभुज क्रमसे जाते २ एक वन में बहुत दूर जाकर पहुँचा उस बनमें एक बड़ा सुन्दरपुर उसे मिला वह पुर क्याथा मानों पुण्यरूपी वृक्षका फल समय पर भोग करने के लिये प्राप्त हुआथा वहां उपवनमें किसीवृक्षके नीचे क्षणभर विश्राम करने के पीछे उसे एक बड़ी रूपवती कन्या दिखाई दी विरहमें प्राणों के हरनेवाली और संगममें प्राणोंके देनेवाली उस कन्याको मानो ब्रह्माने अमृत और विष मिलाकर बनायाथा धीरे २ प्रेमयुक्त दृष्टि से देखती हुई वह कन्या जब निकट आई तब शृंगभुजने उससे पूछा कि हे मृगनयनी! इस पुरका क्या नामहै यहांका राजा कौनहै तुम कौनहो और यहां किस लिये आईहो तब वह नीचे को मुसकरके तिरछी दृष्टिसे देखकर मधुरवाणीसे बोली कि यह सम्पूर्ण सम्पत्तियोंसे युक्त धूमपुर नाम नगरहै अग्निशिख नाम राक्षस यहांका राजाहै उसीकी रूपशिखा नाम मैं कन्याहूं और तुम्हारे असामान्य स्वरूपको देखने

उसके यह वचन सुनकर राजाने कहा कि चलो एकान्त में कहेंगे, यह कहकर उसे एकान्त में लेजाकर राजाने नृसिंहराजा के जीतने की प्रतिज्ञासे लेकर अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया और प्रपञ्चबुद्धिको मारकर आकाश में उड़नेकी शक्तिका सम्पूर्ण वृत्तांत तथा कुबेरके वरदानसे उनपांचों सुवर्ण पुरुषों के मिलनेका वृत्तांत और ब्राह्मणके द्वारा उसके अनुराग को सुनकर अपने यहां जाने का वृत्तान्त वर्णन करके कहा कि हे प्रिये ! यह राजा नृसिंह बड़ा बलवान् है इससे मैं अपनी सेना के बलसे तो इसको नहीं जीत सक्ता और द्वन्द युद्ध में आकाश में उड़कर मैं उसे मारभी लेता परन्तु अधर्म्म से जीतना क्षत्री लोगोंको उचित नहीं है इससे मैंने जो यह प्रतिज्ञाकी है कि राजा नृसिंह मेरे द्वारपर आवेगा तो बंदी लोग तथा प्रतीहार लोग उसका सेवकोंके समान मुझसे निवेदन करेंगे सो इस प्रतिज्ञा के पूर्ण होने मे तुम सहायता करो यह सुन कर उसने कहा कि मैं धन्यहूं और राजा के साथ सलाह करके अपने बन्दियों को बुलाकर यह आज्ञादी कि जब राजा नृसिंह मेरे मकानपर आवे तब तुम लोग द्वारपर दृष्टि लगाये खड़े रहना और द्वारमें प्रवेश करने के समय यह कहना कि हे महाराज ! राजा नृसिंह आपका बड़ा भक्त है और आपसे बहुत स्नेह करताहै इसप्रकार कहने पर जब राजा पूछे कि यहां कौन है तो कह देना कि महाराज विक्रमादित्य भीतरहैं बन्दियों से इसप्रकार कहकर प्रती-

के लिये यहां आईहूं अब तुम बतलाओ कितुमकौनहो और यहां किसलिये आये हो उसके यह वचन सुनकर शृंगभुज ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त बाणके निमित्त धूमपुरमें आने तकका कहदिया उसके सम्पूर्ण वृत्तान्त को सुनकर रूपशिखा बोली कि तुम्हारेसमान त्रैलोक्य में कोई धनुर्द्धारी नहीं है जिसने बकरूप धारी मेरे पिताको भी बाण से मारा यह बाण मैंने खेलने के लियेलेलिया है और हमारे पिताको महादंष्ट्र नाम मन्त्री ने घावको अच्छे करनेवाली ओषधि लगाकर उसके घावको आराम करदिया तो अब हे आर्यपुत्र! अपने पितासे कहकर तुम्हें भीतर लेचलूंगी क्योंकि मैंने अपना शरीर तुम्हारे अर्पण करदियाहै यह कहकर रूपशिखा शृंगभुजको वहीं बैठालकर बोली कि हे तात असाधारणरूप कुल शील! तथा अवस्थाके गुणोंसेयुक्त शृंगभुजनाम कोई राजपुत्र यहां आयाहै मैं जानती हूं कि वह मनुष्य नहीं है किसी देवताका अवतारहै जो वह मेरापति न होगा तो मैं अपना शरीर त्यागदूंगी उसके यह वचन सुनकर अग्निशिख बोला कि हे पुत्री! मनुष्यतो हमारे आहार होते हैं और जो इतने पर भी तुम्हें आग्रहहै तो उस राजपुत्र को यहां लाकर मुझे दिखलाओ तब रूपशिखा शृंगभुज से सब वृत्तान्त कहकर उसे अपने पिताके पास बुलालाई अग्निशिखने प्रणाम करतेहुए शृंगभुजसे कहा कि हेराजपुत्र! जो तुम मेरी आज्ञा को न उल्लंघन करो तो मैं अपनी पुत्री स्वरूपशिखा तुमको देदूं उसके यह वचन सुनकर शृंगभुजने नम्रतापूर्वक कहा कि बहुतअच्छा मैं आपकी आज्ञाका उल्लंघन कभी नहीं करूंगा तब प्रसन्नहोकर अग्निशिख बोला कि अच्छा जाओ स्नानस्थान से स्नानकरके शीघ्र मेरेपास आओ उसमें यहकहकर अग्निशिख

अक्षय सुवर्ण के पुरुषों को प्राप्त होना सुनकर उसे देखने के लिये उसके यहां आया उस समय प्रतीहारीने उसे निषेधकिया नहीं और वन्दीलोग उच्चस्वर से यह कहने लगे कि हे महाराज! नृसिंह आप का बड़ा भक्त है और आपसे सदैव नम्र रहता है यह सुनकर भय तथा क्रोधसे युक्त होकर राजानृसिंह ने पूछा कि भीतर कौन है मन्त्रियों ने कहा कि महाराज विक्रमादित्यहैं यह सुनकर उसने अपने चित्तमें शोचा कि विक्रमादित्यने जो प्रतिज्ञाकी थी वह पूर्ण कर लीनी यह बड़े तेजस्वी हे इसने आज मुझे जीत लिया इस समय यह अकेला हमारे यहां आया है इससे इसका मारनाभी उचित नहीं है इसप्रकार शोचकर वन्दियों से निवेदन कियाहुआ राजा नृसिंह भीतरगया उसको मुसकुरातेहुए भीतरआते देखकर विक्रमादित्यने मुसकुराकर उठकर उसे अपने गलेसे लगाकर अपनेपास बैठालिया फिर परस्पर कुशल क्षेम पूछकर प्रसंग से राजानृसिंहने विक्रमादित्यसे पूछा कि यह सुवर्ण के पुरुष कहां से आपने पाये हैं उसके इसप्रकार पूछने पर विक्रमादित्यने प्रपञ्चबुद्धि नाम भिक्षुक के मारने से आकाश में गमन करने की शक्ति का प्राप्तहोना और कुबेर की कृपा से अक्षय सुवर्ण के पांचपुरुषों का मिलना विस्तार पूर्वक वर्णन किया यह सुनकर नृसिंह ने उसको आकाश में उड़ने के कारण महाशक्तिमान जानकर और उसकी बुद्धिको पाप से निवृत्त जानकर उसके साथ मित्रता करली और मित्रता करके उसे अपने घरमें लेजाकर राजा लोगों के योग्य उसका बड़ा सत्कार किया और उसे मदनमालाकेही घर भेजदिया इसप्रकार राजा विक्रमादित्य ने अपने पराक्रम और बुद्धिसे अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण करके वहां से अपने देशके चलने का विचारकिया उससमय

रूपशिखा से बोला कि तुम जाओ और शीघ्रही अपनी सब बहनों को साथ लेकर चलीआओ उसके यह वचन सुनकर वह दोनों बाहर निकले तब शृंगभुजसे रूपशिखाने कहा कि हे आर्य्यपुत्र! मेरे सौ बहनें हैं सबका एकही समान स्वरूपहै सबके वस्त्र आभूषण एकसेही हैं और सबके गले मे एकही प्रकारके हारहै इससे हमारा पिता हम सब को मिलाकर तुम्हें मोहित करने के लिये कहेगा कि इनमे से जिसको चाहो उसे लेलो मैं अपने पिताके कपट के अभिप्राय को जानती हूं नहीं तो हम सबको वह क्यों बुलाता मैं उससमय गलेसे अपनाहार निकालकर अपने शिरमे लगाऊंगी इसी परिचय से तुम मेरेऊपर वनमाला डालदेना मेरापिता भूतों के समानहै इसकी बुद्धि में विवेक नही है इसी से वह मेरे साथभी छल करताहै क्योंकि जातिका स्वभाव कभी भी नष्ट नहीं होताहै इससे यह जो कुछ तुमसे तुम्हारे छलने को कहै सो सब स्वीकार करके तुम मुझसे कहदेना तब जो उचित होगा सो मैं करूंगी यह कहकर रूपशिखा अपनी बहनों के पास चलीगई और शृंगभुज स्नान करनेको चलदिया फिर रूपशिखा अपनी सम्पूर्ण बहनोंको साथलेकर अग्निशिखके पासआई और शृंगभुजभी स्नानकर वहीं आया तब अग्निशिख शृंगभुजको एक वनमाला देकर बोला कि इनमेंसे जो तुम्हारी प्रिया हो उसके गले मे इस बनमालाको डाल दो उसने वनमाला लेकर पहले संकेतके अनुसार रूपशिखाके गले में पहरादीनी यह देखकर अग्निशिखने कहा कि प्रातःकाल मैं तुम दोनोका विवाह करदूंगा यह कहकर उसने उन सबको जानेकी आज्ञादी और क्षणभर मे शृंगभुज को बुलाकर फिर कहा कि इन दोनो वधियाबैलोंको लेकर नगरके बाहर जो डेढसौमन तिल इकट्ठे

मदनमाला भी विरहको सहने के लिये समर्थ न होकर अपनेसम्पूर्ण गृहादिक ब्राह्मणों को दान करके राजा के साथ चलने को उद्यतहुई तब राजाविक्रमादित्य मदनमालाके हाथी घोड़े व सब सेनाको साथ में लेकर उस समेत अपने पाटलिपुत्र नगरमें आया और राजा नृसिंह से मित्रता होने के कारण अपने देशमें भी अत्यन्त आनन्दपूर्वक मदनमाला के साथ रहनेलगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे द्विपञ्चाशत्तम प्रदीप. ५२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिपंचाशत्तमःप्रदीपः ५३ ॥

पत्युःपरंनकिमपिस्त्रियःसाध्वीयथासती ।
राज्ञागुणवरागर्तेपिहितापिचखेदनो ५३ ॥

(अर्थ) पतिव्रता स्त्रियों को पतिसे परे और कुछ प्रिय नहीं है जैसे रानी गुणवरा राजा से तहखाने में बन्द करी भी खेद न पाई अर्थात् अपने को बुरी समझी ५३ ॥

वर्द्धमान नाम पुरमें वीरभुज नाम एक बड़ा धर्मात्मा राजा था उस राजाके सौ रानियां थी उनमें से गुणवरा नाम रानी राजा को अत्यन्त प्यारी थी उन सौ रानियों में किसी के भी कोई पुत्र न था एक समय राजा ने श्रुतवर्द्धननाम वैद्य से पूछा कि कोई ऐसी भी ओषधिहै जिससे पुत्र होसके यह सुनकर वैद्यने कहा कि हे महाराज ! आप वनका बकरा मँगाइये तो मैं ऐसी ओषधि बना सक्ता हूं वैद्य के इस वचन को सुनकर राजाने उसी समय प्रती-हारको भेजकर वनका बकरा मँगादिया वैद्यने उस बकरे को रसो-ईदारो को देदिया कि इसके मांसका बड़ा सुन्दर रस बनालाओ जब रसबनकर आगया तब उसने सम्पूर्ण रानियों को बुल-वाकर उस रसमें कोई चूर्ण मिलाकर थोड़ा २ सबको पिला दिया

के लिये यहां आईहूं अब तुम बतलाओ कि तुम कौनहो और यहां किसलिये आये हो उसके यह वचन सुनकर शृंगभुज ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त वाणके निमित्त धूमपुरमें आने तकका कहदिया उसके सम्पूर्ण वृत्तान्त को सुनकर रूपशिखा बोली कि तुम्हारेसमान त्रैलोक्य में कोई धनुर्द्धारी नहीं है जिसने बकरूप धारी मेरे पिताको भी वाण से मारा यह वाण मैंने खेलने के लिये लेलिया है और हमारे पिताको महादंष्ट्र नाम मन्त्री ने घावको अच्छे करनेवाली औषधि लगाकर उसके घावको आराम करदिया तो अब हे आर्यपुत्र! अपने पितासे कहकर तुम्हें भीतर लेचलूंगी क्योंकि मैंने अपना शरीर तुम्हारे अर्पण करदियाहै यह कहकर रूपशिखा शृंगभुजको वहीं बैठालकर बोली कि हे तात असाधारणरूप कुल शील! तथा अवस्थाके गुणोंसेयुक्त शृंगभुजनाम कोई राजपुत्र यहां आयाहै मैं जानती हूं कि वह मनुष्य नहीं है किसी देवता का अवतारहै जो वह मेरापति न होगा तो मैं अपना शरीर त्यागदूंगी उसके यह वचन सुनकर अग्निशिख बोला कि हे पुत्री! मनुष्य तो हमारे आहार होते हैं और जो इतने पर भी तुम्हें आग्रहहै तो उस राजपुत्र को यहां लाकर मुझे दिखलाओ तब रूपशिखा शृंगभुज से सब वृत्तान्त कहकर उसे अपने पिताके पास बुलालाई अग्निशिखने प्रणाम करतेहुए शृंगभुजसे कहा कि हेराजपुत्र! जो तुम मेरी आज्ञा को न उल्लंघन करो तो मैं अपनी पुत्री स्वरूपशिखा तुमको देदूं उसके यह वचन सुनकर शृंगभुजने नम्रतापूर्वक कहा कि बहुतअच्छा मैं आपकी आज्ञाका उल्लंघन कभी नहीं करूंगा तब प्रसन्नहोकर अग्निशिख बोला कि अच्छा जाओ स्नानस्थान से स्नानकरके शीघ्र मेरेपास आओ उससे यहकहकर अग्निशिख

रूपशिखा से बोला कि तुम जाओ और शीघ्रही अपनी सब बहनों को साथ लेकर चलीआओ उसके यह वचन सुनकर वह दोनों बाहर निकले तब शृंगभुजसे रूपशिखाने कहा कि हे आर्य्यपुत्र! मेरे सौ बहनें हैं सबका एकही समान स्वरूपहै सबके वस्त्र आभूषण एकसेही हैं और सबके गले मे एकही प्रकारके हारहै इससे हमारा पिता हम सब को मिलाकर तुम्हें मोहित करने के लिये कहेगा कि इनमें से जिसको चाहो उसे लेलो मै अपने पिताके कपट के अभिप्राय को जानती हूं नही तो हम सबको वह क्यों बुलाता मै उससमय गलेसे अपनाहार निकालकर अपने शिरमें लगाउंगी इसी परिचय से तुम मेरेऊपर वनमाला डालदेना मेरापिता भूतों के समानहै इसकी बुद्धि मे विवेक नही है इसी से वह मेरे साथभी छल करताहै क्योंकि जातिका स्वभाव कभी भी नष्ट नहीं होताहै इससे यह जो कुछ तुमसे तुम्हारे छलने को कहै सो सब स्वीकार करके तुम मुझसे कहदेना तब जो उचित होगा सो मै करूंगी यह कहकर रूपशिखा अपनी बहनों के पास चलीगई और शृंगभुज स्नान करनेको चलदिया फिर रूपशिखा अपनी सम्पूर्ण बहनोंको साथलेकर अग्निशिखके पासआई और शृंगभुजभी स्नानकर वहीं आया तब अग्निशिख शृंगभुजको एक बनमाला देकर बोला कि इनमेंसे जो तुम्हारी प्रिया हो उसके गले मे इस बनमालाको डाल दो उसने बनमाला लेकर पहले संकेतके अनुसार रूपशिखाके गले में पहरादीनी। यह देखकर अग्निशिखने कहा कि प्रातःकाल मैं तुम दोनोका विवाह करदूगा यह कहकर उसने उन सबको जानेकी आज्ञादी और क्षणभर मे शृंगभुज को बुलाकर फिर कहा कि इन दोनों बधियाबैलोंको लेकर नगरके बाहर जो डेढसौमन तिल इकट्ठे

मानरूप शिखा के साथ सुखपूर्व्वक रहनेलगा इसप्रकार से सती स्त्रियां सब रीतियों से अपने पतिका सेवन करती हैं जैसे कि गुणवरा और रूपशिखा दोनो सास बहू ने की ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे त्रिपञ्चाशत्तम प्रदीप ५३ ॥

अथदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुःपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५४ ॥

पठनात्प्राप्यते विद्यानक्लेशैर्नमनोरथैः ।
जलेयथामृदासेतुर्वध्यमानोनसिद्ध्यति ५४ ॥

(अर्थ) विद्या पढने से प्राप्त होती है कुछ मनोरथों से वा क्लेश व खेद आदिको से नहीं आती है जैसे वालू की भीत से जल नहीं रोका जाता ५४ ॥

प्रतिष्ठान देश में तपोदत्तनाम एक ब्राह्मणथा उसने बाल्यावस्था मे पिताके ताड़ना करनेपर भी विद्या नहीं पढी जब अवस्था अधिकहुई तब सबलोगोंसे अपनीनिन्दा सुनकर पश्चात्ताप करके विद्याकी प्राप्तिके लिये श्रीगंगाके तटपर जाके तपस्या करने लगा वहां उसे उग्रतप करताहुआ देखकर इन्द्र ब्राह्मणका स्वरूप धारण कर उसके निवारण करने के लिये उसके निकट आये और उसीके आगे किनारेपर की वालू लेकर गंगाजी में फेंकनेलगे यह देखकर तपोदत्त मौनको त्यागकरके बोला कि हे ब्राह्मण! यह तुम क्या करते हो उसके बहुत पूछनेपर इन्द्रने कहा कि लोगो के पारजानेके लिये मैं गंगामें पुल बनारहाहूं यह सुनकर उसने कहा कि हे मूर्ख! प्रवाह से वहजानेवाली वालूसे कहीं गंगाजीकापुल बनसक्ताहै तब इन्द्रने उससे कहा कि जो तुम यह जानते हो तो विना पढनेके व्रत उपवासादि करके विद्याके उपार्जन करने को क्यों उद्युक्त हुए हो अक्षरों के विना लिखना और अध्ययन के विना विद्या खरगोशके

रक्खे हैं उन्हें पृथ्वी में वोत्र्याओ उसके वचनोंको स्वीकारकरके शृंग
भुज ने उदास होकर रूपशिखासे जाकर यह वात कही उसने कह
हे आर्य्यपुत्र ! खेद न करो चलो मैं अपनी मायासे सम्पूर्ण काय
सिद्ध करदूंगी यह सुनकर शृंगभुज उसीको साथलेकर नगर वे
बाहर आया और तिलो के ढेरमें से कुछ तिललेकर वोनेलगा य
तो बोताहीरहा किन्तु रूपशिखाने अपनीमायाके बलसे शीघ्रहि
पृथ्वी को जोतकर सम्पूर्ण तिल वोदिये तिलोको वोयाहुआ देखक
शृंगभुजने अग्निशिखसे आकरकहा कि सब तिल मैंने वोदिये तव
उस छली ने फिर कहा कि मुझे उन तिलो के बोने से कुछ प्रयो
जन नही है जाओ उन सव को इकट्ठा करआओ यह सुन कर
उसने रूपशिखा से जाकर कह दिया उसने उसी समय अपनी
मायासे असंख्य चींटी उत्पन्न करके सब तिल इकट्ठा करदिये यह
देखकर शृंगभुज ने फिर जाकर अग्निशिख से कहा कि सम्पूर्ण
तिल इकट्ठे होगये यह सुनकर वह मूर्ख फिर बोला कि यहां से
दक्षिण दिशामें दो योजन पर वनमें एकशून्य शिवमन्दिरहै उसमें
धूमशिखनाम मेरा प्रियभाई रहताहै वहां जाकर तुम देवमन्दिरके
सन्मुख खड़े होकर कहना कि हे धूमशिख ! कुटुम्ब सहित तुमको
निमंत्रण देनेके लिये अग्निशिख ने मुझे भेजाहै शीघ्रही आओ
प्रातःकाल रूपशिखाका विवाह होनेवाला है यह कहकर शीघ्रही
चलेआओ और प्रातःकाल रूपशिखा के साथ विवाहकरो उस
पापी के इन वचनो को स्वीकार करके शृङ्गभुजने रूपशिखा से
जाकर सब कहदिया तब रूपशिखा मृत्तिका जल कांटे तथा अग्नि
उसे देकर बोली कि हे आर्यपुत्र! तुम मेरे इस घोड़ेपर चढ़कर शी-

इसी घोड़ेपर सवार होके भगातेहुए चलेआओ और लौटते समय बारम्बार पीछेको देखते जाना जो पीछे धूमशिखको आता देखना तो अपने पीछे मार्ग में यह मृत्तिका छोड़ देना तिसपर भी जो धूमशिख पीछेही आवे तो यह जल अपने पीछे मार्ग में छोड़ देना और फिरभी जो वह पीछे आवे तो वह कांटे छोड़देना और जो इतनेपर भी वह पीछे आवे तो यह अग्नि अपने पीछे मार्ग में छोड़देना इसप्रकार करनेसे तुम निर्विघ्नता पूर्वक यहां आजाओगे सन्देह न करो जाओ आज मेरी विद्याका बल देखना उसके यह वचन सुनकर शृङ्गभुज मृत्तिका आदि पदार्थों को लेकर उसी के घोडेपर चढकर देवमन्दिर को गया वहां बाईओर पार्वती तथा दाहिनीओर श्रीगणेशजी से युक्त श्रीशिवजी को नमस्कार करके और अग्निशिखा का निमंत्रण धूमशिखसे कहकर घोडा दौड़ाताहुआ वहां से चला क्षणभरके पीछेही जैसे उसने मुख मोड़ कर पीछेको देखा तो धूमशिख पीछे चला आरहा था तब उसने पीछे मार्ग में मृत्तिका डालदी उस मृत्तिकासे बड़ाभारी पर्व्वत होगया उस पर्व्वत को किसी प्रकार उल्लंघन करके जब वह राक्षस फिर पीछे आया तो उसने अपने पीछे जल छोड़ा उससे मार्ग मे बड़ी भारी नदी होगई उस नदीको भी किसीप्रकार उल्लंघन करके जब वह फिर पीछे आया तो उसने वह कांटे अपने पीछे मार्ग्ग मे छोड दिये उनकांटों से मार्ग्ग मे बड़ाभारी कांटों का वन होगया उस वनको भी उल्लंघन करके वह राक्षस जब पीछेही आया तब वह अग्नि उसने अपने पीछे मार्ग मे डालदी उससे वह सम्पूर्ण वन जलनेलगा और खाण्डववनके समान जलतेहुए उसवनको उल्लंघन करने में असमर्थ होकर खिन्न तथा भयभीत होकर वह राक्षस

हे स्वामी! पृथ्वी में एक बड़ाभारी गढा खुदवाकर आठ महीनेतक आप अकेले उसमें रहिये और मेरी दी हुई औषध खाइये तो आप की वृद्धावस्था दूरहोजाय वैद्यके यहवचन सुनकर राजाने शीघ्रही पृथ्वी में एक बड़ाभारी गढा वनवाया ठीकहै विषयके लोभी मूर्ख लोग विचार नहीं करसक्ते हैं राजाको वैद्यकी आज्ञा मे उद्यत देख कर मंत्रियो ने कहा कि हे महाराज! प्राचीनलोगों के सत्त्व तप तथा दमसे और युगके प्रभावसे रसायन सिद्ध होती थी, आजकल तो रसायन केवल सुनी है देखी नहीं है और जो कोई करताभी है तो सामग्री के न मिलने से विपरीत फल मिलताहै इससे आपको इस के कहने मे आना योग्य नहीं है क्योंकि धूर्तलोग बहुधा अज्ञानो को ठग २ कर खाया करते हैं आप विचारिये तो सही क्या गईहुई अवस्था भी फिर लौटसक्ती है मंत्रियों के इत्यादिक अनेक वचन धनीलोग तृष्णा से भरेहुए राजाके हृदयमे नहीं समाये और वह उस वैद्यके कहने से अपने सम्पूर्ण ऐश्वर्य को छोड़कर उस गढेमें अकेलाही गया केवल वैद्य अपने नौकरके साथ औषधादि देनेको उसके पास जाताथा राजा उस अन्धकार मय गढे में अपने हृदय से अधिक होने के कारण निकलेहुए अज्ञान में मानों कुछकाल तक रहा उसमें रहते २ जव छःमहीने व्यतीत होगये तव वह वैद्य राजाकी वृद्धावस्था को और भी अधिक देखकर राजा के समान आकृतिवाले किसी युवापुरुषको तुझे राजा बनाऊंगा यह कहकर सुरंग खोदकर रात्रिके समय उसी गढेमें लेगया और सोतेहुए राजा को मारकर वहां से लेकर किसी अन्धे कुएँमें छोड़आया और उस तरुणपुरुषको वहीं वैठालकर वह सुरंग वन्दकरदीनी ठीकहै मूर्ख लोगों में निरर्गल अवकाशपाकर उद्दण्ड साधारणलोग कौनसा

लौटगया उससमय रूपशिखाकी मायासे मोहित होकर उसराक्षस को आकाशमार्ग से उड़ने की याद न रही उस राक्षस को लौटा हुआ देखकर शृंगभुज अपनी प्रियाकी मायाकी प्रशंसा करता हुआ निर्भय होकर धूमपुर मे पहुँचा वहां पहले रूपशिखाके पास जाके उसका घोड़ा देके और सब वृत्तान्त कहके अग्निशिख के पास जाकर बोला कि मैं तुम्हारे भाई को निमन्त्रण दे आया यह सुनकर अग्निशिखने आश्चर्य्यित होकर कहा कि जो तुम वहां गयेहो तो वहां की कुछ पहचान बताओ तब शृंगभुज नेकहाकि वहां श्रीशिवजीकी बाईओर तो पार्वतीजी हैं और दक्षिणकी ओर विघ्नहर्ता श्रीगणेशजी है यही पहचान है यहसुनकर अग्निशिख शोचनेलगा कि यह वहां गया भी परन्तु मेरा भाई इसको नहीं खासका मैं जानताहूं यह मनुष्य नहीं है कोई देवताहै इससे यह मेरी कन्या के योग्यही वरहै यह शोचकर उसने शृंगभुजको रूप-शिखाके पास भेजदिया और यह भेद उसे कुछ नहीं मालूम हुआ शृंगभुजने रूपशिखा के पास जाकर भोजनादि करके विवाह के लिये उत्कंठित होके वह रात्रि किसीप्रकार से व्यतीत की प्रातः-काल अग्निशिख ने अग्निको प्रज्वलित करके अपनी सम्पत्तिके अनुसार रूपशिखा उसको देदी कहां तो राक्षसकी पुत्री रूपशिखा कहांराजपुत्र शृंगभुज औरकहां इन दोनोंका विवाहवाह प्राक्तन-कर्म्मों की विचित्र गति है जैसे पंकसे उत्पन्नहुई कमलिनी को पाकर राजहंस शोभित होता है उसीप्रकार राक्षसकी पुत्री रूप-शिखा को पाकर शृंगभुज शोभित हुआ विवाह के उपरान्त कुछ दिनोंके व्यतीत होनेपर शृंगभुजने एकान्तमें अपनी प्रियासेकहा कि हे प्रिये चलो वर्द्धमानपुरको चलै वह हमारी राजधानी है मेरे

सींग और आकाश के चित्रके समान है इन्द्रके यह वचन सुनके तपोदत्त उन वचनों को यथार्थ जानकर तपको त्यागकर अपने घर चलागया ॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुःपंचाशत्तमःप्रदीपः ५४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपंचपंचाशत्तमःप्रदीपः ५५ ॥

फलंहिभुज्यतेपुंभिः पूर्वजन्मसमुद्भवं ।
प्रत्यक्षंदर्शयामास वैद्यंतत्फलगौरवम् ५५ ॥

(अर्थ)---मनुष्य निज२पूर्वजन्मका संचितकर्म फल भोगते हैं जैसे वैद्यको एक साधरण मनुष्य राजा बनेनें निज तपका फल आँखों से दिखाया ५५ ॥

विलासपुर नाम नगर में विनयशील नाम एक बड़ा सुशील राजाथा उसके प्राणों से भी प्यारी कमलप्रभा रानीथी राजा बहुत कालतक सुखपूर्वक उस रानी के साथ विहार करताहुआ रहा समय पाकर सुन्दरता की नष्ट करनेवाली वृद्धावस्था उस राजा के प्रकट हुई वृद्धावस्था को देखकर राजा शोचने लगा कि पाले से मारे हुए कमल के समान अपना म्लान मुख मैं रानीको कैसे दिखाऊं हा धिक्कार है मेरा तो मरनाही अच्छा है यह शोचकर उसने तरुणचन्द्रनाम वैद्यको सभामें बुलाकर कहा कि हे तरुणचन्द्र! तुम हमारे बड़े भक्तहो और बड़े चतुरहो इससे मैं तुम से पूछता हूं कि क्या कोई ऐसी भी युक्ति है जिससे वृद्धावस्था निवृत्त होजाय राजा के यह बचन सुनकर केवल कलाओं सेही युक्त वह कुटिल तरुण चन्द्र अपने को परिपूर्ण करने की इच्छा से शोचनेलगा कि यह राजा मूर्ख है इससे प्रथम इसके पाससे खूब धन लेनाचाहिये फिर जैसा होगा तैसा देखाजायगा यह शोचकर वह राजासे बोला कि

भाइयों ने मुझे युक्तिपूर्वक वहां से निकाला है यह बात मैं नहीं सहसक्राहूं क्योंकि हमसरीखे लोगोको मानही प्राणहैं इस से तुम मेरे लिये इस अपनी जन्मभूमिको छोड़कर अपने पितासे कहके और उससुवर्णके बाणको लेकरचलो शृंगभुजके यहवचन सुनकर रूपशिखा बोली कि हे आर्यपुत्र! जैसा आप कहोगे वैसाही मैं करूंगी। जन्मभूमि और स्वजन क्या पदार्थ हैं मेरे तो आपही सब कुछहो क्योंकि सती स्त्रियों को पति के सिवाय और कोई गति नहीं है परन्तु यह जो आपने कहा कि अपने पिता से कहो सो योग्य नहीं है क्योंकि वह हम लोगों को छोड़ना नहीं चाहताहै इस से उसक्रोधी से विनाही कहे चलिये जो पीछे से परिजनो के कहने से वह आवेगा तो मैं अपनी माया से उसे मोहित करदूंगी उसके यह वचन सुनकर शृंगभुज बहुत प्रसन्नहोगया दूसरे दिन रूपशिखा रत्नोसे भरेहुए डिब्बेको लेके और सुवर्ण के बाणको भी लेकर शृंगभुज समेत अपने शरवेग नाम घोड़ेपर चढ़कर उपवन के विहारके बहाने से उस नगरके बाहर चलीआई वहांसे वर्द्धमान पुरकी ओर कुछ दूर चले आने पर अग्निशिख उनके गमन को जानकर क्रोधसे आकाशमार्ग मे उड़कर उनकेपीछे आया उसके आगमन के वेगसे होनेवाले शब्दको सुनकर रूपशिखा ने कहा कि हे आर्य्यपुत्र! मेरा पिता मेरे लौटाने के लिये पीछे से आरहा है इससे तुम यही ठहरो देखो मैं इसको अपनी मायासे कैसा मोहित करतीहूं यह तुमको घोड़े समेत देख नहीं सकेगा क्योंकि मैं अपनी विद्यासे तुम्हे ढके देतीहूं यह कहकर उसने घोड़े से उतरकर अपना पुरुषकासा वेष बनालिया और एक लकड़ीवाले से जो कि लकड़ी लेने आयाथा उससे कहकर कुल्हाड़ी लेकर वह

हे स्वामी! पृथ्वी में एक वड़ाभारी गढा खुदवाकर आठ महीनेतक आप अकेले उसमें रहिये और मेरी दी हुई औषध खाइये तो आप की वृद्धावस्था दूरहोजाय वैद्यके यहवचन सुनकर राजाने शीघ्रही पृथ्वी में एक वड़ाभारी गढा वनवाया ठीकहै विषयके लोभी मूर्ख लोग विचार नहीं करसक्ते हैं राजाको वैद्यकी आज्ञा में उद्यत देख कर मंत्रियो ने कहा कि हे महाराज! प्राचीनलोगों के सत्त्व तप तथा दमसे और युगके प्रभावसे रसायन सिद्ध होती थी, आजकल तो रसायन केवल सुनी है देखी नहीं है और जो कोई करताभीहै तो सामग्री के न मिलने से विपरीत फल मिलताहै इससे आपको इस के कहने में आना योग्य नहीं है क्योंकि धूर्तलोग वहुधा अज्ञानों को ठग २ कर खाया करते हैं आप विचारिये तो सही क्या गईहुई अवस्था भी फिर लौटसक्ती है मंत्रियो के इत्यादिक अनेक वचन धनीलोग तृष्णा से भरेहुए राजाके हृदयमें नहीं समाये और वह उस वैद्यके कहने से अपने सम्पूर्ण ऐश्वर्य को छोड़कर उस गढेमें अकेलाही गया केवल वैद्य अपने नौकरके साथ औषधादि देनेको उसके पास जाताथा राजा उस अन्धकार मय गढे में अपने हृदय से अधिक होने के कारण निकलेहुए अज्ञान में मानों कुछकाल तक रहा उसमें रहते २ जव छ महीने व्यतीत होगये तव वह वैद्य राजाकी वृद्धावस्था को और भी अधिक देखकर राजा के समान आकृतिवाले किसी युवापुरुषको तुझे राजा वनाऊंगा यह कहकर सुरंग खोदकर रात्रिके समय उसी गढेमें लेगया और सोतेहुए राजा को मारकर वहां से लेकर किसी अन्धे कुएँमें छोड़आया और उस तरुणपुरुषको वहीं वैठालकर वह सुरंग वन्दकरदीनी ठीकहै मूर्ख लोगों में निर्गल अवकाशपाकर उद्दंड साधारणलोग कौनसा

लकड़ी काटने लगी। इतने में अग्निशिखने वहां आकर आकाशसे उतरकर उसे लकड़हारा जानकर पूछा कि यहां तुमने इस मार्गसे जाते हुए कोई स्त्री पुरुष देखे हैं उसने कहा नहीं हम परिश्रम से दुखी होरहे हैं हमने कुछ नहीं देखा आज राक्षसोंकास्वामी अग्निशिख मरगया है उसके जलाने के लिये हम को बहुतसी लकड़ी काटनी हैं यह सुनकर वह मूर्ख राक्षस शोचनेलगा कि अरे क्यामैं मरगया हूं अब मुझे उस कन्या से क्या प्रयोजन है पहले अपने घर में जाकर पुरजनों से अपनी मृत्यु का वृत्तान्त तो पूछलूं यह शोचकर वह शीघ्रता से अपने घरको लौटगया और रूपशिखा अपने पति समेत हँसतीहुई वहां से चली अग्निशिख घरमें जाकर हँसतेहुए अपने परिजनों से अपने को जीताहुआ सुनकर प्रसन्न होकर क्षणभरही में फिर उसीके पीछे आगया तब घोरशब्दसे उस को फिर आयाहुआ जानकर रूपशिखा उसी प्रकार अपने पति को छिपाकर मार्ग में आतेहुए किसी हलकारे के हाथ से पत्रलेकर पुरुषका वेष बनाकर खड़ी होगई इतने में उस राक्षसने वहां आकर आकाशसेउतरकर उससे पूछा कि तुमने कोई स्त्रीपुरुषइधर जातेहुए देखे हैंउसने कहा नहीं मैंने जल्दी मे कुछ नहीं देखा अग्निशिख नाम राक्षसों के राजा को उसके शत्रुओं ने मारा है अब कुछप्राण उसके बाकी हैं इसलिये उसने मुझे चिट्ठीदेकर अपनेभाई धूमशिखको राज्य देनेकेलियेबुलानेको मुझे भेजा है यह सुनकर अग्निशिख अपने मनमें क्या मुझे शत्रुओंने मारडाला है इसलिये घबड़ाकर अपने घरको लौटगया उसे यह ज्ञान नहीं हुआ कि मैं तो अभी भला चंगाहूं मारा कौन गया ब्रह्माकी सृष्टि में अपूर्व २ तामसी विचित्र जीवहैं घरमें जाकर हँसते हुए अपने परिजनों से

साहस नहीं करते हैं तब उस वैद्यने दूसरे दिन राजाके सम्पूर्ण परिकरके लोगों से कहा कि मैंने छःमहीने में राजाको युवाकरदिया और दोमहीनेमें इसकारूपभी बदलजायगा इससे तुमलोग कुछ दूरसे राजा की चेष्टा देखो यह कहकर उसने सम्पूर्ण लोगोंको बुलाकर उस युवा पुरुषसे सबके नाम और कार्य बतलाये इस युक्तिसे उसने दोमहीने तक उस युवापुरुषको रानीपर्यन्त सम्पूर्ण परिकर पहिचनवादिया और सुन्दर भोजनों से उसे पुष्ट करके आठ महीने के बाद बाहर निकालकर सब से कहा कि देखो राजा अजर होगया उस समय सम्पूर्ण लोग राजाको औषध से अजरहुआ जानकर उसको सब ओर से घेरकर खड़े होकर देखने लगे तदनन्तर वह तरुणपुरुष स्नान करके बड़े उत्सवपूर्वक मन्त्रियों के साथ सम्पूर्ण राज्यकार्य करनेलगा तबसे उसका नाम राजा अजर होगया और सम्पूर्ण रानियों के साथ क्रीड़ा करताहुआ राज्यके सुखों को भोगनेलगा वैद्य के छलको न जानकर सब लोगोंने यहीजाना कि यह वही राजा है रसायनके प्रभावसे इसका स्वरूप बदलगया है तब राजा अजरसेन से सम्पूर्ण प्रजा तथा रानी कमलप्रभा को अपने ऊपर अनुरक्त करके अपने मित्रोंसमेत राज्य सुखको भोगनेलगा उसने अपने परममित्र भेषजचन्द्र तथा पद्मदर्शन को इतने हाथी घोड़े और रत्नदिये कि वह राजाके समान ऐश्वर्य्यवान् होगये परन्तु तरुणचन्द्र नाम वैद्यको केवल औषधि के लिये रक्खा और सत्य तथा धर्म्म से उसको च्युत जानके उसपर विश्वास नहीं किया एकदिन उस वैद्यने एकान्तमें राजासे कहा कि तुम मुझे कुछभी नहीं गिनतेहो स्वतन्त्रतासे जो चाहतेहो सो करतेहो क्या वहदिन भूलगया जो मैंने तुमको राजा बनायाथा यह सुनकर राजा अजर

अपने मारेजानेके वृत्तान्त को मिथ्याभी जानकर वह मोहित होकर अपनी कन्याको भूलकर फिर नही आया रूपशिखाभी इसप्रकार अपने पिताको मोहित करके शृङ्गभुजके साथ उसी घोड़ेपर सवार होलीनी ठीकहै सती स्त्रियां अपनेपतिके हितके सिवाय और कुछ नही जानती तब शृङ्गभुज अपनी प्रियासमेत उसीघोड़ेको दौड़ाकर बड़ी शीघ्रता से वर्द्धमानपुर मे पहुँच गया वहां वीरभुज उसे स्त्री समेत आया सुनकर प्रसन्न होके मन्दिरसे बाहर उसके देखने को आया सत्यभामासे युक्त श्रीकृष्णजीके समान रूपशिखासेयुक्त शृङ्गभुजको देखकर राजाको नवीन राज्य मिलनेकासा सुखहुआ और घोड़े से उतरकर रूपशिखासमेत पैरोंपर गिरते हुए शृंगभुज को हृदयमें लगाकर राजाकेनेत्रोंसे आंसू बहनेलगे और उन्हीं आंसुओंसे मानों दुःखरूपी अमंगल को शान्त करके राजा बड़े उत्सवसे उसे भीतर लेगया और सुखपूर्वक बैठालकर बोला कि हे पुत्र तुम कहां गये थे पिताके यह वचन सुन उसने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया और राजाके सन्मुख अपने निर्वासभुज आदि सब भाइयों को बुलाकर वह सुवर्ण का तीर रूपशिखा से उन्हें दिलवा दिया राजावीरभुज सब वृत्तान्तको जानकर और अपने सन्मुखही बाण का देना देखकर अपने वीरभुजादिक पुत्रों से विरक्तहोकर केवल शृंगभुज को ही अपना पुत्र मानकर उसपर अधिक स्नेह करने लगा और उसने शोचा कि जैसे इन भाई रूप शत्रुओं ने निरपराध शृगभुजको द्वेषसे निकाल दियाथा उसीप्रकार इन सब पुत्रों की माताओंने मेरी निर्दोषप्रिया गुणवराको मिथ्या कलंकलगाया होगा इससे आजही चलकर निश्चय करनाचाहिये इसप्रकार शोचकर राजा रात्रिके समय अयशोलेखा रानी के यहां परीक्षा करने

ने वैद्यसे कहा कि अरे तुम वडे मूर्खहो कौन किसको करताहै और कौन किसको देताहै अपने पूर्वजन्मके कर्महीं सब करते हैं और देते हैं इससे तुम अभिमान न करो यहमुझे तपके प्रभाव से राज्य मिलाहै यह बात मैंतुमको थोड़ेही कालमें प्रत्यक्ष दिखादूंगा उसके यह वचन सुनकर उस वैद्यने भयभीत होकर शोचा कि यह तो धृष्टतारहित वडाधीर ज्ञानी मालूम होताहै जो गुप्तबातका जानना राजा लोगों को वशमें रखनेका मुख्यकारण होताहै वह भी इसके सम्मुख नहीं चलता इससे इसीके अनुकूल वनारहना चाहिये और देखूं यह क्या अपने तपका प्रभाव मुझे दिखावेगा इसप्रकार शोचकर वह वैद्य चुपहोगया दूसरेदिन राजाअजर तरुण चन्द्रादिकों को लेकर भ्रमण करने को निकला भ्रमण करते २ नदी के तीर पहुँचा वहां नदीके प्रवाहमें वहतेहुए पांच सुवर्ण के कमल उसने देखे सेवकोंके द्वारा वह कमल मँगवाकर और देखकर उसने अपने पास खड़ेहुए तरुणचन्द्र वैद्य से कहा कि तुम नदी के किनारे २ जाकर इन कमलों के उत्पन्नहोने का स्थान देखआओ और देखकर शीघ्रही मुझ से कहो मुझे इन अद्भुत कमलों के लिये वड़ा आश्चर्य्य होरहाहै तुम वड़े चतुरहो इसीसे मैं तुमको भेजता हूं यह कहकर राजा तो अपने घरको चलाआया और तरुणचन्द्रने विवश होकर उसी नदी के किनारे चलते २ नदी के तटपर एक शिवजी का मन्दिर और एक वडाभारी वरगदका वृक्ष जिसपर कि किसी मनुष्य के हाड़ोंकी पंजरी लटकरहीथी उसे देखा और वहां थकके स्नानकरके श्री शिवजीका पूजनकरके कुछ देरतक विश्रामकिया उससमय अकस्मात् मेघ वरसनेलगा जल वरसने से वरगद की शाखाओं में लटके हुए मनुष्य के पिंजरसे जो जलके विन्दु नदी

को गया वहां राजा के आने से प्रसन्न होकर मद्य पीके रति के उपरान्त श्रम से कुछ औंचकर रानी अयशोलेखा बकने लगी कि जो मैं गुणवरा को मिथ्या दोष न लगाती तो आज राजा मेरे यहां इस प्रकार क्यों आता उस दुष्टरानी के यह वचन सुनकर राजा अपने विचारको पुष्ट जानकर क्रोधयुक्त होके वहांसे चला आया और अपने प्रधान पुरुषों को बुलाकर बोला कि गुणवरा को गढ़े से निकाल के और स्नान कराके शीघ्र मेरे पास लेआओ उस ज्ञानी ने इसी समयतक अनिष्टके शान्ति करने के लिये गुणवराको गढ़े में रखनेकी आज्ञादीथी यह सुनकर वह लोग उसी समय गुणवराको निकालकर स्नान कराके और नवीनआभूषण वस्त्र पहराकर राजा के निकट लेआये तब राजा बहुत काल के विरह के उपरान्त उसे देखकर उसके गले में लिपटगया और परस्पर आलिंगन से तृप्त न होकर वह रात्रि व्यतीत की राजाने उस समय गुणवरा से शृंगभुजका भी सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया उसे सुनकर गुणवरा अत्यन्त प्रसन्न हुई राजा तो यहां आकर गुणवरा से मिलकर अत्यन्त आनन्द को प्राप्त हुआ और वहां रानी अयशोलेखा होश मे आकर अपने छलको प्रकट हुआ जानकर अत्यन्त खेदको प्राप्तहुई प्रातःकाल राजा वीरभुज ने रानी गुणवरा के पास शृंगभुजको रूपशिखा समेत बुलवा भेजा उसने वहां आकर अपनी माताको गढ़े से निकली हुई देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर रूपशिखा समेत बड़े आनन्द पूर्वक प्रणाम किया गुणवरा भी बहुत दूरदेश से आयेहुए बधू समेत अपने पुत्र को आलिंगन करके आनन्द की पराकाष्ठाको प्राप्तहुई उस समय राजा की आज्ञा से शृंगभुजने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त और जो २

में गिरे वह सुवर्ण के कमल होगये यह आश्चर्य देखकर तरुणचन्द्र शोचने लगा कि यह क्या आश्चर्य्य है इस निर्जन वनमें किससे पूंछूँ अथवा ईश्वर की अनेक आश्चर्य्यों से भरीहुई सृष्टिको कौन जानसकता है मैंने सुवर्ण के कमलोंका उत्पत्ति स्थान तो देखही लिया है अब इस पांजरको नदीके जलमें फेंकदूं तो एक तो धर्म्म होगा और इसकी पीठपर कमल उत्पन्नहोंगे यह शोचकर उसने वह पंजर जलमें फेंक दिया और वह दिन वहीं व्यतीतकरके कई दिनों मे वहां से धीरे २ चलकर विलासपुर पहुँच के राजद्वार में अपने आगमनका निवेदन करवाया फिर द्वारपालसे आज्ञापाकर राजा अजरके निकट पहुँचके तरुणचन्द्र जैसे कि कुशल पूछकर चाहताही था कि मैं सब वृत्तान्त कहूँ वैसेही राजाने वहां से सब लोगों को हटाकर उससे कहा कि हे मित्र! तुमने सुवर्ण के कमलों के उत्पत्ति स्थानको देखा और उस उत्तमक्षेत्र में तुमने मनुष्यका पांजर लटकता हुआ भी देखा वह मेरा पूर्वजन्म का शरीरहै वहां मैंने पैरो से बरगदको पकड़के नीचेको मुखकरके तपकरते२शरीर सुखाकर त्याग करदिया था उसी तपके माहात्म्यसे पांजरसे गिरेहुए जलके विन्दु सुवर्ण के कमल होजाते हैं और तुमने जो वह पांजर जलमें फेंकदिया सो बहुत उचितकिया तुम मेरे पूर्वजन्म के मित्र हो और यह भेपजचन्द्र तथा पद्मदर्शनभी मेरे पूर्वजन्म के बड़ेमित्र हैं हे मित्र! उसी तपके प्रभावसे मुझे ज्ञान तथा राज्य प्राप्त हुआ है और पूर्वजन्म का स्मरण भी बना है मैंने युक्तिपूर्वक यह तुमको प्रत्यक्ष दिखा दिया और पांजर फेंकने की पहचान भी तुम्हारे निश्चयके लिये तुमसे कहदी इस से तुम यह अभिमान छोड़दो कि मैंने इसको राज्य दियाहै चित्त में खेदभी मतकरो

रूपशिखा से विचित्र कार्य किये थे वह सबविस्तारपूर्वक कहे उस वृत्तान्त को सुनकर रानी गुणवरा बोली कि हेपुत्र! इस विचित्र चरित्रवाली रूपशिखाने तुम्हारेलिये क्या २ नहीं किया इसने अपने प्राणोंकी आशा भाईबन्धु तथा स्वदेश छोड़कर तुम्हारे प्राण बचाये और तुम्हें स्वदेश तथाबन्धुओं से मिलाया भाग्यवश सेयह कोई देवी तुम्हारे लिये उत्पन्न हुई है इसने अपने आचरणो से सम्पूर्ण पतिव्रताओंको नीचे करदिया रानी के यह वचन सुनकर राजाने कहा कि बहुत ठीकहै और रूपशिखाने विनय से अपना शिर झुकालिया उस समय अयशोलेखा से मि या दोप लगाया हुआ अन्तःपुरका रक्षक सुरक्षित सम्पूर्ण तीर्थ का भ्रमण करके राजाके द्वारपर आया प्रतीहार के मुख से उसका आना सुनकर राजा ने उसे भीतर बुलाके प्रणाम करतेहुए उसको बड़े आदर से अपने पास बैठाया और उसीकेद्वारा सम्पूर्ण दुष्ट रानियोंको बुलवाकर उसीसे कहा कि इन सबको तहखानों में बन्दकरदो यह सुनकर उन सब रानियोंको भयभीत देखकर रानी गुणवरा अत्यन्त कृपापूर्वक राजाके चरणोंमें गिरकर बोली कि हेआर्यपुत्र! इनको तहखाने में बन्द न करवाइये मेरे ऊपर कृपाकरिये मैं इन सबको भयभीत नहीं देखसक्ती हू इसप्रकार प्रार्थना करके उसने राजा से उन सबका बन्धन छुड़वा दिया ठीकहै विरोधियों पर दया करना ही महात्मा लोगोंका बदलालेना है तब वह सम्पूर्ण रानी लज्जित होकर अपने अपने घरको चली गईं और राजा ने रानी गुणवरा को अत्यन्त सुशील मानकर अपने को महा धन्य माना कि जिसे ऐसी स्त्री मिली इस के उपरान्त राजा ने निर्वास आदिक अपने सम्पूर्ण पुत्रों को बुलवाकर युक्तिपूर्वक उनको नि-

प्राक्तन कर्मके विना कोई किसीका दाता नहीं है मनुष्य जबसे गर्भ में आताहै तभी से अपने प्राक्तन कर्मरूपी वृक्षके फल को खाताहै राजा अजरके यह वचन सुन कर और यथार्थ जानकर तरुणचन्द्र उसीदिन से सन्तोषपूर्वक उसका सेवन करने लगा और राजा अजर भी आदरपूर्वक उसे बहुतसा धन देकर रानी तथा मित्रों समेत पुण्य के प्रभावसे मिलेहुये अकंटकराज्यका सुखपूर्वक भोग करने लगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चपञ्चाशत्तम प्रदीप ५५ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषट्पञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५६ ॥

विधिःस्वरोचकंकर्म नृभिःकारयतिप्रभुः ।
अरोचकंप्रकुर्वाणश्चिराजीवोयथामृतः ५६ ॥

(अर्थ) विधाता निज रुचिके अनुकूलही लोगों से कर्म्म कराताहै अन्य नहीं जैसे अरोचक कर्म्म करता चिरजीवी वैद्य मृत्यु को प्राप्त हुआ ५६ ॥

चिरायुनाम नगर में चिरायु नाम एक बड़ा धनवान् चिरंजीवी राजा था उसके बुद्धदेव का अवतार नागार्जुन नाम दयालुदानी तथा विज्ञानी एक मन्त्री था वह सम्पूर्ण ओषधियों की युक्ति जानताथा इससे उसने रसायन बनाकर अपने को और राजा चिरायुको अजर तथा चिरजीवी करलियाथा एकसमय नागार्जुन का एक पुत्र जो कि सम्पूर्ण पुत्रोंमेंसे उसे अधिक प्रियथा मरगया उस दुःखसे व्याकुल होकर नागार्जुनने मनुष्योंकी मृत्युकी शांति के लिये अपने तप तथा दानके प्रभावसे बहुतसी ओषधियां मिलाकर अमृत बनाया एकही ओषध उसमें मिलाने को बाकी थी उसके मिलाने का समय आवेही था कि इन्द्रने यह जानकर देव-

कालने के लिये कहा कि मैंने सुनाहै कि तुम सब पापियों ने कोई पथिक वैश्य मारडाला है इससे तुम लोग यहां मतरहो सम्पूर्ण तीर्थोंका पर्यटन करो राजाके यह वचन सुनकर वह सब उसे समझा न सके क्योंकि स्वामी के हठ करने पर कौन विश्वास करासक्ता है तव उन सब भाइयों को जाते देखकर भृंगभुज कृपा से आंसू भरकर अपने पितासे वोला कि हे तात! आपकृपा करके इनके एक अपराधको क्षमा करिये और यह कहकर चरणोंपर गिरपड़ा राजा भी उसके विनय को देखकर और बाल्यावस्थाही में व्रज मे रहने वाले श्रीकृष्ण भगवान् के समान सम्पूर्ण शत्रुओं के मारने मे समर्थ जानकर उसके वचन स्वीकार करलिये और वह निर्वासभुज आदि सब भाई भी उसको अपने प्राणों का रक्षक जाननेलगे सब प्रजालोग भी भृंगभुज के ऐसे २ उत्तम गुणोंको देखकर उसपर बड़ा अनुराग करनेलगे तदनन्तर राजाने भृंगभुज को गुणों में सबसे बड़ा जानकर उसके सम्पूर्ण बड़े भाइयो को छोड़कर उसीको युवराज पदवीदी तव युवराज पदवी को पाकर भृंगभुज अपने पितासे आज्ञालेकर सम्पूर्ण सेनाको साजकर दिग्विजय करनेको गया और अपनी भुजाओ के पराक्रमसे सम्पूर्ण पृथ्वी के राजा लोगो को जीतकर उनको अपने साथ में लेकर और दिशाओं में अपनी कीर्तिको फैलाकर लौटआया इसप्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने वशमें करके भृंगभुज अपने भाइयों समेत सम्पूर्ण राज्य के कार्य्यों को करके अपने माता पिताको प्रसन्नकरनेलगा तव उसके पिता माता राजा रानी भी निश्चिन्तहोकर आनन्दपूर्वक ऐश्वर्यका भोग करनेलगे और भृंगभुज भी सम्पूर्ण ब्राह्मणों को दानादि से प्रसन्न करताहुआ रूपवती सम्पत्ति के स-

ताओं से सलाह करके अश्विनीकुमार से कहा कि नागार्जुन से जाकर हमारे यह वचन कहो कि तुम मन्त्री होकर भी यह क्या अन्याय करते हो क्या तुम ब्रह्माके भी जीतने को उद्यत हुयेहो क्योंकि ब्रह्माने मनुष्य मृत्युके लिये उत्पन्न किये हैं तुम अमृत बनाकर उन्हें भी अमर बनाया चाहतेहो ऐसा करने से देवता और मनुष्यों में भेदही क्या रहेगा और पूज्यपूजक के अभावसे संसार की मर्यादा नष्ट होजायगी इससे हमारे वचनको मानकर तुम अमृत मत बनाओ नहीं तो देवता लोग कुपित होकर तुमको शाप देंगे और जिस पुत्रके शोकसे यह यत्न तुमने कियाहै वह स्वर्ग में सुखपूर्वक रहताहै यह कहकर इन्द्रने अश्विनीकुमार को नागार्जुन के पास भेजा तब अश्विनीकुमारने नागार्जुन के पास आकर अर्घपाद्यादि सत्कारके गृहण करनेके पीछे इन्द्रका संदेशा उसे सुनाया और यह भी कहा कि तुम्हारा पुत्र स्वर्ग मे सुखपूर्वक वर्तमानहै इन्द्रके सन्देशे को सुनकर नागार्जुन उदासीन होकर शोचनेलगा कि जो मैं इन्द्रका वचन नहीं मानूंगा तो देवता तो अलग रहे पहले यह अश्विनीकुमारही मुझे शाप देंगे इससे अमृत को जाने दो मेरा मनोरथ सिद्ध नही होगा और मेरा पुत्र तो अपने पुण्यों से उत्तम गति को पहुँचही गया इस प्रकार शोचकर उसने अश्विनीकुमार से कहा कि मैंने इन्द्र की आज्ञा मानली अब मैं अमृत नहीं बनाऊंगा जो आप न आजाते तो मैं पृथ्वी के सम्पूर्ण जीवों को पांचही दिन पीछे अजर अमर करदेता यह कहकर नागार्जुनने अश्विनीकुमार के आगेही वह सिद्ध होनेवाला अमृत पृथ्वी में गाड़दिया [illegible] ने इससे आज्ञा लेकर इन्द्र के पास जाके उ[illegible] उनको प्रसन्न किया

इसके उपरान्त राजा चिरायुने जीवहरनाम अपने पुत्रको युवराज पदवीदी युवराजपदवी पाकर वह जीवहर प्रसन्न होकर अपनी धनपरा नाम माताको प्रणाम करने गया धनपराने पुत्रको प्रसन्न देखकर कहा कि हे पुत्र ! इस युवराजपदवी को पाकर चलेगये परन्तु राज्य किसी को भी नहीं प्राप्तहुआ क्योंकि नागार्जुन ने इसको ऐसी रसायन बनाकरदी है कि जिससे यह आठसौ वर्षका पूरा होचुकाहै न जाने अभी कितने अल्पायु इसके राज्य में युवराज होंगे यह सुनकर अपने पुत्रको उदासीन देखकर उसने कहा कि जो तुम राज्य लेना चाहतेहो तो यह उपायकरो कि नागार्जुन प्रतिदिन सम्पूर्ण आह्निक करके भोजन के समय यह ढंढोरा पिटवाताहै कि कौन याचक है किसे क्या दियाजाय और कौन क्या चाहताहै, उस समय तुम जाकर उससे कहो कि तुम अपना शिर मुझे देदो तब वह सत्यवक्ता अपना शिर काटकर तुमको देदेगा इसप्रकार उसके मरजाने पर उसके शोकसे राजा कै तो मरजायगा या वनको चलाजायगा इसरीति से तुमको राज्य मिलैगा इसके सिवाय और कोई उपाय राज्य मिलने का नहीं है माता के यह वचन सुनकर जीवहरने प्रसन्न होकर यही उपाय करनेका निश्चय किया ठीकहै—खेदका विषयहै कि राज्यके लोभ से बन्धुता का स्नेह भी नष्ट होजाताहै इसके उपरान्त दूसरे दिन जीवहरने भोजनके समय कौन क्या मांगता है इत्यादि वचन कहतेहुए नागार्जुनसे उसका शिर मांगा युवराजकी यह याञ्चा सुनकर उसने कहा कि हे वत्स! मेरे इस शिर को लेकर तुम क्या करोगे मांस हड्डी तथा बालों का समूहरूप यह शिर तुम्हारे किसकाम आवेगा इतनेपर भी जो तुमको इससे कुछ प्रयोजन नहीं है तो तुम काटलो यह

को इसी खड्गसेमारो उसके यह वचन सुनकर अनिच्छासेनने उस को अवध्य जानकर अपनाही शिर काटनाचाहा उस समय यह आकाशवाणीहुई कि हे राजपुत्र ! ऐसा साहस मतकरो तुम्हारा बड़ा भाई मरा नहीं है खड्गके अपराधसे इसको देवीने मोहित करदिया है और इस खड्गदंष्ट्राका भी कोई अपराध नहीं है क्योंकि शापसे उत्पन्न होनेवाली स्त्रियों के बहुधा ऐसेही काम हुआ करते है यह दोनों पूर्वजन्मकी तुम्हारे भाईकी स्त्रियां हैं इससे तुम जाकर उन्हीं भगवती पार्वतीजी को प्रसन्न करो इस आकाशवाणीको सुनकर अनिच्छासेन मरण के उद्योग से निवृत्त होकर विमान पर चढ़के और उस कलंकित खड्गको लेकर विन्ध्यवासिनी को गया वहां पहुँचकर उपवास करके भगवती को प्रसन्नकरनेके अर्थ अपनाशिर काटनेको उद्यत हुआ उससमय यह आकाशवाणी हुई कि हे पुत्र ! साहस मतकरो मैं तुम्हारी भक्तिसे प्रसन्नहूं तुम्हारा भाई जी उठगा और यह खड्ग फिर निर्मल होजायगा इस आकाशवाणी को सुन कर और खड्गको अपने हाथमें निर्मल देखकर अनिच्छासेन भगवतीकी परिक्रमा करके और अपने विमानपर चढ़कर शैलपुर में अपने भाईके निकट आया और उसे उसी समय चैतन्यहुआ देख कर नेत्रोंमें अश्रुभरकर उसके पैरोंपर गिरपड़ा और उसने भी उसे पैरों से उठाकर अपने गले में लगालिया उस समय वह दोनों स्त्रियां भी अनिच्छासेन के पैरोंपर गिरकर बोली कि तुमने हमारे पतिके प्राण रखलिये इसके उपरान्त इन्दीवरसेन के पूछनेपर उस ने सब व्यौरेवार वृत्तान्त कह दिया उस सम्पूर्ण वृत्तान्तको सुनकर इन्दीवरसेन खड्गदंष्ट्रा पर क्रोधित नही हुआ और अपने भाईपर अत्यन्त प्रसन्नहुआ फिर अनिच्छासेन के मुखसे अपनी सौतेली

कहकर उसने अपनी गर्दन उसके आगे रखदी रसायन से द्ग
उसकी ग्रीवाके काटने में राजपुत्र के बहुत से खड्गों के टुकड़े
होगये परन्तु ग्रीवा नहीं कटी उससमय इस वृत्तान्त को सुनक
राजा चिरायु भी वहां आकर नागार्जुन को शिर देने से निवार
करनेलगा तब उसने कहा हे राजा ! मुझेअपने पूर्वजन्मों का स्मर
है मेरे निन्नानवे जन्महो चुके हैं उन सबजन्मों में मैंने अपना शि
दियाहै यह सौवां जन्म है इसमें भी मुझे शिर देनाहै इससे आ
मुझे निषेध न कीजिये मेरे पाससे अर्थी कभी विमुख होकर न
लौटता है अब मैं अपना प्राण शिर तुम्हारे पुत्रको दिये देता
तुम्हारे देखने के लिये मैंने इतनी देरलगाई है यह कहकर औ
राजासे मिलकर उसने अपने पाससे एक चूर्ण लेकर राजपुत्र वे
खड्ग में लगादिया उस खड्गके प्रहारसे राजपुत्रने नालसे कम
के समान नागार्जुनका शिर गर्दन से अलग काटलिया उससम
सम्पूर्ण लोग रोदन करनेलगे और राजा चिरायु भी प्राणदेनेक
उद्यतहुआ तब यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा ! ऐसा अनर्थ न
करो यह तुम्हारा मित्र नागार्जुन शोक करनेके योग्य नहीं है य
मुक्तहोकर बुद्धके समान उत्तमगतिको प्राप्त हुआहै यह आकाश
वाणी सुनकर राजा चिरायु बहुतसा दान करके शोकसे राज्यको
त्यागके वनको चलागया और वहां कुछकाल तपकरके परमगति
को प्राप्त हुआ और उसका पुत्र भी जीवहर राज्यपर बैठतेही नागा

माताकी माया से उस खड्गको लेकर उसीके प्रभाव से मिलेहुए विमानपर अपने भाई तथा स्त्रियोंसमेत चढ़कर और सुवर्णके मंदिरों को भी उसीपर रखकर आकाशमार्ग से इरावती नाम पुरीको चला आया वहां आकाशसे उतरकर पुरवासियोंके चित्तमें आश्चर्यकराता हुआ राजमंदिरमें अपने माता पिताके पास भाई तथा स्त्रियों समेत गया और आंसू भरकर अपने माता पिताके चरणो पर गिरा वह भी सहसा अपने पुत्रको देखकर और उसे हृदय से लगाकर स-न्ताप रहित होगये और दिव्यरूप बहुओंको भी वन्दना करती देख कर उनके चित्तमे परमानन्द हुआ तदनन्तर कथाके प्रसंगसे उन दोनों बहुओंको अपने पुत्रकी पूर्व्वजन्म की स्त्रियां जानकर और विमान तथा सुवर्ण के मन्दिरोंको देखकर उन दोनों रानी अधिक संगमा तथा राजापरित्यागसेन के चित्त में आश्चर्यपूर्वक प्रसन्नता हुई इस प्रकार अपने माता पिता को प्रसन्न करके इन्दीवरसेन अ-पने भाई और स्त्रियों समेत कुछ कालतक सुखपूर्व्वक रहा कुछ समय के उपरान्त अपने पिता से आज्ञा लेकर अपने भाई समेत दिग्विजय करने को गया और खड्गके प्रभापसे सम्पूर्ण पृथ्वी जीत कर राजालोगोसे सुवर्ण हाथी घोड़े तथा रत्नलेकर लौटआयालौट-कर आये हुए इन्दीवरसेन के पीछे सेना के चलने से जो धूलउड़ रही थी सो मानो सम्पूर्ण विजय कीहुई पृथ्वी उसके पीछे पीछे चलीआती थी राजापरित्यागसेन अपने पुत्रको दिग्विजय करके लौटाहुआ जानकर राजधानी से बाहर आगे से जाकर ले आया और जब मंदिरमें आगया तब रानी अधिक संगमा भी अपनेपुत्रों से मिलकर अत्यन्त प्रसन्नहुई इस प्रकार अपने माता पिता को प्रसन्न करके और सम्पूर्ण विजय कियेहुये राजालोगो का सत्कार

ने राजा चिरायु के अन्य रानी से उत्पन्नहुये शतायुनाम पुत्रको राज्यपर बैठाया इसप्रकार नागार्जुन से मनुष्यों की मृत्युके नाश के लिये बनायेहुये अमृत को देवतालोग न सहके और नागार्जुन भी मृत्युको प्राप्तहुआ इससे ब्रह्माका बनायाहुआ यह अनित्य जीव लोक दुस्सहदुःखों से भराहुआ है जो ब्रह्मा नहीं चाहते हैं वह सैकड़ों यत्नों से भी कोई नहीं करसक्ता है॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषट्पञ्चाशत्तम प्रदीप ५६॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तपंचाशत्तमःप्रदीपः ५७॥

सपत्नीनापकर्तव्याऽपकारंकुरुतेपरम्।
यथाहिकाव्यालंकारामहद्वैरंचकारह ५७॥

(अर्थ) सपत्नी का अपकार करना वह भी फिर वैरसे महान् अपकार कराती है–जैसे–(काव्यालंकारा) ने अधिक सगमा को दो फल खाने से वैर साधनकिया ५७॥

अलका से भी महासुन्दर एक ऐरावती नाम नगरी है उस में परित्याग सेन नाम राजा था उसके प्राणों के समान दो रानी थीं एक तो उसी के मंत्री की पुत्री अधिकसंगमा नाम और दूसरी किसी राजा की पुत्री काव्यालंकारा नाम उस राजाके कोई पुत्र न था इसी से अपनी दोनो रानियों को साथ लेकर निराहार होके कुशों के आसनों पर बैठकर उसने तप करना आरम्भकिया उसके तप से प्रसन्नहुई भगवती पार्वतीने दोदिव्य फलदेकर उससे कहा कि हे राजा! उठो यह दोनों फल अपनी रानियों को देदो तुम्हारे दो वीर पुत्र होंगे यह कहकर पार्वती जी अन्तर्द्धान होगई और राजा ने उठकर अपने हाथ में दोनों फलों को देख के रानियों से स्वप्न का वृत्तान्त कहा और प्रसन्नता पूर्वक श्री भगवती जी का

करके इन्दीवर सेन ने वह सवकर जो राजालोगों से मिलाथा देकर उसे अकस्मात् अपने पूर्वजन्मका स्मरण आगया है वह मैं आपको सुनाताहूं हिमालयके शिखरपर मुक्तापुरनाम एक नगरहै उसमें मुक्तासेन नाम विद्याधरोंका राजा है उसके कम्बुमती नाम रानीमें पद्मसेन और रूपसेननाम दो पुत्रहुये उनमे से पद्मसेनके साथ आदित्यप्रभानाम विद्याधरी ने स्वयंवर करलिया यह जानकर आदित्यप्रभा की सखी चन्द्रवती नाम विद्याधरी ने भी कामार्त्ता होकर पद्मसेन के साथ विवाह किया तब दो स्त्रियों से युक्त पद्मसेन सौत से ईर्ष्या करनेवाली आदित्यप्रभा से बहुत खिन्न होकर अपने पितासे बोला कि हे तात ! मैं प्रतिदिन ईर्ष्यायुक्त स्त्रियों के कलहको नहीं सहसक्ताहूं इससे इस दुःख के दूर करने के लिये मेरी तपोवन जानेकी इच्छा है सो आप मुझे आज्ञा दीजिये जब एक बार कहने से पिताने आज्ञा नहीं दी तब पद्मसेन ने बड़ाहठ किया उससमय उसके बहुतसे हठ करनेसे क्रुद्ध होकर मुक्तासेनने उसको यह शाप दिया कि तुम तपोवन में जाकर क्या करोगे मृत्युलोक मे जाओ वहां यह बड़ी आदित्यप्रभा नाम कलहकारिणी तुम्हारी स्त्री राक्षस योनिमें उत्पन्न होकर तुम्हारी स्त्रीहोगी और यह दूसरी तुम्हारी बहुत प्यारी चन्द्रवती किसी राजा की रानी होकर राक्षसकी स्त्री होगी फिर पीछे से तुम्हारी स्त्री होगी और यह रूपसेन भी तुम्हारे साथ तपोवन जानेकी इच्छा करता था इससे यह भी वहां तुम्हारा छोटा भाई होगा वहां दो स्त्रियो के होनेसे कुछ दुःख अनुभव करके जब सम्पूर्ण पृथ्वी जीतकर अपने पिता को देदोगे तब इन सबसमेत तुम अपनी जातिको स्मरणकरके शाप से छूटजाओगे इसप्रकार अपनेपिता से अपने शापका उद्धार सुन

पूजन किया और पारण किया तदनन्तर मंत्री के गौरव से पहले अधिकसंगमा नाम रानी के यहां जाकर रात्रिके समय उसे एक फल खिला के उसी के साथ निवास किया और दूसरा फल दूसरी रानी के लिये अपने शिरहाने रखलिया जब राजा सोगया तो रानी अधिकसंगमाने उठकर अपनेही दो पुत्रों के होनेकी इच्छा से उस फलको भी खालिया क्योंकि स्त्रियों को अपनी सौतों से स्वाभाविक वैरहोताहै प्रातःकाल उठकर उस फलको ढूंढ़तेहुए राजासे रानी ने कहदिया कि वह फल भी मैंनेही खालिया तब राजा उदासीन होके दिन व्यतीत करके रात्रिके समय रानी काव्यालंकाराके यहांगया और जब उसने फलमांगा तब राजाने कहदिया कि मेरे सोजाने पर तुम्हारी सौत दूसराफल भी खागई राजा के यह वचन सुनकर और पुत्रोत्पत्ति के निमित्त उस फल को न पाकर वह रानी चित्तमें अत्यन्त दुःखित होके चुपहोरही कुछदिनों के व्यतीत होने पर रानी अधिकसंगमा गर्भवती हुई और समय पूरे होने पर एकसाथही उसके दो पुत्र हुए राजा परित्यागसेन ने पुत्रों की उत्पत्ति से अपने मनोरथ को सफल जान के अत्यन्त प्रसन्न होकर बड़ा उत्सव किया और कमल के समान नेत्र वाले अद्भुत स्वरूपवान् अपने वड़े पुत्र का नाम इन्दीवरसेन रक्खा और छोटे का नाम अनिच्छासेन रक्खा क्योंकि उसकी माता ने राजा की अनिच्छा से वह फल खाया था उनदोनो बालको को देखकर इसके साथ मुझे बदला अवश्य लेना चाहिये कि किसी युक्तिसे इनदोनों बालकोंका नाश होजाय इसप्रकार शोचकर वह उसका उपाय ढूंढनेलगी जैसे जैसे वह दोनों बालक वढ़े तैसे तैसे उस रानी के हृदय में वैररूपी वृक्षभी वढ़तागया क्रम से जब वह

कर पद्मसेन अपने भाई तथा स्त्रियों समेत पृथ्वी में उत्पन्नहुआ हे तात ! वह पद्मसेन मेंहीं हूं जिसका कि आप ने इन्दीवरसेन नाम रक्खाहै में अपना सब कर्त्तव्य करचुका और जो रूपसेन नाम दूसरा विद्याधर कुमारथा वह यही अनिच्छासेननाम मेराछोटाभाई है आदित्यप्रभानाम जो मेरी स्त्री वह यह खड्गदंष्ट्रा है और दूसरी चन्द्रावती नाम मेरी स्त्री मदनदंष्ट्रा है इस समय हमारे शाप की अवधिआगई इससे हम अपने स्थानको जाते हैं यह कहकर अपने भाई तथा स्त्रियोंसमेत पद्मसेन ने अपना मानुषी स्वरूप त्यागकर विद्याधरों का स्वरूप धरलिया और अपने पिताको प्रणाम करके स्त्रियों को गोदमें लेकर अपने भाई समेत आकाशमार्ग से अपने मुक्तापुर नगर में पहुँचकर अपने पिता मुक्तासेन तथा माता कम्बुमती को प्रणाम किया कम्बुमती समेत मुक्तासेन भी अपने पुत्रों और वहुओंको देखकर उनका सत्कार करके अत्यन्त प्रसन्न हुआ इस प्रकार शापसे छूटकर पद्मसेन ईर्ष्या रहित आदित्यप्रभा और चन्द्रप्रभा समेत सुखपूर्वक रहने लगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तपञ्चाशत्तम प्रदीप ५७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टपंचाशत्तमःप्रदीपः ५८ ॥

हीनसत्त्वस्य दुर्बुद्धेर्जायावै जायते वृथा ॥
अर्थलोभंयथात्यक्ताकाममन्यरतासमा ५८ ॥

(अर्थ)–हीन पराक्रमवाले दुर्बुद्धि की स्त्री भी वृथा निरर्थक होजाती है । जैसे अर्थलोभ की स्त्री उसे छोड़ अन्यपुरुष के पास-

दोनों तरुणहुए तब दिग्विजय की इच्छा से अपने पिता से बोले कि हमदोनों अस्त्रविद्या सीखचुके और युवावस्था भी आगई तो इन व्यर्थ भुजाओं को लेकर क्याकरें विजय की इच्छा से रहित क्षत्रीकी भुजा तथा यौवनको धिकारहै इससे हे तात! हमें दिग्विजयके लिये आज्ञादीजिये पुत्रों के यह वचन सुनकर राजा परित्यागसेन ने प्रसन्न होकर उनकी यात्रा को आरम्भकरदिया और यह भी कहदिया कि जो तुम्हें मार्ग में कोई संकटपड़े तो भगवती पार्वती जी का स्मरण करना क्योंकि उन्हीं की कृपा से तुमदोनों का जन्महुआ है यह कहकर बहुत सी सेना तथा जमींदार साथमें देकर उन्हें विदाकिया और पीछेसे अपने प्रधानमंत्री उन बालकों के मातामह बुद्धिमान् प्रथमसंगमा को भेजा तब महाबलवान् उन दोनों राजपुत्रोंने जाकर पहले पूर्वको विजयकिया अपने पुत्रों के इस वृत्तान्तको सुनकर राजा परित्यागसेन रानी अधिकसंगमा समेतप्रसन्नहुआ और रानी काव्यालंकारा द्वेषरूपी अग्नि से अत्यन्त संतप्तहुई तब उसने सन्धि विग्रह के अधिकारी कायस्थको बहुतसा धन देकर राजाकी ओरसे जमींदारों को जोकि उसके साथ में थे यह पत्र लिखवाया कि वह दोनो मेरे पुत्र अपनी भुजाओं के बल से सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतकर मुझे मारकर राज्य लेना चाहते हैं इससे जो तुम लोग मेरे भक्तहो तो विना विचारेही इन दोनोंको मारडालो यह लिखवाकर पत्र देकर हलकारेको भेज दिया उसहलकारे ने छिपकर सेनामे जाके वहपत्र उन छोटे राजाओंको जो उन पुत्रों के साथ उनकी रक्षाके लिये राजाने भेज दिये थे दे दिया उन लोगों ने वह पत्र बांचकर राजनीति को अत्यन्त कठिन समझकर और राजाकी आज्ञाका उल्लंघन करना उचित न जानकर

हारथा उस प्रतीहार के मानपरानाम महासुन्दर स्त्री थी अर्थलोभ राजा के यहां से उपार्जन कियेहुए धनसे व्योपारभी करताथा और अत्यन्त लोभके कारण सेवकों पर विश्वास न करके रोजगार के व्यवहारों मे अपनी स्त्री से काम कराताथा यद्यपि वहस्त्री इसकाम को अपने चित्तसे अपने योग्य नहीं समझती थी तथापि पति के आधीन होकर उसे बनियो के साथ व्यवहार करना पड़ताथा उस के सुन्दररूप तथा मधुर बचनों के लोभसे बहुत से व्योपारी उसके पास खरीदने तथा बेचने को आते थे हाथी घोड़े रत्न तथा वस्त्रादिक जो २ पदार्थ वह मानपरा बेचती थी उसमे बड़ी आमदनी देखकर अर्थलोभ अत्यन्त प्रसन्न होता था एकसमय वहां किसी दूरदेश से सुखधननाम एक वैश्य बहुत से घोड़े तथा हाथी आदि लेकर बेचने को आया उसका आना सुनकर अर्थलोभ ने मानपरा से कहा कि हे प्रिये ! सुखधननाम वैश्य किसी दूरदेश से यहां आयाहै उसकेपास बीसहजार घोड़े और चीनदेशके उत्तमवस्त्रों के असंख्य जोड़े हैं इससे तुम उसके पास जाकर पांचहजार घोड़े और दश हजार वस्त्रोंके जोड़े लेआओ उन पांच हजार घोड़ो में एकहजार अपने घोड़े मिलाकर मैं राजाके पासलेजाऊंगा और राजाके हाथ बेचूंगा यह कहकर अर्थलोभ ने मानपराको सुखधन वैश्यकेपास भेजा मानपराने सुखधन से पांचहजार घोड़े और दशहजार वस्त्रों के जोड़े मोल लेनेको कहा सुखधन उसके रूपको देखकर कामके विवश होकर स्वागत करके उसे एकान्त में लेजाकर बोला कि मूल्य लेकर तो हम तुमको एक घोड़ा अथवा एक वस्त्र भी नहीं देंगे परन्तु जो तुम एक रात्रि मेरे साथरहो तो पांच सौ घोड़े और पांचहजार वस्त्र मैं तुमको दूंगा यह कहकर उसने मानपरासे अपनी

रात्रिके समय सलाहकरके उन दोनों के मारनेका निश्चय किया यद्यपि राजपुत्रों के गुणों से वह सब प्रसन्न थे तथापि राजा की आज्ञासे विवशहोकर उन लोगोंने यह विचार किया किइसवार्त्ता को किसी मित्रकेमुखसे जानकर उन राजपुत्रों का मातामह प्रथम संगमनाम महामंत्री उन्हें घोड़ों पर सवार कराके उनको लेकर भागा रात्रिकेसमय मार्ग न जानने के कारण वह तीनों विन्ध्याचलके वनमें चलेगये वहां रात्रिके व्यतीत होजाने पर चलते २ मध्याह्नके समय घोड़े प्यासे होकर जल न पाकर मरगये और वह वृद्धमंत्री भी क्षुधा तथा तृषा से तालूके सूखने के कारण अपनेदौहित्रोंके देखतेही मरगया घोड़ोंको तथा अपने मातामह को मरा हुआ देखकर यहदोनों शोचनेलगे कि देखो हमारे पिताने हमारी उस दुष्ट सौतेली माताके कहने से अपराधके विना भी हम लोगों की यह दशा की इसप्रकार शोचकर दुःखित होके और पिता के उपदेश को स्मरण करके उन्होनेभगवती पार्वतीजीका ध्यान किया भक्तवत्सल भगवती के ध्यान करतेही क्षुधा तृषा तथा श्रमका नाश होगया और उनके शरीर मे वल बढ़गया तव वह दोनों भगवती जीकी कृपाके विश्वाससे सावधान होके भगवती विन्ध्यवासिनी के दर्शन करनेको चले और मार्गके श्रम के विनाही वहां पहुँचकर भगवती के आगे निराहार होके भगवतीकी आराधना करने के लिये तप करनेलगे इस बीचमें वह सम्पूर्ण राजालोग सेना में मिलके उन दोनों राजपुत्रोंके मारने के लिये उनके डेरेपर आये वहां मातामह के साथ उनको भागाहुआ जानकर मंत्र के खुलजाने से भयभीत होके राजापरित्यागसेन के पास चलेआये और वहां राजाको सम्पूर्ण लेख दिखाकर सव वृत्तान्त वर्णन किया

अभिलाषा बहुत प्रकटकी ठीक है स्वच्छन्द व्यवहार करनेवाली स्त्रियोंपर किसकी इच्छा नहीं चलती है तब मानपराने उससेकहा कि मैं अपने पतिसे जाकर पूंछती हूं कदाचित् वह लोभके कारण मुझे इस बातकी भी प्रेरणा करदेगा यह कहकर उसने अपने घरमें आके अर्थलोभ से जो कुछ सुखधनने एकान्त में लेजाकर उससे कहाथा वह सब कहदिया यह सुनकर अर्थलोभने कहा कि हे प्रिये! जो एकही रात्रिमें पांच सौ घोड़े और पांच हज़ार जोड़े मिलते हैं तो क्या दोषहै आज रात्रिभर जाकर तुम वहीं रहो कल प्रातःकाल चली आना अपने पतिके यह वचन सुनकर वह मानपरा उसपर घृणा करके अपने मनमे यह शोचनेलगी कि स्त्री के बेचने वाले सत्त्व रहित अत्यन्त लोभयुक्त इस पतिको धिक्कारहै मेरे लिये अब वही पति अच्छा है जो पांचसौ घोड़े तथा पांच हज़ार जोड़े देकर मुझे एक रात्रिके लिये मोल लेताहै यह शोचकर अर्थलोभ से यह कहकर कि मेरा इसमें कोई दोष नहीं है मानपरा उसे छोड़ कर उस सुखधन के यहां चलीगई सुखधन ने उसे आई देखकर सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछके बड़े आश्चर्य पूर्वक उसके मिलनेसे अपने को धन्य माना और उसीसमय पांचसौ घोड़े तथा पांच हज़ार जोड़े अर्थलोभ को भेज दिये और अपनी सम्पत्ति की मूर्त्तिमती फलश्री के समान मानपरा के साथ सुखपूर्वक रात्रिभर रहा प्रातःकाल उस निर्लज्ज अर्थलोभ के भेजे हुए बुलाने के लिये आये हुए सेवकों से मानपरा बोली कि उसने मुझे बेचडालाहै मैं दूसरे

राजा वह सब वृत्तान्त सुनकर घबराकर क्रोधपूर्वक बोला कि यह लेख मेरे भेजेहुए नहीं हैं यह तो कोई इन्द्रजाल है हे मूर्खों! क्या तुम इतनाभी नहीं जानतेहो कि मैं इतने कठिन तप से प्राप्तहुये अपने पुत्रोंको मरवाडालता तुमने तो उन्हें मारही डालाहोता परन्तु वह अपने पुण्यसे बचगये और उनके मातामहने मंत्रीहोने का फल दिखाया उनसे इसप्रकार कहके राजाने भागे हुये मिथ्यालिखनेवाले उसकायथ को बहुतदूर से पकड़ मँगवाकर सबहाल पूछकर मरवाडाला और उस दुष्टकार्य्य करनेवाली रानी काव्यालंकारा को पुत्रघातिनी जानकर तहखाने में बन्द करवादिया परिणाम को विना शोचे द्वेषसे अन्धेहोकर सहसा कियागया पाप विपत्ति का कारण क्यों न होगा जो राजालोग राजपुत्रों के साथ में से लौट आयेथे उनको राजाने उनके राज्योंसे निकाल करके उनके स्थानापन्न दूसरोंको करदिया और रानी अधिक संगमा समेतदुःखितहोकर अपने पुत्रोंको ढूंढताहुआ राजा भगवती का स्मरण करनेलगा इस बीच मे राजपुत्र इन्दीवरसेन पर तप से प्रसन्न हुई भगवती विन्ध्यवासिनीने स्वप्न में एक खड्ग देकर उससे कहा कि इस खड्ग के प्रभाव से तुम दुर्जय शत्रु को भी जीतोगे और जो कुछ इच्छाकरोगे वह सब भी इस खड्गके प्रभाव से मिलेगी और इसीसे तुम दोनोंके सब मनोरथ भी पूर्णहोंगे यह कहकर भगवती के अन्तर्द्धान होजानेपर इन्दीवरसेन ने जगकर अपनेहाथ खड्ग देखा और अपने भाई से स्वप्नका वृत्तान्तकहके तथा खड्ग दिखाकर उस समेत प्रसन्नहोके वनके फलफूलो सेही व्रतका पार किया तदनन्तर भगवतीकी कृपासे श्रमरहित होकर वह दोनोंभा भगवतीको प्रणामकरके आनन्दपूर्व्वक खड्गको लेकर वहांसे च

मोल लिया है वही मेरा पति है मानपरा के यह वचन सुनकर सेवकों ने जाके अधोमुख होकर के अर्थलोभ से मानपरा का उत्तराका उत्तर कह दिया सेवकोंके वचन सुनकर उसने चाहा कि मैं सुखधन के पास से मानपरा को जबरदस्ती लेआऊं तब उसके हरवलनाम एक मित्रने कहा कितुम सुखधन के यहांसे उसे नही लासक्के हो उस वीरके आगे तुम्हारी धीरता नही चलैगी। यह बड़ा बलवान्है बलवान् मित्रभी उसके साथमें हैं और मानपरा के मिलने से उसका उत्साह बढरहाहै और तुमतो कृपणताके कारण कि भेजीहुई स्त्रीने त्यागदिया है इस से निरुत्साह होरहे हो और तुम स्वतःबलवान् नहीहो न तुम्हारेसाथ कोई बलवान् मित्र है इससे तुम उसको जीत नहींसक्के और कदाचित् राजा जानलेगा तो वह भी तुमको स्त्रीका बेचनेवाला जानकर तुमसे क्रुद्ध होजायगा इस से चुपरहो अपनी हँसी मतकराओ इस प्रकार मित्रके समझाने पर भी अर्थलोभने क्रोध से अपनी सेना लेकर जाके सुखधन का घर घेर लिया तब सुखधन तथा सुखधन के मित्रों की सेनाने निकलकर अर्थलोभ को सेनासमेत मारभगाया वहांसे भागकर अर्थलोभने राजासे जाकर कहा कि हे महाराज! सुखधन नाम वैश्यने मेरी स्त्री हरलीनी है उसके वचन सुनकर राजाने क्रोधसे सुखधन को पकड़मँगवाना चाहा तब संयाननाम मंत्रीने राजासे कहाकि हे महाराज! साधारणतासे वह पकड़ने मे नही आवेगा क्योंकि ग्यारह मित्रों के साथ मे आये हुये सुखधन केपास सब मिलाकर एक लाखसे भी अधिक घोड़े हैं और इस विषयका अभी कुछतत्त्व भी नही मालूम हुआहै ऐसा प्रसिद्ध पुरुष विना किसी कारणके ऐसा निन्दित कर्म कभी नहीं करसक्ताहै इससे दूत भेजकर प्रथम

बहुत दूर चलकर एक बड़ासुन्दर नगरमिला जिसके सुवर्णमयगृहों को देखकर सुमेरुपर्व्वत की भ्रांति होती थी उसनगर के द्वारपर एक बड़ाभयङ्कर राक्षस खड़ाथा उससे इन्दीवरसेनने पूँछा कि इस नगर का क्यानाम है और इसका स्वामी कौन है तब उस राक्षसने कहा कि इस नगरका शैलपुर नाम है और यमदंष्ट्रनाम हमारा स्वामी यहां का राजा है राक्षस के यह वचन सुनकर यमदंष्ट्र के मारने की इच्छा से इन्दीवरसेन अपने भाई समेत उस नगर में प्रवेश करनेलगा तब उस द्वारपाल ने रोका तो इन्दीवरसेन ने अपने एकही खड्गके प्रहार से उसका शिर काटकर नगर के भीतर राजभवन में जाके सिंहासन पर बैठेहुए यमदंष्ट्र नाम राक्षस को देखा उसके बाईओर एक बड़ी स्वरूपवती स्त्री बैठी थी और दहिनी ओर एक दिव्यकुमारी बैठी थी इसप्रकार स्त्रियों के बीचमें बैठेहुए बड़ी २ दाढ़ों से भयंकर मुखवाले उस यमदंष्ट्र को इन्दीवरसेन ने युद्ध करने को बुलाया वह भी खड्ग लेकर उठखड़ा हुआ और उनदोनों का युद्धहोनेलगा युद्ध में इन्दीवरसेनने कईबार अपने खड्ग से उस राक्षस का शिर काटा परन्तु वह बारम्बार जम जम आया उसकी इसमाया को देखकर उसकुमारी स्त्रीने जो कि इन्दीवरको देखकर अनुरक्त होगई थी यह संज्ञा (इशारा) की कि शिरको काटकर उसके दो टुकड़े करडालो इस संज्ञाको जानकर उसने शीघ्रही राक्षस का शिर काटकर दो टुकड़े करडाले इससे उसकी माया नष्टहोगई और शिर फिर नहीं जमा इसी से वह राक्षस मरगया राक्षसके मरजाने पर उस स्त्री तथा कुमारी को प्रसन्न देखके भाई समेत इन्दीवरसेनने बैठकर उनसे पूँछा कि ऐसे सुन्दर पुर में यह केवल एक द्वारपाल राक्षस से युक्त राक्षसों का राजा

पूछलेना चाहिये कि वह क्या कहताहै मंत्रीके यह वचन सुनकर राजाने सुखधनके पास अपने दूतके मुखसे उन सब बातोंको सुन कर राजा बाहुबल अर्थलोभको साथ लेकर सुखधनके यहां मानपराके देखने के लिये और उसके मुखसे उस के वृत्तान्तको सुनने के निमित्त उसके घर गया वहां आदरपूर्व्वक सुखधनसे प्रणाम कियेगये राजाने ब्रह्माकी भी सौन्दर्यता लक्ष्मीको आश्चर्य करानेवाली मानपराको देखा और उससे सब वृत्तान्त पूछा उसने नम्रतापूर्वक अर्थलोभके आगेही राजासे अपना सब वृत्तान्त कह दिया सो सुनकर और सत्यसत्य जानकर और अर्थलोभको निरुत्तर देखके राजाने मानपरासे कहा कि अब क्या होना चाहिये तब मानपरा बोली कि हे महाराज ! जिस लोभीने आपत्ति के विनाही मुझे अन्य पुरुषके हाथ बेचडाला उस सत्त्वहीन निर्लज्ज लोभीके पास अब मैं कैसे जाऊं यह सुनकर राजानेकहा कि बहुत ठीकहै तब काम क्रोध तथा लज्जा से व्याकुल होकर अर्थलोभ बोला कि हे महाराज ! यह सुखधन और हम मित्रों की सहायताके विना अपनी २ सेनासमेत युद्धकरैं तब आप हमारा और इसका पराक्रम देखिये अर्थलोभ के यह वचन सुनकर सुखधन बोलाकि सेनासे क्या प्रयोजनहै आवो हम तुम दोई द्वन्द युद्धकरैं दो में से जो कोई जीतेगा उसी को मानपरा मिलैगी यह सुनकर राजा ने कहा कि ऐसाही होना चाहिये तब सब लोगोंके आगे घोड़ों पर चढ़कर वह दोनों युद्धभूमि में उतरकर परस्पर युद्ध करनेलगे सुखधनने घोड़ेके ऐसा भालामारा कि जिससे घोड़ा उछला औरअर्थलोभ नीचे गिरपड़ा इसी प्रकार और तीनवार घोड़ेको मार२कर सुखधन ने अर्थलोभको पृथ्वीपर गिराया परंतु धर्मयुद्ध जानकर

कौनथा और तुम दोनों कौनहो जोकि इसे मरादेखकर प्रसन्न हो
ही हो यह सुनकर उनमें से कुमारी बोली कि इस शैलपुर में वीर-
भुज नाम राजाथा उसकी यह मदनदंष्ट्रा नाम रानी है इस यमदंष्ट्रा
नाम राक्षसने अपनी मायासे वीरभुज नाम राजाको उसके सब प-
रिकर समेत खाकर इस मदनदंष्ट्रा को अपनी स्त्री बनालिया और
इस रम्यपुरमें सुवर्ण के घर बनाकर परिकरके विनाही इसके साथ
रमण करताहुआ रहनेलगा और मैं उस राक्षसकी खड्गदंष्ट्रा नाम
छोटी बहिन हूं अभी मेरा विवाह नहीं हुआ है तुम्हें देखकर मेरे
चित्तमें अनुराग उत्पन्न हुआ है इससे हे आर्य्य पुत्र ! तुम मेरे साथ
विवाहकरो इस राक्षसने हठपूर्वक इस मदनदंष्ट्रा के साथ विवाह
किया था इसीसे उसके मरने से इसको प्रसन्नता हुई है इस प्रकार
उस खड्गदंष्ट्रा के वचन सुनकर इन्दीवरसेन उसके साथ गान्धर्व
विवाह करके उसीनगर में भगवती के दियेहुए खड्ग के प्रभाव से
मनोवांछित भोग करताहुआ अपने भाई समेत रहा एकदिन खड्ग
के प्रभाव से आकाशगामी विमान बनाकर इन्दीवरसेन ने अपने
भाई को उसपर बैठालकर अपने माता पिता से अपना वृत्तान्त
कहने के लिये भेजा वह विमानपर चढकर क्षणभर में इरावतीनाम
पुरी में पहुँचकर अपने माता पिता के निकटगया जैसे चन्द्रमा को
देखकर तीव्रदुःखरूपी धूपमें व्याकुल चकोर प्रसन्नहोते हैं उसी प्र-
कार अनिच्छासेन को देखकर उसके माता पिता प्रसन्न हुए पैरोंपर
पड़ेहुए अपने छोटे पुत्र अनिच्छासेनको आलिंगन करके राजा
और रानी ने सन्देह युक्तहोकर अपने बड़े पुत्रका कुशल पूछा
तब उसने अपने भाई की कुशल कहकर आदि से अन्ततक का
सब वृत्तान्त वर्णन किया और अपने माता पिता से अपनी पापिन

पृथ्वीपर पड़ेहुये अर्थलोभ को जीवसे न मारा पांचवीवार अर्थलोभ घोड़ेपरसे गिरा और ऊपरसे घोड़ाभी उसपर गिरा इसीसे वह मूर्च्छित होगया तब उसके सेवक उसे उठालेगये उससमय सबलोगों ने सुखधन की बड़ी प्रशंसा की राजा वाहुवल ने भी उसका बड़ा सत्कार करके उसकी लाई हुई भेट उसी को लौटादी और कुकर्म से पैदा किया हुआ अर्थलोभका सब धन छीनकर उसके स्थानमें दूसरा प्रतीहार रखकर प्रसन्न होकर अपने मन्दिर को गमन किया ठीकहै सज्जनलोग पापियोंका सम्पर्क छोड़कर प्रसन्न होते हैं सुखधनभी इसप्रकार मिली हुई मानपरा के साथ विहार करता हुआ आनन्द पूर्वक रहने लगा इसप्रकार सत्त्व रहित पुरुषों से धन तथा स्त्री निकल जाती हैं और सत्त्ववान् के पास आपही आती है ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टपञ्चाशत्तम प्रदीप ५८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनषष्टितमःप्रदीपः ५९ ॥

भोगश्रीरेव सुखदाह्यर्थश्रीस्तुवृथैवहि ।
अर्थवर्मायथाक्लेशी भोगवर्मासभोगयुक् ५९ ॥

(अर्थ) भोगलक्ष्मीही सुख देनेवाली है और द्रव्यलक्ष्मी तो भोग विन वृथाही है जैसे—अर्थवर्मा क्लेशवान् था और भोगवर्मा भोगवान् भया ५९ ॥

कौतुकपुर नाम नगरमें बहु सुवर्ण नाम यथार्थनामवाला राजा था उसके एक यशोवर्मा नाम क्षत्री सेवकथा राजाने दानी होकर भी उसे कभी कुछ नहीं दिया और जब २ वह राजासे मांगताथा तब तब राजासूर्यकी ओरहाथकरके कहताथा कि मैं तो देना चाहताहूं परन्तु यह भगवान् नहीं चाहते कि मैं तुमको कुछ देऊं राजा के यह वचन सुनकर यशोवर्मा अवसर ढूंढता रहा एक दिन सूर्य

सौतेली माताका कियाहुआ वह कुकार्य सुना तदनन्तर कुछदिन वहां रहकर दुस्स्वप्नों के देखने से शंकित होके उसने अपने माता पितासे कहा कि में अब जाकर आपकी उत्कंठा का वर्णन करके आर्य्य इन्दीवरसेनको यहां लिवायलाता हूं इससे आप मुझे जाने की आज्ञादीजिये यह सुनकर राजा और रानी ने उसको जाने के लिये आज्ञादेदी तब अनिच्छासेन विमान में चढ़के आकाशमार्ग से शैलपुर को गया और प्रातःकाल उसने अपने भाई के मंदिरमें जाकर देखा कि इन्दीवरसेन पृथ्वीपर अचेत हुआ पड़ाहै और खड्ग-दंष्ट्रा तथा मदनदंष्ट्रा उसके पास बैठीहुई रोरही हैं यह देखकर घ-बराके उसने पूछा कि मेरेभाई की यह क्या दशाहोगई तब मदन-दंष्ट्रा तो खड्गदंष्ट्रा की निन्दा करनेलगी और खड्गदंष्ट्रा नीचे को मुख करके बोली कि तुम्हारे चलेजाने के उपरान्त एकदिन जब मैं स्नान करने को गई तब तुम्हारा भाई एकान्त में इस मदनदंष्ट्रा के साथ भोग करनेलगा स्नानसे लौटकर मैंने इसको रमण करते देखकर बहुतसे कुवाच्य इससे कहे तदनन्तर तुम्हारेभाईके विनय करनेपर भी भाग्य के समान दुर्लंघ्य ईर्ष्या से मोहित होकर मैंने शोचा कि यह मेरा कहना न मानकर अन्य स्त्री के साथ रमण करता है मैं जानतीहूं कि इसे खड्गके माहात्म्य से इतना अभिमान है इससे यह खड्ग छिपादेना चाहिये यह शोचकर जब तुम्हारा भाई सोगया तबमैंने खड्गको उठाकर अग्निमे छोड़दिया खड्गके अग्निमे छोड़तेही इसकी तो यहदशा होगई और खड्ग कलंकित होगया तब मैं तो पश्चात्ताप करनेलगी और मदनदंष्ट्रा मेरी निन्दा करनेलगी फिर शोकसे व्याकुल होके हमदोनोंके मरनेके लिये उद्यत होनेपर तुम यहां आगये तो अब तुम इसखड्गको लेकर मुझहत्यारिन राक्षसी

पूछलेना चाहिये कि वह क्या कहताहै मंत्रीके यह वचन सुनकर राजाने सुखधनके पास अपने दूतके मुखसे उन सब वातोंको सुन कर राजा बाहुबल अर्थलोभको साथ लेकर सुखधनके यहां मान-पराके देखने के लिये और उसके मुखसे उस के वृत्तान्तको सुनने के निमित्त उसके घर गया वहां आदरपूर्व्वक सुखधनसे प्रणाम कियेगये राजाने ब्रह्माकी भी सौन्दर्यता लक्ष्मीको आश्चर्य करानेवाली मानपराको देखा और उससे सब वृत्तान्त पूछा उसने नम्रतापूर्वक अर्थलोभके आगेही राजासे अपना सब वृत्तान्त कह दिया सो सुनकर और सत्यसत्य जानकर और अर्थलोभको निरुत्तर देखके राजाने मानपरासे कहा कि अब क्या होना चाहिये तब मानपरा बोली कि हे महाराज! जिस लोभीने आपत्ति के विनाही मुझे अन्य पुरुषके हाथ बेचडाला उस सत्त्वहीन निर्लज्ज लोभीके पास अब मैं कैसे जाऊं यह सुनकर राजानेकहा कि बहुत ठीकहै तब काम क्रोध तथा लज्जा से व्याकुल होकर अर्थलोभ बोला कि हे महाराज! यह सुखधन और हम मित्रों की सहायताके विना अपनी २ सेनासमेत युद्धकरैं तब आप हमारा और इसका पराक्रम देखिये अर्थलोभ के यह वचन सुनकर सुखधन बोलाकि सेनासे क्या प्रयोजनहै आवो हम तुम दोई द्वन्द युद्धकरैं दो मे से जो कोई जीतेगा उसी को मानपरा मिलैगी यह सुनकर राजा ने कहा कि ऐसाही होना चाहिये तब सब लोगोंके आगे घोड़ों पर चढ़कर वह दोनो युद्धभूमि में उतरकर परस्पर युद्ध करनेलगेसुखधनने घोड़ेके ऐसा भालामारा कि जिससे घोड़ा उछला औरअर्थलोभ नीचे गिरपड़ा इसी प्रकार और तीनवार घोड़ेको मार२कर सुखधन ने अर्थलोभको पृथ्वीपर गिराया परंतु धर्म्मयुद्ध जानकर

पृथ्वीपर पड़ेहुये अर्थलोभ को जीवसे न मारा पांचवींवार अर्थलोभ घोड़ेपरसे गिरा और ऊपरसे घोड़ाभी उसपर गिरा इसीसे वह मूर्च्छित होगया तब उसके सेवक उसे उठालेगये उससमय सबलोगों ने सुखधन की बड़ी प्रशंसा की राजा बाहुबल ने भी उसका बड़ा सत्कार करके उसकी लाई हुई भेंट उसी को लौटादी और कुकर्म से पैदा किया हुआ अर्थलोभका सब धन छीनकर उसके स्थानमें दूसरा प्रतीहार रखकर प्रसन्न होकर अपने मन्दिर को गमन किया ठीकहै सज्जनलोग पापियोंका सम्पर्क छोड़कर प्रसन्न होते हैं सुखधनभी इसप्रकार मिली हुई मानपरा के साथ विहार करता हुआ आनन्द पूर्वक रहने लगा इसप्रकार सत्त्व रहित पुरुषों से धन तथा स्त्री निकल जाती है और सत्त्ववान् के पास आपही आती है ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकोनषष्टितमःप्रदीपः ५९ ॥

भोगश्रीरेव सुखदाह्यर्थश्रीस्तुवृथैवहि ।
अर्थवर्मायथाक्लेशी भोगवर्मासभोगयुक् ५९ ॥

(अर्थ) भोगलक्ष्मीही सुख देनेवाली है और द्रव्यलक्ष्मी तो भोग विन वृथाही है जैसे—अर्थवर्मा क्लेशवान् था और भोगवर्म्मा भोगवान् भया ५९ ॥

कौतुकपुर नाम नगरमें बहु सुवर्ण नाम यथार्थनामवाला राजा था उसके एक यशोवर्मा नाम क्षत्री सेवकथा राजाने दानी होकर भी उसे कभी कुछ नहीं दिया और जब २ वह राजासे मांगताथा तब तब राजासूर्यकी ओरहाथकरके कहताथा कि मैं तो देना चाहताहूं परन्तु यह भगवान् नहीं चाहते कि मैं तुमको कुछ देऊं राजा के यह वचन सुनकर यशोवर्मा अवसर ढूंढता रहा एक दिन सूर्य

शुभदत्तोभद्रघटं प्राप्तंमत्तोजहोयतः ६३ ॥

(अर्थ) मूर्ख दरिद्रीका प्राप्तहुआ भी धन नष्टहोजाताहै-जैसे शुभदत्त पाये भी भद्रघटको मत्तहोकर नृत्यकरने में खो बैठा ६३ ॥

पाटलिपुत्र नाम नगरमें एक शुभदत्तनाम दरिद्री रहताथा वह प्रतिदिन वनसे काष्ठ लाके और बेचकर अपने कुटुम्बको पालन किया करताथा एक दिन वनमें काष्ठकेलिये बहुत दूर जाकर शुभदत्तने दिव्यआभूषण तथा वस्त्रधारी चार यक्षदेखे उन यक्षों ने उसे भयभीत देखकर और उसे दरिद्री जानकर कृपापूर्वककहा कि हे शुभदत्त! तुम यहां हमारे पासरहो और हमारी सेवाकरो हम बिना क्लेशही के तुम्हारे घरका निर्वाह करदेंगे उनके वचनको स्वीकार करके शुभदत्तने वहीं रहकर उनको स्नानादिक करवाये भोजन के समय उन यक्षों ने शुभदत्तसे कहा कि हे शुभदत्त! इस भद्रघट से तुम भोजन निकाल २ कर हमको देते जाओ शुभदत्त उस घटको शून्य देखकर भोजन देने मे विलम्ब करनेलगा तब उन यक्षो ने मुस्कुराकर उससे कहा कि हे शुभदत्त! तुम इसके माहात्म्यको नहीं जानतेहो इसके भीतर हाथडालकर जो तुम चाहोगे सो सब मिलेगा क्योंकि यह घटकामप्रदहै उनके यह वचन सुन कर जैसेही उसने घड़े में हाथडाला वैसेही उसको यथेच्छ सम्पूर्ण पदार्थ मिले उससे उसने उनयक्षों को भोजन कराया और उनके तृप्त होने के पीछे आपभी भोजनकिया इसप्रकार भक्तिसे तथा भय से यक्षों का नित्य सेवन करताहुआ कुटुम्बकी चिन्ता से व्याकुल शुभदत्त वहांरहा और दुःखसे पीड़ित उसके कुटुम्बको यक्षोंने स्वप्न में कुछ धन देकर और शुभदत्तका वृत्तान्त कहकर सावधान कर दिया तदनन्तर एकमहीनेके व्यतीत होजानेपर यक्षोंने शुभदत्तसे

ग्रहणके समय दान करते हुए राजा से उसने कहा कि जो सूर्य्य आपसे मुझे कुछ नहीं लेनेदेते हैं उनको आज वैरीने पकड़रक्खा है इससे आप मुझे जो कुछ चाहिये सो दीजिये यह सुनकर राजा ने हँसकर उसे बहुतसा सुवर्ण तथा अनेक वस्त्र दिये थोड़े दिनों में उस धन को खा पीकर और फिर राजा से कुछ न पाकर खिन्न हुआ यशोवर्म्मा अपनी स्त्री के मरजाने पर विन्ध्यवासिनी को गया वहां जाके उसने यह विचारकरके कि इस निरर्थक जीतेहुए भी मरेहुए के समान मेरे शरीरसे क्या प्रयोजन है या तो मैं इस शरीर को भगवती के आगे त्याग दूंगा वा यथेच्छ वर लूंगा यह निश्चयकरके उसने विन्ध्यवासिनी के आश्रम में कुशाके आसन पर निराहार होके घोर तप किया तपसे प्रसन्न हुई भगवती ने प्रसन्न होकर स्वप्नमें उससे कहा कि हे पुत्र! मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूं बताओ मैं तुमको अर्थश्रीदूं या भोगश्री दूं यह सुनकर यशोवर्मा ने कहा कि मैं इन दोनोंका भेद अच्छी तरह से नहीं जानता हूं तब भगवतीने कहा कि तुम्हारे देश में जो अर्थवर्म्मा और भोगवर्मा दो वैश्यहैं उनकी लक्ष्मी जाकर देखो उनमेंसे जिसकीलक्ष्मी तुम्हें अच्छी लगे वही आकर मुझसे मांगना यह सुनकर यशोवर्मा जागकर प्रातःकाल पारण करके कौतुकपुर नाम अपने देश मे आया वहां आकर वह पहले सुवर्ण तथा रत्नादि के व्यवहारसे असंख्य धनके उपार्जन करनेवाले अर्थवर्मा के घरमें जाकर उस की सम्पूर्ण सम्पत्तिको देखता हुआ उसके पास गया अर्थवर्माने उसका बड़ा आदर सत्कार करके उसे घृत सहित मांसके बहुत उत्तम २ भोजन कराये और आप दो तोले घीसत्तू थोड़ासा भात तथा थोड़ासा मांसका रस खाया उसके बहुत थोड़े भोजनको देख,

प्रसन्नहोकर कहा कि हेशुभदत्त ! हम तुम्हारी भक्तिसे तुमपर प्रसन्न हैं जो चाहोसो मांगो यह सुनकर उसने कहा कि जो आप सत्य २ मुझपर प्रसन्नहैं तो यह भद्रघट मुझको देदीजिये यह सुनकर यक्षों ने कहा कि इसकी तुम रक्षा नहीं करसकोगे क्योंकि यह टूटजाने पर भागजाताहै इससे अन्य कोई वरमांगो यक्षों के इसप्रकार समझानेपर भी शुभदत्तने अन्य वरनहीं लेनाचाहा तब उन्होंने वह घट उसे देदिया उस भद्रघटको लेके और यक्षों को प्रणाम करके शुभदत्त अपने घरमें आया और रहनेलगा एक समय उसके बन्धुओं ने उसे भारढोने से रहित तथा अत्यन्त ऐश्वर्यवान् देखकर मद्यपिलाकर उससे पूँछा कि तुम्हारे पास यह ऐश्वर्य कहांसे आया उनके यह बचन सुनकर वह मूर्ख कुछ उत्तर न देकर अभिमान से उस घड़ेको कन्धेपर रखकर नाचनेलगा नाचने में वह घड़ा पृथ्वी में गिरके फूटके उसी समय अपने स्थानको चलागया और शुभदत्त अपनी पूर्वदशाको प्राप्त होगया इसप्रकार से मद्यपानादिक दोषों के प्रमादसे नष्टहुई बुद्धिवाले अभागी लोग प्राप्तहुये धनकी भी रक्षा नहीं करसक्ते हैं ॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिषष्टितम प्रदीप ६३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुष्षष्टितमः प्रदीपः ६४ ॥

ईश्वरवर्मा वेश्यागामी का दृष्टान्त ॥

कुट्टिनीकूटचरितं योजानातिसपंडितः ।
यथाहीश्वरवर्माप्यवेश्यातोथधनम्बहु ६४ ॥

(अर्थ)—कुटिनी के कूट चरित्र को जाने वह पंडितहै—जैसे ने निज पिता करके वेश्या से सब धन ले- ६४ ॥

कर यशोवर्मा ने पूछा कि साहजी क्या तुम इतनाही खातेहो यह सुनकर उसने कहा कि आज तुम्हारे साथके कारण थोड़ासा मांस तथा भात और दो तोले घी खालियाहै रोज तो मैं एक तोले घी तथा केवल सत्तूखाताहूँ क्योंकि इससे अधिक मुझ मन्दाग्निवाले को पचताही नहीं है यह सुनकर यशोवर्म्मा ने अपने चित्तमें अर्थवर्माकी व्यर्थ लक्ष्मीकी बड़ी निन्दा की तदनन्तर रात्रिके समय अर्थवर्मा ने यशोवर्म्मा को दूध भात खिलवाया और आप केवल चारपैसेभर दूधपिया इसके उपरान्त अर्थवर्मा और यशोवर्मा दोनों एकही स्थान में जुदे २ पलँगों पर सोये अर्धरात्रि के समय यशोवर्मा ने स्वप्न मे देखा कि थोड़े से भयंकर पुरुष दण्डों को हाथ में लियेहुए वहां आये और तूने एक तोले घी मांस भात तथा चार पैसे भर दूध रोज से अधिक क्यों खाया यह कहके अर्थवर्म्मा के पैर पकड़कर खीचके लाठियो से मारनेलगे और जितना उसने अधिक भोजन कियाथा वह सब उसके उदरसे निकालकर लेगये यह स्वप्न देखकर जैसेही यशोवर्मा उठा वैसेही अर्थवर्म्मा के पेटमें शूलउठा और सेवको के द्वारा उदर मलवाने से उसको वमन होगया वमन से जब उसका शूल शान्तहोगया तब यशोवर्म्मा ने शोचा कि इस अर्थश्री को धिक्कारहै जिसका भोग ऐसा कठिनहो इसका तो न होनाही अच्छाहै यह शोचकर यशोवर्मा वह रात्रि वहीं व्यतीतकरके प्रातःकाल अर्थवर्मासे पूछकर भोगवर्माके यहां गया भोगवर्मा ने उसका बड़ा अतिथिसत्कार करके कहा कि आज आप हमारेही यहां भोजन करियेगा उसके यहां आभूषण वस्त्र तथा गृहके सिवाय और कुछ भी सम्पत्ति न थी उसने उसी समय किसी अन्यसे धन उधारलेकर किसी दूसरेको उधार देदिया

चित्रकूटनाम बड़े समृद्धिमान नगरमें रत्नवर्मानाम बड़ा धनवान् वैश्य रहताथा उसके श्री शिवजी के आराधन से ईश्वरवर्मा नाम एक पुत्र उत्पन्नहुआ उस ईश्वरवर्माको उसने सम्पूर्ण विद्या पढ़ाकर युवा होनेवाला जानकर अपने चित्तमें शोचा कि ब्रह्माने यौवनसे अन्धेहुए धनवानोंके लिये धन तथा प्राणोंका हरनेवाला वेश्यानाम मूर्तिमान् कपट बनायाहै इससे मैं अपने इस पुत्र को वेश्याओं का कपट सिखाने के लिये किसी कुटिनी के सुपुर्द करूं जिससे वेश्या लोग फिर इसे ठग न सकें यह शोचकर रत्नवर्म्मा ईश्वरवर्मा को साथलेकर यमजिह्वानाम कुटिनी के घरगया वहां मोटी ठोढ़ीवाली लम्बे दांतवाली तथा टेढ़ी नाकवाली यमजिह्वा अपनी कन्याको यह शिक्षा देरही थी कि हे पुत्री! धनसे सब की प्रतिष्ठा होती है परन्तु वेश्याओं की विशेष करके और स्नेहकरने से धन मिल नहीं सक्ता इससे वेश्याको किसी से स्नेह न करना चाहिये सन्ध्याके समान वेश्याओंका राग दोषरूपी अन्धकारका बढ़ानेवाला होताहै इससे वेश्या सुरक्षित नटीके समान मिथ्या राग दिखावे वेश्याको चाहिये कि पुरुषके साथ अनुराग प्रकटकर के उससे सब धन लेले और धन लेकर निकालदे और जो उसे फिर धन मिले तो उसको स्वीकार करले मुनिके समान जो वेश्या बालक में युवामें वृद्धमें रूपवान् में तथा कुरूप में समभाव रखती हैं उनको परमार्थ प्राप्तहोताहै इसप्रकार अपनी पुत्री को शिक्षा देती हुई यमजिह्वाके पास रत्नवर्मा अपने पुत्रको लेकर गया और बैठ कर उससे बोला हे आर्य्ये! मेरे पुत्रको वेश्याओं की सम्पूर्ण कला सिखादो जिससे यह चतुरहोकर वेश्याओं के जालमें न फँसे इस कार्यके लिये मैं तुमको एक हजार अशर्फी दूंगा यह सुनकर उस

उसी व्यवहारमें उसको थोड़ीसी अशर्फी मिलीं वह अशर्फियां उस ने अपने नौकरके हाथ अपनी स्त्री के पास भोजनकी सामग्री इकट्ठी करने को भेजी इतनेही मे इच्छाभरणनाम उसके एकमित्र ने आकर उससे कहा कि चलो भोजन तैयारहै आज हमारेही यहां भोजन करनाहोगा सब मित्र बैठेहुए तुम्हारी प्रतीक्षा कररहेहैं यह सुनकर भोगवर्माने कहा कि आज हमारे यहां एक महिमानआयेहैं इससे मैं नहीं आसक्ता यह सुनकर उसनेकहा कि आप अपने साथ इनको लेचलिये क्या यह हमारे मित्र नहीं हैं उसके इसप्रकार आग्रह करनेपर भोगवर्म्मा ने यशोवर्म्मा को साथ लेजाकर वहीं भोजन किया और वहां से आकर सायंकाल के समय अपने यहां दिव्य भोजन यशोवर्माको कराये और आप भी किये फिर रात्रि के समय उसने अपने सेवकों से पूंछा कि आज रात्रिभरको हमारे यहां कोई वस्तु जलपान के लिये है कि नहीं सेवकों ने कहा कि नहीं सेवकों के वचन सुनकर भोगवर्मा आज पिछली रात्रिमे मैं जल कैसे पीऊंगा यह कहकर सोरहा और यशोवर्म्मा भी उसी के पास सोगया अर्द्धरात्रि के समय यशोवर्म्मा को यह स्वप्न दिखाई दिया कि कुछ पुरुष हाथो में डंडा लियेहुए अन्य पुरुषों को मार मारकर यह कह रहे हैं कि तुम यहां रहे आज भोगवर्मा के लिये जलपानको कोई वस्तु क्यों नहीं लाये तब उन पुरुषोंने हाथजोड़ कर कहा आज क्षमा कीजिये फिर ऐसा अपराध कभी न होगा यह सुनकर वह दंडधारी पुरुष उन्हें साथ लेकर चलेगये यह स्वप्न देखकर यशोवर्मा जगकर शोचनेलगा कि भोगवर्मा की भी यह भोगश्री बहुत श्रेष्ठहै परन्तु अर्थवर्मा की अत्यन्त बढीहुईथी अर्थ श्री भोगके बिना व्यर्थ है इसप्रकार विचारते२उसने वह रात्रि व्य-

कुटिनी ने वह अंगीकार करलिया तब रत्नवर्मा उसे अशर्फी देकर तथा अपने पुत्रको सौंपकर अपने घर चलाआया और ईश्वरवर्मा यमजिह्वा के यहां रहा और एकही वर्ष मे सम्पूर्ण वेश्याओं की कला सीखकर अपने पिताके यहां चला आया और सोलह वर्ष का होकर अपने पितासे बोला कि हे तात! धनसेही धर्म तथाकाम की प्राप्तिहोतीहै और धनहीसे प्रतिष्ठा तथा यशकी प्राप्तिहोती है इससे आप मुझे परदेश जानेकी आज्ञा दीजिये उसके यह वचन सुनकर रत्नवर्मा ने उसे पांच करोड़ अशर्फी रोजगार करनेको दी उन्हें लेकर ईश्वरवर्मा अपने कुछ सजाती मित्रों को साथ लेकर स्वर्णद्वीप को चला मार्ग मे चलते २ क्रमसे मिलेहुए कांचनपुर नाम नगर के बाहर किसी उपवन में टिका और उसी उद्यान मे स्नान तथा भोजन करके नगर देखनेको गया उस नगरके किसी देवमन्दिरमें जाकर उसने देखा कि युवावस्थारूपी वायुसे उछली हुई रूपके समुद्र की लहरके समान सुन्दरीनाम एक वेश्या नृत्य कर रही है उसे देखतेही वह उसके वशीभूत ऐसाहुआ कि जिस-से कुट्टिनी की सम्पूर्ण शिक्षामानो कुपित होकर उसके पाससे भाग-गई नृत्यके अन्तमें उसने अपने एक मित्रको भेजकर सुन्दरी से अपना प्रयोजन कहलवाया सुंदरी ने कहा मैं धन्यहूं ऐसाकहकर स्वीकार करलिया तब ईश्वरवर्मा अपने डेरे पर चतुर रक्षकों को छोड़कर सुन्दरी के मकानपर गया वहां सुन्दरीकी माता मकरकटी ने उसका बड़ासत्कार किया और रात्रिके समय रत्नोंसे देदीप्यमान जड़ाऊ पलँग से युक्त शयनस्थान में सुन्दरी के साथ उसकोभेजा वहां नृत्य में तथा सुरति में अत्यन्त निपुण उस सुन्दरी के साथ रमणकरके वह दूसरे दिन भी पास से नहीं हटती हुई बड़े प्रेम को

तीतकरके प्रातःकाल भोगवर्मासे आज्ञालेकर कुछ दिनचलके विन्ध्यवासिनीजीके आश्रममें पहुँचकर कुशासनपर बैठकर फिर तप किया तब भगवती ने उससे स्वप्नमें कहा कि तुम भोगश्री लोगे अथवा अर्थश्री भगवती के वचन सुनकर यशोवर्मा ने भोगश्री मांगी और भगवती उसे अभीष्टवर देकर अन्तर्द्धान होगई प्रातःकाल यशोवर्मा उठके पारण करके अपने घरको आया और भगवतीकी कृपासे प्राप्तहुई भोगश्री का सुखपूर्वक भोगकरनेलगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनषष्टितम प्रदीप ५९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषष्टितमःप्रदीपः ६० ॥

चिरदाताका दृष्टान्त ॥

चिरदाता ददात्येनं चिरकाले धनं बहु ॥
यथासमयेनोऽदाद्ददात्वसमयेबहु ६० ॥

(अर्थ) चिरदानी देरसे देनेवाला चिरकालमें भी बहुतसा धन देताहै जैसे चिरदाताने समय मे तो कुछ न दिया पर विलम्ब होने से निज पुत्र मरण समयमे भी बहुतसा धन दिया ६० ॥

चिरपुर नाम नगरमे चिरदाता नाम एक राजाथा उस राजाके सम्पूर्ण परिवारवाले महादुष्टथे एकसमय किसी देशसे आयाहुआ प्रसंग नाम शूद्र अपने दो मित्रोंके साथ राजाके यहां नौकरहुआ उसे पांचवर्ष सेवा करते २ व्यतीतहुए परन्तु राजाने उत्सवादिक निमित्तों में भी उसे कुछ नहीं दिया और उस सेवकने मित्रो के प्रेरणाकरने परभी परिकरकी दुष्टतासे राजा से विज्ञापन करने का अवसर पाया एक समय उस राजा का बालक पुत्र मरगया तब सम्पूर्ण सेवक राजाको दुःखी जानके उसके निकट गये उनमें से

प्रकट करती हुई सुन्दरी को अत्यन्त अनुरागयुक्त देखकर वहांसे नहीं आसका और दो दिनकेलिये पचीसलाख अशर्फी देनेलगा सुन्दरी ने उससे कहा कि धन तो मुझे बहुत मिलचुकाहै परन्तु आप सरीखा पुरुष नहीं मिलाथा जो आपही मुझे मिलगये तो मैं धनलेकर क्या करूंगी सुन्दरीके इसप्रकार कहनेपर उसकी माताने कहा कि अब जो कुछ हमारे पासका धन है सोभी इन्हींकाहै इससे यहभी लेकर उसीमे रखदो क्या हानिहै माताके बड़े कहने सुनने से सुन्दरी ने बड़े आग्रह से वह अशर्फी लीं उसके इस आग्रहको देख मूर्ख ईश्वरवर्मा ने उसके अनुरागको सत्यही जाना और उसके रूप से नृत्य से तथा गीतसे वशीभूत होकर दो महीने वहां व्यतीतकिये और इतने दिनो में दो करोड़ अशर्फी उसे दीं ईश्वरवर्माको इसप्रकारसे मोहित देखकर उसके मित्र अर्थदत्तने उससे आकर एकान्त में कहा कि हे मित्र ! कातर की अस्त्रविद्या के समान तुम्हारी वह सम्पूर्ण कुट्टिनीशिक्षा क्या समय पर व्यर्थ होगई यह जो तुम वेश्या के प्रेम में सत्यता समझ रहेहो सो क्या कभी मरुमरीचिकाओं में भी जल मिलताहै इससे जबतक वह तुम्हारा सम्पूर्ण धन नहीं क्षीण होताहै तभीतक यहांसे निकल चलो तुम्हारे पिता जो सुनेंगे तो बहुत कुपित होंगे उसके यह वचन सुनकर ईश्वरवर्म्मा ने कहा कि वेश्याओं में विश्वास न करना चाहिये यह तुम्हारा कहना ठीक है परन्तु यह सुन्दरी ऐसी नहीं है यह क्षणभर भी मेरे देखे विना अपने प्राण त्यागदेगी इससे जो सर्वथा चलना हीहै तो उसे जाकर समझाओ उसके यह वचन सुनकर अर्थदत्त उसीके साथ उस सुन्दरी वेश्या के पासगया और उससे बोला कि तुम्हारी प्रीति ईश्वरवर्मापर बहुत अधिकहै परन्तु इसे रोजगार के

प्रसंग नाम सेवक अपने मित्रोंके निवारण करने पर भी शोकसे व्याकुलहोकर राजासे बोला कि हे स्वामी ! हमने बहुतकालतक आपकी सेवाकरी और आपने हमें कुछ नहीं दिया इतने परभी आपने नहीं दियाहै तो आपका पुत्र देगा इस आशासे हमने आपकी सेवा नही छोड़ी अब भाग्यवशासे उसको भी परमेश्वरने हरलिया तो अब हमारा यहां कौनहै हम जातेहैं यह कहकर और प्रणाम करके प्रसङ्ग अपने मित्रोको साथलेकर वहां से चला तब राजाने यह बड़े दृढ़ सेवकहैं क्योंकि पुत्रकी आशासे यह इतने दिनतक रहे इससे इनका त्याग नहीं करना चाहिये यह शोचकर उन्हें बुलवाकर इतना धनदिया कि वह दरिद्रसे निर्भय होगये इसप्रकारसे मनुष्योंके विचित्र स्वभाव होतेहैं देखिये राजाने समयपर तो नहीं दिया परन्तु असमयपर बहुतसा धन दिया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषष्टितम प्रदीपः ६० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकषष्टितम प्रदीपः ६१ ॥

नपुंसकयक्षका दृष्टान्त ॥

श्रेयस्तावत्प्रकुर्वीत यावद्धानिर्नसर्वथा ॥
यक्षःस्वपुंस्त्वदानेन नपुंस्त्वमगमद्यथा ६१ ॥

(अर्थ) भला तभीतक करना जबतक निज सर्वथा हानि नहीं होती है—जैसे यक्षने नपुंसकको निज पुरुषपनदिया तो फिर उसे नपुंसकही रहनापड़ा ६१ ॥

सुरपुर नाम नगरमें सूरसेन नाम राजाहै उसके विद्याधरी नाम बड़ी रूपवती कन्याहै राजाने उस कन्याको विमलनाम राजाके बड़े रूपवान् प्रभाकर नाम पुत्रको देनाचाहा और विमलने उस विद्याधरी की प्रशंसासुनके अपने पुत्रके लिये दूत भेजकर राजा

लिये स्वर्णद्वीप को अवश्य जानाहै वहां से बहुतसा धन उपार्जन करके लौटकर तुम्हारेही पास सदैव यह सुखपूर्व्वक रहैगा इससे हे सखी! इसे जानेकी आज्ञा देदो यह सुनकर आंसू भरके ईश्वरवर्मा के मुखको देखती हुई सुन्दरी मिथ्या विषाद करके बोली कि आप जानिये मैं इसमें क्या कहूँ परिणाम को बिना देखे कोई किसी पर विश्वास नहीं करसक्ता है मुझे कुछ कहना सुनना नहीं है मेरे भाग्य में जो वदाहोगा सो होगा यह सुनकर उसकी माताने कहा कि दुःख न करो धैर्य्य धारणकरो तुम्हारा प्यारा लौट कर तुम्हारे पास अवश्य आवेगा इसप्रकार उसे समझाकर उस कुटिनी ने उससे सलाह करके ईश्वरवर्मा के जानेके मार्ग्ग में एक कुएँ में जाल लगवादिया तब सुन्दरी शोक प्रकट करके भोजन बहुतकम करनेलगी और गीत तथा नृत्यादिकों से विरक्तरही तद नन्तर ईश्वरवर्म्मा अपने मित्रके बतायेहुये दिनमें सुन्दरीके घरसे परदेश को चला और वह कुट्टिनी तथा सुन्दरी भी मंगलाचार करके उसे भेजने को चली नगरके बाहर जहां कुएँमें उसने जाल बँधवाकर रक्खा था वहीं से ईश्वरवर्मा को विदाकिया और जैसेही ईश्वरवर्मा वहां से कुछदूर चला वैसेही सुन्दरी उस कुएँ में कूदपड़ी तब हापुत्री हासखी यह उसकी माता का तथा सखियों का घोर शब्द ईश्वरवर्म्मा सुनकर अपने मित्रोसमेत लौटकर अपनी प्यारी को कुएँ में गिरी देखकर शोकसे विह्वलहोगया और उस मकर कटीने बहुत रोकर जालके जाननेवाले अपनेही नौकरोंको सुन्दरी के निकालने को उस कुएँ में उतारा उन्होंने कुएँ में जाकर सुन्दरी जीती है जीती है यह कहकर उसे कुएँ में से निकाला कुएँ में से निकलकर सुन्दरी अपनेको मूर्च्छितसा बनाकर उस लौटेहुए ईश्वर

शूरसेनसे विद्याधरी मांगी तब शूरसेनने बहुत प्रसन्नहोके प्रभाकर के साथ उस विद्याधरीका विवाहकरदिया और उसीके साथ उसको बहुतसा धनदेकर बिदाकरदिया तदनन्तर विद्याधरी अपने श्वशुर के गृहमें पहुँचकर रात्रि के समय पति के साथ शयन स्थानमें गई वहां प्रसंग बिना कियेही सोयेहुये अपने पति प्रभाकरको नपुंसक जानकर हाय २ मुझ अभागिनको नपुंसक पतिमिलाहै यह शोच करतीहुई विद्याधरी ने रात्रि व्यतीत करके दूसरे दिन अपने पिताको यह लेखलिखा कि आपने कैसे बिना देखेभाले नपुंसकके साथ मेरा विवाह करदिया उस लेखको पढकर उसका पिता राजा शूरसेन बहुत क्रोधितहुआ कि विमलने मुझको ठगाहै तबउसने विमलको यह चिट्ठी लिखी कि तुमने छलकरके अपने नपुंसक पुत्रके साथ मेरी कन्याका विवाह करवालिया अब तुम इसकाफल भोगो मैं आकर तुमको मारूंगा। इस लेखको पाकर विमलने व्याकुलहोके अपने मन्त्रियों से पूछा कि इस दुर्जय राजासे बचनेका अब कौनसा उपायहै यह सुनकर पिंगदत्तनाम मन्त्री ने कहा कि हे स्वामी! इसमें एकही उपायहै वह मैं आपको बताता हूं स्थूलशिरा यक्षके आराधनका मन्त्र मुझे मालूमहै इसमन्त्रको जपकर स्थूलशिरा को सिद्धकरके उससे अपने पुत्रके निमित्त लिंग मॉगिये तो विग्रह शान्तहोजाय मन्त्री के यहवचन सुनकर राजाने मन्त्रसीखकर उसके द्वारा उस यक्षको सिद्ध करके उससे अपने पुत्रकेलिये लिंगमांगा उसने प्रभाकरको थोड़े दिनकेलिये लिंग देदिया इससे प्रभाकर तो पुरुषहोगया परन्तु यक्ष नपुंसक होगया और वह विद्याधरी प्रभाकरको पुरुष देखकर उसके साथ रमण करके अपने चित्तमें शोचनेलगी कि मदके दोषसे मुझे भ्रान्ति

वर्म्मा से बहुत पुकारने पर धीरे से बोली तब ईश्वरवर्म्मा बहुतप्रसन्न होके उसे स्वस्थ करके उसीके साथ उसके घरको लौटआया और सुन्दरी के प्रेमको यथार्थ जानकर इतनेही में अपने जन्मको सफल मानकर यात्रा का उद्योग छोड़कर वहीं रहा तब अर्थदत्तने उसे यात्रासे निवृत्त हुआ जानकर उससे कहा कि हे मित्र! मोहसे तुम अपने को क्यों नष्टकिये देतेहो कुएँमें गिरनेसे इस सुन्दरीके स्नेह में विश्वास न करो क्योंकि ब्रह्मा भी कुटिनियों की कूट रचनाको नहीं जानसक्के हैं तुम अपना सबधन नष्ट करके पिता से जाकर क्या कहोगे और कहां जाओगे इससे जो तुम अपना भलाचाहो तो अब भी इससे बचो अर्थदत्त के इन वचनोंपर ध्यान न देकर महीने भरमें वह तीनकरोड़ अशर्फी भी उसने खर्च करडाली तब सुन्दरीने तथा उसकी माता मकरकटी ने उसे निर्धन जानकर अर्द्ध-चन्द्र (गर्दनी) देकर घरसे बाहर निकाल दिया उसकी यह दशा देखकर अर्थदत्तादिकों ने अपने नगरमें आकर उसके पितासे सब वृत्तान्तकहा अपने पुत्रके वृत्तान्तको सुनकर रत्नवर्म्मा दुःखितहोके उसी यमजिह्वा कुटिनी के पास जाकर बोला कि तुमने एकहजार अशर्फी लेकर मेरे पुत्रको अच्छी शिक्षादी कि मकरकटीने थोड़ेही कालमें उसका सर्व्वस्व हरलिया यह कहकर उसने अपने पुत्रका सब वृत्तान्त उससे कहा तब यमजिह्वाने कहा कि तुम अपने पुत्र को यहां बुलाओ अब मैं उसे ऐसाउपाय बताऊंगी जिससे वह उस मकरकटीका सर्व्वस्व हरलावेगा उसकी यहप्रतिज्ञा सुनकर रत्नवर्मा ने शीघ्रही ईश्वरवर्मा के बुलाने को अर्थदत्त को भेजा अर्थदत्तने कांचनपुर में जाके ईश्वरवर्म्मा से उसके पिताका संदेशा कहकर कहा कि हे मित्र! तुमने मेरा कहना नहीं माना इसीसे वेश्याओं

होगई थी मेरापति नपुंसक नहीं है यह शोचकर उसने पिताको इसी आशयका पत्र भेजदिया उस पत्रको पाकर राजा शूरसेन क्रोधरहित होकर शान्त होगया इसी वृत्तान्तको जानकर भैरवजी ने आप कोपकरके स्थूलशिरायक्षको बुलाकर यह शापदिया कि तैंने अपना लिंग देकर नपुंसकत्व अंगीकार किया इससे तूजन्म भर नपुंसक रहेगा और वह प्रभाकर जन्मभरपुरुषरहेगा इसप्रकार से वह यक्ष तो नपुंसकहोके महादुःखी होरहाहै और प्रभाकरपुरुष होकर सुख भोग रहा है ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकषष्टितमःप्रदीपः ६१ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे द्विषष्टितमःप्रदीपः ६२ ॥

मा बापकी आज्ञा विन दुःखी (चक्र) नाम वैश्यपुत्रका दृष्टान्त ॥

पित्रोराज्ञांविनायोज्ञो विचरेत्सलभेदघम् ।
चक्रनामायथादुःखंपित्रोराज्ञांविनाऽलभत् ६२ ॥

(अर्थ) माता पिताकी आज्ञा विना जो कोई कहीं चलाजावे वह दुःख पाताहै—जैसे (चक्र) नाम वैश्यपुत्र निज मा बापोंकी आज्ञा विन चलागया तो तिसने दुःख पाया ६२ ॥

धवलनामपुरमें चक्रनाम एक वैश्यका पुत्र अपने माता पिता की विना आज्ञा लिये स्वर्णद्वीपको व्यवहार करने को गया वहां पांचवर्ष में बहुतसा धन उपार्जन करके वह अपने देशमें आनेके लिये रत्नों से भरेहुए जहाजपर चढ़कर चला जब किनारा कुछही दूर बाकी रहा तब आकाश से जलकी वृष्टि और महाप्रचंड वायु चलनेलगी उसी से वह जहाज टूटगया तब जहाजके कुछलोग तो पानी में बहगये और कितनोंही को मगरमच्छों ने खाडाला

की सत्यता तुमको प्रत्यक्ष दीखनीपड़ी तुमने पांच करोड़ अशर्फ़ी देकर अर्द्धचन्द्रपाया—कौन बुद्धिमान् वेश्याओं में तथा वालूमें से स्नेहपाने की इच्छा करताहै अथवा इसमें तुम्हारा क्या अपराधहै संसार का धर्म्महीं ऐसा है तभीतक मनुष्य वीर चतुर तथा कल्याणका भागी रहता है जवतक कि स्त्रियों की चेष्टाओं में नहीं फँसताहै इससे अब तुम अपने पिताके पास चलकर इस वेश्या से बदला लेनेका यत्न करो इसप्रकार समझाकर अर्थदत्त ईश्वरवर्मा को उसके पिताके पास लेआया वहां रत्नवर्म्मा उसे बहुत समझाकर यमजिह्वा कुटिनी के पास लेगया और अर्थदत्त से सुन्दरीके कुएँ में गिरने आदिका सब वृत्तान्त उस कुटिनी के सम्मुख कहलवाया सुन्दरी का कुएँमें गिरना सुनकर यमजिह्वाने कहा इसमें मेराही अपराधहै कि मैंने इसको यह माया नहीं सिखादीथी मकरकटीने कुएँ में जाल बंधवादिया होगा इसीसे वह सुन्दरी उसमें गिरकर नहीं मरी अच्छा कोई हानि नहीं है इसका भी प्रतीकार मेरे पास है यह कहकर उसने अपनी दासियों से कहा कि मेरे आलनाम बन्दरको लेआओ उसकी आज्ञा पाकर एक दासी उस आलको लेआई यमजिह्वा ने उस आलको हज़ार अशर्फ़ी देकर कहा कि हे पुत्र! इन अशर्फ़ियों को निगलजाओ जब वह उसके कहने से उन अशर्फ़ियों को निगलगया तब यमजिह्वाने उससे कहा दश इसको दो पचास इसको दो पांच इसको दो इसप्रकार अनेक खर्चों मे उसने उस बन्दरसे वह अशर्फ़ी दिलवाई और वह बन्दर उगल २ कर देतागया बन्दरकी इसयुक्तिको दिखाकर यमजिह्वाने २ [illegible] इस बन्दर को लेकर फिर उस सुन्दरी के पास [illegible] कही एकान्त में अशर्फ़ी

और चक्रको आयुर्बल शेष होने के कारण समुद्रने लहरों से किनारेपर फेंकदिया वहां उसे एक कालेवर्णवाला भयंकर पुरुष हाथ में पाश लियेहुए दिखाईदिया वह पुरुष उस चक्रको अपने पाश में बांधकर सभामें सिंहासनपर बैठेहुए किसी पुरुषके पास लेगया और उसी सिंहासनपर बैठेहुए पुरुषकी आज्ञा से उसीने उस वैश्य को लोहमय गृह में लेकर बन्दकर दिया वहां चक्रने, एक दूसरे पुरुषको देखकर जिसके शिरपर तपाहुआ लोहे का चक्र निरन्तर भ्रमण कररहाथा-उससे चक्रने पूछा कि तुम कौनहो किस कारण से तुमको यह कष्ट दियागया है और तुम कैसे जीते हो यह सुनकर उसने कहा कि मैं खड्गनाम वैश्यका पुत्रहूं मैंने अपने माता पिताके वचन नहीं माने इसी से उन्हों ने कुपितहोके मुझे यह शापदिया कि हे दुष्ट! तू हमको शिरमें लगेहुए संतप्त लोहेके चक्र के समान दुःखदेताहै इससे तुझे भी ऐसीही पीड़ाहोगी यह कहकर उन्हों ने मुझे रोते देखकर कहा कि रोओमत एकही महीने तुम को ऐसी पीड़ाहोगी यह सुनकर मैंने शोकसे वह दिन व्यतीत करके रात्रिके समय स्वप्नसा देखा कि एक घोर भयंकर पुरुष मेरे पास आया उसी ने मुझको यहां लाकर बन्दकिया और मेरे शिर पर यह चक्र रक्खा पिता के शापके प्रभावसे मेरे प्राण नहीं निकलते हैं आज मुझे यहां आये महीनाभर व्यतीत होगया परन्तु अब भी मैं शापसे नहीं छुटाहूं खड्गवैश्य के यह वचन सुनकर चक्र ने कहा कि परदेश जानेके समय मैंने भी अपने पिताके वचन नहीं माने थे और उन्होंने क्रोधकरके मुझे शापदिया था कि जो तुझे धन मिलेगा वह सब नष्ट होजायगा इसीसे जो कुछ मैंने धन उपार्जन कियाथा वह सब समुद्रमें नष्टहोगया और यहां किसीपुरुष

निगलवाकर उसके सोम्हने इससे अशर्फी खर्चकरवाओ तब सुंदरी इस वन्दरको चिन्तामणि के समान देखकर तुम्हें अपना सर्वस्व देकर वह वन्दर मांगेगी उसके मांगनेपर तुम बड़ी आग्रह करके उसका सर्वस्वलेके इस वन्दरको दो दिनके खर्चके माफ़िक़ अशर्फ़ी निगलवाके उसे देकर शीघ्रही वहां से बहुत दूरपर चलेजाना यह कहकर यमजिह्वाने वह वन्दर ईश्वरवर्म्माको देदिया और रत्नवर्मा ने उसे दो करोड़ अशर्फी देकर सुन्दरी के यहां भेजा वह उन अशर्फ़ियों को तथा वन्दरको लेकर अपने परिकर समेत सुन्दरी के यहां गया सुन्दरी ने उसे फिर बहुतसा धन लायाहुआ जानकर बड़े आदरपूर्व्वक अपने यहां रक्खा वहां उसने आदर सत्कार के उपरान्त अर्थदत्त से उस आलनाम वन्दरको मंगवाकर उससेकहा कि हे पुत्र! तीनसौ अशर्फ़ी भोजनादिक के खर्चके निमित्त दोसौ ताम्बूलादि के खर्चकोदो और सौ मकरकटीको दोसौ ब्राह्मणों को देनेके लिये मुझेदो और हज़ार से जो कुछ वाकीहों वह सब सुंदरी को देदो इसप्रकार ईश्वरवर्माके कहने से आलने प्रथम निगलीहुई अशर्फियां उगल २ कर सबको दी इसीयुक्ति से एक पक्षतक ईश्वरवर्माको उस वन्दर के द्वारा अशर्फियोंको व्यय करवाते देखकर सुन्दरी तथा मकरकटी ने शोचा कि यह वन्दररूपधारी चिन्तामणि इसे सिद्धहुई है जोकि प्रतिदिन एक हजार अशर्फी देताहै जो यह वन्दर इससे मुझे मिलजाय तो बहुत अच्छा होय यह शोचकर सुन्दरी ने भोजन करके एकान्तमें बैठेहुए ईश्वरवर्म्मासे कहा कि जो सत्य आप मुझपर स्नेह करतेहो तो यह आल मुझ को देदो यह सुनकर ईश्वरवर्म्मा हँसकर बोला कि यह तो मेरे पिताका सर्वस्व है इसे कैसे देसक्ताहूं यह सुनकर सुन्दरी ने कहा

ने मुझे लाकर बन्दकरदिया इससे अब मेरे जीवनसे क्या प्रयोजन है तुम इस चक्रको मेरे शिरपर रखकर अपने शापसे छूटो चक्रके इसप्रकार कहतेही यह आकाशवाणीहुई कि हे खड्ग! तू शापसे छूटगया अपने शिर से इस चक्रको लेकर इस चक्र वैश्य के शिरपर रखदे इस आकाशवाणीको सुनकर खड्गने वह तप्त चक्र उस चक्रनाम वणिक्पुत्रके शिरपर रखदिया और खड्ग वैश्यको कोई अदृश्य पुरुष उसके घर को लेगया वहां वह भक्तिसे अपने मातापिताकी आज्ञानुसार सब कार्य करताहुआ सुख पूर्वक रहनेलगा और वह वैश्य अपने शिरपर उस तप्त चक्रको धारणकरके बोला कि पृथ्वी में जितने पापीहोयँ वह सब इस पापसे छूटजायँ और जबतक उसके सम्पूर्ण पाप क्षीण न होजायँ तबतक यह चक्र मेरे शिरपर घूमतारहे उसके यह वचन सुनकर आकाशवासी देवता लोगो ने प्रसन्नहोके पुष्पो की वृष्टिकरके कहा कि हे महासत्त्व! तू धन्यहै तेरी इस करुणासे तेरासब पापनष्टहोगया तुझे अक्षयधन मिलैगा देवता लोगो के इसप्रकार कहतेही चक्र वैश्यके शिर से वह तप्त चक्र नष्टहोगया और प्रसन्नहुए इन्द्रका भेजाहुआ एक विद्याधर उसे बहुमूल्य रत्नदेके गोदी मे लेकर धवलनाम नगर में पहुँचाकर अन्तर्द्धान होगया और वह चक्र वैश्य अपने मातापिताके पास जाकर उन्हें सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाके उनको आनन्दितकरके सुखसे उनका सेवन करताहुआ आनन्दसे रहनेलगा॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे द्विषष्टितम प्रदीप ६२ ॥

अथ दृष्टान्त : चतुर्थभागेत्रिषष्टितमःप्रदीपः ६३ ॥

दृष्टान्त ॥

मरण

कि मैं तुम्हारी पांचों करोड़ अशर्फियां फेरदूंगी तुम इसको मुझे दे दो तब ईश्वरवर्म्मा ने कहा कि चाहे तुम अपना सर्वस्व अथवा यह नगर भी मुझे देदो तोभी मैं इसको यह बन्दर नहीं देसक्ता यह सुनकर सुन्दरी ने कहा कि मैं अपना सर्वस्व तुमको देतीहूं तुम मुझे यह बन्दर देदो अपने पिता को नाराज होने दो यह कहकर वह उसके पैरों पर गिरपड़ी तब अर्थदत्तादिकों ने ईश्वरवर्म्मा से कहा कि अच्छा यह बन्दर इसे देदो जो कुछ होगा सो देखाजायगा मित्रों के कहने से ईश्वरवर्म्मा ने उसका सर्वस्वलेने पर वह बन्दर देना स्वीकार किया और बन्दर पाने की आशा से प्रसन्नहुई सुन्दरी के साथ वह दिन आनन्द से व्यतीत किया दूसरेदिन प्रातःकाल फिर प्रार्थना करतीहुई सुन्दरीको ईश्वरवर्मा दोहजार अशर्फी निगलवाकर वह बन्दर देकर और उसका सर्वस्वलेकर शीघ्रही वहांसे अपने परिकरसमेत स्वर्णद्वीपको रोजगार करने के लियेगया उसके चले जानेपर दोदिन तक उस बन्दरने हजार २ अशर्फी सुन्दरी को दी और तीसरे दिन बहुत मांगनेपर भी सुन्दरी को कुछ नहीं दिया तब सुन्दरी ने कोपकर के उसके एक घूंसामारा इससे उस बन्दर ने भी कोपितहोकर सुन्दरी का मुख अपने दांतो से और नखोंसे फाड़डाला तब मकरकटीने लाठियो से उस बन्दरको ऐसा पीटा कि वह मरगया उसे मराजान के सुन्दरी अपने सर्वस्वको नष्टहुआ जानकर प्राण देने को उद्यतहुई और लोगों के बहुत समझानेपर मृत्युसे निवृत्तहुई ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुश्चत्वारिंशत्तम प्रदीप ४४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चषष्टितमःप्रदीपः ६५॥

दुश्शीला व्यभिचारिणीका दृष्टान्त॥

प्रामाण्यमपिस्यादेवक्वचिद्बालभाषितम्।
पतिमारिणिदुःशीलानिश्चिताबालकोक्तितः ६५॥

(अर्थ) कहीं २ बालककी कही बात भी प्रमाण होजातीहै— जैसे निजपति मारिणी स्वैरिणी दुश्शीला निज सुत करके बता देने से निश्चितभई अर्थात् पहिचानी गई ६५॥

किसी ग्राम मे देवदास नाम एक कुटुम्बी वैश्य रहता था उस की दुश्शीलानाम बड़ी दुराचारिणी स्त्री थी उसके दुराचार को बहुधा लोग जानगये थे एक समय देवदास किसी कार्य्य से राजा के यहांगया था उस समय दुश्शीला ने उसके मरवाने की इच्छा से अपने किसी जारको बुलाकर छतपर छुपारक्खा और रात्रिके समय आकर भोजन करके सोगये देवदासको उसके हाथसे मरवा डाला और उसके चलेजानेपर कुछ रात्रिरहे यह हाहाकारकिया कि चोरोंने मेरे पतिको मारडाला उसके रोवने को सुनकर भाई बन्धुओं ने आकर घरकी सब वस्तु यथास्थित देखकर और जो इसे चोरो ने माराहै तो वह चोर तेरी कोई वस्तु क्यो नही लेगये यह कहकर उसके पुत्रसे पूंछा कि तुम्हारे तातको किसनेमारा है उसने कहा कि कल दिनमे कोई युवा पुरुष मेरे यहां आकर छत पर बैठरहा था उसीने ऊपर से उतरकर रात्रिके समय मेरे पिताको मारा उस बालकके यह वचन सुनकर उनलोगों ने यह जानकर कि इसके जारने देवदासको माराहै उसजारको ढूंढकर उसीसमय मारडाला और उस बालक को लेकर दुश्शीला को निकाल

राक्षस के नाश करनेवाले मंत्रोंका जप करनेलगा इससे वह चोर और राक्षस दोनों भागगये ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विसप्ततितम प्रदीप ७२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिसप्ततितमःप्रदीपः ७३ ॥

मूपकी कन्या का दृष्टान्त ॥

यादृशस्तादृशंप्रेष्ठं लभतेकिंविवादतः।
लेभेतुमूपिकाकन्यातमेवाखुपतिम्पतिम् ७३ ॥

(अर्थ)–जो जैसा हो उसे वैसाही प्रिय मिलताहै विवाद करनेसे क्याहै जैसे मूपकी ने कन्या होनेपर भी वही मूपक पतिपाया॥

पूर्वसमय में किसी मुनिने बाजके पंजेसे छुटीहुई एक छोटीसी मूपिकाको पाकर उसे अपने तपोबलसे कन्या बनाली और अपने आश्रममें उसका पालनकरके जब वह युवतीहुई तो किसीबलवान् के साथ उसका विवाह करनेकी इच्छाकरके सूर्यसे कहा कि मैं इस कन्याका किसी बलवान् के साथ विवाह करना चाहता हूं इस से आपही इसको ग्रहण करलीजिये यह सुनकर सूर्य देवताने कहा कि मेघ मुझसे अधिक बलवान्हे वह क्षणभरही में मुझे आच्छादित करलेते हैं यह सुनकर मुनिने मेघों को बुलाके उसके साथ विवाह करने को कहा यह सुनकर मेघो ने कहा कि वायु हम से अधिक बलवान् है क्योंकि वह हम सबको क्षणभरही में चारों दिशाओ में फेंक देता है तब मुनिने कहा कि तुम इससे अपना विवाह करलो उसने भी यह कहा कि पर्वत हमसे भी अधिक बलवान् हैं क्योंकि हमभी उन्हें नही हिला सकते यह सुनके मुनि ने एक पर्वत को बुलाकर उससे कहा कि तुम इसके साथ विवाह करलो यह सुनकर उसने कहा कि मूसे हमसे भी अधिक बलवान्

दिया इसप्रकार से स्त्रियां परपुरुषपर अनुरक्त होकर अपने पुरुष को मारडालती हैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे पञ्चषष्टितम प्रदीप ६५ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषट्षष्टितमःप्रदीपः ६६ ॥

वज्रसार सेवकका दृष्टान्त ॥

दुष्प्रतिष्ठांलभेत्कामी कुटिलःकामिनीषुहि ।
वज्रसारस्वभार्यातो नासाछेदमवापह ६६ ॥

(अर्थ) कुटिल कामी जन कामिनियों में महा अप्रतिष्ठा पाता है जैसे-निज स्त्री को दंडदेते भये वज्रसार ने निज नाक कान कटाये ६६ ॥

वत्सराज के सेवक बड़े शूरवीर सुन्दर वज्रसार के मालवदेश में उत्पन्नभई एक बड़ी स्वरूपवती प्यारी स्त्री थी एकसमय उस स्त्री का पिता तथा भाई उस स्त्री को लिवाने के लिये मालवदेश से आये तो वज्रसार ने उनका बड़ा सत्कार करके राजा से आज्ञा ले अपनी स्त्री समेत उनके साथ जाकर मालवदेश में निवास किया और एक महीने के बाद अपनी स्त्री को वहीं छोड़कर राजा को सेवने के लिये वह यहां चला आया कुछ दिनों के उपरांत अकस्मात् उसके क्रोधन नाम मित्र ने आकर उससे कहा कि तुम ने अपनी स्त्री को पिता के घर छोड़कर अपने घरका सत्यानाश करदिया वहां उस पापिनि ने अन्य पुरुष से स्नेह कर लियाहै आज वहां से आये हुये किसी प्रामाणिक पुरुष से मैंने यह हाल सुनाहै इससे तुम उसे छोड़ दूसरा विवाह करलेओ यह कहकर क्रोधन के चले जाने पर वज्रसार ने शोचा कि यह बात

होतेहैं क्योंकि वह हममें भी छिद्र करदेते हैं यह सुनके मुनिने एक मूसे को बुलाकर कहा कि तुम इसके साथ विवाह करो यह सुन कर उसने कहा कि महाराज यह मेरे बिल में कैसे जायगी तब मुनि ने उसे मूषिकाही बनाकर उस मूषक के साथ उसका विवाह कर दिया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिसप्ततितम प्रदीप ७३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुःसप्ततितमःप्रदीपः ७४ ॥

मेढ़क और सर्प का दृष्टान्त ॥

कृतवैरेनविश्वासःकार्य्यःसम्यक्कृतयाऽयथा ।
कृतोविश्वस्तसर्पेण वर्षामूतांमहत्क्षयः ७४ ॥

(अर्थ)—वैरी में विश्वास नही करना चाहिये जैसे विश्वास किये सर्प ने मेढ़को का महानाश करडाला ७४ ॥

कोई वृद्ध सर्प सुखपूर्वक जीवों के पकड़ने में असमर्थ होकर किसी तड़ाग के तटपर निश्चलहोकर बैठा उसे इसप्रकार निश्चल बैठा देखकर दूरही से मेढकों ने उससे पूछा कि तुम जैसे पहले मेढकों को पकड़कर खाते थे अब क्यों नहीं खाते हो यह सुनकर वह बोला कि मैंने किसी ब्राह्मण के पुत्र मेढकों को काटखायाथा इससे उसके मरजाने से उसके पिताने क्रोधकरके मुझे यह शाप दियाहै कि तू मेढ़कोंका वाहनहोगा तो अब मैं तुम्हारा वाहनहोगयाहूं इससे तुमको कैसे खासक्ताहूं यह सुनकर मेढकों का राजा जलसे निकलकर अपने मन्त्रियो समेत उसकी पीठपर चढ़गया तब उस सर्प ने उनको कुछ दूर भ्रमण कराके कहा कि अब मैं थकगया हूं मुझे कुछ भोजन दीजिये बिना भोजन के मैं नहीं चलसक्ता हूं यह सुनकर मेढ़कों के राजा ने कहा कि अच्छा तुम

के साथ वह क्यों नहीं आई इससे मैं आपही उसे बुलाने जाऊंगा देखें वहां क्या होता है यह निश्चय करके वज्रसार मालवदेश में जाकर अपने सास श्वशुरकी आज्ञा से अपनी स्त्री को विदा कराकर वहां से चला और वहां से कुछ दूर आकर मार्ग में मिलेहुये किसी वनके एकान्त स्थान में जाय उसने निज स्त्री से पूछा कि मैंने सुना तू परपुरुषसे स्नेह करती है और मुझे निश्चय भी होता है कि जब मैंने तुझे बुलवाई थी तब तू नहीं आई इससे सत्य २ कहना नहीं तो मैं तुझे मारडालूंगा यह सुन उसने कहा कि जो तुम्हारा ऐसाही निश्चय है तो मुझ से क्यों पूछते हो जो चाहो सो करो उसके यह वचन सुनकर वज्रसारने उसे वृक्ष में बांधकर बहुत पीटा और उसके सब वस्त्र खोल लिये, वस्त्र खोलने से उसे नग्न देखकर वह मूर्ख कामके वशीभूत होकर रमण करनेकेलिये उससे आलिंगन करने लगा और रतिके लिये उससे प्रार्थना की तो तिस कुलटाने कहा कि जैसे तुमने मुझको वृक्षमें बांधकर पीटा तैसे तुमको भी बांधकर पीटूं तब तुम्हें रति करने दूंगी नहीं तो नहीं तब तिसने कामके वशीभूत होकर उसका कहना मान लिया-तब तो तिस कुलटाने उसके हाथ पैर बड़ी कठिनता से बांधे और उसी के शस्त्र से उसके नाक कान काटलिये और पुरुषकासा भेषबनाय वहही शस्त्र आप लेके कहीं चलीगई उसके जाने के उपरान्त ओषधि लेने के लिये कोई आयाहुआ वैद्य वज्रसार को वृक्षसे बँधा देख कृपापूर्वक खोलकर उसे अपने घरमें लेगया वहां उस वैद्यकी ओषधिसे कान नाकके अच्छे होजानेपर वह अपने घरकोआया॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेषट्पष्टितम प्रदीप. ६६॥

मेरे थोड़े से सेवकों को रोज खालिया करो तब उस सर्प ने धीरे २ क्रमपूर्वक सब मेंढक खालिये और वाहनके अभिमानसे मेंढकोंका राजा देखताही रहा इसप्रकार से बुद्धिमान् लोग मूर्ख शत्रुओंको मारलेते हैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे चतुस्सप्ततितम प्रदीप ७४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चसप्ततितमःप्रदीपः ७५ ॥

मूर्ख ब्राह्मणोंका दृष्टान्त ॥

विभागोऽपिकृतोमूर्खैर्निजहानिप्रदायकः ।
यथाविभाजितादासी द्विजैर्हानिप्रदाभवत् ७५ ॥

(अर्थ) मूर्खोंका किया विभाग भी हानिकारक होताहै जैसे दो ब्राह्मणों ने निज एक दासीका विभाग किया तो तिनकी महाही हानि भई ७५ ॥

मालवदेश में दो सगेभाई ब्राह्मणोंने अपने पिताका धन बांटनेका विचारकिया और कमती बढ़तीका झगड़ा न होय इसलिये उपाध्यायसे पूछा कि क्या करें उस वैदिक उपाध्यायने कहा कि हरएक वस्तुके दो २ भागकरके एक २ लेलो जिससे आपस मे बिगाड न होय यह सुनकर उन्हों ने घर, शय्या, पात्र तथा पशुओंको भी दो २ भाग करके बांट करलिया एक दासी भी उनके यहांथी उसके भी उन्होंने दोभाग किये यह सुनकर राजाने क्रोध करके उन दोनोका सर्वस्व छीन लिया इसप्रकार मूर्खलोग मूर्खों के उपदेश से दोनों लोकोंका नाश करते हैं इससे बुद्धिमान् को चाहिये कि मूर्खोंको छोड़के सदैव बुद्धिमानोंही का सेवन करे हे स्वामी! कहीं संन्यासी सन्तोषसे भिक्षा मांग २ कर खाते थे और इसी से मोटे ताजे बने रहते थे उन्हें देखकर कुछ मित्रों ने परस्पर

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेसप्तषष्टितमःप्रदीपः ६७॥

कल्याणपती रानीका दृष्टान्त ॥

व्यभिचाराद्विवर्त्तेत वीरस्त्रीज्ञानिनीयथा ।
बभूवकल्याणपती विमुखीजारतःक्षणात्६७॥

(अर्थ) शूरवीरकी ज्ञानवाली स्त्री व्यभिचार से छूट जाती है जैसे कल्याणवती रानी परपुरुषसे कामवश रति चाहती भी तिस की तुच्छता पर घृणाकरके व्यभिचारसे निवृत्त भई ६७ ॥

दक्षिणदेश में सिंहवल राजा की मालवदेश के राजाकी (कल्याणवती) नामक पुत्री पटरानीथी एकसमय उस राजा के गोत्री भाइयों ने मिलकर उसको उसके देश से निकाल दिया तब वह निज रानी कल्याणवतीको साथलेकर अपने श्वशुरके यहां मालवदेशको चला उसने मार्ग में मिलेहुए वनमे अकस्मात् आयेहुये सिंहको एकही खड्गके प्रहारसे मारडाला और चिंहाड़ करते वनके हाथीकी सूंड़ खड्ग से काट डाली और बीचमें मिली हुई चोरोकी सेनाको अकेलेही मारकर भगा दिया इस प्रकार मार्गका उल्लंघन करके मालवदेश में पहुँचके उसने रानी से कहदिया कि मार्गका वृत्तान्त अपने घरमें किसी से मत कहना क्योंकि शत्रुओ से हार कर मुझको यह [illegible] बातें लज्जाकारक होंगी यह कह वह निज श्वशुरके म[illegible] [illegible] वृत्तांत कहकर उसकी सेना लेके औ[illegible] [illegible] नाम निज मित्र

कहा कि भिक्षा मांगकर भी यह संन्यासी कैसे स्थूल होरहेहैं उनमें से एकने कहा कि इनको मैं इसप्रकार के भोजन करने पर भी दुर्बल करदूंगा यह कहकर उसने उन संन्यासियोंको निमन्त्रण देके अपने यहां एक दिन बड़े २ स्वादिष्ठ उत्तम भोजन करवाये इस से उन मूर्खों को उस स्वादका स्मरण करके भिक्षाका अन्न नहीं रुचने लगा इसीसे यह दुर्बल होगये तब जिसने उन्हें भोजन करवायेथे वह अपने मित्रोंको उन संन्यासियोंके पास लेजाकर बोला कि देखो इन संन्यासियों को भिक्षामें सन्तोषथा इसीसे यह हृष्टपुष्ट बने रहते थे अब इनका संतोष नष्ट होगया है इसी से यह दुर्बल होगये हैं इससे सुख चाहनेवाला बुद्धिमान् पुरुष अपने चित्त में सदैव संतोष रक्खे क्योंकि सन्तोष न करने से दोनों लोकों में दुस्सह दुःख प्राप्त होताहै उसके यह वचन सुनके उन सबने उसदुःखदायी असन्तोष का त्याग कर दिया ठीक है सत्संग से किसका भला नहीं होताहै ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे पञ्चसप्ततितम प्रदीप ७५ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षट्सप्ततितमःप्रदीपः ७६ ॥

अनेक मूर्खोंके दृष्टान्त ॥

स्वर्णलोभीमहामूर्खो मूर्खमूर्खस्तथाक्रमात् ।
हारमूर्खोथमहिषीमूर्खोमूर्खदरिद्रकः ॥
वैद्यमूर्खश्चेतिमूर्खाःकथितावैप्रदीपके ७६ ॥

(अर्थ) सुवर्णका लोभी महामूर्ख मालमूर्ख आमूर्ख हारमूर्ख महिषमूर्ख और मूर्खवैद्य इतने मूर्ख वर्णन किये हैं ७६ ॥

अब एक सुवर्ण के लोभीकी कथा आप सुनिये कोई युवा पु-

आर्यपुत्रसे अधिक स्वरूपवान् और बलवान् दूसरा कोई पुरुष नहीहै तथापि चित्तकी वृत्ति चलायमान होतीहै अच्छा जो चाहे सो होय इसके साथ अवश्य रमण करूंगी यह शोच उसने निज सखी के द्वारा अपना अभिप्राय उससे कहके रात्रि के समय उसको रस्सी से निज महल मे चढा लिया वह पुरुष वहा आकर भय से उस के पलँग पर नही बैठसका यह देखकर रानी को यह जानकर कि यह नीचहै बड़ा खेद हुआ और उस समय एक भयङ्कर सर्प्प म-हलके ऊपर आकर उड़ने लगा उसे देख भयभीतहो उसपुरुषने एक बाण धनुषमें लगाके मारा तो बाणके लगने से वह कटकर महल के ऊपर गिर पडा तब वह पुरुष उस सर्पको झरोखेमे से बाहर फें-ककर प्रसन्नहो नाचने लगा उसकी इस तुच्छताको देखके कल्या-णवती ने निज जीमे विचार कर कहा कि इस अधम निःसत्त्वको लेकर मैं क्या करूंगी उसके इस अभिप्रायको जान उसकी सखी ने उस पुरुषके सामने उस राजपुत्रीसे कहा कि तुम्हारा पिता आताहै तो तिस पुरुषने भयभीतहो शीघ्रही रस्सीको पकड़के अपनी राह लिया व्याकुलहो भयसे गिरा नहीं यह कुशलहुई तब उसके चले जानेपर कल्याणवतीने अपनी सखी से कहा कि तुमने मेरा अभि-प्राय जानलिया यह बहुत अच्छाकिया जो इसनीच को युक्तिपूर्वक निकाल दिया देखो मेरापति व्याघ्रसिंहादिकों को भी मारकर लज्जित हुआ और वह सर्पकोही मारकर नाचने लगा इससे ऐसे पराक्रमीको छोड़कर ऐसे निःसत्त्व पुरुषपर मेरा प्रेम कैसेहोय मेरी स्थिरतारहित इसबुद्धिको धिक्कारहै अथवा कपूरको छोडकर अशुचि वस्तुओं पर जानेवाली मक्षिकारूप सब स्त्रियों को धिक्कारहै इस प्रकार पश्चात्ताप करके कल्याणवती अपने पतिकी राह देखनेलगी

अपने पिताके साथ तड़ाग पर जल पीनेको गया वहां उसने
वर्णचूर्ण नाम पक्षी का सुवर्णके वर्णका जल मे प्रतिविम्ब देख
र सुवर्ण जानके तड़ाग मे उतर कर उसको लेनेलगा परन्तु च-
ल जलके सिवाय उसके हाथमे कुछ न आया और उसे वारम्वार
ल पकड़ते देखकर उसके पिताने उससे उस सुवर्णचूड़को भगा
या और उसे जलके वाहर बुलाकर समझा दिया कि यह सुवर्ण
था पक्षीका प्रतिविम्ब था इसीप्रकार से निर्विचार लोग भ्रान्ति
मोहितहोकर लोगोंमे उपहास को प्राप्त होते हैं अब आप अन्य
हामूर्खोंका वृत्तान्त सुनिये कि किसी वनियेंका ऊंट भारकेमारे मार्ग
में थकगया था तव वह अपने सेवकोसे वोला कि मैं एक ऊंट मोल
लेने जाताहूं इसपर का कुछ वोझ उसपर लाददूंगा और तुम लोग
जो यहां पानी वरसे तो इस वातका ध्यान रखना कि इन गठरियों
के चमड़े में जल न लगने पावे यह कहकर उस वैश्यके चले जाने
पर मेघो से आकाश घिरगया और जल वरसने लगा तव उन
सेवकों ने यह शोचकर कि हमारे स्वामी ने कहा है कि इन गठ-
रियो के चमड़े में जल न लानेपावे उन गठरियों में से कपड़े निका-
लकर उनके चमड़ोपर लपेट दिये इससे सव वस्त्र नष्ट होगये इतने
में उस वनियें ने आकर कपड़ों को भीजते देखके कहा कि हे मूर्खो !
तुमने सव कपड़े नष्ट करदिये यह सुनकर वह वोले कि हे स्वामी!
आपही ने तो कहाथा कि गठरियों के चमड़े पानी में न भीजने
पावें तब वह वैश्य वोला कि चमड़ों के गीले होनेसे वस्त्र भी गीले
न होजायँ इसलिये मैंने तुमसे कहा था कि केवल चमड़ेही की
रक्षा के लिये कहा था यह कहकर उसने ऊंटोंपर सव असवाव लाद
कर अपने घर जाके उन मूर्ख सेवकों का सर्वस्व छीनलिया इसप्र-

इसी बीचमें सिंहबलराजा गजानीक से बहुतही सेना लेकर अपने शत्रुओं को जीतकर कल्याणवती को अपने श्वशुर के यहां से लेगया और प्रसन्नतापूर्वक बहुतसा दान देकर निष्कंटक राज्य करनेलगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेसप्तषष्टितमःप्रदीपः ६७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टषष्टितमःप्रदीपः ६८ ॥

गधे और किसान का दृष्टान्त ॥

वाकादोषात्प्रकटताजायतेगुप्तरूपिणः । गर्द
भोहियथाज्ञातःकृषिकारेणशब्दतः ६८ ॥

(अर्थ)--वाणी के दोष करके निज छिपारूप भी प्रकट हो जाताहै-जैसे रीकने पर गधा पहिचाना गया ६८ ॥

किसी धोबी ने अपने दुर्बल गधेको शेर का चमड़ा उढाकर नाज के खेत में छोड़दिया वह गधा बहुत दिनों तक अन्नखाया किया और उसे शेर जानकर किसी ने निवारण नही किया एक दिन कोई धनुषधारी खेती करनेवाला उसे देखके और सिंहजान के भयभीत होके कम्बल ओढकर निहुरे २ चला उसे इसप्रकारसे जाते देखकर वह गधा उसे भी गधा जानकर उच्चस्वर से बुलाने लगा उस शब्दको सुनकर खेतीवाले ने उसे गधा जानकर वहां आके उसको मारडाला ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टषष्टितम प्रदीप. ६८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनसप्ततितमःप्रदीपः ६९ ॥

शशेसे हाथी वशहोने का दृष्टान्त ॥

स्वल्पोऽप्यर्यादृशतंमहान्तमपिबुद्धितः ।
शशो महान्तंनकरोद्वशं ६९ ॥

कार से मूर्खलोग तात्पर्य को न समझकर उलटाकाम करके अपने
तथा स्वामी के प्रयोजन को नष्ट करते हैं अब आप पुओं के मूर्ख
की कथा सुनिये किसी मूर्ख पथिकने पैसे के आठपुए लिये उनमें
से छः पुए खानेसे उसकी तृप्ति न हुई और सातवें के खाने से तृप्ति
होगई तब वह चिल्लाकर रोनेलगा कि हाय मैंने यह पुआ पहलेही
क्यों न खाया जिससे मेरे यह छः पुए बचजाते उसके रोदन का
वृत्तान्त जानकर लोग हँसने लगे अब आप द्वारके रक्षक मूर्खकी
कथा सुनिये किसी बनियें ने अपने मूर्ख सेवक से कहा कि मैं घर
में जाताहूं तुम दुकानका द्वार देखते रहना यह कहकर उसके चले
जाने पर वह मूर्ख सेवक दरवाजा उतारके अपने कन्धेपर लाद के
नटका तमाशा देखने चलागया और लौटकर उस वैश्यके क्रोधसे
डाटकर बोला कि आपहीने तो द्वारकी रक्षा करनेको कहा था इस
प्रकार से तात्पर्य को न जानकर केवल शब्दों के ही जाननेवाले
मूर्खलोग विपरीत कार्य किया करते हैं अब आप भैंसा के मूर्खोंकी
कथा सुनिये कुछ ग्रामीण पुरुषों ने किसी का भैंसा लेकर उसी के
आगे गांव के बाहर लेजाके किसी बर्गद के वृक्षके नीचे मारकर
खाडाला तब भैंसेके स्वामी ने राजाके यहां जाके उनकी नालिश
की राजाने उन ग्रामीणों को बुलाया उनके आगे भैंसेके मालिक
ने राजासे कहा कि हे स्वामी! इन ग्रामीणों ने तड़ागके तटपर बर्गद
के नीचे मेरा भैंसा मारकर खाया है यह सुनकर उनमें से एक वृद्ध
मूर्ख ने कहा कि इस गाँवमें न तड़ाग है न बर्गदका वृक्षहै तो हमने
इसका भैंसा कहां खाया यह बड़ा झूंठाहै यह सुनके उसने कहा कि
तुम्हारे गांवके पूर्वकी ओर क्या तालाब के निकट बर्गद का वृक्ष
नहीं है वहाँ बैठकर अष्टमी के दिन मेरा भैंसा तुम लोगोंने मारकर

(अर्थ) छोटा भी जीव निज बुद्धि से भारी भी शत्रुको वश कर लेताहै—जैसे हाथी को एक शशेने वशमें किया ६६ ॥

दृष्टान्त—चन्द्रसर नाम किसी निर्मल जलवाले तड़ागपर शिली-मुखनामखरगोशो का राजा रहताथा एक समय अनावृष्टिके कारण अन्य जलाशयों के सूखजाने से चतुर्दन्तनाम हाथियो का राजा सम्पूर्ण अपने हाथियों समेत वहां जल पीनेको आया इससे हाथियों के पैरो से बहुत खरगोश कुचल गये तब उस हाथी के चले जानेपर उसी शिलीमुखने सभा करके विजयनाम खरगोशसे कहा कि यह गजराज जलका स्वाद जानगयाहै अब यह बारम्बार यहां आवेगा इससे सब खरगोशोका नाश होजायगा इस हेतुसे इसका कोई उपाय शोचो और उसके पास जाकर कोई युक्तिकरो क्योंकि तुम कार्य्यका उपाय तथा कहनेकी युक्ति जानतेहो जहां २ तुम गयेहो वहां २ सब कार्य सिद्धिहुएहैं उसके यह वचन सुनकर वह विजयनाम खरगोश उस हाथीके पास एक ऊंचेसे शिखरपर चढ़कर हाथी से बोला कि मैं चन्द्रमाका भेजाहुआ दूतहूं उन्होने तुम से कहाहै कि शीतल चन्द्रसर तड़ाग मेरे निज रहनेका स्थानहै वहां जो खरगोश रहते हैं उनका मैं राजाहूं और वह मेरे बड़े प्रिय हैं इसीसे मेरा नाम भी शशी होगयाहै देखो तुमने मेरे तड़ागका नाश कियाहै और मेरे खरगोशोंको माराहै अब जो तुम फिरऐसा करोगे तो मुझसे इसका दण्ड पाओगे उसके यह वचन सुनकर हाथियोके स्वामी ने भयभीत होकर कहा कि अब ऐसा अपराध मैं नही करूंगा यह सुनकर उसने कहा कि अच्छा तुम मेरे साथ चलकर उनके दर्शन करके अपने अपराधो को क्षमा कराओ यह कहके उस खरगोशने हाथियो के राजा को अपने साथ लाकर

खाया है यह सुनकर उस वृद्धने कहा कि हमारे गांवमें न पूर्व्वदिशा है न अष्टमी तिथि है यह सुनकर राजाने हँसकर उसके उत्साह बढ़ाने के लिये उससे कहा कि तुम बड़े सत्यवादीहो तुम्हारे कहने में कुछ झूंठ नहीं है अब तुम सत्य २ कहो कि तुमने भैंसा खायाहै या नहीं यह सुनके उस वृद्धने कहा कि जब मेरा पिता मरगया था उसके तीनवर्ष पीछे मैं पैदाहुआ था उन्होने ही मुझे यह सब चतुरता सिखाई है इससे मैं कभी झूंठ नही कहताहू इसका भैंसा तो मैंने खायाहै परन्तु सब इसकी बातें झूंठहैं यह सुनकर राजाने बहुत हँसके उन ग्रामीणों को दंडदिया इसप्रकार से मूर्खलोग प्रकट करने की बातको छिपाते हैं और नहीं प्रकट करनेकी बातको प्रकट कर देते है अब एक अन्य मूर्ख को कथा सुनिये कि किसी दरिद्री मूर्ख से उसकी स्त्रीने कहा कि प्रातःकाल मेरे पिताके यहां उत्सवहै वहां मैं जाऊँगी इससे जो आप कमलोंकी माला मुझे न लादोगे तो आजसे न मैं आपकी स्त्री न आप मेरे पति उसके यह वचन सुन के वह मूर्ख रात्रि के समय राजा के तालाव पर कमल तोड़ने को गया वहां रक्षकों ने उससे पूँछा कि तुम कौनहो उसने कहा कि मैं चक्रवाकहूं यह सुनकर रक्षक लोग प्रातःकाल उसे बांध के राजा के पास लेगये राजाके पास भी जाके वह चक्रवाक कासा शब्द करनेलगा तब राजाने उससे युक्तिपूर्वक सब वृत्तान्त पूछकर उसको मूर्ख जान के छोड़दिया अब आप एक मूर्ख वैद्य की कथा सुनियें किसी ब्राह्मण ने किसी मुर्ख वैद्य से कहा कि तुम मेरे पुत्र का कूबर बैठालदो यह सुनकर उस वैद्य ने कहा कि तुम मुझे दश पैंसेदो तो मैं इसका कूबर बैठाल दूं और जो न बैठालदूं तो इसके दशगुने तुमको फेरदूंगा यह कहके उस वैद्यने दशपैसे लेकर कूबर

ताड़ग में चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब दिखाया उस प्रतिबिम्बको देखकर वह गजराज प्रणाम करके भयभीत होकर अन्यबनको भागगया और फिर वहां कभी न गया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनसप्ततितमःप्रदीपः ६९ ॥

अथ दृष्टान्त प्रदीपिनी चतुर्थभागे सप्ततितमःप्रदीपः ७० ॥

दोपक्षियों और बिलाव का दृष्टान्त ॥

नकुर्यात्क्षुद्रविश्वासंघातमेवकरोतिसः ।
यथाविश्वासितौनुर्वैभक्षयामासपक्षिणौ ७० ॥

(अर्थ) क्षुद्रप्राणी का विश्वास न करना वह घातही करताहै जैसे–विश्वास किये बिलावने दोनों पक्षी खालिये ७० ॥

दृष्टान्तकाक का–एक समय किसी वृक्षपर मैं रहता था उसी वृक्ष के नीचे एक कपिञ्जल पक्षी भी घोंसला बनाकर रहता था किसी समय वह कपिञ्जल कहीं चलागया और बहुत दिन तक नहीं आया इतने में एक खरगोश आकर उसके घोसले मे रहने-लगा कुछ दिनों मे कपिञ्जल भी आया उसी समय कपिञ्जल और खरगोशका परस्पर यह विवादहोने लगा कि यह घोसला कि-सका है बहुत विवाद करके वह दोनों निर्णय करनेवाले किसी सभ्यको ढूंढने के लिये चले और मैं भी उनका कौतुक देखने को उनके पीछे २ चला कुछ दूरचलकर किसी तड़ाग के निकट जीवहिंसा के लिये मिथ्या व्रतधारण किये हुये ध्यान से आधा नेत्र बन्दकरके बैठे हुए बिलाव को देखकर उसे धर्मात्मा जानकर वह दोनों निर्णय कराने के लिये उसके कुछ समीप गये और उस से बोले कि हे भगवन् ! आप बड़े धर्मात्मा तपस्वीहो इससे आप ही हमारा न्यायकरो यह सुनकर वह बिलाव धीरे से बोला कि

के बैठाने में बहुतसा उद्योग किया परन्तु वह न बैठा इससे उसने दशगुने पैसे पेरदिये इसप्रकार अशक्य कार्य्य की प्रतिज्ञा करने से केवल हास्य तथा हानिही होती है इससे बुद्धिमान्को चाहिये कि ऐसी २ मूर्खता से सदैव बचारहै ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषट्सप्ततितमःप्रदीपः ७६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तसप्ततितमःप्रदीपः ७७ ॥

दो स्त्री वाले पुरुष का दृष्टान्त ॥

अलालितातुहितदा लालिताहितहारिणी ।
द्वेहिभार्य्येयथाप्रोक्तेहितदाहितकारके ७७ ॥

(अर्थ) बिनलालन की दुहागिन स्त्री तो साध्वीहोने पर हित देनेवाली होती और लालनकरी स्त्री दुःखदायक होजातीहै जैसे एक पुरुष की दो स्त्री थीं तिनमे पहिली हितकारक दूसरी हितहारक अर्थात् व्यभिचारणी थी ७७ ॥

मालवदेश में बड़ा प्रसिद्ध एक श्रीधर नाम ब्राह्मण था उसके दो पुत्र थे बड़े का नाम यशोधर और छोटे का नाम लक्ष्मीधर यह दोनो एक साथही उत्पन्नहुये थे इसी से इनके रूप भी समान थे यह दोनो तरुण होके विद्या उपार्जन करने के लिये परदेशको चले मार्ग में चलते २ जल तथा वृक्षों से रहित उष्ण पृथ्वीवाले बड़े घोर वनमें पहुँचे उसवनमें धूप तथा तृष्णासे महाव्याकुलहोके वह दोनो कुछ दूर चलके सायंकालके समय एक बावड़ीपर पहुंचे उसबावड़ी के तटपर एक फलवान् सघन वृक्ष लगाथा उस वृक्षके नीचे कुछ बैठके श्रमको दूर करके उन दोनोंने उसबावड़ी में स्नान किया और सन्ध्यावन्दन कर उसी वृक्षके फलखाके बावड़ी का जलपिया और रात्रिहोजाने पर जीवों के भय से वह दोनों उसी

तप करते २ मैं बहुत क्षीणहोगया हूं इस से मुझे अच्छे प्रकार सुनाई नहीं देता अत्यन्त निकट आकर कहो तो मैं निर्णय करूं क्योंकि अच्छे प्रकार निर्णय न करने से दोनो लोक नष्ट होतेहैं इस प्रकार से कहकर उनदोनो को बिलाव ने अपने पास बुला कर मारके खाडाला ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्ततितम प्रदीप: ७० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे एकसप्ततितमःप्रदीप: ७१ ॥

ब्राह्मण और धूर्तों का दृष्टान्त ॥

एकबुद्धिर्भिद्यतेहि प्रायशोबहुवक्तृभिः ॥
द्विजोयथाभिकथितोबुद्धिमाजातिमकांजहौ७१

(अर्थ)-एककी बुद्धि बहुतों के कथनसे बहक जाती है जैसे बहुत बक्ता धूर्तों से कहे गये ब्राह्मण ने निजबकरे की बुद्धि को तजी ७१ ॥

कोई ब्राह्मण किसी गांवसे बकरा मोल लेकर कन्धेपर रखकर चला मार्ग में बहुतसे धूर्तों ने उसे देखकर वह बकरा लेना चाहा उनमें से एकने जाकर उस ब्राह्मणसे कहा कि हे ब्राह्मण! यह कुत्ता तुमने अपने कन्धेपर क्यों रक्खाहै इसे छोडदो उसके इस कहने को न मानकर वह ब्राह्मण उसे कन्धेपर रक्खेही रहा तब अन्य दो धूर्तों ने ब्राह्मणसे कहा हे ब्राह्मण! यह कुत्ता तुमने कन्धेपर क्यों चढ़ायाहै यह सुनकर वह ब्राह्मण कुछ सन्देह युक्तहोकर बकरे को कन्धेपर रक्खेहुएही चला तब अन्य तीन धूर्तों ने उससे आगे जाकर कहा कि तुम ब्राह्मणहोके कुत्ते को क्यों कन्धेपर चढ़ातेहो हम जानते हैं कि तुम ब्राह्मण नहीं हो व्याधहो इसी कुत्तेसे जीवों की हिंसा करवाते हो यह सुनकर उस ब्राह्मणने सोचा कि किसी

वृक्षपर चढके बैठे उस समय बावड़ी के जलमे से बहुत से पुरुष निकले उनमे से किसी ने उस पृथ्वी पर बुहारीदी किसीने चौका दिया किसीने फूल बखेरे किसीने सुवर्ण का पलँगलाकर बिछाया किसीने उस पलँग पर बिछौने बिछाये किसीने दिव्य भोजन किसीने दिव्य आभूषण लाके उसी वृक्षके नीचे रक्खे और किसी ने चन्दन तथा तैलादिक पदार्थ लाके रक्खे इसप्रकार सब सामग्री इकट्ठे होजानेपर एक दिव्यपुरुष हाथ में खड्गलिये हुये उस बावड़ी में से निकला और आकर दिव्य आसन पर बैठा उसके शरीर में चन्दनादि लगा के और सब आभूषण पहराके वह सबलोग बावड़ी मे चलेगये उसके जानेपर उस दिव्य पुरुषने अपने मुखसे सौभाग्य के आभूषण धारण कियेहुये एक साध्वी स्त्री और दिव्य वस्त्र तथा दिव्य आभूषण पहनेहुई दूसरी अत्यन्त सुन्दर स्त्री निकाली वह दोनों उसकी स्त्री थी परन्तु दूसरी उसे बहुत प्यारी थी मुखसे निकल कर वह पहली स्त्री अपने पतिके लिये तथा सपत्नी के लिये सुवर्ण के पात्रों में रखकर भोजन लाई वह दिव्यपुरुष उस दूसरी स्त्री के साथ उन पदार्थों को भोजन करके सुवर्ण के पलँगपर उसे साथ लेकर लेटा और रति करके सोगया और वह पहली स्त्री भोजन करके उसके पैरदावने लगी और वह दोनों स्त्री भी जागतीही रहीं यह देखकर उस वृक्षपर बैठेहुये वह दोनोंब्राह्मण यह सलाह करके कि यह कौनहै यह बात इस पैरदावनेवाली से पूछना चाहिये इसलिये वृक्षसे उतरकर उसके पासगये उसके पास उन्हें जाते देखकर उसदूसरी स्त्रीने अपने पतिके पासमे उठकरयशोधरसे कहा कि तुम मुझसे प्रसंगकरो यहसुनकर यशोधरने कहा कि तुम परस्त्रीहो मैं तुम्हारे साथ रमण नहीं करसक्ता तुमको ऐसा नहीं

भूतने मेरी दृष्टि हरकर मुझे सन्देह कराने को यह कुत्ता देदियाहै क्योंकि इन सब की दृष्टि मे अन्तर नही होसक्ताहै यह शोचकर वह उस बकरे को छोड़ स्नानकरके अपने घरको चलागया और उन धूर्तों ने बकरे को ले जाके और मारके खाया॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकसप्ततितमःप्रदीपः ७१॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विसप्ततितमःप्रदीपः ७२॥

राक्षस और चोरों का दृष्टान्त॥

स्वविवादेनकार्यस्य हानिरेवोपजायते।
यथाराक्षसचौरोत्थ विवादेद्विजजागरः ७२॥

(अर्थ)–आपस में विवाद करने से भी निजकाज की हानि होजाती है जैसे चोर और राक्षसकृत विवादसे ब्राह्मण का जागरण होगया ७२॥

किसी ब्राह्मण ने कहीं से दो गौएँ पाई थी उन गौओंको देख कर किसी चोरने उन्हें चुरालेनेका विचारकिया और उसी समय किसी राक्षसने उस ब्राह्मण को खाने का विचार किया इसीलिये वह दोनों चोर और राक्षस रात्रि के समय उस ब्राह्मण के यहां चले और मार्ग में मिलकर परस्पर अपना अपना अभिप्रायकहके उस ब्राह्मण के यहां पहुँचे वहां चोरने राक्षस से कहा कि मैं पहले गौओं को लेजाऊं तब तुम इस ब्राह्मणको खाना नहीं तो तुम्हारे छूने से यह ब्राह्मण जगपड़ैगा तो मैं गौएँ कैसे लूंगा यहसुनकर राक्षस ने कहा कि पहले इस ब्राह्मण को खाऊंगा ऐसा न होय कि जब तुम गौओंको खोलो और ब्राह्मण जगपड़े तो मेरा परिश्रम व्यर्थ होजाय उनके इस कलह को सुनकर ब्राह्मण जगपड़ा और

कहना चाहिये यह सुन वह फिर बोली कि हरोमत तुम सरीखे सौ पुरुषोंके साथ मैं रति करचुकीहूं तुमको विश्वास न हो तो देखलो मेरे अंचल में सौ अँगूठी बँधीहुई हैं जिस २ के साथ मैंने रमण कियाहै उस २ से एक एक अँगूठी लेली है यह कह उसने निज अंचल से खोल सौ अँगूठी उसे दिखलादी तब यशोधरने कहा कि तुम सौ क्या चाहे लाखोंके साथरमणकरो परन्तु मैं तो तुमको माता के समान जानताहूं मै उन पुरुषोंकासा कामांध नहीं हूं इसप्रकार उसके निषेधको सुनकर उस पुंश्चलीने निजपतिको जगाकरकहा कि आपके सोजाने पर इस पुरुषने मेरा धर्म नष्ट करादिया यहसुन वह खड्गलेके उसे मारनेको चला तब पहिली स्त्रीने उसके चरण ग्रहण करके कहा कि आप व्यर्थ ब्रह्महत्या न कीजिये इसी पापिनिने इससे कुसंग करनेको कहा पर इसीने माता कहके निषेधकर दिया तब इसने तुम्हें जगाकर तुमसे मरवाना चाहाहै और इसने मेरे आगेही सौ पुरुषो के साथ कुसंग कियाहै और सबसे एक २ अँगूठी ली है और मैंने आपसे इसलिये कभी नहीं कहा कि आप को कदाचित् विश्वास न हो पर आज आपको पापसे बचाने के कारण मुझे कहनाही पड़ा अब भी जो आपको विश्वास न होता होय तो इसके अंचल में सौ अँगूठी बँधी हैं खोल लीजिये और मेरा यह सतीधर्म्म भी नहीं जो निज पति से झूंठ बोलूं यह कह उसने निज प्रभाव [illegible] को वृक्षकी ओर दृष्टिकी तो वह भस्म होगया फिर उसे नि[illegible]ा किया यह प्रभाव देख उसने निज स्त्री [illegible] उसके अंचल में सौ अँगूठियां [illegible] और यशोधर से निज [illegible] स्त्रियोको

हृदयमें रखके इनकी रक्षा करताथा इतनेपर भी इस पापिनिकी मैं रक्षा नही करसका ॥ विद्युतंकःस्थिरीकुर्य्यात्कोरक्षेच्चपलां स्त्रियम् । साध्वीयदिपरंस्वेनशीलेनैकेनरक्ष्यते ॥ (अर्थ) विजली कौन ठहरा सक्ता तैसेही चपला स्त्रीकी कौन रक्षा करसके केवल शीलहीउनकी रक्षाकरसक्ताहै शीलवती स्त्री दोनों लोकोंमे निजपतिकी रक्षाकरती है जैसे इसने आज मेरीकी इसीकी कृपासे मेरी पुंश्चलीसे कुसंगति छूटी और ब्रह्महत्या के पापसे भी वचा यह कह उसने यशोधरऔर लक्ष्मीधरसे बैठाकर पूंछा कि तुमदोनो कहांसे आतेहो और कहांको जाओगे तव यशोधरने उससे सव वृत्तान्त कह विश्वासपाय उससे पूंछा कि हे महाभाग! जो यह गुप्त वात न हो तो कहिये कि आप कौनहैं और ऐसे ऐश्वर्य्य होनेपर भी आपका जलमे निवास क्योंहै यहसुनके वह पुरुप वोला कि हिमालयके दक्षिण और कश्मीरनाम देशहै तिस सुन्दर देशमे में भवशर्म्मानाम एक ग्रामीण ब्राह्मणथा और मेरेदो स्त्रियांथी एक समय जैनिभिक्षुकोंसे मेरी पहिचानहोगई इससे मैंने उनके शास्त्र मे कहाहुआ उपोपण नाम नियम किया जब वह व्रत समाप्त होनेपर आया तो एक मेरी पापिनि स्त्री हठपूर्व्वक मेरे साथ सोरही और रात्रिके पिछले पहर उठकर मैंने निद्रा मे अज्ञान होकर उसके साथ रमण किया इसीसे वह मेरा व्रत खण्डित होगया और मैं उसके प्रभावसे जल पुरुप हुआ यहां भी वेही दोनो मेरी स्त्रियां हुई है जो मेरे शयनपर सोरही थी वही पापिनी पुंश्चलीहुई और दूसरी यह पतिव्रता है उस अखण्डितव्रत का भी यह प्रभाव है कि मुझे निज पूर्व्वजन्म का स्मरण वनाहै और रात्रिके समय ऐसा ऐश्वर्य्य प्राप्त होताहै कि जो मैं उस व्रत को खंडित न करता तो मुझे यह जन्म नहीं प्राप्त होता ऐसे

में वहाके अपने घर आकर राजपुत्री के साथ सुखपूर्वक रहनेलगा राजाने इस वृत्तान्तको सुनकर जाना कि किसी योगी ने यहसव कार्य कियाहै इससे उसने अपने सब नगरमें यह ढंढोरा पिटवाया कि जिस योगी ने मेरी पुत्री का हरण आदि सव विचित्र कर्म्म कियाहै वह मेरेपास आवे मैं उसको अपना आधाराज दूगा इस ढंढोरे को सुनके घटने राजाके पास जाना चाहा परन्तु राजपुत्री ने उसे न जानेदिया और उससे कहा कि छलकरके मारनेवाले राजा पर तुम कभी विश्वास न करो उसके यह वचन सुनकर घट भेद खुलजाने के भयसे उस राजपुत्री तथा संन्यासी को साथले कर परदेश को चला मार्ग में राजपुत्री ने उस संन्यासी से एकान्त में कहा कि पहले कर्परनाम चोरने मेरा धर्म नष्ट किया फिर उसके मरजानेपर यह मुझे ले आया इसपर मेरा कुछ स्नेह नहीं है इससे तुम मुझे स्वीकार करो यह कहके वह उस संन्यासी के साथ रमणकरके घटको विषदेके मारकर उसी संन्यासी के साथ चली मार्ग मे रात्री के समय एक धनदेवनाम वैश्य उसे मिला संन्यासी के सो जानेपर उससे वह राजपुत्री बोली कि इस अशुभ संन्यासी को लेकर मै क्या करूंगी तुम मुझे स्वीकारकरो यह कहकर उस सोतेहुये संन्यासी को त्यागकर उस वैश्य के साथ चली गई प्रातःकाल उस संन्यासी ने राजपुत्री को न देखकर भागी हुई जानके यह शोचा कि (नस्नेहोस्तिनदाक्षिण्यं स्त्रीष्वहोचापलादृते) स्त्रियो मे चपलताके सिवाय न स्नेह होताहै न सुशीलता होती है देखो यह पापिनि मुझे विश्वास देकर भी सब धन लेकर भागगई अथवा यही बड़ा लाभहै कि जो उसने घटके समान मुझे भी नहीं मारडाला यह शोचकरसंन्यासी अपने देश

अपना वृत्तान्त कहके उसने उन दोनों भाइयों का बड़ा सन्मान किया और स्वादिष्ठ भोजन कराय दिव्य वस्त्र पहिराये तदनन्तर उस पतिव्रता स्त्रीने चन्द्रमाकी ओर देख प्रणाम करके कहा कि हे लोकपालो! जो मैं सत्य२ पतिव्रताहूं तो मेरा पति जलवाससे छूटकर स्वर्गको जाय उसके ऐसे कहतेही आकाश से विमान आया उसपर चढ़ वे दोनों स्त्री पुरुष स्वर्गको चलेगये ठीकहै असाध्यं सत्यसाध्वीनां किमस्तिहिजगंत्त्रये ॥ सच्ची पतिव्रताओं को त्रैलोक्यमें क्या असाध्यहै इस आश्चर्यको देखके वे दोनों भाई शेष रात्रि तहांही व्यतीत कर प्रातःकाल वहां से चले और चलते २ निर्जनवन में सायंकाल के समय एक वृक्षके निकट पहुँचे और वहां इधर उधर जलकी तलाश करने लगे उस समय उस वृक्षमें उन्हें यह शब्द सुनाई दिया कि हे ब्राह्मणो! ठहरो आज मैं तुम्हारा अतिथिसत्कार करूंगा क्योंकि तुम हमारे अतिथि हो यह कह वह शब्द तो बन्द होगया और वहांपर एक दिव्य बावड़ी उत्पन्न होगई तथा दिव्य भोजन भी उसी के तटपर आगया इस आश्चर्य को देखकर उन दोनों भाइयोंने उस बावड़ी में स्नान सन्ध्योपासन करके उस भोजन को खाया और उसी वृक्षके नीचे आकर विश्राम करनेका विचार किया इतने मे एक सुन्दर पुरुष उस वृक्ष पर से उतरकर दोनोंके पास आया और स्वागत पूँछके उनके निकट बैठा उसे प्रणाम करके उन दोनों भाइयों ने पूँछा कि आप कौनहैं तब उसने कहा कि पूर्व्वजन्म में मैंदीन ब्राह्मण था भाग्य वश जैनी साधुओंके साथ मेरीसंगति होगई उनके उपदेशसे मैंने एक व्रत किया उसमे किसी मूर्खने सायङ्काल मुझे भोजन करवादिया इससे उस व्रतके खण्डित होजाने के कारण मैं यक्ष होगया

को चलागया और राजपुत्री भी धनदेव के साथ उसके देश में पहुँची वहां धनदेव यह शोचकर कि मैं इस पुंश्चलीको घर क्यों लेजाऊं सायंकाल के समय एक वृद्धा स्त्री के घरगया और उस वृद्धा के यहां ठहरके रात्री के समय उससे बोला कि हे अम्ब! तुम धनदेवके घरकी कोई बात जानतीहो यह सुनकर उसने कहा कि उसके यहां की बात क्या पूछतेहो उसकी स्त्री नित्य नवीन पुरुष के साथ रमणकरती है एक चमड़े की पिटारी रस्सी में बांधीहुई उसकी खिड़कीमें लटका करतीहै उस पिटारीमें रात्रिके समय जो कोई पुरुष बैठजाय उसीको वह खैंचकर भीतर बुलालेतीहै और उसके साथ रमणकरके पिछली रातमें उसको निकाल देतीहै वह मद्य से ऐसी उन्मत्त रहतीहै कि ऊंच नीचका उसको जरा भी विचार नहीं रहताहै उसका यह दुराचार सम्पूर्ण नगर में प्रसिद्ध होगया है उसके पति को गये हुए बहुत दिन व्यतीत होगये हैं परन्तु अभीतक वह नहीं लौटा उस वृद्धाके यह वचन सुनकर वह वैश्य सन्देहयुक्त होकर अपने घर के निकटगया और वहां पिटारी लटकती हुई देखकर उसमें बैठगया उसे बैठा देखकर दासियों ने रस्सी खैंचकर उसे ऊपर चढ़ालिया वहां उसकी मदान्ध स्त्रीने आलिंगनकरके उसको शय्यापर लिटादिया उसके इस दुराचारको देखकर आलिंगन तथा चुम्बनादि करनेपर भी धनदेवको रमण करनेकी इच्छा न हुई और वह स्त्री उन्मत्त होकर सोरही पिछली रात्रिको उसे दासियों ने वैसेही उस पिटारी में रख बैठाय उतारदिया तब उसने शोचा कि मुझे अब घरसे क्या प्रयोजनहै क्योंकि घरका मुख्यधन तो स्त्रीही होती है उसकी यह दशा है इससे मुझे अब वनको जाना उचित है यह शोचके धनदेव उस

और जो यह व्रत पूराहोजाता तो मैं स्वर्ग में देवताहोता यह कहके उसने उन दोनों से पूँछा कि तुम कौनहो और किस निमित्त यहां आयेहो यह सुनकर यशोधर ने उससे सब वृत्तान्त कहदिया तब उस यक्षने उनसे फिर कहा कि जो तुम विद्या सीखने जाते हो तो मैं अपने निज प्रभाव से तुमको सब दिये देता हूं परदेश जाकर क्याकरोगे विद्वान् होय अपने घरजाओ यह कह उसने उन दोनों को सब विद्याये देदीं और उसके प्रभावसे वे दोनों अत्यन्त विद्वान् होगये तब उसने उनसे फिर कहा कि तुम दोनों से हम एक गुरुदक्षिणा मांगते हैं हमारे लिये तुम एक दिन का सत्यभाषण ब्रह्मचर्य देवताओं की प्रदक्षिणा भिक्षुकों के समय में भोजन मनका संयम और क्षमा इन नियमों समेत उपवास करना और इसका फल हमको देदेना इसी से मैं स्वर्ग में चला जाऊंगा यह सुनकर उन दोनोंने कहा बहुत अच्छा हम ऐसाही करेंगे यह सुनकर वह यक्ष अन्तर्द्धान होगया और उन दोनो भाइयों ने वह रात्रि वहीं व्यतीत कर फिर प्रातःकाल वहां से चल कईदिन में निज घर पहुँच के अपने माता पिता से वह वृत्तान्त कहकर यक्षका बताया हुआ व्रतकिया और उसका फल उसको दिया उस फलको पातेही वह यक्ष विमान में बैठके वहां आय उनसे बोला कि तुम दोनो की कृपा से मैं यक्षयोनिसे छूटकर स्वर्गको जाताहूं तुमभी अपने लिये इस व्रतको करना इसके प्रभावसे तुमको इसलोकमें अक्षय धन प्राप्तहोगा और अन्तमें स्वर्गको जाओगे यह कह वह यक्ष स्वर्गको गया और वे दोनो भाई इस व्रतको कर अक्षय धन पाकरके सुखसे रहनेलगे ॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिन्यांचतुर्थभागेसप्तसप्ततितम प्रदीप ७७ ॥

कन्याको भी छोड़कर वनको चलदिया मार्ग में वहुत दिनके पीछे परदेश से लौटेभये रुद्रसोम नाम ब्राह्मण के साथ धनदेव की मित्रता होगई रुद्रसोम धनदेव का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनकर अपनी स्त्रीपर भी संदेहयुक्त होकर उसीके साथ सायंकाल में अपने ग्राम पहुँचा वहां उसने नदी के तटपर अपने घरके निकट एक उन्मत्त अहीर को गाते देखकर उससे पूँछा कि हे गोपाल ! क्या कोई तरुणी स्त्री तुम्हारे पर आसक्त होगई है जिससे इस संसार को तुम तृणसम समझ के उसके उत्साह में ऐसे मदोन्मत्त हो रहेहो यह सुन वह हँसकर बोला कि सुनो इसमें छिपानेकी कौन वातहै इस गांव के स्वामी रुद्रसोम की स्त्री से मैं नित्य भोग किया करता हूं उसके पतिको गये वहुत दिन हुये उसकी दासी मुझे स्त्री कासा वेष वनाकर उसके पास लेजाती है उस गोपाल के यह वचन सुनकर रुद्रसोमने तत्त्व जानने की इच्छासे अपने क्रोधको रोककर उससे कहा कि मैं तुम्हारा अतिथिहूं इससे अपना वेष मुझे देदो तो आज तुम्हारे वदले मैंही उससे भोग करके आनन्द भोगूं यह सुन उसने कहा अच्छा तुम मेरा यह काला कम्वल ओढ लाठी लेके यहां वैठो थोड़ी देर में उसकी दासी आकर तुमको मुझेही समझ स्त्रीकासा वेषवनाके उसके पास लेजायगी आजकी रात्रि तुम्हीं आनन्दकरो मैं विश्रामलूंगा उस गोपालके यह वचन सुनकर रुद्रसोम उससे कम्वल तथा लाठीलेके उसीका वेष वनाकर वहां वैठगया और वह अहीर धनदेवको साथ लेकर कुछ दूरपर अलग जा वैठा तदनन्तर दासी ने वहाँ आकर अन्धकार में रुद्रसोम को न पहचानके गोपालही जानके स्त्रियोका वस्त्र पहनाकर उसे उसी के मकानमें लेगई वहां उस स्त्रीने उसे गोप जानकर उठके उसका

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टसप्ततितमःप्रदीपः ७८ ॥

पादमूर्खादि अनेकमूर्खों के दृष्टान्त ॥

पादमूर्खौद्विफणकःसर्पोमूर्खस्ततःपरं ।
मूर्खस्तण्डुलभक्षीचग्रामयायीतिकीर्तिताः७८॥

(अर्थ) पादमूर्ख पैर दाबनेवाले मूर्ख दो शिष्य और दोनों फणवाला सर्प मूर्ख तथा तण्डुलभक्षी मूर्ख और गांव जानेवाला मूर्ख ये मूर्ख वर्णन किये हैं ॥

किसी गुरूके दो शिष्यथे उन दोनों में परस्पर शत्रुता रहती थी उनमें से एक तो गुरूके दक्षिण चरणको धोके नित्य मलता था और दूसरा वायें को एक दिन दक्षिण चरणका मलनेवाला शिष्य कहीं चलागया था इस से गुरूजी ने वायें चरण के मलने वाले शिष्य से कहा कि आज तुम दक्षिण चरण को भी मलदो यह सुनके उसने गुरूसे कहा कि यह मेरे शत्रु का पैर है इसे मैं नहीं मलूंगा यह सुन गुरूने उससे वड़ा आग्रह किया तो उसने पत्थर लेकर गुरू का वह पैर तोरडाला इस से गुरू ने हाहाकार मचाया उसे सुन वाहर से आकर लोगों ने शिष्यको पीटना चाहा पर गुरूने कृपा से बचादिया दूसरे दिन दूसरे शिष्यने आकर गुरु से पैर की पीड़ा का वृत्तान्त पूछकर महाक्रोधित होके यह कहा कि क्या मैं उसके पैर को नहीं तोडूंगा यह कह उसने गुरू का वायां पैर भी तोड़डाला यह जानके लोग उसे पीटने लगे परन्तु गुरूने कृपा करके उसे भी छुड़ालिया उन दोनों का यह वृत्तान्त जिसने सुना वह वहुत हँसा और उनकी दयालुता की वड़ी प्रशंसाकी इस प्रकारसे आपसमें विरोध करके मूर्ख सेवक

आलिंगनकिया यह देखके रुद्रसोमने शोचा कि दुष्टस्त्रियां निकटवर्त्ती नीचपर भी आसक्त होजाती हैं देखो यह पापिनि पड़ोसी गोपपरही अनुरक्तभई यह शोचकर वह कुछ वहाना करके धनदेव के पास चलागया और उससे अपने यहां का सव वृत्तान्त कहा और उसीके साथ वनको चला मार्ग्ग में धनदेवका मित्र शशि मिला वह शशि प्रसंग से उन दोनों का वृत्तान्त सुनकर तहखाने में भी वन्द करीहुई अपनी स्त्रीपर सन्देहवान् हुआ क्योंकि वह भी वहुत दिनों में परदेश से आया था उन दोनों मित्रों के साथ वह शशि सायंकाल के समय अपने ग्राममे पहुँचा वहां कुष्ठसे गले हुये हाथ पैर नखोवाले एक पुरुषको शृङ्गार करके गाते देख के पूँछा कि तुम कौनहो उसने कहा मैं कामदेवहूं यह सुनके शशिने कहा इसमें क्या सन्देह है यह तो तुम्हारा रूपही कहताहै कि तुम कामदेव हो यह सुन वह कुष्ठी फिर वोला कि इस नामका रहनेवाला एक शशिनाम धूर्त्त ईर्षा से अपनी स्त्रीको तहखाने में वन्द करके एकदासी उसके पासरख परदेशको चलागया है उसकी स्त्री ने मुझपर आसक्तहो निजदेह मेरे अर्पण कररक्खाहै उसकी दासी नित्य मुझे आय पीठमें चढाय लेजाती है इससे कहो मैं कामदेव सच्चाहूं या नही यह सुन शशिने निज क्रोधको रोककर कहा कि सत्य २ [illegible] ही हो मैं एक वात तुमसे मांगता हूं कि तुमसे

स्वामी के काम को नष्ट करते हैं और उनका कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है इति। अब आप दो शिरवाले सर्प की कथा सुनिये किसी सर्प के दो शिरथे उनमें से एक शिरमें तो नेत्रथे और पूंछ की ओर जो शिरथा वह अंधा था उन दोनों में सदैव यह विवाद रहता था कि मैं मुख्य हूं मैं मुख्य हूं पर सर्प अपनेमुख्य शिरकी ओर ही से चलता था एक दिन मार्ग में उस पूंछ वाले शिर ने एक काठ पकड़ लिया इससे सर्प का चलना बंदहोगया तो वह सर्प उसी शिरको बलवाला जान उसी की ओर से चला तो कहीं मार्ग में एक जलते हुए अग्निकुंड में गिरकर मरगया ऐसे जो पुरुष गुणों का अन्तर नहीं जानते हैं वे हीनगुण के संग से नष्टहोजातेहैं इति। अब चावल खानेवाले मूर्ख की कथा सुनिये एक मूर्ख अपनी सुसराल गया तो तहां उससे लोगों ने कहा प्रसाद पाइये तो वह बोला मैं तो पाही के चला था फिर तो उन्होंने बहुतही कहा पर उसने भी जायलाख और रहै पाखके अनुसार मुँह की निकली बातका ऐसा दृढ़पक्ष किया कि नहीं ही खाया रात को मारे भूख के नींद न आई आखिर उठनापड़ा तो लगा धराढका सँभालने कहीं थोड़े चावल उसको मिले उसने मुखमें डाले कि सासने कौन २ पुकारा तो चावल मुंह में ही रहे न भीतरगये न बाहर गेरसका तो सास तिसे पहिचान बोली तो सिवायहूं २ के कुछ उत्तर न पाया तो जान लिया कि इनको यह कोई असाध्य रोग होगया जिससे नहीं बोलसक्ते हैं तो पतिसे कह वैद्यको बुलवाय दिखाया तो तिसने भी उसके मुखको अकस्मात् सूजा जानके बहुत वेगसे बढ़ न जाय इसकारण चीरा लगानाही उत्तम चिकित्सा समझके इसके गालपर पैना नश्तर मारा तो तिसका

उसकी दासी तुमको अपनी पीठपर चढाके वहां लेजायगी मैं पैरों से चल नहीं सक्ताहूं इसीसे हररोज उसीकी पीठपर चढके वहांजाता हूं, उस कुष्ठी के यह वचन सुनकर वह शशि उसीकासा रूपबना कर वहां बैठगया और वह कुष्ठी इसके दोनों मित्रोंको साथले-कर वहासे कुछदूर एक स्थानमें जावैठा इसके उपरान्त कुछ रात्रि व्यतीतहुए दासी वहां आय शशिको कुष्ठीहो जानकर उसको अपनी पीठपर चढ़ाकर उसकी स्त्री के पास लेगई वहां अन्धकार मे शशि ने शरीरस्पर्श से अपनी स्त्री को पहचान कर अपने चित्तमें बड़ा खेदकिया और जब वह सोगई तब उठके अपने मित्रों के पास चला आया वहां आके उसने अपने मित्रो से कहा कि स्त्रियां दूरही से मनोहर रहती हैं नीच के साथ संसर्ग करने मे इन को जराभी ग्लानि नहीं होती है यह बहुत थोड़ीसीही बातो में पराधीन होजाती है इससे इनकी रक्षा करना अवश्य है देखो तहखाने में भी बन्द मेरी स्त्री इस कुष्ठी से अनुरक्त होगई इससे मैं भी तुम्हारे साथ बनको चलूंगा घरमें अब क्याहै यह कहकर वह रात्रिभर उन दोनों के साथ वहीं रहा और प्रातःकाल उन्ही के साथ वनको चला मार्ग मे चलते२सायकाल के समय वह तीनो एक बावड़ी के किनारे किसी वृक्षके नीचे पहुंचे और उसी बावड़ी मे स्नानकर कुछ फल खाके उसी वृक्षपर चढके बैठे इतने मे उन तीनों ने देखा कि कोई पथिक आकर उस वृक्षके नीचे लेटा और क्षणभरमेंही एक पुरुष उस बावड़ी मे से निकलकर अपने मुखसे स्त्री समेत एक पलग निकाल के स्त्रीके साथ भोग विलास करके उसी पलंगपर सोगया उसके सोजानेपर उस स्त्रीने वहां से उठके उस सोतेहुए पथिक को जगाकर उसी के साथ रमणकिया रति

गल्ला चिरगया पर उसने आह भी न की और उन चावलों को दूसरे गल्ले में लेगया सोही उस वैद्यने कहा देखो यह मवाद इधर आ गया अब सब गिरजाताहै यह कह उधर भी नस्तर धर मारा चावल गिरपड़े लोग हँसनेलगे इससे मूर्ख लोग कामको ठीक नहीं करसकतेहैं किसी ब्राह्मणने निज मूर्खपुत्रसे कहा कि कल तुमको अमुक गांव होआवनाहै वह यह सुन सोरहा और सबेरे उनसे बिन पूंछेही उस गांवको चलागया सामको आकर कहा होआया तब पिताने कहा कि क्या प्रयोजन सिद्धहुआ इसप्रकारसे मूर्ख लोग व्यर्थ परिश्रम करके केवल दुःखही उठातेहैं ॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टसप्ततितम: प्रदीप ७८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनाशीतितम: प्रदीपः ७६ ॥

बिन विचारकर करनेवाले मूर्ख आदिके दृष्टान्त ॥

अविचार्यप्रकुर्वाणो हास्यमेवफलंलभेत ।
यथाद्विजान्हन्यमानोद्विजआसीद्विलज्जितः ७९॥

(अर्थ) कोई मूर्खजन निज पुत्रको साथले परदेश को चला मार्गके किसी वनमें उसका पुत्र अलग रहगया, तो उसे रीछोंने

करने के पीछे उस पथिकने उस स्त्री से पूंछा कि तुम दोनों कौन हो यह सुनकर उसने कहा कि यह नागहै और मैं इसकी स्त्री हूं तुम डरोमत मैं निन्नानवे पुरुषों के साथइसीप्रकारसे भोग करचुकी हूं आज तुम्हारे साथ भोग करनेसेसैकड़ा पूराहुआ उन दोनों के इस वार्त्तालापको सुनकर उस सर्पने जगकर उन दोनोंको अपने मुखके फूत्कारसे भस्मकरदिया इस प्रकार से उन दोनों को जला कर उस सर्पके चले जानेपर वह तीनों मित्र आपस में कहनेलगे कि जब शरीरके भीतर भी रक्खीहुई स्त्रियां कुकर्मिणी होजाती हैं तो घरमें जो स्त्रियां रहती हैं उनकी क्या गणनाहै इन चपल स्त्रियों को सर्वथा धिक्कार है इसप्रकार अनेक वार्त्तालापकरके वह तीनों रात्रिको वहां व्यतीतकरके प्रातःकाल तपोवनमें जाके योगाभ्यास के द्वारा चित्तको स्थिरकरके सम्पूर्ण प्राणियों पर समदृष्टि होके समाधि में निरुपम आनन्दका अनुभवकरके तमोगुण से रहितहोके मोक्षपदवी को प्राप्तहुए और उनकी स्त्रियां अपने पापों के प्रभाव से अत्यन्त क्लेशयुक्त होकर नष्ट होगईं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्याशुक्रदेवीसहायसंगृहीतायांचतुर्थभाग उत्तरार्द्धेषट्कर्णरहस्यान्तवर्णनोनामाशीतितमः प्रदीपः ८० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकाशीतितमःप्रदीपः ॥

मुनि और चार जीवोंका दृष्टान्त ॥

उपकारकृतःप्राणीप्रत्युपकारं महत्पुनःकुर्य्यात् ।
यथोपकृतचत्वारःप्रत्युपचक्रुर्मुनिंसम्यक् ८१ ॥

(अर्थ)-उपकार किया कोई प्राणी समयपर महान्प्रत्युपकार करता है जैसे उपकार किये चार जीवों ने मुनिका सम्यक् प्रकार से उपकार किया ॥

उनका स्वामी आगया उलटीली वह उदासहो घर चला आया ऐसे मूर्ख पाये धनको भी खो बैठतेहैं किसी द्वितीयाके चन्दमाको देखनेवाले मूर्ख से कहा कि तुम्हारी अंगुली के आगे चन्द्रमाहै तो वह आकाश मे न देखकर अंगुलीही के आगे देखनेलगा इसकी मूर्खतापर लोग बहुत हँसे इति ॥ और बुद्धिसे करनेपर असाध्य कार्य भी सिद्ध होजाते हैं जैसे कोई स्त्री अकेली किसी गांवको चली राहमे उसको किसी बन्दरने आय घेरा तो वह उससे बचने के लिये एक वृक्षके इधर उधर घूमनेलगी यह देख उस मूर्ख वन्दरने उस वृक्षको अपनी भुजाओंसे पकड़लिया उसकी इस मूर्खता को देखकर उस स्त्री ने उसके दोनो हाथ पकड़ लिये इससे वह वन्दर पराधीन होकर अत्यन्त क्रोधितहुआ इतने में उसी मार्ग से आते हुए किसी अहीर से उस स्त्री ने कहा कि हे महाभाग! अगर तुम इस वन्दर के आकर हाथ पकड़लो तो मैं अपने वस्त्र सुधारलूं यह सुनकर उस अहीरने कहा कि तुम मेरे साथ रमण करने को कहो तो मैं इस वन्दरके हाथ पकड़लूं उसने कहा बहुत अच्छा तुम इस वन्दरके हाथ पकड़ो मै तुम्हारे साथ रमणकरूंगी यहकहकर उसने उस वन्दर के हाथ पकड़ाकर चक्कू निकालकर उस वन्दरको मार डाला और उस अहीर से कहा चलो एकान्त में चलें यह कहकर वह बहुतदूर अपने साथ लेगई और जिस गांवको वह जाना चाहतीथी उसी गांवके रहनेवाले कुछ पुरुषों से मिलकर अपने गांव मे चलीगई इसप्रकार से उस स्त्री ने बुद्धिके द्वारा अपने धर्म्म की रक्षाकरी इससे इस संसार में बुद्धिही मुख्य है चाहे धनका दरिद्री जीजाय परन्तु बुद्धिका दरिद्री नहीं जीसक्ता ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपेचतुर्थभागेएकोनाशीतितमःप्रदीपः ७६ ॥

किसी बनमें बुद्धि के समान परमदयालु महासत्त्ववान् एक तपस्वी कुटी बनाकर रहताथा वह वहां विपत्ति में पड़ेहुए प्राणियों को अन्नों से तृप्त किया करताथा एक दिन परोपकार के निमित्त भ्रमण करतेहुये उस तपस्वीने एक बड़ाकूपदेखा और उसमें झांका उसे झांकते देखकर उसमें से एक स्त्रीने कहा कि हे महात्मन्! मैं दीन स्त्री एक सिंह एक स्वर्णचूड़पक्षी और एक सर्प्प हम चारों जीव रात्रि के समय इस कूप में गिर पड़े हैं इस महाक्लेश से आप हमारा उद्धार कीजिये यह सुनकर तपस्वीने कहा कि रात्रि के समय अन्धकार मे स्त्रीका सिंहका तथा सर्प्प का गिरना तो कूपमें सम्भवहै परन्तु यह पक्षी कैसे गिरा यह सुनकर उस स्त्रीने कहा कि यह बहेलिये के जालमें फँसकर गिराहै यह सुनकर उस तपस्वीने अपने तपके बलसे उन सबको कूपसे निकालना चाहा परन्तु वह नहीं निकले और तपस्वीके तपकी शक्तिहीन होगई तपकी हीनता को देखकर तपस्वीने अपने चित्तमें जान लिया कि यह स्त्री पापिन है क्योंकि इसके साथ सम्भाषण करतेही मेरी सिद्धि नष्ट होगई यहशोचकर उसने रस्सीडालकर उन सबको कूपसे निकाला और उस सिंहको सर्प्पको तथा पक्षीको मनुष्यभाषा में स्तुति करते देखके उनसे पूँछा कि तुम सब लोगों का क्या वृत्तान्त है सत्य २ हमसे कहो यहसुनकर सिंह बोला कि हम सबको अपने पूर्व्वजन्म का स्मरण है और परस्पर हम बाधा करनेवाले हैं अब क्रमसे हम सबका वृत्तान्त सुनिये यह कहकर वह सिंह अपना वृत्तान्त कहने लगा कि हिमाचल पर वैडूर्य्यशृंगनाम बड़ा सुन्दर पुरहै उस पुरमें विद्याधरों का पद्मवेग नाम राजा है उस पद्मवेगके वज्रवेगनाम पुत्र था वह वज्रवेग अत्यन्त अभिमानी होकर शूरता के मदसे सबके

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअशीतितमःप्रदीपः ८० ॥
घटकर्पर चोरो का दृष्टांत ॥

चौरमायामहामायामायिनामपिमोहनी ।
राजपुत्रीरम्यमाणौयथास्तांघटकर्परौ ८० ॥

(अर्थ)—चोरोंकी चालाकी बड़ीभारीहै जोमायावालीकी भी मोहनेवाली जैसे राजपुत्री के साथ रमणकरते घटकर्पर चोर होतेभये ॥

हे स्वामी ! एक विचित्र कथा मैं आपको सुनाताहूं किसी नगर मे घट और कर्परनाम दोचोर रहतेथे एकसमय रात्रिमे कर्पर घटको बाहर बैठालके राजकन्या के महल मे सेंध लगाकर गया वहां उसी समय जगीहुई राजकन्याने उसे कोने में खड़ाहुआ देखकर काम से व्याकुलहोके उसीकेसाथ रमणकिया और धनदेकर उससेकहा कि जो तुम फिर मेरे यहां आओगे तो मैंबहुतसा धन तुमकोदूंगी तब कर्पर बाहर निकल घटको सब धनदेके उससे सब वृत्तान्त कह फिर राजकन्या के पास गया ठीकहै (आकृष्टःकामलोभाभ्यांमः पांयंकोहिपश्यति) अर्थ काम तथा लोभके वशीभूतहुआ कौन जन परिणाम को देखताहै सोही वह वहां राजपुत्री के पासजाय के कर्पर राजपुत्री के साथ फिर रमणकरके थककर उसी के पास सोरहा सोते २ ही रात्रिभर सब बीतगई प्रातःकाल पुरके रक्षक राजपुत्री के मंदिरमें सेंध देखके भीतरजाय कर्परको बांधकर राजाके पास लेगये तो राजाने क्रोधकरके उसे फांसी की आज्ञादीनी जब उसे राजजन मारनेको लेचले तो मार्गमे मिले घटसे कर्परने एक इशाराकरके कहा कि राजपुत्रीको राजमहलसे लाकर अपने यहां रखलेना उसका आशय जानके कर्परनेभी उसे इशारेसे कहदिया

साथ विरोधक्रिया करताथा उसके पिताने उसे बहुतसा समझाया परन्तु उस मूर्खने उसका कहना न माना इसीसे उसने क्रोधसे उसे यह शापदिया कि तू मृत्युलोक में उत्पन्नहो शापसे वज्रवेगका सब अभिमान और विद्या नष्ट होगई तब उसने विनयपूर्व्वक अपने पितासे शापका अन्त पूँछा उसे नम्र देखकर पद्मवेगने ध्यानकरके उससे कहा कि तुम पृथ्वी मे किसी ब्राह्मणके यहां उत्पन्नहोके इसी प्रकारसे अभिमान करके पिताकेही शापसे सिंह होकर कूप में गिरोगे तब कोई परमकृपालु महासत्त्ववान् तुमको कुएँ में से निकालेगा उसका आपत्ति में प्रत्युपकार करके तुम इस शापसे छूटोगे इस शापान्त को सुनकर वज्रवेग मालवदेश में हरघोषनाम ब्राह्मण का देवघोष पुत्र हुआ और वहां भी शूरता के अभिमान से सबके साथ वैर करनेलगा। पिताने उसके अभिमानको देखकर उसे बहुत समझाया जब उसने न माना तब उसने क्रोधकरके उसे यह शाप दिया कि हे दुर्बुद्धे तू वनका सिंहहोजा हरघोषके इस शापसे देवघोष इस बनमें सिंह हुआ वह सिंह मैंही हूं गतरात्रि को भ्रमण करते २ मैं इस कूपमें गिरपड़ा और आपने कृपाकरके मुझे निकाला अब मैं जाताहूं जब आपपर कोई आपत्ति पड़े तो आप मेरास्मरण कीजियेगा तब आपका उपकारकरके मैं इस शाप से छूटूंगा यह कहकर उस सिंहके चले जानेपर उस तपस्वी के पूछनेसे वह सुवर्णचूड़ पक्षी अपना सब वृत्तान्त इसप्रकार कहनेलगा कि हिमाचल पर्वतपर विद्याधरों का वज्रदंष्ट्रनाम राजाहै उसके लगातार पांच कन्याहुईं इससे उसने तपके द्वारा श्रीशिवजी का आराधन करके रजतदंष्ट्रनाम अत्यन्त प्रिय पुत्रपाया और अत्यन्त स्नेह से उसे बाल्यावस्थाही में सब विद्या सिखलादी एकसमय रजतदंष्ट्र अपनी

कि अच्छा मैं लेजाऊंगा तदनन्तर वधिकों ने उसे लेजाय वृक्षमें फाँसी लटकाकर मारडाला और रात्रिके समय घटने राजपुत्री के महलतक सुरंग खोद राजपुत्री के महलमें जाके बंधनमें पड़ीहुई राजपुत्री से कहा कि तुम्हारे लिये जो आज कर्पर मारागयाहै उस का मित्र मैं घटहूं उसी के वचनों से मैं तुमको लेने के लिये यहां आयाहूं इससे तुम मेरेसाथ चलो यह सुन राजपुत्री प्रसन्नहो उस के साथ चलने को तैयारहुई तो घट उसके बंधन खोल सुरंग की राहसे उसे घरले आया प्रातःकाल राजाने निजपुत्री के कहीं जाने के वृत्तान्त को सुनकर शोचा कि उस पापी चोरका कोई साहसी मित्र और अवश्यहै वहही मेरी कन्या को हरलेगयाहै यह शोच राजाने कर्पर की रक्षाके लिये एक मनुष्य नियत करदिया और कहदिया कि कोई वहां इसका शोककरके दाहादि करनेको आवे उसे बांधकर हमारे पास ले आओ उसीसे उस कुलके दागलगाने वाली कुलटा कन्याका पता लगेगा राजाकी यह आज्ञा पाय सेवक लोग रात्रिदिन कर्पर के शरीरकी रक्षा करनेलगे घटने इस बात को जानकर राजपुत्री से कहा कि हे प्रिये! कर्पर मेरा बड़ा प्रिय मित्रथा उसी के उद्योगसे अनेकप्रकारके रत्नों समेत तुम मुझ को प्राप्तहुई हो उसके स्नेहसे विना अनृणहुए मेरे चित्तको शान्ति न होगी इससे मैं युक्तिपूर्व्वक उसके पासजाकर उसका शोक करूंगा और उसके शरीर को जला के उसकी हड्डियां किसी तीर्थ में डालूंगा और इस बातपर तुम किसीप्रकारका भय मत करनो क्योंकि मैं कर्पर के समान मूर्ख नहीं हूं यह कहकर घट तपस्वी कासा वेष बनाके कर्पर (खपरा) में दही भात लेकर पथिक के समान कर्पर के शरीर के पास जाकर अकस्मात् गिरकर हाथ से उस खर्पर

बड़ी वहिन सोमप्रभाको भगवती के आगे झांझ बजाते देखकर उससे हठकरके झांझ मांगनेलगा। और जब उसने नहींदी तब हठसे झांझ छीनकर पक्षी के समान आकाशमे वह उड़गया यह देखकर सोमप्रभाने क्रोधकरके उसे यह शापदिया कि तू पक्षी के समान मेरी झांझ लेकर उड़गया है इससे तू स्वर्णचूड़ पक्षी होगा इस शाप को सुनकर रजतदंष्ट्र ने अपनी वहिन के चरणों में पड़कर उसको बहुत मनाया तब उसने कहा कि हे मूढ! तू पक्षी होकर अन्धे कुएँ में गिरेगा और कोई कृपालु महापुरुष तुझको निकालेगा। उसका कुछ उपकार करके तू इस शापसे छूटेगा। उसके इसप्रकार कहतेही वह रजतदंष्ट्र स्वर्णचूड़ पक्षी होगया वह स्वर्णचूड़ मैंहीं हूं रात्रिके समय में इस कूपमे गिरपड़ाथा सो आपने इस समय निकालाहै अब मैं जाताहूं जब आपपर कोई आपत्तिआवे तब मेरा स्मरण करियेगा उससमय में आपका उपकार करके इस शापसे छूटूंगा यह कहकर उस पक्षीके भी चले जानेपर उसदयालु तपस्वीसे सर्प अपना वृत्तान्त कहनेलगा। कि कश्यपजीके आश्रम मे मैं मुनिकुमार था वहां एक मुनिकुमार के साथ मेरी परममित्रताथी एकदिन उस मित्र के स्नान करनेके लिये तडाग मे जाने पर मैंने किनारेपर एक तीनफणका सर्प देखा और अपने मित्र को डराने के लिये सर्प को किनारेपरही मंत्रके बलसे रोक रक्खा क्षणभरमेंही वह मुनिपुत्र स्नानकरके किनारेपर आया और एकाएकी उस सर्पको देखकर मूर्च्छित हो गया थोड़ेकाल मे जब उस की मूर्च्छा जागी तब उसने अपने ध्यानके द्वारा यह जानकर कि इसनेही सर्पको रोक रक्खाथा क्रोधकरके मुझे यह शापदिया कि तुम भी इसीप्रकारके तीन फणवाले सर्प होगे और विनय करने

को गिराकर हे अमृत से भरेहुए खर्पर तुम कहांगये इत्यादि वचन कहकर रोनेलगा रक्षकों ने उसका रुदन सुनकर यह जाना कि यह अपने खपरे के लिये रोरहाहै इससे कुछ उसके पकड़नेका विचार नहीं किया तदनन्तर वह क्षणभर शोककरके अपने घर चलाआया और राजपुत्री के साथ आनन्दपूर्वक रहा दूसरे दिन अपने एक सेवक को स्त्रीकासा वेष बनाके और एक सेवक के शिरपर धतूरे मिलेहुए मिष्टान्नसे भराहुआ पात्र रखाकर उन दोनों सेवकों को साथलेके सायंकाल के समय मतवाले ग्रामीणकासा वेष बनाके जहां कर्परका शरीर था वहीं जा निकला उसे देख रक्षकों ने पूंछा भाई तुम कौनहो और यह स्त्री तुम्हारी कौनहै और कहां जाते हो यह सुन उसने कहा कि मैं ग्रामीण पुरुषहूं यह मेरी स्त्री है इसे लेकर मैं अपने श्वशुरके यहां जारहा हूं यह भोजन मेरे साथहै जो आप चाहैं तो आधा आप लोग भी खायँ आधा मैं वहां लेजाऊंगा यह कहके उसने वह मिष्टान्न निकालके उन सब रक्षकोंको दिया और उसके खातेही वे सब विन चेतहुए इससे रात्रि के समय कर्पर के शरीर को जलाकर घट अपने घर को चलागया प्रातःकाल राजा यह हाल सुन उन मूर्ख सेवकों को निकाल अन्य सेवको को उन के स्थानमे रखके कहा कि जो कोई इन हड्डियोंको लेने आवे उसे पकड़कर हमारे पास ले आना और कोई कुछ तुम्हें खानेको दे उसे कभी न खाना राजा की यह आज्ञा सुन सेवक लोग रात्रिदिन बड़ी सावधानी से हड्डियों की रक्षा करनेलगे इस वृत्तान्तको सुन के घट भगवती के मोहन मंत्र जाननेवाले अपने मित्र संन्यासी को साथ लेकर कर्पर के शरीर के पास गया और वहां उसके मंत्र के प्रभावसे रक्षकों को मोहित कराके सब हड्डी वहां से ले गङ्गाजी

से यह शापका अन्त बताया कि जब तुम कुएंमें गिरोगे और कोई कृपालु महात्मा तुमको निकालेगा तब उसका प्रत्युपकार करके इस शाप से तुम छूटोगे इस प्रकार से हे दयालो! मैं सर्प हुआ हूं आज भाग्यवशसे मुझ कुएं में गिरेहुए को आपने निकाला है अब मैं जाताहूं जब आप मेरा स्मरण करोगे तब मैं आपका उपकारकरके इस शापसे छूटूंगा यह कहकर सर्प के भी चले जाने पर उस स्त्रीने अपना वृत्तान्त कहा कि मैं राजाके सेवक अत्यन्त शूर बड़े सुन्दर एक तरुण क्षत्रिय की स्त्री हूं पति के इस प्रकार बलवान् होने पर भी मैंने परपुरुष से संग किया मेरे इस कुकर्म्म को जानकर मेरे पतिने मुझे मारडालने की इच्छाकी सखी के द्वारा इस बात को जानकर रात्रि के समय बनमें भागगई और इस कुएँ मे गिरपड़ी इस समय आपने मुझे कुएँसे निकालाहै अबमैं जाकर आपकी कृपासे कहीं इस शरीर का पालन करूंगी ऐसाभी कोई दिन होगा जब मैं आपका प्रत्युपकार करूंगी यह कहकर वह कुलटा राजा गोत्रवर्द्धन के नगर में जाकर राजाके सेवकोंसे परिचय करके रानीकी दासी होगई और उस कुलटा के साथ भाषण करने से उस तपस्वी की सब सिद्धि नष्टहोगई इससे उस बनमें फल पुष्पादि कोई वस्तु भी नहीं उत्पन्नहुई तब क्षुधा तथा तृषा से व्याकुल होकर तपस्वीने उस सिंहका स्मरण किया स्मरण करतेही सिंहने आकर मृग मार २ कर उनका मांस उस तपस्वी को खिलाया और कुछदिन इसप्रकार सेवनकरके उससे कहा कि अब मेरा शाप क्षीण होगयाहै इससे मैं अपने लोकको जाताहूं यह कहकर सिंहरूपको त्यागके विद्याधर होकर मुनिसे आज्ञालेके वह अपने लोकको चलागया उसके चले जानेपर तपस्वीने जीवके

लिये उस स्वर्णचूड़ पक्षीको स्मरणकिया स्मरण करतेही वह रत्न-जटित आभूषणों से भरीहुई एक पिटारी लेकर उनके पास आया और बोला कि इस धनसे आपकी सदैव की जीविका होजायगी और मेरे शापका अन्तभी अब होगया इससे मैं अपने लोक को जाताहूं यह कहके वह विद्याधर कुमारहोकर अपने लोकको चला-गया उसके चलेजाने पर वह तपस्वी उन रत्नोंको लेकर बेचनेके लिये उसीनगर में आया जहां वह स्त्री राजाकी रानीकी दासी होगई थी वहां किसी वृद्धा ब्राह्मणी के यहां सम्पूर्ण आभूषणों को रखकर जैसेही वह बाजार को गया वैसेही वह स्त्री उसको मिली परस्पर वार्त्तालाप होनेपर स्त्रीने कहा कि मैं राजाकी रानी की नौकरहूं और तपस्वीने भी अपना सब वृत्तान्त कहकर उसे वृद्धाके स्थानपर लेजाकर वह सब आभूषण दिखादिये उन आभू-षणों को देखकर उस कुलटाने रानी से जाकर कहा कि तुम्हारे जो आभूषण खोगये थे उन्हे एक भिक्षुक लायाहै रानी ने राजा से कहा राजाने सुनकर सेवकों को भेजकर आभूषणों समेत तप-स्वीको बँधवा मँगवाया और उससे सब वृत्तान्त पूछकर सत्य २ जानकर भी सब आभूषणलेके उसे कैदखाने में डलवादिया बन्धन मे पड़कर तपस्वीने उस सर्प का स्मरण किया स्मरण करतेही सर्प ने आकर उससे सब वृत्तान्त पूछ के कहा कि मैं जाकर अपने शरीर से इस राजाको शिरसे पैरतक लपेटताहूं जबतक तुम वहां आकर छोड़ने को न कहोगे तबतक मैं उसे नहीं छोडूंगा और तुम भी लोगों से कहना कि हम राजाको सर्प से छुड़ावेंगे इस से जब तुम राजाके पास आकर कहोगे कि राजा को छोड़दे तब मै राजा को छोड़दूंगा और इस के बदले राजा तुम को अपना

वह उन सवको युक्ति बताकर तालावपर लेगया वहां जव वह वैल आया तव उसने उसकी पूँछ पकड़ली उसके पैर दूसरे मूर्खने पकड़ लिये उसके दूसरे ने इसीक्रम से सवने एक २ के पैर पकड़ लिये इसप्रकार से एक २ का पैर पकड़कर उन मूर्खोंने जंजीरसी वनाली इतने में वह वैल उन सवसमेत वडे वेगसे उड़कर आकाशमें चला मार्ग मे वहुतदूर ऊपर जाके एक मूर्ख ने अपने प्रधान मूर्ख से कहा कि तुमने वहां कितने २ वड़े मोदक खायेथे यह सुनकर उस प्रधान मूर्ख ने वैलकी पूँछ छोड़कर हाथों से लड्डुओं का प्रमाण वताना चाहा इससे वह सव मूर्खों समेत पृथ्वी में गिरकर नष्ट होगया और वैल आकाशको चलागया उनमूर्खोंकी यहदशा देखकर सवलोग हँसे इसप्रकारसे मूर्ख लोगोंके प्रश्नोत्तरों मे भी दोषही उत्पन्न होता है आकाशगामी मूर्खोंकी कथा आपने सुनी—अव अन्य मूर्ख की कथा सुनिये कोई मूर्ख किसी स्थानको जातेसमय मार्ग भूलगया पूछनेपर लोगों न उसे यह पतावताया कि नदी के किनारे पर जो वृक्ष दिखाई देताहै इसके ऊपरके मार्ग से चलेजाओ यह सुनकर वह मूर्ख उस वृक्षपर चढगया और उसके ऊपरकी ऐसी पतली शाखापर पहुँचा कि वह शाखा भारसे एकाएकी झुकगई और वह उसी शाखा को पकडकर नदी की ओर लटकगया इतने मे कोई महावत हाथीको जलपिलानेके लिये उसीमार्गसे नदीपर आया महावत से उस मूर्ख ने कहा कि हे महाशय ! तुम कृपाकरके मुझे यहांसे उतारलो यह सुनकर उस महावत ने उसे उतारने के लिये उसके पैर पकड़ लिये इससे वह हाथी निकल गया और महावत उसके पैर पकड़े लटका रहगया तव उस मूर्ख ने महावतसे कहा कि जो तुमको गाना आताहो तो शीघ्रता से गाओ गान सुनकर

से यह शापका अन्त बताया कि जब तुम कुएंमें गिरोगे और कोई कृपालु महात्मा तुमको निकालेगा तब उसका प्रत्युपकार करके इस शाप से तुम छूटोगे इस प्रकार से हे दयालो! मैं सर्प हुआ हूं आज भाग्यवशसे मुझ कुएं मे गिरेहुए को आपने निकाला है अब मैं जाताहूं जब आप मेरा स्मरण करोगे तब मैं आपका उपकारकरके इस शापसे छूटूंगा यह कहकर सर्प के भी चले जाने पर उस स्त्रीने अपना वृत्तान्त कहा कि मैं राजाके सेवक अत्यन्त शूर बड़े सुन्दर एक तरुण क्षत्रिय की स्त्री हूं पति के इस प्रकार बलवान् होने पर भी मैंने परपुरुष से संग किया मेरे इस कुकर्म को जानकर मेरे पतिने मुझे मारडालने की इच्छाकी सखी के द्वारा इस बात को जानकर रात्रि के समय वनमे भागगई और इस कुएँ में गिरपड़ी इस समय आपने मुझे कुएँसे निकालाहै अबमैं जाकर आपकी कृपासे कहीं इस शरीर का पालन करूंगी ऐसाभी कोई दिन होगा जब मैं आपका प्रत्युपकार करूंगी यह कहकर वह कुलटा राजा गोत्रवर्द्धन के नगर में जाकर राजाके सेवकोंसे परिचय करके रानीकी दासी होगई और उस कुलटा के साथ भाषण करने से उस तपस्वी की सब सिद्धि नष्टहोगई इससे उस बनमें फल पुष्पादि कोई वस्तु भी नहीं उत्पन्नहुई तब क्षुधा तथा तृषा से व्याकुल होकर तपस्वीने उस सिंहका स्मरण किया स्मरण करतेही सिंहने आकर मृग मार २ कर उनका मांस उस तपस्वी को खिलाया और कुछदिन इसप्रकार सेवनकरके उससे कहा कि अब मेरा शाप क्षीण होगयाहै इससे मैं अपने लोकको जाताहूं यह कहकर सिंहरूपको त्यागके विद्याधर होकर मुनिसे आज्ञालेके वह अपने लोकको चलागया उसके चले जानेपर तपस्वीने जीवके

जो कोई यहां आवेगा वही हम दोनो को उतारेगा उसके कहनेसे महावतने ऐसा मधुर गान किया कि जिससे उस मूर्खने आनन्दसे मोहित होकर डालीको छोड़कर हाथसे ताल देना चाहा इससे वह महावतसमेत नदी में डूबकर मरगया मूर्ख की संगति से उस विचारे महावतके भी प्राण गये ऐसेही मूर्खकी संगतिसे किसीका कल्याण नही होता ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्व्यशीतितमः प्रदीपः ८२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे त्र्यशीतितमः प्रदीपः ८३ ॥

अनेक व्यभिचारिणियोंकी चालाकीके दृष्टान्त ॥

स्त्रीणामलौकिकंकर्म दुर्विज्ञेयंबुधैरपि ॥
रम्यमाणाअपिप्रेम्णास्वैरिएयःप्रेमदायकाः ८३॥

(अर्थ) व्यभिचारिणी स्त्रियोकी अलौकिक कर्तव्य को विद्वान् भी नहीं जानसक्ते जैसे स्वैरिणी स्त्रिये प्रेमसे रमणभी करती फिर छलसे प्रेमदायकही होती भई ८३ ॥

धारेश्वरनाम शिवजी के सिद्धिक्षेत्र में एक महामुनि अपने बहुतसे शिष्योंसमेत रहतेथे एक समय उस मुनिने अपने शिष्यों से कहा कि तुम लोगो मेंसे जिस किसी ने कोई अपूर्व बात देखी हो अथवा सुनी हो सो कहै यह सुनकर एक शिष्यने कहा कि मैने एक अपूर्व बात सुनी है उसको आपके आगे कहताहूं कि कश्मीर देशमे श्रीशिवजी के विजयनाम महाक्षेत्र मे एक बड़ा विद्याभि-

लिये उस स्वर्णचूड पक्षीको स्मरणकिया स्मरण करतेही वह रत्न-जटित आभूषणों से भरीहुई एक पिटारी लेकर उनके पास आया और बोला कि इस धनसे आपकी सदैव को जीविका होजायगी और मेरे शापका अन्तभी अब होगया इससे मैं अपने लोक को जाताहूं यह कहके वह विद्याधर कुमारहोकर अपने लोकको चला-गया उसके चलेजाने पर वह तपस्वी उन रत्नोंको लेकर वेचनेके लिये उसीनगर में आया जहां वह स्त्री राजाकी रानीकी दासी होगई थी वहां किसी वृद्धा ब्राह्मणी के यहां सम्पूर्ण आभूषणों को रखकर जैसेही वह बाजार को गया वैसेही वह स्त्री उसको मिली परस्पर वार्त्तालाप होनेपर स्त्रीने कहा कि मैं राजाकी रानी की नौकरहूं और तपस्वीने भी अपना सब वृत्तान्त कहकर उसे वृद्धाके स्थानपर लेजाकर वह सब आभूषण दिखादिये उन आभू-षणों को देखकर उस कुलटाने रानी से जाकर कहा कि तुम्हारे जो आभूषण खोगये थे उन्हें एक भिक्षुक लायाहै रानी ने राजा से कहा राजाने सुनकर सेवकों को भेजकर आभूषणों समेत तप-स्वीको बँधवा मँगवाया और उससे सब वृत्तान्त पूछकर सत्य २ जानकर भी सब आभूषणलेके उसे बंदखाने में डलवादिया बन्धन मे पड़कर तपस्वीने उस सर्प का स्मरण किया स्मरण करतेही सर्प ने आकर उससे सब वृत्तान्त पूछ के कहा कि मैं जाकर अपने शरीर से इस राजाको शिरसे पैरतक लपेटताहूं जबतक तुम वहां आकर छोडने को न कहोगे तबतक मैं उसे नहीं छोड़ूंगा और तुम भी लोगों से कहना कि हम राजाको सर्प से छुटवादेंगे इस से जब तुम राजाके पास आकर कहोगे कि राजा को छोड़दे तब मैं राजा को छोड़दूंगा और इस के बदले राजा तुम को अपना

मानी संन्यासी रहताथा वह यह संकल्प करके कि मेरी कहीं परा-
जय न हो श्रीशिवजीको प्रणाम करके विवाद करनेके लिये पा-
टलिपुत्र नगरको चला मार्ग में बहुतसी नदी पर्वत तथा वनोंको
उल्लंघन करके वह एक वनमें थककर किसी वृक्षके नीचे विश्रामक-
रनेलगा उसी समय एक धार्म्मिक पथिक एक दण्ड तथा कूंड़ी
हाथमें लियेहुए उसी वृक्षके नीचे आकरबैठा उससे उस संन्यासी
ने पूछा कि तुम कहां से आते हो और कहां को जाओगे यह
सुनकर उस धार्मिक ने कहा कि हे मित्र ! मैं पाटलिपुत्र नगर से
आयाहूं और कश्मीर देशके सम्पूर्ण पण्डितों को वादमें जीतने
के लिये वहां जाताहूं उसके यह वचन सुनकर उस संन्यासी ने
यह शोचकर कि जो मैंने इसको यहां न जीता तो वहां जाकर
वहांके बहुतसे विद्वानों को कैसे जीतूंगा उससे कहा कि हे धा-
र्मिक ! तुम्हारा कार्य बड़ा विपरीतहै कहां तो मोक्षकी इच्छा करने
वाले तुम धार्म्मिक और कहां वाद विवाद करना जो तुम वादके
अभिमानरूपी बन्धन के द्वारा संसार से मुक्त होना चाहतेहो तो
अग्निसे ऊष्माको और हिमसे शीतको दूर करना चाहतेहो पत्थर
की नौकापर चढकर समुद्रके पार जाना चाहते हो और प्रज्वलित
अग्निको वायुसे निवारण करना चाहते हो ब्राह्मणोंका क्षमा क्ष-
त्रियोंका आपत्ति से रक्षा करना मुक्ति चाहनेवालों का शम और
राक्षसोंका कलह करना शीलहै इससे मुक्ति चाहनेवाले को सदैव
शान्त तथा जितेन्द्रिय रहना चाहिये और सुख दुःखको त्यागकर
संसारके क्लेशों से डरना चाहिये इससे तुम शान्तिरूपी कुठार के
द्वारा संसाररूपी वृक्षको काटो वादके अभिमानरूपी जल में उस
की जड़को न सींचो उसके यह वचन सुनकर वह धार्मिक उसे

आधा राज्यदेगा यह कहकर उस सर्प ने जाके अपने शरीर से राजाका सब शरीर लपेटलिया और अपने तीनों फण राजा के शिरपर रखदिये राजाकी यह दशा देखकर बड़ा हाहाकार मचगया कि सर्प राजाको काटना चाहता है इस हाहाकार को सुनके तपस्वी ने कैदखाने के अधिकारी से कहा कि मैं राजाको सर्प से बचा सक्ता हूं सेवकों के द्वारा राजाने इसवात को सुनकर तपस्वी को अपने पास बुलाकर कहा कि जो तुम मुझे इस सर्प से छुटादोगे तो मैं तुमको अपना आधाराज्य देदूंगा इसमें मेरे मन्त्री जामिन हैं राजा के यह वचन सुनकर तपस्वी ने सर्प से कहा कि तू राजा को शीघ्रही छोड़दे उसके कहतेही सर्पने राजा को छोड़ दिया और राजाने अपना आधा राज्य तपस्वी के नाम लिखदिया और वह सर्प मुनिकुमार होकर सभामें अपना सब वृत्तान्त कहकर महर्षि कश्यपजीके आश्रम को चलागया इसप्रकार से पुण्यात्मा लोगों को बीचमे चाहे क्लेश भी होय परन्तु अन्त में शुभहोता है और इसीप्रकारसे प्राणदान का उपकार भी दुष्ट स्त्रियों के चित्तमें नहीं रहताहै अन्य उपकारों की तो क्या गणनाहै ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांचतुर्थभागेएकाशीतितम प्रदीपः ८१ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे द्व्यशीतितम प्रदीपः ८२ ॥

जैनि मूर्खादिकों के दृष्टान्त ॥

जैनिमूर्खश्चान्यमूर्खः क्षीरमूर्खकएवच ।
उपाध्यायोपिमूर्खश्च तथामूर्खप्रधानकः ॥
आकाशगामीमूर्खश्च मार्गमूर्खस्तथैवच ।
इत्यादिकथितामूर्खाः शुक्रेनाऽन्तप्रदीपके८२॥

प्रणाम कर आप मेरे गुरुहैं ऐसा कहके प्रसन्नतापूर्वक अपने पाटलिपुत्र नगरको लौटगया और वह संन्यासी उसी वृक्षके नीचे हँसता हुआ बैठा रहा इतने में अपनी स्त्री के साथ वार्त्तालाप करतेहुए किसीयक्षका शब्द उसे सुनाईदिया उसयक्षने हास्य करके एक पुष्पों की माला अपनी स्त्री के मारी उसके लगतेही उसने अपने को मृतकके समान बना लिया: यह देखकर यक्षके सब सेवक रोनेलगे क्षणभरमें वह फिर जीनेसीलगी और नेत्र खोलकर यक्षकी ओर देखनेलगी तो उस यक्षने उससे पूछा कि इतने समय में तुझे क्या दिखाई दिया उसने मिथ्या बनाकरके मिथ्या उससे कहा कि आपकी मालाके लगतेही पाशको हाथमें लियेहुए ज्वाज्वल्यनेत्रवाला बड़े २ लम्बे बालवाला एक महाभयंकर श्यामवर्ण पुरुष मुझे दिखाई दिया वह मुझे यमराजके मन्दिर में लेगया तब वहांके अधिकारियों ने उसे धमकाकर मुझे छुड़वादिया उसके यहवचनसुनके वह यक्ष हँसकर बोला कि इन्द्रजालसे रहित स्त्रियों की कोई भी बात नहीं होती एक तो पुष्पों के लगने से मरनाही असम्भवहै दूसरे यमराजके लोक से लौटना और भी असम्भव है हे मूर्खे! तूने तो इससमय पाटलिपुत्र नगरकी स्त्रियोंका अनुकरण किया है उस नगर मे जो सिंहाक्ष नाम राजा है उसकी रानी एक समय मन्त्री सेनाधिपति पुरोहित तथा वैद्य इन सबकी स्त्रियोंको साथमें लेकर शुक्लपक्षकी त्रयोदशी के दिन उसीनगर के निकट विशाल मन्दिर में वर्त्तमान सरस्वतीके दर्शनको गई वहां मार्ग में बहुतसे कुबड़े अन्धे तथा पंगुओंने उन सबस्त्रियोंसे यह प्रार्थना की कि हम दीन रोगियों को ओषधि दिलवाओ जिससे हम इस रोग से छूटें—' समुद्रकी लहरोंके समान चंचल बिजलीकी चमक

(अर्थ)–जैनिमूर्ख अन्य क्षीरमूर्ख उपाध्यायमूर्ख प्रधानमूर्ख आकाशगामीमूर्ख तथा मार्गमूर्ख इत्यादि मूर्ख इस प्रदीप में शुक्र ने संग्रह करके कहाहै ८२॥

किसी मूर्ख जैनी भिक्षुकको मार्ग में कुत्ते ने काटखाया इससे उसने शोचा कि मैं अपने स्थानमें जाकर सब लोगों से कहांतक बताऊंगा कि कुत्ते ने मुझे काटा है और सब लोग मुझसे पूछेंगे कि तुम्हारी जघामे क्याहुआ मुझे इस बात के बताने मे बहुतसा समय व्यतीत करना पड़ेगा इससे सबको यह बात एकहीवार में जतानेका उपाय करना चाहिये यह शोचकर उसने अपने स्थान में जाके मठी के ऊपर चढके एक तुरई बजाई उस शब्दको सुनकर सब भिक्षुक लोगो ने इकट्ठा होकर उससे पूछा कि असमय में आप क्यों तुरई बजारहे हो यह सुनकर उसने सबसे कहा कि कुत्ते ने मेरे पैरमे काटखायाहै मै सबसे जुदा २ कहांतक कहता इसहेतु से तुरई से मैंने सबको इकट्ठा कियाहै जिससे एकहीवार सबसे कहना पड़ा अब तुम सबलोग जानलो कि इसे कुत्ते ने काटाहै यह कहकर उसने वह अपना पैर सबको दिखादिया उसकी इस मूर्खता को देखकर सब भिक्षुक हँसनेलगे॥

अब एक अन्य मूर्खकी कथा सुनिये बाह्लीकदेशका रहनेवाला एक महाधनवान् अत्यन्त लोभी मूर्ख था वह सदैव अपनी स्त्रीसमेत लवणरहित सत्तूखाताथा दूसरे अन्नका उसको स्वाद भी नही मालूम था एकदिन उसने भाग्यवशहोके अपनी स्त्री से कहा कि आज तुम मेरे लिये तस्मई बनाओ उसकी आज्ञापाके उसकी स्त्री खीर बनानेलगी और वह कृपण कोठरी के भीतर जाके लेट रहा इसलिये कि कहीं कोई मित्र न आजाय कि उसको भी खीर

के समान भंग होनेवाला और यात्रादिक उत्सवों के समान क्षण भर सुन्दर यह संसार है इससे इस असार संसार में दीनोंपर दया करना और दरिद्रियों को दानदेनाही सारहै गुण मात्रकी जीविका तो सब कहीं होती हैं धनवान्‌को दानसे क्या तृप्तको भोजन से क्या शीतयुक्तको चन्दनसे क्या और हेमन्तऋतुमे मेघोंसे क्या" इससे हम दीनलोगोंपर दयाकरो उनके यह वचनसुनकर उन स्त्रियों ने परस्पर में कहा कि यह बहुत उचित कहते हैं इससे इनकी औषधि अवश्य करानी चाहिये यह कहकर वह सब स्त्रियां सरस्वती जीका पूजन करके उन रोगियों मे से एक २ को अपने २ घरले गई और अपने २ पतियो से कहकर उनकी औषधि करानेलगी और रात्रि दिन उन्हींकी चिन्ता मे रहनेलगीं और बहुतकालतक एक साथ रहने से उन रोगियो पर अनुरक्तहुई उन स्त्रियों को ऐसा कामका वेगहुआ कि वह तन्मय होगई और उन्हे यह भी विचार न रहा कि कहां तो यह दीन रोगी और कहां यह ऐश्वर्यवान् हमारे पति तब उन रोगियों के साथ रमणकरनेसे जो उन स्त्रियो के नखक्षत तथा दन्तक्षत होगये वह उनके राजा मन्त्री सेनापति पुरोहित तथा वैद्य पतियों ने देखे और सन्देहयुक्त होकर उन सबने परस्परमे यह बात कही तब राजाने उन सबसे कहा तुमलोग अभी ठहर जाओ पहले मैं अपनी रानी से युक्तिपूर्वक पूछलूं यह कहके राजाने अपने मन्दिर में जाकर रानी से स्नेह तथा भय दिखाकर पूछा कि तुम्हारा ओठ किसने काटा और तुम्हारे स्तनों मे किसने नखक्षत लगाये हैं सत्य २ कहो नहीं तो तुम्हारा कल्याण न होगा यह सुनकर रानी ने बात बनाकर कहा कि यद्यपि कहने के योग्य बात नहीं है तथापि आपसे कहतीहूं रात्रि के समय एक शङ्ख चक्रधारी

आधा राज्यदेगा यह कहकर उस सर्प ने जाके अपने शरीर से राजाका सब शरीर लपेटलिया और अपने तीनों फण राजा के शिरपर रखदिये राजाकी यह दशा देखकर बड़ा हाहाकार मचगया कि सर्प राजाको काटना चाहता है इस हाहाकार को सुनके तपस्वी ने कैदखाने के अधिकारी से कहा कि मैं राजाको सर्प से बचा सक्ताहूं सेवकों के द्वारा राजाने इसवात को सुनकर तपस्वी को अपने पास बुलाकर कहा कि जो तुम मुझे इस सर्प से छुटादोगे तो मैं तुमको अपना आधाराज्य देदूंगा इसमें मेरे मन्त्री जामिन हैं राजा के यह वचन सुनकर तपस्वीने सर्प से कहा कि तू राजा को शीघ्रही छोड़दे उसके कहतेही सर्पने राजा को छोड़ दिया और राजाने अपना आधा राज्य तपस्वी के नाम लिखदिया और वह सर्प मुनिकुमार होकर सभामें अपना सव वृत्तान्त कहकर महर्षि कश्यपजीके आश्रम को चलागया इसप्रकार से पुण्यात्मा लोगों को बीचमें चाहे क्लेश भी होय परन्तु अन्त में शुभहोता है और इसीप्रकारसे प्राणदान का उपकार भी दुष्ट स्त्रियों के चित्तमें नहीं रहताहै अन्य उपकारों की तो क्या गणनाहै ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांचतुर्थभागेएकाशीतितमःप्रदीपः ८१ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे द्व्यशीतितमःप्रदीपः ८२ ॥

जैनि मूर्खादिकों के दृष्टान्त ॥

जैनिमूर्खअन्यमूर्ख क्षीरमूर्खकएवच ।
उपाध्यायोपिमूर्खश्च तथामूर्खप्रधानकः ॥
आकाशगामीमूर्खश्च मार्गमूर्खस्तथैवच ।
इत्यादिकथितामूर्खाःशक्तेनाऽन्तप्रदीपके८२॥

पुरुष दीवारमें से निकल कर मेरे साथ भोग किया करताहै और भोगकरके इसी दीवारमें गुप्त होजाताहै मेरे जिन अङ्गोंको चंद्रमा और सूर्य्यने भी नहीं देखाहै उनकी यह नित्य दुर्दशा करताहै आप के जीतेही में मेरी यह दुर्दशा होती है रानीके वचन का राजा ने वैष्णवी माया जानकर उसपर विश्वास करलिया और अपने मंत्री आदिकोसे भी यह वृत्तान्त कहदिया राजाके यह वचन सुनकर वह मूर्खभी अपनी २ स्त्रियोंका विष्णुभगवान्से भोग करनाजान कर चुप होरहे इसप्रकार से पुंश्चली स्त्रियां असत्य बोलने में चतुर होती हैं और मूर्खों को ठगती हैं मैं वैसा मूर्ख नहीं हूं यह कहकर यक्षने अपनी स्त्री को लज्जित किया यक्षकी इससब वार्तालापको सुनकर वृक्षके नीचे बैठेहुए संन्यासी ने हाथजोड़कर यक्ष से कहा हे भगवन्! आपके आश्रम मे आया हुआ मैं शरणागत हूं इससे मैंने जो आपके वार्तालाप को सुनाहै उसे क्षमा कीजियेगा उसके यह सत्य वचन कर यक्षने उसके सत्य वचनों से प्रसन्न होकर कहा कि मैं सर्व्व स्थानगत नाम यक्ष हूं मुझसे जो चाहो सो तुम वर मांगो मैं तुम्हारे ऊपर अत्यन्तप्रसन्न हूं यह सुनके संन्यासी ने कहा कि आप अपनी इस स्त्रीपर क्रोध न कीजियेगा यही वरदान मैं मांगताहूं उसके यह गम्भीर बचन सुनके यक्षने कहा कि अब मैं तुम्हारे ऊपर और भी अधिकप्रसन्न हूं इससे यह वर तो मैंने तुमको दिया अब अन्य वर मांगो यह सुनकर संन्यासी ने कहा कि जो आप प्रसन्नहैं तो मैं अन्य वर यह मांगताहूं कि आज से तुम दोनों मुझे अपना पुत्र करके मानो यह सुनकर वह यक्षअपनी स्त्रीसमेत प्रकट होकर बोला कि हे पुत्र! तुम हमारे पुत्रही हो हमारी कृपासे तुम्हारे ऊपर कभी विपत्ति नहीं आवेगी और बि-

(अर्थ)–जैनिमूर्ख अन्य क्षीरमूर्ख उपाध्यायमूर्ख प्रधानमूर्ख आकाशगामीमूर्ख तथा मार्गमूर्ख इत्यादि मूर्ख इस प्रदीप में शुक्ल ने संग्रह करके कहाहै ८२॥

किसी मूर्ख जैनी भिक्षुकको मार्ग मे कुत्ते ने काटखाया इससे उसने शोचा कि मैं अपने स्थानमें जाकर सब लोगों से कहांतक बताऊंगा कि कुत्ते ने मुझे काटा है और सब लोग मुझसे पूछेगे कि तुम्हारी जंघामें क्याहुआ मुझे इस बात के बताने मे बहुतसा समय व्यतीत करना पड़ेगा इससे सबको यह बात एकहीवार में जतानेका उपाय करना चाहिये यह शोचकर उसने अपने स्थान में जाके मठी के ऊपर चढके एक तुरई बजाई उस शब्दको सुनकर सब भिक्षुक लोगों ने इकट्ठा होकर उससे पूछा कि असमय में आप क्यों तुरई बजारहे हो यह सुनकर उसने सबसे कहा कि कुत्ते ने मेरे पैरमें काटखायाहै मैं सबसे जुदा २ कहांतक कहता इसहेतु से तुरई से मैने सबको इकट्ठा कियाहै जिससे एकहीवार सबसे कहना पडा अब तुम सबलोग जानलो कि इसे कुत्ते ने काटाहै यह कहकर उसने वह अपना पैर सबको दिखादिया उसकी इस मूर्खता को देखकर सब भिक्षुक हँसनेलगे॥

अब एक अन्य मूर्खकी कथा सुनिये बाह्लीकदेशका रहनेवाला एक महाधनवान् अत्यन्त लोभी मूर्ख था वह सदैव अपनी स्त्रीसमेत लवणरहित सत्तूखाताथा दूसरे अन्नका उसको स्वाद भी नही मालूम था एकदिन उसने भाग्यवशहोके अपनी स्त्री से कहा कि आज तुम मेरे लिये तस्मई बनाओ उसकी आज्ञापाके उसकी स्त्री खीर बनानेलगी और वह कृपण कोठरी के भीतर जाके लेट रहा इसलिये कि कहीं कोई मित्र न आजाय कि उसको भी खीर

वाद कलह तथा द्यूतमें सदैव तुम्हारी जीत होगी यह कहकर उस यक्षके अन्तर्द्धान होजाने पर यक्षको प्रणामकर उस रात्रिको वहीं व्यतीत करके उस संन्यासी ने पाटलिपुत्रनगर में आकर राजद्वारमें प्रतीहार के द्वारा राजा सिंहाक्षसे अपना आगमन कहला भेजा और प्रतीहारके द्वारा राजा की आज्ञा पाके सभामें जाकर यक्षके महात्म्यसे वहांके सम्पूर्ण पण्डितों को वाद विवादमें जीत लिया और फिर उनपर आक्षेप करके उनसे यह कहा कि दिवाल से निकलकर शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म धारी पुरुष दांतो से ओठ काटकर और नखोसे स्तनोंमें क्षत देकर मेरे साथ भोग करके फिर उसी दीवारमें चलाजाता है यह क्या बातहै इसका उत्तर मैं आप से पूछताहूं यह सुनकर सब पण्डित कुछ तत्त्व न समझ कर एक दूसरे का मुख देखते हुए निरुत्तर होगये तब राजा सिंहाक्षने उस से कहा कि यह जो आपने प्रश्न कियाहै इसका उत्तर भी आपही दो यह सुनकर उसने यक्षसे सुनाहुआ उसकी स्त्रीका सब वृत्तान्त कहकर कहा कि मनुष्यको पापकी मूल स्त्रियोका संग कदापि न करना चाहिये उसके यह वचन सुनके राजाने प्रसन्न होके उसे अपना राज्य देना चाहा परन्तु संन्यासीने अपने देशके स्नेह से राज्य लेना न चाहा तब राजाने उसे बहुतसे अमूल्य रत्न दिये उन रत्नोंको लेकर वह संन्यासी कश्मीर देश में जाके यक्षकी कृपा से दीनता रहित होकर सुखपूर्वक रहने लगा इस वृत्तान्त को कहके शिष्यने मुनिसे कहा कि मैंने उस संन्यासीही के मुखसे यह सब बातें सुनी हैं इस कथाको सुनकर वह मुनि अपने सब शिष्यों समेत बड़े प्रसन्न हुए ॥

॥ इति श्री... चतुर्थभागे... अध्यायः ॥

खिलानी पड़े इतने मे उसके एक धूर्त्त मित्रने आकर उसकी स्त्री से कहा कि तुम्हारा पति कहां है यह सुनकर वह स्त्री कुछ उत्तर दिये विनाही भीतर जाकर अपने पति से बोली कि तुम्हारा मित्र आयाहै यह सुनकर उसने कहा कि अच्छा उसे बैठा रहने दे तू मेरे पैर पकड़कर रोदनकर और जो मेरा मित्र पूछे तो कहदेना कि मेरापति मरगयाहै इस युक्ति से जब यह चलाजायगा तो हम तुम दोनो मिलकर खीर खायँगे उसके यह वचन सुनकर वह स्त्री उस के पैर पकड़कर रोनेलगी रोदन सुनके वह धूर्त्त भीतरजाकर उस से पूछनेलगा कि तू क्यो रोती है उसने कहा कि मेरापति मरगया है यह सुनकर उसने शोचा कि अभी तो यह आनन्दमें बैठीखीर बनारहीथी और अभी यहां आनकर रोनेलगी है मालूम होताहै कि इन दोनों ने मुझे पाहुनजानके अपनी खीर बचाने के लिये यह प्रपंच रचाहै इससे मुझे यहां से नही जाना चाहिये यहशोच कर यह धूर्त्त वहां बैठकर हाय मित्र हाय मित्र कहनेलगा रोदनको सुनकर उसके सम्पूर्ण बांधव आकर उसे मराहुआसा जानके श्म-शान लेजाने के लिये उद्यतहुए तब उसकी स्त्रीने कानमें उससे धीरेसे कहा कि अब उठ बैठो नही तो यह तुम्हें लेजाकर श्म-शानमें जलादेगे यह सुनकर वह धीरेसे बोला कि यह धूर्त्त मेरी खीर खाना चाहताहै इससे जबतक यह न जायगा तबतक मैं नहीं उठूंगा क्योंकि मुझे प्राणो से भी अन्न अधिक प्याराहै तदनन्तर सब मित्र बांधवों ने उसे लेजाकर श्मशान में जलादिया परन्तु उस मूर्ख ने कुछ न कहा इसप्रकारसे उस मूर्ख ने अपने प्राणतक देदिये परन्तु खीर न खानेदी अब आप अन्य मूर्खों की कथा सु-निये कि उज्जयिनी नगरी में कोई मूर्ख उपाध्याय रहताथा उसको

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे चतुरशीतितमः प्रदीपः ८४॥

त्रिमारिका कन्याका दृष्टान्त॥

विषकन्याविषइव प्रवर्ज्यायत्नतोयथा॥
त्रिमारिकाथसंजाता यथैकादशमारिका ८४।

(अर्थ) विषवती कन्या विषके समान यत्नसे वर्जितहै, जैसे विषकन्या होतेही त्रिमारिणी हुई फिर वही एकादश मारिणी कहलाई ८४॥

मालवदेश में एक कुटुम्बी ब्राह्मण रहता था उसके तीनपुत्रों के उपरान्त एक कन्या उत्पन्न हुई उस कन्याके उत्पन्न होतेहीउस की माता ब्राह्मणकी स्त्री मरगई और दोचार दिनों के पीछे उस का पुत्रभी मरगया और बैलके मारने से उसका एक भाई भी मर गया इसीसे उस ब्राह्मणने अपनी कन्याकानाम त्रिमारिकारक्खा जब समयपाकर वह कन्या युवती हुई तब उसी गांवके रहनेवाले एक धनवान् ब्राह्मणने उस ब्राह्मणसे कहा कि इस कन्याका विवाह मेरे साथ करदे उसकी यह प्रार्थना सुनकर उसनें अपनी कन्या-का विवाह उसके साथ करदिया उस पति के साथ वह त्रिमारिका कुछ दिनतक रही और थोड़ेही कालमें वह मरगया तब उसने किसी अन्यको अपना पति बना लिया वहभी थोड़ेही काल में मरगया उसके पीछे यौवनसे उन्मत्त उस त्रिमारिकाने तीसरा पति किया वहभी थोड़ेही कालमें मरगया इस क्रमसे उसके दश पति मरे तब लोगोंने हास्यसे उसका नाम दशमारिका रख दिया दश पतियोंके मरने के उपरान्त अन्य पति करनेकी उसकी इच्छादेख कर उसके पिताने लज्जित होके उसे अपने घरमें रख लिया और

रात्रिके समय मूसों के उपद्रवसे निद्रा नहीं आतीथी उसने अपनी यह व्यथा किसी मित्र से कही यह सुनकर उसके मित्रने कहा कि तुम बिल्ली कहीं से लाकर पालो वह मूसों को जब खाजायगी तब तुम्हारी व्यथा दूर होजायगी उपाध्याय ने कहा कि बिल्ली कैसी होतीहै और कहां रहती है मैंने आजतक कभी नहीं देखी है यह सुनकर वह मित्र बोला कि उसके कंजे नेत्र होते हैं वर्ण धुमैला होताहै और पीठपर रोयेंदार चमड़ा होता है इस पहचान से तुम बिल्ली मँगवालो यह कहकर उसके चले जानेपर उपाध्याय ने अपने शिष्यों से कहा कि तुम ने बिल्ली की पहचान तो सुनहीली है कहीं से बिल्ली लेआओ उपाध्यायकी आज्ञापाकर सब शिष्य इधर उधर बिल्ली ढूंढनेलगे परन्तु बिल्ली कहीं न मिली तब एक कंजे नेत्रवाला तथा धुमैले वर्णवाला विद्यार्थी मृगचर्म्म ओढेहुए उनको मिला उसे सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त होनेके कारण बिल्ली जानकर उपाध्याय के पास शिष्यलोग लेआये और उपाध्याय ने भी उसे अपने मित्रके बतायेहुए लक्षणसमेत देख बिल्ली जानके अपने मठमें रखलिया वह विद्यार्थी उसी ब्राह्मणका शिष्य था जिसने उपाध्यायको लक्षण बताये थे प्रातःकाल उस ब्राह्मणने वहां आकर उस मठमें अपने विद्यार्थी को देखकर उन सबसे पूछा कि इसे यहां कौन लाया है यह सुनकर वह मूर्ख उपाध्याय तथा शिष्य बोले कि आपके बतायेहुए लक्षणों के अनुसार यह बिल्ली हम लाये हैं यह सुनकर वह ब्राह्मण हँसनेलगा और बोला कि हे मूर्खो! कहां तो मनुष्य और कहां पशु बिल्ली उसके तो चारपैर होते हैं और पूंछ भी होती है यह सुनकर उन मूर्खों ने उस विद्यार्थी को छोड़कर कहा कि अब आप जैसी बिल्ली बताइयेगा वैसीही हम

अन्य पति न करने दिया एक समय उस ब्राह्मण के यहां एक सुन्दर युवा पथिक पुरुष रात्रिभर रहने के लिये टिका उसे देख कर दशमारिका का चित्त उसपर चलायमान हुआ और उस पथिक काभी चित्त दशमारिका पर चलायमान होगया तब कामदेव की पीड़ासे लज्जा रहित होके दशमारिका ने अपने पितासे कहा कि हे तात! अब एक इस पथिकको और मुझे अपना पति बनालेने दीजिये जो यह भी न रहेगा तो फिर मैं संन्यासिनी होजाऊंगी यह सुनकर उस ब्राह्मणने कहा कि हे पुत्री! ऐसा मतकरो तुम्हारे दश पति मरचुके हैं जो यहभी न रहेगा तो लोगोंमे तुम्हारी बड़ी हँसी होगी यह सुनकर उस पथिक ने कहा कि मैं नहीं मरूंगा श्रीशिव जीकी शपथ खाकर मैं कहताहूं कि मेरीभी दश स्त्रियां मरचुकी हैं इससे हम यह दोनो समानहैं उस पथिकके यह वचन सुनकर सब गांवके रहनेवालों की सलाहसे दशमारिकाने उसेभी अपना पति बनाया थोड़े कालमें वह भी शीतज्वरसे मरगया तब यह व्याकुल होके गंगाजी के तटपर संन्यासिनी होगई॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे चतुरशीतितम प्रदीपः ८४॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे पञ्चाशीतितमः प्रदीपः ८५॥

धूर्त का दृष्टान्त॥

धूर्तः स्वमायया द्रव्यं दत्त्वा द्रव्यमुपार्जति।
यथा राज्ञे न दत्त्वापि धूर्तो द्रव्यमुपार्जयत॥ ८५॥

(अर्थ) धूर्त निजमायासे कुछ द्रव्यदेकरभी बहुत द्रव्य कमा लेताहै जैसे धूर्तने राजाको द्रव्य देकर आप बहुतसा द्रव्य पैदा किया॥ ८५॥

दक्षिणदेश के किसी नगर में पृथ्वीपति नाम एक राजाथा उसे

लावेंगे उन मूर्खोंके यह वचनसुनकर सबलोग बहुत हँसे ठीक है मूर्खतासे किसकी हँसी नहीं होती है अब अन्य मूर्खोंकी कथा सुनिये कि किसीमठमें बहुतसे मूर्खोंका प्रधान एकमूर्ख रहताथा एक दिन उसने किसी धर्मशास्त्रीसे तड़ाग बनवाने का बड़ा माहात्म्य सुना इससे उसने अपने मठके ही निकट बड़ा सुन्दर तालाव बनवाया एकदिन वह अपना तालाव देखनेको गया वह उस तालाव की सिड्ढी उसे खुदी हुई मालूमहुई इससे उसने दूसरे दिन फिर जाकर देखा तो औरभी अधिक खुदीहुई सिड्ढी देखी यह देखकर उसने अपने चित्तमे कहा कि मैं प्रातःकालसे यहां आनकर देखूंगा कि कौन तालावकी सीढियां तोड़ जाताहै यह शोचकर वह दूसरे दिन जैसेही प्रातःकाल तालाव के किनारे आनकर बैठा वैसेही एक बैल आकाशसे उतरकर अपने सींगों से सीढियों को खोदने लगा उसे देखकर उसने यह शोचकर कि यह दिव्य बैलहै इसके साथ मैं स्वर्ग को क्यों न चलाजाऊं उसकी पूँछ अपने हाथों से जाकर पकड़लीनी तब वह बैल उस मूर्खसमेत आकाशमार्ग से उड़कर कैलास पर चलागया वहां मोदकादि दिव्य भोजन पाके वह मूर्ख कुछ दिन सुखपूर्व्वक रहा उस बैल को नित्य आते जाते देखकर उस मूर्ख ने एकदिन भाग्य से मोहितहोके अपने चित्त में शोचा कि इस बैलकी पूँछ पकड़कर मैं अपने भाई बन्धुओं से मिलजाऊं और फिर उसकी पूँछ पकड़कर चलाआऊंगा यह शोच के वह बैलकी पूँछ पकड़कर पृथ्वीपर आया और अपने अन्य मूर्ख मित्रों से मिला उन सबने उससे पूँछा कि तुम कहां गयेथे उसने अपना सब वृत्तान्त उनसे कहदिया उस आश्चर्य्यको सुनकर वह सब बोले कि हमें भी वहां लेजाकर मोदक खिलवाओ यह सुनकर

के राज्यमें एक महाधूर्त रहताथा वह सदैव नगर वासियोंको ठगा करताथा एकदिन उसने शोचा कि ऐसी धूर्ततासे क्या प्रयोजनहै जिसमें केवल भोजनमात्रही प्राप्त होय ऐसा उपाय करनाचाहिये जिसमें बहुतसा धन मिले यह शोचकर वह धनवान् वणियेकासा वेष बनाकर राजद्वार में गया और प्रतीहारके द्वारा आज्ञापाके राजा के समीप पहुँचकर भेट देकर बोला कि हे स्वामी ! मैं एकान्तमें एक बात आपसे कहना चाहताहूं राजाने उसका सुन्दर वेष देखके उसे एकान्त मे लेजाकर कहा कि कहो तब उसने कहा कि हे महाराज ! आप प्रतिदिन सभा में सबके आगे एकान्तमें मुझसे क्षणभर वार्त्तालाप किया करिये इससे मैं प्रतिदिन आपको पांच सौ अशर्फी भेटदिया करूंगा और मेरी प्रार्थना कुछ नहीं है यह सुनकर राजा ने शोचा कि इसमें मेरी क्या हानिहै यह मुझ से कुछ ले तो जा-यगाही नही और उलटी पांच सौ अशर्फी देजाया करेगा और धनवान् वैश्यके साथ वार्त्तालाप करने मे किसी प्रकारकी लज्जा भी नहीं है इससे इसकी प्रार्थना स्वीकार करलेनी चाहिये यह विचारकर राजाने उस से कहा कि अच्छा ऐसाही करेंगे राजाकी यह आज्ञा पाकर वह धूर्त राजा को एकान्त में लेजाकर पांचसौ अशर्फी रोज देनेलगा इस धूर्तने राजाके साथ वार्त्तालाप करते समय एक अधिकारी की ओर कईवार दृष्टिकी इससे जब वह बाहर निकला तब उस अधिकारी ने उससे पूछा कि तुम मेरे ऊपर दृष्टि क्यो करते थे यह सुनकर उसने कहा कि राजा तुम्हारे ऊपर बहुत कुपितहैं आज वह मुझसे कहतेथे कि इसने सब मेरा देश लूटखा-याहै इसीसे मैं वारम्बार अशर्फी अपने घर से लाकर उसे दी दूसरे दिन उस धूर्तने राजाके पाससे लौटकर उससे कहा कि मैंने राजा

को समझादिया है अब वह तुम्हारे ऊपर कुपित नहीं है अब तुम कभी मतडरना जब राजाको कुछ तुम्हारे ऊपर सन्देह होगा तब मैं उनको समझादूंगा इसप्रकारसे उस धूर्त्तने उससे तथा अन्य अधिकारियोंसे युक्तिपूर्व्वक इतना धनलिया कि पांचकरोड़ अशर्फीउसके पास होगई तब उसने एकान्तमें राजा से कहा कि हे महाराज आपको पांचसौ अशर्फी नित्यदेकर भी मैंने आपकी कृपासे पांच करोड अशर्फियां इकट्ठी करलीनी आप यह सब अशर्फियां मुझसे लेलीजिये क्योंकि इनमें मेरा क्याहै यह कहकर उसने सब अशर्फी राजाकी भेटकी राजाने उसके बहुत आग्रह करनेपर उसकी आधी अशर्फी लेली और प्रसन्न होकर उसे अपना महामन्त्री बनालिया इससे वह धूर्त्त महाधनवान् होगया इसप्रकार से बुद्धिमान् लोग अन्यायसे भी धन पैदा करते हैं और फल प्राप्त होनेपर कुएँ खुदवानेवाले के समान दोषरहित होजाते हैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चाशीतितम प्रदीपः ८५ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीनीचतुर्थभागेऽडशीतितमःप्रदीपः ८६ ॥

मूर्खन्यायी का दृष्टान्त ॥

मूर्खन्यायीमूर्खतयानिर्णयंकुरुतेयथा ।
कृतोद्विजोभारवाहीरजकोगर्भधारकः ८६ ॥

(अर्थ)—मूर्ख न्यायाधीश मूर्खताई सेही निर्णय करताहै जैसे मूर्ख न्यायाधीशने ब्राह्मणको तो बोझ लादनेवाला अर्थात् गधा बनाया और धोबी को गर्भ धारण करनेवाला अर्थात् ब्राह्मण स्थानी बनाया ८६ ॥

पांचाल देशमें देवभूतिनाम एक वैदिक ब्राह्मण रहताथा उसके भोगवती नाम सती स्त्रीथी एक समय देवभूति के स्नान करने के

चोर ने उनका पूजन करके भोजन कराके तथा दक्षिणा देकर कहा कि कहो चित्रगुप्त तुमपर प्रसन्नहोयँ यह सुनके चित्रगुप्तने उससे कहा कि शिव विष्णु आदि देवताओं को छोड़कर चित्रगुप्तजीसे ही तुम्हारा क्या प्रयोजन है यह सुनकर उस ने कहा कि तुमको इससे क्या प्रयोजनहै मैं अन्य देवताओं को नहीं प्रसन्न करना चाहता यह सुनकर ब्राह्मण रूपधारी चित्रगुप्त ने कहा कि जो तुम अपनी स्त्री मुझे देने को कहो तो मैं ऐसाकहूं यह सुनके उस चोर ने प्रसन्नहो के कहा कि अच्छा मैं अपनी स्त्री आपको दूंगा आप कहिये यह सुन कर चित्रगुप्त जी अपना स्वरूप धारणकर के बोले कि हे सिंहविक्रम मैं तुमपर प्रसन्नहूं अब बताओ तुमक्या चाहतेहो उसने कहा कि हे स्वामी जिसप्रकार से मेरी मृत्यु न होय वही उपाय बताइये यह सुनकर चित्रगुप्तने कहा कि यद्यपि मृत्यु से कोई भी बचा नहीं सक्ता है तथापि मैं तुम्हें एक युक्ति बताताहूं उसे सुनो जबसे श्रीशिवजी ने श्वेत मुनि के लिये कुपित होके काल को भस्म करके फिर बनाया है तबसे जहां श्वेत मुनिरहते हैं वहां किसीकोभी काल की बाधा नहीं होती वह श्वेत मुनि इस समय पूर्व समुद्र के उसपार तरंगिणी नाम नदी के पार तपोवन में रहते हैं वहां तुमको मैं लेजाके छोड़ आता हूं तरंगिणी नदी के इसपार तुम न आना कदाचित् तुम आभीजाओगे और तुम्हारी मृत्युहोजायगी तो परलोक में तुम्हारी रक्षा मैं करूंगा यह कहकर चित्रगुप्त जी उस सिंहविक्रम को साथ लेके श्वेत मुनि के आश्रम में पहुंचाकर अन्तर्द्धान होगये इसके उपरान्त कुछ काल व्यतीत होजाने पर काल ने तरंगिणी नदी के इसपार जाकर सिंहविक्रमको लेजाने के निमित्त यह युक्ति

निमित्त जानेपर भोगवती शाक लेनेके निमित्त शाकवाटिका में गई वहां धोबी के गधे को शाकखाते देखकर लाठी, लेकर उसके मारनेको दौड़ी इससे वह गधा भागकर एक गढे में गिरपड़ा और उसके एक पैरमें चोट आगई यह जानकर गधेके स्वामी बलासुर नाम धोबीनें आकर लातोंसे तथा लाठियों से ब्राह्मणी को बहुत पीटा इससे उस गर्भिणी ब्राह्मणीका गर्भ गिरपड़ा और वह धोबी अपने गधेको लेकर चलागया तदनन्त देवभूति ने आकर अपनी स्त्री की दुर्दशा देखके और सब वृत्तान्त पूँछकर पुराध्यक्ष से यह वृत्तान्त सब जाकर कहा पुराध्यक्ष ने उसका सब वृत्तान्त सुनके धोबीको बुलाके उन दोनोंकी वार्त्तालाप सुनकर यह न्याय किया कि इस धोबी के गधेका पैर टूटगया है इससे जबतक इस गधेको आराम न होय तबतक ब्राह्मण इसका भारढोवे और इस ब्राह्मण की स्त्रीका गर्भ गिरपड़ाहै इससे धोबीही उसके फिर गर्भ उत्पन्न करे इस न्यायको सुनकर स्त्रीसहित वह ब्राह्मण विषखाके मरगया॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषडशीतितम प्रदीप ८६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्ताशीतितम प्रदीपः ८७ ॥

महादानी का दृष्टान्त ॥

महादानी महत्सिद्धिं लभते तत्सुतो यथा ।
महादानप्रभावेन कल्पवृक्षोत्सवो मुनिः ८७ ॥

(अर्थ)—महादान देनेवाला भारी सिद्धि पाताहै—जैसे राज पुत्रने सिद्धिपाय कल्पवृक्ष उत्सवकी कामना पूर्णकर सबको स्वर्ग पहुँचाय आप मुनि होकर रहा ८७ ॥

कुरुक्षेत्र देशमें एक मलयप्रभुनाम राजाथा एकसमय दुर्भिक्ष में प्रजाओंको बहुत धन देतेहुए राजा मलयप्रभुसे मंत्रियोंने कहा

करी कि एक दिव्य स्त्री बनाके तरंगिणी नदी के उसपार सिंहवि क्रमके पास भेजी उस स्त्री ने अपनी सुन्दरतासे उसे अपने वशीभूत करके उसके साथ रमण किया कुछ दिनोंके व्यतीत होने पर वह स्त्री अपने भाइयों के देखनेके बहानेसे इसपार आनेके निमित्त नदी में घुसी और बीच में आके बहने सी लगी होके चिल्लाकर बोली कि हे आर्य्यपुत्र मुझ को मरते हुए देख रहेहो और मेरी रक्षा नहीं करते तुम सिंहविक्रम नहीं हो शृगालविक्रम हो उसके यह वचन सुनकर सिंहविक्रम नदी में उतरा और वहस्त्री उसे नदी के इसपार बहाके लेआई यहां आतेही कालने उसके गलेमें फांसी डालके कहा–विषयी जीवोंके शिरपरही आपत्ति खड़ी रहती है यह कहकर काल उसको यमराजकी सभामें लेगया वहां चित्रगुप्तने उसे देखकर चुपके से उससे कह दिया कि जो तुम से कोई पूँछे कि तुम पहले स्वर्ग भोग करोगे या नरक तो कह देना कि स्वर्ग फिर स्वर्ग में जाकर स्वर्ग की दृढ़ता के लिये पुण्यकरना और स्वर्ग के दृढ़ होजाने पर सम्पूर्ण पापों के नाश करने के लिये तप करना चित्रगुप्त के यह बचन स्वीकार करके सिंह विक्रम चुपचाप खड़ारहा क्षणभर में यमराज ने चित्रगुप्त से पूँछा क्या इस चोरका कुछ पुण्यभी है चित्रगुप्त ने कहा कि हां इसने अतिथियों का बहुत सत्कार कियाहै और अपने इष्ट देवता के प्रसन्न करनेको अपनी स्त्री भी ब्राह्मणको दी है इससे यह एक दिव्य दिन स्वर्ग मे रहसक्ताहै चित्रगुप्त के यह वचनसुनकर यमराजने सिंह विक्रमकी ओर देखकर कहा कि बताओ तुमपहले पुण्यका भोग करोगे या पाप का सिंहविक्रम ने कहा कि पहले पुण्यका भोग करूंगा तब यमराजकी आज्ञासे आयेहुए विमानपर

किहे तात आप इन मंत्रियों के कहनेसे दानदेना न छोड़ियेक्यों कि आप प्रजाओं के निमित्त कल्पवृक्षहैं और प्रजा आपकी कामधेनुहैं उसके यह वचनसुनके मंत्रियों के वशीभूत होनेवाले राजाने कहा क्या मेरे पास अक्षयधन है जो धनके विनाही मैं प्रजाओंके लिये कल्पवृक्ष बनसक्ताहूं तो तुम्हीं कल्पवृक्ष क्यों नहीं बनते हो पिता के यह वचन सुनकर इन्दुप्रभ यह निश्चय करके कि यातो मैं तपसे कल्पवृक्षही हूंगा या मरजाऊंगा यह कहके तपोवन को चलागया तपोवनमें उसके घोरतपसे प्रसन्नहुए इन्द्रने उससे कहा कि हे महाराज मैं अपनेही नगर में कल्पवृक्ष होजाऊं इन्द्रने कहा कि ऐसाही होगा इन्द्रके इस वरदान से वह अपने नगर में बड़ी शाखाओंपर बैठेहुए मनोहर पक्षियों से शब्दायमान कल्पवृक्षहोके याचकों के दुर्लभ मनोरथों को भी पूर्ण करने लगा इससे उसकी सब प्रजा देवताओंके समान सुख भोग तदनन्तर कुछ काल व्यतीत होने पर इन्द्र ने उस कल्पवृक्ष के पास आकर कहा कि तुम परोपकार करचुके अब अपना स्वरूप धारण करके स्वर्गको चलो इन्द्रके यह वचन सुनकेकल्पवृक्ष राजपुत्र ने कहा कि देखिये सामान्य वृक्षभी अपने पुष्प, फल तथा पत्तोंसे सदैव उपकार किया करते हैं तो कल्पवृक्ष होके मैं इतने लोगोंकी आशा को छुड़ाकर केवल अपने सुखके लिये स्वर्गको कैसे जाऊं उसके यह उदार वचनसुनके इन्द्रने कहा कि अच्छा तुम अपनी सम्पूर्ण प्रजाभी अपने साथ स्वर्ग को ले चलो यह सुनकर उसने कहा कि जो आप मुझपर प्रसन्नहैं तो सम्पूर्ण प्रजाको स्वर्ग लेजाइये मुझे स्वर्ग से कुछ प्रयोजन नहीं है मैं मनुष्य होकर परोपकारके निमित्त महातप करूंगा उसके यह वचन सुनके इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न होके उसकी सब

चढके स्वर्ग में जाके उसने आकाशगङ्गा में स्नानकरके सम्पूर्ण भोगों को त्यागकर केवल जपकिया उस जपके प्रभावसे उसे कई दिव्य दिन तक स्वर्ग में रहनेकी आज्ञामिली तब वह घोर तपसे श्री शिवजीकी आराधना करके ज्ञानको प्राप्त होगया और उसके सम्पूर्ण पातक भस्महोगये इससे नरक के दूत उसका फिरकर मुख भी न देखसके और चित्रगुप्त ने अपने सब कागज़ों पर से उसके सम्पूर्ण पाप काटदिये इसप्रकार से चोर होकर भी सिंह विक्रम ने अपनी बुद्धिके बल से सिद्धि पाई ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेनवतितम प्रदीप ९० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकनवतितमःप्रदीपः ९१ ॥

महामूर्खों के अपूर्व दृष्टान्त ॥

मुक्तबुद्धिर्वैश्यसुतोमूर्खोथतिलवापकः ॥ जलेऽग्नियातामूर्खश्चनासिकावर्धकस्तथा १ वनवासी पशोःपालस्तथाभूषणधारकः ॥ तूलविक्रयिकश्चैव खर्जूरत्रोटकस्तथा २ भूमिस्थधनदर्शीचतथालवणभक्षकः ॥ गोधुङ्मूर्खद्वयंचैववर्णिताअत्रवैक्रमात् ३ ॥

(अर्थ)—एक तो मुक्तबुद्धि नाम वैश्यपुत्र और तिल बोनेवाला तथा जलमें अग्नि डालनेवाला मूर्ख और नाक बढानेवाला मूर्ख १ तथा वनवासी पशुपालक मूर्ख और आभूषण पहिरने वाला और रुई बेचनेवाला, खजूर तोड़ने वाला, भूमि में गड़ाधन देखनेवाला, लवणभक्षी और गो दुहनेवाला और दो मूर्ख, ये इतने मूर्ख इस प्रदीप मे वर्णित हैं २ । ३ ॥

प्रजाको लेकर स्वर्गको चलेगये और वह राजपुत्र वृक्षपनको त्यागकर वनमें जाके महातप करके बुद्ध रूप होगया इसी प्रकार से दानी लोगोंको महा सिद्धि प्राप्तहोतीहै यह महादानी की कथा तो मैंने तुमसे कही ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषडशीतितमः प्रदीपः ८६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्ताशीतितमः प्रदीपः ८७ ॥

महाशीलवालेका दृष्टान्त ॥

महाशीलीशीलतोहि शीलिनःकुरुतेजनान् ।
यथासदुपदेशेन शीलिनेमन्त्रिणंयथा ८७ ॥

(अर्थ) महाशीलवाला जन निज सुशीलतासे सबको सुशील करदेताहै जैसे शीलवान् राजाने निज मन्त्री चारु मतिको श्रेष्ठ उपदेशसे शीलवान् बनादिया ८७ ॥

विन्ध्याचल पर्वत पर तोतों का बड़ा शीलवान् हेमप्रभ नाम राजाथा उसे अपने पूर्वजन्मका स्मरण बनाथा इसी से वह सदैव धर्म्म का उपदेश किया करता था उसके बड़ा अनुरागी चारुमति नाम तोता प्रतीहार था एकसमय किसी बहेलिये ने चारुमति की स्त्रीको पकड़कर मरवाडाला इससे वह चारुमति बहुत शोकाकुल होकर अत्यन्त दुर्व्वल होगया उसकी यह दशा देखके हेमप्रभ ने युक्ति पूर्व्वक उसके शोक दूर करने के लिये कहा कि तुम्हारी स्त्री मरी नहींहै बहेलिये के जालसे निकल कर वह कहीं भागगई है आज मैंने उसे देखाहै चलो तुम्हेंभी चलकर दिखादूं यह कहके वह उसे अपने साथमें लेजाके एक तड़ागके ऊपर जाके उसे उसीका प्रतिविम्ब दिखाकर बोला कि यही तुम्हारी स्त्री है यह सुनकर वह अपने प्रतिविम्बको देखके प्रसन्नहोके पानीमें जाके प्रतिविम्बकाही

किसी धनवान् वैश्य के सुक्तबुद्धि नाम, एक पुत्र था वह एक समय बहुतसी वस्तु बेचने के लिये कटाहद्वीपको गया उसके पास बहुत अगर भीथा वहां जाकर उसकी और सब वस्तु तो विकगई परन्तु अगर नहीं विका क्योंकि वहां के निवासी अगरका गुणनहीं जानते थे तब उसने वहां कोयले विकते देखकर उसअगरको जलाकर कोयले कर २ के बेचडाले और घरमें आकर अपनी यह चतुरता सबसे कही इससे उसकी बड़ी हँसीहुई यह अगर जलाने वालेकी कथा सुनी अब तिल बोनेवाले की कथा सुनिये एकसमय किसी ग्रामीण खेती करनेवाले ने भुनेहुए तिलखाये वे उसे बहुत स्वादिष्ट लगे इससे उसने पृथ्वी में भुनेही तिल उपजने के लिये बहुत भुनाय २ करबोय दिये फिरराह देखतारहा सुनके लोगों ने बड़ीही हँसी की इति २ एक समय किसी मूर्ख ने प्रातःकाल पूजन के समय यह शोचा कि मुझे स्नान तथा धूप आदि देनेके लिये अग्नि और जल दोनोंका नित्य काम पड़ताहै इससे दोनों को एक साथही रखलिया करूं तो बहुत शीघ्रता से एकत्रही मिलजायँगे यह कह विचारकर वह जलके घड़े मे अग्नि डालकर सोरहा भोरही देखा तो अग्नि बुझगई और जल भी कोयलों से काला होगया तब यह उदासहो शोच करनेलगा तो लोगोंने सुन इसकी बहुतही हँसी करी इति ३ कहीं एक बड़ाही मूर्ख पुरुष था उसकी स्त्रीकी नाक बड़ी चपटीथी और गुरुकी नाक बड़ीथी एक दि[illegible] गुरुको सोते देखकर उनकी नाक काटलई और [illegible] उसकी जगह गुरुकी लम्बीनाक ल[illegible] गा[illegible]। इसप्रकारसे उसने उन दोनोंको [illegible] ४ कहीं किसी वन में एक

आलिङ्गन तथा चुम्बन करने लगा और स्पर्श न पाके तथा शब्द न सुनकर यह शोचनेलगा कि यह मेरा आलिङ्गन क्यों नहीं करती और बोलती क्यों नहीं है यह शोचके उसने ऐसा निश्चय करके कि यह मेरे ऊपर कुपित होगई है तब एक आंवला लाके उस प्रतिबिम्बके मुखमें रक्खा वह आंवला पानी मे बहगया इस से उसने यह जानकर कि इसने आंवला फेंक दिया है खेद युक्त होकर राजा हेमप्रभ से जाकर कहा कि हे स्वामी अब वह न मेरा स्पर्श करतीहै और न वार्त्तालाप करती है और मैंने उसे आंवला लाकर दियाथा वह भी उसने फेंकदिया यह सुनकर राजाने उससे कहा कि यद्यपि कहने के योग्य तो नहींहै तथापि मैं तुम्हारे स्नेहसे कहताहूँ तुम्हारी स्त्री अब अन्य से अनुरक्त होगई है इसीसेवह तुमपर स्नेह नहीं करती है चलो आज चलकर मै तुमको यह भी दिखाइूं यह कहके उसने उसे अपने साथ लेजाके उसके शरीरसे अपना शरीर जोड़के तड़ाग मे अपना मिलाहुआ प्रतिबिम्ब दिखाया उस प्रतिबिम्ब को देखके उसने अपनी स्त्रीको अन्यसे अनुरक्त जानके राजासे कहा किहे स्वामी मैंने आपका उपदेश नही माना इसीका यह फल मुझे प्राप्त हुआ अब जो कुछ मुझे करना उचित होय सोही आप उपदेश कीजिये उसके यह वचन सुनके राजाने उपदेशका अवसर जानके उससे कहा कि विष खाना अच्छाहै और गले में सर्पका बांध लेना भी अच्छा है परन्तु मणि मन्त्रादिकों से भी अगोचर स्त्रियोंपर विश्वास करना उचित नहीं है बहुत रजयुक्त आंधीके समान अत्यन्त चपल स्त्रियां सन्मार्गमें चलनेवाले मनुष्यों को कलङ्कित करके अत्यन्त क्लेश देतीहैं इस से धीर सत्ववान् पुरुषोको स्त्रियोंसे प्रसंग न करके वैराग्यकी प्राप्ति

बड़ा धनवान् महामूर्ख पशुपालक रहता था उसके साथ कितने ही दगाबाजों ने मित्रता करके उससे कहा कि किसी नगरवासी धनवान् ने अपनी कन्या का विवाह तुम्हारे साथ करने को कहा है यह सुन उसने प्रसन्न होकर उनको थोड़ासा धन दिया कुछ दिनों के पीछे उन्हों ने उससे कहा कि तुम्हारा विवाह होगया यह सुनकर उसने प्रसन्नहोकर उनको बहुतसा धनदिया फिर कुछ दिनों के पीछे उन्हों ने उससे कहा कि तुम्हारे पुत्रहुआ है यह सुनकर उसने अत्यन्त प्रसन्नहोकर अपना सब धन उनको देदिया और दो दिनके उपरान्त हाय२पुत्र कहां है यह कहकर रोनेलगा धूर्तों से ठगेगये पशुओं के समान जड़ उस पशुपाल के रोदनको सुनकर सब लोग हँसनेलगे ऐसे पशुपालकी आपने कथासुनी ४ अब आभूषण पहरनेवाले की कथा सुनिये एक समय चोरों ने रात्रि के समय राजमन्दिर से कुछ आभूषण चुराकर कहीं गाड़े थे एक मूर्ख ग्रामीण ने पृथ्वी खोदते २ उन आभूषणों को पाकर अपनी स्त्री को जाकर इसप्रकारसे पहराये कि करधनी उसके शिर में बांधी, हार कमरमें, बिछुए हाथों में, और कानों में कंकण पहराये यह देखकर हँसतेहुये लोगों से प्रसिद्ध हुए, आभूषणों को जानके राजाने उससे अपने आभूषण छीन लिये और उसे पशु के समान महा मूर्ख जानकर छोड़दिया ५ अब रुईवाले कीकथा सुनिये कोई मूर्ख पुरुष अपनी रुई बेचने को बाजार में गया वहां लोगों ने रुई बुरी और बिना साफ कहकर नहीं ली तो उस मूर्खने किसी सुनारको अग्नि में सुवर्ण तपाकर बेचतेहुये देखकरअपनी रुई भी साफ करने के लिये अग्नि में डालदी इससे रुई जलगई और लोग उसकी मूर्खता पर हँसनेलगे ६ अब आप खजूर काट-

के लिये शील का अभ्यास करना चाहिये राजाका यह उपदेश सुनकर चारुमति स्त्रियोंको त्यागकर बुद्धके समान उर्द्धरेता होगया इसप्रकार शीलवान् पुरुष अपने उपदेशोंसे अन्यकोभी तारते हैं यह शीलवान् की कथा हुई ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्ताशीतितमःप्रदीपः ८७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टाशीतितमःप्रदीपः ८८ ॥

महा क्षमावान् मुनिका दृष्टान्त ॥

क्षमावान्क्षमतेक्षामी महायदिगतोपिसन् ॥
मुनिर्विमोचयांचक्रे चौरान्वैनिजघातकान् ८८॥

(अर्थ) क्षमावान् सहनेवाला महा आपत्तिमें भी क्षमा करता है जैसे मुनिने निज घातक चोरोंको भी छुटादिया ८८ ॥

केदारनाथ पर्व्वत पर सदैव गंगाजी के स्नान करनेवाले जितेन्द्रिय बड़े तपस्वी शुभनय नाम एक बड़े मुनि रहतेथे एकसमय चोरोंने उन्हीके आश्रमके निकट पहलेका गाड़ाहुआ सुवर्ण खोद कर न पाकर यह जानकर कि मुनिनेही सुवर्ण लेलियाहै कुटीमें जाकर उनसे कहा कि अरे पाखण्डी मुनि हमारा सुवर्ण दे दे तू चोरोंकाभी चोरहै उनके यह वचन सुनकर मुनिने कहा कि हमने न कुछ लियाहै और न देखाहै यह सुनकर चोरोंने मुनिको लाठियोंसे खूब पीटा इतनेपर भी मुनिने वही वचन कहे तब चोरोंने उनको बड़ा दुष्ट जानके उनके हाथ पैर काटके दोनों नेत्र फोड़ डाले फिरभी मुनि ने वही वचन कहे तब चोर उन्हें छोड़कर कहीं चलेगये दूसरे दिन प्रातःकाल मुनिके शिष्य शेखरज्योति नाम राजाने वहां आकर अपने गुरुकी यह दशा देखके और सब वृत्तान्त जानके न चोरोंको ढुंढ़वाकर फांसी देना चाहा यह जान

नेवालों की कथा सुनिये राजाके सेवकों ने कुछ ग्रामीणों को बुलाकर खजूरके फल लानेकी आज्ञादी उन लोगोंने किसी खजूर के वृक्षमें से अपने आप गिरेहुये खजूरके कुछफल पाकर सब खजूर के वृक्ष काटडाले और उनमें से फल तोड़कर फिर लगाना चाहा परन्तु वे नहीं लगे तब वे वैसेही सब खजूर लेकर राजा के पास आये राजाने खजूरों का काटना जानकर उन्हें बहुतसा दंड दिया ७ अब पृथ्वी में गड़ेहुये धन देखनेवाले की कथा सुनिये किसी राजा ने कहीं से एक पृथ्वीको धनका देखनेवाला बुलवाया राजा के मूर्ख मन्त्री ने ऐसा न होय यह भागजाय इससे उसके नेत्र निकलवा लिये इससे वह पृथ्वी के लक्षणों के देखने में असमर्थ होगया और सबलोग उस मूर्ख मन्त्री का उपहास करने लगे ८ अब आप लवण खानेवाले की कथा सुनिये किसी ग्राम में गह्वरनाम एक महा मूर्ख पुरुष रहताथा एक दिन उसके किसी नगरनिवासी मित्रने उसे अपने यहां लेजाकर बहुत स्वादिष्ट नमकीन भोजन करवाये भोजनके उपरान्त गह्वरने अपने मित्र से पूँछा कि अन्नमें यह किस वस्तुका स्वादथा उसने कहा कि विशेष करके लवणका स्वादथा यह सुनकर उसने नोनको बड़ा स्वादिष्ट जानके मुट्ठीभर पिसाहुआ नोन फांकलिया इससे उसके होठ तथा मूछेंश्वेतहोगईं और लोग उसे देखकर बहुत हँसे ९ अब गौदुहनेवाले की कथा सुनिये किसी ग्रामीणके पास एक गौथी वह पाँच सेरदूध रोज देतीथी एकसमय उसके यहां कुछ उत्सवहोने को था इससे उसने महीनेभरपहले गौका दुहना इसलिये बन्दकरदिया कि इकट्ठाही सब दुहलूंगा जब उत्सवका दिन आया तो वह उस गौको दुहनेलगा और गौने पैसाभर भी दूध नहीं दिया इससे वह

र मुनि ने राजा से कहा कि हे राजा जो तुम इनको मारोगे तो
भी अपने प्राण देदेऊंगा क्योंकि शस्त्रों से मेरे अंग कटे इस मे
का कौन अपराध है और जो यह कहो कि चोर उन शस्त्रों के
कथे तो इनकाभी प्रेरक क्रोधथा क्रोधकाभी प्रेरक सुवर्णका नाश
सुवर्णके नाशका प्रेरक मेरे पूर्वजन्मका पापथा और उस पाप
भी प्रेरक मेरा अज्ञान था इससे वही मुख्य अपकारीहै उसी का
श करना चाहिये और जो इनको अपकारी जानके मारते हो
उपकारी जानके इनकी रक्षाभी करनी चाहिये क्योंकि जोयह
रे साथ उपद्रव न करते तो मैं क्षमा किसपर करता इससे यहमेरे
ी उपकारी हैं इत्यादि अनेक वाक्यों से मुनिने राजाको समझा
चोरोंको वधसे वचवाया और इसी क्षमा के माहात्म्य से उनके
ग ज्योंके त्यों होगये और महा सिद्धि उनको प्राप्त हुई इसप्र-
रसे क्षमावान् पुरुष संसार से छूट जातेहैं यह क्षमावान्की कथा
॥—अब महा धैर्य्यवान् की कथा सुनिये—पूर्वसमय में माला
र नाम एक ब्राह्मणका पुत्र आकाश में जाते हुए किसी
द्धकुमार को देखकर उसकी ईर्ष्या से तृणों के पक्ष बांध के
छल २ के आकाश में उड़ना सीखने लगा इसप्रकार से प्रति
न व्यर्थ परिश्रम करते हुए उसको एक दिन आकाश से स्वामि
ातिकजी ने देख कर शोचा कि यह धैर्य्ययुक्त होकर दुर्लभ कार्य्य
भी कैसा श्रम कर रहाहै इससे इस बालक पर मुझे दया करनी
ाहिये यह शोचकर उन्हों ने उस बालक को अपनागण बना
या इसप्रकार धैर्य से देवता भी प्रसन्नहोते हैं ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टाशीतितम प्रदीपः ८८ ॥

महा दुःखीहुआ और लोग उसके वृत्तान्तको सुनकर बहुत हँसे ९० अब अन्य दो मूर्खों की कथा सुनिये तांबे के घड़े के समान गंजे शिरवाला एक मूर्ख मनुष्य किसी वृक्षके नीचे बैठाथा उसे देखकर कोई भूखा तरुणपुरुष अपने पास के कैथे उसके शिरपर मारनेलगा और वह मूर्ख शिरसे रुधिर बहनेपर भी कुछ न बोला मारते २ जब सब कैथे निबट्गये तब वह तरुणपुरुष व्यर्थ क्रीड़ाकरके कैथोंको भी खोकर भूखा अपने घरगया और वह मूर्ख भी यह कहकर कि स्वादिष्ट कैथोंकीमार में कैसे न सहूं वहांसे रुधिर बहाताहुआ चला गया मूर्खों के राज्यकी पगड़ी के समान उसके शिरमें रुधिर देखकर सब लोग हँसेइसप्रकार से निर्बुद्धि लोग उपहास्यको प्राप्त होते हैं और उनका प्रयोजन कुछ नहीं सिद्ध होता ॥

इति श्री शुक्लोपाध्यायदेवीसहायसगृहीतायादृष्टान्तप्रदीपिन्याम्चतुर्थभागे मूर्खापूर्ववर्णनात्मकोयंएकनवतितम प्रदीप ९१ ॥

अथ दृष्टान्तदीपिनीचतुर्थभागेद्विनवतितमःप्रदीपः ९२ ॥

एक मूर्ख की कुलटा स्त्रीका दृष्टान्त ॥

मूर्खस्त्रीकुटिलापिस्याद्यथावृद्धेसमर्पिता ॥
निषादेन ससंरेमे पश्यतिस्वपतौमुदा ९२ ॥

(अर्थ) मूर्खकी स्त्री व्यभिचारिणी भी होजाती है जैसे वृद्ध को सौंपी गई स्त्रीने भील के साथ निज पति के देखते देखते रमण किया ९२ ॥

किसी नगरमें कोई बड़ा ईर्ष्यावान् पुरुष था उसकी स्त्री बड़ी रूपवती थी वह अविश्वास करके उसे कभी अकेली नहीं छोड़ता था एक समय किसी आवश्यक कार्य के निमित्त वह अपनी स्त्री को साथ लेकर परदेश को चला मार्ग में कुछ दूर चलकर आगे

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोननवतितमःप्रदीपः ८९॥
दृढ़धारी ध्यानी का दृष्टान्त ॥

दृढ़ध्यानधरोध्यानी प्राप्नोतिपदमुत्तमम् ।
वैश्यपुत्रोयथाराजसुतामिच्छन्यदह्यगात् ८९।

(अर्थ) दृढ़ध्यान धरनेवाला ध्यानीजन उत्तम पद पाताहै जैसे वैश्यपुत्र राज पुत्री को चाहता परमपदको प्राप्तहुआ ८९॥

पूर्व्वकाल के बीच कर्नाटक देशमें विजयमाली नाम महाध नवान् वैश्य के मलयमाली नाम पुत्र था एक समय मलयमाली ने अपने पिता के साथ राजद्वार में जाके राजा इन्दु केशरी क इन्दुयशानाम,कन्या को देखा उसे देखतेही वह ऐसा उसपर आ सक्तहोगया कि उसे न रात्रिको निद्राआई न दिनको कुछ क्षुध लगी और लोगो के पूछनेपर भी वह कुछ न कहके उसीके ध्यान मूकसाबनारहा उसे इसप्रकारसे व्याकुल देखकेराजाके चित्रकरम न्थरकनाम उसके मित्रने उससे कहा कि हे मित्र यहक्या कारणहै तुमकिसी की न सुनतेहो और न अपनीकहतेहो मैं तुम्हारापरमा त्रहूं मुझसे अपना सब वृत्तान्तकहो उसके यह वचन सुनकर मल मालीने अपना सब वृत्तान्त उससे कहदिया,यह सुनकर मन्थरक कहा कितुम वैश्य के पुत्रहो तुमको राजपुत्री की इच्छा न कर चाहिये अपने २ योग्य ही अभिलाषा करने से सबका कल्या होता है सामान्य तड़ागो की कमलनियों की इच्छा हंसकर उचितहै परन्तु विष्णु भगवान् के नाभिकमल की उसको इच्छ न करनी चाहिये उसके इसप्रकार समझाने पर भी जब मलयम लीको कुछ बोध न हुआ तो उसने राज पुत्री का एकचित्र उस के नमे देदिया उसचित्रको पाके वह उसी को इन्दुकुशा राजपु

भील लोगों का गांव जानकर उनके भयसे किसी ग्रामीण वृद्ध ब्राह्मणके यहां वह अपनी स्त्रीकोछोड़कर चलागया उसकेचले जाने पर वह स्त्री उस ब्राह्मण के यहां रहकर एकदिन आयेहुए बहुतसे भिल्लों मेंसे किसीतरुण भिल्लसे स्नेहकरके उसकेसाथ उसके ग्राम में जाकर उसीसे यथेच्छ भोग करनेलगी। कुछ दिनोंके उपरान्त उस ईर्ष्यावान् पुरुषने लौटकर उस वृद्ध ब्राह्मण से अपनी स्त्री मांगी तव उस ब्राह्मणने कहा कि में नही जानताहूं वह कहांगई हां इतना मैं कह सक्ताहूं कि यहां बहुतसे भील आयेथे उन्ही के साथ वह चली गई होगी उनभीलोंका गांव यहांसे निकटही है तुम वहीजाओ वहां उसका पतालगेगा उसके यह वचनसुनकर वहरोताहुआभीलों के गांवमें गया और वहां ढूंढ़के अपनी स्त्री के पास गया वह भी उसे देखकर भयभीत होकरबोली कि हेस्वामी मेराकोई अपराध नहीहै मुझे एक भील जबरदस्ती यहां पकड़ लायाहै यह सुनकर उसने कहा कि अच्छा जो हुआ सो हुआ अब शीघ्रतासे मेरे साथ भग चलो ऐसा न होय कि फिर कोई भील तुमको देखकर पकड़ले उस के यह वचन सुनकर वह बोली कि शिकार खेलकर उस भीलके आनेका यह समयहै वह आजायेगा तो तुमको अवश्य मारडालेगा इससे इस गुफामें जाकर तुम छिपरहो रात्रिके समय जबवह भील सोजाय तो उसे मारकर मुझे लेकर निर्भय चले चलना उस कुलटाके यह वचन सुनकर वह मूर्ख उसकी बताई हुई गुफा में चलागया ठीक है (कोवकाशोविवेकस्य हृदिकामांधचेतसः)कामान्ध पुरुषों के चित्तमें विवेकका अवकाश नहीं होताहै तदनन्तर सायङ्कालके समय आयेहुए भीलको उस कुलटाने अपना पति दिखला दिया तव उस भील ने उसे गुफा में से निकालके

नानके ऐसा उसके ध्यानमें मग्नहोगया कि उसी चित्रका चुम्बन तथा आलिंगनादिक करनेलगा और इसी से उसका क्लेश भी निवृत्तहोगया एक समय वह उसचित्रको लेके चन्द्रोदय में वनके विहार करनेकोगया और उसचित्र को किसी वृक्षकी जड़पर रखके अपनी प्रियाकेलिये वनमें जाकर पुष्पतोड़नेलगा उससमय विनय ज्योतिनाम मुनि उसे देखके आकाश से उतरकर उसका उद्धार करने के लिये अपने प्रभाव से उस चित्र के कोने में एक जीवता हुआ काला सर्प बनाकर अलक्षितहोके वहीं खड़ेरहे इतने में पुष्प तोड़कर लौटहुए मलयमाली ने चित्र में उस सर्प को देखकर शोचा कि यह सर्प यहां कहां से आया क्या ब्रह्माने मेरी प्रियाकी रक्षाकेलिये तो इसे नहीं भेजाहै यह शोचकर जैसे ही उसने उस चित्रपर फूलआदि रखके चाहा कि मैं इसका आलिंगन करके इसी से पूछूं कि यह सर्प कहां से आया है वैसे ही मुनिके प्रभाव से उसे मालूमहुआ कि सर्प के काटने से वह मरगई इस से वह हाय २ करके मूर्च्छितहोके गिरपड़ा और क्षणभरमें मूर्च्छाजागने पर उठके एक ऊंचे वृक्षपर चढ़के अपने प्राणदेने को कूदा उसे गिरते देखके कृपालु मुनि ने बीचही में उसे अपने हाथोंपर रोक कर समझाकर उस से कहा कि हे मूर्ख! तुम्हें नहीं मालूम है कि वह राजपुत्री अपने घरमें है यह केवल चित्र की पुतली है तुम किसका आलिंगन करते हो किसे सर्प ने काटाहै यह तुम्हारे विचारों की भावनाओं का भ्रम है जो तुम इतने ही दृढध्यान से तत्त्वका विचार करो तो तुम्हारे सब दुःखदूर होजायँ यह सुनकर मलयमाली मोहसे रहित होके बोला कि हेभगवन्! आपकी कृपासे मेरा यह अज्ञान तो दूरहोगया अब ऐसी कृपाकीजिये जिससे इस

प्रातःकाल देवीजीके बलिदानकेलिये एक वृक्षमें कसकर बांधदिया और भोजन करके उसीके आगे उसकी स्त्री के साथ भोग करके शयन किया उसे सोया देखकर उस पुरुष ने बहुत व्याकुल होकर भगवतीकी बड़ी स्तुतिकी इससे भगवतीने प्रसन्न होकर उसे ऐसा वरदान दिया कि जिससे बन्धनोंके शिथिल होजानेपर उसने उस भीलकेही खड्गसे उसका शिर काटके अपनी स्त्रीसे जगाकर कहा कि चलो मैंने इस पापीको मारडाला उसके यह वचन सुनकर वह कुलटा अत्यन्त दुःखित होकर उस भीलके शिर को छुपाके अपने साथ लेकर उसके साथ चली और प्रातःकाल नगर में पहुँच कर वह शिर दिखाकर तथा यह कहकर कि इसने मेरे पतिको मारडालाहै चिल्ला २ कर रोनेलगी उसको इसप्रकार रोते देखकर पुरके लोग और रक्षक उन दोनोंको पकड़कर राजाके पास लेगये राजाने उन दोनो से सब वृत्तान्त पूछकर और अपनी बुद्धि के बलसे तत्त्वको जानकर उस कुलटा स्त्री के नाक कान कटवालिये और उस मूर्खको छोड़दिया तब वह उस दुष्ट स्त्री के स्नेहसे रहित होकर अपने घरको चलागया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेद्विनवतितमःप्रदीपः ९२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेत्रिनवतितमःप्रदीपः ९३ ॥

अथ मूर्ख स्त्री का दृष्टान्त ॥

मूर्खस्त्रीगुप्तवार्त्तांहि प्रकाशयतिसत्त्वरम् ॥
खगाग्रेकथयामास सर्पवार्त्तांयथासती ९३ ॥

(अर्थ)–मूर्ख स्त्री गुप्तवार्त्ताको भी शीघ्रही प्रकाशित करदेती है जैसे वेश्याकी मूर्ख दासी ने खग = गरुड़जी के आगे सर्पकी वार्त्ताको कहदिया ९३ ॥

संसार से मैं छूटूं उसकी यह प्रार्थना सुनकर वह मुनि उसे गुरुजी के बताये हुये ज्ञान का उपदेश करके वहीं अन्तर्द्धान होगये उस ज्ञानको पाकर वह मलयमाली तपोवन में जाके तपस्या करके तत्त्वको जानकर बुद्धके समान होगया फिर उसने राजा इन्दुके शरीरके पास आकर ऐसाज्ञान उपदेश किया कि जिससे सम्पूर्ण नगर निवासी मुक्त होगये इसप्रकार से ध्यान करनेवाले मोक्षको प्राप्त होते हैं यह ध्यानवान् की कथा हुई ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोननवतितमः प्रदीपः ८९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेनवतितमः प्रदीपः ९० ॥

चित्रगुप्त भक्तचोरका दृष्टान्त ॥

चौरभक्तश्चरेद्भक्तिंचौर्य्यरूपेणचैवहि ।
चौरोहिचित्रगुप्तस्यभक्त्यागात्परमम्पदम् ९० ॥

(अर्थ) चोरभक्त भक्ति भी चुराकरही करता है जैसे चोरने चित्रगुप्तको भजा उसीके उपदेश से वह परम पदकोप्राप्तहुआ ९० ॥

सिंहलद्वीप में सिंहविक्रम नाम एक चोर तो पराये धन से जन्मभर अपना पोषण करके वृद्धावस्था में चोरी का त्याग करके अपने मनमें शोचा कि परलोक में मेरी कौन रक्षाकरेगा जो मैं विष्णु भगवान् अथवा शिवजी की शरण में जाऊं तो वहां मुझे कौन पूछेगा क्योंकि उनके तो बड़े २ देवता तथा मुनिलोग सेवकहैं इससे सम्पूर्ण जीवोंके कर्मोंके लिखनेवाले चित्रगुप्तकी सेवाकरनी चाहिये वही मेरी रक्षाकरेंगे यह शोचके वह चित्रगुप्त की भक्तिकरनेलगा और उनकी प्रीतिके लिये नित्य ब्राह्मणों को भोजनकरानेलगा उसकी यह भक्ति देखकर चित्रगुप्त जी उसकी परीक्षा करने के लिये अतिथि का [illegible] कर उसके पासआये उस

एक कोई सर्प गरुड़जी के भयसे भागकर मनुष्य का रूपध
कर किसी वेश्या के यहां आकर रहाथा और अपने प्रभावसे पांच
सौ हाथी रोज उसको दिया करताथा एकदिन उस वेश्याने उससे
बहुत हठकरके पूछा कि आप कौनहैं और इतने हाथी आपकेपास
कहांसे आते हैं उसने उसकी बड़ी हठ देखकर कामसे मोहितहो
कर कहा कि किसी से कहना मत मैं सर्प हूं गरुड़जी के भय से
इसप्रकार का होकर तुम्हारे यहां छिपकर रहता हूं उससे यहबात
सुनकर उस वेश्याने अपनी कुटनी से एकान्त में कहदीनी इस
बीचमें गरुड़जी भी पुरुषका रूप धारणकरके सब स्थानों में ढूंढते
हुए वहां आये और उस कुटनी से बोले कि आज मैं इस वेश्या
के यहां रहना चाहताहूं एक दिनका जो तुम्हारा मोल होताहै सो
मुझसे लेलो यह सुनकर उसनें कहा कि एक सर्प पांचसौ हाथी
रोजदेताहै तुमको एक दिन रखकर यह क्या करेगी उसके इन
वचनों से गरुड़जी ने उस सर्प को वहां रहता जान अतिथिरूप
धरके उस वेश्या के घरजाय सर्प को देखा सोहीं उसे मारखाया
इससे बुद्धिमान्जन स्त्रियों से निज गुप्त वार्त्ता न कहैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेउत्तरार्द्धेत्रिनवतितम प्रदीप ९३ ॥

अथदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेचतुर्नवतितमःप्रदीपः ९४॥

गंजे आदि अनेक मूर्खो के दृष्टान्त ॥

खल्वाटस्तैलमूर्खोऽथ अस्थिमूर्खस्तथैवच ॥
चाण्डालकन्यामूर्खोथ मूर्खराजातथैवच ॥
तथामित्रद्वयंचैते वर्णिताःक्रमतोजड़ाः ९४ ॥

(अर्थ) गंजा और तेल लानेवाला मूर्ख हड्डियोंका मूर्ख और

चांडाल की मूर्ख कन्या और मूर्ख राजा तथा दो मित्र मूर्ख ये इतने मूर्ख क्रम से वर्णन किये हैं ६४ ॥

किसी नगरमे तांबे के घटके समान कोई गंजे शिरवाला महा धनवान् मूर्ख पुरुष रहताथा उसे बालों के विना बड़ी लज्जा रहती थी एकदिन किसी धूर्त ने उससे आकर कहा कि एक वैद्यहै उसके पास बालों के उत्पन्न करनेकी औषध है यह सुनकर उसने कहा कि जो तुम उसको लाओ तो मैं तुमको और उस वैद्यको दोनों को बहुत धन दूंगा यह कहकर उसने उसे थोड़ासा धनदिया तब वह धूर्त किसी धूर्तही वैद्यको उसके पास ले आया उस वैद्य ने उससे बहुत कालतक अत्यन्त धनलिया और एकदिन अपना शिर खोलकर युक्तिपूर्वक उसे दिखादिया उसे देखकर भी उसमूर्ख ने जब उससे अपने बालों के लिये औषधमांगी तो उस वैद्य ने उससे कहा कि मैं तो आपही गंजाहूं मैं दूसरे के शिरमें कैसे बाल उत्पन्नकरूं इसी से मैंने अपना शिर खोलकर तुम्हे दिखलादियाथा इतने पर भी तुम नहीं समझेहो यह कहकर वह वैद्य चलागया इसप्रकारसे धूर्तलोग जड़ बुद्धियों से धनलिया करते हैं (अब तेल के मूर्खकी भी कथा आप सुनिये) किसी धनवान्के यहां एकमूर्ख सेवकथा एकसमय उस सेवक को उस धनवान् ने तेल लेने के लिये बाजार मे भेजा वह किसी बनिये के यहां से तेल लेकर लौटा आता था मार्ग्ग मे किसी पुरुष ने उस से कहा कि देखो यह तेलका पात्र नीचे से टपकताहै इसे बचाओ यह सुनकर उस ने उस पात्रके नीचे के तलेको देखने के लिये उसे उलटकर देखा इससे वह सब तेल गिरपड़ा और सब लोग हँसने लगे और उस के स्वामीने उसका यह वृत्तान्त सुनकर अपने घरसे उसे निकाल

बैठीथी मैंने उस कन्या से कहा कि कुछ आम हमको देओ तो वह बोली गरम आम खाओगे या ठंढे तब मैंने आश्चर्य्यित होके कहा कि पहिले गरम फिर ठंढेखायँगे यह सुनकर उसने थोड़े से आम धूल में फेंकदिये तो तिनको मैंने निज मुख से फूंकदेदेकर खाये तब वह हँसकर बोली यह तो गरम आमहैं जो फूंक देदेकर खाये अब ठंढेखाओ तो वस्त्रमे लेलेओ उन्हे विन फूंकदेके खाओगे उस के यह वचन सुनकर आम लेके लज्जितहोकरचले तब मैंने शशि तथा अन्य साथियों से कहा कि मैं इस चतुर कन्याके साथ विवाह करूंगा औरइसे हास्यका उत्तरदूंगा मेरेवचन सुनकर मेरे साथियों ने उस कन्याके पिताका स्थान ढूंढा दूसरे दिन भेष बदलकर हम सब उसके घर जाकर वेदका पाठकरनेलगे तो वेदपाठको सुनउस कन्याके पिता यज्ञस्वामी नाम ब्राह्मणने हमसे पूंछा कि तुम कहां रहतेहो हमने कहा हम मायापुरीसे विद्या पढनेको यहां आये हैं यह सुन उस धनवान् ब्राह्मणने कहा कि अच्छा तुम मेरे ही यहां चार महीने कृपाकरके रहो तो हमने कहा जो चारमहीनेमें आप हमारा मनोरथ पूर्ण करनेकी प्रतिज्ञाकरो तो हम चौमासेभर तुम्हारेहीयहां रहें यह सुनके यज्ञस्वामीने कहा कि जो मेरी सामर्थ्य से मनोरथ पूर्णहो सकेगा तो मैं अवश्य पूर्ण करूंगा उसके यह वचनसुनकर हम सब चार महीनेतक वहां रहे जब चार महीने पूर्ण होगये तब हमारे साथियोंने उससे कहा कि अब हमारे मनोरथको पूर्ण करो यह सुनकर यज्ञस्वामी ने कहा कि तुम लोग क्या चाहते हो तब शशीने मुझे दिखाके उससे कहा कि अपनी कन्याका विवाह इस के साथ करदो शशी के यह वचन सुनके यज्ञस्वामीने वचनवद्ध होकर अपनी उस कन्याका विवाह मेरे साथ करादिया रात्रिके

दिया इससे मूर्खका अपनीही बुद्धिसे काम करना अच्छाहै उप-देशसे उलटा फल होताहै (अब अस्थिके मूर्खकी कथा सुनिये) किसी मूर्ख पुरुष की पुंश्चली स्त्रीथी एकसमय उस मूर्खके परदेश चलेजाने पर वह स्त्री अपनी दासीको शिक्षा देकर आनन्दभोग-नेके लिये किसी जार पुरुष के यहां चली गई जब वह मूर्ख पुरुष परदेशसे लौटकर अपने घर आया तो उस दासी ने गद्गद वचन करके आंसू भरके उससे कहा कि तुम्हारी स्त्री मरगई और उसे मैंने जलादिया यहकहकर उसने उसे श्मशानमें लेजाके किसी चिता में पड़ी हुई हड्डियां दिखादी उन्हें देखकर वह बहुत रोकर तिलां-जलि देके और उन हड्डियोंको तीर्थ में फेंकके महीने २ पीछे अपनी स्त्रीका श्राद्ध करने लगा उस दासीनें जिस ब्राह्मणके यहां उसकी स्त्री निकल कर रहीथी उसी ब्राह्मण को उस स्त्री समेत श्रा-द्धमें भोजन के लिये बुलाकर उस मूर्ख से कहा कि देखो तुम्हारी स्त्री सती धर्मके प्रभावसे सह देह आकर इस ब्राह्मणके साथ भो-जन करतीहै उस मूर्खने उसके वह वचन सत्यही मानलिये और वह पुंश्चली महीने २ आकर अपनेही यहां उत्तम भोजन करती रही इसप्रकारसे दुष्टस्त्रियां मूर्खों को ठगा करती हैं (अब चाण्डालकी कन्याकी कथा सुनिये) किसी चाण्डालकी अत्यन्त रूपवती कन्याने सबसे श्रेष्ठ पुरुषके साथ अपने विवाह करने का निश्चय किया एक समय वह नगरके भ्रमण करने के लिये नि-कले हुए राजाको देखकर और उसे सबसे श्रेष्ठ जानकर उसी के साथ विवाह करने के निमित्त उसके पीछे २ चली मार्ग में मिले हुए किसी मुनिको राजाने हाथी परसे उतरकर प्रणाम किया यह देखकर वह कन्या राजासे भी मुनिको श्रेष्ठ समझकर उनके पीछे

निकलवा दिया इस वृत्तान्त को सुनकर दूतों के द्वारा वर्त्तालाप करके मैं भी सुन्दर वस्त्रादिक पहरके उसके यहांगया और वहुसा धन देके द्वारपालों को प्रसन्न करके स्नानादिक विना किये उस के शयन स्थान में पहुंचा मैंने तो उसको नहीं पहचाना परन्तु उसने मुझे पहचानकर अभ्युत्थान करके मुझे पलंगपर बैठाकर मधुर २ वचनों से वहुत प्रसन्न किया तव उसके साथ संभोगपूर्वक उसरात्रि को व्यतीत करके उससे मेरा ऐसा अनुराग हुआ कि मैं उसके यहां से न आसका और वह भी मेरे साथ वड़ा स्नेह प्रकट करके जव तक गर्भवती न होली तव तक क्षणभरही मेरे पास से न हटी गर्भस्थिति के पीछे एक झूठापत्र वना के उसने मुझे दिया और कहा कि राजाने यह पत्र भेजा है इसे तुम पढ़ो उसपत्र को खोलकर जो मैंने पढ़ा तो उसमें यह लिखा था कि कामरूप देश से श्रीमान् महाराज मानसिंह सुमंगलाको यह आज्ञा है कि तुम्हेंगये वहुत समय व्यतीत होचुका है इससे शीघ्रहीचली आओ मुझ से इसपत्र को सुनकर वह दुःखित सी होकर मुझ से बोली कि मैं अवजातीहूं मेरे अपराध को क्षमा करना क्योंकि मैं पराधीन हूं यह व्याज करके वह अपने पाटलिपुत्र नगरको चलीगई और मैं उसे पराधीन जानके उसके संग नहीं गया वहां उसने समय पाकर एक पुत्र उत्पन्नकिया उसने वाल्यावस्थाही में सव कलायें सीखलीं वारह वर्षकी अवस्था में उसने चपलता से अपने समान अवस्थावाले दासको पीटा इस से वह दास रोकर वोला कि तू मुझे क्या मारता है तेरे पिताका कुछ ठीक नहीं है तेरी माता विदेश में भ्रमण करनेगई थी वहीं न जाने किसके संग से गर्भ रहगया उस दास के यह वचन सुनकर उसने लज्जित

पीछे चली मुनि ने-वहांसे चलकर मार्ग में मिलेहुए किसी शिवा-लय मे पृथ्वी पर गिरकर श्रीशिवजी को प्रणाम किया यह देख कर वह मुनि से भी श्रेष्ठ श्रीशिवजी को जानकर मुनिको छोड़ कर श्रीशिवजी को अपना पति वनाने के लिये वहीं रही क्षणभर में एक कुत्ता वहां आया और जलहरीपर चढ़के जंघा उठाके अपनी जातिके अनुसार काम करने लगा यह देखकर वह उस कुत्ते को शिवजीसे अधिक जानकर उसीको अपनापति वनानेके लिये उसके पीछे २ चली वह कुत्ता अपने स्वामी चाण्डाल के यहां जाकर उसके पैरों पर लोटने लगा यह देखकर उस चाण्डाल कन्याने कुत्ते से उस चाण्डाल को अधिक जानकर उसी के साथ अपना विवाह करलिया इसप्रकारसे मूर्ख लोग वहुत ऊंचे वढ़कर भी अपनेही स्थानों मे आ गिरते हैं (अव आप एक मूर्ख राजा की कथा सुनिये) किसीनगरमें वड़ा धनवान् राजा अत्यन्त मूर्ख तथा कृपण था एक दिन उसके हित चाहनेवाले मन्त्रियोंने उस से कहा कि हे स्वामी! दानसे परलोक में दुर्दशा नहीं होती है इस से आपभी दान किया करिये, क्योंकि यह जीव तथा धन क्षण भंगुर है यह सुनकर उस ने कहा कि मैं तभी दान दूंगा जव कि मैं मरकर अपने को दुर्दशा मे पड़ा देखूंगा यह सुनकर वह मन्त्री अपने हृदय मे हँसकर चुप हो रहे इसप्रकार मूर्ख लोग धन को नही छोडते हैं चाहे धनही उन को छोड़ जाय (अव दो मित्रोंकी कथा सुनिये) कान्यकुब्ज देशमें चन्द्रापीड़ नाम राजाके एक धवलमुखनाम सेवकथा वह सदैव वाहरही भोजन करके अपनेघरमे जाताथा एकदिन उसकी स्त्रीने उससे पूँछा-कि तुम नित्य कहां से भोजनकर आतेहो यह सुनकर उसने कहा कि

होकर अपनी मातासे पूंछा कि हे अंबे ! मेरा पिता कहां है और कौन है बालकके यह वचन सुनकर उसपरम चतुर स्त्रीने समय जानकर कहा कि तुम्हारे पिताका मूलदेव नाम है वह मुझे छोड़कर उज्जयिनी में चलागयाहै यह कहकर उसने सब वृत्तान्त उससे कहदिया तब उस बालकनेकहा कि हे अंब ! मै जाकर अपने पिताको लाकर तुम्हारी प्रतिज्ञाको पूर्ण करूंगा यह कहकर वह अपनी मातासे मेरे सम्पूर्ण चिह्न पूंछकर उज्जयिनी में आया यहां द्यूतस्थान में मुझे द्यूत खेलते देखकर पहिंचान के उसने धूर्त्तता से सब ज्वारियों को जीतकर याचकोंको सब धन देदिया तदनन्तर रात्रिके समय उसने जहां मैं शयन करता था वहां आकर युक्तिपूर्वक मुझको खाटपरसे उतारके पृथ्वी में लिटाकर वहखाट बाजार मेंलेजाकर रक्खी जबमेरी निद्रा खुली तब मै अपने को पृथ्वी में पड़ा देखकर बहुत लज्जित हुआ और वहां से बाजार में जाकर देखा तो वह बालक उस खाट को बेचरहा है यह देखकर मैने उससे जाकर कहा कि इस खाटका क्या मूल्य है मेरे वचन सुनकर वह बोला कि हे धूर्त्त ! यह खटिया मूल्य से नहीं मिलैगी कोई अपूर्व या अद्भुत वृत्तान्त कहने से यह मिलैगी यह सुनकर मैंने उससे कहा कि मैं तुमसे एक अद्भुत वृत्तान्त कहताहूं परन्तु उसे तुम तत्त्वसे सत्यजानकर स्वीकारकरना और जो तुम मेरे ऊपर विश्वास न करके उसे असत्य कहोगे तो तुम जार से उत्पन्न हुए जाने जावोगे और यह खाट मै तुमसे ले लूंगा यह नियम तुम स्वीकार करो तो मैं अपूर्व्व वृत्तान्त कहूं तब उसने कहा कि कहो तब मैंने कहा कि पूर्व्वसमय में किसी राजा के राज्य मे दुर्भिक्ष हुआ तो उसने शूकरकी प्रिया की पीठपर नागोंके वाहनो के जल से आपही खेती की इससे बहुतसा अन्न

हे सुन्दरी ! मैं अपने मित्रके यहां से भोजनकर आताहूं इस संसार में मेरे दो मित्रहैं एक कल्याणवर्म्मा नाम वैश्य वह भोजनादिक से मेरा उपकार करताहै और दूसरा वीरबाहु अपने प्राणोंसे भी मेरा उपकार करनेवाला है यह सुनकर उसकी स्त्री ने उससे कहा कि तुम अपने दोमित्रोंको मुझे भी दिखाओ उसके कहनेसे वह अपनी स्त्रीको साथलेकर पहले अपने मित्र कल्याणवर्माके यहांगया उसने उसका बड़ा सत्कारकिया और बड़े उत्तम भोजन कराके बहुमूल्य वस्त्र तथा आभूषण पहराये इसप्रकार वह दिन उसके घरमें व्यतीत करके दूसरे दिन धवलमुख स्त्रीसमेत अपने दूसरे मित्र बीरबाहु के यहांगया वह उस समय जुआ खेलरहा था उसने जुआ खेलतेही खेलते उससे क्षेम पूँछकर विदाकिया तब उसकी स्त्रीने अपने पति धवलमुख से पूँछा कि हे आर्य्यपुत्र कल्याणवर्म्मा ने आपका बड़ा सत्कार किया और वीरबाहुने केवल आपकी क्षेम पूँछकर स्वागत ही किया तो आप इन दोनों मे से वीरबाहु को श्रेठ समझतेहो उसने कहा तुम मेरे दोनों मित्रोंसे जाकरकहो कि अकस्मात् राजा मेरे ऊपर कुपित हुआ है इससे तुमको उन दोनों का भेद मालूम होजायेगा यह सुनकर उसने प्रथम कल्याणवर्मा से जाके कहा कि आर्यपुत्रपर राजा अकस्मात् कुपित हुआहै यह सुनकर वह बोला कि मैंतो वैश्य हूं बताओ मैं राजाका क्या करसक्ता हूं उसके यह वचन सुनकर उसने वीरबाहुसे भी यही बात जाकर कही वह इस बात को सुनतेही ढाल तलवार लेकर दौड़ता हुआ धवलमुख के पास आया उसे देखकर धवलमुख ने उससे कहा कि मन्त्रियों ने राजाको शान्त करदियाहै अब आप जाइये यह सुनकर वीरबाहुके चले जानेपर उसने अपनी स्त्रीसे कहा कि हे प्रिये ! तुमने इन दोनो

काञ्चन्तर देखलिया उसके यह वचनसुनकर वह स्त्री अत्यन्त प्रसन्न हुई इसप्रकार दिखावे के मित्र और होतेहैं और यथार्थ मित्र अन्य होते हैं (तुल्येपिस्निग्धतायोगे तैलंतैलंघृतंघृतं) चिकनाई में समान होनेपर भी तेल तेलही है घी घीहीहै ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेचतुर्नवतितम प्रदीप ,६४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेपंचनवतितमःप्रदीपः६५॥

जलडर आदि महामूर्खों के अपूर्व दृष्टान्त ॥

तृषार्तःपुत्रघातीचमहामूर्खस्तथैवच ॥ ब्रह्मचारिसुतश्चाथज्योतिर्वित्क्रोधनस्तथा १ मूर्खराजा सुतावधीपणलुब्धस्तथैवच ॥ प्रत्यभिज्ञायुतःप्रातिनिधौमांसप्रदायकः २ आमलानयनश्चैतेप्रदीपेऽत्रप्रकीर्तिताः ॥

(अर्थ)–तृषा से आर्त = पियासा और पुत्रघाती तैसे महामूर्ख, ब्रह्मचारी का पुत्र, ज्योतिषवेत्ता, क्रोधीमुख राजा, सुतबधाने वाला, धेलेका लोभी और पहिचानने वाला और बराबरी में निज मांस देनेवाला तथा आमले लानेवाला ये इतने महामूर्ख इस प्रदीप में कहे हैं इति २ ॥

किसी मूर्ख पथिक ने बहुतदूर चलके प्यासा होकर नदी के किनारे पहुँचकर भी जल नहीं पिया वहांपर खड़ेहुए किसी अन्यपुरुष ने उससे कहा कि तुम प्यासे होकर भी जल क्यों नहीं पीतेहो, उसनेकहा कि इतना जल मैं कैसे पियूं यहसुन के वहहंस कर बोला कि जो तुम सब जल नहीं पियोगे तो क्या राजा तुम को दंडदेगा उसके इसप्रकार हँसकर कहनेपर भी उसने जल नहीं

न्नहोके बहुतदिन उसके साथ रहकर यहां चलाआया इसप्रकार
हे स्वामी! कुलीन स्त्रियां प्रायः पतिव्रता होती हैं यह जानना
हिये कि सब स्त्रियां कुलटाही होतीहैं मूलदेवसे इस कथाको
सुनकर महाराज विक्रमादित्य अपने मन्त्रियों सहित बहुत प्रसन्न
हुआ इसप्रकारके अनेक२भांतिकी कथाओंको सुनके और अनेक
प्रकारके आश्चर्य्यकारी कार्य्योंको करके महाराज विक्रमादित्य ने
सप्तद्वीपा पृथ्वीका राजभोगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेपण्णवतितमः प्रदीप ९६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेसप्तनवतितम प्रदीपः ९७॥

शिष्ट श्री अलखरामजीका दृष्टान्त ॥

शिष्टाःविशिष्टाःपरदुःखहारिणो नप्राप्तमिच्छं
धनादिकंबहु॥यथाऽऽसवृद्धप्रपितामहोमम वृद्धः
ह्यलखराम नामकः ९७ चकार राज्ञः सदने
टकं प्रदीयमानां जगृहे न सम्पदाम् ॥ तुष्टः
ष्टादशसंख्यबंदिनः कारागृहादाविरमोचयत्
मिलेगम् ९८ ॥

अर्थ) शिष्ट विशिष्ट परदुःखहारी महात्माजन किसी से दिये
और लये भारीभी धनादिककी इच्छा नहीं करतेहैं जैसे हमारे वृद्ध
प्रपितामह श्री अलख रामजीने ॥ राजा जयपुराधीशके यहां
निज शिक्षित महा योगीनाम नाटककिया और तिनसे दीयमान
महाभारी सम्पत्ति को ग्रहण नहीं किया किंतु तिनके कारागृह में
अठारहसौ कैदियोंके प्रकट आपने छुटवाये जिनका वर्णन ये है ॥

दृष्टान्त—हमारेवृद्धप्रपितामह श्रीस्वनामधन्यात्म श्रीअलखरामजी

पिया इसप्रकार से मूर्खलोग जो काम सब नहीं करसक्के हैं यथा शक्ति उसका एक अंश भी नहीं करते हैं (अब पुत्रघाती की कथा सुनिये) किसी दरिद्री मूर्ख पुरुष के पुत्र बहुत से थे एक समय उसने एक पुत्र मरजानेपर दूसरे को भी इसलिये आपही मारडाला कि मेरा एक पुत्र बहुत दूर मार्ग में अकेला कैसे जायेगा तब सब लोगों ने उसकी मूर्खतापर हँसके उसको अपनेदेश से निकालदिया इसप्रकार मूर्खलोग पशुओं के समान निर्विवेक होते हैं (अब दूसरे एक बड़े मूर्ख की कथा सुनिये) लोगो के साथ वार्तालाप करतेहुए किसी मूर्ख ने एक सुन्दर पुरुषको देखकर कहा कि यह मेरा भाई लगताहै इससे मैं इसका धनलेले ताहूँ और मैं इसका कोई नहीं हूं इससे इसका कर्ज़ा मुझे नहीं देना पड़ेगा उसके यह वचन सुन के वह सब लोग हँसदिये इस प्रकार से स्वार्थान्ध मूर्खों की अत्यन्त विचित्र कथाहोती हैं (अब ब्रह्मचारी के पुत्रकी कथा सुनिये) किसी मूर्ख ने अपने मित्रों के साथ वार्तालाप करने में अपने पिताकी प्रशंसा करते २ कहा कि मेरा पिता बाल्यावस्था से ही बड़ा ब्रह्मचारी है उसके समान कोई नहीं है यह सुनकर उसके मित्रों ने कहा तो तुम्हारा जन्म कैसेहुआ तब उसने कहा कि मैं उसका मानस पुत्रहूँ यहसुनकर वह सबलोग बहुत हँसे इसप्रकार से मूर्खलोग असंबद्धमहा मिथ्या बातें कहा करते हैं (अब एक ज्योतिषी की कथा सुनिये) कोई मूर्ख ज्योतिषी अपने देश में जीविका से रहितहोकर अपनी स्त्री और पुत्र समेत परदेश को चलागया और वहां अपना मिथ्या ज्ञान प्रकट करने के लिये लोगों के आगे अपने बालक को हृदय से लगाकर रोनेलगा उसे रोते देखकर लोगों

भये इनका जीवनचरित्र ऐसे श्रुतहै कि ये किन्हीनाथ महात्माकी कृपासे जन्मे थे इससे इनका नाम अलखनाथ भया ये वालपनसेही ब्रह्मचर्य्यादि नियम युक्तहुये और तरुण होनेपर एकमित्र ब्राह्मणको साथ लेकर सिद्धिविद्या सीखने के लिये कामरूप देशको गये वहां वहुत समयतक स्त्रियोंने इनको भ्रमा रक्खे तदनन्तर किसी पनिहारिनकी वताई युक्तिसे ये दोनों नगरसे वाहर निकले सोही पीछेसे वे स्त्री इनको अनेकप्रकार के दुर्वचन कहतीरहीं पर इन्हों ने शिक्षा के अनुसार पीठ फेरकर न देखा तो बच चलेआये आतेही राह में उस ब्राह्मणने तो निज सिद्धिके वलसे एकभारी पहलवानको पछाड़ा जो छःपसेरी की सांकलपैरमें डाल चलताथा उसकी सांकलसे इनका पैर छूजानेपर वह इनसे लपटगया तो शिथिलहो गिरा इति ॥ और अलखनाथजीने निज नाटकको जहां तहां प्रसिद्धकिया तिसे देखतेही सारी सभा मोहित होजातीथी एकसमय महाराज जयपुराधीशके दरवारमें नाटक ठहरा तो तिन सहालापी अर्थात् साथ आलाप स्वरमिलानेवाला शिष्य निज विवाह के आवश्यकसमय में रुकाथा सो वह विवाहमात्रही से निवट भगकर एक रात्रि दिन भरमें वहां पहुँचा उधर इन्हों ने निज योगी नाटक करना आरम्भकिया तो आलाप उस शिष्य के न होने से पूर्ण न ऊंचागया तो मनसे निज शिष्यका स्मरणकिया सोही वह स्वनुष्ठित देवता के समान गर्ज वोला " अलखनाथजी महाराज ! हाजिरहूं " तव आलाप पूर्णहुआ तो राजाने प्रसन्नहो थालमेंमोती आदि द्रव्यले इनकी भेंट करनेके लिये आगे धरा तो नृत्य करते२इन्हो ने निज पैर से उसको [illegible] तो राजाने कहा " महाराज अलखनाथजी क[illegible] तव श्री अलखनाथजी ने निज

ने पूंछा कि तुम क्यों रोतेहो उसने कहा कि मैं भूत भविष्य और वर्तमान तीनोकालकी बातें जानताहूं इससे मुझे मालूमहुआ कि आज के सातवेंदिन यह बालक मरजायगा यह कहकर उसने उस दिन के सातवेंदिन अपने बालक को मारडाला उस बालक को मरादेखकर लोगोंने विश्वासयुक्त होके उसको बहुत सा धन दिया और वह उस धनको लेकर अपने घरको आया इसप्रकार से मूर्ख लोग धन के लिये अपने पुत्रको मारडालते हैं परन्तु बुद्धिमान् लोग उनपर प्रसन्न नहीं होते हैं (अब आप एक क्रोधी पुरुष की कथा सुनिये) किसी ग्राम में कोई पुरुष किसी मकान के बाहर खड़ा हुआथा और उसस्थान के भीतर कोई अन्य पुरुष अपने मित्रो से उसकी प्रशंसा कररहा था उन मित्रों में से एकने कहा कि हे मित्र ! आपका कहना बहुत ठीकहै परन्तु उस में दो दोष हैं एक साहस और दूसरा क्रोध यह सब बातें उसने बाहरही से सुनकर भीतरजाकर जिसने उसे क्रोधी और साहसी कहाथा उसके गले में कपड़ा लपेटकर कहा अरे मूर्ख ! मैंने क्या साहस तथा क्रोधकिया है सो बताओ यह सुनकर उस से सब लोग हँसकर कहनेलगे कि इसके ही कहने से क्या है तुमने तो आपही अपना क्रोध और साहस प्रकट करादिया इसप्रकारसे निज प्रकट दोषको भी मूर्खलोग नहीं जानते हैं (अब कन्या बढ़ानेवाले की कथा सुनिये) किसी राजा के एक बड़ी सुरूपवती कन्या उत्पन्नहुई उसने उसका बड़ा सुन्दररूप देखकर वैद्योंको बुलाकेकहा कि कोई ऐसीऔषध देओ जिससे मेरी कन्या बहुत वेगसे बढ़जावे जिस से मैं किसी योग्य वरके साथ उसका विवाह करदूं यह सुन वैद्यो ने उससे कहा महाराज ! औषध तो है पर कहीं दूरदेश

मनोरथ रागिनी में प्रकट किया उस समय आप भठियारे की जात वर्णन करते थे ॥

रागिनी ॥ राजा मेरी चिड़ियो दा बंध कटादे । राजा मेरी० अन्तरा । अठारह सौ कैदी तेरे घर सबकी कैद हटादे ॥ राजा मेरी० हे राजन् ! हम तेरा द्रव्य आदिक कुछ नहीं चाहते किन्तु तुम्हारे यहां ये अठारह सौ उमरकैदी हैं तिन सबको आप छोड़दीजिये, राजाने सुनतेही सबको छोड़दिये तबसे हमारे घरमें चोरोंने आना छोड़दिया था केवल एक चोर हमारे पितामह चिमन रामजी ने चौकीदार के प्राण बचाने के हेतु मारा तबसे वो प्रतिज्ञा टूटी ऐसे तिन अलखरामजी का यश सारे संसार भरमे फैल रहाहै यहां तक कि पाश्चिमात्य प्रांत देशोमे बहुधा स्त्रियेभी "अलखो आयो महल खबर करियो" इत्यादि राग गाती हैं विशेष चरित्र ग्रन्थबढने के कारण नही लिखते केवल प्रसंगसे वंश परम्परामात्र कहते हैं ॥

सवैप्रतापेनसुपूजितोऽभवत्पुरोहितोविप्रवरेषुपूजितः ॥ स्ववंशवृद्धयैजगृहेसुतंवरंसुदासुनाम्नासहजंसरामकम् ॥ ततानसोयंनिजवंशतंतुमुत्पादयामाससुतानथासौ ॥ अष्टौवसूनप्रतिमांश्चतेषुगुणाग्रणीर्धोकलरामशर्मा ९९ ॥

फिर तो वे अलखरामजी निजप्रतापसे पूजितहुये और ब्राह्मणों के कार्य बोधक अग्रगण्य (पुरोहित) भये फिर उन्हीं ब्राह्मणजनो करके निजवंश वृद्धिके अर्थ अर्थात् पुत्रका उपाय करना चाहिये ऐसे प्रेरे भये तिन्होंने सहायदाता "सहजराम" नाम से श्रेष्ठपुत्र गोदलिया फिर तो तिन्होने निज वंशरूप तन्तुको ताना विस्तार

में है और उसका यह विधान है कि जबतक वह औषध न आवे तबतक आप अपनी कन्याको अलक्षित करके रखिये राजाने उन के यह वचनसुनके अपनी कन्या उन्हें सौंपदी कि आपही इसको अलक्षित करके रखिये राजाकी आज्ञापाके वह उस कन्याको अपने घर लेगये और कई वर्ष के उपरान्त जब वह तरुणहुई तो राजाके पास लेआये और बोले कि हे महाराज! औषधके प्रभावसे यह कन्या तरुण होगई उस कन्याको युवती देखकर राजाने उस को बहुतसा धनदिया इसप्रकारसे धूर्तलोग मूर्खोंका धन हरते हैं (अब धेलेके पैदा करनेवाले मूर्खकी कथा सुनिये) किसी नगर-निवासी धनवान् के यहां एक ग्रामीण सेवकथा वह सालभर नौकरी करके किसीकारण से नौकरी छोड़के अपने घरको चलागया उसके चलेजानेपर उस धनवान् ने अपनी स्त्रीसे पूँछा कि हे प्रिये! वह तुमसे कुछ लेतो नहींगया है उसने कहा हां धेला लेगया है यह सुनके वह दशपैसे खर्च करके सेवकके घरजाकर अपनाधेला लेआया उसकी इस चतुरतासे सबलोग बहुतहँसे इसप्रकारसे मूर्ख लोग थोड़े के निमित्त बहुतव्यय करते हैं (अब पहिचान रखने वाले मूर्खकी कथा(सुनिये) कि जहाजपर चढकर समुद्रमें जातेहुए किसी मूर्खका चांदीका पात्र समुद्रमें गिरपड़ा उस मूर्खने वहांभँवर आदि की पहिचान देखली और विचारलिया कि जहां ऐसे भँवर पड़ते होंगे वहांसे अपना पात्र निकाललूंगा यह शोचकर उसने समुद्रके पारजाकर किसी नदीमें भँवर पड़ते देखकर कटोरा मिलने के लिये उसमें गोतामारा लोगोंने पूँछा तुम क्यो गोतालगा रहेहो तबउसने अपना सब अभिप्राय कहदिया इससे उसका बड़ा उपहासहुआ (अब आप बदले में मांस देनेवाले मूर्ख की कथा

किया अर्थात् वंशबढ़ाया सो आठों वसुओं के समान आठ पुत्र हरसहाय १ गोविन्दराम २ कृष्णसहाय ३ जीतमल ४ नवनिधराम ५ धौंकलराम ६ और चिमनराम ७ रामरिख ८ ये उत्पन्न किये तिनमें भी गुणोंकरके अग्रगण्य "श्रीधौंकलरामजी" भये ॥

अश्वारूढःप्रविचरन्भूरिदेशवरेषुसः ॥ प्रगर्जन् केशरीवासौपूज्यमानोद्विजातिभिः ॥ अथतस्याभवन्पुत्राश्चत्वारश्चतुरावराः ॥ धनीरामकन्हीरामावीश्वरीलालएवच ॥

ऐसे वे (श्रीधौंकलरामजी) श्रेष्ठ अश्वपर सवारभये बहुत से नगरों में विचरा करते औ तहां २ ही ब्राह्मणोंकरके पूजेजाते और सिंह के समान गर्जना करते थे फिर तिन (धौंकलरामजी) के धनीरामजी १ कन्हीरामजी २ ईश्वरीसहायजी ३ लालचन्द्रजी ४ येचार पुत्र उत्पन्नभये जो बड़े चतुरभये ॥

आसीद्योवीश्वरीदत्तवर्य्यःकोवैसर्वांस्तद्गुणान्वक्तुमीशः ॥ बिभ्युर्यस्यप्रौढवीर्य्यप्रभावाद्दुष्टाजीवाःप्राणिसंहारिणोऽपि १०० ॥

इनमें जो ईश्वरीसहायजी भये तिनके सम्पूर्ण गुण कहने को कौन समर्थहै जिनके भारी प्रभाव से दुष्टजीव जो प्राणियों को संहार करनेवाले ऐसे सिंहादिक डरतेभये इति ॥ एक समय श्रीमत् ईश्वरीसहायजी श्री जयन्तीजी अर्थात् जीर्णदेवी की यात्रा को गये ते [illegible] भीतर पाठ करते रहे रात्रि होने पर पंडोंने कह [illegible] ये यहां अर्द्धरात्रि को सिंह

सुनिये) किसी मूर्ख राजाने अपने महल परसे दो पुरुषोंको देखा: और उनपर प्रसन्न होकर उन्हे बुलाकर अपने यहां नोकर करलिया उनमें से एक ने रसोई में से थोड़ा सा मांस चुराया इससे राजाने पाः वभर मांस उसके शरीर मे से कटवा लिया और जब मांस के कटने से वह पृथ्वीपर गिरकर तड़फने लगा तब अपने प्रतीहार से कहा कि पावभर से अधिक मांस इसे दिलवादो इसे बड़ी व्यथा होरही है यह सुनकर प्रतीहार ने अपने चित्त में हँसकर कहा कि क्या शिर काटने से मराहुआ मनुष्य सौ शिरके देने से भी जीसक्ता है और राजा से अच्छा कहके उसे वैद्योंके यहां लेजाके औषध लगवा के स्वस्थ करवादिया इसप्रकारसे मूर्ख स्वामी न दण्डदेना जानते हैं और न कृपा करना जानते हैं (अब द्वितीय पुत्र चाहनेवाली मूर्ख स्त्री की कथा सुनिये) किसी स्त्रीके एकही पुत्रथा उसने द्वि- तीय पुत्रकी अभिलाषासे किसी छलित तपस्विनीसे कहा कि पुत्र होनेका कोई उपाय मुझे बताओ उसने कहा कि यह जो तुम्हारा पुत्र है इसे देवताके आगे मारकर जो बलिचढाओ तो अवश्य तु- म्हारे पुत्रहोगा उसके यह वचन सुनकर वह ऐसाही करनेको उद्य- त हुई तो उसकी हित चाहनेवाली किसी वृद्धस्त्रीनेउससे कहा कि हे मूर्खिनी ! तू अपने विद्यमान पुत्रको मारकर अन्यपुत्र पाना चाहती है जो इसके मारनेपर भी तेरे पुत्र न हुआ तो क्या करेगी इसप्रकार उसके निषेध करने से वह उस मूर्खतासे निवृत्त हुई ऐसे बहुधा दुष्टस्त्रियों के कुसंगसे मूर्खस्त्रियें विनाविचारे कार्य करने ल- गती हैं पर श्रेष्ठ वृद्धास्त्रियां उन्हें निवारण करदेती हैं (अब आंवले लानेवाले की कथा सुनिये) किसी गृहस्थीने निज मूर्ख सेवक से कहा कि बाग में से मीठे २ आँवले तोडलाओ तो तिसने आँवले

आता है इससे कोई नहीं रहता इन्होंने हर्षितहोकर कहा हम रहेंगे देखें हमको सिंह क्याकरेगा निदान अर्द्धरात्रिभये सिंह आया और आप वैसेही ध्यान से नेत्र मूंदे स्थितरहे सिंहके दर्शन करके चले जानेपर उठते समय आंखें खोलीं तो तिनने पुस्तक के ऊपर एक टकासुपारीपाया सोही निजअभीष्ट सिद्धिरूप वरदानजान उन्हों ने ग्रहण किया उसी के प्रतापसे शुभचिन्तकका जन्महुआ तो नाम भी "देवीसहाय,, ही रक्खागया इति। तथा एक समय श्री प्रयाग राजसे आतेभये इनको राहमें कई वृकभिड़ाओं ने आघेरा तो इन्हों ने निज कमण्डलु में कङ्कर रखकर ऐसा घण्टा नादकिया कि वे भयखाय भगगये इति। और एक समय रात्रिको ये किसी ग्रामसे बिवाह कराकर आते थे राहमें चोर सामने से आते थे तो इन्होंने उनको भय देनेके लिये ऐसा निज अद्भुतरूप किया कि लाठी छतुरीको एकके ऊपर एक लगानेसे बहुतऊंचे दिखाईदिये तो चोरों ने डरकर भागनेके सिवाय कोई अवकाश न पाया ऐसे बहुतसे चरित्र हैं ग्रन्थ बढ़ने के भयसे थोड़े दिङ्मात्र प्रदर्शित कियेहैं इति॥

श्रेष्ठःसूनुस्तस्यगंगासहायःप्रज्ञायुक्तोयाजकेशः प्रवक्ता ॥ तद्भ्राताऽसौशुक्लदेवीसहायोविद्यारत्नैर्भूरिभिर्भूषितोऽस्ति १०१ ॥

तिन (श्रीमत् श्री ईश्वरी सहायजी) के पुत्र प्रज्ञायुत प्रवक्ता (श्री गङ्गासहायजी) याजकेश थे तिनका कनिष्ठ भ्राता (शुक्ल देवीसहाय शर्म्मा) है जो बहुतसे विद्यारूप अमोल्य रत्नों से विभूषित है॥

शब्दन्यायविदात्मशास्त्रकुशलोज्योतिःप्रबोधे

चख २ के तोड़े और जूंठे कर लाय स्वामीसे कहा कि मीठे २ चख २ के लायाहूं स्वामी लाचार हुआ ॥

॥ इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धे पंचनवतितमःप्रदीपः ६५ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेषण्णवतितमःप्रदीपः ६६ ॥

मूलदेव धूर्त और उसकी स्त्रीका दृष्टान्त ॥

धूर्तोधूर्ततयोक्तस्तु वशगोजायतेयथा ॥
मूलदेवस्तथोक्त्यासआसीत्स्त्रीवशगः स्फुटम् ९६ ॥

(अर्थ)—धूर्तजन धूर्तताकर के कहागया वश में होजाताहै जैसे मूलदेव निज स्त्रीकी उक्तिसे उसके वश में होता भया ६६ ॥

दृष्टान्त—मूलदेव कहता है कि कहीं २ सतीस्त्रियें भी सती होती हैं मैंने जो अनुभव किया है वही आपको सुनाताहूं कि एकसमय में अपने मित्र शशि के साथ पाटलीपुर नगर में सैर करने गया वहां नगर के बाहर एक तड़ागमे वस्त्र धोती एक स्त्रीसे मैंने पूछा कि यहां पथिक कहां टिकते हैं यह सुन उसने कहा कि तट पर चकवे जल मे मछली और कमलों में भ्रमरवास करते हैं यहां पथिकोंका कहां ठिकाना देखा उसके यह गम्भीर वचन सुनकरमैं शशि के साथ नगरमें गया तो तहां नगरमें घरके आगे एकलड़का रोरहा खीर उसके आगे धरी तो मैंने कहा कि यह लड़का मूर्ख है जो खीर खाता नहीं और रोरहा है यह सुनतेही लड़का आंख पोंछ के कहनेलगा कि तुम ग्रामीणजन महामूर्ख हो एक तो खीर ठंढी होती है और रोनेसे कफ सूखता तथा भूखभी बढ़ती जाती है तुम ग्रामीणजन रोदन के गुण नहीं जानते यह सुनके हम दोनों लज्जित होकर आगे चले तो एक स्थान में एक पेड़ पर एक सुन्दर कन्या आम के वृक्ष के नीचे निज बहुत सी सखियों सहित

नयुक्रम्लज्ञस्त्वऽतिकर्मकाण्डकुशलस्तन्त्रस्यवेत्तापिच ॥ आयुर्वेदकृतश्रमश्रुतिपरोविद्वज्जनाह्लादकोदृष्टान्तावलिकांव्यधत्तरुचिरांविद्वद्गणेचेश्वरे ॥

जो शुक्ल देवीसहाय-शब्द-व्याकरण—न्याय—तर्कशास्त्र इनका वेत्ता और-आत्मशास्त्र-वेदान्त में कुशल और ज्योतिषी, रमल जाननेवाला और कर्मकाण्ड में अत्यन्त परायण तथा तन्त्र मन्त्रशास्त्रमें परायण । और आयुर्वेद वैद्यक विद्याज्ञाता श्रुति अर्थ वेत्ता—विद्वज्जनोंको आनन्ददायक ऐसे इसने इस "दृष्टान्तावली,, ग्रन्थ को बनाकर विद्वानों के समूह में और ईश्वर में तथा ईश्वरीसहाय निज पिताजी के चरणो में समर्पणकिया इस ईश्वर सेवासे सब जगत्को सदा सुख वृद्धिहोवे ॥

समाप्ति समय ज्ञानम् ॥

रसेषुनन्दाङ्कमितेसुसँव्वन्मासेप्यथोफाल्गुनकेथशुक्ले । शुक्लेनतिथ्यांरविसंज्ञिकायां शुक्लायग्रन्थः परिपूरितोऽसौ ॥

(अर्थात्) सम्वत् १९५६ फाल्गुनशुक्ल १२ चन्द्रवारके दिन शुभ भारतभूमि मण्डलान्तर्गत प्रसिद्ध इन्द्रप्रस्थ नगरसे पश्चिम कोणस्थआर्चीकशैलतलवर्ति नन्दग्राम निवासी श्रीमदृद्धसमृद्ध शुक्लोपनामक पण्डिताग्रगण्य श्रीमत् ईश्वरीसहायजी, तिनके सत्पुत्र वर पण्डित गङ्गासहायजी,याजकेश तिनके कनिष्ठ भ्राता पण्डित देवीसहायजी, करके वद्रीसहाय युगलकिशोरार्थ तथा समस्त विद्वज्जन विनोदार्थ बनाया यहग्रन्थ सम्पूर्ण भया सो सबकोसुखदेवे ॥